68

स्थापित वि. संवत् १९३२
(१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

जम्मू व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2013-14 ई.

इस पंचांग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

कुम्भ महापर्व देखें पृष्ठ 11 पर

गौरवशाली 138 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008

एकमात्र वितरक :
जनरल बुक डिपो
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 0181-2457959

मूल्यः ₹ 75/-

ॐ गणेशाय नमः

स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

जम्मू व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2013-14 ई.

इस पंचाँग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

कुम्भ महापर्व देखें पृष्ठ-11 पर

गौरवशाली 138 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम

पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़

माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008

एकमात्र वितरक :
जनरल बुक डिपो
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 0181-2457959

मूल्यः ₹ 75/-

श्रीगणेशाय नमः

'पंचाँगदिवाकर' सम्बन्धी आवश्यक जानकारी

यस्मिन् काले यतः खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
तत् एव स्फुटाः कार्याः दिक्कालौ स्फुटौ विदा॥ (वृहत् पाराशर)

अर्थात्–जिस पद्धति या सिद्धान्त से दृक्-गणितैक्य युक्त वेध-सिद्ध ग्रह स्पष्ट प्राप्त हों, उसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसी के द्वारा स्पष्ट दिशा एवं ग्रह-स्पष्ट, कालादि साधन करने चाहिएं।

(1) इस पंचाँग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (Longitude) 75°/34'E तथा अक्षांश (Lalitude) 31°/19'N, उत्तर के आधार पर किया गया है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के मान एवं सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राशि-परिवर्तन (घड़ी-पलादि) में जालन्धर नगर के सूर्योदय अस्तादि का प्रयोग किया गया है।

(2) इस पंचाँग की गणित प्रक्रिया में सूक्ष्म दृक्-गणित एवं चित्रा-पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है। जोकि महर्षि पाराशर, केतकर, वसिष्ठ, भास्कराचार्य, पं. बापूदेव शास्त्री आदि प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों/ज्योतिष आचार्यों द्वारा अनुमोदित है। पंचाँग में दिए गए व्रत, पर्व एवं मुहूर्त्तों में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्रादि की गणित शास्त्र सम्मत है तथा यह भारत सरकार द्वारा भी प्रमाणित एवं अनुमोदित है।

(3) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार रहित होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में यही ग्राह्य होते हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 3 मिनट घटावें और सूर्यास्त में जमा कर लेवें।

(4) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। उनके घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समाप्तिकाल भा. स्टैं. टाईम में निकल आएगा। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समाप्तिकाल भा. स्टै. टा. घंटा मिंटों में अलग से दिए गए हैं। जहाँ पर 24, 25, 26आदि अंक लिखे हैं। वहाँ 24 की रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटा करके अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार पिछली तारीख** का दिन ही माना जाता है।

(5) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको घं. मिं. भा. स्टै. टा. में परिवर्तित किया जा सकता है।

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह-नक्षत्र प्रवेश आदि की गणित पं. पन्ना लाल ज्यो. (M.A.) के निर्देशन में Computer Programme से की जाती है।

ध्यान रखें– चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल हैं। पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैं. टा. में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे**। अन्तिम पृष्ठों पर भारत के मुख्य शहरों के भी सूर्योदयास्त दिए गए हैं।

(6) पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि के नीचे 15 तिथि को पूर्णिमा तथा अमा. तिथि को 30 के अंकों से संकेत किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, **नक्षत्र** या **योग का क्षय** हुआ है, उसे क्षय सहित दोनों नक्षत्रों (या योगों) को बारीक करके लिख दिया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०।०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें। वह तिथि, नक्षत्रादि अगले दिन तक व्याप्त रहेगा।

'पंचाँगदिवाकर' के पाठकों को विनम्र निवेदन

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सर्वदा॥

परम पिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान द्वारा संचलित **'पंचाँग दिवाकर', मुफीद आलम जन्त्री** (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी) और **तिथ पत्रिका** (गुरूमुखी) को प्रकाशित होते हुए **सम्वत् २०७०** (सन् 2013-14 ई०) में **गौरवशाली** 138 वर्ष हो जाएँगे। इस पंचांङ्गत्रय के प्रवर्त्तक हमारे **पूजनीय पितामह मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी (लाहौर)** से लेकर आजतक की दीर्घावधि में हमारे प्रतिष्ठित एवं प्रामाणिक पंचाँग व अन्य प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति एवं श्लाघा प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों छिपी नहीं है। इस श्लाघा में पंचाँङ्ग दिवाकर के लाखों पाठक एवं प्रशसंक बराबर के भागीदार हैं। सुयोग्य पाठकों का इस पंचाँग के प्रति विशेष प्रेम ही है, जिससे प्रेरित होकर अपने उपयोगी सुझाव हमें भेजते रहते हैं। हम उनके हृदय से आभारी हैं। उत्तरी भारत में सौ वर्षों से भी अधिक अवधि पर्यन्त हमारे पंचाँग/जन्त्री एवं ज्योतिष सम्बन्धी अन्य प्रकाशनों (जैसे-ज्योतिष तत्त्व ([illegible] दशवर्षीय पंञ्चाँग, अनिष्ट ग्रहों के उपाय, सुतभाव प्रका[illegible] पद्धति इत्यादि) ने ज्योतिष क्षेत्र में जो महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया वह सर्वविदित ही है।

हमारा प्रयास है कि **प्रतिवर्ष पंचाँग में ज्योतिष एवं** [illegible] पंचाँग को अधिकाकाधिक उपयोगी बनाया जाए। अधिक सामग्री डालने से पंचाँग के पृष्ठ बढ़ाने पड़े हैं, जिसके कारण पंचाँग/जन्त्री के मूल्य में आंशिक वृद्धि करना अपरिहार्य था। आशा है, कृपालु ग्राहकगण हमारे प्रयास में अपना सहयोग करने की कृपा करेंगे।

गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

नोट–वि. संवत् २०७० (सन् 2013-14 ई.) से पंचांगदिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी) का प्रकाशन एवं वितरण पं. देवीदयालु संस्थान के प्रमुख वितरक **'जनरल बुक डिपो'** द्वारा ही किया जा रहा है। कृपया पाठकगण एवं पुस्तक विक्रेता नोट कर लें।

गणितकर्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

श्री गणेशाय नमः

श्री सरस्वत्यै नमः

स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

"पराभव" नामक नया वि. संवत् पंचाँग दिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०७० (सन् 2013-14 ई.)

राजा गुरु

मन्त्री शनि

शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)
सुपुत्रः स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी
सह-संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम)
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (भारत) फोन नं. 0181-2457959

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३८ वां

स्थापित वि. संवत् १९३२

प्रकाशक : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर। मोब. 094172-91325, 097799-13583

विषय-सूची

पंचांगदिवाकर-संवत् २०७० (सं. 2013-14 ई.)

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- **ज्योतिष एवं पुत्र सन्तान योग पर अनुसन्धानात्मक एवं विस्तृत लेख**
- **बालारिष्ट योग, उपाय स्वरूप सन्तान प्राप्ति योग आदि सन्तान सम्बन्धी अनेक विषयों पर विशद् लेख दिए जाएंगे।**
- **महाराष्ट्र राज्य के नगरों के अक्षांश-रेखांश**
- **कर्मकाण्ड सम्बन्धी आवश्यक नियम**
- **एकादशी व्रत—सम्बन्धी विशेष लेख**

पंचाँग दिवाकर के १३८वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर
जगद् गुरु शंकराचार्य
स्वामी नारायणानन्द तीर्थ
महाराज जी का
शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा—
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्मपीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्(वाराणसी)

Choice Boos & Printers (p) Ltd. F-19, Focal Point Ext; Jalandhar City.

धार्मिक एवं पूजन सम्बन्धी शास्त्र वचन

जिस प्रकार सभी पक्षी दोनों पंखों से आकाश में गमन करते हैं, उसी प्रकार कर्म एवं ज्ञान-इन दोनों से मानव मोक्ष प्राप्त करता है। वैसे तो कर्म, ज्ञान और भक्ति-ये तीन मोक्ष के साधन हैं, किन्तु ज्ञान या भक्ति में भी कर्म तो करना ही पड़ता है। बिना कर्म के ज्ञान या भक्ति भी सिद्ध नहीं होती है। अतएव हमारे प्राचीन ऋषियों ने शास्त्रों द्वारा धर्मानुरागी मनुष्यों को कर्मकाण्ड रूपी सत्कर्मों का पालन करने के लिए प्रेरित किया। आगे हम धर्म, कर्मकाण्ड एवं देव पूजनादि के सम्बन्ध में कुछ प्रामाणिक शास्त्र वाक्य दे रहे हैं। आशा है **कर्मकाण्ड एवं पूजन सम्बन्धी नए विद्यार्थियों** के लिए उपयोगी होंगे।

(1) संकल्प की आवश्यकता-प्राचीन काल से ही धर्मशास्त्रानुसार प्रत्येक **'धर्मानुष्ठान'** के कार्य में, जैसे व्रत, मन्त्र-जप, पाठ, दान, ब्राह्मण भोजन, श्रीगणेश पूजन, नवग्रहादि में, महालक्ष्मी पूजन, जन्मदिन पूजन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, चूडाकर्म, विवाह संस्कार, अन्त्येष्टि एवं श्राद्धादि आदि कर्मों में भी संकल्पादि की आवश्यकता पड़ती है। बिना संकल्प किए, जप, पाठ, व्रत, हवन दान आदि अनुष्ठान करने का पूरा फल नहीं मिलता। मनुस्मृति के अनुसार- **संकल्प मूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः।**
व्रता नियम धर्मांश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।।

''ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्री श्वेत्वाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे------ क्षेत्रे/नगरे/ग्रामे------- नाम संवत्सरे---------- मासे------ शुक्ल या कृष्ण पक्षे------- तिथौ---------- वासरे------ गोत्रः--------- शर्मा/ गुप्तोऽहम् प्रातः, रात्रौ आदि, श्रुति स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं, ज्ञाताज्ञात सर्व पाप/दोष परिहारार्थं, आयुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्धयर्थम् सर्वारिष्ट शान्ति पूर्वकम्, श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं अमुक देवस्य पूजनं करिष्ये।।

ऐसे संकल्प पढ़कर अर्घ्य से पुष्पाक्षत एवं जलाञ्जली छोड़ दें।

यदि जन्म-दिन का पूजन हो तो **देवस्य** की बजाए जन्मदिन कृत्यं पढ़ें। यदि दानादि का संकल्प हो तो ऐसा पढ़ें-''**दक्षिणा सहितं अमुक नाम ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे**-ऐसा कहें।।

संकल्प के पश्चात् पण्डित जी (आचार्य) द्वारा श्रीगणेश प्रतिमा के पास पहले से रखी गई, कलेवा (मौली) उठाकर पण्डित (या आचार्य या किसी पूज्य व्यक्ति) से मन्त्रपूर्वक बँधवानी चाहिए।

मन्त्र- येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां अनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

रक्षा बन्धन, दीपावली एवं भाई दूज आदि पर्वों पर भी यही मन्त्र पढ़ सकते हैं।

तत्पश्चात् रोली व केशरया चंदन का **तिलक भी** आचार्य या पूजनीय व्यक्ति से मन्त्रपूर्वक लगवाना चाहिए-

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः।
स्वास्ति नः ताक्ष्योः अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिः दधातुः।।

यजमान को भी आचार्य (पण्डित जी) को रोला एवं अक्षत सहित तिलक लगाना चाहिए। तिलक लगाकर यजमान पण्डित जी को प्रणाम करें-

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगत् हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

निम्न मन्त्र पढ़ते हुए यजमान आचार्य को तिलक लगाकर प्रणाम करें-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

अर्थात्-सभी कामनाओं का मूल संकल्प ही है। सब यज्ञ संकल्प के अनन्तर ही सम्पन्न होते हैं। व्रत, उपवासादि नियम और समस्त धर्म कार्य संकल्प से ही (पूर्ण) होते हैं। अतएव सभी तरह के शुभ कर्मों के प्रारम्भ में संकल्प करना आवश्यक है। वैसे तो कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रायः सभी पुस्तकों में संकल्प विधि दी जाती है, फिर भी पाठकों की सुविधा हेतु आगे संकल्प की संक्षिप्त विधि दी जा रही है।

सन्ध्या करने की महिमा

(2) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यदि संध्या न करें, तो वे अपवित्र रहते हैं, तथा उन्हें किसी पुण्य-कर्म करने का फल प्राप्त नहीं होता। दे. भा.

सन्ध्या हीनोऽशुचिः नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु।
यदन्यत्कुरूते कर्म न तस्य फलभावभवेत्।।

(3) जिसने सन्ध्या का ज्ञान नहीं किया, जिसने सन्ध्या की उपासना नहीं की, वह ब्राह्मण जीवित रहते हुए भी शूद्र समान होता है और मृत्यु के बाद अधम योनि को प्राप्त करता है-

सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या येनानुपासित।
जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतःश्वा चाभिजायते।।

आत्मवेत्ता द्विज (ब्राह्मण) को तो सदा त्रिकाल सन्ध्या करनी चाहिए-

संध्यात्रयं तु कर्त्तव्यं द्विजेनात्मविदा सदा।। (अत्रिस्मृति)

क्योंकि **ज्योतिषी एवं कर्मकाण्डी ब्राह्मणों को मन्त्र जपादि उपाय करते हुए** अन्य लोगों के शुभाशुभ कर्मों का भार भी वहन करना पड़ता है।

पवित्रीकरण-

(4) स्नानादि के पश्चात् साधक पूर्व या उत्तर की ओर मुँह कर कुशा एवं कंबल के आसन पर बैठ जाएँ। दोनों हाथ की अनामिकाओं में कुशनिर्मित पवित्री-धारण कर लेवें। पवित्री के

शेष पृष्ठ 261 पर देखें

प्रमुख पर्व-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (सन् 2013-14 ई.)

» जनवरी 2013 ई. »

पर्व	तिथि
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. मंग.
अङ्गारकी गणेश चतुर्थी व्र.	1 जन. मंग.
लोहड़ी पर्व	12 जन. शनि
मकर संक्रान्ति	13 जन. रवि
पुण्यस्नानादि माघ संक्रांति	14 जन. सोम
प्रथम शाही स्नान-कुम्भ महापर्व (प्रयाग)	14 जन. सोम
पुत्रदा एकादशी व्रत	22 जन. मंग.
गणतन्त्र दिवस-भारत	26 जन. शनि
पौष पूर्णिमा	27 जन. रवि
माघ स्नान प्रारम्भ	27 जन. रवि
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	30 जन. बुध

» फरवरी »

पर्व	तिथि
महोदय योग (15/20 से)	9 फर. शनि
माघ (मौनी) अमावस	10 फर. रवि
द्वितीय (प्रमुख) शाही स्नान-कुम्भ-महापर्व (प्रयाग)	10 फर. रवि
गौरी तृतीया व्रत	13 फर. बुध
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	13 फर. बुध
वसन्त (श्री) पंचमी)	14 फर. गुरु
सरस्वती पूजन	14 फर. गुरु
तृतीय-शाही स्नान-कुम्भ महापर्व (प्रयाग)	14 फर. गुरु
रथ-आरोग्य सप्तमी	17 फर. रवि
भीष्माष्टमी	18 फर. चंद्र
भीष्म द्वादशी, तिल १२	22 फर. शुक्र
माघ पूर्णिमा	25 फर. चंद्र
माघस्नान समाप्त	25 फर. चंद्र
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	25 फर. चंद्र

» मार्च »

पर्व	तिथि
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	10 मार्च रवि
सोमवती अमावस (फा.)	11 मार्च चंद्र
होलाष्टक प्रारम्भ	19 मार्च मंग.
महाविषुव दिवस	20 मार्च बुध
गोविन्द द्वादशी	24 मार्च रवि
होलिका दहन (भद्रा विचार)	26 मार्च मंग.
फा. पूर्णिमा, होली पर्व	27 मार्च बुध
होलाष्टक समाप्त	27 मार्च बुध
होला मेला (श्रीआनन्दपुर व श्रीपांओटा साहिब)	28 मार्च गुरु
वसन्तोत्सव	28 मार्च गुरु
गुड फ्राइडे (क्रिश्चियन)	29 मार्च शुक्र

» अप्रैल »

पर्व	तिथि
श्रीशीतलाष्टमी व्रत	3 अप्रै. बुध
वारुणी पर्व	7 अप्रै. रवि
वि. संवत् 2069 पूर्ण	10 अप्रै. बुध
वि. संवत् 2070 प्रा.	11 अप्रै. गुरु
चैत्र (वासन्त) नवरात्रे प्रा.	11 अप्रै. गुरु
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. शनि
गौरी तृतीया (गणगौर)	13 अप्रै. शनि
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	15 अप्रै. सोम
स्कन्द षष्ठी	16 अप्रै. मंग.
श्रीदुर्गाष्टमी	18 अप्रै. गुरु
श्रीरामनवमी	19 अप्रै. शुक्र
वासन्त नवरात्रे समाप्त	19 अप्रै. शुक्र
श्रीमहावीर जयन्ती	24 अप्रै. बुध
चैत्र-पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रा.	25 अप्रै. गुरु
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य)	25 अप्रै. गुरु

» मई »

पर्व	तिथि
मई (मज़दूर) दिवस	1 मई बुध
भगवान् परशुराम जयं.	12 मई रवि
अक्षय तृतीया	13 मई सोम
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं.	15 मई बुध
श्रीगङ्गा जयन्ती	17 मई शुक्र
जानकी जयं. (सीता ९)	19 मई रवि
श्रीबगुलामुखी जयंती	19 मई रवि
श्रीनृसिंह जयन्ती	23 मई गुरु
श्रीकूर्म जयन्ती	24 मई शुक्र
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा	25 मई शनि
वैशाखस्नान समाप्त	25 मई शनि

» जून »

पर्व	तिथि
अपरा, भद्रकाली एकादशी	4 जून मंग.
ज्येष्ठ (भावुका) अमा.	8 जून शनि
वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष)	8 जून शनि
शनैश्चर जयन्ती	8 जून शनि
रम्भा तृतीया व्रत	11 जून मंग.
श्रीदुर्गाष्टमी	17 जून सोम
श्रीगङ्गा-दशहरा (हरिद्वार)	18 जून मंग.
निर्जला एकादशी व्रत	20 जून गुरु
सा. दक्षिणायन प्रा.	21 जून शुक्र
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा)	23 जून रवि
सन्त कबीर जयन्ती	23 जून रवि

» जुलाई »

पर्व	तिथि
सोमवती अमावस	8 जुला. सोम
श्रीजगन्नाथ यात्रा (पुरी)	10 जुला. बुध
कुमार षष्ठी	14 जुला. रवि
विवस्वत सप्तमी	15 जुला. सोम
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. मंग.
हरिशयनी एकादशी	19 जुला. शुक्र
चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा.	19 जुला. शुक्र
कोकिला व्रत	22 जुला. सोम
शिवशयनोत्सव	22 जुला. सोम
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	22 जुला. सोम

» अगस्त »

पर्व	तिथि
श्रावण (हरियाली) अमा.	6 अग. मंग.
मे. चिन्तपूर्णी (हि.प्र.) प्रा.	7 अग. बुध
मधुस्रवा, हरियाली तीज	9 अग. शुक्र
नाग-पंचमी	11 अग. रवि
श्रीदुर्गाष्टमी (मे. चिन्तपूर्णी)	14 अग. बुध
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. गुरु
श्रावणी उपाकर्म	20 अग. मंग.
रक्षा-बन्धन (राखी) (देखें पृष्ठ 81)	20/21 अग. मं./बु.
श्रावण पूर्णिमा	21 अग. बुध
श्रीगणेश बहुला चतुर्थी	24 अग. शनि
चन्दन षष्ठी व्रत	26 अग. सोम
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत	28 अग. बुध
दूर्वाष्टमी व्रत	28 अग. बुध
गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	28 अग. बुध
श्रीगुग्गा नवमी	29 अग. गुरु

» सितम्बर »

पर्व	तिथि
वत्स द्वादशी (पूजा)	2 सितं. सोम
कुशाग्रहणी, पिठोरी अमा.	5 सितं. गुरु
साम-उपाकर्म (हस्त नक्षत्रे)	7 सितं. शनि
हरितालिका तृतीया	8 सितं. रवि
सिद्धि विनायक व्रत	9 सितं. चंद्र
कलंक चतुर्थी, पत्थर चौथ	9 सितं. चंद्र
ऋषि पंचमी व्रत	10 सितं. मंग.
सूर्य षष्ठी व्रत	11 सितं. बुध
सन्तान सप्तमी व्रत	11 सितं. बुध
श्रीराधाष्टमी	12 सितं. गुरु
श्रीमहालक्ष्मी व्रत (सू.उ.)	13 सितं. शुक्र
श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन)	14 सितं. शनि
श्रीवामन जयन्ती	16 सितं. सोम
अनन्त चतुर्दशी व्रत	18 सितं. बुध
मे. बाबा सोढल (जालंधर)	18 सितं. बुध
प्रोष्ठपदी, पूर्णिमा श्राद्ध	19 सितं. गुरु
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रा.	20 सितं. शुक्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.	27 सितं. शुक्र
जीवित्पुत्रिका व्रत	27 सितं. शुक्र

» अक्तूबर »

पर्व	तिथि
महात्मा गाँधी जयंती	2 अक्तू. बुध
सर्वपितृ श्राद्ध	4 अक्तू. शुक्र
महालय श्राद्ध समाप्त	4 अक्तू. शुक्र
शरद् नवरात्रे प्रारंभ	5 अक्तू. शनि
उपाङ्ग ललिता व्रत	9 अक्तू. बुध
सरस्वती आवाहन	10 अक्तू. गुरु
सरस्वती पूजन	11 अक्तू. शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी	12 अक्तू. शनि
सरस्वती बलिदान	12 अक्तू. शनि
महानवमी, नवरात्रे समा.	13 अक्तू. रवि
सरस्वती विसर्जन	13 अक्तू. रवि
विजयादशमी (दशहरा)	13 अक्तू. रवि
भरत मिलाप	14 अक्तू. चंद्र
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. गुरु
शरद् पूर्णिमा व्रत	18 अक्तू. शुक्र
महर्षि वाल्मीकि जयं.	18 अक्तू. शुक्र
कोजागर व्रत	18 अक्तू. शुक्र
कार्तिक स्नान प्रारम्भ	18 अक्तू. शुक्र
व्रत करवा चौथ	22 अक्तू. मंग.
अहोई अष्टमी व्रत	26 अक्तू. शनि
अहोई अष्टमी व्रत (पं.)	27 अक्तू. रवि
गोवत्स द्वादशी	31 अक्तू. गुरु

» नवम्बर »

पर्व	तिथि
श्रीहनुमान जयन्ती	1 नवं. शुक्र
धन त्रयोदशी	1 नवं. शुक्र
नरक चतुर्दशी	2 नवं. शनि
श्रीमहालक्ष्मी पूजन	3 नवं. रवि
दीपावली	3 नवं. रवि
विश्वकर्मा पूजा (पं.)	4 नवं. चंद्र
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा	4 नवं. चंद्र
यमद्वितीया, भाई-दूज	5 नवं. मंग.
विश्वकर्मा पूजन	5 नवं. मंग.
सूर्य षष्ठी व्रत (बिहा.)	8 नवं. शुक्र
गोपाष्टमी	10 नवं. रवि
अक्षय नवमी	11 नवं. सोम
देवप्रबोधिनी एकादशी	13 नवं. बुध
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	13 नवं. बुध
भीष्मपंचक प्रारम्भ	13 नवं. बुध
तुलसी विवाह	13/14 नवं. बु./गु.

वैकुण्ठ चतुर्दशी	15 नवं. शुक्र
कार्तिक पूर्णिमा	17 नवं. रवि
श्रीगुरु नानक जयंती	17 नवं. रवि
भीष्मपंचक समाप्त	17 नवं. रवि
पद्मक योग	17 नवं. रवि
कालभैरवाष्टमी	25 नवं. चंद्र

» दिसम्बर »

सोमवती मार्ग. अमावस	2 दिसं. सोम
स्कन्द (गुह) षष्ठी	8 दिसं. रवि
मित्र (विष्णु) सप्तमी	9 दिसं. सोम
मोक्षदा एकादशी व्रत	13 दिसं. शुक्र
श्रीगीता जयन्ती	13 दिसं. शुक्र
पिशाचमोचन श्राद्ध	15 दिसं. रवि
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	16 दिसं. सोम
सायन उत्तरायण प्रा.	21 दिसं. शनि
क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. बुध

» जनवरी-2014 ई. »

इंग्लिश नववर्ष प्रारंभ	1 जन. बुध
पुत्रदा एकादशी व्रत	11 जन. शनि
लोहड़ी पर्व	13 जन. सोम
मकर संक्रान्ति	14 जन. मंग.
पौष पूर्णिमा	16 जन. गुरु
माघस्नान प्रारम्भ	16 जन. गुरु
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	19 जन. रवि
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. रवि
माघ (मौनी) अमावस	30 जन. गुरु

» फरवरी »

गौरी तृतीया व्रत	2 फर. रवि
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	2 फर. रवि
वसन्त पंचमी, श्रीपंचमी	4 फर. मंग.
सरस्वती पूजन	4 फर. मंग.
रथ-आरोग्य सप्तमी	6 फर. गुरु
भीष्माष्टमी	7 फर. शुक्र
भीष्मद्वादशी, तिल १२	11 फर. मंग.
माघ पूर्णिमा	14 फर. शुक्र
माघस्नान समाप्त	14 फर. शुक्र
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	14 फर. शुक्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	27 फर. गुरु

» मार्च-2014 ई. »

होलाष्टक प्रारम्भ	8 मार्च शनि
अन्नपूर्णा अष्टमी	8 मार्च शनि
होलिका दहन (भद्रा बाद)	16 मार्च रवि
होलाष्टक समाप्त	16 मार्च रवि
पूर्णिमा, होली पर्व	16 मार्च रवि
होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पाओंटा साहिब)	17 मार्च सोम
वसन्तोत्सव	17 मार्च सोम
महाविषुव दिवस	20 मार्च गुरु
शीतलाष्टमी व्रत	24 मार्च सोम
वि. संवत् 2070 पूर्ण	30 मार्च रवि

एकादशी व्रत-2013-14 ई.

'धर्मसिंधु' अनुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी से युक्त एकादशी हो तो विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

सर्वसाधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है।

सफला (पौष कृष्ण)	8 जन. मंग.
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	22 जन. मंग.
षट्तिला (माघ कृष्ण)	6 फर. बुध
जया (माघ शुक्ल)	21 फर. गुरु
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	8 मार्च शुक्र
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	23 मार्च शनि
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	6 अप्रै. शनि
कामदा (चैत्र शुक्ल)	22 अप्रै. सोम
वरूथिनी (वैशाख कृष्ण)	5 मई रवि
मोहिनी (वैशाख शुक्ल)	21 मई मंग.
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	4 जून मंग.
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	20 जून गुरु
योगिनी (आषाढ़ कृष्ण)	3 जुला. बुध
देवशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	19 जुला. शुक्र
कामिका (श्रावण कृष्ण)	2 अग. शुक्र
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	17 अग. शनि
अजा (भाद्रपद कृष्ण)	1 सितं. रवि
पद्मा (भाद्र शुक्ल) स्मार्त	15 सितं. रवि
पद्मा (भाद्र. शुक्ल) वैष्णव	16 सितं. चंद्र
इन्दिरा (आश्विन कृ.) स्मार्त	30 सितं. चंद्र
इन्दिरा (आश्विन कृ.) वैष्णव	1 अक्तू. मंग.
पापांकुशा (आश्वि. शुक्ल)	15 अक्तू. मंग.
रमा (कार्तिक कृष्ण)	30 अक्तू. बुध
देवप्रबोधिनी (कार्तिक शु.)	13 नवं. बुध
उत्पन्ना (मार्ग. कृष्ण)	29 नवं. शुक्र
मोक्षदा (मार्ग. शुक्ल)	13 दिसं. शुक्र
सफला (पौष कृष्ण) स्मार्त	28 दिसं. शनि
सफला (पौष कृष्ण) वैष्णव	29 दिसं. रवि

(सन् 2014 ई.)

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	11 जन. शनि
षट्तिला (माघ कृष्ण)	27 जन. चंद्र
जया (माघ शुक्ल)	10 फर. चंद्र
विजया (फाल्गुन कृष्ण) स्मार्त	25 फर. मंग.
विजया (फाल्गुन कृष्ण) वैष्णव	26 फर. बुध
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	12 मार्च बुध
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	27 मार्च गुरु

श्रीसत्यनारायण व्रत

श्रीसत्यनारायण व्रत का पूर्णमाशी के स्नान, दानादि उदयव्यापिनी के पर्वकालीन तारीख से कभी-कभी एक तारीख का अन्तर पड़ सकता है। क्योंकि चन्द्रोदय कालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष	26 जन. शनि
माघ	25 फर. चंद्र
फाल्गुन	26 मार्च मंग.
चैत्र	25 अप्रै. गुरु
वैशाख	24 मई शुक्र
ज्येष्ठ (देखें पृष्ठ 81)	22 जून शनि
आषाढ़	22 जुला. सोम
श्रावण	20 अग. मंग
भाद्रपद	18 सितं. बुध
आश्विन	18 अक्तू. शुक्र
कार्तिक	17 नवं. रवि
मार्गशीर्ष	16 दिसं. चंद्र

——(सन् 2014 ई.)——

पौष	15 जन. बुध
माघ	14 फर. शुक्र
फाल्गुन	16 मार्च रवि

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल सन् 2013-14 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	13 जन. रवि	30-59	अगले दिन दुपै. 13/23 तक
फागुन संक्रान्ति	12 फर. मंग.	20-01	मध्याह्न बाद
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च गुरु	16-56	प्रात: 10/30 से सूर्यास्त तक
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. शनि	25-28	अगले दिन प्रात: 7/52 तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई मंग.	22-21	मध्याह्न बाद
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून शुक्र	28-56	अगले दिन दोप. 11/20 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. मंग.	15-46	प्रात: 9/22 से
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग. शुक्र	24-08	अगले दिन प्रात: 6/32 तक
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. चंद्र	24-03	अगले दिन प्रात: 6/27 तक
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. गुरु	12-00	सूर्योदय से
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं. शनि	11-48	सूर्योदय से
पौष संक्रान्ति	15 दिसं. रवि	26-28	अगले दिन प्रात: 8/52 तक
माघ संक्रान्ति (14)	14 जन. मंग.	13-13	प्रात: 6/49 से
फागुन संक्रान्ति	12 फर. बुध	26-13	अगले दिन प्रात: 8/37 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शुक्र	23-06	मध्याह्न बाद

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

पौष	11 जन. शुक्र
माघ	10 फर. रवि
फाल्गुन (सोमवती)	11 मार्च चंद्र
चैत्र	10 अप्रै. बुध
वैशाख	9 मई गुरु
ज्येष्ठ (शनैश्चरी)	8 जून शनि
आषाढ़ (सोमवती)	8 जुला. चंद्र
श्रावण (भौमवती)	6 अग. मंग.
भाद्रपद	5 सितं. गुरु
आश्विन	4 अक्तू. शुक्र
कार्तिक	3 नवं. रवि
मार्गशीर्ष (सोमवती)	2 दिसं. चंद्र

——(सन् 2014 ई.)——

पौष	1 जन. बुध
माघ (मौनी)	30 जन. गुरु
फाल्गुन (शनैश्चरी)	1 मार्च शनि
चैत्र	30 मार्च रवि

-श्रीगणेश चतुर्थी व्रत-

पौष (अंगारकी)	1 जन. मंग.
माघ कृ. (संकटचौथ)	30 जन. बुध
माघ शु. (तिलचतुर्थी)	13 फर. बुध
फाल्गुन	1 मार्च शुक्र
चैत्र	30 मार्च शनि
वैशाख	28 अप्रै. रवि
ज्येष्ठ (अङ्गारकी)	28 मई मंग.
आषाढ़	26 जून बुध
श्रावण	25 जुला. गुरु
भाद्रपद	24 अग. शनि

आश्विन	22 सितं. रवि
कार्तिक (करवा) अङ्गारकी	22 अक्तू. मंग.
मार्गशीर्ष	21 नवं. गुरु
पौष	21 दिसं. शनि
(सन् 2014 ई.)	
माघ कृ. (संकटचौथ)	19 जन. रवि
माघ शु. (तिलचतुर्थी)	2 फर. रवि
फाल्गुन (अङ्गारकी)	18 फर. मंग.
चैत्र	20 मार्च गुरु

पितृपक्ष में श्राद्ध-2013 ई.

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2013 ई. में श्राद्ध की तिथियों का विवरण—

पूर्णिमा का श्राद्ध	19 सितं. गुरु
प्रतिपदा का श्राद्ध	20 सितं. शुक्र
द्वितीया का श्राद्ध	21 सितं. शनि
तृतीया का श्राद्ध	21 सितं. शनि
चतुर्थी का श्राद्ध	23 सितं. चंद्र
पंचमी का श्राद्ध	24 सितं. मंग.
षष्ठी का श्राद्ध	25 सितं. बुध
सप्तमी का श्राद्ध	26 सितं. गुरु
अष्टमी का श्राद्ध	27 सितं. शुक्र
नवमी का श्राद्ध	28 सितं. शनि
दशमी का श्राद्ध	29 सितं. रवि
एकादशी का श्राद्ध	30 सितं. चंद्र
द्वादशी का श्राद्ध	1 अक्तू. मंग.
त्रयोदशी का श्राद्ध	2 अक्तू. बुध
✤चतुर्दशी का श्राद्ध	3 अक्तू. गुरु
अमावस का श्राद्ध	4 अक्तू. शुक्र
सर्वपितृ श्राद्ध	4 अक्तू. शुक्र

✤ = चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में मृतों का श्राद्ध अमावस्या में करने का विधान है।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	17 फर. रवि
श्रीहोलिका दहन	26 मार्च मंग.
श्रीभगवतनारायण जयं.	30 मार्च शनि

रामनवमी पर्व	19 अप्रै. शुक्र
वैशाखी पर्व	13 अप्रै. शनि
जानकी जयन्ती	19 मई रवि
गंगा दशहरा	18 जून मंग
गुरु पूर्णिमा	22 जुला. चंद्र
तुलसी जयन्ती पर्व	13 अग. मंग.
कृष्ण जयन्ती पर्व	28-30 अग.
वामन जयन्ती	16 सितं. चंद्र
शरद् पूर्णिमा व्रत	18 अक्तू. शुक्र
महंत गु. गोबिन्ददास जयं.	27 अक्तू. रवि

प्रदोष व्रत-2013-14 ई.

पौष कृष्ण	9 जन. बुध
पौष शुक्ल	24 जन. गुरु
माघ कृष्ण	8 फर. शुक्र
माघ शुक्ल	23 फर. शनि
फाल्गुन कृष्ण	9 मार्च शनि
फाल्गुन शुक्ल	24 मार्च रवि
चैत्र कृष्ण	7 अप्रै. रवि
चैत्र शुक्ल (भौम)	23 अप्रै. मंग.
वैशाख कृष्ण (भौम)	7 मई मंग.
वैशाख शुक्ल	22 मई बुध
ज्येष्ठ कृष्ण	5 जून बुध
ज्येष्ठ शुक्ल	21 जून शुक्र
आषाढ़ कृष्ण	5 जुला. शुक्र
आषाढ़ शुक्ल	20 जुला. शनि
श्रावण कृष्ण	4 अग. रवि
श्रावण शुक्ल	18 अग. रवि
भाद्रपद कृष्ण (सोम)	2 सितं. सोम
भाद्रपद शुक्ल (भौम)	17 सितं. मंग.
आश्विन कृष्ण	2 अक्तू. बुध
आश्विन शुक्ल	16 अक्तू. बुध
कार्तिक कृष्ण	1 नवं. शुक्र
कार्तिक शुक्ल	15 नवं. शुक्र
मार्गशीर्ष कृष्ण	30 नवं. शनि
मार्गशीर्ष शुक्ल	14 दिसं. शनि
पौष कृष्ण (सोम)	30 दिसं. सोम
(सन् 2014 ई.)	
पौष शुक्ल (सोम प्रदोष)	13 जन. सोम
माघ कृष्ण (भौम)	28 जन. मंग.
माघ शुक्ल	12 फर. बुध
फाल्गुन कृष्ण	27 फर. गुरु
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण	28 मार्च शुक्र

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. शनि
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. बुध
लाला लाजपतराय जी	28 जन. चंद्र
स्व. विवेकानन्द (मतान्तरे)	3 फर. रवि
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	3 फर. रवि
सिद्ध बा. लाल दयाल जी	12 फर. मंग.
श्रीगुरु रविदास जी	25 फर. चंद्र
गुरु रामदास जी	6 मार्च बुध
स्वामी दयानन्द सरस्वती	7 मार्च गुरु
श्रीरामकृष्ण परमहंस	13 मार्च बुध
शहीदी स. भगत सिंह	23 मार्च शनि
श्रीचैतन्य महाप्रभु	27 मार्च बुध
सन्त तुकाराम जी	29 मार्च शुक्र
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. रवि
श्रीमहावीर	24 अप्रै. बुध
श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई मंग.
श्रीछत्रपति शिवाजी	12 मई रवि
भगवान् परशुराम	12 मई रवि
आद्यगुरु शंकराचार्य जी	15 मई बुध
स्वामी रामानुजाचार्य	16 मई गुरु
महात्मा बुद्ध	25 मई शनि
श्रीनारद जयन्ती	26 मई रवि
श्रीमहाराणा प्रताप	11 जून मंग
सन्त कबीर जयं.	23 जून रवि
श्रीध्यानू भगत	24 जून सोम
ऋषि वेदव्यास	22 जुला. सोम
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. मंग.
लोकमान्य तिलक-स्मरण	1 अग. गुरु
गोस्वा. तुलसीदास जी	13 अग. मंग.
सन्त ज्ञानेश्वर	28 अग. बुध
भक्त नवल (जोधपुर)	28 अग. बुध
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. रवि
श्रीचन्द्र महाराज (उदासीन)	14 सितं. शनि
महात्मा गांधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. बुध
महाराजा अग्रसेन	5 अक्तू. शनि
श्रीमाधवाचार्य जी	14 अक्तू. चंद्र
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. मंग.
श्रीधनवन्तरी	1 नवं. शुक्र
श्रीहनुमान	1 नवं. शुक्र
श्रीविश्वकर्मा जयं.	5 नवं. मंग.
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. बुध
श्रीजवाहरलाल नेहरू	14 नवं. गुरु
श्री वीर वैरागी	15 नवं. शुक्र
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. रवि
श्रीगुरु नानकदेव जी	17 नवं. रवि
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. मंग.
श्रीदत्तात्रेय जयंती	16 दिसं. चंद्र
(सन् 2014 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. रवि
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. गुरु
स्वा. विवेकानन्द (मतान्तरे)	23 जन. गुरु
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	23 जन. गुरु
लाला लाजपतराय जी	28 जन. मंग.
सिद्ध बा. लालदयाल जी	1 फर. शनि
श्रीगुरु रविदास जी	14 फर. शुक्र
गुरु रामदास जी	24 फर. चंद्र
स्वामी दयानन्द सरस्वती	24 फर. चंद्र
श्री रामकृष्ण परमहंस	3 मार्च चंद्र
श्री चैतन्य महाप्रभु	16 मार्च रवि
सन्त तुकाराम जी	18 मार्च मंग.
शहीदी स. भगत सिंह	23 मार्च रवि

राष्ट्रीय दिवस

थल सेना दिवस	15 जन.
राष्ट्रीय बालिका दिवस	24 जन.
तटरक्षक दिवस	1 फर.
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फर.
महिला दिवस	8 मार्च
उपभोक्ता अधिकार	14 मार्च
विश्व विकलांग दिवस	20 मार्च
मौसम विज्ञान दिवस	23 मार्च
विश्व स्वास्थ्य दिवस	7 अप्रै.
पृथ्वी दिवस	22 अप्रै.
मज़दूर (श्रमिक) दिवस	1 मई
मातृ-दिवस	13 मई
रक्तदान दिवस	5 जून
फादर्स-डे	17 जून
डाक्टर्स दिवस	1 जुला.
विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुला.
संस्कृत दिवस	21 अग.
हिन्दी दिवस	14 सितं.

दशमहाविद्या जयन्ती

श्रीमहातारा जयन्ती	20 अप्रै. शनि
श्रीमातङ्गी जयन्ती	13 मई चंद्र
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	19 मई रवि
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	25 मई शनि
श्रीधूमावती जयन्ती	17 जून चंद्र
श्रीमहाकाली जयन्ती	28 अग. बुध
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	16 सितं. चंद्र
श्रीकमला जयन्ती	21 अक्तू. चंद्र
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	17 दिसं. मंग.
श्रीललिता जयन्ती	14 फर. (2014)

दशावतार जयन्तियां-2013 ई.

श्रीमत्स्यावतार जयन्ती	13 अप्रै. शनि
श्रीरामावतार जयन्ती	19 अप्रै. शुक्र
श्रीपरशुराम जयन्ती	12 मई रवि
श्रीनृसिंहावतार जयन्ती	23 मई गुरु
श्रीकूर्मावतार जयंती	24 मई शुक्र
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	25 मई शनि
श्रीकल्कि अवतार	12 अग. चंद्र
श्रीकृष्णावतार	28 अग. बुध
श्रीवाराहावतार	8 सितं. रवि
श्रीवामनावतार	16 सितं. चंद्र

मास-शिवरात्रि व्रत-2013-14

पौष	10 जन. गुरु
माघ	8 फर. शुक्र
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	10 मार्च रवि
चैत्र	8 अप्रै. चंद्र
वैशाख	8 मई बुध
ज्येष्ठ	5 जून बुध
आषाढ़	6 जुला. शनि
श्रावण	5 अग. चंद्र
भाद्रपद	3 सितं. मंग.
आश्विन	3 अक्तू. गुरु
कार्तिक	2 नवं. शनि
मार्गशीर्ष	1 दिसं. रवि
पौष	30 दिसं. चंद्र
—(सन् 2014 ई.)—	
माघ	29 जन. बुध
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	27 फर. गुरु
चैत्र	29 मार्च शनि

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले—सन् 2013 ई.

मेला	तिथि
मरोज पर्व (जौनसार) उत्तरां.	11 जन.
मेला लोहड़ी (पं.)	12 जन.
मे. दांऊ (चण्डीगढ़) मोहाली	12 जन.
बिन्दरख (रोपड़) (पं.)	12-13 जन.
मे. माघी (मुक्तसर) पं.	13 जन.
मे. मस्तुआणा (पं.) (बर. सन्त अतर सिंह मस्तुआणा)	31 जन.
मे. कुम्भ-महापर्व प्रमुख -स्नान (प्रयागराज) उ.प्र.	10 फर.
मे. मौनी अमावस (हरिद्वार आदि) उत्तरां.	10 फर.
मे. वसन्त पंचमी	14 फर.
मे. जैसलमेर (राज.)	23-25 फर.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	24-25 फर.
माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	25 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	10 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	10 मार्च
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	19-27 मार्च
मे. सावातिल्ला	25 मार्च
होला मेला (श्रीआनन्दपुर सा.) पं.	28 मार्च
मेला होली, ठाकुरद्वारा जमशेर	28 मार्च
भण्डा स्वा. संतदास, जालन्धर	30 मार्च
श्रीगुरुरामराय (देहरादून) उ.खण्ड	31 मार्च
नवचण्डी (मेरठ) यू.पी.	31 मार्च
श्रीवीरमदास बधौछी (पटियाला)	2 अप्रै.
मे. शीतलामाता (कुराली) पं.	2-3 अप्रै.
वैशाखी मेला-श्रीलक्ष्मण -चौतरा, हाँसी (हरि.)	3-13 अप्रै.
पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	9 अप्रै.
मे. चीमा (नानकसर)	11 अप्रै.
मेला नवरात्रे-मनसादेवी (हरिद्वार व पंचकूला)	11-19 अप्रै.
गौरी तृतीया (जयपुर) राज.	13 अप्रै.
मे. वैशाखी (पं.)	13 अप्रै.
मे. रामथनदास (फाजिल्का)	13 अप्रै.
मे. डुंगरा डांडा, नागी-बागीथार (उत्तराखण्ड)	16 अप्रै.
माईसरखाना (बठिण्डा) पं.	16 अप्रै.
मेला काँसादेवी (चण्डीगढ़)	24-25 अप्रै.
वीर केसरीचन्द मेला-चौलीथात (चकराता) उ.खण्ड	3 मई
मे. पिंजौर (हरियाणा)	9 मई
चारधाम यात्रा प्रारम्भ	13 मई
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	17 मई
जोड़ मेला-संत खुशीराम जी गाँव-भरोमजारा, नवांशहर पं.	23-24 मई
मे. जखोली (उत्तराखण्ड)	2 जून
मे. भद्रकाली-कपूरथला (पं.)	4 जून
साईं टेऊँराम पुण्यतिथि भूपतवाला रोड, हरिद्वार	14 जून
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	18 जून
रथयात्रा उत्सव, पुरी, उड़ीसा	10 जुला.
साईं टेऊँराम जयंती, सप्तसरोवर भूपतवाला रोड, हरिद्वार	14 जुला
मे. श्रावण कांवड़ (नीलकंठ) उत्तरां.	16 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	22 जुला.
मे. काहनूवाल (गुरदासपुर)	22 जुला.
मे. नाग-पंचमी (राज.-बंगाल)	27 जुला.
मे. नुणाई (जौनसार बावर) उत्तरां.	4 अग.
पं. जोगराज (जंडियाला)	5-6 अग.
सिंघारा तीज	9 अग.
गौरी तीज-जयपुर (राज.)	9 अग.
मे. भद्रराज (जौनसर) उत्तरां.	16 अग.
जयन्ती-देवी (मुल्लापुर)-गरीबदास, चण्डीगढ़	20-21 अग.
मे. बग्गी-देहरी-कण्डे लालोवाल, गुरदासपुर	20-21 अग.
जोड़ मेला 108 संत मेलाराम जी भरोमजारा, राहुआं, नवांशहर	27-28 अग.
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व (मथुरा)	28 अग.
मे. गुग्गा नवमी (अम्बाला)	29 अग.
गुग्गा जाहिरपीर, नकोदर (पं.)	29 अग.
गोगामेड़ी, श्रीगंगानगर, राज.	29 अग.
मे. सुथरेशाह (दिल्ली)	5 सितं.
गोसाईआणा (कुराली) पं.	7 सितं.
रामदेव रोणेचा (जोधपुर) राज.	14 सितं.
वामन द्वादशी (अम्बाला)	16 सितं.
मे. छपार, मलेरकोटला, पं.	17-19 सितं.
मे. बाबा सोढल (जालन्धर)	18 सितं.
मे. गोईन्दवाल (पं.)	19 सितं.
मे. गुग्गापीर (लुधियाना)	19 सितं.
मे. आशापूर्णी (पठानकोट)	5-13 अक्तू.
अचलेश्वर (बटाला)	12-13 नवं.
मे. जन्म वीरवैरागी (नकोदर)	15 नवं.
मे. बग्गी देहरी, गाँ-कण्डे-लालोवाल (गुरदासपुर)	16-17 नवं.
मे. रामतीर्थ (अमृतसर)	16-17 नवं.
कपालमोचन (हरियाणा)	17 नवं.
मे. श्रीगढ़गंगा, पुष्कर तीर्थ	17 नवं.
भण्डारा संत प्रीतमदास, जालंधर	30 नवं.
पुरानी दीपावली-जौनसार, जौनपुर (उत्तरां.)	3 दिसं.
मे. चमकौर साहिब	26-28 दिसं.
मे. जोड़-फतेहगढ़ सा. प्रा.	26 दिसं.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम भूपतवाला (हरिद्वार)-2013

पर्व	तिथि
स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती	14 फर.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	30 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	27 अप्रै.
श्री स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	11 मई
महामंड. गुरु प्रेमानन्दजी जयन्ती	22 जुला
निर्वाण गुरु प्रेमानन्द जी	11 अग.

जम्मू-कश्मीर के मेले

मेला	तिथि
लोहड़ी पर्व	12 जन.
मे. शिवरात्रि (पंजवटी-दवलैहड़)	10 मार्च
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	8-9 अप्रै.
गुप्तगंगा, कफी-अखनूर	9 अप्रै.
नवरात्रे पर्व	11-19 अप्रै.
गुरुगद्दी 1008 सतगुरु बाबा कांशीगिरजी(सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	18 अप्रै.
मे. रामबन	19-20 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	23 मई
मे. मानसर	15-16 जून
मे. क्षीर (खीर) भवानी	17 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	23 जून
मे. शरीक भवानी	17 जुला.
मे. हरिप्रयाग (बनी)	19 जुला.
मे. ज्वालामुखी	21 जुला.
मे. रुद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	22 जुला.
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	20 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य	20-21 अग.
मे. रामबन	28 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	3-4 सितं.
मेला पात (भद्रवाह)	10-12 सितं.
मे. आशापति (मार्तण्ड)	3-4 अक्तू.
मे. झिड़ी बाबा	17 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	2 दिसं.

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) के मुख्य पर्व—2013 ई.

पर्व	तिथि
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	12 फर. मं.
वसन्त-पंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	14 फर. गु.
होलिका दहन	26 मार्च मं.
श्रीरामनवमी पर्व	19 अप्रै. शु.
वैशाखी पर्व	13 अप्रै. श.
महंत नारायणदास जयं.	29 मई बु.
व्यास पूजा	22 जुला. चं.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी	28 अग. बु.
विजयादशमी (दशहरा)	13 अक्तू. र.
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. शु.
दीपावली पर्व	3 नवं. र.

(सन् 2014 ई.)

पर्व	तिथि
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	1 फर. श.
वसन्त पंचमी	4 फर. मं.

तपोभूमि श्रीबाबा निकोदरदास धर्मशाल महन्ता, अम्ब, ऊना

पर्व	तिथि
लोहड़ी पर्व	12 जन. श.
मकर संक्रान्ति	13 जन. र.
श्रीमहाशिवरात्रि	10 मार्च र.
चैत्र नवरात्रे	11 अप्रै. गु.
वैशाख संक्रान्ति मेला	13 अप्रै. श.
गुरु पूर्णिमा	22 जुला. चं.
अनन्त चतुर्दशी	18 सितं. बु.
श्राद्ध षष्ठी	25 सितं. बु.
गोपाष्टमी	10 नवं. र.
पंचभीष्म	13-17 नवं.

विशेष नोट— यदि आप अपने स्थानीय ग्राम/नगर/ज़िले का कोई मेला/पर्व सम्मिलित करवाना चाहते हैं, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेज़ी तारीख, जिसके मुताबिक उसे मनाया जाता है-अच्छी तरह विवरण सहित लिखकर भेजें-सम्पादक।

हिमाचल प्रदेश के मेले–सन् 2013 ई.

मेला	तिथि
श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	19 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	14 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	10-19 मार्च
मे. काठगढ़	10 मार्च
मे. रिवालसर (मण्डी)	10 मार्च
स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	10 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	11 मार्च
मे. बाबा बालकनाथ प्रा.	14 मार्च
मे. कनिहरा (धर्मशाला) प्रा.	14 मार्च
मे. नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	20-27 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	27-30 मार्च
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
नयनादेवी (बिलासपुर)	11-19 अप्रै.
बालासुन्दरी (सिरमौर)	11-25 अप्रै.
मारकण्डा (बिलासपुर)	12-15 अप्रै.
मे. नैनादेवी-धर्मपुर-बनवार	12 अप्रै.
मे. ललवाड़ (सुन्दरनगर)	13-18 अप्रै.
मे. राजगढ़ (सिरमौर)	13-15 अप्रै.
कालेश्वर महादेव, देहरा, कांगड़ा	13 अप्रै.
मे. रिवालसर (मण्डी)	13 अप्रै.
मे. बिशू प्रारम्भ	13 अप्रै.
मे. कशाधा हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. त्राम्बली (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. लाहौल (मण्डी)	17 अप्रै.
मे. खनाणी (शिम., कुल्लू)	19-20 अप्रै.
मे. रोहरू (महासू)	22-23 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
चचौहली (जगतसुख) कुल्लू	30 अप्रै.-2 मई
मे. आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. ढुंगरी जातर (मनाली)	14-15 मई
मे. माहूनाग (करसोग)	14-15 मई
मे. घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. बन्जार (कुल्लू)	14-18 मई
मे. शाढ़ी जातर	18-23 मई
पशु मेला (हमीरपुर) प्रा.	20 मई
मे. मनीकरण (कुल्लू)	20-25 मई
मे. हरिदेवी (घुमारवीं)	21 मई
शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मुरारीदेवी (सरकाघाट)	25-27 मई
ग्राम पंजगाई (बिलासपुर)	29-30 मई
स्थूल मढोल	1-4 जून
मे. श्यामाकाली (सरकाघाट)	1 जून
मे. बाड़ी (सोलन)	14 जून
मे. अहल (हमीरपुर)	14 जून
मे. नौवाही देवी (सरकाघाट)	14 जून
भुन्तर मेला (कुल्लू)	**15-17 जून**
टौणी देवी (हमीरपुर)	23 जून
माँ शूलिनी (सोलन)	30 जून
त्रिमौणी (सिरमौर)	7 जुला.
मे. नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली)	21 जुला.
मे. मिंजर (चम्बा) प्रा.	**28 जुला.**
मं. छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	**7-14 अग.**
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	14 अग.
सन्तोषी माता (लदरौर)	16 अग.
मे. गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	29 अग.
मे. बंद्राल (कुल्लू)	29 अग.
अम्बिकादेवी, सदर (मण्डी)	3 सितं.
हिमाचल गणेशोत्सव, अम्बिकानगर-अम्ब (ऊना)	9-18 सितं.
गणपति उत्सव (मण्डी)	9-18 सितं.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा.	11 सितं.
गुग्गा माड़ी, सुबाथू, सोलन	13-14 सितं.
वामन द्वादशी (नाहन)	16 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मे. सायर (अर्की)	16-17 सितं.
मे. नलवाड़ (चिच्योट)	16-23 सितं.
मे. चामुण्डा (काँगड़ा)	5-12 अक्तू.
मेला रामलीला	5-13 अक्तू.
बगुलामुखी (वनखण्डी)	5-13 अक्तू.
तारादेवी (शिमला)	12-13 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	12-13 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन) कांग.	12 अक्तू.
मे. दशहरा (अर्की)	13 अक्तू.
मे. दशहरा (कुल्लू)	**13-18 अक्तू.**
लावी (रामपुर-चिच्चोट)	11-14 नवं.
मे. रेणुका (सिरमौर) नाहन	13-14 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	13-17 नवं.
मे. जोगी पांगा (ऊना)	17 नवं.

विशेष नोट– यदि आप अपने स्थानीय ग्राम/नगर/जिले का कोई मेला/पर्व सम्मिलित करवाना चाहते हैं, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख, जिसके मुताबिक उसे मनाया जाता है–अच्छी तरह विवरण सहित लिखकर भेजें–सम्पादक।

उपयोगी घरेलू नुस्खें

कान दर्द–प्याज का रस गरम करके ४ बूँद कान में डालने से कान के दर्द में आराम होता है।

दाँत दर्द–हल्दी एवं सेंधा नमक समभाग पीस कर सरसों के तेल में मिलाकर सुबह मंजन करने से दाँतों के दर्द में आराम होता है।

सिर दर्द या सर्दी–पीपल के चार कोमल पत्तों का रस चूसिए, सिर दर्द, सर्दी-जुकाम में लाभ होता है।

कब्ज–एक बड़े साइज का नींबू काटकर रात्रि भर ओस में पड़ना रहने दें और प्रातःकाल एक गिलास चीनी के बर्तन में उस नींबी को निचोड़ कर काला नमक मिलाकर पीने से कब्ज में आराम होता है।

मलेरिया बुखार–तुलसी के सात पत्ते और सात दाना काली मिर्च एक साथ चबाने से पाँच बार में मलेरिया में आराम होता है।

जैन व्रत-पर्व व उत्सव (2013-14 ई.)

पर्व	तिथि
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	2 जन. बुध
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	7 जन. चन्द्र
मेरू त्रयोदशी	8 फर. शुक्र
मर्यादा महोत्सव	17 फर. र.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	25-27 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	2 अप्रै. मं.
वरसी तप प्रारम्भ	3 अप्रै. बु.
ओली तप प्रारम्भ	17 अप्रै. बु.
श्रीमहावीर जयन्ती	24 अप्रै. बु.
ओली तप समाप्त	25 अप्रै. गु.
वरसी तप समाप्त	13 मई चं.
ज्ञान दिवस	20 मई चं.
मे. चक्रेश्वरीदेवी (सरहिंद)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम प्रा.	22 जुला. चं.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	22 जुला. चं.
जैन महोत्सव	4-6 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	3 सितं. मं.
सम्वत्सरी महापर्व	10 सितं. मं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	11 सितं. बु.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	14 सितं. श.
श्रीमहावीर निर्वाण	3 नवं. र.
श्रीवीर संवत् 2539 प्रा.	4 नवं. चं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	5 नवं. मं.
ज्ञान पंचमी	7 नवं. गु.
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	17 नवं. र.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	28 नवं. गु.
मौनी एकादशी	13 दिसं. शु.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	22 दिसं. र.
श्रीपार्श्वनाथ जयंती	27 दिसं. शु.
—(सन् 2014 ई.)—	
मेरू त्रयोदशी	29 जन. बु.
मर्यादा महोत्सव	6 फर. गु.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	14-16 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	23 मार्च र.
वरसी तप प्रारम्भ	24 मार्च चं.

❖ मुस्लिम त्यौहार ❖

त्यौहार	तिथि
चेहलुम	3 जन. गुरु
आख़िरी चहार	9 जन. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	11 जन. शुक्र
ईद-ए-मिलाद	25 जन. शुक्र
ईद-ए-मौलाद	30 जन. बुध
ग्यारहवीं शरीफ	22 फर. बुध
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	12-17 मई
जन्म श्रीहजरत अली	24 मई शुक्र
शबे-मिराज	7 जून शुक्र
शबे-बारात	25 जून मंग
रमज़ान (रोज़े शुरु)	11 जुला. गुरु
शहादत-ए-हजरत अली	31 जुला. बुध
जमातुलविदा	2 अग. शुक्र
शबे-कदर	6 अग. मंग.
ईद-उल-फितर	9 अग. शुक्र
ईदुलजुहा (बकरीद)	16 अक्तू. बुध
मुहर्रम (हिजरी 1435 प्रा.)	5 नवं. मंग.
मुहर्रम (ताजिया)	14 नवं. गुरु
चेहलुम	23 दिसं. सोम
(सन् 2014 ई.)	
आख़िरी चहार	1 जन. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	1 जन. बुध
ईद-ए-मिलाद	14 जन. मंग.
ईद-ए-मौलाद	19 जन. रवि
ग्यारहवीं शरीफ	12 फर. बुध

क्रिश्चियन त्यौहार

त्यौहार	तिथि
नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. मंग.
गुड फ्राइडे	29 मार्च शु.
ईस्टर सण्डे	31 मार्च र.
लो (Low) सण्डे	7 अप्रै. र.
रोगेशन सण्डे	5 मई र.
विंटसण्डे-Pentecost	19 मई र.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. बु.
—(सन् 2014 ई.)—	
नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. बु.

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2013-14 ई.)

(इन छुट्टियों को भारत सरकार के गजट की सूची से मिला लें)

छुट्टी	तिथि
मकर संक्रान्ति	13 जन. र.
ईद-ए-मिलाद	25 जन. शु.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. श.
श्रीगुरु रविदास जयंती	25 फर. चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	10 मार्च र.
होला मेला (पं.)	28 मार्च गु.
गुड फ्राइडे	29 मार्च शु.
वैशाखी (पं.)	13 अप्रै. श.
श्रीरामनवमी	19 अप्रै. शु.
श्रीमहावीर जयन्ती	24 अप्रै. बु.
जन्म श्रीहजरत अली (का.)	24 मई शु.
श्रीबुद्ध जयन्ती	25 अप्रै. श.
रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	10 जुला. बु.
शहीदी स: ऊधम सिंह	31 जुला. बु.
जमातुलविदा	2 अग. शु.
ईदुलफितर	9 अग. शु.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. गु.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी	28 अग. बु.
सिद्धि विनायक व्रत (महारा.)	9 सितं. चं.
महात्मा गांधी जयंती	2 अक्तू. बु.
दशहरा	13 अक्तू. र.
ईदुलजुहा (बकरीद)	16 अक्तू. बु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	18 अक्तू. शु.
दीपावली	3 नवं. र.
मुहर्रम (ताजिया)	14 नवं. गु.
श्रीगुरु नानक जयंती	17 नवं. श.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. बु.
(सन् 2014 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन. मं.
ईद-ए-मिलाद	14 जन. मं.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. र.
श्रीगुरु रविदास जयं.	14 फर. शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	27 फर. गु.
होला मेला (पं.)	17 मार्च चं.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि—2013-14 ई.

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कलैण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	17 नवंबर	जन्म से	29 सितंबर	17 नवंबर	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	11 मई	24 सितंबर	14 अप्रैल	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	24 मई	11 अप्रैल	19 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	20 अक्तूबर	17 सितंबर	8 सितंबर	9 अक्तूबर	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जनदेव जी	1 मई	7 सितंबर	12 जून	2 मई	16 सितंबर	12 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	24 जून	1 जून	15 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	23 फर., 13 ई. 12 फर., 14 ई.	8 अप्रै., 13 ई. 28 मार्च, 14 ई.	28 अक्तूबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	31 जुलाई	28 अक्तूबर	24 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	30 अप्रैल	24 अप्रैल	7 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	18 जन., 13 ई. 7 जन., 14 ई.	5 दिसंबर	7 नवंबर	18 जन., 13 ई. 7 जन., 14 ई.	24 नवंबर	7 नवंबर

पर्व	प्राचीन परम्परा अनुसार		नानकशाही कलैण्डर अनुसार	
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार	6 सितं.	17 भादों (ना.शा.)	1 सितं., 2013 ई.
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार	5 नवं.	पुरातन परम्परा अनुसार ही	5 नवंबर, 2013 ई.
खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे अनुसार	13 अप्रैल	1 वैशाख (ना. शा.)	13 अप्रैल, 2013 ई.

वि. संवत् २०७० में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–गुरु | **वर्ष का मन्त्री–शनि**

- वि. संवत् (पराभव) २०७० का शुभारम्भ = 11 अप्रैल, गुरुवार
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,114 वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = 1,95,58,85,114 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,886 वर्ष
- २०७० में कलि वर्ष = 5114वां वर्ष (12 अगस्त, सोमवार, 2013 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5249 प्रा., (28 अग., बुधवार, 2013 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5089 प्रारम्भ = 11 अप्रैल, गुरुवार, 2013 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2637 प्रा., = 25 मई, शनिवार, 2013 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2539 प्रा. = 3 नवंबर, रविवार
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2014 प्रारम्भ = 1 जनवरी, बुधवार
- शाका संवत् 1936 प्रा. = 22 मार्च, शनिवार, 2014 ई.
- हिजरी सन् 1435 (मुस्लिम) प्रा. = 5 नवम्बर, मंगलवार
- बंगाली सन् 1420 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, रविवार, 2013 ई.
- नानकशाही संवत् 545 प्रारम्भ = 14 मार्च, गुरुवार, 2013 ई.
- खालसा संवत् 315 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, शनिवार, 2013 ई.
- जय हिन्द संवत् 67वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, गुरुवार, 2013 ई.
- पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 138वाँ = 11 अप्रैल, गुरुवार, 2013 ई.

सन् 2013-14 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा आदि—एक दृष्टि में

(मास) 2013-14 ↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य-नारायण व्रत	पूर्णिमा (स्नान दा.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदान)
जनवरी	13 (माघ)	8, 22	9, 24	26	27	1, 30	11
फरवरी	12 (फाल्गु.)	6, 21	8, 23	25	25	–	10
मार्च	14 (चैत्र)	8, 23	9, 24	26	27	1, 30	11
अप्रैल	13 (वैशा.)	6, 22	7, 23	25	25	28	10
मई	14 (ज्ये.)	5, 21	7, 22	24	25	28	9
जून	14 (आषा.)	4, 20	5, 21	22	23	26	8
जुलाई	16 (श्राव.)	3, 19	5, 20	22	22	25	8
अगस्त	16 (भाद्र.)	2, 17	4, 18	20	21	24	6
सितम्बर	16 (आश्वि.)	1, 16, 30 (स्मा.)	2, 17	18	19	22	5
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	1 (वै.), 15, 30	2, 16	18	18	22	4
नवम्बर	16 (मार्ग.)	13, 29	1,15,30	17	17	21	3
दिसम्बर	15 (पौष)	13, 29 (वै.)	14, 30	16	17	21	2
जनवरी (14)	14 (माघ)	11, 27	13, 28	15	16	19	1, 30
फरवरी	12 (फाल्गु.)	10, 26 (वै.)	12, 27	14	14	18	–
मार्च	14 (चैत्र)	12, 27	14, 28	16	16	20	1, 30

आगामी वि. संवत् २०७१ के प्रमुख व्रत-पर्व

(2014-15 ई.)

वासन्त नवरात्रे प्रा.	31 मार्च चं.
श्रीदुर्गाष्टमी	7 अप्रै. चं.
श्रीरामनवमी	8 अप्रै. मं.
श्रीमहावीर जयंती	13 अप्रै. र.
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. चं.
अक्षय तृतीया	2 मई शु.
श्रीबुद्ध जयन्ती	14 मई. बु.
श्रीगंगा दशहरा	8 जून र.
गुरु पूर्णिमा	12 जुला. श.
रक्षा-बन्धन	10 अग. र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत	17 अग. र.
सिद्धि विनायक व्रत	29 अग. शु.
श्राद्ध (पक्ष) प्रारम्भ	9 सितं. मं.
श्राद्ध समाप्त	24 सितं. बु.
शरद् नवरात्रे प्रा.	25 सितं. गु.
श्रीदुर्गाष्टमी	2 अक्तू. गु.
दशहरा (विजयादशमी)	3 अक्तू. शु.
शरद् पूर्णिमा व्रत	7 अक्तू. मं.
करवा चौथ व्रत	11 अक्तू. श.
दीपावली	23 अक्तू. गु.
भाई दूज	25 अक्तू. श.
श्रीगुरु नानक जयं.	6 नवं. गु.
श्रीगीता जयन्ती	2 दिसं. मं.

(सन् 2015 ई.)

लोहड़ी पर्व	13 जन. मं.
मकर (माघ) संक्रान्ति	14 जन. बु.
वसन्त पंचमी	24 जन. श.
श्रीगुरु रविदास जयं.	3 फर. मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	17 फर. मं.
होली पर्व	5 मार्च गु.

कुम्भ महापर्व-प्रयागराज (10 फरवरी, 2013 ई., रविवार)

'कुम्भ' महापर्व एवं कुम्भ मेला भारतवर्ष का सबसे बड़ा मेला है। यह महापर्व भारत की प्राचीन गौरवमयी वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक है। इस महापर्व के अवसर पर समस्त भारतवर्ष से ही नहीं, अपितु विश्व के अनेक देशों से लाखों की संख्या में धर्मपरायण श्रद्धालु लोग भारत के चारों तीर्थों में से किसी एक तीर्थ पर मंगल स्नान, दान, जपादि हेतु इकट्ठे होकर भव्य एवं विराट मेले का समायोजन करते हैं। **'कुम्भ'** शब्द का अर्थ है घट या घड़ा और 'कुम्भ' का अर्थ विश्व ब्रह्माण्ड भी है। जहाँ पर विश्वभर के धर्म, जाति, भाषा, संस्कृति, महात्माओं एवं सामान्य श्रद्धालु जनों का समागम हो, वही कुम्भ महापर्व कहलाता है।

कुम्भ-पर्व के सम्बन्ध में वेद-पुराणों में अनेक महत्त्वपूर्ण मन्त्र एवं प्रसंग मिलते हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि कुम्भ-महापर्व अत्यन्त प्राचीन, प्रामाणिक एवं वैदिक धर्म से ओत-प्रोत है। **'ऋग्वेद' के दशम मण्डल** के अनुसार, "कुम्भ-पर्व में जाने वाला मनुष्य स्वयं स्नान, दान-होमादि सत्कर्मों के फलस्वरूप अपने पापों को वैसे ही नष्ट करता है, जैसे कुठार वन को काट देता है। जिस प्रकार नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है, उसी प्रकार कुम्भ-पर्व मनुष्य के पूर्व संचित कर्मों से प्राप्त हुए मानसिक व शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन (कच्चे) घड़े की तरह निजस्वरूप को नष्ट कर संसार में नवीन सुवृष्टि प्रदान करता है।" (ऋग्वेद)

कालचक्र में सूर्य, चन्द्रमा एवं देवगुरु बृहस्पति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन तीनों ग्रहों का योग ही कुम्भ-पर्व का प्रमुख आधार है। **प्रयाग**, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक- इन सभी तीर्थों पर हर बारह (12) वर्षों के पश्चात् **सूर्य, चन्द्र** व वृहस्पति-इन तीनों का विशेष योग बनने पर **कुम्भ महापर्व** का समागम होता है। माघ मास की अमावस पर जब सूर्य और चन्द्रमा मकर राशि पर तथा बृहस्पति वृष राशि पर स्थित हों, तो उस समय तीर्थराज प्रयाग में **कुम्भ महापर्व** का योग बनता है, यथा-

मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ।
कुम्भयोगो भवेत् तत्र प्रयागे हि अतिदुर्लभे॥ (स्कंद पु.)

वि. सम्वत् २०६९, अर्थात् **10 फरवरी 2013 ई., रविवार** के दिन, माघ (मौनी) अमावस को सूर्य व चन्द्रमा मकर राशि पर इकट्ठे होंगे तथा गुरु वृष राशि में संचार होने से प्रयागराज (इलाहाबाद) में त्रिवेणी के तट पर कुम्भ महापर्व का आयोजन होगा। **त्रिवेणी** पर प्रमुख स्नान, जप-पाठ, दानादि का **विशेष पुण्यकाल** सूर्योदय से **4 घड़ी** पूर्व (अरुणोदय काल) से अर्थात् प्रात: 5 बजकर 5 मिनट से शुरू होकर दुपैहर 12 बजकर 50 मिंट तक रहेगा।

कुम्भ स्नान का माहात्म्य

त्रिवेणी-अर्थात् गंगा, यमुना व सरस्वती-तीनों पावन नदियों के संगम पर माघ मास एवं कुम्भ पर्व पर स्नान, जप-पाठ एवं दान आदि का धर्म शास्त्रों में विशेष माहात्म्य वर्णित किया गया है। विधिपूर्वक माघ स्नान से बढ़कर कोई पवित्र और पापनाशक पर्व नहीं। माघ मास में कुम्भ पर्व पर प्रयाग-राज में व्यक्ति तीन दिन भी नियमपूर्वक स्नान कर लेता है, तो उसे एक सहस्र अश्वमेघ यज्ञों को करने के बराबर पुण्य प्राप्त हो जाता है-

प्रयागे माघ मासे, कुम्भ पर्वेतु, त्र्यह-स्नानस्य यत् फलम्॥
अश्व-मेघ-सहस्रेण, तत् फलं लभते भुवि॥

प्रयाग में गङ्गा, यमुना एवं सरस्वती (त्रिवेणी) के संगम में स्नान करके प्राणी अनेक पापों से मुक्त होकर स्वर्गिक सुखों का अधिकारी हो जाता है।

कुम्भ महापर्व के उपलक्ष्य में स्नान जप-पाठ, दानादि की पुण्य तिथियाँ

(1) **प्रथम शाही (प्रमुख) स्नान** (माघ संक्रान्ति)-पौष शुक्ल तृतीया-सोमवार = 14 जनवरी, 2013 ई.

(2) **द्वितीय स्नान**-पौष शुक्ल एका. मंगलवार = 22 जन., 2013 ई.

(3) **तृतीय स्नान**-पौष शुक्ल पूर्णि. रविवार = 27 जन., 2013 ई. रविपुष्य योगे

(4) **चतुर्थ स्नान**-षट्तिला एका. बुधवार = 6 फर. 2013 ई.

(5) **पंचम स्नान** (प्रमुख-शाही) माघमौनी अमावस्या, रविवार 10 फर. 2013 ई.

(6) **षष्ठ स्नान** (तृतीय शाही स्नान) वसन्त पंचमी, गुरुवार, 14 फर. 2013 ई.

(7) **सप्तम स्नान**-जया एकादशी, गुरूवार = 21 फरवरी, 2013 ई.

(8) **अष्टम स्नान विधि** = माघ पूर्णिमा, **सोमवार**, 25 फर. 2013 ई.

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०७० वि.

(1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 31 मार्च, 2014 तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल-ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं-इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट-हमारे कार्यालय से छपी **'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग'** पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। मूल्य 50/- रु.

पता-जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
31	दिसं.	आश्लेषा	10	08	2	जन.	मघा	12	59
9	जन.	ज्येष्ठा	7	25	11	जन.	मूल	02	12
17	जन.	रेवती	17	40	19	जन.	अश्विनी	21	47
27	जन.	आश्लेषा	16	29	29	जन.	मघा	18	41
5	फर.	ज्येष्ठा	15	19	7	फर.	मूल	11	35
14	फर.	रेवती	03	00	16	फर.	अश्विनी	06	03
24	फर.	आश्लेषा	00	16	26	फर.	मघा	01	54
4	मार्च	ज्येष्ठा	20	58	6	मार्च	मूल	18	14
13	मार्च	रेवती	12	21	15	मार्च	अश्विनी	14	53
23	मार्च	आश्लेषा	9	04	25	मार्च	मघा	10	49
1	अप्रै.	ज्येष्ठा	02	40	2	अप्रै.	मूल	23	34
9	अप्रै.	रेवती	20	22	11	अप्रै.	अश्विनी	23	07
19	अप्रै.	आश्लेषा	17	47	21	अप्रै.	मघा	20	20
28	अप्रै.	ज्येष्ठा	10	25	30	अप्रै.	मूल	06	00
7	मई	रेवती	02	41	9	मई	अश्विनी	06	03
17	मई	आश्लेषा	01	28	19	मई	मघा	05	04
25	मई	ज्येष्ठा	20	23	27	मई	मूल	14	44
3	जून	रेवती	8	12	5	जून	अश्विनी	11	54
13	जून	आश्लेषा	7	55	15	जून	मघा	12	13
22	जून	ज्येष्ठा	7	12	24	जून	मूल	01	14
30	जून	रेवती	14	23	2	जुला.	अश्विनी	17	41
10	जुला.	आश्लेषा	13	42	12	जुला.	मघा	18	03
19	जुला.	ज्येष्ठा	17	04	21	जुला.	मूल	11	53
27	जुला.	रेवती	22	13	30	जुला.	अश्विनी	00	26
6	अग.	आश्लेषा	19	44	8	अग.	मघा	23	42
16	अग.	ज्येष्ठा	00	49	17	अग.	मूल	21	01
24	अग.	रेवती	7	33	26	अग.	अश्विनी	8	38
3	सितं.	आश्लेषा	02	45	5	सितं.	मघा	6	20
12	सितं.	ज्येष्ठा	6	36	14	सितं.	मूल	03	52
20	सितं.	रेवती	17	15	22	सितं.	अश्विनी	17	46
30	सितं.	आश्लेषा	10	47	2	अक्तू.	मघा	14	27
9	अक्तू.	ज्येष्ठा	12	07	11	अक्तू.	मूल	9	16
18	अक्तू.	रेवती	01	53	20	अक्तू.	अश्विनी	02	40
27	अक्तू.	आश्लेषा	19	13	29	अक्तू.	मघा	23	30
5	नवं.	ज्येष्ठा	19	29	7	नवं.	मूल	15	25
14	नवं.	रेवती	8	37	16	नवं.	अश्विनी	10	14
24	नवं.	आश्लेषा	03	07	26	नवं.	मघा	8	13
3	दिसं.	ज्येष्ठा	05	26	5	दिसं.	मूल	00	06
11	दिसं.	रेवती	14	08	13	दिसं.	अश्विनी	16	16
21	दिसं.	आश्लेषा	10	00	23	दिसं.	मघा	15	33
30	दिसं.	ज्येष्ठा	16	42	1	जन.	मूल	11	09
(सन् 2014 ई.)									
7	जन.	रेवती	20	20	9	जन.	अश्विनी	21	56
17	जन.	आश्लेषा	16	09	19	जन.	मघा	21	39
27	जन.	ज्येष्ठा	02	55	28	जन.	मूल	22	25
4	फर.	रेवती	04	50	6	फर.	अश्विनी	04	57
13	फर.	आश्लेषा	22	22	16	फर.	मघा	03	35
23	फर.	ज्येष्ठा	10	30	25	फर.	मूल	7	38
3	मार्च	रेवती	15	11	5	मार्च	अश्विनी	13	59
13	मार्च	आश्लेषा	05	17	15	मार्च	मघा	10	23
22	मार्च	ज्येष्ठा	16	07	24	मार्च	मूल	14	10
31	मार्च	रेवती	01	31	–	–	–	–	–

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल-सं० २०७० वि.

(1 जन. 2013 ई. से 31 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता. मास	घं.	मिं.	ता. मास	घं.	मिं.
14 जन.	06	12	18 जन.	19	23
10 फर.	16	45	15 फर.	04	09
10 मार्च	01	32	14 मार्च	13	17
6 अप्रै.	8	00	10 अप्रै.	21	29
3 मई	13	23	8 मई	04	08
30 मई	19	42	4 जून	9	48
27 जून	04	04	1 जुला.	15	42
24 जुला.	14	08	28 जुला.	22	56
21 अग.	00	30	25 अग.	7	41
17 सितं.	9	32	21 सितं.	17	10
14 अक्तू.	16	24	19 अक्तू.	02	01
10 नवं.	21	50	15 नवं.	9	13
8 दिसं.	04	02	12 दिसं.	14	56
(सन् 2014 ई.)					
4 जन.	12	48	8 जन.	20	46
31 जन.	23	48	5 फर.	04	28
28 फर.	10	53	4 मार्च	14	12
27 मार्च	19	54	1 अप्रै.	23	57

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) २०७० वि. (सं. 2013-14 ई.)

नगर	28 अप्रै.,13		28 मई, 13		26 जून, 13		25 जुला., 13		24 अग., 13		22 सितं., 13		22 अक्टू., 13		21 नवं., 13		21 दिसं., 13		19 जन., 14		18 फर., 14		20 मार्च, 14		श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवा-चौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	28 अग., 13	
अमृतसर	22	07	22	41	22	03	21	16	21	03	20	17	20	21	20	42	21	12	20	53	21	33	22	22	23	48
अजमेर	21	56	22	23	21	58	21	16	21	09	20	24	20	33	20	53	21	19	20	57	21	31	22	15	24	00
अम्बाला	21	56	22	31	21	54	21	09	20	58	20	12	20	17	20	38	21	07	20	47	21	25	22	12	23	44
अहमदाबाद	21	59	22	37	22	03	21	23	21	20	20	36	20	45	21	06	21	30	21	07	21	36	22	18	24	12
अलवर (राज.)	21	52	22	27	21	52	21	09	21	00	20	15	20	21	20	42	21	09	20	48	21	24	22	09	23	48
आगरा	21	45	22	21	21	46	21	03	20	55	20	11	20	18	20	38	21	05	20	44	21	19	22	03	23	45
इलाहाबाद	21	26	22	03	21	29	20	47	20	41	19	57	20	05	20	25	20	51	20	29	21	01	21	44	23	32
ऊना	22	02	22	36	21	58	21	11	20	58	20	11	20	16	20	37	21	07	20	48	21	28	22	17	23	43
उदयपुर (राज.)	21	58	22	35	22	01	21	20	21	14	20	30	20	38	20	59	21	24	21	02	21	34	22	17	24	05
ऊधमपुर	22	10	22	44	22	04	21	16	21	02	20	14	20	18	20	39	21	10	20	53	21	34	22	24	23	45
कपूरथला	22	04	22	39	22	00	21	14	21	02	20	15	20	20	20	41	21	11	20	52	21	31	22	19	23	47
करनाल	21	55	22	30	21	53	21	08	21	08	20	11	20	16	20	37	21	06	20	46	21	24	22	11	23	43
काँगड़ा	22	03	22	37	21	58	21	11	20	58	20	11	20	15	20	36	21	07	20	48	21	28	22	18	23	42
कानपुर	21	35	22	11	21	46	20	54	20	49	20	03	20	11	20	34	20	57	20	35	21	09	21	52	23	38
कैथल	21	57	22	32	21	55	21	10	20	59	20	13	20	18	20	39	21	08	20	48	21	26	22	13	23	45
कुल्लू	21	59	22	33	21	54	21	07	20	54	20	07	20	11	20	32	21	03	20	44	21	24	22	13	23	38
कुराली	21	59	22	34	21	56	21	10	20	58	20	11	20	16	20	37	21	07	20	48	21	26	22	15	23	43
कुरुक्षेत्र	21	56	22	31	21	54	21	09	20	58	20	12	20	17	20	38	21	07	20	47	21	25	22	12	23	44
कोलकाता	20	55	21	35	21	01	20	19	20	17	19	33	19	42	20	03	20	27	20	04	20	33	21	15	23	09
गाजियाबाद	21	50	22	26	21	50	21	06	20	56	20	10	20	16	20	37	21	05	20	44	21	21	22	07	23	43
ग्वालियर	21	42	22	19	21	44	21	02	20	56	20	11	20	19	20	39	21	05	20	43	21	17	22	00	23	46
गुरदासपुर	22	06	22	40	22	01	21	14	21	01	20	14	20	18	20	39	21	10	20	51	21	31	22	20	23	45
गुड़गाँव	21	52	22	27	21	52	21	08	20	58	20	13	20	20	20	40	21	08	20	47	21	23	22	09	23	47
चण्डीगढ़	21	57	22	32	21	54	21	08	20	56	20	09	20	14	20	35	21	05	20	46	21	25	22	13	23	41
चम्बा	22	04	22	38	21	59	21	12	20	57	20	09	20	14	20	35	21	06	20	48	21	29	22	19	23	40
चेन्नई	21	12	21	54	21	26	20	50	20	57	20	18	20	31	20	51	21	09	20	41	21	02	21	35	23	59
जयपुर	21	54	22	30	21	55	21	12	21	05	20	20	20	27	20	47	21	14	20	52	21	27	22	12	23	54
जम्मू	22	09	22	44	22	04	21	17	21	02	20	14	20	18	20	39	21	11	20	53	21	34	22	24	23	45
जालन्धर	22	03	22	38	22	00	21	14	21	02	20	15	20	20	20	41	21	11	20	52	21	31	22	19	23	47
जोधपुर	22	11	22	40	22	05	21	23	21	17	20	32	20	40	21	00	21	26	21	04	21	38	22	21	24	07
जीन्द (हरि.)	21	56	22	31	21	55	21	11	21	01	20	15	20	21	20	42	21	10	20	49	21	26	22	13	23	48
दिल्ली	21	52	22	27	21	51	21	07	20	57	20	12	20	17	20	38	21	06	20	45	21	22	22	08	23	44
देहरादून	21	51	22	26	21	49	21	04	20	53	20	07	20	12	20	33	21	02	20	42	21	20	22	07	23	39
धर्मशाला	22	03	22	37	21	58	21	12	20	58	20	11	20	15	20	36	21	07	20	48	21	28	22	18	23	42

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) २०७० वि. (सं. 2013-14 ई.)

नगर	28 अप्रै., 13		28 मई, 13		26 जून, 13		25 जुला., 13		24 अग., 13		22 सितं., 13		22 अक्तू., 13 करवा-चौथ		21 नवं., 13		21 दिसं., 13		19 जन., 14 संकटचौथ		18 फर., 14		20 मार्च, 14		श्रीकृष्णजन्माष्टमी 28 अग., 13	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
नंगल (पंजा.)	22	00	22	35	21	56	21	10	20	58	20	11	20	16	20	37	21	07	20	48	21	27	22	15	23	43
नैनीताल	21	43	22	19	21	42	20	58	20	48	20	02	20	08	20	29	20	57	20	36	21	14	22	00	23	35
नाहन	21	56	22	30	21	53	21	07	20	55	20	09	20	13	20	35	21	04	20	45	21	24	22	11	23	40
पठानकोट	22	05	22	39	22	00	21	13	21	00	20	13	20	17	20	38	21	09	20	50	21	30	22	20	23	44
पटियाला	21	57	22	32	21	55	21	10	20	59	20	13	20	18	20	39	21	08	20	48	21	26	22	13	23	45
पंचकूला	21	57	22	32	21	54	21	08	20	56	20	10	20	14	20	35	21	05	20	46	21	25	22	13	23	41
पानीपत	21	53	22	29	21	52	21	08	20	58	20	12	20	14	20	39	21	07	20	46	21	23	22	10	23	45
पटना	21	14	21	51	21	16	20	34	20	28	19	43	19	51	20	12	20	37	20	15	20	49	21	32	23	18
फगवाड़ा	22	02	22	37	21	59	21	13	21	01	20	14	20	19	20	40	21	10	20	51	21	30	22	18	23	46
फरीदकोट	22	05	22	39	22	02	21	16	21	04	20	17	20	22	20	43	21	13	20	54	21	33	22	21	23	49
फरीदाबाद	21	51	22	26	21	50	21	07	20	58	20	12	20	19	20	39	21	07	20	46	21	22	22	07	23	46
फाज़िल्का	22	07	22	43	22	05	21	20	21	09	20	23	20	28	20	49	21	18	20	58	21	36	22	23	23	55
फिरोजपुर	22	06	22	41	22	03	21	17	21	05	20	18	20	23	20	44	21	14	20	55	21	34	22	22	23	50
बीकानेर	22	06	22	42	22	06	21	23	21	14	20	28	20	35	20	56	21	23	21	02	21	38	22	23	24	02
बिलासपुर(हि.प्र.)	21	58	22	33	21	55	21	09	20	57	20	10	20	15	20	36	21	06	20	47	21	26	22	14	23	42
बैंगलूरु	21	23	22	05	21	37	21	01	21	08	20	29	20	42	21	02	21	20	20	52	21	13	21	46	24	10
महेन्द्रगढ़(हरि.)	22	54	22	30	21	54	21	11	21	02	20	16	20	23	20	43	21	11	20	50	21	26	22	11	23	50
मेरठ	21	50	22	25	21	49	21	05	20	55	20	09	20	15	20	36	21	04	20	43	21	20	22	07	23	42
मण्डी (हि.प्र.)	21	59	22	34	21	55	21	08	20	55	20	08	20	12	20	33	21	04	20	45	21	25	22	14	23	39
मथुरा	21	47	22	23	21	48	21	04	20	56	20	11	20	18	20	38	21	05	20	44	21	19	22	04	23	45
मुम्बई	21	50	22	31	21	59	21	21	21	22	20	40	20	52	21	11	21	33	21	07	21	34	22	12	24	19
यमुनानगर	21	54	22	29	21	52	21	07	20	56	20	10	20	15	20	36	21	05	20	45	21	23	22	10	23	42
रोपड़	21	59	22	34	21	56	21	10	20	58	20	11	20	16	20	37	21	07	20	48	21	27	22	15	23	43
रोहतक	21	55	22	29	21	53	21	09	20	59	20	13	20	19	20	40	21	08	20	47	21	24	22	10	23	46
रूड़की	21	51	22	26	21	49	21	04	20	53	20	07	20	12	20	33	21	02	20	42	21	20	22	06	23	39
लुधियाना	22	01	22	36	21	58	21	12	21	00	20	13	20	18	20	39	21	09	20	50	21	29	22	17	23	45
लखनऊ	21	33	22	09	21	34	20	51	20	44	19	59	20	06	20	26	20	53	20	31	21	06	21	51	23	33
वारानसी	21	21	21	59	21	24	20	43	20	37	19	53	20	01	20	21	20	47	20	25	20	57	21	40	23	28
शिमला	21	56	22	31	21	53	21	07	20	55	20	08	20	13	20	34	21	04	20	45	21	24	22	12	23	40
श्रीगंगानगर	22	08	22	43	22	06	21	21	21	10	20	24	20	29	20	50	21	19	20	59	21	37	22	24	23	56
संगरूर	21	59	22	34	21	57	21	12	21	01	20	15	20	20	20	41	21	10	20	50	21	28	22	15	23	47
सरकाघाट	22	02	22	36	21	58	21	11	20	58	20	11	20	15	20	36	21	07	20	48	21	28	22	17	23	42
सहारनपुर	21	53	22	28	21	51	21	06	20	55	20	09	20	14	20	35	21	04	20	44	21	22	22	09	23	41
सोनीपत	21	53	22	29	21	52	21	08	20	58	20	12	20	18	20	39	21	07	20	46	21	23	22	10	23	45
हिसार	21	58	22	34	21	57	21	13	21	03	20	17	20	23	20	44	21	12	20	51	21	28	22	15	23	50

ग्रहण विवरण (संवत् २०७० वि.)

–पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०७० (सन् 2013–14 ई.) में भूलोक पर कुल तीन ग्रहण घटित होंगे–

(1) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (भारत में दृश्य) (25/26 अप्रैल 2013 ई., गुरु/शुक्र)

(2) **कंकण सूर्यग्रहण** (भारत में अदृश्य) (9/10 मई, 2013 ई., गुरु/शुक्र)

(3) **खग्रास सूर्यग्रहण** (भारत में अदृश्य) (3 नवम्बर, 2013 ई., रविवार)

● भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण ●

(1) कंकण सूर्यग्रहण (9/10 मई, 2013 ई., वैशाख अमावस, गुरु/शुक्र)–

यह कंकण सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण मध्य प्रशान्त महासागर, न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया तथा इण्डोनेशिया में दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण का प्रारम्भ/समाप्तिकाल इस प्रकार होगा–

	घं. मिं.	
ग्रहण प्रारम्भ	26–55	9/10 मई, 2013 ई. (भा. स्टैं. टा.)
कंकण प्रारम्भ	28–03	
परमग्रास	05–55	
कंकण समाप्त	07–48	
ग्रहण समाप्त	08–55	

परमग्रास का ग्रासमान = 0.95 प्रतिशत

क्योंकि यह ग्रहण भारतवर्ष में दिखाई नहीं देगा। अतएव इसके स्नान, दान, सूतक, माहात्म्य आदि का विचार नहीं होगा।

(2) खग्रास सूर्यग्रहण (3 नवम्बर, 2013 ई., कार्तिक अमावस, रविवार)–

यह खग्रास सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण मध्य-पूर्वी अफ्रीका, दक्षिणी यूरोप के देशों (स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस, इटली, स्विटज़रलैंड, आस्ट्रिया आदि), उत्तर-पूर्वी अमरीका तथा दक्षिणी अमरीका के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण का प्रारम्भ/समाप्ति काल इस प्रकार होगा–

	घं. मिं.	
ग्रहण आरम्भ	15–35	3 नवम्बर, 2013 ई० (भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ	16–35	
परमग्रास	18–17	
खग्रास समाप्त	19–58	
ग्रहण समाप्त	20–59	

● भारत में दृश्य एकमात्र ग्रहण का विस्तृत विवरण ●

(1) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (25/26 अप्रैल, 2013 ई., चैत्र पूर्णिमा, गुरु/शुक्र)–

यह ग्रहण चैत्र पूर्णिमा, गुरुवार को 25 अप्रैल तथा 26 अप्रैल, 2013 ई० की मध्यगत रात्रि के सारे भारत मे अत्यल्प खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष आदि का काल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार होगा।

	घं. मिं.	
ग्रहण स्पर्श (स्पर्श)	25–22	25/26 अप्रैल (गुरु/शुक्रवार) रात्रि (भा. स्टै. टा.)
ग्रहण मध्य	25–38	
ग्रहण समाप्त (मोक्ष)	25–53	

(ग्रहण की अवधि (पर्वकाल) = 0 घं. 31 मिं. ; ग्रासमान = 0.020 प्रतिशत)

(चन्द्र मालिन्यारम्भ = 23 घं. 32 मिं. ; चन्द्र क्रान्ति निर्मल = 27 घं. 43 मिं.)

भारत में जब 25 अप्रैल, 2013 ई० की रात्रि 1 बजकर 22 मिनट पर चन्द्रग्रहण शुरु होगा, उस समय से बहुत पहिले ही सम्पूर्ण भारत में चन्द्र उदय हो चुका होगा। भारत के सभी नगरों/ग्रामों में 25 अप्रैल को सायं 5-00 (घं. मिं.) से सायं 7-00 बजे तक चन्द्र उदय हो जाएगा तथा यह अल्प खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 25 अप्रैल की रात्रि 25 घं. 22 मिं. से प्रारम्भ होकर रात्रि 25 घं. 53 मिं. पर समाप्त (मोक्ष) होगा। भारत के सभी नगरों में इसका प्रारम्भ, मध्य तथा मोक्ष रूप देखा जा सकेगा।

अन्य देशों में खण्डग्रास चन्द्रग्रहण–भारत के अतिरिक्त यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण आस्ट्रेलिया, एशिया (उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों/देशों को छोड़कर), अफ्रीका, यूरोप तथा अन्टराटिका में दिखाई देगा।

इस ग्रहण का आरम्भ पूर्वी आस्ट्रेलिया, फिलीपाईन् सागर, जापान तथा कोरिया में चन्द्रास्त के समय ही देखा जा सकेगा। अर्थात् इन क्षेत्रों में यह ग्रहण ग्रस्तास्त खण्ड चन्द्रग्रहण के रूप में दिखेगा।

जबकि इस ग्रहण की समाप्ति दक्षिणी एटलांटिक सागर, पूर्वी ब्राज़ील तथा इंग्लैण्ड में चन्द्रोदय के समय ही देखी जा सकेगी। अर्थात् इंग्लैण्ड, फिनलैण्ड, आयरलैण्ड में यह ग्रहण ग्रस्तोदय खण्ड रूप में दिखेगा।

खण्ड-चन्द्रग्रहण–परमग्रास

(ग्रहण-मध्य)

(25-38)
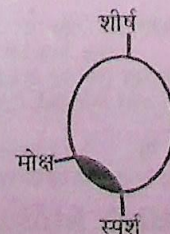
ग्रहण का सूतक—इस खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का सूतक 25 अप्रैल, 2013 ई० को सायं 4 बजकर, 22 मिनट (16/22) (भा. स्टै. टा.) से प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण काल तथा बाद में क्या करें ?—ग्रहण के सूतक और ग्रहणकाल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र जप, मन्त्र सिद्धि, तीर्थस्नान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है। धार्मिक/आस्थावान लोगों को ग्रहणकाल अथवा 25 अप्रैल के सूर्यास्त के बाद अपनी राश्यानुसार अथवा ब्राह्मण के परामर्श अनुसार दान योग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिए तथा अगले दिन प्रातः 26 अप्रैल, 2013 ई० को प्रातः सूर्योदय के समय पुनः स्नान करके संकल्पपूर्वक योग्य ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

सूतक एवं ग्रहणकाल में मूर्त्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूठ-कपटादि, वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग, नाखुन काटने आदि से परहेज करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में दोष नहीं।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव—यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण स्वाती नक्षत्र तथा तुला राशि में घटित हो रहा है। इसलिए इस राशि एवं नक्षत्र में उत्पन्न जातकों को चन्द्रमा तथा राशिस्वामी शुक्र का जप, दान करना कल्याणकारी रहेगा। बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	स्त्री कष्ट	रोग, गुप्त चिन्ता	खर्च अधिक, कार्य विलम्ब	कार्य सिद्धि	धन लाभ	धन हानि, यात्रा	दुर्घटना, शरीर कष्ट	धन हानि	लाभ उन्नति	रोग, कष्ट, भय	चिंता, संतान कष्ट	शत्रु भय, साधारण लाभ

ग्रहण का लोक-भविष्य एवं प्रभाव—यह ग्रहण चैत्र मास में घटित होने से चित्रकार, फोटोग्राफर, लेखक, घट बनाने वाले (ठेकेदार), नाटककार, अभिनेता तथा रूप आदि से आजीविका करने वालों को पीड़ा होगी। सोने आदि धातुओं के भावों में तेजी बनेगी। वर्षकाल में दुर्भिक्ष, वर्षा की व्यापक कमी रहेगी।

स्वाती नक्षत्र में चन्द्रग्रहण घटित होने से मटर, चने आदि वायुकारक धान्य आदि फसलों तथा व्यापारियों को कष्ट हो।

तुला राशि में घटित होने से भी साधुजनों, व्यापारीवर्ग को कष्ट हो, वर्षा का अभाव रहे तथा देशों के मन्त्रियों के मध्य वार्ताएं विफल रहें एवं युद्ध के बादल मण्डराएंगे।

यथा—तुलाधरेरवंत्यपरांत्य साधून वणिग्दशार्णान् रूरुकच्छपांश्च।
हन्यादवीन्द्वोर्ग्रहणं तु राज्ञां करोति युद्धं त्वथ वृष्टिनाशम्॥

व्यापारिक फल—चन्द्रग्रहण गुरुवार को घटित होने से भी रूई, पीली, लाल व सुगन्धित वस्तुओं, तेल आदि का संग्रह करने से आगे लाभ मिलेगा।

वास्तु दोष निवारण हेतु विशेष उपाय

यदि आपका भवन/निवास स्थान वास्तु सिद्धान्त के विपरीत हो तो कुछ निम्न दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन कर आप शुभ फल प्राप्त तथा अनिष्ट प्रभाव से बच सकते हैं।

1. जब भी पानी पीएं अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें।
2. जब भी भोजन ग्रहण करें थाली दक्षिण-पूर्व की ओर रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।
3. दक्षिण-पश्चिम कोण में दक्षिण की ओर सिरहाना करके सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है।
4. जब भी पूजा करें तो मुख उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर करके बैठें।
5. सम्यक उन्नति हेतु लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, स्वास्तिक, ॐ, मीन, एवं आदि मांगलिक चिह्न मुख्यद्वार के ऊपर स्थापित करें।
6. यदि घर में कोई पूजा-स्थल नहीं है तो उस उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।
7. दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में कुआं या ट्यूबवैल है तो उसे भरवाकर उत्तर-पूर्व कोण में ट्यूबवैल या कुआँ खुदवाएँ। अन्य दिशा में कुएँ को भरवा न सकें तो उसे प्रयोग में लाना बन्द कर दें अथवा उत्तर-पूर्व में एक ओर ट्यूबवैल या कुआँ लगवाएँ जिससे वास्तु का सन्तुलन हो सके।
8. दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाज़े और खिड़कियां हों तो उन्हें बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।
9. रसोईघर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण में एक बल्ब लगा दें और सुबह-शाम उसे अनिवार्य रूप में जलायें।
10. बीम के दोष को शान्त करने के लिए बीम को सीलिंग टॉयल्स से ढंक देवें। बीम के दोनों और बाँस की बाँसुरी लगायें।
11. दुकान की शुभता बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।
12. द्वार दोष और वेध दोष को दूर करने के लिए शंख, सीप, समुद्र झाग, कौड़ी, ताम्बे या सोने की तुश लाल कपड़े में या मोली में दरवाज़े पर लटकायें।
13. यदि दुकान में चोरी होती हो या अग्नि लगती हो तो भौम यन्त्र की स्थापना करें। यह यन्त्र पूर्वोत्तर कोण या पूर्व दिशा में, फर्श के नीचे दो फीट गहरा गड्ढा खोदकर स्थापित किया जाता है।
14. घर के सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए मुख्य द्वार पर एक ओर केले का वृक्ष, दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगायें।
15. यदि प्लाट खरीदे हुए बहुत समय हो गया हो और मकान बनने का योग न आ रहा हो तो उस प्लाट में अनार का पौधा पुष्य नक्षत्र में लगायें।
16. घर के दरवाज़े पर घुड़नाल (लोहे की) लगायें। यह अपने आप गिरि होनी चाहिए।
17. अगर आपका घर चारों और बड़े मकानों से घिरा हो तो उनके बीच बाँस का लम्बा फ्लेग लगायें या कोई बहुत ऊँचा बढ़ने वाला पेड़ लगायें।
18. फैक्ट्री-कारखाने के उद्घाटन के समय चाँदी का सर्प पूर्व दिशा में ज़मीन में स्थापित करें।
19. घर में अखण्ड रूप से श्री रामचरितमानसके नौ पाठ करने से वास्तुजनित दोष दूर हो जाता है।
20. घर में नौ दिन तक अखण्ड भगवन्नाम-कीर्तन करने से वास्तुजनित दोष का निवारण हो जाता है।
21. मुख्य द्वार के ऊपर सिन्दूर से स्वस्तिक का चिह्न बनायें। यह चिह्न नौ अंगुल लम्बा तथा नौ अंगुल चौड़ा होना चाहिए। घर में जहाँ-जहाँ वास्तु दोष हो, वहाँ-वहाँ यह चिह्न बनाया जा सकता है।

इन नियमों को व्यवहार में लाकर सुख-समृद्धि को अपनी अंगशयनी बनाएं।

—वास्तुदोष शान्ति के लिए उपयोगी मंत्र—

ॐ नमस्तेवास्तु देवेश सर्वदोष हर भव सुखं देहि, शान्ति देहि, सर्वकामान् प्रयच्छ मे।
ॐ वास्तु पुरूषाय नमः॥

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०७० (सन् 2013-14 ई.)

शनि देव गतवर्ष 4 **अगस्त**, 2012 ई० को **तुला राशि** में प्रविष्ट हुए थे। **वि० संवत्** **२०७० (सन् 2013-14 ई०) के मध्य तुला राशि** में संचरित रहेंगे। शनि देव ता. 18 फर. 2013 ई० से 7 जुला. तक वक्री रहेंगे तथा 8 जुलाई से तुला में ही **मार्गी** होंगे। ता. 3 मार्च 2014 ई० को तुला राशि में ही **शनि पुनः वक्री** होंगे।

ध्यान रहे ! शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक पापी एवं अशुभ फलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु, शुक्र आदि शुभ ग्रह अपनी राशि वक्री होने पर और अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं-

क्रूरा वक्रा महाक्रूराः, सौम्य वक्रा महाशुभाः।।

फलस्वरूप शनि देव जब गोचरवश वक्री अवस्था में संचार करेंगे, तो दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं में कमी किंवा उनकी कीमतों में अत्यधिक महँगाई, उपद्रव, जनांदोलन, अग्निकाण्ड, राजनीतिक टकराव, विग्रह, आर्थिक संकट एवं राजनैतिक उलटफेर, छत्रभंग, हिंसक घटनाएँ आदि अशुभ फल घटित होने के संकेत हैं।

जब किसी जातक की कुण्डली में अशुभ शनि वक्री होकर **साढ़ेसती या ढैय्या के रूप में** प्रभाव कर रहा हो तो जातक को मानसिक संताप, परिवारिक एवं आर्थिक उलझनें, शरीरकष्ट, निकट बन्धुओं से विरोध, आय कम व खर्च अधिक, शत्रु भय, बनते कामों में विघ्न बाधाएँ एवं संतान सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न होती है।

जैसा कि ऊपर पहले लिखा गया है कि आगामी वर्षारम्भ से संवत् के अन्त तक शनि तुला राशि में ही संचरणशील रहेंगे। विभिन्न राशियों पर तुलाराशिस्थ शनि का प्रभाव इस प्रकार होगा।

✤ तुला राशिस्थ शनि-साढ़ेसाती व ढैय्या विचार—संवत् २०७० ✤

[वर्षारम्भ 2013 ई० से 30 मार्च, 2014 ई० तक]

✤ **शनि साढ़ेसाती**—कन्या, तुला और वृश्चिक राशि वाले जातकों को शनि साढ़ेसाती के शुभाशुभ (मिश्रित) फल रहेंगे।

✤ **ढैय्या फल विचार—कर्क और मीन** राशि वाले जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा।

● शनि द्वारा तुला राशि में संचार का गोचरफल 2013-14 ई० ●

(जन. 2013 ई० से संवतान्त् 30 मार्च, 2014 ई० तक)

विभिन्न राशियों पर तुला राशि के संचार का फल यद्यपि हम गतवर्षीय पंचांग २०६९ पृष्ठ 21 पर लिख चुके हैं। परन्तु चूंकि सन् 2013 ई० में शनि के अतिरिक्त मंगल, गुरू, राहु-केतु आदि ग्रहों के राशि संचार में अन्तर पड़ जाने से मेष आदि विभिन्न राशियों पर शनि के गोचर फल में भी अन्तर पड़ने की सम्भावनाएं होंगी। इसी परिप्रेक्ष्य में आगामी वर्ष के तुला राशिगत शनि का गोचरफल लिखा जा रहा है।

ध्यान रहे, मेषादि राशियों पर शनि के सुवर्णादि पाया गत वर्ष की भान्ति ही रहेंगे।

✤ **मेष**—इस राशि पर शनि की अशुभ दृष्टि के अतिरिक्त केतु का संचार भी वर्षभर रहेगा। जिससे आय कम व खर्च अधिक होंगे। शरीर कष्ट, गुप्त परेशानियां एवं व्यवसायिक उलझनें रहेंगी। परन्तु **शनि का पाया सुवर्ण** होने से बीच-बीच में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

✤ **वृष**—शनि छटे होने से संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। **शनि का पाया भी ताम्र** शुभफल प्रदायक होगा। ता. 30 मई तक गुरु का संचार होने से परिवार में शुभ कार्य पर खर्च रहेंगे।

✤ **मिथुन**—पंचमस्थ शनि होने से विद्या एवं परिवार सम्बन्धी कार्यों में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलेगी। परन्तु राशि स्वामी बुध ता. 9 अप्रै. से 27 अप्रै. के मध्य नीचराशि में होने से स्वास्थ्य हानि, आय में कमी व खर्चों में वृद्धि होगी। परन्तु **शनि का पाया चांदी** होने से आय में वृद्धि तथा भूमि-वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी।

✤ **कर्क**—शनि की ढैय्या एवं **शनि का पाया भी लोहा** होने से अशुभ फल होगा। जिससे वृथा मानसिक तनाव एवं बनते कामों में अड़चनें रहेंगी। अप्रैल-मई में स्थिति में कुछ सुधार होगा। परन्तु 18 अग. से इस राशि पर मंगल का संचार होने से विशेष शरीर कष्ट एवं परेशानियां बढ़ेंगी।

✤ **सिंह**—शनि तीसरे और पाया ताम्र होने से काफी दौड़-धूप के पश्चात् धनादि सुखों की प्राप्ति होगी। अप्रैल-मई में शनि की दृष्टि सूर्य पर होने से धन हानि एवं बनते कामों में विघ्न पैदा होंगे। ता. 5 अक्तू. से मंगल इसी राशि में होने से उत्साह में वृद्धि एवं धन लाभ होगा।

✤ **कन्या**—शनि की साढ़ेसति एवं शनि का पाया सुवर्ण होने से व्यवसायिक एवं परिवारिक उलझनें रहेंगी। मन में अशान्ति एवं खर्च अधिक रहे। परन्तु 30 मई तक गुरू की दृष्टि भी रहने से कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे।

✤ **तुला**—शनि की साढ़ेसति चढ़ती हुई अवस्था में होगी। कार्य व्यवसाय में आर्थिक उलझनें एवं घरेलु परेशानियों का सामना रहेगा। यहाँ शनि उच्च राशिस्थ तथा पाया चाँदी होने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे।

✤ **वृश्चिक**—शनि की साढ़ेसाती होगी तथा शनि का पाया भी लोहा होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु व कार्य सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। 30 मई तक गुरु की दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के स्रोत बनते रहेंगे।

✤ **धनु**—राशि को शनि 11वें (लाभ) स्थान में होने से धनु राशि पर दृष्टि रहेगी। विशेष कठिनाईयों के बावजूद धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। शनि का पाया ताम्बा होने से किसी नए काम की योजना बनेगी। 31 मई को गुरु की स्वगृही दृष्टि शुभ होगी।

✤ **मकर**—राशि स्वामी शनि उच्चस्थ होकर दशम भाव में राहु युक्त होकर पड़ा है। बनते कामों में अड़चनें तथा आमदन कम व खर्च अधिक होंगे। लेकिन शनि का पाया चान्दी होने से अप्रैल के बाद आकस्मिक धन लाभ व खर्च अधिक होंगे।

✚ **कुम्भ**–शनि नवम होने से अड़चनों एवं विघ्नों के बाद बिगड़े कामों में सुधार होगा। शनि का पाया सोना होने से आर्थिक उलझनों के कारण घरेलु क्षेत्रों में तनाव रहे।

✚ **मीन**–राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा। आय के साधन सीमित तथा खर्च अधिक रहेंगे। शनि का पाया भी लौह होने से आर्थिक परेशानियां, घरेलु कलह-क्लेश तथा दौड़-धूप अधिक होगी। आगे लिखे अनुसार शनि के उपाय करने शुभ होंगे।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—*(i) "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।"*

(ii) "ॐ शं शनैश्चराय नमः।।"

(iii) "ॐ शन्नो देवी रभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्यो रभिस्रवन्तु नः शं नमः।।"

पुराणोक्त शनि मन्त्र—

(iv) नीलाञ्जन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छाया मार्त्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र–

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चरः नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

✚ **शनि की साढ़ेसाती या ढैय्याजनित और अन्य सभी अनिष्टकर ग्रहों की शान्ति के लिए शास्त्रों** में अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं। जैसे व्रत धारण, मन्त्र-जाप, यन्त्र-प्रयोग, औषधि-स्नान, नीलम-धारण, जड़ी-बूटी धारण, शनि सम्बन्धी वस्तुओं का दान, हवन आदि अनेक उपायों से शनि कृत अनिष्ट शान्ति होती है। शनि ग्रह की शान्ति हेतु अनेक सरल उपाय एवं टोटके तथा उनके सुगम प्रयोग हमने अपनी उपायों सम्बन्धी निम्न पुस्तक में दिए हैं। संक्षिप्त पूजन, ध्यान व अनेक शनिस्तोत्रों एवं विस्तृत व्याख्या के लिए हमारे कार्यालय से छपी **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय टोटके मंगवा कर पढ़ें'** मूल्य 175/–

–जनरल बुक डिपो, चौक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

गुरु का वृष राशि एवं मिथुन राशि में गोचरफल-संवत् २०७०

गुरु (बृहस्पति) गत वर्ष **17 मई, 2012 ई० से 30 मई 2013 ई०** तक **वृष राशि में ही** संचरणशील रहेंगे। ता. 31 मई, 2013 शुक्रवार की प्रातः 6/46 बजकर, से **गुरू अतिचार गति से मिथुन राशि में प्रविष्ट** होंगे। तथा सम्वत् के अन्त (30 मार्च, 2014 ई०) तक **मिथुन राशि में ही** संचरण करेंगे।

वक्री मार्गी–मिथुन राशि में संचरणकाल में गुरू (वृहस्पति) **7 नवम्बर** से वक्री होकर **6 मार्च (2014 ई०)** को मार्गी होंगे।

मई-जून में गुरु द्वारा अतिचार होकर राशि परिवर्तन के समय **शनि पहिले** से ही तुला में वक्री स्थिति में संचरणशील है। जिसके प्रभावस्वरूप दैनिक उपयोग की वस्तुओं के मूल्यों में जबरदस्त तेजी होने के कारण सामान्य लोगों में क्रोध, भय एवं विद्रोह के भाव पैदा होंगे। कहीं जन-आंदोलन एवं हिंसक घटनाएँ घटित हों। कहीं छत्रभंग (राज्य परिवर्तन) एवं राजनीतिक अस्थिरता हो–

यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि अतिचारी तु सौम्यकः।
पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्।।

गतवर्षीय सम्वत् २०६९ की पंचाँग दिवाकर में हम गुरु का वृष राशि में गोचर का फल यद्यपि लिख चुके हैं, तथापि पाठकों की सुविधा हेतु पुनः लिख रहे हैं–

☆ वृष राशिगत गुरू का शुभाशुभ गोचर फल ☆

[जनवरी, 2013 ई० से 30 मई 2013 ई० तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल हो, दीर्घ यात्रा के योग, धन लाभ, शुभ कार्यों पर खर्च हों।	लग्नस्थ गुरू पूज्य है, आय कम, खर्च ज़्यादा होंगे, धर्म पालन करने से लाभ के चाँस होंगे।	द्वादशस्थ गुरू होने से आय अल्प व खर्च बहुत होंगे। घरेलू व व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों का सामना रहे।	लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, धन, भूमि-सवारी, आदि सुखों में वृद्धि हों कार्यों में सफलता हो।	दशमस्थ गुरू होने से संघर्ष के बाद धन लाभ व्यवसाय में विघ्न आय से खर्च अधिक रहेंगे। गायत्री जप करना शुभ होगा।	भाग्य स्थान में गुरु शुभ फल देगा। उच्चविद्या एवं कैरियर में सफलता धर्म में रूचि बढ़ें।	आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, घरेलू व व्यवसाय में उलझनें बढ़ेंगी, मानसिक तनाव व गुप्त चिन्ता रहे।	विशेष परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य धन मिले, सवारी सुख मिले परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधान रहें।	व्यय अधिक रहे, ऋण रोग व शत्रु भय हो, बनते कामों में अड़चनें रहें। भाग-दौड़ अधिक रहे।	गृह में किसी शुभ कार्य पर खर्च हो, विद्या-भूमि व वाहन सम्बन्धी सुख मिलें। भाग्य उन्नति हो।	आराम कम व संघर्ष अधिक धन-वाहन सम्बन्धी परेशानी 1 जून से निर्वाह-योग्य आय बनेगी।	आय कम व आक-स्मिक खर्च, शरीर-कष्ट व घरेलू उलझनों के कारण तनाव बढ़ेंगे।

☆ मिथुन राशिस्थ गुरू का शुभाशुभ फल ☆

[31 मई, 2013 से 30 मार्च 2014 ई० तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्थान परिवर्तन धन का खर्च बढ़ें, परन्तु आय कम रहे इष्ट-जनों से वियोग, कार्यों में विघ्न, मित्रों से विरोध रहे।	धर्म कार्यों की ओर रूचि बनेगी, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे धन लाभ एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति हो।	लग्नस्थ गुरू शत्रु राशिस्थ होने से अति संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे धर्म-कर्म की ओर रूचि होगी।	द्वादशस्थ गुरू होने से आय कम एवं खर्च अधिक रहेंगे। बनते कामों में विघ्न पैदा होंगे वर्षारम्भ से पहिले शुभ कार्य पर खर्च अधिक होंगे।	धन-लाभ व उन्नति के अव-सर प्राप्त होंगे। भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति विघ्नों के बाद होगी। कोई शुभ कार्य हो।	कार्य-व्यवसाय में उलझनों के बाद धन प्राप्ति हो, खर्च भी अधिक रह। तनाव के कारण स्वास्थ्य खराब हो।	गुरू नवम स्थान में होने से कार्यों में सफ-लता लाभ व उन्नति के मौके प्राप्त होंगे। धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी।	अष्टमस्थ गुरू होने से क्लिष्ट रोग का भय, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे घरेलु उलझनें यात्रा व तनाव बढ़ेंगे।	सप्तम गुरू होने से धन-लाभ एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। विशेष संघर्ष के बाद लाभ के चाँस होंगे।	छटे गुरू होने से खर्च बढ़ेंगे रोग एवं गुप्त शत्रुओं का भय रहेगा। निकट बन्धु से वृथा तकरार पैदा हो तनाव बढ़े।	पंचमस्थ गुरू होने से उच्च विद्या में सफलता विवाह आदि सुखों की प्राप्ति श्रेष्ठजनों के सम्पर्क लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे।	चतुर्थस्थ गुरू होने से साधनों में वृद्धि परन्तु सुख में कमी हो तनाव व अशान्ति बढ़े, सवारी से चोटादि का भय खर्चों में वृद्धि हो।

ध्यान रहे, जन्म राशि एवं नाम राशि से गुरू (बृहस्पति) १, ३, ४, ६, ८ या १२वें स्थान पर हो, तो व्याधि (रोग) भय, मान सम्मान में कमी, उच्च विद्या में असफलता, धन हानि, परदेश गमन तथा मित्रों से विरोध होता है–

द्वादश दशम चतुर्थे जन्मनि षष्ठाष्टगे, तृतीये च।
व्याधिर्विदशगमन धन हानि, मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरूते।।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति–अथवा गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मन्त्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मन्त्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार को केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र–

"ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्"

गुरु बीज मन्त्र–

"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।।"

☆ **मन्त्र प्रयोग विधि तथा गुरू सम्बन्धी अन्य** उपयोगी उपाय व टोटके जानने के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक "**अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय/टोटके मँगवाकर पढ़ें।। मूल्य 175/-**" **–जनरल बुक डिपो, जालन्धर।**

☆ राहु का तुला राशिस्थ गोचर फल-संवत् २०७० ☆

राहु गतवर्ष 23 दिसं. 2012 ई० से तुला राशि में प्रविष्ट हो चुका है तथा आगामी वर्ष 2013-14 ई० (30 मार्च, 2014 ई०) तक तुला राशि में ही संचार करेगा। केतु ग्रह 23 दिसं., 2012 ई. से मेष राशि में प्रविष्ट हुआ था, आगामी 30 मार्च 2014 ई० तक मेष राशि में संचार करेगा।

मेषादि विभिन्न राशियों पर राहु-केतु का गोचरफल इस प्रकार से होगा।

☆ तुला राशिस्थ राहु का गोचर फल ☆

[वर्षारम्भ से 30 मार्च 2014 ई० तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ कम व खर्च अधिक होंगे, कार्यों में विघ्न बाधाएँ, परिवार में मन-मुटाव हो।	स्वास्थ्य हानि, विशेष परिश्रम के बाद भी आय कम व खर्च अधिक होंगे।	आर्थिक उलझनों के कारण घरेलू परेशानियाँ हो, भाग्य में विघ्न, गुप्त चिन्ताएँ हों।	व्यवसाय में संघर्ष के बाद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्च अधिक रहे।	कोई खुश-खबरी मिलेगी धन लाभ व उन्नति के अवसर होंगे। विदेश-गमन की योजना बनेगी।	धन प्राप्ति में विघ्नों का सामना रहे ! आय कम व खर्च अधिक हों। तनाव बढ़ें।	शरीर कष्ट, तनाव रहे। बनते कामों में अड़चनें पड़ें। खर्च बढ़ें।	सामान्य आय के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहें।	धन-लाभ व उन्नति के चांस होंगे, पर खर्च भी बहुत बढ़ेंगे। विदेश यात्रा के विचार बनेंगे।	वृथा दौड़ धूप अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें हों, घरेलू उलझनों से अशान्ति हो।	बिगड़े कामों में कुछ सुधार हो, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, खर्चों में भी खास वृद्धि हो।	धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे, किसी प्रिय बन्धु से मेल हो, कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

☆ मेष राशिस्थ केतु का गोचर फल ☆

[वर्षारम्भ से 30 मार्च, 2014 ई० तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
संघर्ष अधिक आय कम व खर्च-अधिक हो, क्रोध अधिक रहे।	बनते कामों में अड़चनें, आय कम व खर्च ज्यादा रहे, स्वास्थ्य भी ठीक हो।	विघ्नों के बाव-जूद, निर्वाह योग्य आय के स्रोत बनें, व्यय भी अधिक रहेंगे।	अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। खर्चों में वृद्धि, रोग व शत्रु भय उलझनें बढ़ेंगी।	धन लाभ अल्प आराम कम संघर्ष अधिक हो। भूमि, वाहन आदि पर खर्च हो।	धन लाभ अच्छा वाहन, आदि सुखों का लाभ। कुछ बिगड़े कामों में सुधार।	धन खर्च अधिक लाभ अल्प हो। उलझनों के कारण तनाव व अशान्ति बढ़ेंगी।	विघ्नों के बाद लाभ व उन्नति के योग। मार्च के बाद आय कम व खर्च अधिक रहेंगे।	लाभ कम व खर्च अधिक हों। किसी मंगल कार्य पर खर्च हो विदेश यात्रा का योग बनेगा।	संघर्ष के बाद गुजारे योग्य आय के साधन हों। भूमि, सवारी आदि सुखों का लाभ।	गत किए गए कार्यों में सफलता हो, धन-लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अप्रैल में बिगड़ा काम बनें।	वृथा खर्च अधिक हों। आय में भी कमी व खर्च अधिक होंगे।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र–

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र–

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। **मूल्य–175/-**

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।
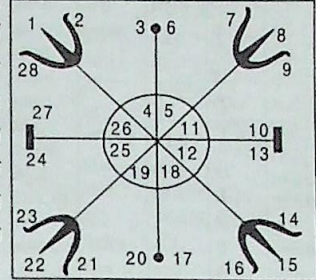
➲ खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ? ➲

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं–

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योग-वि. संवत् २०७० (सन् 2013-14 ई.)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में— अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग की** उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो **'रवि योग'** अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योग— में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं।

गुरुपुष्य योग— गुरू अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरू धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल में, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों** में ही करने **शुभ होंगे**। ध्यान रहे, 6 जून से 1 जुला. (2013 ई.) तक गुरु अस्त तथा 10 फरवरी से 22 अप्रै. तक शुक्र अस्त रहेगा तथा 8 जन. से 14 जन. (2014 ई.) तक शुक्र पुनः अस्त रहेगा।

—पण्डित विवेक शर्मा, गणितकर्ता

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013 ई.	घं. मिं.	2013 ई.	घं. मिं.
11 अप्रै.	सू. उ.	11 अप्रै.	23 07
14 अप्रै.	03 49	14 अप्रै.	सू. उ.
15 अप्रै.	सू. उ.	16 अप्रै.	सू. उ.
18 अप्रै.	सू. उ.	19 अप्रै.	सू. उ.
24 अप्रै.	सू. उ.	24 अप्रै.	18 47
5 मई	25 41	6 मई	सू. उ.
8 मई	04 08	8 मई	सू. उ.
9 मई	सू. उ.	9 मई	6 03
11 मई	10 58	12 मई	सू. उ.
13 मई	सू. उ.	13 मई	16 54
16 मई	सू. उ.	16 मई	25 28
24 मई	23 07	25 मई	सू. उ.
26 मई	17 32	27 मई	सू. उ.
2 जून	7 12	3 जून	सू. उ.
4 जून	9 48	5 जून	सू. उ.
8 जून	सू. उ.	8 जून	20 10
13 जून	सू. उ.	13 जून	7 55
16 जून	13 33	17 जून	सू. उ.
21 जून	9 47	22 जून	सू. उ.
23 जून	सू. उ.	23 जून	25 14

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013 ई.	घं. मिं.	2013 ई.	घं. मिं.
30 जून	सू. उ.	30 जून	14 23
2 जुला.	सू. उ.	2 जुला.	17 41
3 जुला.	20 11	4 जुला.	सू. उ.
14 जुला	सू. उ.	15 जुला	सू. उ.
18 जुला	19 02	19 जुला	17 04
21 जुला	सू. उ.	21 जुला	11 53
28 जुला	22 56	29 जुला	सू. उ.
31 जुला	02 39	1 अग.	सू. उ.
5 अग.	17 14	6 अग.	सू. उ.
6 अग.	19 44	7 अग.	सू. उ.
11 अग.	सू. उ.	11 अग.	26 52
14 अग.	26 04	15 अग.	24 49
18 अग.	18 38	19 अग.	सू. उ.
19 अग.	16 08	20 अग.	सू. उ.
25 अग.	07 41	26 अग.	सू. उ.
27 अग.	10 21	29 अग.	सू. उ.
1 सितं.	24 18	2 सितं.	सू. उ.
2 सितं.	सू. उ.	3 सितं.	02 45
3 सितं.	सू. उ.	4 सितं.	04 46
8 सितं.	सू. उ.	8 सितं.	8 31

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013 ई.	घं. मिं.	2013 ई.	घं. मिं.
11 सितं.	7 33	12 सितं.	6 36
15 सितं.	सू. उ.	15 सितं.	24 19
16 सितं.	सू. उ.	16 सितं.	22 27
20 सितं.	17 15	21 सितं.	सू. उ.
22. सितं.	सू. उ.	22 सितं.	17 46
24 सितं.	सू. उ.	24 सितं.	21 01
25 सितं.	सू. उ.	26 सितं.	सू. उ.
29 सितं.	8 13	30 सितं.	10 47
1 अक्तू	सू. उ.	1 अक्तू	12 53
9 अक्तू	सू. उ.	9 अक्तू	12 07
17 अक्तू.	25 53	18 अक्तू.	सू. उ.
18 अक्तू.	13 31	19 अक्तू.	सू. उ.
22 अक्तू.	5 37	22 अक्तू.	सू. उ.
23 अक्तू.	सू. उ.	24 अक्तू.	सू. उ.
25 अक्तू.	13 28	26 अक्तू.	सू. उ.
27 अक्तू.	सू. उ.	27 अक्तू.	19 13
2 नवं.	24 19	3 नवं.	सू. उ.
4 नवं.	21 24	5 नवं.	सू. उ.
9 नवं.	11 48	10 नवं.	सू. उ.
14 नवं.	8 37	15 नवं.	9 13
15 नवं.	9 13	16 नवं.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013-14	घं. मिं.	2013-14	घं. मिं.
18 नवं.	13 31	19 नवं.	सू. उ.
20 नवं.	सू. उ.	20 नवं.	18 20
21 नवं.	21 10	22 नवं.	24 09
30 नवं.	10 48	1 दिसं.	सू. उ.
2 दिसं.	7 44	3 दिसं.	05 26
6 दिसं.	18 59	7 दिसं.	16 54
10 दिसं.	13 54	11 दिसं.	सू. उ.
12 दिसं.	सू. उ.	13 दिसं.	16 16
16 दिसं.	सू. उ.	17 दिसं.	सू. उ.
19 दिसं.	सू. उ.	20 दिसं.	सू. उ.
25 दिसं.	19 32	26 दिसं.	सू. उ.
28 दिसं.	सू. उ.	28 दिसं.	20 09
30 दिसं.	सू. उ.	30 दिसं.	16 42
(सन् 2014 ई.)			
3 जन.	सू. उ.	4 जन.	02 05
7 जन.	सू. उ.	7 जन.	20 20
9 जन.	सू. उ.	9 जन.	21 56
12 जन.	01 58	12 जन.	सू. उ.
13 जन.	सू. उ.	14 जन.	07 22
16 जन.	सू. उ.	17 जन.	सू. उ.
22 जन.	सू. उ.	23 जन.	03 39

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014 ई.	घं. मिं.	2014 ई.	घं. मिं.
31 जन.	सू. उ.	31 जन.	13 18
5 फर.	04 28	5 फर.	सू. उ.
8 फर.	8 12	9 फर.	सू. उ.
10 फर.	सू. उ.	10 फर.	13 31
13 फर.	सू. उ.	13 फर.	22 22
19 फर.	सू. उ.	19 फर.	9 17
2 मार्च	16 50	3 मार्च	सू. उ.
4 मार्च	14 12	5 मार्च	सू. उ.
8 मार्च	सू. उ.	8 मार्च	17 57
16 मार्च	12 24	17 मार्च	सू. उ.
21 मार्च	16 30	22 मार्च	सू. उ.
23 मार्च	15 20	24 मार्च	सू. उ.
30 मार्च	सू. उ.	30 मार्च	25 31

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
15 अप्रै.	6 43	16 अप्रै.	सू. उ.
18 अप्रै.	15 31	19 अप्रै.	सू. उ.
8 मई	04 08	8 मई	सू. उ.
11 मई	10 58	12 मई	सू. उ.
13 मई	सू. उ.	13 मई	16 54
16 मई	सू. उ.	16 मई	25 28

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013 ई.	घं. मिं.	2013 ई.	घं. मिं.
4 जून	9 48	5 जून	सू. उ.
8 जून	सू. उ.	8 जून	20 10
13 जून	सू. उ.	13 जून	7 55
2 जुला	सू. उ.	2 जुला	17 41
14 जुला	20 45	15 जुला	सू. उ.
11 अग.	सू. उ.	11 अग.	26 52
15 अग.	02 04	15 अग.	सू. उ.
8 सितं.	सू. उ.	8 सितं.	8 31
11 सितं.	7 33	12 सितं.	सू. उ.
20 सितं.	17 15	21 सितं.	सू. उ.
9 अक्तू.	सू. उ.	9 अक्तू.	12 07
18 अक्तू.	सू. उ.	18 अक्तू.	26 01
15 नवं.	सू. उ.	15 नवं.	9 13
16 दिसं.	22 35	17 दिसं.	सू. उ.
20 दिसं.	07 01	20 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2014 ई.)			
11 जन.	25 58	12 जन.	सू. उ.
13 जन.	सू. उ.	14 जन.	7 22
16 जन.	13 14	17 जन.	सू. उ.
5 फर.	04 28	5 फर.	सू. उ.
8 फर.	8 12	9 फर.	सू. उ.
10 फर.	सू. उ.	10 फर.	13 31
13 फर.	सू. उ.	13 फर.	22 22
4 मार्च	14 12	5 मार्च	सू. उ.
8 मार्च	सू. उ.	8 मार्च	17 57

अमृत-कण

(1) संसार की प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर है, जो मनुष्य इन वस्तुओं पर भरोसा करता है, वह अवश्य हानि उठाता है।

(2) चार बातें संत भी बच्चों से सीखते हैं -(i) भोजनादि की चिन्ता त्याग, (ii) आपस में लड़कर क्रोध की गाँठ नहीं रखना, (iii) रोगी होने पर भी भगवान् की निन्दा नहीं करना, (iv) संगियों के दुःख-सुख में आसक्त न होना।

रवि योग-संवत् २०७० वि०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013 ई.	घं. मिं.	2013 ई.	घं. मिं.
12 अप्रै.	25 15	13 अप्रै.	25 28
14 अप्रै.	03 49	15 अप्रै.	6 43
16 अप्रै.	9 46	17 अप्रै.	12 47
19 अप्रै.	17 47	21 अप्रै.	20 20
23 अप्रै.	19 58	24 अप्रै.	18 47
1 मई	04 10	2 मई	02 43
13 मई	16 54	14 मई	19 57
15 मई	22 52	17 मई	01 28
19 मई	05 04	21 मई	05 49
23 मई	03 37	24 मई	01 35
30 मई	8 18	31 मई	7 15
12 जून	05 12	13 जून	7 55
14 जून	10 18	15 जून	12 13
17 जून	14 14	19 जून	13 22
21 जून	9 47	22 जून	04 33
22 जून	7 12	23 जून	04 17
28 जून	14 09	29 जून	13 52
11 जुला	16 03	12 जुला	18 03
13 जुला	19 39	14 जुला	20 45
16 जुला	21 10	18 जुला	19 02
21 जुला	11 53	22 जुला	8 57
27 जुला	22 13	28 जुला	22 56
10 अग.	01 09	11 अग.	02 13
12 अग.	02 52	13 अग.	03 05
15 अग.	02 04	16 अग.	23 06
16 अग.	24 08	17 अग.	21 01
19 अग.	16 08	20 अग.	13 40
26 अग.	8 38	27 अग.	10 21
8 सितं.	8 31	9 सितं.	8 31
10 सितं.	8 12	11 सितं.	7 33
13 सितं.	05 22	13 सितं.	13 56
14 सितं.	03 52	15 सितं.	24 19
17 सितं.	20 40	18 सितं.	19 07
24 सितं.	21 01	25 सितं.	23 31
7 अक्तू.	14 29	8 अक्तू.	13 23

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013-14	घं. मिं.	2013-14	घं. मिं.
9 अक्तू.	12 07	10 अक्तू.	10 44
10 अक्तू.	18 24	11 अक्तू.	9 16
13 अक्तू.	06 22	15 अक्तू.	03 50
17 अक्तू.	02 11	18 अक्तू.	01 53
25 अक्तू.	13 28	26 अक्तू.	16 25
5 नवं.	19 29	6 नवं.	13 04
6 नवं.	17 27	7 नवं.	15 25
8 नवं.	13 30	9 नवं.	11 48
11 नवं.	9 21	13 नवं.	8 27
15 नवं.	9 13	16 नवं.	10 14
24 नवं.	03 07	25 नवं.	05 52
5 दिसं.	21 26	6 दिसं.	18 59
7 दिसं.	16 54	8 दिसं.	15 18
10 दिसं.	13 54	12 दिसं.	14 56
14 दिसं.	18 02	15 दिसं.	20 09
15 दिसं.	26 28	16 दिसं.	22 35
23 दिसं.	15 33	24 दिसं.	17 50
(सन् 2014 ई.)			
4 जन.	02 05	4 जन.	23 39
5 जन.	21 49	6 जन.	20 42
8 जन.	20 46	10 जन.	23 42
11 जन.	6 39	12 जन.	01 58
14 जन.	07 22	15 जन.	10 17
22 जन.	02 06	23 जन.	03 39
2 फर.	7 55	3 फर.	06 00
4 फर.	04 50	5 फर.	04 28
8 फर.	8 12	10 फर.	13 31
12 फर.	19 29	13 फर.	22 22
21 फर.	11 01	22 फर.	11 04
3 मार्च	15 11	4 मार्च	14 12
4 मार्च	22 57	5 मार्च	13 59
6 मार्च	14 34	7 मार्च	15 55
9 मार्च	20 30	12 मार्च	02 22
14 मार्च	7 59	15 मार्च	10 23
22 मार्च	16 07	23 मार्च	15 20

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2013-14 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे-ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013-14	घं. मिं.	2013-14	घं. मिं.
13 जन.	19 02	13 जन.	19 19
23 जन.	6 58	23 जन.	सू. उ.
2 फर.	9 34	2 फर.	18 46
19 मार्च	सू. उ.	19 मार्च	9 39
6 अप्रै.	16 23	6 अप्रै.	19 46
22 मई	05 04	22 मई	सू. उ.
24 जुला	03 20	24 जुला	सू. उ.
3 अग.	सू. उ.	3 अग.	11 27
6 अक्तू.	05 04	6 अक्तू.	15 18
19 नवं.	15 45	19 नवं.	24 06
30 नवं.	सू. उ.	30 नवं.	10 48
8 दिसं.	11 11	8 दिसं.	15 18
(सन् 2014 ई.)			
1 फर.	सू. उ.	1 फर.	10 24
18 मार्च	15 15	18 मार्च	24 01
(गुरु पुष्य योग)			
18 अप्रै.	15 31	19 अप्रै.	सू. उ.
16 मई	सू. उ.	16 मई	25 28
13 जून	सू. उ.	13 जून	7 55
20 दिसं.	07 01	20 दिसं.	सू. उ.
16 जन.14	13 14	17 जन.14	सू. उ.
13 फर.	सू. उ.	13 फर.	22 22
12 मार्च	02 22	12 मार्च	सू. उ.
(रवि पुष्य योग)			
27 जन.	सू. उ.	27 जन.	16 29
1 सितं.	24 18	2 सितं.	सू. उ.
29 सितं.	8 13	30 सितं.	सू. उ.
27 अक्तू.	सू. उ.	27 अक्तू.	19 13

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2013-14	घं. मिं.	2013-14	घं. मिं.
12 फर.	सू. उ.	12 फर.	9 13
17 फर.	8 35	17 फर.	12 46
27 फर.	01 59	27 फर.	सू. उ.
3 मार्च	18 18	3 मार्च	22 12
23 अप्रै.	सू. उ.	23 अप्रै.	7 49
27 अप्रै.	सू. उ.	27 अप्रै.	12 47
11 मई	8 00	11 मई	10 58
25 जून	सू. उ.	25 जून	9 23
29 जून	सू. उ.	29 जून	13 52
14 अग.	02 50	14 अग.	05 09
27 अग.	10 21	28 अग.	02 06
1 सितं.	11 26	1 सितं.	24 18
7 सितं.	सू. उ.	7 सितं.	8 11
16 अक्तू	02 52	16 अक्तू	सू. उ.
21 अक्तू	03 52	21 अक्तू	सू. उ.
26 अक्तू	सू. उ.	26 अक्तू	15 59
9 नवं.	सू. उ.	9 नवं.	11 48
24 दिसं.	17 50	25 दिसं.	सू. उ.
29 दिसं.	05 20	29 दिसं.	18 46
(सन् 2014 ई.)			
12 जन.	00 51	12 जन.	01 58
11 फर.	[illegible] 29	11 फर.	22 12
17 फर.	05 49	17 फर.	सू. उ.
22 फर.	सू. उ.	22 फर.	11 04
26 फर.	05 27	26 फर.	सू. उ.
2 मार्च	10 28	2 मार्च	16 50

कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह (सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.) पड़ जाएँ, तो कालसर्प नामक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है–

अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येकपार्श्वे भानांषट्के राहुकेत्वो न खेटः।
योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्जातो जाता वाऽर्थपुत्रर्त्तिमीयात्॥

कालसर्प योग से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं–स्वतन्त्र **भारतवर्ष एवं पाकिस्तान की जन्म कुण्डली, पं० जवाहर लाल नेहरू**, पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक **जुल्फकार भुट्टो, हिटलर (जर्मनी), सुश्री लतामंगेशकर** इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेषात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) में पढ़ें।

वास्तव में राहु-केतु छाया ग्रह हैं। राहु का नक्षत्र भरणी है एवं इसका देवता 'काल' है। केतु का नक्षत्र अश्लेषा है एवं इसके देवता सर्प हैं। कालसर्प योग के प्रभाव के कारण प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएँ तथा आर्थिक उन्नति में बाधाएं रहती हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कुण्डली में केवल कालसर्प योग ही प्रभावित कर रहा हो। कुंडली में बैठे अन्य शुभ योग जातक को आश्चर्यजनक सफलताएं दिला सकता है। कालसर्प योग अत्यन्त समृद्ध साधन सम्पन्न अमीर व्यक्ति की कुंडली में भी हो सकता है अथवा दीन, अभावग्रस्त गरीब व्यक्ति की कुण्डली में भी हो सकता है। मुख्यतः इस योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य अपनी अन्तर्मन की शक्तियों का पूर्णतया उपयोग नहीं कर पाता अथवा सब सुख-साधन सम्पन्न होते हुए भी मानसिक तनाव एवं असन्तोष बना रहता है तथा अज्ञातभय एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त रहती है।

लक्षण–इस योग के कारण जातक को स्वप्नों में सर्प दिखाई देते हैं, पानी दिखना, अपने-आप को उड़ते हुए देखना, परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति आना, पितृशिव देखना, सर्प और नेवेले की लड़ाई दिखे तो निश्चय ही गृह-कलह हो सकता है। कालसर्प योग का उपाय कर लें। ये सब लक्षण है कि आपकी कुण्डली में कालसर्प या आंशिक कालसर्प योग है। आप अपनी कुण्डली किसी विद्वान् ज्योतिषी को दिखाकर उपाय करें।

कालसर्प दोष केवल ग्रह-जनित पीड़ा है, इसलिए इसकी शान्ति मुख्य रूप से-(१) द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से किसी एक ज्योर्तिलिंग के निकट (२) क्योंकि इस योग के अधिष्ठाता श्री महाकाल ही हैं। अतएव यदि प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिलग एवं सिद्ध शक्ति पीठ, कलिया नाग के निवास स्थल पुण्य सलिला क्षिप्रा गंगा के तट पर उज्जैन नगर में है। (३) प्रयागराज (४) नासिक में (५) अथवा यदि सम्भव न हो तो शिव मन्दिर में द्वादश ज्योतिलग का ध्यान करते हुए करें।

—कालसर्प दोष शान्ति के लिए उपाय—

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे-(1) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख ॐ **नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र–ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(2) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें-ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(3) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छीटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(4) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(5) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(6) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(7) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए–

अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्।
शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥
एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये।
सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(8) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(9) सोना-७ रत्ती, चाँदी-१२ रत्ती, तांबा-१६ रत्ती-ये तीनों मिलाकर सर्पाकार अंगूठी अनामिका अंगुली में धारण करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(10) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(11) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(12) यदि किसी स्त्री की कुंडली इस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करवा सकती तो किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

(13) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

फलित ज्योतिष में प्रसिद्ध ग्रह योग

(1) योगों का फल प्राप्ति काल—

यस्य योगस्य यः कर्ता बलवान् जितदृग्युतः।
अधियोगादि योगेषु स्वदशायां फलप्रदः।। ६६।। जातक पारि.

अर्थात्—किसी भी योग का जो ग्रह कारक होवे, यदि बली होकर बली ग्रह से दृष्ट या युत हो, तो वह ग्रह अपनी दशा में उस विशिष्ट योग का फल देता है।

(2) भाग्य का उदय अपने देश में अथवा विदेश में होगा ?

स्वस्वामिदृष्ट युक्तं स्वदेशफल फलदायकं मुनिभिरूक्तम्।
अन्येन सहित दृष्टं परदेशफलप्रदं भवति भाग्यम्।। (सारावली) द्वात्रिंशोऽध्याय।।

अर्थात्—यदि भाग्य भाव अपने स्वामी से दृष्ट वा युक्त हो तो अपने देश में ही फल देने वाला होता है तथा भाग्यभाव स्वामी से दृष्ट व युक्त न होकर अन्य किसी ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो, तो जातक का भाग्य परदेश में फलीभूत होता है। ऐसा मुनिगणों का कथन है।

उदा. कुण्डली 25-02-1936
7-21 A.M. Hoshiarpur

(3) विदेश गमन सम्बन्धी अन्य योग—

यदि भाग्येश व पंचमेश, अष्टमेश युक्त होकर द्वादश भाव में चरराशिस्थ होकर बैठे हों, तो जातक अपने जन्म स्थल से दूर रहकर धनार्जन करता है। धनेश ग्रह की धन भाव पर स्वगृही दृष्टि हो, तो जातक धनी व उच्च प्रतिष्ठित होगा।

(4) पुत्र जन्म से भाग्य वृद्धि के योग—

पुत्र स्थानाधिपे स्वोच्चे लग्नाद् वा द्वित्रिकोणगे।
गुरूणा संयुते दृष्टे वा पुत्र भाग्यमुपेति सः।।१५।। (पराशर होरा.)

अर्थात्—यदि **पंचमेश ग्रह** अपने उच्च में हो (मूल त्रिकोण या स्वक्षेत्र में), अर्थात् राशिबली हो एवं 1, 5 या 9वें स्थान में हो और गुरू से दृष्ट रहे, तो पुत्र जन्म के बाद, जातक का भाग्य चमकता है।

(5) पुत्र जन्म से कलह-क्लेश एवं हानि के योग—

त्रियतुः पापसंयुक्ते सुते सौम्य विवर्जिते।
सुतेशे नीचराशिस्थे नीचसंस्थो भवेत्शिशुः।।१६।। पाराशर होराः।।

अर्थात्—यदि पंचम भाव में कोई शुभ ग्रह न हो तथा तीन चार पापग्रह पंचम में हों एवं **पंचमेश** नीच राशि में हो, तो जातक का पुत्र निंद्य कर्म करने वाला एवं जातक के परिवार को हानि पहुँचाने वाला होगा। (वृहद-पाराशर होराशास्त्र)

(6) राज योग—

चन्द्रः पश्येत् यदाऽऽदित्यं बुधः पश्येत् निशापतिम्।।
अस्मिन्योगे तु यो जातः सः भवेद् वसुधाधिपः।। (मानसागरी)

अर्थात्—जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा सूर्य को देखता हो और बुध चन्द्रमा को देखता हो, तो इस योग में उत्पन्न होने वाला राज तुल्य सुख-साधनों से युक्त होता है।

(7) अपने गुणों से विख्यात राजयोग—

नक्षत्रनाथसहितः सविता नभःस्थः सौरिः विलग्नभवने हिबुके सुरेज्यः।
देवारिपूज्य बुध भूमि सुतै सलाभैः ख्यातो महीपतिरिहगुणैर्नरः स्यात्।।(सारावली)

अर्थात्—यदि कुण्डली में चन्द्रमा के साथ सूर्य दशम भाव में हो तथा लग्न में शनि व चतुर्थ में गुरु एवं एकादश भाव में बुध, शुक्र, भौम हों, तो जातक अपने गुणों द्वारा अर्जित राजा तुल्य सुखों को प्राप्त करता है।

(8) प्रसिद्ध राज योग—

यदि कुं. में मकर लग्न में शनि, सप्तम भाव में सूर्य, अष्टम भाव में शुक्र वृश्चिक राशि में मंगल, कर्क राशि में चन्द्रमा हो, तो जातक भूमि, जायदाद का स्वामी बनकर प्रसिद्ध राजा (नेता) होता है। (सारावली)

(9) यदि कुं. में मकर लग्न में निर्मल (उच्च) का मंगल हो, नवम में शनि, सप्तम भाव में सूर्य व चन्द्र हो, तो जातक अस्थिर स्वभाव वाला राजतुल्य योग होता है।

(10) गजकेशरी योग—

चन्द्रमा से केन्द्र में (१, ४, ७, १०) भाव में गुरू (बृहस्पति) हो, तो गजकेशरी योग होता है।

यदि शुक्र या बुध नीच या अस्त न होकर उच्च, स्वराशि में हों तथा गुरू लग्न भाव को स्वगृही दृष्टि से देखता हो, तो प्रबल गजकेशरी योग होता है। इस सम्बन्ध में भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जन्म कुण्डली द्रष्ट्व्य है, जोकि अनन्य राष्ट्रभक्त एवं सत्यनिष्ट राष्ट्रनेता थे।

भूतपूर्व राष्ट्रपति
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

गजकेशरी योग में उत्पन्न जातक तीव्र बुद्धिमान, मेधावी, विवेकशील, लोकप्रिय, लोकमान्य, उच्चप्रतिष्ठित किंवा किसी पार्टी या समुदाय में प्रमुख राजनेता होता है। मृत्यु के बाद भी उसकी प्रसिद्धि अक्षुण्ण रहती है।

गजकेशरी सञ्जातः तेजस्वी धनधान्यवान्।
मेधावी गुण सम्पन्नो राजप्रिय करो भवेत्।।

(11) केमद्रुम योग—

परिभाषा—यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा के दोनों ओर अर्थात् चन्द्रमा से दूसरे एवं बारहवें भावों में कोई ग्रह न हो, तथा न ही चन्द्र को कोई भी शुभाशुभ देखता हो, तो केमद्रुम योग बनता है।

फल—इस योग के फलस्वरूप जातक का जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण, परिवारिक सुखों से हीन, आर्थिक परेशानियों से ग्रस्त, विदेश में (गृह से दूर) विचरण करने वाला, शत्रुभय से युक्त एवं निम्न कर्मों में रहने वाला होता है।

केमद्रुम भंग योग—यदि चन्द्र स्वराशि या स्वोच्च स्थिति में अथवा मित्र राशि में होकर गुरू, शुक्र, बुधादि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो केमद्रुम का अशुभ फल न होकर जातक धन, स्त्री-पुत्रादि सुखों से युक्त होता है।

(12) पुत्र सन्तति योग

पापे स्वर्क्षगते सुते तनयभाक् तस्मिन् सपापे पुनः पुत्राः स्युः बहुला शुभस्वभवने साग्रे सुते पुत्रहा।

संज्ञां च अल्प सुतर्क्षमित्यलिवृषस्त्री सिंहभानां विदुः तद्राशौ सुत भावगेऽल्प सुतवान् कालान्तरेऽसाविति। (फलदीपिका)

यदि कोई पाप-ग्रह पंचम स्थान का स्वामी होकर उसी स्थान में हो, तो पुत्र सन्तति होगी, लेकिन यदि कोई शुभ-ग्रह स्वराशि का स्वामी होकर पंचम में हो और साथ पंचम में पाप ग्रह हो, तो सन्तान नष्ट हो जाती है।

तात्पर्य यह है कि पाप ग्रह यदि स्वराशि का हो, तो वह अपने स्थान को नहीं बिगाड़ता, परन्तु यदि दूसरे घर में बैठा हो, तो जिस घर में बैठता है, उसको बिगाड़ता है।

(13) पुत्राभाव या पुत्र के कारण क्लेश योग—

पापे लग्ने लग्नपे पुत्रसंस्थे धीशे वीर्ये वेश्मनीन्दावपुत्रः।
ओजर्क्षेशे पुत्रगे सूर्यदृष्टे चन्द्रे पुत्र क्लेश भाक् स्यादसूनुः।। फलदीपिका

(1) पापग्रह लग्न में हों, लग्नेश पंचम में हो, पंचमेश तीसरे घर में हो, और चन्द्रमा चौथे घर में हो तो इस योग से पुत्र सुख नहीं होता।

(2) चन्द्रमा ओज* राशि और ओज अंश में स्थित होकर पाँचवें घर में हो, और सूर्य से देखा जाता हो। ऐसे ग्रह योग के कारण या तो पुत्र नहीं होता, अथवा पुत्र के कारण क्लेश हो।

*मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ-ये सभी ओज राशियां कहलाती हैं।
**अल्पसँज्ञक राशियाँ—वृष, सिंह, कन्या और वृश्चिक अल्प (कम सन्तान वाली) राशियाँ कहलाती हैं। यदि ये राशियाँ पंचम में हो, तो थोड़ी सन्तति होगी और वह भी बहुत समय बाद।

(14) स्थान विशेष से ग्रहों की विफलता—

सभानुरिन्दुः शशिजश्चतुर्थे गुरुसुते भूमिसुतः कुटुम्बे।
भृगुः सपत्नेरविजः कलत्रे विलग्नतस्ते विफला भवन्ति।।७२।। जातकपारिजात

अर्थात्—सूर्य के साथ चन्द्रमा, लग्न से चौथे भाव में बुध, पाँचवें भाव में बृहस्पति, दूसरे में मंगल, छठे में शुक्र और सातवें भाव में शनि हों, तो अपना शुभ फल देने में विफल होते हैं।

(15) ग्रह सहचर्य से बल वृद्धि अर्थात्—
(कौन किसका बल बढ़ाता है)

अर्केण मन्दः शनिना महीसुतः, कुजेन जीवो, गुरुणा निशाकरः।
सोमेन शुक्रोऽसुरमन्त्रिणा बुधो, बुधेन चन्द्रः खलु वर्द्धते सदा।। जातक परि.

अर्थात्—**सूर्य से शनि**, शनि से मंगल, मंगल से वृहस्पति, **बृहस्पति से चन्द्रमा**, चन्द्र से शुक्र, शुक्र से बुध और बुध से चन्द्रमा सदा बढ़ते हैं।

अर्थात्—सूर्य के साथ रहने से **शनि का बल** बढ़ता है। **शनि के साथ मंगल** का बल बढ़ता है एवं मंगल के साथ गुरू का, गुरू के द्वारा चन्द्रमा का, चन्द्रमा के द्वारा शुक्र का, एवं शुक्र के द्वारा बुध का और बुध के द्वारा चन्द्रमा का बल बढ़ता है।।६०।। (जातक पारिजात)

(16) जन्म एवं गोचर ग्रहों का फल देने का समय—*

आद्यन्त मध्यभवनोपगता नभोगाश्च आदिव्यभूमि तनयौ शनिशीतरश्मी।
जीवासुर इन्द्रसचिवौ फलदाः क्रमेण तारासुतः सकलकाल फलप्रदः स्यात् ।।

सूर्य और मंगल राशि के आदि में, शनि और चन्द्रमा राशि के मध्य में, बृहस्पति और शुक्र राशि के अन्त्य में फल देते हैं और बुध सम्पूर्ण राशि में फल देता है। (जातक पारिजात)

रामाचार्य द्वारा भी ऐसा कहा गया है—

राश्यदिगौ रविकुजौ फलदौ, सितेज्यौमध्ये, सदा शशिसुतश्चरमेऽब्ज मन्दौ।।

(16) अन्य ग्रह के योग से ग्रह दोष निवारण—*

राहुदोषम्बुधो हन्यात् उभयोस्तु शनैश्चरः।
त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः।। ७३।।
पंचानां देव मन्त्री च षण्णां दोषं तु चन्द्रमाः।
सप्तदोषं रविः हन्यात् विशेषात् उत्तरायणे।। ७४।। जा. पारिजात

राहु का दोष बुध नाश करता है। इन दोनों के दोषों को शनैश्चर नाश (दूर) करता है। इन तीनों के दोषों को मंगल नाश करता है। फिर इन चारों के दोषों को शुक्र नाश करता है। इन पांचों के दोषों का नाश वृहस्पति करता है। इन छहों ग्रहों के दोषों का संहार चन्द्रमा करता है। सात दोषों का हनन सूर्य करता है। सूर्य यदि उत्तरायण में हो, तो विशेष रूप से दोषों का नाश करता है।

आयुनिर्णय (एक दृष्टिकोण)

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आयु के योग तीन प्रकार के होते हैं–
अल्पायु, मध्यायु और दीर्घायु।।

त्रिविधाश्चायुषो योगाः स्वल्पायुर्मध्यदीर्घोत्तमाः।

32 वर्ष तक अल्पायु कहलाती है। 32 वर्ष के पश्चात् 64 वर्ष तक मध्यायु कहलाती है तथा 65 के उपरान्त सौ (100) वर्ष तक **दीर्घायु** कहलाती है। सौ (100) वर्ष से अधिक **उत्तम आयु** कहलाती है।

द्वात्रिंशात्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत्।।
चतुःषष्ठयाः पुरस्तात् तु ततो दीर्घमुदाहृता।
उत्तमायुः शतातूर्ध्वं ज्ञातव्यं मुनिसत्तम्।।

श्री मन्त्रेश्वर अनुसार बारह वर्ष की अवस्था तक बालक/बालिका की आयु का विचार निश्चयपूर्वक नहीं किया जा सकता। बालक की कुण्डली में दीर्घायु योग होने पर भी माता-पिता के लिए हुए पाप-कर्म या बालारिष्ट ग्रह योगों के कारण बच्चे की अकालमृत्यु हो सकती है।

अन्यत्र भी इस विषय में उल्लेख मिलता है–

आद्वादशाब्दात् जन्तूनामायुः ज्ञातुं न शक्यते।
जप होमचिकित्साद्यैः बालरक्षां तु कारयेत्।।

अर्थात् बारह (12) वर्ष की अवस्था तक बच्चे की आयु का ज्ञान नहीं हो सकता है, तब तक जप, होम, औषधि, प्रभु प्रार्थना आदि से बालक की रक्षा करनी चाहिए। बारह वर्षों में जातक की अपमृत्यु का कारण बतलाते हुए श्री मन्त्रेश्वर महाराज लिखते हैं, कि प्रथम बारह वर्ष की आयु में से **प्रथम चार वर्ष** की आयु तक **माता के पापों के कारण** बालक की अपमृत्यु हो जाती है। चार वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु में पिता के पापों के कारण और आठ से बारह वर्ष तक की आयु में बच्चे की अपने पूर्व जन्म के पापों के कारण अपमृत्यु होती है–

आद्ये चातुष्के जननीकृताद्यैःमध्ये च पित्रार्जित पाप संघैः।
बालस्तदन्त्यासु चतुःशरत्सु स्वकीयदोषैः समुपैति नाशम्।।

बालारिष्टादि योग–जन्म से आठ वर्ष तक विशेष शरीर कष्ट होने से [A]बालारिष्ट कहलाता है। आठ वर्ष से बीस वर्ष तक योगारिष्ट, बीस से 32 वर्ष तक अल्पायु कहलाती है। 32 से 70 तक मध्यमायु और 70 से 100 वर्ष तक पूर्णायु कहलाती है। (मतान्तर से 32 से 64 वर्ष तक को मध्यमायु तथा 65 से 100 तक पूर्णायु मानते है, जैसा कि लेख के प्रारम्भ में उल्लिखित है।)

इस सम्बन्ध में आचार्य वैद्यनाथ रचित **'जातक पारिजात'** के मत अनुसार सात प्रकार के आयु के भेद कहे गए हैं–

बालारिष्ट योग संजातमल्पं तेषां भङ्गान्मध्यमं दीर्घमायुः।
दिव्यं योगाभ्यासमन्त्र क्रियाद्यैरायुः सप्तैतानि संकीर्तितानि।।

अर्थात् (1) बालारिष्ट 8 वर्ष तक, (2) योगारिष्ट 20 वर्ष तक, (3) अल्पायु 32 वर्ष तक, इनके भंग से (4) मध्यमायु 70 वर्ष तक, (5) दीर्घायु 100 वर्ष तक, उसके बाद (6) देवायु, उसके अनन्तर, (7) योगाभ्यास मन्त्रादिक अनुष्ठानादि द्वारा असँखयायु– ये सात प्रकार के आयु के भेद कहे गए हैं।

अल्पायु सम्बन्धी कुछ बालारिष्ट योग

(1) विलग्नयातस्त्वपि देवमन्त्री विनाश रिःफारिगते शशांके।
विलोकिते पापवियच्चरेण विभानुना मृत्युमुपैति बालकः।। (जा. पारि.)

अर्थात् जन्मकाल में यदि क्षीण चन्द्रमा छठे, आठवें या 12वें भाव में रहकर सूर्य के अतिरिक्त पाप ग्रह (मंग., शनि, राहु, केतु) ग्रह से देखा जाता हो, तो गुरू (बृहस्पति) के लग्न में रहने पर भी बालक मृत्यु को प्राप्त होता है, अर्थात् यह प्रबल अरिष्ट योग है। यदि उक्त दुःस्थानों में क्षीण चन्द्र की भौम या शनि या राहु से अंशात्मक युति हो, तो भी विशेष अरिष्टप्रद होता है।

(2) गण्डान्ततारा सहिते मृगांके पापेक्षिते पापसमन्विते वा।
बालो लयं याति समृत्युभागे चन्द्रे तथा पापनिरीक्षितो वा।।

अर्थात् गण्डान्त नक्षत्र में चन्द्रमा हो, वह पापग्रह से दृष्ट या युक्त हो, तो बालक को अरिष्ट होता है, अथवा अष्टम भाव में स्थित चन्द्र पर पाप ग्रह की दृष्ट हो, तो भी बालक को अरिष्ट होता है, अथवा मृत्यु को प्राप्त होता है।

नोट–कर्क, बृश्चिक व मीन का अन्त्य भाग तथा मेष, धनु का प्रारम्भ भाग को गण्डान्त (राशि सन्धि) संज्ञा होती है।

A-बालारिष्ट के अन्तर्गत तिथि, वार, लग्न या लग्ननेशादि या राहु आदि अनिष्ट ग्रह सम्बन्धी योगों का होना या क्षीण चन्द्र का 6, 8, 12वें स्थान में पड़ना अथवा लग्न गण्डान्त, नक्षत्र गण्डान्त, विषघटी आदि नक्षत्रांशों पर बालक का जन्म होना, बालारिष्ट दोष कहलाता है।

(3) क्षीण चन्द्र लग्न में हो, पाप ग्रह (मंगल, शनि, या राहु या केतु) केन्द्र अथवा अष्टम भाव में हों, तो बालक की अपमृत्यु होने की सम्भावना होती है। 6, 8 वें भावों में शुभ ग्रह पापग्रहों से दृष्ट हों, तो बालक की मृत्यु एक मास में होती है।

(4) चन्द्र पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर 1, 6, 8 या 12 वें भाव में स्थित हो, और चन्द्र शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तथा केन्द्र भावों में शुभ ग्रह का अभाव हो, तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

(5) चन्द्र क्रूर ग्रहों से युक्त होकर 1, 7, 8 या 12वें भाव में हों, केन्द्र में शुभ ग्रह न हों और चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो, तो बालक की आयु को अरिष्ट होता है।

(6) निम्नलिखित योगों में बालक/बालिका की आयु को अरिष्ट योग होता है–

(क) जन्म कुण्डली के चारों केन्द्रों में क्रमशः चन्द्र, सूर्य, मंगल एवं शनि हों। अर्थात् एक केन्द्र में चन्द्र, दूसरे केन्द्र में सूर्य, तृतीय में मंगल तथा चौथे केन्द्र में शनि हो।

(ख) 2, 6, 8 एवं 12वें भावों में पाप ग्रह हों।

(ग) बुध, गुरू, शुक्र, ग्रह, वक्री होकर क्रूर ग्रहों से दृष्ट हों तथा लग्न में शुभ ग्रह न हों।

(घ) छठे भाव में मंगल, शनि हों, बुध बारहवें भाव में हो तथा लग्न में चन्द्रमा हो।

(ङ) अष्टमेश ग्रह केन्द्र में हो, और लग्नेश निर्बली हो।

(च) चन्द्र या शनि से युक्त सूर्य अष्टम भाव में हों, तो भी अपमृत्यु योग होता है।

दशा से मृत्यु परिज्ञान

- यदि अष्टमेश ग्रह छटे, आठवें या बारहवें स्थान में स्थित हो, तो उसकी दशा या अन्तर्दशा में मृत्यु जाननी चाहिए।
- *अथवा* शनि की अधिष्ठित राशि के स्वामी की दशा में अष्टमेश की अन्तर्दशा में जातक की मृत्यु होती है।
- *अथवा* अष्टमेश ग्रह की दशा में मृत्यु होती है। या अष्टमेश ग्रह से युक्त ग्रह की अन्तर्दशा अरिष्टकर होती है।
- मारक दशा का निश्चय करने में अष्टमेश एवं आयुष्य के कारक शनि की दशा आदि का विचार करना चाहिए। अष्टमेश यदि दुष्ट स्थानों में स्थित हो, तो वह दशा विशेष अरिष्टकर होगी।
- अष्टमेश, लग्नेश, दशमेश तथा शनि–इनमें जो ग्रह निर्बह हो तथा राहु से युक्त हो, तो उसकी दशा अरिष्टकारक होती है।
- *अथवा* इस राहु युक्त ग्रह से जो ग्रह दृष्ट या युक्त हो उसकी दशा या अन्तर्दशा अरिष्टकर या मारक होती है।
- अष्टमेश या लग्नेश की अधीष्ठित राशि के स्वामी की दशा अरिष्टकारक होती है।
- लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम या दशम स्थानों में यदि लग्नेश तथा अष्टमेश हों तथा वे किन्हीं ग्रहों से युक्त हो, तो उन ग्रहों में जो सबसे निर्बल ग्रह होगा, उसकी दशा में बालक/बालिका की आयु को अरिष्ट होता है।

गर्भाधान से जन्म तक महीनों के स्वामी ग्रह

गर्भाधान से लेकर नौ या दस महीनों तक की अवधि में, प्रत्येक मास का अलग-अलग स्वामी ग्रह माना जाता है। यदि किसी जातक या जातिका की जन्म-कुण्डली में ग्रहदशा/अन्तर्दशा अथवा गोचर स्थिति अशुभ चल रही हो, तो गर्भ हानि होने की सम्भावना होती है। गर्भवती स्त्री के गर्भ-मासानुसार पीड़ित ग्रह की पूजा, जप, दानादि करवाने से शान्ति होती है।

यो ग्रहो विवर्णो भवेत्तन्मासे गर्भे पीडा, तथा
यो ग्रहों निपीडितो भवेत्तन्मासे गर्भस्य स्खलनं -वाच्यम् (जातक परि.)

प्रथम मास का शुक्र, दूसरे मास का मंगल, तीसरे मास का गुरू, चौथे मास का सूर्य, पांचवें मास का चन्द्र, छठे का शनि, सातवें मास का बुध है। आठवें मास का स्वामी आधान लग्नेश, नवमें मास का स्वामी चन्द्रमा और दशवें मास का स्वामी सूर्य है।

मासाधिपति ग्रह पीड़ित हो, तो अपने मास में गर्भपात करता है, निर्बल हो तो पीड़ा देता है, बलवान् हो, तो गर्भ की पुष्टि करता है। (जातक परि.)

गर्भ के महीनों के स्वामी ग्रह

गर्भ मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरू	सूर्य	चन्द्र	शनि	बुध	आधान लग्नेश	चन्द्र	सूर्य

अशुभ एवं पीड़ित ग्रह की (स्त्री के गर्भ-मासानुसार) विधिपूर्वक पूजा जप, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाने से शान्ति होती है।

अरिष्ट भङ्ग योग

(1) शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त बलान्वित लग्नेश केन्द्र में पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो, तो बालक भाग्यशाली एवं दीर्घायु होता है।

अत्यन्तसत्त्वं यदि लग्ननाथे, सौम्यान्विते तादृश दृष्टि योगे।
केन्द्र स्थिते पापदृशा विहीने सद् भाग्य युगजीवति दीर्घमायुः।।

(2) तीसरे, छटे या ग्यारहवें (3, 6, 11)वें भाव में भौम, शनि, राहु, इकट्ठे या दो, या एक-एक हो, तो सब अरिष्टों को दूर करते हैं।

त्रिषडैकादशे भौमस्त्रिषडैकादशे शनिः।
त्रिषडैकादशे राहुः, सर्वारिष्ट निवारकाः।।

(3) पूर्ण चन्द्रः, शुभग्रह (स्वराशि, उच्चादि) की राशि में या शुभ ग्रह के नवांश में हो, और गुरू, शुक्रादि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सब अरिष्ट नाश होते हैं–

चन्द्र सम्पूर्ण गात्रस्तु सौम्य क्षेत्रांशगोऽपि वा।
सर्वारिष्ट निहन्ता स्यात् विशेषात् शुभवीक्षितः।

(4) बुध, गुरू, शुक्र–इन तीनों में एक भी बलान्वित होकर केन्द्र में हो और पापग्रह से दृष्ट या युक्त न हो, तो अरिष्ट का नाश होता है।

(5) कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो अथवा शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो, और ऐसे योग 6, 8 एवं 12वें भावस्थ चन्द्र माता की तरह पुत्र का पालन करता है, अर्थात् अरिष्ट दूर करता है। अर्थात् त्रिकस्थ चन्द्र को शुभाशुभ ग्रह देखते हों, तो भी अरिष्ट दूर होता है–

कृष्ण पक्षे दिवा जन्म शुक्ल पक्षेऽथवा निशि।
रिष्फारि रन्ध्रगश्चन्द्रो मृतृवत्परिपालकः।।

(6) **केन्द्रपगोऽतिबलवान् स्फुरंदशुमाली।**
स्वर्लोकराजिसचिवः शमयेद् अवश्यम्।।

अर्थात् बलवान् गुरु केन्द्र-त्रिकोण में हो तो अनेकों अरिष्ट दूर होते हैं।

(7) बली लग्नेश केन्द्र-त्रिकोण (1, 4, 5, 7, 9, 10) भावों में हो तो अरिष्ट योग होने पर भी बालक की चिरायु होती है।

(8) जिसकी कुण्डली में केन्द्र, त्रिकोण और अष्टम में पाप ग्रह न हों तथा लग्न का स्वामी और बृहस्पति केन्द्र में हो, तो ऐसा व्यक्ति पुण्यकर्म करने वाला, अनेक सुख, भोग एवं ऐश्वर्यों से युक्त, नीरोग रहता हुआ सौ वर्ष तक जीता है।

केन्द्रत्रिकोण निधनेषु न यस्य पाप लग्नाधिपः सुरगुरूश्च चतुष्टयस्थौ।
भुक्त्वा सुखानि विविधानि सुपुण्यकर्माजीवेच्च वत्सरशतं स विमुक्तरोगः।।२४।।

(फलदीपिका अध्याय १३।।

सामान्यतः 6, 8 या 12वें स्थानों के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उन्हीं भावों का नाश करते हैं, परन्तु अष्टमेश व लग्नेश एक ही ग्रह हो, जैसे मेष लग्न में मंगल, तो वह शुभफलदायक होता है। सूर्य व चन्द्रमा यदि अष्टमेश भी हों, तो भी अशुभ फल नहीं देते हैं। यही दोनों यदि मारक स्थान (2, 7) के स्वामी भी हों, तो भी मारकेश नहीं होते हैं।

किसी जातक की जन्मपत्री में सूक्ष्मफल कथन में भाव पद्धति, दशापद्धति, सुदर्शनपद्धति, गोचरपद्धति और अष्टकवर्ग आदि पद्धतियों का अनुशीलन अवश्य करना चाहिए।

श्रीपत्युदीरित दशाभिरथष्टवर्गात् यत्कालचक्रदशयोडु दशाप्रकारात्।
सम्यक्स्फुटाभिहतया क्रिययाप्त वाक्यात् आयुर्बुधो वदतु भूरिपरीक्षया च।।

अर्थात् जन्मकुण्डली में आचार्यों के आदेश अनुसार ग्रह स्पष्ट, दशा आदि का गणित कर श्रीपति द्वारा प्रतिपादित ग्रह दशाएँ, अष्टकवर्ग, कालचक्र दशा आदि का पूरा विचार कर आयु का निर्णय करना चाहिए।

जड़ी-बूटियों से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति

हमारे परम दयालु महार्षियों ने (जो लोग बहुमूल्य रत्नों को धारण करने में असमर्थ हैं–उनके) ग्रह दोषों की शान्ति के लिए जड़ी-बूटी को धारण करना भी बतलाया है। वह इस प्रकार समझें–

सूर्य पीड़ाकारक हो तो बेलपत्र की जड़ गुलाबी डोरे में रविवार को धारण करें। **चन्द्र पीड़ाकारक** हो तो खिन्न की जड़ सफेद डोरे में सोमवार को, **मंगल पीड़ाकारक** हो तो अनन्तमूल की जड़ लाल डोरे में मंगलवार को, **बुध पीड़ाकारक** हो तो विधारा की जड़ हरे डोरे में बुधवार को। **गुरु पीड़ाकारक** हो तो नारंगी या **केले की जड़** पीले डोरे में गुरुवार को, **शुक्र पीड़ाकारक** हो तो सरपोंखा की जड़ सफेद डोरे में शुक्रवार को धारण करें। **शनि पीड़ाकारक** हो तो बिच्छू की जड़ काले डोरे में शनिवार को धारण करें। **राहु पीड़ाकारक** हो तो सफेद चन्दन नीले डोरे में बुधवार को धारण करें। **केतु पीड़ाकारक** हो तो अष्टगन्ध की जड़ आसमानी डोरे में गुरुवार को धारण करें।

नव ग्रह पीड़ा निवारक यन्त्र

८ ॐ ह्रीं राहवे नमः	१ ॐ ह्रीं सूर्याय नमः	६ ॐ ह्रीं शुक्राय नमः
३ ॐ ह्रीं भौमाय नमः	५ ॐ ह्रीं गुरवे नमः	७ ॐ ह्रीं शनये नमः
४ ॐ ह्रीं बुधाय नमः	९ ॐ ह्रीं केतवे नमः	२ ॐ सों सोमाय नमः

उपर्युक्त यन्त्र को नवग्रह स्तोत्र के पाठ उपरान्त अष्टगन्ध से एवं भोजपत्र पर सप्त या अष्टधातु की प्लेट पर खुदवा कर शुभ मुहूर्त्त कालीन दानपूर्वक अपने पास रखने से नवग्रह जनित नेष्टफल दूर हो जाता है।

चैत्र प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, दशहरा, दीपावली की रात, अयनकाल, ग्रहणकाल, सायनसंक्रांतिकाल, पूर्णिमा, गुरुपुष्ययोग, त्रिपुष्कर आदि योग भी शुभ मुहूर्त्त काल माने जाते हैं।

अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय

जन्म कुण्डली में पड़े ग्रह मनुष्य जीवन के शुभाशुभ कर्मों के नियामक (Determinant) नहीं, बल्कि सूचक होते हैं। मनुष्य जीवन में घटित होने वाली समस्त शुभाशुभ घटनाएं, लाभ-हानि, भाग्य में उन्नति व अवनति, सफलता-असफलता, सुख-दुख, जन्म व मृत्यु की स्थिति आदि बीज रूप में गर्भकाल से ही प्रस्फुटित होने लगते हैं। किसी जातक की जन्म कुण्डली उसके पूर्वजन्म के संचित एवं प्रारब्ध कर्मों का ही प्रतिफल है तथा मनुष्य का वर्तमान जीवन उसके पूर्वकृत संकल्पों एवं क्रियमान कर्मों का ही परिणाम है।

हमारे धर्म शास्त्रों के अनुसार भी मनुष्यों को अपने पिछले जन्मों में किए गए कर्मों के फल को अवश्य ही भोगना पड़ता है-

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।

आजकल बाज़ार में उपायों के नाम पर पुस्तकों में मनघढ़न्त व अनर्गल उपाय बताकर स्वयं को स्वयंभू भगवान/गुरु प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अधिकांश समाचार पत्र एवं टेलीविजन मीडिया के लोग भी इस प्रवृत्ति की सम्पुष्टि का कार्य करते हुए सामान्य लोगों को भ्रमित करने की कोशिश करते हैं। सुविज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि वे शास्त्र अनुमोदित उपायों का ही अनुसरण करते हुए अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें। श्रीमद् भगवद्गीता में भी भगवान् श्रीकृष्ण ने निर्देश दिया है-

यः शास्त्र विधिं उत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अर्थात् जो लोग शास्त्र प्रतिपादित विधियों को छोड़कर मनमाने ढंग से आचरण करते हैं, न वो कार्यसिद्धि को प्राप्त करते हैं, न उन्हें सुख व शान्ति मिलती है तथा न उनकी परलोक में गति होती है।

द्वादश भावों में अशुभ सूर्य के उपाय- *लाल किताब मतानुसार*

(1) प्रथम भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. सार्वजनिक स्थानों पर नल या पियाऊ लगवाना शुभ होगा।
2. धर्मस्थान या चैरिटेबल स्थानों पर अनाज,नारियल, तेल, बादाम, उड़द, चने की दाल, और दवाईयों का दान करना शुभ होगा।
3. भगवान श्री विष्णु का पूजन एवं देसी खांड, मसूर की दाल, सौंफ, छुआरे, शहद आदि का दान रविवार के दिन करना शुभ होगा।
4. शराब, मांस, मछली आदि का पूरी तरह से परहेज़ करना।

(2) द्वितीय भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. भगवान सूर्य को अर्घ्य देना शुभ होगा।
2. अनाज, धान और हरी वस्तुओं को कभी भी बिना मूल्य दिए न लें अर्थात् इन सब को खरीद कर ही प्रयोग करें।
3. ज़मीन-जायदाद सम्बन्धी झगड़े से बचना चाहिए।
4. यदि शरीर कष्ट हो तो तांबे का सिक्का चलते पानी में बहाना शुभ रहेगा।

(3) तृतीय भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. भगवान सूर्य को शुद्ध जल में गुड़ डालकर अर्घ्य मंत्रपूर्वक **"ॐ घृणिः सूर्याय नमः"** देना शुभ रहेगा।
2. रविवार का व्रत विधिपूर्वक करें।
3. श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर में दूध, चावल, चीनी और बर्फी का दान करना।
4. अपने जन्मदिन पर गंगादि पवित्र तीर्थ पर स्नान करके श्री लक्ष्मी नारायण की पूजा करना शुभ रहेगा।

(4) चतुर्थ भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. बहन व बुआ की सन्तान की सेवा करना शुभ होगा।
2. अपने पैतृक मकान न होने की स्थिति में अन्ध विद्यालय, अन्धचक्षु जनों को अन्न, फल, वस्त्र, धनादि द्वारा सहायता करना शुभ होगा।
3. अपने खानदानी या पैतृक कार्य से लाभ के लिए भगवान सूर्य को मीठे जल का लाल पुष्प डालकर अर्घ्य मंत्रपूर्वक देना शुभ होगा।
4. सोने का छल्ला बाएं हाथ में धारण करें।

(5) पंचम भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. बन्दरों को गुड़, चने, एवं भुनी हुई कनक(शक्कर सहित) खिलाना शुभ होगा।
2. पंचम में सूर्य यदि राहु युक्त हो तो पितृदोष के कारण संतान सुख में कमी होती है, पितृदोष के लिए बड़ वृक्ष एवं पीपल के वृक्ष का पूजन करें।
3. संतान सुख में वृद्धि के लिए बृहस्पति के दिन चने की दाल, केसर, हल्दी, पीले पुष्प, पीला वस्त्र दक्षिणा सहित कुल पुरोहित को दान करें।
4. अपने मकान में रसोई पूर्व दिशा की दीवार के साथ बनाना शुभ रहेगा।

(6) षष्ठ भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. रविवार को धर्म स्थान पर यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फलादि का दान करें।
2. चांदी की डिब्बी में गंगाजल भर कर घर में पवित्र स्थान पर रखना शुभ होगा।
3. श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर में पूर्णमाशी को चावल, दूध, चीनी, चांदी, सफेद मोती एवं नारियल आदि चढ़ाना तथा खीर का प्रशाद कन्याओं में बांटना शुभ होगा।
4. पिता की आयु तथा पैतृक सुखों में वृद्धि के लिए रात को पानी सिरहाने रखकर सोना और प्रातः पानी बट वृक्ष की जड़ में डालना शुभ होगा।
5. रात को भोजन बनाने के पश्चात् चूल्हे (अग्नि को) को दूध के छींटे देकर बुझाना शुभ होगा।

(7) सप्तम भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. काले वर्ण की गाय की सेवा करना शुभ होगा।

2. तांबे के चौरस 7 सिक्के ज़मीन में गाड़ना शुभ होगा।

3. लड़के का विवाह 22 वर्ष के पश्चात् 23, 25, 27 आदि विषम वर्षों में करें तथा कन्या का विवाह 24, 26, 28 आदि सम वर्षों में करना शुभ होगा।

4. पूर्णमाशी का व्रत रखें तथा कोई महत्वपूर्ण कार्य आरम्भ से पहले पानी पीना शुभ होगा।

(8) अष्टम भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. रविवार को 800 ग्राम कनक व 800 ग्राम गुड़ मन्दिर में चढ़ाना शुभ , ऐसा शुक्लपक्ष के रविवार से शुरु करके आठ रविवार करें।

2. अपने पिता एवं बड़े भाई की आज्ञा का पालन करना तथा लाल वर्ण की गौओं की सेवा करना शुभ होगा।

3. अपना मकान दक्षिण मुखी द्वार वाला न बनाएं।

4. स्वास्थ्य रक्षा के लिए लाल वस्त्र में बाजरा, शिलाजीत, तांबा, गेहूँ, गुड़, नारियल,सूखा नारियल बांध कर रविवार को चलते पानी में बहाना शुभ होगा।

(9) नवम भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. मन्दिर अथवा किसी भी धर्मस्थान में चावल, चांदी एवं दूध आदि श्वेत वस्तुओं का दान देना शुभ होगा, परन्तु इन्हीं वस्तुओं का स्वयं दान लेना अशुभ होगा।

2. चितकबरे रंग की गाय को मीठी चपातियां खिलाना शुभ होगा।

3. घर में रखे पीतल एवं चांदी के बर्तनों में चावल भरकर रखना अर्थात् उन्हें खाली न रखें।

4. यदि सूर्य-राहु का योग हो तो जौं दूध में धोकर चलते पानी में बहाना स्वास्थ्य की दृष्टि से शुभ होगा।

5. अपनी चारपाई के पायों में तांबे की कील लगाना शुभ होगा।

(10) दशम भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. चलते पानी में तांबे का सिक्का डालें तथा गाय की सेवा करना शुभ रहेगा।

2. श्वेत या शर्बती रंग की पगड़ी या टोपी पहनना और स्त्रियों को भी सिर ढक कर रखना शुभ रहेगा।

3. धर्म स्थान पर हैण्ड पम्प या पियाऊ लगाना शुभ होगा।

4. काले-नीले रंग के वस्त्रों तथा तामसिक भोजन से परहेज़ रखें।

(11) एकादश भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. शनिवार रात्रि को पाँच मूलियां सिरहाने रखकर रविवार की प्रातः धर्मस्थान में देना।

2. ताम्र बर्तन में कनक भरकर धर्मस्थान में दान करें तथा अपना चालचलन शुद्ध रखें- संतान सुख में वृद्धिकारक होगा।

3. अपने जन्मदिन से शुरु करके लगातार 43 दिन तक भूमि पर शयन करना और श्री लक्ष्मी नारायण जी का पूजन करना शुभ रहेगा।

4. रविवार का व्रत करना और कुष्ठ आश्रम में भोजन कम से कम 11 व्यक्तियों को करवाना शुभ होगा।

(12) द्वादश भाव में सूर्य अशुभ फलकारक होने पर —

1. रविवार के दिन बन्दरों को गुड़, चने एवं भुनी हुई कनक खिलाना तथा अन्ध विद्यालय में मिष्ठान सहित भोजन करवाना।

2. भूरे रंग की गाय को मीठी चपातियां तथा भूरी चीटियों को त्रिचौली खिलाना शुभ होगा।

3. विवाह के पश्चात् किसी से भी बिजली का सामान मुफ्त में नहीं लेना चाहिए अर्थात् खरीद करके ही प्रयोग करना शुभ रहेगा।

4. प्रत्येक रविवार और संक्रान्ति को सूर्याष्टक स्तोत्र, नेत्रोपनिषद्, गायत्री मंत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

5. स्वयं सद्चरित्र का पालन करना शुभ रहेगा।

द्वादश भावों में अशुभ चन्द्र के उपाय– लाल किताब मतानुसार

(1) प्रथम भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. भगवान शिव का पूजन एवं मन्त्र जप करना तथा माता पिता की सेवा करना और उन का आशिर्वाद लेना।

2. रात को दूध, पानी, थोड़ी चीनी सिरहाने रखकर सोमवार की प्रात वट या कीकर के वृक्ष की जड़ में डालना।

3. सोमवार को सफेद वस्त्र में मिश्री बांधकर चलते पानी में बहावें।

4. चांदी की अंगूठी में मोती धारण करें तथा कांच के गिलास में पानी, दूध, चाय आदि के सेवन से परहेज़ रखना शुभ होगा।

(2) द्वितीय भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. माता से कुछ चावल एवं चांदी लेकर सफेद वस्त्र में बांध कर रखने अथवा कुछ पुराने चावल चांदी की डिब्बी में संभाल रखना शुभ होगा।

2. अपनी माता की सेवा करके उनका आशीर्वाद ग्रहण करने से चन्द्र शुभ देने लगता है।

3. दूध व चावल धर्म स्थान पर दान करना तथा पलंग का चारों पावों पर चार चांदी के कील लगवाना शुभ होगा।

4. मकान की नींव में चांदी की प्लेट या पतरा शुभफली होगा।

(3) तृतीय भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. कन्या के जन्मदिन पर दूध, चावल, चीनी, चांदी और चन्द्र की वस्तुएं तथा पुत्र के जन्मदिन पर सूर्य की (गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि) वस्तुएं धर्म स्थान पर दान करना शुभ होगा।

2. सामान्य स्थिति में सूर्य की वस्तुएं दान देना अच्छा होगा, श्री दुर्गा पूजा एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

(4) चतुर्थ भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. यहां शुभता के लिए विशेष कार्य पर जाने से पूर्व दूध या पानी का कुम्भ या गड़वा सामने रहना शुभ होगा।

2. दूध का दान करना शुभ होगा, परन्तु दूध या वस्त्रादि श्वेत वस्तुओं का व्यापार करना हानिकारक होगा।

3. चन्द्र चतुर्थ के सामने शुक्र दशम में हो तो माता और स्त्री दोनों से सहायता प्राप्त हो।

4. चंद्र से सप्तम (अर्थात् दशम) में बुध हो तो विदेश गमन से विशेष लाभ हो।

5. चतुर्थ में चन्द्र वाले जातक दादा-पौत्र अथवा नान-दोहता एक साथ धर्म स्थान पर जाकर दान आदि शुभ कार्य करें तो विशेष फल प्रदायक होगा। मानसिक शान्ति के लिए श्री शिवपूजन करना शुभ होगा।

(5) पंचम भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. सोमवार को श्वेत कपड़े में चावल व मिश्री बांधकर बहते पानी में बहाना शुभ होगा।

2. आम्रफल का रस शिवलिङ्ग पर चढ़ाना शुभ होगा।

3. सच्चाई और ईमानदारी का मार्ग अपनाने से सुख व ऐश्वर्य में वृद्धि होगी।

4. सोने से पहले दम्पत्ति दूध में सोने की सिलाई गर्म करके बुझा कर पीना (यह पुत्रोत्पत्ति के लिए शुभ है)।

(6) षष्ठ भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. रात को दूध के सेवन से परहेज करें, परन्तु अपने पिता जी की सेवा दूध, दही, मक्खन आदि द्वारा करना शुभ होगा।

2. सूर्य, मंगल एवं बृहस्पति की वस्तुएं (जैसे गेहूँ, गुड़, केशर, शहद, हल्दी आदि) का दान देना अच्छा फल देगा।

3. किसी चैरिटेबल अस्पताल या शमशान में प्याऊ लगाना शुभ फल देगा।

4. श्री शिवपंचाक्षर स्तोत्र का पाठ करना भी शुभ रहेगा।

(7) सप्तम भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. जातक दूध या पानी विक्रय व्यापार करे तो पुत्र सन्तति के सुख में बाधाकारक होगा।

2. जातक 24वें वर्ष विवाह न करें।

3. माता के साथ सद्व्यवहार रखें।

4. यदि लड़की की कुण्डली में 7वें चन्द्र हो तो उसके दहेज में चावल एवं चांदी के बर्तन देना उसके दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि कारक होगा। श्रीमङ्गला गौरी की पूजा करना शुभ रहेगा।

उपरोक्त मैटर हमारी छपी पुस्तक अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाये व टोटके से लिया गया है। लेख का शेष भाग आगामी वर्ष की पंचाँग में दिया जाएगा।

नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्रायः सभी शुभ **संस्कारों** (विवाह-मुण्डनादि) एवं मन्त्र-जपादि **अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। **''चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि (ब्रह्मपुराण)।''** सम्भवतः इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप-दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन-सम्पदा एवं सुख-शान्ति बनी रहती है। संवत् 2070 में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 11 अप्रैल, 2013 ई० गुरूवार से **'पराभाव'** नामक नया संवत्सर प्रारम्भ होगा।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रातः तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट-स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत-मिट्टी में जौं-गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा-इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका **'पंचांगदिवाकर'**, सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ ब्रह्मणे नमः से ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म-विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च। फिर सम्वत्सर की मूर्त्ति अथवा प्रतीक रूप में सुपारी रखकर निम्न मन्त्रों से पूजन एवं प्रार्थना करें–

''भगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।''

ॐ सम्वत्सराय नमः, चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः। आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों नया पंचाँग दिवाकर आदि का दान करें।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र-पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम**, सम्वत् **का वास**, **सवारी राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्-विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन प्रातः कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

बारह संक्रान्तियों का प्रवेशफल एवं महत्त्व (वि. संवत् २०७०)

सूर्य जब एक राशि को छोड़कर दूसरी राशि में प्रवेश करता है, उस काल या दिन को संक्रान्ति कहते हैं।

रवे संक्रमणं राशौ संक्रान्तिरिति कथ्यते।
स्नानदानजप श्राद्ध, होमादि महाफलम्।। **(पु. चिन्तामणि)**

मेष, वृष, मिथुन आदि 12 राशियों से सम्बन्धित ही बारह संक्रान्तियाँ एवं उन पर आधारित 12 महीने बनते हैं। भारतीय सौर पद्धति के अनुसार उनके नाम वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र संज्ञा है। भारतीय मनीषियों द्वारा प्रत्येक मास की पूर्णिमा को पड़ने वाले नक्षत्र के नाम पर ही भारतीय महीनों का नामकरण किया गया है। जैसे-चित्रा नक्षत्र के नाम से चैत्र, पूर्णिमा को इत्यादि। प्राचीन ऋषियों ने नक्षत्रों, ग्रहों एवं राशियों का आधार लेकर द्वादश संक्रान्तियों की परिकल्पना की, जिसकी पृष्ठभूमि सूर्य एवं अन्य आकाशीय पिण्डों पर आधारित है।

सूर्य कालचक्र का नियामक भी है। मनुष्य जीवन को नियमित और सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए हमारे प्राचीन ऋषियों ने कालचक्र का सूत्रपात किया। (27) नक्षत्र, 12 राशियां और नवग्रह आदि–ये सब काल तत्त्व के सूचक है। सन् 2013-14 ई. में 12 संक्रान्तियों का प्रवेश, पुण्यकाल तथा फल, माहात्म्य इस प्रकार होगा–

वैशाख संक्रान्ति–13 अप्रैल, 2013 ई., शनिवार, चैत्र शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि को रात्रि 1 बजकर 28 मिनट (25/28 घं. मिं.) पर कृतिका नक्षत्र कालीन धनु लग्न में प्रवेश करेगी। वैशाख सं. 30 मुहूर्त्ति है। इसका पुण्यकाल अगले दिन 14 अप्रैल को प्रातः 7/52 (घं. मिं.) तक रहेगा। वारानुसार राक्षसी नामक यह संक्रान्ति नीच एवं दुष्टजनों को फलदायक होगी। **वैशाख मास** में प्रतिदिन **वैशाख माहात्म्य** का पाठ, श्रीविष्णुसहस्रनाम एवं **''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय''** मन्त्र का पाठ करने का विशेष माहात्म्य होता है। वैशाख संक्रान्ति शनिवार को होने से वर्ष (संवत्) का मन्त्री भी शनि होगा। **शनिवार की संक्रान्ति** का फल शास्त्रों में अशुभ लिखा है। मेष राशि पर **चतुर्ग्रही** एवं **पंचग्रही योग** बनने से सब प्रकार के धान्य, अनाज आदि महंगे होंगे। राजनेताओं व विपक्षी नेताओं में परस्पर टकराव व युद्ध के समाचार मिलेंगे। वैशाख में 25 अप्रैल को **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** भी घटित हो रहा है। चैत्र पूर्णिमा को **चित्रा नक्षत्र** होने से उस दिन स्नानोपरान्त विविध अनाज व रंग-बिरंगे वस्त्रों का दान करना सौभाग्यवर्द्धक होगा। इस मास मंगल-शनि के मध्य समसप्तक योग भी विभिन्न प्रदेशों में अग्निकाण्ड, हिंसक व विस्फोटक घटनाएं, राजनीतिक उथल-पुथल घटित होने के भी संकेत मिलते हैं।

ज्येष्ठ संक्रान्ति–14 मई, 2013 ई., मंगलवार, वैशाख शुक्ल चतुर्थी तिथि को रात्रि 10 बजकर 21 मिनट (22/21 घं. मिं.) पर धनु लग्न में प्रवेश करेगी। 45 मुहूर्त्ति इस संक्रान्ति का पुण्यकाल मध्याह्न बाद शुरु होगा। वारानुसार महोदरी नामक यह संक्रान्ति चोरों एवं बेईमानों को लाभप्रदायक होगी। मंगलवार की संक्रान्ति तथा ज्येष्ठ मास में वृष राशि पर चार एवं पंचग्रही योग बनने से कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड, युद्ध व कहीं छत्रभंग होने का भय होगा। सत्तारूढ़ नेताओं के लिए चुनौतिपूर्ण समय होगा।

भौमस्यवारे यदि संक्रमश्च करोति पृथव्यां असुखं महर्घता।
क्षारं रसं वैघृततैलसंयुतं कर्पूरकस्यैवं महर्घता च।।

ज्येष्ठ मास में गङ्गा-दशहरा एवं निर्जला एकादशी आदि पर्वों पर श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा, गेहूँ, चावल, सत्तू, अनाज व दूध-चीनी, छाता, पंखा आदि अन्य ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करने का विशेष माहात्म्य होता है।

आषाढ़ संक्रान्ति–14 जून, 2013 ई., शुक्रवार की मध्यरात्रि के बाद एवं 15 जून की प्रातः मघा नक्षत्र कालीन 4 बजकर 56 मिनट (28/56) पर वृष लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्ति इस संक्रान्ति का पुण्यकाल अगले दिन दोपहर 11/20 (भा.स्टैं.टा.) तक रहेगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह संक्रान्ति गोपालकों के लिए शुभ, पाखण्डियों को हानिकारक तथा क्षत्रियों को लाभ देने वाली होगी। शूद्रों एवं नीच जनों को लाभप्रद होगी। आषाढ़ मास में भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति श्री सहित विष्णु पूजार्चन एवं विष्णु स्तोत्र पाठ के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना पुण्यप्रद होगा। **आषाढ़ मास में गुरु अतिचारी तथा शनि वक्री होने से** देश के कुछ भागों में राज्य विग्रह, उपद्रव, सत्ता-परिवर्तन, अग्निकाण्ड एवं हिंसा की घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। कहीं विचित्र प्रकार के रोगों की व्याप्ति का भय होगा। राजनीतिक व्यवस्था में अस्थिरता का माहौल बनेगा।

श्रावण संक्रान्ति–16 जुलाई, मंगलवार, सन् 2013 ई. की दोपहर 3 बजकर 56 मिनट (15/56) पर, आषाढ़ शुक्ल अष्टमी तिथि, चित्रा नक्षत्र एवं तुला राशिस्थ चन्द्रमा कालीन वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्ति इस संक्रान्ति का पुण्यकाल प्रातः 9/22 से प्रारम्भ होगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह संक्रान्ति राजनेताओं, चोरों एवं दुष्ट लोगों को लाभकारी होगी। श्रावण संक्रान्ति मंगलवार की होने से राजनेताओं में परस्पर टकराव एवं विग्रह हो, कहीं छत्रभंग, उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी। बाढ़, सूखा आदि प्राकृतिक आपदाएं बढ़ेंगी। श्रावण मास में

भगवान् शिव की पूजा का विशेष महत्त्व है। प्रतिदिन श्रावण माहात्म्य, श्रीशिवमहापुराण एवं श्रीशिवस्तोत्रों का विधिपूर्वक पाठ करके दूध, गंगाजल, बिल्वपत्र, फलादि सहित शिवलिङ्ग का पूजन **''ॐ नमः शिवायः''** मन्त्र का जप करते हुए करना चाहिए।

भाद्रपद संक्रान्ति–16 अगस्त, शुक्रवार, 2013 ई., की अर्द्धरात्रि 12 बजकर 03 मिनट (24/08) पर, श्रावण शुक्ल दशमी तिथि, मूल नक्षत्र कालीन वृष लग्न में प्रवेश करेगी। इस 30 मुहूर्त्ति सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 6/32 (घं. मिं.) तक रहेगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह संक्रान्ति चौपाय पालकों के लिए लाभप्रद रहेगी। नीच, दुष्टजनों के लिए सुखकर रहेगी। रक्षाबन्धन (20/21 अगस्त) तथा श्रीकृष्णजन्माष्टमी (जयन्ती योग) (28 अग.) के पुण्य पर्व भी इस वर्ष इस मास में आ रहे हैं।

आश्विन संक्रान्ति–16 सितम्बर, सोमवार, 2013 ई., की अर्द्धरात्रि 12 बजकर 03 मिनट (24/03) पर, भाद्रपद शुक्ल द्वादशी तिथि, धनिष्टा नक्षत्र तथा मकर राशिस्थ चन्द्रमा कालीन मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। इस 30 मुहूर्ति सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 6/27 तक रहेगा। वारानुसार ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह संक्रान्ति व्यापारियों के लिए सुखकर होगी। श्राद्ध पक्ष में (20 सितं. से 4 अक्तू. तक) गंगा स्नान, जप एवं ब्राह्मणों को भोजन, तर्पण एवं श्राद्धादि का विशेष महत्त्व होता है।

कार्तिक संक्रान्ति–17 अक्तू., गुरुवार, 2013 ई. को दोपहर 12/00 बजे, आश्विन शुक्ल चतुर्दशी तिथि, उ.भा. नक्षत्र कालीन धनु लग्न में प्रविष्ट करेगी। इस 45 मुहूर्ति सं. का पुण्यकाल सूर्योदय से ही प्रारम्भ हो जाएगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार सुलोचन नाम की यह संक्रान्ति ब्राह्मणों, पठन-पाठन करने वाले व्यापारियों के लिए सुखकारी होगी। इस मास में प्रतिदिन कार्तिक माहात्म्य का पाठ तथा नित्य भगवान् विष्णु का पूजन, तुलसी पूजन, तुलसी व पीपल के मूल में दीपक जलाने का विशेष माहात्म्य है। धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पुराणों में कलियुग में कार्तिक मास को अन्य मासों में श्रेष्ठ एवं कल्याणकारी बतलाया गया है।

मार्गशीर्ष संक्रान्ति–16 नवम्बर, 2013 ई., शनिवार को दोपहर 11 बजकर 48 मिनट पर, कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तिथि, भरणी नक्षत्र कालीन मकर लग्न में प्रविष्ट होगी। इस 15 मुहूर्ति सं. का पुण्यकाल भी सूर्योदय से प्रारम्भ हो जाएगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. नीच, चोर एवं दुष्टजनों के लिए लाभप्रद होगी। मार्ग. मास में कार्तिक पूर्णिमा के दिन कृतिका नक्षत्र आने से **'पद्मक योग'** भी बन रहा है। इस दिन तीर्थ स्नान, दान का विशेष महत्त्व होगा। **'पुष्कर तीर्थ'** पर इस दिन विशेष मेला एवं पर्व घटित होगा।

पौष संक्रान्ति–15 दिसम्बर, रविवार, 2013 ई० की अर्द्धरात्रि के बाद 2 बजकर, 28 मिनट (26/28) पर, मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी तिथि, रोहिणी नक्षत्र कालीन कन्या लग्न में प्रविष्ट होगी। इस 45 मुहूर्ति सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 8/52 बजे तक रहेगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. नीच, दुष्ट तथा ब्राह्मणों के लिए सुखकर होगी। पौष मास में गेहूँ, चने, चावल, धान्यादि अनाज, कम्बल, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न आदि दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

माघ संक्रान्ति–14 जनवरी, 2014 ई०, मंगलवार को दोपहर 1 बजकर 13 मिनट (13/13) पर, पौष शुक्ल चतुर्दशी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र कालीन मेष लग्न में प्रविष्ट होगी। इस 15 मुहूर्ति सं. के स्नान, जप-पाठ, दानादि का पुण्यकाल प्रातः 6 बजकर 49 मिनट से शुरू हो जाएगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नाम की होगी। जोकि चोरों, दुष्टों एवं बेईमान लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। इस मास में प्रतिदिन माघ माहात्म्य का पाठ, भगवान् विष्णु का पूजन, तिलों से हवन एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अनाज, चावल, फलों, तिल के बने पदार्थों एवं गर्म वस्त्र का दान करना चाहिए। इस मास में विशेष रूप से षट्तिला एकादशी, मौनी अमावस एवं श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत विधिपूर्वक करके यथाशक्ति दान संकल्पपूर्वक ब्राह्मण को करने का विधान है। **मंगलवार की संक्रान्ति** होने से सर्व प्रकार के अनाजों में तेजी, किसी राज्य में छत्रभंग होगा। नेताओं में परस्पर टकराव की स्थिति बनेगी।

फाल्गुन संक्रान्ति–12 फरवरी, बुधवार, 2014 ई. को अर्द्धरात्रि के बाद 2 बजकर 13 मिनट (26/13) पर, माघ शुक्ल त्रयोदशी तिथि, पुष्य नक्षत्र कालीन वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। 30 मुहूर्त्ति इस संक्रान्ति का पुण्यकाल अगले दिन 13 फर. को प्रातः 8/37 तक रहेगा। वारानुसार मन्दाकिनी नाम की यह संक्रान्ति राजनेताओं को लाभकारी तथा नक्षत्रानुसार ध्वांक्षी नाम की वैश्यों अर्थात् व्यापारियों के लिए लाभकारी होगी। इस मास में (27 फर.) श्रीमहाशिवरात्रि को व्रत धारण करके शिवपूजन, शिवकथा, **'ॐ नमः शिवाय'** और अन्य शिव स्तोत्रों का पाठ करना, शिवलिङ्ग पूजन एवं रात्रि जागरण करने का विधान है।

चैत्र संक्रान्ति–14 मार्च, शुक्रवार, 2014 ई० को रात्रि 11 बजकर, 06 मिनट (23/06) पर, फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी तिथि, मघा नक्षत्र कालीन तुला लग्न में प्रविष्ट होगी। वारानुसार मिश्र नामक यह संक्रान्ति चौपायों, पशुपालकों को लाभकारी तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक नीचजनों को लाभकारी होगी। राजनीतिक परिस्थितियाँ अस्थिर होंगी। सत्तारूढ़ व विपक्षी दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी।

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्रा:	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दाने के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन:शिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मन:शिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से** करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)-"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदृती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राह्वे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दु:ख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व–उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी-स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**–मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा–ऐसा कहना चाहिए। जैसे-यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

होमादि में अग्निवास ज्ञान कोष्ठक

वार → तिथि ↓	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुक्ल 1	3	0	1	2	3	0	1
2	0	1	2	3	0	1	2
3	1	2	3	0	1	2	3
4	2	3	0	1	2	3	0
5	3	0	1	2	3	0	1
6	0	1	2	3	0	1	2
7	1	2	3	0	1	2	3
8	2	3	0	1	2	3	0
9	3	0	1	2	3	0	1
10	0	1	2	3	0	1	2
11	1	2	3	0	1	2	3
12	2	3	0	1	2	3	0
13	3	0	1	2	3	0	1
14	0	1	2	3	0	1	2
15	1	2	3	0	1	2	3
कृष्ण 1	2	3	0	1	2	3	0
2	3	0	1	2	3	0	1
3	0	1	2	3	0	1	2
4	1	2	3	0	1	2	3
5	2	3	0	1	2	3	0
6	3	0	1	2	3	0	1
7	0	1	2	3	0	1	2
8	1	2	3	0	1	2	3
9	2	3	0	1	2	3	0
10	3	0	1	2	3	0	1
11	0	1	2	3	0	1	2
12	1	2	3	0	1	2	3
13	2	3	0	1	2	3	0
14	3	0	1	2	3	0	1
30	0	1	2	3	0	1	2

प्रेषक : पं. भुबनेश्वर दत्त शर्मा ज्योतिषी, गाँव-बसन्तपुर (लसहराना) सन्धोल, ज़िला-मण्डी (हि. प्र.)

होमादि में अग्निवास जानना

किसी भी प्रकार के हवन या यज्ञारम्भ करने से पूर्व अथवा नव-वधू द्वारा पहली बार भोजन बनाने के समय अग्नि का वास अवश्य देखा जाता है।

शुक्ल प्रतिपदा से गिनकर वर्तमान तिथि में 1 जोड़ें, इसमें वर्तमान वार की संख्या (रविवार से प्रारम्भ करके) को जोड़े और फिर उस संख्या को 4 द्वारा भाग देवें-

यदि शेष 3 या 0 बचे, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होता है, उस दिन होम करना शुभ होता है, उससे सुख, लाभ मिलता है। यदि शेष 2 बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है, इस दिन होम करने से धन का अपव्यय होता है। यदि भाग देने के बाद 1 शेष बचे तो अग्नि का वास आकाश में होता है। इसमें होम करना अशुभ होता है। पं. भुवनेश्वर दन्त शर्मा, जिला-मण्डी (हि.प्र.) द्वारा प्रेषित संलग्न चार्ट भी यहाँ दे दिया गया है, जिससे आप तुरन्त अभीष्ट तिथि का अग्निवास जान सकते हैं।

अग्निवास का परिहार-

विवाहयात्रा व्रत गोचरेषु चूड़ोपनीति ग्रहणे युगादौ।
दुर्गा विधाने सुत प्रसूते नैवाग्नि चक्रं परिचिन्तनीयम्॥

अर्थात् नित्य नैमित्तिक कार्य, जन्म व मृत्यु के समय, विवाह में, यात्रा आरम्भ या यात्राकाल में, व्रतोद्यापन में ग्रहों की अनिष्ट गोचर स्थिति में मुण्डन, उपनयादि संस्कार में, ग्रहण शान्ति, रोग-पीड़ा की शान्ति, नवरात्र-दुर्गा-पूजा, पुत्रादि सन्तान जन्म काल में अग्निवास का विचार नहीं किया जाता।

—वार अनुसार शुभ कार्य—

✦ **गर्गाचार्य अनुसार**

सोने के आभूषणों के कार्यों में **रविवार** एवं **मंगलवार** शुभ फलकारी होते हैं। तथा **शनिवार** के दिन लोहे का कार्य करने पर शुभफल की प्राप्ति होती है-

काञ्चनाभूषणे प्रशस्तौ भौम मार्तण्डौ, रविजो लोह कर्माणि॥ १५॥ गंगाचार्य

✦ क्षीणचन्द्र का दिन और **शनि** व **मंगल** के वक्री होने के दिन शुभ नहीं होते हैं।

तारा अस्त और विकार से युक्त वार के दिन भी अभीष्ट (अच्छे) नहीं होते अर्थात् अशुभ होते हैं-

क्षीणेन्दु सौरि कुज वक्रि दिने न शस्तं शस्तं च कर्म यदि चोपचयस्थिताः स्युः।

✦ **अस्तङ्गतस्य विकृतस्य च नेष्टमह्नि**
सर्वं प्रशस्तमिह शेषदिनेशवराणाम् ॥ १७॥

तथा अस्त व विकार युक्त वार के दिन अभीष्ट नहीं होते-अर्थात् अशुभ होते हैं, शेष शुभ होते हैं।

✦ मंगलवार को कर्ज लेने से बचना चाहिए। तथा बुधवार के दिन कर्जा देना नहीं चाहिए। मंगलवार के दिन ऋण वापिस करना और बुधवार के दिन संग्रह करना चाहिए यथा-

ऋणं भौमे न गृह्णीयात् न देयं बुधवासरे।
ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् सञ्चयं सोमनन्दने॥ (ज्योतिः सार)

अरिष्ट ग्रहों के दान, पूजा एवं उपाय

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए ज्योतिष शास्त्र में अनेक प्रकार के उपाय बतलायें गए हैं–जैसे मंत्रजाप-हवन, दान, ग्रह औषाधि स्नान; तीर्थ-स्नान, व्रत रखना, नग एवं यंत्र धारण करना इत्यादि। पाठकों के लाभार्थ, आगे कुछ उपायों का संक्षिप्त विवरण लिखा जाता है। **ध्यान रहे,** सूर्य चन्द्रादि ग्रहों की उपासना के माध्यम से हम सर्वपिता परमात्मा की ही उपासना करते हैं। क्योंकि विश्व के सभी सौरपिण्डों के द्वारा ईश्वर की असीम शक्ति की ही सतत अभिव्यक्ति हो रही है।

पूर्वा जन्मों में कृत शुभाशुभ कर्मों के अनुसार एवं ग्रहों के द्वारा अनुप्रेरित होकर मनुष्य ऐहिक जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि, इष्ट-अनिष्टादि फल प्राप्त करता है। जन्मपत्री एवं वर्ष कुण्डली में पड़े क्रूर ग्रह मनुष्य को प्रतिकूल एवं कठिन समस्याएं उत्पन्न करवाते हैं, जबकि शुभ एवं योगकारक ग्रह अनुकूल व सौभाग्यवर्द्धक परिस्थितियां बनाने में सहायक होते हैं।

यदि अशुभ ग्रहों के प्रभावस्वरूप बार-बार प्रयत्न करने पर भी जीवन में विघ्नों एवं विफलताओं का सामना पड़े और भाग्य साथ न देता हो, तो अशुभ ग्रहों की अनुकूलता हेतु ज्योतिष आचार्यों द्वारा प्रतिपादित अनिष्ट ग्रहों के उपायों को अपनाकर जीवन को स्वस्थ, खुशहाल एवं सुखी बनाने का प्रयास करना चाहिए।

परन्तु जन्मकुण्डली में किसी ग्रह का शुभाशुभ निर्णय करना सरल कार्य नहीं। किसी जातक की कुण्डली में यदि मंगल आदि कोई ग्रह नीचादि अशुभ अवस्था में स्थित होने पर भी तुरन्त एकदम अशुभ फल नहीं कह देना चाहिए। देखना चाहिए कि विचारणीय ग्रह किस भाव का स्वामी होकर नीचावस्था में बैठा है। नीचस्थ मंगल पर यदि गुरु की पंचम/नवमादि शुभ दृष्टि पड़ रही हो अथवा यदि नवांश कुण्डली में मंगल मित्र या उच्च राशि में पड़ा हो, अथवा मंगल स्थित राशि (कर्क) का स्वामी ग्रह चन्द्रमा मित्र या उच्चादि राशि में स्थित हो अथवा मंगल, चन्द्रमा, गुरु आदि शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो, तो ऐसी स्थिति में मंगल विशेष अधिक अशुभ फल नहीं करेगा। इसके अतिरिक्त विचारणीय भाव के कारक ग्रह की भी शुभाशुभ स्थिति का भी विचार कर लेना चाहिए।

◆सूर्य शान्ति के लिए उपाय◆

यदि किसी जातक की जन्म अथवा वर्ष कुंडली में सूर्य अशुभ कारक हो तो उसको निम्नलिखित मन्त्र की (अपनी सामर्थ्यानुसार) कम-से-कम 7000 की संख्या में जप करना चाहिए। जप का आरम्भ शुक्लपक्षीय रविवार प्रातः सूर्योदय से करना चाहिए। पाठ करते समय समीप ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, ताण्डुल, लाल चन्दन, लाल पुष्प, गंगाजल, थोड़ा गुड़ डालकर पात्र को लाल वस्त्र, आम के पत्तों एवं नारियल द्वारा ढक लेना चाहिए। साथ ही दान योग्य वस्तुओं को संकल्पपूर्वक पहले से पास में रख लेनी चाहिएं।

बीज मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (जप संख्या 7000)

सूर्य दान हेतु वस्तुएँ–गेहूँ, लाल चन्दन, गुड़, लाल पुष्प, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण की गाय, सुवर्ण, माणिक्य, ताम्र बर्तन, नारियल आदि लाल फल, मिष्ठान, दक्षिणा आदि।

उपाय–(1) तांबे की अँगूठी में माणिक्य अथवा विधिवत् तैयार किया हुआ सूर्य-यन्त्र (ताम्र पत्र पर) धारण करें।

(2) खाना खाते समय सोने अथवा तांबे के चम्मच का प्रयोग करना तथा 11 रविवार तक सूर्य स्नान करना। जब जन्म या वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो–

(3) 108 रविवार तक ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य स्तोत्र का पाठ करना शुभ है।

(4) 40 या 43 दिन तक चलते पानी में गुड़ या तांबे के सिक्के बहाना शुभ होगा।

(5) सर्वप्रथम प्रातःकाल उठकर स्नान उपरान्त ताम्र कलश (गड़वी) में जल, दूध, पुष्प, गंध, लाल-चंदन आदि लेकर पूर्व दिशा में मुख करके गायत्री मंत्र तथा सूर्यार्घ्य मंत्र के उच्चारण से सूर्य को अर्घ्य प्रदान करना चाहिए।

(6) रविवार को नमक से परहेज़ रखें। लवणरहित सादा भोजन करें। ग्यारह रविवार पर्यन्त केवल दही और चावल का सेवन करना चाहिए।

(7) जिन जातकों का सूर्य नीच का हो, उन्हें कार्तिक मास में तुलसी पौधे पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए तथा पं. देवीदयालु कृत 'कार्तिक माहात्म्य' का पाठ करना चाहिए।

◆चन्द्रमा शान्ति के लिए उपाय◆

जब जन्म या वर्ष कुण्डली में चन्द्र ग्रह अशुभ कारक हो तो निम्नलिखित मन्त्र की 11 हज़ार की संख्या में जप करना और तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा। जप का आरम्भ पूर्णिमा या शुक्ल पक्ष के सोमवार से करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मंत्र–ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (जप संख्या 11,000)

दान योग्य वस्तुएँ–चावल, सफेद चन्दन, शंख, कपूर, घी, दही, चीनी या मिश्री, क्षीर, मोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत फल, चांदी, मिठाई और दक्षिणा। **उपाय=**

(1) चांदी के बर्तनों का प्रयोग करना एवं चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाना।

(2) सफेद मोतियों की माला अथवा चांदी की अँगूठी में मोती धारण करना।

यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभ हो, तो चन्द्रमा के अशुभत्व के निवारण हेतु उपाय–

(3) शीशे के गिलास में दूध, पानी आदि पीने से परहेज़ रखना तथा चाँदी के बर्तनों में दूध, पानी पीना शुभ होगा।

(4) पानी में कच्चा दूध मिलाकर चन्द्रमा का बीज मन्त्र पढ़ते हुए पीपल को डालना।

(5) लगातार 16 सोमवार व्रत रखकर सायंकाल सफेद वस्तुओं का दान करना चाहिए तथा पाँच छोटी कन्याओं को क्षीर सहित भोजन कराना चाहिए।

(6) सोमवार को ही प्रातःकाल स्नानादि करके ताम्र या चांदी के बर्तन में कच्ची लस्सी (जल तथा थोड़ा सा दूध) भगवान् की मूर्त्ति या शिवलिंग पर चढ़ाना चाहिए।

(7) चांदी का कड़ा, चैनी या सिक्का धारण करना चाहिए।

◆मंगल शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में मंगल अशुभकारक एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्र की कम-से-कम 10 हज़ार संख्या में शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ करें।

तन्त्रोक्त मंगल मन्त्र–ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (जप संख्या 10,000)

दान योग्य वस्तुएँ–गेहूँ, मसूर, लाल बैल, घी, गुड़, सुवर्ण, मसूर, मूंगा, ताम्र बर्तन, कनेर पुष्प, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, केशर, लाल फल, नारियल, मीठी चापाती, गुड़ से निर्मित रेवड़ियां, दक्षिणा आदि। मंगल का दान युवा ब्राह्मण को करना शुभ है।

उपाय–जब कुण्डली में मंगल शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फल न करता हो तो निम्नलिखित उपाय शुभ होंगे–

(1) तांबे की अँगूठी में मूँगा धारण करना अथवा तांबे का कड़ा पहनना।

(2) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगाना तथा 108 दिन तक रात को तांबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर घर में लगाए हुए गुलाब के पौधे को वहीं पानी डालना।

(3) मंगलवार का व्रत रखकर 27 मंगल किसी अपाहज को मीठा विशेषकर गुड़ से निर्मित भोजन खिलाना।

(4) नारियल को तिलक करके तथा लाल कपड़े में लपेटकर लगातार 3 मंगलवार चलते पानी में बहाएँ।

(5) लाल रंग की गाय या लाल वर्ण के कुत्ते को भोजन खिलाना शुभ होगा।

(6) मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। विशषकर उन कन्याओं को जिनकी कुण्डली में मंगल मंगलीक योग बनकर विवाह में बाधा, विलम्ब उत्पन्न कर रहा हो–उन्हें मंगलागौरी का व्रत लगातार 7 मंगलवार रखना चाहिए।

◆बुध शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में बुध ग्रह अशुभफली हो तो भगवान् विष्णु का ध्यान करके शुक्ल पक्ष के बुधवार को आरम्भ करके 9000 की संख्या में बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (जप संख्या 9000)

दान योग्य वस्तुएँ–मूंगी, 5 हरे फल, चीनी, हरे पुष्प, हरी इलायची, कांस्य-पत्र, पन्ना, सोना, हाथी का दांत, षड्रसों से युक्त भोजन हरी सब्ज़ी, हरा कपड़ा, दक्षिणा सहित दान करें।

उपाय–कुंडली में बुध शुभ होता हुआ भी फलकारक न हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) हरे रंग का पन्ना बुधवार को सोने की अँगूठी में धारण करना। हरे रंग के वस्त्रों को पहनना तथा हरे रंग के पर्दे लगाना शुभ होगा। हरे रंग की गाड़ी, स्कूटर या साईकिल आदि का प्रयोग करें। परन्तु यदि बुध अशुभ हो, तो हरे वस्त्र कदापि न पहनें।

(2) बुधवार को चाँदी या कांस्य के गोल टुकड़े को हरे रंग के कपड़े में लपेट कर जेब में रखें या भुजाओं के साथ बांधें।

यदि बुध अशुभ हो तो–(3) मूंगी साबत के सात दाने, हरा पत्थर, कांसे का गोल टुकड़ा, हरे वस्त्र में लपेट कर बुधवार को चलते पानी में बहाना शुभ होगा। पानी में बहाते समय कम-से-कम 7 बार बुध का बीज मन्त्र पढ़ें।

(4) हरे रंग के वस्त्र (परिधान) किसी हिजड़े को बुधवार के दिन शुभ होगा।

(5) बुधवार के दिन 6 इलायची हरे रूमाल में लपेटकर अपने पास रखें तथा इसके पश्चात् एक इलायची व तुलसीपत्र का सेवन करना शुभ रहेगा।

◆गुरु शान्ति के लिए उपाय◆

जब किसी व्यक्ति की जन्म या वर्ष कुंडली में गुरु शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो उसे शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार को, शुभ मुहूर्त में निम्नलिखित मन्त्र का 19,000 की संख्या में पाठ करना तथा तदोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र–ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः (जप संख्या 19,000)

गुरु दान की वस्तुएं–पीले चावल, पुखराज, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला कपड़ा, पीले पुष्प व पीले फल (जैसे-आम, केले आदि), कांस्यपात्र, घोड़ा, लवण, शक्कर, घी, धर्मग्रन्थ, सुवर्ण, पीली मिठाई, दक्षिणा आदि।

उपाय–जन्म कुंडली में बृहस्पति शुभ व योगकारक होता हुआ भी शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें–

(1) सोने या चांदी की अँगूठी में तर्जनी अंगुली में तथा शुभ मुहूर्त्त में पुखराज धारण करें।

(2) 27 गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले रंग के कपड़े या कागज़ में अपने पास रखना शुभ होगा।

गुरु के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय करें–

(3) चलते पानी में बादाम एवं नारियल पीले कपड़े में लपेटकर बहाना शुभ होगा।

(4) पीपल के वृक्ष को गुरुवार एवं शनिवार को गुरु का बीज मन्त्र एवं गुरु गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए जल दें।

(5) वृद्ध ब्राह्मण को यथाशक्ति पीली वस्तुएँ, जैसे–चने की दाल, लड्डू, पीले वस्त्रों, शहदादि का दान करना चाहिए।

◆शुक्र शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में शुक्र अशुभकारक हो तो शुभ मुहूर्त्त में निम्न मन्त्र का 16,000 की संख्या में जाप करना तथा तदुपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र–ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (जप संख्या 16,000)

शुक्रदान की वस्तुएँ–चाँदी, चावल, सुवर्ण, दूध, दही अथवा दुग्ध निर्मित वस्तुएँ, मिश्री, श्वेत चन्दन, श्वेत घोड़ा, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थ।

उपाय–कुंडली में यदि शुक्र शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फलीभूत न हो रहा हो तो निम्न उपाय कल्याणकारी रहेंगे–

(1) चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा रखकर सोने वाले कमरे में रखे चन्दन की अगरबत्ती जलाना शुभ होगा।

(2) घर में तुलसी का पौधा लगाना, सफेद गाय रखना, सफेद पुष्प लगवाना शुभ होगा तथा क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवाकर विधिपूर्वक अपने पास रखें।

शुक्र अशुभ प्रभावी होने की स्थिति में नीचे लिखे उपाय कल्याणकारी होंगे–

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएँ देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

(4) सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहा देना या चांदी के टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवा कर रेशमी क्रीम रंग के वस्त्र में लपेट कर शुक्रवार को नीम के वृक्ष के नीचे दबाना।

(5) शुक्रवार का विधिवत् व्रत रखना चाहिए तथा पाँच शुक्रवार पाँच कन्याओं का पूजन कर उन्हें मिश्री सहित श्वेत वस्तुओं की भेंट देनी चाहिए।

◆शनि शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुण्डली में शनि अशुभ फल प्रदायक हो तो किसी शुभ मूहूर्त्त में आरम्भ करके निम्न मन्त्र का श्रद्धापूर्वक भगवान् शंकर का एवं शनि के रूप का ध्यान करते हुए 23 हज़ार संख्या पूर्ण करने के पश्चात् उसी मन्त्र सहित दशांश की संख्या में हवन करने से शुभ प्रभाव पड़ता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र–ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (जप संख्या 23,000)

शनि के दान योग्य वस्तुएँ–नीलम, लोहा, तिल, उड़द (माश), सरसों का तेल, काला वस्त्र, काली गाय, कुल्थी, लौह निर्मित पात्र, जूता, भैंस, कस्तूरी, सुवर्ण, नारियल, काले अथवा नीले पुष्प, फल, दक्षिणा इत्यादि।

उपाय–शनि शुभ होता हुआ भी शुभफल प्रकट न कर रहा हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) सोने की अँगूठी में नीलम धारण करें। उसके अभाव में नाव के कील की अँगूठी अथवा काले घोड़े के नाल (खुरों) की अँगूठी बनवाकर मध्यमा अंगूली में धारण करें।

(2) घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना और स्वयं भी बहुधा नीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना शुभ होगा। जब कुण्डली में शनि नीच या अरिष्टकर फल प्रकट कर रहा हो तो निम्न उपाय करें–

(3) शनिवार का व्रत और दशरथकृत '**शनि स्तोत्र**' का पाठ करें।

(4) स्टील या लोहे की कटोरी में तेल का छाया-पात्र करके तेल पाँच शनिवार तक आक के पौधे पर अथवा '**शनि मन्दिर**' में डालना शुभ होगा। 5वें शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल वाली कटोरी को वही दबा देना या वही चढ़ा देना शुभ होगा। तेल चढ़ाते समय शनि का बीज मन्त्र पढ़ें। (देखें गत पृष्ठ)

◆राहु शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में राहु अशुभ फलदायक हो तो निम्नलिखित मन्त्र का 18,000 की संख्या में जाप करके दशमांश का हवन करें–

मन्त्र–ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (जप संख्या 18,000)

राहु दान योग्य वस्तुएँ–सप्तधान्य, गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तिल, तैल, सोने या चाँदी का सर्प, उड़द, खड्ग (तलवार), कवच, नीला वस्त्र, काले रंग के पुष्प, नारियल, दक्षिणा आदि।

उपाय–अशुभ राहु या राहु की महादशा या अन्तर्दशा में निम्नलिखित उपाय करें–

(1) काले व नीले वस्त्र पहनने से परहेज़ करें तथा चाँदी की चेनी व लॉकिट पहनना शुभ होगा।

(2) चापाती को खीर लगाकर कौओं को एवं काले रंग की गाय को खिलाएँ।

(3) काले तिल, कच्चा कोयला, नीले रंग के ऊनी कपड़े में बाँधकर शनिवार अथवा राहु के नक्षत्रों में घर के आंगन में दबाना शुभ होगा। अथवा नीले वस्त्र के बांधे रूमाल को राहु मन्त्र पढ़ते जल में प्रवाह कर देवें।

◆केतु शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुण्डली में केतु अशभु फलकारी हो तो किसी शुभ मुहूर्त्त में नीचे लिखे मन्त्र की 17 हज़ार की संख्या में जाप करें तथा दशमांश का हवन करें।

मन्त्र–ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः (जप संख्या 17,000)

केतु की दान योग्य वस्तुएँ–लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसा) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित।

उपाय–(1) केतु की शान्ति के लिए श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखें तथा श्रीगणेश पूजन तथा लड्डुओं का भोग लगाना शुभ होगा।

(2) काले वस्त्र में बाँधकर काले व सफेद तिल चलते पानी में बहाना।

(3) रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय की सेवा करना एवं रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती (Bread) डालना। शास्त्रोक्त एवं लाल किताब सम्बन्धी अधिक जानकारी एवं उपायों के लिए हमारी पुस्तक '**अरिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके**' मंगवाकर पढ़ें।

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयर-बाज़ार में मन्दा-तेजी—सन् 2013 ई०

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेजी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विशोंतरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह-दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन-हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2012 ई० में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी-मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर जून-जुलाई में सोने-चांदी में हुई तेजी-मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाजिर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 751 रु., 2 मास की फीस 1400 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें। —पं० **विवेक शर्मा S/o पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब), फोन 0181-2457959**

जनवरी—मासारम्भ से मंगल अतिचारी गति से शनि की राशि मकर में संचरणशील है तथा मेष राशिस्थ केतु पर मंगल व शनि-दोनों क्रूर ग्रहों की दृष्टियाँ पड़ रही है। तथा 4 जन. को शुक्र शीघ्र गति से मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवेश करेगा। सोना, चाँदी, ताँबा, जिस्त आदि धातुओं, गेहूँ, जौं, चना आदि अन्न में अच्छी तेजी बनेगी। रूई, कपास, सूत में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी।

5 जन. को बुध पू.षा. में तथा गुरु रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में आने से सोना, चाँदी, गुड़, चीनी में अच्छी मन्दी का झटका लगेगा। रुई में घटाबढ़ी रहेगी। सोना, चाँदी धातुओं तथा गुड़, चीनी, चने आदि अनाजों में यह मन्दी अस्थायी रहेगी। 1-2 दिन बाद पुनः तेजी का रुख शुरु हो जाएगा।

10 जन. को सूर्य उ.षा. में आने से भी उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, चीनी, लाल-शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, सरसों में तेजी बनेगी।

13 जन. को **सूर्य मकर राशि में अतिचारी मंगल के साथ मेल करेगा। इसी दिन बुध भी उ.षा. नक्षत्र में आएगा।** घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रूई, कॉटन, सोना, ताँबा में तेजी बनेगी। चना, गेहूँ आदि अनाज तथा बारदाना में मन्दी बनेगी।

15 जन. को बुध मकर राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा, शुक्र भी इसी दिन प्रातः पू.षा. में आएगा। मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक में मन्दी बनेगी। परन्तु सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं तथा बैंकिंग शैयर्ज़ में विशेष तेज़ी बनेगी।

17 जन. को मंगल धनिष्ठा नक्षत्र में आने से राई, जौं, पीपल, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, जिस्त, लोहा में तेजी बने, गुड़, शक्कर, चीनी, घी, रूई, सूत, अनाज में मन्दी बने।

परन्तु 18 जन. को शनि स्वाती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आने से चीनी, गुड़, दूध, दही, तेल, तिलहन तेज हो जाएंगे।

21 जन. को बुध श्रवण में आने से गुड़, खांड, अलसी, चना, चावल तेज होंगे।

ता. 23 जन. को सूर्य भी श्रवण नक्षत्र में बुध के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग, पीपल में तेजी का रुख बनेगा।

25 जन. को मंगल कुम्भ राशि में तथा शुक्र उ.षा. में आएगा। **रुई-चाँदी में अच्छी घटाबढ़ी होगी। गुड़-खाण्ड, सोना, ताँबा, क्रूड-आयल, लोहे में अच्छी तेजी बनेगी। (इस तेजी से अवश्य लाभ उठाएं)** 26 जन. को भी तेजी का रुख रहे।

28 जन. को शुक्र मकर राशि में आकर सूर्य व बुध के साथ मेल करेगा। शेयर्ज़, सोना, चाँदी, ताँबा, कपास, सूत व गेहूँ, तिलहन आदि एवं सर्व प्रकार के अनाजों में तेजी बनेगी। **साफ्टवेयर शेयरों में विशेष तेजी बनेगी।**

29 जन. को बुध धनिष्ठा में आने से सोना, चाँदी में मामूली मन्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, चना में तेजी बने।

30 जन. को वृष राशिस्थ गुरु मार्गी होने से बाज़ारों के रुख में अचानक परिवर्तन हो सकता

है। सावधानीपूर्वक आगे बढ़े। रूई, चावल, सोना, सूती वस्त्र मन्दे होंगे। जिन वस्तुओं में मन्दी चल रही होगी, वे तेज हो जाएंगी तथा जो तेज होंगी, उनमें मन्दी बन जाएगी।

31 जन. को अतिचारी मंगल पश्चिम में अस्त होने से गेहूँ, अलसी, जौं, चना, गुड़ में तेजी रहे। रूई में घटाबढ़ी रहेगी।

शेयर-बाज़ार का रूख—नववर्ष के प्रथम सप्ताह तथा ता. 10 से 15 तक निफ्टी मुख्यत: तेज रहेगी। ता. 16 से 20 के मध्य 100-150 Point का नुकसान होगा। परन्तु ता. 23 से 28 के मध्य पुन: मज़बूत होगा।

☞ फरवरी—ता. 2 फर. को बुध कुम्भ राशि में अतिचार गति प्राप्त मंगल के साथ मेल करेगा तथा इस दिन मंगल शतभिषा नक्षत्र में आएगा। रूई, अलसी, सोना, चाँदी, शेयर्ज़ में पहले मन्दी बनकर बाद दोपहर तक तेजी बन जाएगी। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, मूँग, ग्वार तेज रहेंगे।

5 फर. को बुध शतभिषा नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन बुध पश्चिम में उदय होगा तथा सूर्य धनिष्टा व शुक्र श्रवण नक्षत्र में दाखिल होंगे। अलसी, रूई, मूँग, मसूर, गेहूँ, चना आदि अनाजों में तेजी रहे तथा सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, खाँड में मन्दी बनकर तेजी बनेगी। **जिन वस्तुओं या जिन्सों में यहाँ अस्थायी मन्दी आई, तो वहाँ स्टॉक करने से जल्दी ही आगे लाभ मिलेगा।**

10 फर. को शुक्र पूर्व में अस्त होगा। सूर्य-शुक्र पर गुरु की दृष्टि चल रही है। रूई, चान्दी, कपास में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी। सोना, ताँबा, पीतल, जिस्त, हींग, सूरजमुखी, हींग, केसर, ग्वार में तेजी बनेगी।

11 फर., सोमवार को कुम्भस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने से दाल वाले अनाज, चना, अरहर, मसूर, मोठ, मूँग, सोना, चाँदी, पीतल, जिस्त आदि में तेजी बनेगी।

12 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में आकर अतिचारी मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। संक्रान्ति वारानुसार खप्पर योग भी बन रहा है। घी, तेल, सरसों, सोयाबीन, मूँगफली, राईं, क्रूड-आयल में अच्छी तेजी बनेगी। रुई, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनकर तेजी बनेगी।

14 फर. को बुध पू.भा. नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, कापर, निफ्टी, सोयाबीन, अनाज, सूत, कपास, चना में अच्छी तेजी का झटका लगेगा।

16 फर. को शुक्र धनिष्ठा में आने से चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चाँदी, रुई, कपास में तेजी का ही रुख रहेगा।

18 फर. को तुला राशिगत शनि वक्री होगा। शनि-राहु का योग पहले ही चल रहा है। सभी प्रकार के तेल तथा तेल पदार्थों, खाद्य-तेलों, क्रूड-आयल, फरनैस-आयल, सोना, ताँबा, सीमेंट में अच्छी ज़ोरदार तेजी की उम्मीद है। यदि 1-2 दिन तेजी नहीं भी बनी, तो व्यापारी सज्जन इन्तज़ार कर सकते हैं।

19 फर. को सूर्य शतभिषा तथा मंगल पू.भा. नक्षत्र में आने से सोना-चाँदी, सूत, सन, कपास, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ में तेजी बनेगी।

21 फर. को शुक्र कुम्भ राशि में आकर सूर्य, मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। चाँदी, रूई, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना, जौं, मूँग, ज्वार, बाजरा में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

23 फर. को कुम्भराशिगत बुध वक्री होने से सभी प्रकार के बाज़ारों में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। शेयर-बाज़ार, बैंकिंग शेयर्ज़, सोना, चाँदी, मूँग, रूई, चना में अच्छी तेजी चलेगी।

24 फर. को गुरु रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में आने से सभी प्रकार के रत्नों, अनाज, चाँदी, रूई, कपास, सन्, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। सुपारी, मिर्च, सरसों, राईं, हींग, खजूर, छुहारा, हल्दी में मन्दी बनेगी।

25 फर. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, शेयरों, घी में मन्दी, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

26 फर. को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में आने से गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रूई, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

मासान्त तक शेयर-बाज़ार, सोना-चाँदी आदि धातुओं में घटाबढ़ी का माहौल रहेगा।

☞ मार्च—मासारम्भ में ता. 1 से 2 को मुख्य जिन्सों में तेजी का रुख रहेगा।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. नक्षत्र में आएगा। इसी दिन मंगल मीन राशि में आकर शनि के साथ षडाष्टक सम्बन्ध बनाएगा तथा वक्री बुध शतभिषा नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, कॉपर, रेशम, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तैल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पीपलामूल, रुई तेज होंगी।

8 मार्च को मंगल उ.भा. नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, कॉपर, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थों, गेहूँ, जौं, चना में तेजी बनेगी।

9 मार्च को शुक्र पू.भा. में आने से रूई, कपास, अरहर, ग्वार, जिस्त, क्रूड में तेजी बने।

11 मार्च को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से चना, चावल, तिलहन, घी, रूई, खल-बिनौला, शेयरों, लाल मिर्च में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

13 मार्च बुधवार को मीन राशिगत चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, रूई, सूत, बारदाना, जूट आदि गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी, अन्न और घी में तेजी होगी।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रूई, सोना में तेजी बनेगी। चना, बाजरा, गेहूँ आदि अनाज में पहले तेजी, फिर मन्दी बनेगी।

17 मार्च को शुक्र मीन राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ पहले मन्दा करता है, परन्तु हमारे विचार अनुसार यहाँ क्रूर ग्रह योग से मन्दी न बनकर तेजी बनेगी। इसी दिन सूर्य उ.भा. नक्षत्र में आएगा तथा बुध मार्गी भी होगा। गुड़, चावल, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल, सोना, सुपारी, सोंठ, सरसों, लाख, चमड़ा, अलसी, एरण्डी में मन्दी न बनकर तेजी बनेगी। चाँदी में अच्छी तेजी का झटका लगेगा।

19 मार्च को शुक्र उ.भा. में आने से चावल, मोती, चाँदी, कपूर, नमक, खांड, रूई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी का रुख बनेगा।

22 मार्च को वक्री शनि स्वाती (3) में आने से चना, अनाज, कपास, रूई, तिलहन में तेजी बनेगी।

24 मार्च को गुरु रोहिणी (3) में आने से तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, जौं, चना में तेजी का रुख बनेगा।

26 मार्च को मंगल रेवती में आने से गेहूँ, चना, मूँग, मोठ, सोना, जौं, ज्वार, बाजरा में मन्दी बने। चाँदी, रूई, में घटाबढ़ी के मध्य तेजी बनेगी।

30 मार्च को शुक्र भी रेवती नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, कपास, चाँदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी की जगह तेजी का रुख बनेगा।

31 मार्च को सूर्य भी रेवती नक्षत्र में आकर मंगल-शुक्र के साथ एक नक्षत्र में आ जाएगा। अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रूई, गेहूँ, जौं, चना, चावल, सोना, ताँबा में अच्छी तेजी बनेगी।

शेयर-बाज़ार—ता. 6 से 10 मार्च के मध्य कुछ मन्दी रहने के बाद ता. 11 से 15 तथा पुनः 17-18 एवं 29 से 31 मार्च तक शेयर बाज़ार में तेजी के झटके लगेंगे।

☞ अप्रैल—मासारम्भ में ही बुध पू.भा. नक्षत्र में आने से सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, चना आदि अनाज में थोड़ा मन्दी का झटका लगेगा। घटाबढ़ी के मध्य पहले 1-2 दिन कुछ तेजी, फिर मन्दी का रुख रहेगा। ता. 8 अप्रै. तक मन्दी प्रधान रह सकती है। यहाँ माल पकड़ लें तो आगे अच्छा मुनाफा मिलेगा।

9 अप्रै. को बुध मीन राशि में आकर सूर्य, मंग., शुक्र के साथ मेल करेगा। चतुर्ग्रही योग बनने से रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बिनौला में अच्छी तेजी बनेगी, सोना, चाँदी, कॉपर में भी घटाबढ़ी के मध्य तेजी रहेगी।

10 अप्रै. को शुक्र मेष राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। फलस्वरूप जौं, चना, गेहूँ आदि अन्न, घी, गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट में तेजी होगी। सोना, चान्दी में विशेष तेजी बनेगी। तिल, तेल, सरसों, अलसी, एरण्डी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

11 अप्रै., गुरुवार को मेष राशिस्थ चन्द्रदर्शन होने से सरसों, अलसी, तेल, घी, रूई, सूत तथा सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्र, कपास में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़ में कुछ मन्दी बने।

12 अप्रै. को मंगल अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की भी दृष्टि रहेगी। सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातु, मूँगा, मोती आदि रत्न, ऊन, रूई, कपास, पाट, बारदाना तथा गुड़, रसादि पदार्थों में तेजी बनेगी।

13 अप्रै. को सूर्य भी अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर मंग., शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की सप्तम दृष्टि रहेगी। रूई, कपास, सोना-चाँदी, क्रूड-आयल, कॉपर, लोहा, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेजी बनेगी। व्यापारी वर्ग इस तेजी का अवश्य लाभ उठाते हुए निकल जाएं। परन्तु **इसी दिन गुरु रोहिणी (4) में आने से शहद, चने, मूँग, चावल, अरहर, जौं, ग्वार में मन्दी का रुख बनेगा। इसलिए तेजी बनते ही तुरन्त तेजी का काम करते हुए निकल जाएं।**

ता. 20 को बुध रेवती में आने से लाल-चन्दन, लाल-मिर्च आदि वस्तुओं में, केसर, मजीठ, ग्वार में तेजी तथा गुड़, खाण्ड, सरसों, घी, चाँदी में मन्दी बनेगी।

21 अप्रै. को भी शुक्र भरणी नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, लाल रंग की वस्तुओं, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में मन्दी, चना, मूँग, मोठ, ज्वार, ग्वार में तेजी बनेगी।

22 अप्रै. को शुक्र पश्चिम में उदय होने से घी, खाण्ड, ग्वार में मन्दी, रुई, कपास, सूत, सन, सोना, चाँदी, तिल, चावल में तेजी बनेगी।

27 अप्रै. को सूर्य भरणी नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, कॉपर, मूँगा, लोहा, गेहूँ, जौं, चना, चावल, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी तथा अलसी में मन्दी बनेगी।

28 अप्रै. को बुध भी अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर सू., मं., शु., के. आदि ग्रहों के साथ मेल करेगा। **इन पर शनि की दृष्टि पहले से ही चल रही है। यद्यपि अकेला बुध यहाँ पर मन्दीकारक होता है। परन्तु यहां ग्रह योग से हमारे विचारनुसार विशेष तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, बैंकिंग शेयर्ज़, I.T. सेक्टर, तिल, गुड़, खाण्ड, घी, क्रूड-आयल में तेजी बनेगी।**

परन्तु ता. 29 को ही बुध पूर्व में अस्त होने से अनाज, घी, ग्वार में मन्दी, रुई, सोना, चाँदी में अच्छी घटा-बढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

30 अप्रै. को मंगल भरणी नक्षत्र में आकर सूर्य, शुक्र के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन गुरु मृगशिर (1) में आएगा। गेहूँ, चना आदि अनाजों, चान्दी, ताँबा, रूई में तेजी की लाईन बनेगी। तिल, कपास भी तेज होंगे।

शेयर-बाज़ार—अप्रै. मास में शेयर सूचकांक निफ्टी, सैन्सेक्स में विशेष उथल-पुथल रहेगी। प्रथम 8 (1 से 8 अप्रै.) कुछ कमज़ोर रहने के बाद 8 से 16 अप्रै. तक विशेष तेज़ी, पुनः 21 से 25 अप्रै. तक विशेष तेजी बनेगी। ऑयल, बैंकिंग, रियल एस्टेट क्षेत्र विशेष प्रभावित रहेंगे।

☞ मई—ता. 2 को शुक्र कृतिका नक्षत्र में आने से जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, कपास, चाँदी, सोना, मोती आदि जवाहरात में मन्दी बनेगी।

ता. 4 मई को शुक्र वृष (स्व) राशि में आकर गुरु के साथ योग करेगा। बाज़ार के रुख में विशेष परिवर्तन होगा। रूई, कपास, खाण्ड में मन्दी तथा सोना, चान्दी, ग्वार में अच्छी घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। राजनीतिक वातावरण के कारण भी शेयर-बाज़ार में विशेष घटा-बढ़ी चलेगी।

5 मई को बुध भरणी नक्षत्र में आकर सूर्य-मंगल के साथ मेल करेगा। चावल, चना, गेहूँ आदि अनाजों में तेजी का रुख बने। सोना-चाँदी भी तेज हों।

9 मई को वक्री शनि स्वाती के द्वितीय चरण में आने से गेहूँ, चना आदि अनाज तेज होंगे।

11 मई को सूर्य एवं बुध दोनों कृतिका नक्षत्र में आएंगे। घी, रूई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्डी, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बने।

12 मई को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी बनेगी।

13 मई को बुध वृष राशि में आकर गुरु एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, सोने, चाँदी, बैंकिंग शेयर्ज़ में विशेष घटाबढ़ी चलेगी। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, तिल, तेल आदि में तेज़ी बनेगी।

14 मई को सूर्य भी वृष राशि में आकर, बु. गु. एवं शु. के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, चना, अरहर में तेजी बनेगी।

16 मई को गुरु मृगशिर (2) में आने से चने, चावल आदि धान्य, तिल, कपास तेज होगी। चाँदी में मन्दी बने।

17 मई को बुध रोहिणी नक्षत्र में आने से रूई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। रूई में पहले तेजी बनकर फिर मन्दी बने।

18 मई को मंगल कृतिका नक्षत्र में आने से गेहूँ, मूँग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चान्दी, सूत, कपास में तेजी बनेगी।

23 मई को मंगल वृष राशि में आकर सू. बु., गु., शु. ग्रहों के साथ योग करके पंचग्रही योग बनाएगा। राजनीतिक घटनाक्रम व्यापार जगत को विशेष रूप से प्रभावित करेगा। सोना, चान्दी, ताम्बा, जिस्त आदि धातुओं तथा शेयर-बाज़ार में विशेष तेजी बनेगी। लाल-चन्दन, लाल मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं (जिन्सों), रूई, कपास, सूत, सरसों, सोयाबीन, क्रूड-आयल आदि में तेजी बनेगी। इसी दिन बुध पश्चिम में उदय तथा शुक्र मृगशिर नक्षत्र में आएगा। रूई में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बने, गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी तेजी बने।

24 मई को बुध मृगशिर में आने से रूई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, सरसों, उड़द, गेहूँ में मामूली मन्दी का झटका लगेगा।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आकर तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, घी, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, सन, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बनेगी। चान्दी में मामूली मन्दी का झटका लगे।

27 मई को बुध मिथुन राशि में आने से रूई, कपास, सोना, चान्दी में मन्दी का रुख रहे, सरसों, तेल, तारामीरा, सोयाबीन में घटाबढ़ी रहे।

29 मई को शुक्र मिथुन राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। यद्यपि अकेला शुक्र मिथुन राशि में आकर अच्छी मन्दी का वातावरण बनाता है। परन्तु बुध के साथ मेल करने से यहाँ घटाबढ़ी का वातावरण बनेगा। रूई, कपास, सूत, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मन्दी बनकर फिर मामूली तेजी बनेगी। अलसी, गुड़, घी, गेहूँ, चना, जौं, चावल में तेजी बनेगी।

31 मई को शुक्र मिथुन राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। यद्यपि अकेला शुक्र मिथुन राशि में आकर अच्छी मन्दी का वातावरण बनाता है। परन्तु बुध के साथ मेल करने से यहाँ घटाबढ़ी का वातावरण बनेगा। रूई, कपास, सूत, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मन्दी बनकर फिर मामूली तेजी बनेगी। अलसी, गुड़, घी, गेहूँ, चना, जौं, चावल में तेजी बनेगी।

31 मई को बुध आर्द्रा में आएगा तथा गुरु मिथुन राशि में आकर बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई में मन्दी बनकर तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, सरसों, लोहा, तांबा में मन्दी की जगह तेजी बनेगी।

शेयर-बाज़ार—ता. 4 से 12 मई तक कुछ घटाबढ़ी के बीच मन्दी का रुख रहेगा। तदुपरान्त 14 से 25 तक अच्छी तेजी बनकर मासान्त में निफ्टी 200-210 Pts तक लुढ़क सकती है।

☞ जून—मासारम्भ में 3 जून को शुक्र आर्द्रा में आने से चना, गेहूँ आदि अनाजों में कुछ मन्दी का रुख रहेगा।

6 जून को मंगल रोहिणी नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। गुरु भी पश्चिम में अस्त होगा। रूई, कपास, सूत, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल-मिर्च, हींग, शेयरों में तेजी बनेगी। सोने में कुछ मन्दी बनेगी।

8 जून को सूर्य मृगशिर नक्षत्र में आएगा। रूई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चान्दी, उड़द, मूँग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी आदि में तेजी बनेगी। शनिवारी अमावस भी आगे तेजी का रुख बनाएगी।

10 जून सोमवार को बुध पुनर्वसु में आएगा तथा मिथुन राशिगत चन्द्रदर्शन होने से चान्दी, रूई, कपास, सूत, सन, में मन्दी, सोने में कुछ तेजी बने।

14 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध, गुरु एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। यह चतुर्ग्रही योग बाज़ार में पुनः तेजी लेकर आएगा। रेशम, सूत, कपास, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, तिल, तेल, सोना, सरसों आदि में अच्छी तेजी बनेगी। जौं, चना, गेहूँ, मटर, अरहर, चावल में घटाबढ़ी के मध्य मन्दी बनकर मामूली तेजी बने। घटाबढ़ी के मध्य तेजी का रुख ता. 21 तक चलेगा।

21 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आने से भी रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चान्दी, सोने में तेजी बनेगी।

22 जून को शुक्र कर्क में आएगा। शुक्र पर शनि की दृष्टि रहेगी। रूई, अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, सरसों, सोना, चान्दी, चना में मन्दी बनकर तुरन्त तेजी का रुख बनेगा।

25 जून को मंगल मृगशिर तथा शुक्र पुष्य नक्षत्र में आएगा। रूई, सूत, सन, चावल आदि धान्य, चान्दी में तेजी बने, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बने।

26 जून को बुध वक्री होने से गुड़, खाण्ड, घी, शक्कर, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी, गेहूँ, जौं, चने आदि अनाजों में मन्दी बने।

27 जून को मंगल पूर्व में उदय होने से गुड़, कॉपर, शक्कर, सोने में तेजी बनेगी।

29 जून को गुरु आर्द्रा (1) में आने से सोना, चांदी, रूई, कपास में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

शेयर्स-बाज़ार—ता. 1 से 5 जून तक शेयर-बाज़ार में मन्दी, ता. 6 से 9 जून तक तेजी, पुनः 14 से 23 ता. तक तेजी का रूख रहेगा।

☞ जुलाई—1 जुला. को ही वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से शेयरों, मूँग, रुई, कपास, ग्वार में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने। चान्दी, सोने में अच्छी तेजी बनेगी।

2 जुला. को गुरु पूर्व में उदय होने से चान्दी, रूई, अनाज, सोयाबीन, चने में तेजी बने, सोने में मामूली मन्दी बने।

4 जुला. को मंगल मिथुन राशि में आकर सूर्य, बुध एवं गुरु के साथ मिलकर पुनः चतुर्ग्रही योग बनाएगा। रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, कॉपर, लाल मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी का रुख बनेगा।

5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु में आकर रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्डी, अलसी, सरसों, लाख, ज्वार, मोठ, उड़द, चावल, नमक, सुपारी, केसर, सोंठ, गुग्गल आदि सुगन्धित पदार्थों में तेजी बनेगी।

6 जुला. को ही शुक्र आश्लेषा में आकर रूई, चावल, कपास में मामूली मन्दी का झटका लगाएगा।

8 जुला. को तुलागत शनि मार्गी होने से चान्दी, सोने, तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च में तेजी बनेगी। रूई में पहले मन्दी, फिर तेजी बने।

10 जुला., बुधवार को कर्क राशिगत चन्द्रदर्शन होने से सोना, चान्दी, रूई, सूत, सन्, बारदाना, जूट आदि गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनेगी।

13 जुला. को गुरु आर्द्रा (2) में आने से सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुएँ, नारियल, लौंग आदि सुगन्धित पदार्थ कुछ ही दिनों में तेज होंगे। रूई में कुछ मन्दी बने।

14 जुला. को मंगल आर्द्रा में आने से रूई, कपास, सूत, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक, चने में तेजी और चान्दी में मन्दी बने।

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आएगा। सूर्य-शुक्र पर शनि की दृष्टि रहेगी। रूई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, सरसों, सोना, चान्दी, कॉपर, क्रूड-आयल में तेजी बने।

17 जुला. को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आएगा। सोना, ताम्बा, जिस्त, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुएँ, घी में तेजी बनेगी। रूई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

19 जुला. को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आएगा। इसी दिन वक्री बुध पूर्व में उदय होगा। तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सोना, चान्दी में तेजी बनेगी।

20 जुला. को मिथुन राशिगत बुध मार्गी होने से रेशम, तेल, अलसी, एरण्डी, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी, रूई-चान्दी में घटावढ़ी होकर तेजी बने।

24 जुला. को बुध पुनर्वसु में आकर चाँदी, रूई, कपास, सूत, सन् में मन्दी का रुख रहेगा।

28 जुला. को शुक्र पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना में मामूली मन्दी बनेगी।

29 जुला. को गुरु आर्द्रा (3) में आने से सोना, चान्दी आदि धातु, तिल, तेल, तेज होंगे।

शेयर्स-बाज़ार—जुला. मास में निफ्टी/सैंसेक्स में खासी उथल-पुथल होगी। निफ्टी 250-300 Pts पर्लस होकर लगभग 150-200 Pts गिरेगी भी। ता. 6 जुला. से मुख्यतः तेजी की लाईन रहेगी।

☞ अगस्त—2 अग. को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, रूई, बिनोला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च में तेजी बने।

3 अग. को मंगल पुनर्वसु में आने से रूई, चान्दी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी।

4 अग. को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। रूई, गुड़, दूध, तेल, मूँगफली, सोयाबीन, सरसों, सोने में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

5 अग. भौमवती अमावस के दिन बुध पुष्य में आने से सोने, चान्दी, रूई में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, फिर मामूली तेजी बनेगी।

8 अग. को शुक्र उ.फा. में आने से चना, गेहूँ आदि अनाज, रूई, कपास में तेजी बने, सोना-चाँदी में घटाबढ़ी रहे।

11 अग. को शुक्र कन्या राशि में आएगा। इस पर मंगल की दृष्टि रहेगी। गेहूँ, चान्दी, कॉपर, गुड़, खाण्ड, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में तेजी बनेगी।

12 अग. को बुध पूर्व में अस्त होने से अनाज, घी आदि में मन्दी, रूई-सोने में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

14 अग. को बुध आश्लेषा में तथा गुरु आर्द्रा (4) में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेजी बनेगी।

16 अग. को सूर्य मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में आने से सोना, चान्दी, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी बने। शेयर, अनाज, चनादि में मन्दी बने।

18 अग. को मंगल कर्क (नीच) राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा तथा मंग.-

शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध भी बनेगा। रूई, सरसों, एरण्ड, अलसी, तेल, क्रूड-आयल, गुड़, शक्कर, अनाजादि में तेजी बने।

20 अग. को बुध मघा नक्षत्र, सिंह राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सोना, चान्दी, सूत, रूई, कपास व ऊनी वस्त्र में तेजी, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बने।

23 अग. को मंगल पुष्य नक्षत्र में आने से चान्दी, रूई, कपास, ग्वार, चीनी में घटाबढ़ी चले। सोने में अच्छी तेजी बने।

27 अग. को बुध पू.फा. में आने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ आदि में मन्दी बने।

30 अग. को सूर्य भी पू.फा. नक्षत्र में आकर बुध के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, सूत में तेजी बने। चाँदी में घटाबढ़ी रहे।

शेयर-बाज़ार—प्रथम सप्ताह कुछ तेज रहने के बाद 8 से 11 ता. के मध्य मन्दी पुनः 11 से 17 तक तेजी, तदुपरान्त मन्दी बनेगी।

☞ सितम्बर—ता. 1 सितं. को गुरु पुनर्वसु (1) में आने से चान्दी, रूई में मन्दी, चना, अनाजादि में तेजी बने।

3 सितं. को बुध उ.फा. में तथा शनि स्वाती नक्षत्र के तृतीय चरण में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी, चान्दी रूई में घटाबढ़ी के बीच मन्दी रहेगी।

5 सितं. को बुध कन्या राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, सोने में तेजी बनेगी। रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

6 सितं. को शुक्र तुला (स्व.) राशि में आकर शनि एवं राहु के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल एवं गुरु–दोनों ग्रहों की दृष्टियां पड़ रही हैं। व्यापारिक वस्तुओं में विशेष तेजी बनकर अचानक मन्दी का रुख बन सकता है। रुई, चान्दी, सोने, ताम्बे, गुड़, खाण्ड, कपास में अच्छी तेजी का वातावरण बनकर अचानक मन्दी का रुख भी शुरु हो सकता है। सावधानीपूर्वक आगे बढ़ें तथा हमारी दैनिक रिपोर्ट से मार्गदर्शन ले सकते हैं।

10 सितं. को बुध पश्चिम में उदय होने से रूई में पहले मन्दी बनकर तेजी बने, तिल, तिलहन, चाँदी, सोने, शेयरों में भी तेजी का रुख रहे।

11 सितं. को बुध हस्त तथा शुक्र स्वाती नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, चान्दी में तेजी, गेहूँ, चना, चावल आदि अनाजों में मन्दी बने।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. में तथा मंगल आश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी में तेजी बने। 1-2 दिनों में ही चान्दी में झटके से मन्दी बनेगी।

16 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। रूई, कपास, सुपारी, तिल, तेल, सोयाबीन, लाल वस्तुओं में तेजी बने, चान्दी व शेयरों में मन्दी बनकर मामूली तेजी बने।

20 सितं. को बुध चित्रा में आने से रूई, चान्दी, चना, अनाज आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

23 सितं. को गुरु पुर्न (2) तथा शुक्र विशाखा में आने से रूई, चना, अनाज में मन्दी बनेगी।

25 सितं. को बुध तुला राशि में आकर शुक्र, शनि, राहु के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल तथा गुरु की दृष्टि भी रहेगी। रूई, गुड़, खाण्ड, सोना, ताम्बा, सोयाबीन में तेजी बनेगी। चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्डी, बिनौला, मूँगफली में घटाबढ़ी के बीच पहले मन्दी फिर तेजी बनेगी।

26 सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में आकर गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, हल्दी में तेजी बनेगी।

30 सितं. को बुध स्वाती में रूई, कपास, चान्दी, ग्वार में कुछ मन्दी रहेगी।

शेयर-बाज़ार—मासारम्भ में कुछ कमज़ोर रहने के बाद ता. 6 से पुनः तेज होगा। ता. 16 से 22 तक पुनः कुछ तेज रहेगा।

☞ अक्तूबर—मासारम्भ 2 अक्तू. को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर रूई, शेयर, चान्दी, गुड़ में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी फिर तेजी तथा गेहूँ, जौं, उड़द, मूँग, मोठ, बाजरा में भी तेजी करेगा।

5 अक्तू. को मंगल सिंह राशि में आएगा। सोना, चान्दी, तांबा लोहा आदि धातु, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूँ, अलसी, रूई, लाल-मिर्च, लाल रंग की जिन्सों में तेजी बनेगी।

6 अक्तू., रविवार को तुला राशिकालीन चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना-चान्दी में तेजी तथा रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी होगी।

7 अक्तू. को शनि स्वाती (2) में आने से खाण्ड, गुड़, तेल, दही, दूध में तेजी बने।

10 अक्तू. को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आकर रूई, सूत, सोना, चान्दी, कॉपर, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, केसर, कपूर में तेजी बनेगी। घटाबढ़ी के मध्य साधारण तेजी का यह क्रम 16 अक्तू. तक रहेगा।

17 अक्तू. को सूर्य तुला राशि में आकर बुध, शनि, राहु के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। मुख्य जिन्सों में तेजी का वातावरण बनकर जल्दी ही मन्दी बन जाएगी। अतएव मुनाफा काट लेना चाहिए। रुई, चान्दी, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताम्बा, लाल मिर्च, सोयाबीन, सरसों में तेजी बनेगी। बाद में मन्दी बने। इसी दिन शुक्र ज्येष्ठ में आने से भी जल्दी ही सोना, चांदी, सरसों, तेल, हींग में मन्दी का झटका लगेगा।

20 अक्तू. को तुला राशिगत बुध वक्री होने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, ताम्बे, सोने में अच्छी तेजी बनेगी।

23 अक्तू. को सूर्य स्वाती में आने से रूई, सूत, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

26 अक्तू. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, चान्दी, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी के अच्छे झटके लगेंगे। सोना, अलसी, चना, बिनौला भी घटाबढ़ी के बाद तेज होंगे।

27 अक्तू. को मंगल पू.फा. में आने से भी तिल, तेल, सरसों, मूँगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी बनेगी।

29 अक्तू. को वक्री बुध स्वाती (4) में आने से रूई, कपास, चीनी में घटाबढ़ी के बाद मामूली मन्दी बने।

30 अक्तू. को शुक्र धनु राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तक योग बनाएगा। शुक्र पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। गेहूँ, जौं, चना आदि अन्न, सोना, चान्दी, ताम्बा आदि धातुओं, शेयरों में अच्छी तेजी बनेगी। रूई, कपास, ग्वार, निक्कल में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

शेयर-बाज़ार—अक्तू. मास में शेयर-बाज़ार में विशेष घटाबढ़ी रहेगी। ता. 17 से 19 तथा पुनः ता. 22 से मासान्त तक विशेष तेजी बनेगी।

☞ नवम्बर—मासारम्भ 3 नवं. को राहु स्वाती (2), केतु अश्विनी (4) में आने से तेल, सरसों, सोना, चान्दी में तेजी बनेगी। रविवारी दीपावली भी तेजीकारक रहेगी।

4 नवं. को शनि विशाखा नक्षत्र में प्रवेश करने से गेहूँ, चावल, चने, क्रूड-आयल में तेजी बनेगी।

6 नवं. को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अलसी, चान्दी, क्रूड में अच्छी तेजी बन सकती है।

7 नवं. को मिथुन राशिगत गुरु वक्री होने से सोना, ताम्बा, चना, सरसों, चावल, हींग में तेजी बनेगी।

8 नवं. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से घी, अनाज, शेयरों, चान्दी, चना, कपास, खल-बिनौला, सोना, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

10 नवं. को तुला राशिगत बुध मार्गी होने से घी, शक्कर, अलसी, रूई, चान्दी, बैंकिंग शेयर्ज़ में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

13 नवं. को शुक्र पू.षा. में आने से मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक में कुछ मन्दी का झटका लगे।

16 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आएगा। सूर्य पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि रहेगी। रूई, ताम्बा, सोना, चान्दी, गुड़, सोयाबीन, सरसों, ऊनी वस्त्रों में विशेष तेजी बनेगी।

19 नवं. को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आने से जौं, चना आदि धान्य, सोना, चान्दी, कॉपर आदि धातुओं में तेजी बनेगी।

20 नवं. को मंगल उ.फा. में आने से तिल, तेल, सरसों, मूँगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी बनेगी।

23 नवं. को शनि पूर्व में उदय होने से लोहा, जिस्त, सीसा, क्रूड-ऑयल, चावल, गुड़, खाण्ड, सोने में तेजी बने। रूई, शेयर्ज़, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में मन्दी बनेगी।

24 नवं. को बुध विशाखा में आने से चना, गेहूँ, बाजरा, रूई, कपास में मन्दी बनेगी।

26 नवं. को मंगल कन्या राशि में आने से रूई, चान्दी, सोना, ऊनी, सूती व अन्य वस्त्रों, कपास, अलसी, गेहूँ एवं अन्य लाल रंग की वस्तुओं में तेजी बनेगी।

29 नवं. को शुक्र उ.षा. में आने से गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड में मन्दी, अनाज, चना, रुई में तेजी बने।

शेयर-बाज़ार—7-8 नवं., 16-17, 23-24, 26-27 नवं. को निफ्टी में तेजी की उम्मीद है।

☞ दिसम्बर—1 दिसं. को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। घी, तेल, सरसों, रुई, सोयाबीन, चना, चान्दी, सोने, ताम्बे में अच्छी तेजी बनेगी।

2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आने से सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड, रुई में तेजी बनेगी।

3 दिसं. को बुध अनुराधा नक्षत्र में आने से सोना, चान्दी, सूत, सन, रुई, कपास में कुछ मामूली मन्दी बनेगी।

5 दिसं. को शुक्र मकर राशि में आएगा। बुध भी पूर्व में अस्त होगा। शेयर्ज़, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, चना में तेजी बनेगी। रूई, चान्दी, कपास में भी घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। घटाबढ़ी का यह रुख ता. 11 तक रहेगा।

12 दिसं. को बुध ज्येष्ठा में आने से घी, गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी बनेगी।

15 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आएगा। इस पर मंगल एवं शनि-दोनों क्रूर ग्रहों की दृष्टियां रहेंगी। गुरु की भी दृष्टि रहेगी। व्यापारिक वस्तुओं में विशेष उथल-पुथल होगी। रूई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चान्दी, ताम्बा, गुड़ में विशेष तेजी बनेगी।

20 दिसं. को बुध धनु राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। मं.-शनि-गु. ग्रहों की दृष्टियां रहेगी। जिन वस्तुओं में तेजी बन रही होगी, बुध ग्रह उन्हें ओर बल देगा। बैंकिंग शेयर्ज़, सोना, चान्दी, रूई, कपास, सोयाबीन में अच्छी तेजी बनेगी।

21 दिसं. को शुक्र वक्री होने से व्यापारिक जिन्सों की लाईन बदलेगी। फिर भी चान्दी, सोना, रूई में तेजी ही प्रतीत हो रही है।

22 दिसं. को गुरु पुनर्वसु नक्षत्र में आकर रूई, कपास, चान्दी में मामूली मन्दी करेगा। (22 से 27 दिसं. तक धातुओं, रूई आदि में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी।

28 दिसं. को सूर्य एवं बुध-दोनों पू.षा. नक्षत्र में आकर विशेष तेजी का रुख बनाएंगे। तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, ऊनी-वस्त्र, सन्, सोना-चान्दी में तेजी का रुख बने।

शेयर-बाज़ार—ता. 15 दिसं. से शेयर-बाजार के रुख में अचानक परिवर्तन होगा यदि पहिले तेजी की लाईन रहे, तो ता. 15 के बाद मन्दी के झटके तथा यदि पहिले मन्दी रहे, तो बाद में तेजी की लाईन बनेगी।

नोट—ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाजार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि-...

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देनी वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है-

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना भी अधिक जप, होम तथा शारीरिक प्रयास किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों ने मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे-गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी प्रकाशित पुस्तक **'शिव मन्त्रावली'** में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल-सन् 2013-14 ई.

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2013-14 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
19 जनवरी	कुम्भ	27-22	रात्रि 9/22 से अगले दिन प्रातः 9/22 तक
18 फरवरी	मीन	17-32	दोपहर 11/32 से रात्रि 11/32 तक
20 मार्च	मेष	16-32	प्रातः 10/32 से रात्रि 10/32 तक
19 अप्रैल	वृष	27-33	रात्रि 9/33 से अगले दिन प्रातः 9/33 तक
20 मई	मिथुन	26-40	रात्रि 8/40 से अगले दिन प्रातः 8/40 तक
21 जून	कर्क	10-34	प्रातः 4/34 से सायं 16/34 तक
22 जुलाई	सिंह	21-26	दोपहर 15/26 से अगले दिन प्रातः 03/26 तक
22 अगस्त	कन्या	28-32	रात्रि 10/32 से अगले दिन प्रातः 10/32 तक
22 सितम्बर	तुला	26-14	रात्रि 8/14 से अगले दिन 8/14 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	11-40	प्रातः 5/40 से सायं 5/40 तक
22 नवम्बर	धनु	9-18	प्रातः 3/18 से दोपहर 3/18 तक
21 दिसम्बर	मकर	22-41	सायं 16/41 से अगले दिन प्रातः 04/41 तक
20 जन.(2014)	कुम्भ	9-21	प्रातः 03/21 से दोपहर 15/21 तक
18 फरवरी	मीन	23-11	सायं 17/11 से अगले दिन प्रातः 5/11 तक
20 मार्च	मेष	22-27	सायं 16/27 से अगले दिन प्रातः 04/27 तक

क्रान्तिसाम्य काल-2013-14 ई.

यहां नीचे सूर्य-चन्द्र का सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। (महापात गणित द्वारा) विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल को वर्जित किया गया है। यह समयावधि विवाहादि शुभ मुहूर्त के लिए अशुभ परन्तु मंत्र-यन्त्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ होती है।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
21 जन.	14 57	22 जन.	07 01
3 फर.	12 24	3 फर.	19 48
15 फर.	08 42	15 फर.	15 28
28 फर.	14 52	28 फर.	20 03
12 मार्च	12 46	12 मार्च	17 57
25 मार्च	20 15	25 मार्च	25 14
6 अप्रै.	16 08	6 अप्रै.	21 28
19 अप्रै.	22 35	20 अप्रै.	04 59
1 मई	15 38	1 मई	22 54
14 मई	07 11	14 मई	21 15
31 जुला.	08 10	31 जुला.	20 51
13 अग.	13 34	13 अग.	20 47
25 अग.	05 30	25 अग.	11 46
7 सितं.	14 43	7 सितं.	20 12
19 सितं.	11 52	19 सितं.	16 58
2 अक्तू.	16 35	2 अक्तू.	22 07
14 अक्तू.	12 31	27 अक्तू.	20 01
8 नवं.	10 33	8 नवं.	19 36
(सन् 2014 ई.)			
26 जन.	12 34	27 जन.	04 43
6 फर.	17 51	7 फर.	02 47
20 फर.	02 49	20 फर.	09 28
3 मार्च	17 50	3 मार्च	23 12
16 मार्च	22 56	17 मार्च	04 40
28 मार्च	24 32	29 मार्च	05 32

वारुणी पर्व

7 अप्रै.	15 25	7 अप्रै.	सूर्यास्त
(सन् 2014 ई.)			
28 मार्च	7 52	29 मार्च	04 52

महोदय योग (सन् 2013 ई.)

9 फर.	15 20	9 फर.	सूर्यास्त

चन्द्रग्रहण (सन् 2013 ई.)

25 अप्रै.	25 22	25 अप्रै.	25 53

दीपावली पर्व

यन्त्र-मन्त्र साधना, अनुष्ठान के लिए 3 नवम्बर, रविवार को दीपावली पर्व में प्रदोष, निशीथ काल विशेष सिद्धिदायक होगा। देखें पृष्ठ 84-85

अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए पार्वती स्तोत्र

जानकी उवाच

शक्तिस्वरूपे सर्वेषां सर्वाधारे गुणाश्रये।
सदा शंकरयुक्ते च पतिं देहि नमोऽस्तुते।।१।।
सृष्टिस्थित्यन्त रूपेण सृष्टिस्थित्यन्त रूपिणी।
सृष्टिस्थियन्त बीजानां बीजरूपे नमोऽतु ते।।२।।
हे गौरि पतिमर्मज्ञे पतिव्रतपरायणे।
पतिव्रते परिरते पतिं देहि नमोऽतु ते।।३।।
सर्वमंगल मंगल्ये सर्वमंगल संयुते।
सर्वमंगल बीजे च नमस्ते सर्वमंगले।।४।।
सर्वप्रिये सर्वबीजे सर्व अशुभ विनाशिनी।
सर्वेशे सर्वजनके नमस्ते शंकरप्रिये।।५।।
परमात्मस्वरूपे च नित्यरूपे सनातनि।
साकारे च निराकारे सर्वरूपे नमोऽतु ते।।६।।
क्षुत् तृष्णेच्छा दया श्रद्धा निद्रा तन्द्रा स्मृतिः क्षमा।
एतास्तव कलाः सर्वाः नारायणि नमोऽस्तु ते।।७।।
लज्जा मेधा तुष्टि पुष्टि शान्ति संपत्ति वृद्धयः।
एतास्त्व कलाः सर्वाः सर्वरूपे नमोऽस्तु ते।।८।।
दृष्टादृष्ट स्वरूपे च तयोर्बीज फलप्रदे।
सर्वानिर्वचनीये च महामाये नमोऽस्तु ते।।९।।
शिवे शंकर सौभाग्ययुक्ते सौभाग्यदायिनि।
हरिं कान्तं च सौभाग्यं देहि देवी नमोऽस्तु ते।।१०।।
स्तोत्रणानेन याः स्तुत्वा समाप्ति दिवसे शिवाम्।
नमन्ति परया भक्त्या ता लभन्ति हरिं पतिम्।।११।।
इह कान्तसुखं भुक्त्वा पतिं प्राप्य परात्परम्।
दिव्यं स्यन्दनमारुह्य यान्त्यन्ते कृष्णसंनिधिम्।।१२।।
श्री ब्रह्मवैवर्त पुराणे जानकीकृतं पार्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम।।

जानकी बोली–(1) सबकी शक्ति स्वरूपे ! शिवे ! आप सम्पूर्ण जगत् की आधारभूता हैं। समस्त सद्गुणों की निधि हैं तथा सदा भगवान् शंकर के संयोग-सुख का अनुभव करने वाली हैं ; आपको नमस्कार है। आप मुझे सर्वश्रेष्ठ पति दीजिए। (2) सृष्टि पालन और संहार के जो बीज हैं, उनकी भी बीजरूपिणी आपको नमस्कार है। (3) पति के मर्म को जानने वाली पतिव्रतपरायणे गौरि ! पतिव्रते ! अनुरागिणी ! मुझे पति दीजिए ; आपको नमस्कार है। (4) आप समस्त मंगलों के लिए भी मंगलकारिणी हैं। संपूर्ण मंगलों से सम्पन्न हैं, सब प्रकार के मंगलों की बीजरूपा हैं ; सर्वमंगले ! आपको नमस्कार है। (5) आप सबको प्रिय हैं, सबकी बीजरूपिणी हैं, समस्त अशुभों का विनाश करने वाली हैं। सबकी ईश्वरी तथा सर्वजननी हैं ; शंकरप्रिये ! आपको नमस्कार है। (6) हे परमात्मस्वरूपे ! नित्यरूपिणी ! सनातनि ! आप साकार और निराकार भी हैं ; सर्वरूपे आपको नमस्कार है। (7) क्षुधा, तृष्णा, इच्छा, दया, श्रद्धा, निद्रा, तन्द्रा, स्मृति और क्षमा–ये सब आपकी कलाएं हैं ; नारायणि ! आपको नमस्कार है। (8) लज्जा, मेधा, तुष्टि, पुष्टि, शान्ति, सम्पत्ति और वृद्धि–ये सब भी आपकी ही कलाएं हैं ; सर्वरूपिणी ! आपको नमस्कार है। (9) दृष्ट और अदृष्ट दोनों आपके ही स्वरूप हैं, आप उन्हें बीज और फल दोनों प्रदा करती हैं। कोई भी आपका निर्वचन (निरूपण) नहीं कर सकता। हे महामाये ! आपको नमस्कार है। (10) शिवे आप शंकर सम्बन्धी सौभाग्य से सम्पन्न हैं तथा सबको सौभाग्य देने वाली हैं। देवि ! श्री हरि ही मेरे प्राणवल्लभ और सौभाग्य हैं। उन्हें मुझे दीजिए। आपको नमस्कार है। (11) जो स्त्रियां व्रत की समाप्ति पर इस स्तोत्र से शिवादेवी की स्तुति कर भक्तिपूर्वक उन्हें मस्तक झुकाती हैं ; वे साक्षात् श्रीहरि को पतिरूप में पाती हैं। (12) इस लोक में परात्पर परमेश्वर को पतिरूप में पाकर कान्त सुख का उपभोग करके अन्त में दिव्य विमान पर चढ़कर भगवान् श्रीकृष्ण के समीप चली जाती है। (श्री ब्रह्मवैवर्त पुराण में जानकी जी द्वारा किया गया पार्वती स्तोत्र पूर्ण हुआ।)

अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए विभिन्न मन्त्र–

जिस कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएँ पड़ती हों। उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, बसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का आरम्भ करके यथेष्ठ संख्या में ५१ हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में, शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है–

(१) ॐ ह्रीं गौर्ये नमः
हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

(हे गौरी, शङ्कर की अर्द्धाङ्गिनी ! जिस प्रकार तुम शङ्कर की प्रिया हो, उसी प्रकार हे कल्याणी ! मुझ कन्या को दुर्लभ वर प्रदान करो।)

एक अन्य उपयोगी मन्त्र–

(२) ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरु ते नमः॥

(हे कात्यायनि, महामाया, महायोगिनियों की अधीश्वरि ! मुझे भगवान् कृष्ण सदृश पति प्रदान करो ! तुम्हें नमस्कार है।)

(३) ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनी।
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रं लाभं च देहि मे॥

(ॐ देवेन्द्राणि ! देव इन्द्र की प्रिय पत्नी ! तुम्हें नमस्कार है। मुझे विवाह, भाग्य, आरोग्य और शीघ्र लाभ प्रदान करें।)

इस मन्त्र का भी प्रतिदिन कम से कम 108 बार लगातार अभीष्ट सिद्धि तक करते रहें।

जप करने से पहले प्रतिष्ठित तुलसी-पादप की पूजा करके 12 परिक्रमाएँ करें, तदनन्तर दाएँ

अर्थ– हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक

जप करने से पहले प्रतिष्ठित तुलसी-पादप की पूजा करके 12 परिक्रमाएँ करें, तदनन्तर दाएँ हाथ से दुग्ध और बाएँ हाथ से जल द्वारा श्रीसूर्यनारायण को 12 बार समन्त्र अर्घ्य दें। तदनन्तर जप करें। इस प्रकार प्रतिदिन अर्घ्यदान और जप करने से तथा प्रयास करते रहने से शीघ्र कार्य सिद्धि होगी।

(४) मन्त्र– **"ॐ शं शङ्कराय सकल जन्मार्जित पापविध्वंसनाय।**
पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं देहि कुरु कुरु स्वाहा॥"

(हे समस्त जन्मों में अर्जित पापों के विध्वंसक भगवान शङ्कर ! पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिए अनुकूल पति प्रदान करो। नमस्कार है, नमस्कार है।)

अशुभ ग्रहों के प्रभाव से निवारर्णाथ तथा आर्थिक समस्याओं से पीड़ित जातिका को शिव-पार्वती की सविधि पूजा करनी चाहिए। प्रतिदिन 3 माला कम से कम 40 दिन या अभीष्ट प्राप्ति तक करें। केले के पौधे पर अथवा उसका स्तम्भ (टाहनी) पर मौली की 11 आवृत्तियां लपेटकर इस मन्त्र का जप करें। जप समाप्ति पर पौधे की परिक्रमा करें। जो कन्या नित्यप्रति इस मन्त्र का जाप करती है, उसका शीघ्र विवाह होता है।

पति वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र उन स्त्रियों के लिए उपयोगी है जिनके पति दूसरी स्त्रियों में रूचि लेते हैं। इस यंत्र के प्रभाव से उनके पति दूसरी स्त्रियों से विरक्त होकर उन्हीं के प्रति समर्पित बने रहेंगे। इसके लिए किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि की रात्रि में उत्तर दिशा की ओर मुँह करके अनार की कलम और कस्तूरी, कुंकुम एवं गोरोचन की स्याही द्वारा भोजपत्र पर ऊपर दिए गए यंत्र का लेखन करें। फिर पंचोपचार से 7 दिनों तक यंत्र की पूजा करें। अंतिम दिन 7 ब्राह्मणों को भोजन करवाकर निम्न मन्त्र का 7 बार जप करके यंत्र को अभिमंत्रित करें। इसके बाद यंत्र को लाल कपड़े में लपेटकर और लाल धागे में पिरोकर गले में धारण कर लें। इस प्रयोग से पति आपके वश में रहेगा। मन्त्र इस प्रकार है–

ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पति मे वशं कुरू कुरू स्वाहा॥

'दीर्घायु व रोगनाश के लिए महामृत्युञ्जय मन्त्र'

'ॐ हौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।'

अर्थ–हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि–यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन-अनवरत जलधारा के प्रवाहवत अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक, तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तथा एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ठ दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकालमृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुष्डाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट एवं असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है।

"श्रीमहामृत्युंजय कवच यन्त्रम्"

भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यन्त्र लिखकर गुग्गुल का धूप देकर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ में बाँध देना चाहिए। गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी) का नाम यथास्थान लिख देना चाहिए। साथ में रुद्राक्ष माला से महामृत्युञ्जय जप करते रहें।
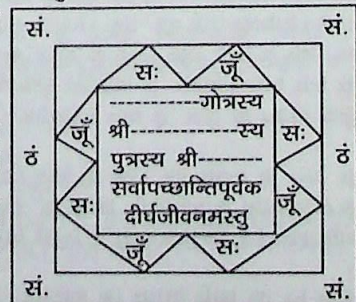
♣ शिव पुराणोक्त उपयोगी मन्त्र एवं प्रयोग ♣

(1) आयुवृद्धि के लिए–आयुवृद्धि के लिए महामृत्युञ्जय मन्त्र का एक लाख जप करना और शिवलिङ्ग पूजन करते समय एक लाख दूर्वादलों से पंचाक्षरी मन्त्र का जप करते हुए विशेष पूजन करने से सिद्धि होती है।

(2) लक्ष्मी प्राप्ति के लिए—इसके लिए कमलों एवं बिल्वपत्रों से तथा शखीपुष्पों से महादेव का **"ॐ महादेवाय नमः"** मन्त्र पढ़कर पुष्प चढ़ावें। बिल्वपत्रों को पंचाक्षरी मन्त्र पढ़कर एक लाख की संख्या में चढ़ाना सिद्धि प्रदान करता है।

(3) पुत्र प्राप्ति के लिए—पुत्र की अभिलाषा के लिए लाल डंठल वाले धतूरे के पुष्पों से पूजन शुभ माना गया है। अतः एक लाख धतूरे के पुष्पों से पूजन करना और श्री शिवसहस्रणाम का पाठ करने से इच्छित कामना पूर्ण होती है।

(4) मान-यश एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए—अगस्त्य के एक लाख फूलों से पूजन करने वाले मनुष्य को महान यश की प्राप्ति होती है। तुलसी पत्र से पूजन करने से भोग और मोक्ष दोनों ही उपासक के लिए सुलभ होते हैं। **"ॐ नमो भगवते रूद्राय"** मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप करना और इसी मन्त्र को पढ़ते हुए तुलसी पत्रों से पूजन करना चाहिए।

(5) वाहन सुख—चमेली के पुष्पों से **"ॐ महादेवाय नमः"** मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करने से वाहन सुख मिलता है। सवा लाख का विधान है।

(6) शुभलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए—बेला के फूल श्रीशिवपार्वती को **"ॐ भगवत्यै उमादेव्यै शंकरप्रियायै नमः"** मन्त्र जप करना और पुष्प चढ़ाने से शुभलक्षणा पत्नी भगवान् शंकर की कृपा से मिलती है।

(7) मुक्ति के लिए—तिलों से उत्पन्न पुष्प मुक्तिदायक होते हैं। इनसे भगवान् शंकर का पूजन **"ॐ शंकराय नमः ॐ"** मन्त्र जप करते हुए तिल पुष्प चढ़ाने से मुक्ति प्राप्त होती है। इसमें कोई संशय नहीं है।

पुष्पाणि तिलजातानि मुक्तिदानि न संशयः।।

(8) रोग शान्ति के लिए—कनेर के फूलों से मृत्युञ्जय मन्त्र जप करते हुए अथवा मृत्युञ्जय मन्त्र करना सम्भव न हो तो पंचाक्षरी मन्त्र पढ़कर कनेर के पुष्पों से पूजन करके आरोग्य लाभ होता है।

विशेष रूप से—चम्पा और केतकी के पुष्प निषिद्ध हैं अर्थात् इनका प्रयोग पूजन में नहीं करना चाहिए। अगर कोई विशेष पुष्प उपलब्ध नहीं होता तो वर्तमान ऋतु में पैदा होने वाले फूल भी यदि भगवान् शिव को समर्पित किये जाएं तो वे मोक्ष देने वाले होते हैं। इसमें संशय नहीं है। सभी फूल भगवान् शिव (चम्पा और केतकी को छोड़कर) को चढ़ाये जा सकते हैं।

विविध द्रव्यों द्वारा शिवपूजन से अभीष्ट प्राप्ति

(1) लक्ष्मी वृद्धि के लिए—महादेव जी का चावलों से पूजन (चढ़ाने से) करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है। **तंडुलारोपणे नृणां लक्ष्मी वृद्धिः प्रजायते।।**

विशेष रूप से चावल चढ़ाने की विधि इस प्रकार है—चावल अखण्डित (अक्षत) होने चाहिए। इन्हें उत्तम भक्तिभाव से चढ़ाना चाहिए। रूद्रपूजा के विधान अनुसार **रूद्र प्रधान मन्त्र** से पूजा करके भगवान् शिव के ऊपर बहुत सुन्दर वस्त्र चढ़ायें और उसी पर चावल रखकर समर्पित करें। भगवान् शिव के ऊपर एक श्रीफल, गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि निवेदन करने से पूजा का पूरा-पूरा फल प्राप्त होता है। वहां शिव के समीप बारह ब्राह्मणों को भोजन कराने से मन्त्रपूर्वक साङ्गोपाङ्ग पूजा सम्पन्न होती है। जहां सौ मन्त्र जपने की विधि हो, वहां पर 108 मन्त्र जपने का विधान है। लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

(2) संतान प्राप्ति—गेहूँ के बने हुए पकवान से भगवान् शंकर की पूजा निश्चय ही बहुत उत्तम मानी गई है। एक लाख बार पूजन करने से संतान सुख में वृद्धि होती है।

(3) धर्म-अर्थ-काम-भोग की वृद्धि—इसके लिए प्रियंगु (कंगनी) द्वारा सर्वाध्यक्ष परमात्मा शिव का पूजन करने से सिद्धि होती है। उपासक को समस्त सुखों को देने वाली होती है।

(4) रोग शान्ति के लिए—उड़द की पूजा रोग शान्ति के लिए कही गई है। इसके साथ ही विधिपूर्वक पूजन करना भी शुभ होता है। इसके अतिरिक्त भक्तिभाव से विधिपूर्वक श्री शिवपूजन करके जलधारा समर्पित करनी चाहिए। ज्वर के कोप की शान्ति के लिए भी जलधारा विशेष शुभ होती है।

(5) सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि के लिए—शतरूद्रिय मन्त्र से, रूद्री के ग्यारह पाठों से, रूद्रमन्त्रों के जप से, पुरुष सूक्त से, छः ऋचावाले रूद्रसूक्त से, महामृत्युञ्जय मन्त्र से, गायत्री मन्त्र से अथवा शिव के शास्त्रोक्त नामों के आदि में प्रणव और अन्त में **नमः** पद जोड़कर बने हुए मन्त्रों द्वारा जलधारा अर्पित करनी चाहिए। जैसे—**ॐ नमः शिवाय।** उत्तम भस्म धारण करके उपासक को प्रेमपूर्वक नाना प्रकार के शुभ एवं दिव्य द्रव्यों द्वारा शिवलिङ्ग की पूजा करनी चाहिए और शिव पर उनके सहस्रनाम मन्त्रों से घी की धारा चढ़ानी चाहिए। ऐसा करने से **वंश का विस्तार** होता है. इसमें संशय नहीं है।

(6) प्रमेह आदि रोग की शान्ति के लिये केवल दुग्ध की धारा शिवजी पर विशेषतः करनी चाहिए।

(7) बुद्धि-उज्जवल करने के लिए—भगवान् शंकर को शक्कर मिश्रित दुग्ध की धारा चढ़ाने से तथा दस हज़ार मन्त्रों का जप (पंचाक्षरी मन्त्र) करने से बृहस्पति के समान उत्तम बुद्धि प्राप्त हो जाती है।

विशेष रूप से गङ्गाजल की धारा तो भोग और मोक्ष दोनों फलों को देने वाली है। सभी प्रकार की धारा चढ़ाने के समय मृत्युञ्जय मन्त्र पढ़ते हुए चढ़ानी चाहिए। दस हज़ार जप का विधान है और ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

(8) शत्रुनाश के लिए—राई के पुष्पों से पूजन करना शत्रु को मृत्युतुल्य कष्ट प्रदान करने वाला होता है। इन पुष्पों को एक-एक करके एक लाख की संख्या में चढ़ाना चाहिए। शत्रु को ताप देने के लिए तेल की धारा देनी चाहिए। विशेष रूप से सरसों के तेल की धारा दे तो शत्रु का नाश होता है।

उपरोक्त विधि से शिवपूजन एवं पार्थिव लिङ्ग की पूजा करने से उपासक को तीन मास में सिद्धि हो जाती है। इसमें कोई संशय नहीं—

एवमर्चयतः पुंस पार्थिव लिंगमुत्ततम।
मासत्रयेण सिद्धिः स्यात्रात्र कार्याविचारणा।।

नोट—सम्पूर्ण जानकारी के लिए **'शिव-मंत्रावली'** पुस्तक का अध्ययन कीजिए।

जनरल बुक डिपो, जालन्धर।

श्री लक्ष्मी-विशांक यन्त्र (बीसा यन्त्र)

बीसा यन्त्र को यदि एक लाख मन्त्र जपकर हवन द्वारा यन्त्र सिद्ध कर लिया जाए तो इसका दर्शनमात्र ही समस्त संकटों का निवारण कर देता है। धन-सम्पदा, अर्थ-लाभ, वैभव-सम्मान प्राप्ति, शत्रु-दमन के लिए बीसा यन्त्र एक अद्भुत एवं परम प्रभावी यन्त्र है।

प्रतिदिन स्नान, पूजा के पश्चात् श्रीलक्ष्मी जी की मूर्त्ति, चित्र (या यन्त्र जो भी हो) के सामने धूप-दीप जलाकर लक्ष्मी जी का ध्यान करते हुए नीचे लिखे किसी भी मन्त्र का जाप (१, ३, ७ माला) नियमित रूप से संयमपूर्वक निर्धारित संख्या (५१ हज़ार अथवा सवा लाख) में करें अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवाएँ। कमलगट्टे की माला हो तो अच्छा है। पाठ से पूर्व एवं पाठ के बाद निम्न श्री लक्ष्मी स्तुति पढ़ लेवें तो अत्यन्त शुभकारी होगा-

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी। सुपूजिता प्रसन्नां स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते॥
सर्वज्ञ सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी। सर्व दुख-हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते॥
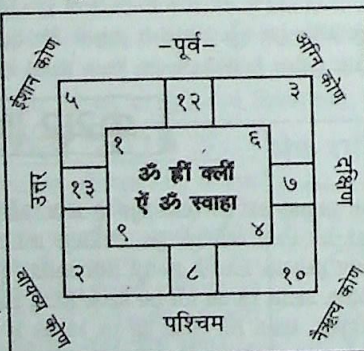
श्रीमहालक्ष्मी मन्त्राः-

* **"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः"**
* **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्री ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद।**
* **श्रीं ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।**
* **ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्नीम् व। धीमहि तन्नोलक्ष्मी प्रचोदयात् ह्रीं ॐ॥**

उपरोक्त मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र संकल्प एवं श्रद्धापूर्वक किसी शुभ मुहूर्त्त जैसे नवरात्रे, अक्षय तृतीया, गुरुपुष्य, रविपुष्य योग, दीपावली, ग्रहण काल में यथेष्ठ संख्या में करने से शीघ्र लाभ होता है। पाठ के उपरान्त श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना प्रशस्त रहता है। ध्यान रहे, पाठोपरान्त निष्ठापूर्वक अभीष्ट कार्य हेतु पुरुषार्थ एवं उद्यम करना भी अनिवार्य है।

"संक्षिप्त लक्ष्मी स्तोत्र"

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णु वल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरि प्रिया। पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्री पद्मा धारिणी॥
द्वादशैतानि नमानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरा लक्ष्मी र्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥

वर्षा लाने के लिए विशेष मन्त्र

शास्त्र में मेघ अर्थात् वर्षा लाने के लिए कुछ आवाहन मन्त्र बतलाए गए हैं। अनावृष्टि के समय भगवान् वरुण, इन्द्रादि देवों की उपासना प्राचीन काल से होती आई है।

प्रथमतः शुद्ध एवं पवित्रीकृत भूमि पर मंत्रपूर्वक कलश स्थापित करें तथा पुष्पाक्षतादि से स्वास्तिवाचक, श्री विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य, दुर्गादि पंच महादेवों का पूजन करके निम्नलिखित चारों मंत्रों का दश-दश हज़ार जप करके अथवा किसी सुयोग्य पण्डित द्वारा संकल्पपूर्वक जप/पाठ करवा करके उनकी दशांश सँख्या का होम (हवन) करें। मेघों के **आवाहन मन्त्र** इस प्रकार हैं-

(i) **ॐ ह्रीं मेघदूत्यै नमः आगच्छ २ स्वाहा।**
(ii) **ॐ मेघदूतो कमलोद्भवाय नमः, आगच्छ २ स्वाहा॥**
(iii) **ॐ महानिल राज हिमन्निवासिने आगच्छ २ स्वाहा।**
(iv) **ॐ ह्रीं नंदिकेश्वर राय जठनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा॥**

हवन के पश्चात् सफेद तथा लाल कनेर के फूलों से अथवा अन्य किन्हीं सुगन्धित फूलों से वरुण एवं वायु देवों का पूजन करके जंगल/एकान्त में जाकर निम्न मन्त्र से मेघों का आवाहन करें-

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरूण। इहागच्छ, इह तिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि, आवाह्यामि च मम पूजां गृहाण।

'**ॐ अपां पतये वरूणाय नमः**' कहकर अक्षत-पुष्प कलश पर छोड़ दें।

इसी भान्ति वायु देव का आवाहन करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वायु देव ! इहा गच्छ, इह तिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि, आवाह्यामि च, मम पूजां गृहाण। कहकर पुष्पाक्षत प्रतीकरूप सुपारी या कुश पर छोड़ दें॥

फिर इन्द्र देव का आवाहन और पूर्व में स्थापन करें-

इंद्र सुरपति श्रेष्ठं वज्र हस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञ सिद्ध्यै शत यज्ञाधिपं प्रभुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च। कहकर सुपारी या कुशा पर छोड़ देवें॥ तथा इन्द्रादि देवों का ध्यान करके नमस्कार करें।

पति-पत्नी में संयोग हेतु शाबर-मन्त्र

निम्न मन्त्र उन परिस्थितियों में लाभकारी है जब किसी स्त्री का पति किसी अन्य स्त्री में रूचि लेने लगे या किसी अन्य स्त्री का उसके पति से शारीरिक अथवा मानसिक सम्बन्ध हो। इन हालात में दाम्पत्य सुख में तनाव, कष्ट विदित है। जिस स्त्री अथवा कन्या में पति रुचि ले रहा हो, उसका नाम पहले वाले रिक्त स्थान में रखें तथा दूसरे रिक्त स्थान में अपना

नाम रखें। अपने नाम के स्थान पर '**मेरे पास आ जाए**' यह भी बोला जा सकता है। यह मन्त्र जिस प्रकार से कोई विवाहित स्त्री अपने भ्रमित पति को सम्मोहित करने के लिए कर सकती है, उसी तरह कोई पुरुष अपनी भ्रमित पत्नी को सम्मोहित करने के लिए कर सकता है।

"ओम् सत्यनाम आदेश गुरु को लौंग-लौंग मेरा भाई, इन्हीं लौंग ने शक्ति चलाई पहली लौंग रातीमती, दूजी लौंग जोबन मती, तीजी लौंग अंग मरोडे, चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े चारों लौंग जो मेरी खाय----के पास से-----के पास आ जाए गुरु की शक्ति मेरे भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

कैद से छुड़ाने हेतु तान्त्रिक प्रयोग

मन्त्र–ॐ हनुमत वीर, वेग आवो अमुक बन्दी को बन्धन से छुड़ाओ। बेड़ी तोड़ो, ताला तोड़ो, सारे बन्धन तोड़ो, मोड़ो अमुक बंदी को बंध से छुड़ावो। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा।।

इस मन्त्र की साधना हेतु गुड़ और आटे का तवे पर पुआ बनाना। मूंगे की माला से किसी भी समय रात्रि में लाल रंग के आसन पर दक्षिणा दिशा में बैठकर जप करना। इस मन्त्र जप का सवा लाख का विधान है।

साधना विधि–सबसे पहले जल में गुड़ भिगोकर उसके रस में गेहूँ का आटा मिलाकर तवे पर पुआ बना लें। उस पुए पर बन्दी का (कैदी का) नाम कुंकुम से लिखकर थाली में रख लें। साधना करते समय उस थाली को सामने रखकर उस पर पुष्प चढ़ाएं। फिर मन्त्र जप पूरा होने पर उस पुए को रात्रि में ही रास्ते में रखकर घर आ जाएं। इस प्रकार प्रतिदिन साधना करें। जब सवा लाख जप पूर्ण हो जाए तब किसी कन्या को पुए का ही भोजन कराएं और यथोचित्त धन, वस्त्र आदि देकर संतुष्ट करें। इसके साथ ही श्री हनुमान चालीसा और संकटमोचन हनुमानाष्टक का अधिकाधिक पाठ तथा श्रीहनुमान जी की पूजा करते हुए इस अनुष्ठान को करने पर शीघ्र ही बन्दी कैद से छूट जाता है और आगे भी उस व्यक्ति पर किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आती।

कुछ उपयोगी टोटके

(1) शीघ्र विवाह के लिए–(i) यदि किसी कन्या की कुण्डली में मंगली योग होने के कारण उसका विवाह नहीं हो पा रहा तो वह प्रत्येक मंगलवार मूँगे की माला से 'मंगल चंडिका मन्त्र' की 11 माला तथा शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ करें।

मूलमन्त्र–'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगल चण्डिके ऐं क्रूं फट् स्वाहा।"

(ii) आयु होने पर भी कन्या के विवाह में बाधा आ रही हो तो शुक्रवार की रात्रि में 8 सूखे छुहारे जल में अच्छी तरह उबालकर अपने सिरहाने रखकर सोए तथा शनिवार को प्रातः स्नानादि के पश्चात् चलते पानी में प्रवाहित करें।

(iii) विकराल कालसर्प योग वाली और क्रूर मंगली कन्याएं, जिनका विवाह 30 से 40 वर्ष की आयु हो जाने पर भी नहीं होता, वो निम्नलिखित चौपाई का पाठ करें। ईश्वरकृपा से अवश्य संयोग बनेंगे–

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साज संवारिकै।
मांडवी श्रुत कीरिति उरमिला कुंअरि लाई हंकारिकै।।

(2) ऋण मुक्ति के लिए–(i) किसी हनुमान मन्दिर में जाकर, हनुमान जी के सम्मुख कुश के आसन पर विराजमान होकर सर्वप्रथम हनुमानजी को प्रणाम करें। फिर जनेऊ का 1 जोड़ा व चोला चढ़ाकर चमेली के तेल का दीपक, गुग्गल की धूपबत्ती व चन्दन की अगरबत्ती अर्पित करें। तदनंतर पान के एक पत्ते पर थोड़ा सा शुद्ध मक्खन लगाकर पीले पुष्पों के साथ अर्पित करें। इसके बाद गुड़-चने का भोग लगाएं व 11 रु. अर्पित कर ऋणमुक्ति के लिए श्रीहनुमान जी से प्रार्थना करें। फिर 11 बार परिक्रमा कर 11 बार हनुमान चालीसा का पाठ व 1 बार ऋणमोचन मंगल स्तोत्र का पाठ करें। इस कार्य से निवृत्त होकर पुजारी जी से प्रसाद रूप में थोड़े से चने और गुड़ प्राप्त करें। घर लौटकर गुड़-चनों को लाल वस्त्र में बाँधकर किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। जब ऋण से मुक्ति मिल जाए तो उस प्रसाद को ग्रहण कर लें।

(ii) बुधवार को प्रातःकाल श्वेतार्क की जड़ को पंचामृत से स्नान कराकर लाल रंग के नए कपड़े पर रखें। इसके साथ रक्तचंदन का टुकड़ा, 11 कौड़ियां, 11 गोमती चक्र एवं तांबे का 1 सिक्का रखें। घी का दीपक जलाएं तथा श्वेत कागज़ पर रक्त चन्दन से अपनी प्रार्थना को लिखकर रख दें। फिर गणपति के मन्त्र '**ॐ गं गणपत्ये ऋणहर्त्तार्ये नमः**' मन्त्र का 108 बार जप करें। फिर उस कपड़े को एक पोटली बनाकर संस्थान अथवा गृह में उत्तर-पूर्व दिशा में लटका दें। नित्य उसे धूप देते रहें। ऋणभार का शमन हो जाने पर पोटली जल में प्रवाहित कर दें।

–त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति–

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

(iii) विकराल कालसर्प योग वाली और क्रूर मंगली कन्याएं, जिनका विवाह 30 से 40 | संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का साथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

मेषादि राशियों का ग्रहगोचर फलादेश-2013 ई०

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-विद्या, व्यवसाय, नौकरी, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म-समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। मध्यम विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 901, अधिक बृहद् विस्तृत की 1250 रु. से 2100 रुपए। सामान्य मध्यम जन्मपत्री की 501 रु., वार्षिक वर्षफल, उपायों आदि सहित की फीस 501 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 51 डालर होगी। डाक व्यय 50 रु. जोड़कर भेजें, फीस एडवांस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें--**पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब), फोन-0181-2457959**

भविष्यफल-जनवरी-सन् 2013 ई.

मेष-राशि स्वामी मंगल उच्चस्थ होने के कारण उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। निर्वाह-योग्य आय के साधन बनेंगे। सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। मासान्त में आय कम तथा खर्च अधिक होंगे। पारिवारिक उलझनें बढ़ेंगी।

वृष-राशि स्वामी शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेज़ी रहेगी। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक होगी। विरोधी हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। ता. 17 के पश्चात् धर्म कर्म में रूचि होगी। और अधिकतर समय शुभ कार्यों में ही व्यतीत होगा। श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

मिथुन-सूर्य-बुध की संयुक्त दृष्टियां पड़ रही है। मास के पूर्वार्द्ध भाग में शुभ फल घटित होंगे। धनागमन के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी अधिक होंगे। उत्तरार्ध भाग में मंगल-बुध का योग होने से बनते कामों में विघ्न एवं स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

कर्क-मास के आरम्भ से ही मंगल-शनि की संयुक्त दृष्टि रहने से बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव, गुप्तचिन्ता, दुर्घटना में चोटादि का भय और भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों में परेशानी होगी। ता. 25 पश्चात् हालात में सुधार होगा।

सिंह-13 जन. तक राशिस्वामी सूर्य पर शनि की दृष्टि रहने से निकट-बन्धुओं से तनाव एवं मतभेद रहेंगे। ता. 25 तक मंगल की दृष्टि होने से उत्साह एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे।

कन्या-ता. 15 तक बुध धनु राशिगत अस्तगत में तथा शनि साढ़ेसति का प्रभाव भी रहने से संघर्षमयी परिस्थितियां रहेंगी। बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य ढीला, स्वभाव में तेज़ी एवं वृथा भागदौड़ अधिक होगी। धन खर्च अधिक होगा। 25 ता. के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

तुला-शनि-राहु का संचार एवं शनि साढ़ेसति के प्रभाव से भाग्योन्नति में विघ्न, आय से खर्च अधिक, वृथा मानसिक तनाव रहेगा। ता. 4 जन. से धनु राशि में शुक्र-सूर्य-बुध का योग होने से नए-नए मित्रों से सम्बन्ध बनेंगे। परन्तु उत्तरार्ध भाग में परिवारिक समस्याएं व उलझनें रहेंगी। किन्तु नए कार्य की योजनाएं बनेंगी।

वृश्चिक-शनि साढ़ेसति के प्रभाव से बनते कामों में विघ्न, घरेलू व आर्थिक परेशानियां बढ़ेंगी। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। परन्तु राशिस्वामी मंगल

मेष राशि (Aries)

चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

ग्रहगोचर : इस राशि पर केतु का संचार तथा शनि की दृष्टि साल भर रहेगी तथा वर्षारम्भ से 24 जन. तक राशिस्वामी **मंगल उच्चराशि** में होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। **शनि की नीच दृष्टि** भी होने से गुप्त परेशानियाँ व आर्थिक उलझनें होंगी। 12 अप्रै. से 22 मई के मध्य इसी राशि पर मंगल तथा 13 अप्रै. से 13 मई तक सूर्य का शुभ संचार होने से व्यवसाय में लाभ के योग हैं। 4 जुला. से 4 अक्तू. के मध्य मंगल की नीच स्थिति होने से कठिनाईयों के बाद आय के साधन बनेंगे। 25 नवं. से मंगल की दृष्टि होगी। जिससे संघर्ष से धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। उपाय-प्रत्येक मंगलवार को श्री सुन्दरकांड का पाठ करके श्री हनुमान मन्दिर में चमेली के तेल का दीया जलाना शुभ रहेगा।

उच्चराशिगत तृतीय भाव में संचार करने से व्यवसाय के क्षेत्र में धन लाभ के अवसर मिलेंगे। पराक्रम में वृद्धि तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।

धनु-शनि-राहु लाभ स्थान में तथा शनि की तृतीय दृष्टि होने से परिश्रम के बाद धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। परन्तु परिवार में संतान सम्बन्धी चिन्ता, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। उत्तरार्ध भाग में हालात कुछ बदलेंगे। खर्च अधिक एवं मनोरंजन आदि कार्यों में ध्यान रहेगा।

मकर-मंगल उच्चस्थ होकर 24 जन. तक संचार करने से धन लाभ एवं अकस्मात् उन्नति के अवसर मिलेंगे। राशि स्वामी शनि भी उच्च राशिस्थ होकर राहु युक्त दशम भाव में होने से व्यवसाय/नौकरी में भाग्योन्नति, आय-वृद्धि के अनेक अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु अचानक धन खर्च एवं मानसिक तनाव रहेगा।

कुम्भ-राशिस्वामी शनि भाग्य स्थान पर उच्च स्थिति में होने से धन लाभ एवं पदोन्नति के अवसर प्राप्त होगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे, परन्तु मासान्त में मंगल इस राशि पर होने से आय कम तथा खर्च अधिक होंगे।

मीन-शनि की ढैय्या का प्रभाव अभी रहेगा। जिससे बनते कामों में विघ्न बाधाएँ, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव रहेगा। राशि स्वामी गुरू तीसरे होने से कार्यव्यवसाय में भागदौड़ अधिक रहेगी। आय में कमी तथा आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे। श्री सूक्त एवं लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना कल्याणकारी होगा।

भविष्यफल-फरवरी-सन् 2013 ई.

मेष-राशिस्वामी मंगल एकादश भाव में अस्त होकर संचार करने से आय कम और खर्च अधिक होगा। अत्यधिक संघर्ष के पश्चात् निर्वाह योग्य साधन बनेंगे। शनि की दृष्टि के कारण वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव, निकट बन्धुओं से मतभेद एवं चोटादि का भय रहेगा। सोची योजनाओं में विघ्न बाधाओं का सामना रहे।

वृष-मासारम्भ में चन्द्रमा छटे भाव तुला राशिगत शनि-राहु का योग होने से दैनिक कार्यों में विघ्न बाधाएं, धन का खर्च अधिक एवं सुख-साधनों में वृद्धि होगी। ता. 10 से राशि स्वामी शुक्र अस्त होने से स्वास्थ्य परेशानी, व्यवसाय में अत्यधिक खर्च और संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा।

मिथुन-ता. 2 फर. से राशिस्वामी बुध भाग्य-स्थान पर होने से भाग्यवृद्धि, उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बनेंगे। पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि तथा परिवार

में शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। ता. 20 के पश्चात् किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के सहयोग से उन्नति के विशेष अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु वृथा मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ताएँ रहे।

कर्क–ता. 12 तक सूर्य की सप्तम दृष्टि रहने से व्यर्थ का वाद-विवाद, मानसिक तनाव, सरकारी क्षेत्र से परेशानी, शत्रु द्वारा हानि की संभावना बनी रहेगी। शनि की ढैय्या भी रहने से आय में कमी एवं परिवारिक परेशानी रहेगी। ता. 22 के पश्चात् हालात में कुछ सुधार एवं पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह–ता. 12 तक राशि स्वामी सूर्य छटे भाव में एवं मंगल की सप्तम दृष्टि रहने से क्रोध अधिक, बनते कामों में विघ्न एवं विलम्ब होगा। परन्तु ता. 12 से सूर्य-मंगल की दृष्टियां होने से वृथा, भागदौड़, धन लाभ, मानसम्मान में वृद्धि होगी। किन्तु क्रोध एवं जल्दबाजी में किए कार्यों में नुक्सान हो सकता है। सावधानी बरतें।

कन्या–ता. 2 से बुध कुम्भ राशिगत संचार करने से पारिवारिक उलझनें एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में अत्यधिक भागदौड़ के उपरान्त भी लाभ में कमी रहेगी। शनि साढ़ेसति एवं गुरू की दृष्टि रहने से विपरीत परिस्थितियों में भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं वृथा मानसिक तनाव रहे। धन का खर्च अधिक रहे।

तुला–शनि-राहु का संचार एवं राशि स्वामी शुक्र ता. 21 तक चतुर्थ भाव में होने से अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों का सामना व्यवसाय के क्षेत्र में रहेगा। स्थान परिवर्तन भी होने के योग हैं। ता. 22 से हालात में परिवर्तन एवं परिवार में शुभ मंगल कार्यों पर खर्च होगा। विदेशी सम्बन्धों से लाभ के योग हैं।

वृश्चिक–राशिस्वामी मंगल चतुर्थ भावस्थ होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। धर्म-कर्म में रूझान रहेगा। परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। ता. 20 के पश्चात् स्वास्थ्य परेशानी, मानसिक तनाव, धन का खर्च अधिक होगा। परिवार में कुछ निजी समस्याएं भी उभरेंगी।

धनु–मासारम्भ में कार्यक्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ाव एवं संघर्ष का सामना रहेगा। कुछ सोची योजनाओं में विघ्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। मासान्त में शुभ कार्य पर धन का खर्च होगा। वाहनादि का क्रय-विक्रय भी होगा। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

मकर–मासारम्भ से इस राशि पर शुक्र का संचार होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। व्यवसाय में संघर्षपूर्ण हालात रहेंगे। परन्तु गुरु की दृष्टि होने से शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। ता. 22 से हालात में परिवर्तन एवं परिवार में खुशी के अवसर भी मिलेंगे।

कुम्भ–इस राशि पर मंगल का संचार होने से व्यवसाय एवं गृह सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। आय कम व खर्च अधिक होंगे। दुर्घटना में चोटादि लगने का भय भी रहेगा। ता. 12 से मंगल-सूर्य-बुध का संचार होने से बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ, स्वास्थ्य में खराबी एवं तनाव की स्थिति रहे। वृथा भागदौड़ भी रहेगी।

मीन–राशिस्वामी गुरू तीसरे एवं शनि की ढैय्या के प्रभाव से मिश्रित फल मिलेंगे। व्यवसाय में परिश्रम एवं संघर्ष के बावजूद धन लाभ की स्थिति बनेगी। धर्म-कर्म में रूझान एवं शुभ कार्यों पर खर्च होगा। परन्तु वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव, गुप्तचिन्ता, किसी निकट भाई-बन्धु से वृथा तनाव एवं मतभेद भी रहेंगे।

वृष राशि (Taurus)

इ, उ, ए, ओ, व, वि, वे, वो

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ में इस राशि पर शुक्र की स्वगृही दृष्टि होगी। जबकि गुरू का संचार 30 मई तक इसी राशि पर रहेगा। 17 मार्च से 10 अप्रै. के मध्य शुक्र उच्चराशि (मीन) में संचार करेगा। आमदन तथा सुख-साधनों में वृद्धि होगी। 10 अप्रै. से 3 मई के मध्य शुक्र व्यय स्थान में होने के खर्च अधिक होंगे। 4 से 28 मई के मध्य शुक्र इसी राशि में शुभ होगा। 11 अग. से 5 सितं. के बीच शुक्र नीचराशि (कन्या) में गर्दिश करेगा। इस अवधि में आर्थिक परेशानियों का सामना रहेगा। खर्च अधिक बढ़ेंगे। प्रत्येक शुक्रवार को व्रत करके कन्यापूजन करना शुभ होगा।

मिथुन राशि (Gemini)

क, कि, कु, घ, छ, के, ह

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ में इस राशि पर सूर्य-बुध की संयुक्त दृष्टि रहेगी। ता. 15 जन. से बुध अष्टम स्थान में मंगल के साथ होने से बनते कामों में रूकावटें पैदा होंगी। ता. 2 फर. से बुध भाग्य स्थान में मंगल युक्त होगा। ता. 9 अप्रै. की रात्रि से 27 अप्रै. तक बुध नीच राशि (मीन) में होने से स्वास्थ्य

भविष्यफल–मार्च–सन् 2013 ई.

मेष–मासारम्भ में धनागमन के साधनों में विघ्न, मानसिक तनाव एवं क्रोध अधिक रहे। ता. 5 से राशिस्वामी मंगल द्वादश भाव में होने से धन का खर्च अधिक, दूरस्थ यात्राएँ, विदेशी सम्बन्धियों से लाभ परन्तु परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। व्यवसाय में कठिन हालात का सामना रहे।

वृष–गुरू का संचार होने से आय के साधनों में वृद्धि, धर्म-कर्म में रूझान एवं धन का खर्च भी होगा। परन्तु ता. 17 से राशिस्वामी शुक्र मीन राशि में संचार करने से अकस्मात् धन लाभ के चांस बनेंगे। सुख साधनों पर धन का खर्च अधिक किन्तु संतान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

मिथुन–राशिस्वामी बुध भाग्यस्थान पर संचार करने से भाग्यवृद्धि तथा उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। ता. 15 से नवीन मित्रों के साथ मेलजोल बढ़ेगा। धर्म-कर्म में रूचि रहेगी परन्तु वृथा मानसिक तनाव, स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं गुप्त चिन्ता बनी रहेगी।

कर्क–शनि की ढैय्या के कारण बनते कामों में विघ्न, वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव एवं व्यवसाय में भी संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। उत्तरार्ध भाग में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। सुख-साधनों पर धन का खर्च अधिक एवं मनोरंजन आदि में रूझान बढ़ेगा।

सिंह–ता. 14 तक राशिस्वामी सूर्य की स्वगृही दृष्टि होने से धन लाभ, दौड़-धूप अधिक परन्तु क्रोध व उत्तेजना से बचें। ता. 14 से राशिस्वामी सूर्य अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य में खराबी एवं पिता से कुछ मतभेद रहेंगे। यद्यपि व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान रहे।

कन्या–मासारम्भ में आय के साधनों में वृद्धि होगी। स्त्री व सन्तान की ओर से शुभ समाचार मिलने के योग हैं। परन्तु शनि साढ़ेसति एवं गुरू की दृष्टि होने से परिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। स्वास्थ्य में खराबी तथा चोटादि का भय रहेगा। श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

तुला–मासारम्भ में स्वभाव में तेजी एवं बनते कामों में विघ्नों का सामना रहेगा। ता. 4 से मंगल की अष्टम दृष्टि रहने से परिश्रम एवं उत्साह से कार्य करने पर लाभ के संयोग बनेंगे। वाहनादि सावधानीपूर्वक चलाना ठीक रहेगा। चोटादि का भय भी रहे। ता. 20 से वृथा भागदौड़ एवं मानसिक तनाव रहे।

वृश्चिक–किसी नये कार्य की योजना बनेगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण बनते कामों में अड़चनें एवं विलम्ब होगा। ता. 24 से व्यवसाय में उन्नति एवं किसी विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। परन्तु धन सम्बन्धी कुछ न कुछ समस्या बनी रहेगी।

धनु–पूर्वार्द्ध भाग में कुछ सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। परन्तु राशिस्वामी गुरू छटे भाव में होने से बनते कामों में विघ्न एवं स्वास्थ्य परेशानी रहे। उत्तरार्ध भाग में अचानक यात्रा के संयोग बनेंगे। परन्तु शत्रु भय और धन का खर्च अधिक होगा।

मकर–गुरू की नीच दृष्टि पड़ रही है, जिससे आय की अपेक्षा खर्च अधिक रहेंगे। भाई-बन्धुओं का सहयोग कम प्राप्त होगा। उत्तरार्ध भाग में मिश्रित प्रभाव होगा। नौकरी में उन्नति एवं आर्थिक हालात बेहतर होंगे। कोई रूका हुआ कार्य

बनेगा। यात्रा के भी योग हैं।

कुम्भ–ता. 14 तक मंगल के साथ सूर्य का संचार होने से स्वास्थ्य परेशानी, मानसिक तनाव, आँखों में कष्ट एवं बनते कामों में विघ्नों का सामना रहेगा। उत्तरार्ध भाग में गत हालात में सुधार परन्तु शनि-राहु के कारण व्यवसाय में उलझन रहेगी।

मीन–शनि की ढैय्या होने से आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 14 से सूर्य-मंगल का संचार होने से अकारण क्रोध, उत्तेजना, शत्रु भय रहेगा परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

भविष्यफल–अप्रैल–सन् 2013 ई.

मेष–मासारम्भ में अत्यधिक संघर्ष के बावजूद निर्वाहयोग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 12 से मंगल मेष राशि में एवं सूर्य भी ता. 13 से उच्चराशिस्थ होने से धन लाभ एवं पदोन्नति के योग बनेंगे। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परन्तु शनि-मंगल व सूर्य-शनि में समसप्तक योग रहने से मानसिक तनाव एवं घरेलू झगड़े रहेंगे।

वृष–मास के पूर्वार्द्ध भाग में कार्य क्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। नवीन कार्य की योजना बनेगी। गत दिनों में किए प्रयासों में सफलता मिलेगी। भाई-बन्धु से सहयोग मिलेगा। विशेष परिश्रम से किसी रुके हुए कार्य में सफलता के योग हैं। वैशाख संक्रान्ति से वैशाख माहात्म्य का पाठ करना तथा उस दिन अनाज, फल, वस्त्रादि का यथाशक्ति दान करना शुभ होगा।

मिथुन–ता. 8 तक बुध भाग्यस्थान पर होने से भाग्योन्नति तथा उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बनेंगे। ता. 9 से 28 अप्रै. के मध्य बुध नीचराशिस्थ होने के कारण मानसिक अस्थिरता एवं तनाव रहेगा। परिवार में घरेलू उलझनें उत्पन्न होंगी। परन्तु कार्य व्यवस्थाय में गुजारे योग्य धन प्राप्त होगा। ता. 28 के पश्चात् धनागमन के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी बढ़ेंगे।

कर्क–इस मास कार्य स्थिति में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। किसी मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। गृह में मंगल कार्य होगा। आशाओं में किंचित सफलता प्राप्त होगी। खर्च अधिक होंगे। परन्तु ता. 12 से मंगल की नीच चतुर्थ दृष्टि रहने से क्रोध, उत्तेजना अधिक, स्वभाव में तेजी एवं चिड़चिड़ापन रहेगा।

सिंह–इस मास मिश्रित फल प्राप्त होंगे। धन लाभ के साथ-साथ खर्च भी बढ़-चढ़ कर होगा। परिवार में व्यर्थ का तनाव व उलझनें रहेंगी। व्यापार अथवा नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु उन अवसरों का उचित लाभ नहीं उठा सकेंगे। वैशाख संक्रान्ति से वैशाख माहात्म्य का स्नान, पाठादि शुरू करें।

कन्या–आय कम और खर्च अधिक होंगे। चिन्ता रहेगी। अत्यधिक कठिनाई से निर्वाह योग्य धन के साधन प्राप्त होंगे। परन्तु पुरुषार्थ द्वारा उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अपने परिश्रम और उद्यम से लाभ प्राप्त करें। संक्रान्ति से वैशाख माहात्म्य पाठ तथा सूर्य उपासना व दानादि करना शुभ होगा।

तुला–ता. 12 तक मंगल की अष्टम दृष्टि होने से उत्साह एवं परिश्रम से हानि, आय में कमी व खर्चों में तेजी होगी। 27 मई से 3 अग. के मध्य बुध मिथुन राशि बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। परन्तु 4 अग. से 4 सितं. के मध्य बुध कर्क राशि में होने खर्चों में वृद्धि होगी। ता. 5 सितं. से बुध उच्च स्थिति में होगा। आय के स्रोतों में कुछ सुधार होगा। 21 अक्तू. से कठिन परिस्थितियों का सामना रहेगा। प्रत्येक बुधवार को श्री विष्णुसहस्रणाम का पाठ करने मीठा प्रसाद बांटना एवं गाय को हरा चारा खिलाना शुभ होगा।

कर्क राशि (Cancer)

हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो

बड़गोचर : इस राशि पर वर्षभर **शनि की ढैय्या** का प्रभाव रहेगा। जिससे आय में कमी, वृथा खर्च तनाव, पारिवारिक उलझनें रहेगी। वर्षारम्भ से 24 जन. तक मंगल की अशुभ दृष्टि रहने से खर्च ज्यादा, मानसिक तनाव, दुर्घटना में चोटादि का भय होगा। 12 अप्रै से 23 मई तक मंगल की नीच दृष्टि से क्रोध व खर्च अधिक होगा। 16 जुलाई से 16 अग. के मध्य सूर्य का संचार होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी होगी। 19 अग. से 4 अक्तू. तक मंगल नीचावस्था में संचार करने से तनाव एवं शनि ढैय्या के कारण मन अशान्त रहेगा। उपाय–हर शनिवार को दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करके शनि मन्दिर में तेल चढ़ाना। पूर्णमाशी का व्रत विधिपूर्वक करना शुभ होगा।

कार्य करने पर धन लाभ एवं उन्नति के योग हैं। परन्तु ता. 13 से इस राशि पर सूर्य की नीच दृष्टि होने से बनते कामों में विघ्न, व्यवसाय में आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य में विकार तथा घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।

वृश्चिक–मासारम्भ में उच्चप्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल एवं निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु ता. 12 से मंगल की इस राशि पर स्वगृही दृष्टि होने से यद्यपि धन लाभ, भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों से लाभ होगा। किन्तु तनाव व उत्तेजना बढ़ेगी। वृथा भागदौड़ भी होगी।

धनु–राशि स्वामी गुरू छटे संचार करने से कुछ सोची योजनाओं को क्रियान्वित रूप देने में विलम्ब होगा। ता. 15 से व्यवसाय में आंशिक सफलता एवं विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। ता. 26, 27 को आर्थिक उलझनें पैदा होंगी परन्तु पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

मकर–इसराशि पर गुरू की नीच दृष्टि होने से व्यवसाय व कारोबार में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय से खर्च अधिक होगा। ता. 13 से वृथा मानसिक तनाव, सिर दर्द, आँखों में कष्ट एवं घरेलू उलझनें रहेंगी। ता. 26 के पश्चात् प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क लाभकारी होंगे।

कुंभ–शनि वक्री अवस्था में रहने से घरेलू हालात में अनिश्चितता बनेगी। आय कम व व्यय अधिक होगा। अत्यन्त कठिन समस्यों का सामना करना पड़े। बनते कार्यों में विघ्न होंगे। आलस्य में वृद्धि होगी। दूरस्थ यात्राएं एवं गुप्त चिन्ता बनी रहेगी।

मीन–मासारम्भ में उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क एवं लाभ के अवसर मिलेंगे। ता. 13 से सूर्य-(शनि-राहु) के मध्य समसप्तक योग होने से पारिवारिक सदस्यों में मतभेद एवं तकरार के हालात बनेंगे। वृथा भागदौड़ एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में भी आशानुकूल लाभ में कमी रहेगी।

भविष्यफल–मई–सन् 2013 ई.

मेष–मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-केतु आदि ग्रहों के योग होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में हालात अस्थिर एवं अनिश्चित रहेंगे। स्वास्थ्य में खराबी, स्वभाव में उग्रता एवं निकट-बन्धुओं से मतभेद उभरेंगे। खर्च अधिक एवं किसी व्यक्ति विशेष से धोखे की संभावना बनी रहेगी। ता. 22 के पश्चात् हालात में सुधार होगा।

वृष–पूर्वार्द्ध भाग में लाभ कम तथा खर्च अधिक होगा। ता. 4 से शुक्र वृष में गुरू के साथ 28 मई तक योग करेगा। जिससे धन लाभ तथा कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। शुभ यात्रा एवं शुभ मंगल कार्यों पर धन खर्च होगा। ता. 29 से मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न एवं शरीर कष्ट होने के योग हैं।

मिथुन–राशिस्वामी बुध ता. 12 तक मेष राशि में केतु युक्त संचार करने से धन लाभ व अकस्मात् उन्नति के चांस बढ़ेंगे। परन्तु बनते कामों में विघ्न, संतान सम्बन्धी चिन्ता एवं स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में बुध द्वादश भाव में होने से अचानक यात्रा, खर्च में वृद्धि एवं स्थानपरिवर्तन भी होने के योग हैं।

कर्क–ता. 23 तक इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि पड़ने से व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ तथा आय में कमी होगी। शत्रु हानि पहुँचाने के प्रयास करेंगे।

खर्च भी अधिक होंगे। परन्तु ता. 24 से हालात में विशेष परिवर्तन होंगे एवं शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। धर्म-कर्म में रूझान रहेगा।

सिंह–ता. 14 तक राशिस्वामी सूर्य उच्चराशिगत संचार करने से देश-विदेश के लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। विदेश जाने की योजना भी बनेगी। ता. 23 से भाग्येश मंगल की विशेष दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। परिवार में खुशी के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु खर्च ज्यादा होंगे।

कन्या–मासारम्भ में बुध-केतु युक्त अष्टम भाव में होने से बनते कामों में विघ्न एवं धन हानि की संभावना बनी रहेगी। ता. 13 से 27 मई के मध्य बुध-गुरू भाग्यस्थान पर होने से बिगड़े कामों में सुधार एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। ता. 27 के पश्चात् व्यवसायिक क्षेत्रों में हालात कुछ अस्थिर रहेंगे।

तुला–शनि-राहु का संचार एवं 13 मई तक शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने से मिश्रित प्रभाव होगा। आय में वृद्धि के साथ खर्च अधिक होंगे। ता. 4 से 28 के मध्य शुक्र अष्टम भाव में होने से कभी-कभी धन लाभ, शुभ यात्रा, प्रिय-बन्धुओं से मिलाप एवं सुख-साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु वृथा मानसिक तनाव एवं स्वास्थ्य ढीला रहे।

वृश्चिक–मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों से लाभ, उच्चाधिकारियों से मेल-जोल एवं सम्पर्क बढ़ेंगे। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 24 से बनते कामों में विघ्न, क्रोध अधिक एवं मानसिक तनाव बना रहेगा। चोटादि का भय रहेगा।

धनु–राशिस्वामी गुरू छटे भाव में होने से स्वास्थ्य कुछ ढीला, पेटविकार एवं लीवर में खराबी के योग हैं। व्यवसाय में भी उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों का सामना रहेगा। ता. 23 से मंगल की दृष्टि रहने से उत्साह में वृद्धि परन्तु क्रोध अधिक, धन का खर्च अधिक एवं वृथा भागदौड़ बनी रहेगी। चोटादि का भय रहे।

मकर–गुरू की नीच दृष्टि होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में परिस्थितियां संघर्षपूर्ण रहेंगी। सांझेदारी के कार्यों में हानि एवं गुप्तचिन्ता रहेगी। ता. 20 के पश्चात् आय व सुख साधनों में वृद्धि तथा विदेश कार्यों में प्रगति होगी। धर्म-कर्म के कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा।

कुंभ–राशि स्वामी शनि वक्री अवस्था में रहने से जल्दबाजी में लिए गए निर्णय हानिकारक हो सकते हैं। किसी विशेष से धोखे की संभावना बनी रहेगी। परन्तु उत्तरार्ध भाग में कुछ बिगड़े कामों में कामयाबी, धर्मकर्म में रूझान रहेगा। किसी महत्त्वपूर्ण कार्य में कामयाबी के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।

मीन–मासारम्भ में परिवार में विभिन्न समस्याओं का सामना रहेगा। वृथा भागदौड़ एवं धन लाभ में कमी रहेगी। उत्तरार्ध भाग में कुछ बिगड़े कामों में सुधार, परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। नए लोगों के साथ सम्पर्क और विदेश सम्बन्धी कार्यों में रूझान बढ़ेगा।

भविष्यफल–जून–सन् 2013 ई.

मेष–इस मास मिश्रित फल प्राप्त होंगे। पराक्रम व अपने उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि होगी। उच्चप्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्पर्क बनेंगे। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु केतु का संचार इस राशि पर होने से मानसिक तनाव एवं अवांछित व्यक्तियों के कारण बनते कामों में परेशानी हो।

सिंह राशि (Leo)

म, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 13 जन. तक राशिस्वामी सूर्य पर शनि की दृष्टि रहेगी। जिससे बन्धुओं के साथ तनाव व मतभेद होंगे। वर्षारम्भ से 25 जन. तक मंगल की दृष्टि होने से पुरूषार्थ में वृद्धि होगी। परन्तु 14 जन. से 12 फर. तक सूर्य षष्ठस्थ होने से बनते कामों में विघ्न होंगे। 13 अप्रै. से 13 मई तक सूर्य उच्च राशि में संचार से भाग्योन्नति बन सकती है। 16 अग. से 16 सितं. तक सूर्य सिंह राशि में संचार करने से लाभ और प्रगति के अवसर मिलेंगे। 5 अक्तू. से 25 नवं. तक भाग्येश मंगल का संचार करने से उत्साह में वृद्धि तथा 17 अक्तू. से सूर्य नीच में होने से शरीर कष्ट हो। प्रतिदिन श्री आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना एवं रविवार का व्रत रखना शुभ होगा।

कन्या राशि (Virgo)

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

ग्रहगोचर : शनि साढ़ेसति का प्रभाव इस राशि पर वर्षभर रहेगा। परन्तु वर्षारम्भ से 30 मई तक गुरु की दृष्टि होने से कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आमदन के

वृष–मासारम्भ में विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बने। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। परन्तु उत्तरार्ध में पारिवारिक परेशानी, शरीर कष्ट, वृथा भागदौड़, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

मिथुन–शुक्र बुध-गुरु का योग ता. 22 तक बना रहने से मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर धन का खर्च होगा। परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे, परन्तु बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं गुप्त चिन्ता रहेगी। ता. 26 से बुध वक्री होने के कारण क्रयविक्रय के कार्यों में परेशानी के योग हैं।

कर्क–इस मास आकस्मिक धन लाभ होगा। कार्य व्यवसाय में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। भूमि व वाहनादि का लाभ होगा। शनि की ढैय्या के कारण संतान सम्बन्धी चिंता रहेगी। ता. 22 से शुक्र कर्क राशि संचार करने से शुभ यात्रा, शुभ कार्यों पर अनावश्यक खर्च भी होंगे।

सिंह–मासारम्भ से गुरू की तृतीयस्थ शनि-राहु पर दृष्टि होने से नए-पुराने मित्रों से नए सम्बन्ध बनेंगे। कुछ बिगड़े कामों में सुधार एवं अकस्मात् धन लाभ के योग हैं। परन्तु मासान्त में घरेलू उलझनें एवं परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। धन का खर्च अधिक एवं मानसिक तनाव रहेगा।

कन्या–गत किए गए प्रयासों में सफलता और श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क लाभकारी होगा। भूमि सुख एवं वाहन प्राप्ति भी सम्भव होगी, परन्तु नौकरी में अफसरों से तनाव हो सकता है। शनि की साढ़ेसति एवं बुध दशमस्थ होने से कुछ बिगड़े कामों में विघ्न, वृथा भागदौड़ एवं तनाव रहेगा। किन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

तुला–गुरू की पंचम दृष्टि रहने से गत परिस्थितियों में धीरे-धीरे कुछ सुधार होगा। परन्तु शनि-राहु का संचार होने मिश्रित प्रभाव होगा। उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क एवं आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 27 से क्रोध व उत्तेजना से बचाव रखें। चोटादि का भय रहेगा। सावधानी बरतें।

वृश्चिक–राशिस्वामी मंगल का स्वगृही दृष्टि होने से निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। परन्तु अकस्मात् खर्च की अधिकता, धन हानि एवं चोटादि का भय रहेगा। ता. 25-26 को लेन-देन करते समय सावधानी बरतें। धोखे की संभावना बनी रहेगी।

धनु–गुरू की स्वगृही दृष्टि होने से आय के साधनों में वृद्धि होगी। खर्च भी बढ़-चढ़ कर होंगे। धर्म-कर्म में रूचि तथा मानप्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परन्तु ता. 22 से क्रोध अधिक, परिवार में मनमुटाव, स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं पिता से कुछ मतभेद भी रहेगें। अपनी इच्छा कार्य की प्रवृत्ति बनेगी।

मकर–मास के पूर्वार्द्ध भाग में धन एवं सुख की प्राप्ति होगी। वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। आमोद-प्रमोद आदि साधनों में विस्तार एवं वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में भी रूझान रहेगा। उत्तरार्द्ध में पारिवारिक उलझनों के कारण मन संतप्त रहे। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण तनाव रहे। शनिवार का व्रत करना शुभ होगा।

कुंभ–आशाओं में किंचित सफलता प्राप्त होगी। शनि-राहु की स्थिति भाग्यस्थान पर होने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। नवीन कार्य को कार्य रूप देने के प्रयास लाभकारी रहेगा। मासान्त में परिश्रम करने से

कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। परन्तु धन का खर्च अधिक रहेगा। श्री सूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

मीन–मासारम्भ में धन का खर्च अधिक, उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय एवं विदेशी कार्यों में कुछ प्रगति होगी। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण मन अशांत एवं असन्तुष्ट रहेगा। जायदाद सम्बन्धी कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है।

भविष्यफल–जुलाई–सन् 2013 ई.

मेष–इस मास मिश्रित प्रभाव होगा। नवीन कार्य को करने की योजना बनेगी। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। व्यस्तताएं बढ़ेंगी। किसी विदेशी सम्बन्धी से मुलाकात होगी। परन्तु वृथा-भागदौड़, धन लाभ में विघ्न, स्वास्थ्य में खराबी एवं परिवार सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

वृष–मासारम्भ में धन लाभ एवं विलासादि कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। गृह में शुभ मंगल कार्य भी होने के योग हैं। परन्तु ता. 17 से शुक्र सिंह राशिगत संचार करने से स्वास्थ्य में खराबी, घरेलू उलझनें वृथा वाद-विवाद में परेशानी रहेगी। समय अनुकूल नहीं है। सावधानीपूर्वक क्रयविक्रय करें।

मिथुन–ता. 4 से मंगल भी इस राशि में आकर बुध-गुरु-सूर्य के साथ मेल करेगा। जिससे मिश्रित प्रभाव होगा। उलझनों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधनों में बढ़ौत्तरी होगी। परन्तु व्यवसायिक व्यस्तताओं के कारण पर्याप्त लाभ नहीं होगा। यद्यपि परिवारिक सहयोग मिलेगा। परन्तु स्वभाव में तेजी एवं मानसिक तनाव रहे।

कर्क–शनि की ढैय्या के कारण शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं। लाभ कम व खर्च अधिक होगा। विभिन्न उलझनों का सामना रहेगा। ता. 16 से सूर्य का संचार इसी राशि पर होने से निकट बन्धुओं से मनमुटाव एवं विरोध बढ़ेंगे। भगवान् सूर्य का पूजन करना शुभ होगा।

सिंह–इस मास में धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी। राज दरबार में जाने से मान-सम्मान बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी में उन्नति के साधन बनेंगे। घर की सुख शान्ति में मित्रों द्वारा विघ्न पड़ेगा। थोड़ी सी उत्तेजना से काम बिगड़ सकता है। मासान्त में किसी बिगड़े काम में प्रतिष्ठित व्यक्ति के सहयोग से सुधार होगा।

कन्या–राशिस्वामी बुध स्वराशिगत होने से दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। परन्तु शनि साढ़ेसाती के कारण तनाव रहेगा। भलाई करने पर भी बुराई मिलेगी, आर्थिक परेशानियों के कारण चिन्ताएं होंगी।

तुला–शनि साढ़ेसति एवं शनि-राहु का संचार इस पर होने से अत्यधिक परिश्रम के बाद धन लाभ और सुख साधनों में वृद्धि होगी। व्यर्थ की भाग-दौड़ और धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। वाद-विवाद से बचें। परन्तु ता. 24 के पश्चात् विदेश सम्बन्धी कार्यों में अनेक उतार-चढ़ाव का सामना रहे।

वृश्चिक–ता. 4 जुला. से राशिस्वामी मंगल अष्टमस्थ संचार करने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें। बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ एवं अड़चनें रहेंगी और उत्तेजना भी बढ़ेगी। शनि साढ़ेसति के कारण व्यवसायिक क्षेत्रों में संघर्षमयी

साधन बनेंगे। ता. 9 अप्रै. से 27 अप्रै. तक बुध नीच राशि में होगा, जिससे स्वास्थ्य की हानि, आय में कमी एवं खर्चों में वृद्धि होगी। 28 अप्रै. से 13 मई तक बुध अष्टम भाव में केतु युक्त होने से बनते कामों में अड़चने तथा धन हानि के संकेत हैं। 5 सितं. से 24 सितं. के मध्य राशि स्वामी बुध कन्या (स्वराशि) में रहने से शुभ फल प्रकट होंगे। हर बुधवार का व्रत, गोसेवा तथा हरिहर स्तोत्र का पाठ शुभ होगा। बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा।

तुला राशि (Libra)

रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते
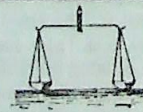
ग्रहगोचर : वर्षभर शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। यद्यपि शनि इस राशि पर उच्च होकर संचार करेगा, परन्तु राहु युक्त होने से भाग्योन्नति, आय-वृद्धि में विघ्न-बाधाएं भी रहेंगी। ता. 13 अप्रै. से 14 मई के मध्य इस राशि पर सूर्य की नीच दृष्टि रहेगी। आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार होंगे। ता. 31 मई से तुला राशि पर गुरु की पंचम दृष्टि रहने से परिस्थितियों में धीरे-धीरे कुछ सुधार होगा। ता. 11 अग. से 5 सितं. तक शुक्र कन्या (नीच) राशि में संचार करने से आय कम व खर्च अधिक होंगे। ता. 5 सितं. से 2 अक्तू. तक शुक्र तुला (स्वराशि) में होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, धन लाभ व उन्नति के मार्ग बनेंगे। परन्तु 19 अग. से 4 अक्तू. के मध्य मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध से बचें। खर्च अधिक होंगे। शुक्रवार के व्रत रखना तथा श्वेत मूंगा पहनना शुभ होगा।

परिस्थितियां रहेंगी। आय से खर्च अधिक एवं वृथा मानसिक तनाव रहेगा।

धनु–इस राशि पर मंगल की दृष्टि पड़ रही है। निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे। संसारिक कार्यों में प्रगति होगी। गृह में खुशी का वातावरण बनेगा। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। परन्तु ता. 26 से वृथा मानसिक तनाव एवं परिवारिक परेशानी रहे।

मकर–पूर्वार्द्ध भाग में धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं संतान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। ता. 20 के पश्चात् व्यवसाय में बहुत कठिनाई से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। वृथा यात्राएं एवं धन का खर्च अधिक होगा।

कुंभ–इस मास में आर्थिक हालात आगे से बेहतर होंगे। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएँ बनी रहेंगी। समाज में मान-इज्जत बढ़ेगी। विदेश से सम्बन्धित कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होने की सम्भावनाएँ हैं। मासान्त में शुभ समाचार और अप्रत्याशित लाभ भी होंगे।

मीन–शनि की ढैय्या होने से व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम और व्यय अधिक रहेगा। ता. 10 के पश्चात् परिश्रम करने पर भी धन प्राप्ति आशा अनुरूप नहीं होगी। परिवार में तनाव व वैचारिक मतभेद होंगे। उत्तरार्ध भाग में भूमि-सम्बन्धी क्रय-विक्रय की योजना बनेगी। परन्तु इस कार्य में कुछ समस्या भी उत्पन्न हो सकती है।

भविष्यफल–अगस्त–सन् 2013 ई.

मेष–इस मास मिश्रित प्रभाव होंगे। मासारम्भ में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। स्त्री व परिवार से सुखद समाचार मिलेगा। विदेश सम्बन्धी कार्य किसी विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से बन जाएंगे। पुरुषार्थ करने पर लाभ होगा। परन्तु 18 अग. से मंगल नीचराशिगत होने से घरेलू सुख में कमी एवं आवास सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी।

वृष–कुछ सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी परन्तु धन का खर्च विलास-मनोरंजन आदि कार्य पर अधिक होगा। परन्तु ता. 11 से शुक्र नीचराशिगत होने से सन्तान, परिवारिक उलझनें एवं सेहत सम्बन्धी परेशानी बढ़ेंगी। आय कम और खर्च अधिक रहेंगे।

मिथुन–इस मास मिश्रित फल होगा। धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी। ता. 4 से बुध कर्क राशिगत संचार करने से शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व चमड़ी सम्बन्धी रोग होने की संभावना बनी रहेगी। ता. 11 से शुक्र भी कन्या राशि में संचार करने से विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मासान्त में आय कम और खर्च अधिक रहेंगे।

कर्क–कार्य व्यवसाय में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध में अड़चनों के कारण परेशानियां बढ़ेंगी। ता. 18 से मंगल इस राशि पर नीचावस्था में संचार करने से तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। क्रोध भी ज्यादा आएगा।

सिंह–इस मास मिला-जुला फल प्राप्त होगा। व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। विलासादि पदार्थों पर धन का व्यय अधिक होंगे। ता. 16 से

सूर्य का संचार इसी राशि पर होने से व्यवसाय में उन्नति एवं विघ्नों के बावजूद बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि परन्तु क्रोध से बचें।

कन्या–इस मास मिश्रित प्रभाव होगा। आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु शनि की साढ़ेसति के कारण शुभ कार्यों में अड़चनें रहेंगी। उत्साह की भी कमी रहेगी। ता. 18 के पश्चात् घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। धन का अपव्यय भी होगा।

तुला–मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु ता. 11 से राशिस्वामी शुक्र नीच राशिगत संचार करने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। शनि साढ़ेसति के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

वृश्चिक–ता. 18 तक मंगल अष्टम भाव में संचार करने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें। बनते कामों में विघ्न-बाधाएं और उत्तेजना भी बढ़ेगी। ता. 18 से मंगल नीचराशिगत कर्क में संचार करने से मानसिक तनाव, वृथा खर्च, घरेलू उलझनें एवं व्यवसायिक परेशानियों का सामना रहेगा।

धनु–ता. 19 तक मंगल की दृष्टि रहने से उत्साह में वृद्धि एवं भाग्यवश कोई बिगड़ा काम बनेगा। परन्तु क्रोध अधिक एवं खर्च अधिक होगा। ता. 19 से मंगल अष्टम स्थान में होने से स्वास्थ्य ढीला, घरेलू चिन्ता एवं सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। वाहनादि सावधानी से चलाना चाहिए।

मकर–इस मास मंगल की दृष्टि एवं सूर्य की सप्तम दृष्टि ता. 16 तक रहने से मिश्रित प्रभाव होगा। पूर्वार्द्ध में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। ता. 17 से रुके हुए कार्यों में सुधार, आय कम-खर्च अधिक होगा। ता. 20 से मानप्रतिष्ठा में वृद्धि एवं विदेशी सभ्यता की ओर रूझान रहेगा।

कुंभ–गुरू की शुभ दृष्टि होने से कुछ सोची योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। कुछ रुके हुए कार्यों में सिद्धि प्राप्त होगी। घर में कोई मंगल कार्य होगा व किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्बन्ध बनेगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु उत्तरार्ध भाग में परिवारिक परेशानियां रहें।

मीन–राशिस्वामी गुरु चतुर्थ भाव में होने के कारण शुभ कार्यों पर व्यय होगा। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। नवीन मित्रों के साथ मेल-जोल बढ़ेगा। वाहनादि सुख-सुविधाओं पर खर्च अधिक होंगे। शिव चालीसा का पाठ करना शुभ होगा। उत्तरार्ध भाग में मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ता रहेगी।

वृश्चिक राशि (Scorpio)

तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

ग्रहगोचर : वर्षभर शनि साढ़ेसति का प्रभाव होने से संघर्षमयी परिस्थितियां रहेंगी, परन्तु वर्षारम्भ से 24 जन. तक मंगल उच्च राशिस्थ तृतीय स्थान में होगा, जिससे पराक्रम में वृद्धि सम्पर्क बढ़ेंगे। ता. 30 मई तक गुरु की शुभ दृष्टि तक साढ़ेसति का विशेष अशुभ प्रभाव नहीं होगा। ता. 12 अप्रै. से 3 जुला. तक मंगल की स्वगृही दृष्टि रहेगी। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 18 अग. से 4 अक्तू. तक मंगल नीचराशि (कर्क) में संचार करने आर्थिक परेशानियों का सामना रहेगा। ता. 5 अक्तू. से 25 नवं. तक मंगल की दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। परन्तु खर्च भी बढ़ेंगे। श्रीहनुमान उपासना व मंगलवार का व्रत करना शुभ होगा।

धनु राशि (Sagittarius)

ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे

ग्रहगोचर : वर्षभर शनि की तीसरी दृष्टि होने से स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि की चिन्ता भी रहेगी। ता. 30 मई तक राशि स्वामी

भविष्यफल–सितम्बर–सन् 2013 ई.

मेष–मंगल नीचराशिगत संचार करने से घरेलू सुखों में कमी होगी। संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची होगी। विलासादि कार्यों पर व्यय होगा। कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न होंगी। उत्तरार्ध भाग में चोटादि का भय भी रहेगा। सावधानी बरतें।

वृष–ता. 6 तक राशिस्वामी शुक्र नीच (कन्या) राशिस्थ होने से संतान एवं परिवार सम्बन्धी चिन्ता रहे। घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। ता. 7 से शुक्र-शनि-राहु का योग रहने से विघ्नों के पश्चात् कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। परन्तु वृथा मानसिक तनाव, परिवारिक परेशानी एवं चोटादि का भय रहे।

मिथुन–ता. 5 से 24 के मध्य राशिस्वामी बुध स्वराशिगत होने से अचानक धन लाभ के योग हैं। उच्चप्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल रहेगा। दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। धर्म-कर्म में विशेष रुचि होगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो, परिवार में शुभ कार्यों का व्यय होगा। मासान्त में व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बनें। आकस्मिक खर्चों में विशेष वृद्धि होगी।

कर्क–इस मास परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कारोबार में कई तरह के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेंगी। आकस्मिक खर्च होने के योग हैं। मासान्त में आर्थिक क्षेत्र में उन्नति के योग हैं। किसी उच्चाधिकारी के साथ सम्पर्क रहेंगे।

सिंह–मासारम्भ में सिंह राशि में सूर्य का संचार होने के कारण मिश्रित प्रभाव रहेंगे। नौकरी व व्यापार में यद्यपि उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु पारिवारिक एवं निजी उलझनों के कारण लाभ में कमी रहेगी। ता. 17 के पश्चात् कुछ बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। वृथा मानसिक तनाव रहेगा।

कन्या–ता. 5 से 25 सितं. के मध्य राशिस्वामी बुध स्वराशिगत होने से शुभ फल मिलेंगे। किसी नये कार्य की योजना बनेगी। आय के साधनों का विस्तार होगा। विदेश यात्रा की योजना बनेगी परन्तु शनि के कारण संघर्ष बना रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ और परिवारिक सम्पत्ति के लिए मतभेद उभरेंगे।

तुला–शनि साढ़ेसति के प्रभाव से बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होगी। मन उदासीन रहेगा। ता. 20-22 को कुछ विवादास्पद मामलें मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। मंगल की चतुर्थ दृष्टि होने से गुस्सा ज्यादा एवं किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगी। धन का खर्च अधिक होगा। श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक–मंगल नीचराशिगत संचार करने तथा शनि-साढ़ेसति के प्रभाव के कारण बनते कामों में विघ्न और विलम्ब होगा। नौकरी में किसी से धोखा मिल सकता है। सावधानी बरतें। खर्च भी अधिकता से मन परेशान और अशांत रहेगा। शरीर कष्ट और चोटादि का भय रहेगा। श्री दुर्गा कवच का पाठ करना शुभ रहेगा।

धनु–संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। स्त्री-सुख एवं परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा। मासान्त में बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। क्रोध अधिक एवं परिवारिक परेशानी रहे।

मकर–इस राशि पर मंगल की दृष्टि पड़ने से मान-प्रतिष्ठा एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु ता. 18 से वृथा भागदौड़ एवं धन का खर्च अधिक होगा। भाग्यवश कुछ बनते कामों में विघ्नों का सामना रहेगा।

कुंभ–ता. 16 सितं. तक क्रोध अधिक, बनते कामों में विघ्न, आय से खर्च अधिक होगा। घरेलू उलझनों के कारण तथा आर्थिक परेशानियों से मन चिन्तित रहेगा। परन्तु राशिस्वामी शनि भाग्यस्थान पर होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मीन–शनि की ढैय्या के प्रभाव से व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम और व्यय अधिक होगा। उत्तरार्ध भाग में किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगी। मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ता रहेगी। परन्तु परिवार में बुजुर्गों के सहयोग से किसी विशेष कार्य में सुधार होगा।

भविष्यफल–अक्तूबर–सन् 2013 ई.

मेष–मासारम्भ में किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु वृथा मानसिक तनाव एवं परेशानियाँ रहेंगी। घरेलू एवं व्यवसायिक क्षेत्र में विघ्न बाधाओं व अड़चनों के बावजूद गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्च अधिक रहेंगे। इस राशि की स्त्रियों को अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होगी।

वृष–पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त परिश्रम के बाद भी गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। स्वास्थ्य में विकार तथा कारोबारी उलझनों के कारण परेशानियां बढ़ेंगी। किसी निकटस्थ सहयोगी द्वारा धोखा मिलने के संकेत हैं। उत्तरार्द्ध भाग में अकस्मात् धन लाभ के चांस बनेंगे।

मिथुन–इस मास मिश्रित प्रभाव होगा। गत किए गए प्रयासों से किसी विशेष कार्य में सफलता मिले। विदेश सम्बन्धी कार्यों में विघ्नों का सामना रहेगा। ता. 17 के पश्चात् किसी नए कार्य में विनियोग का लाभ होने के योग हैं। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

कर्क–कार्य व्यवसाय में उन्नति व प्रगति के कुछ मार्ग प्रशस्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। कुछ बिगड़े कार्यों में विशिष्ट व्यक्तियों में सम्पर्क करने से सुधार होगा। परिवार में भाई-बन्धु का सहयोग कम प्राप्त होगा। मित्र वर्ग हानि पहुंचाने की चेष्टा करेगा। किसी पर भी भरोसा करना हानिकारक होगा।

सिंह–मासारम्भ में उत्साह में वृद्धि परन्तु व्यर्थ की भागदौड़ रहेगा। ता. 17 से राशिस्वामी सूर्य नीच राशि (तुला) में है। जिसके फलस्वरूप व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 26 के बाद भूमि, मकान एवं वाहन सम्बन्धी परेशानियां पैदा हों। परिवार में व्यर्थ का तनाव और खर्च की अधिकता रहेगी।

कन्या–व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से खर्च अधिक होगा। शनि साढ़ेसति के कारण मन अशान्त, असन्तुष्ट, स्वास्थ्य ढीला एवं कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहेगा।

तुला–शनि-राहु का संचार होने से बनते कामों में विघ्न और आशानुकूल लाभ में कमी रहे। परिवार एवं निजी उलझनों के कारण मन अशान्त रहे। ता. 17 से स्वास्थ्य ढीला, आँखों में कष्ट की संभावना बनी रहेगी।

वृश्चिक–किसी नवीन कार्य क्षेत्र में रूझान बढ़ेगा। परन्तु ता. 5 अक्तू. से मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से व्यवसायिक क्षेत्रों में विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। भाई-बन्धु से मनमुटाव और धन का अपव्यय होगा। वृथा भागदौड़ तथा मन अशान्त रहे।

धनु–क्रोध अधिक एवं गुप्त चिन्ता रहेगी। परन्तु गुरु की स्वगृही दृष्टि होने से कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। धर्म-कर्म में रूझान रहेगा। परन्तु ता. 17 से वृथा भागदौड़, परिवारिक परेशानी एवं आय के साधनों में कुछ कमी रहेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

मकर–मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। पदोन्नति व मान-सम्मान में वृद्धि होगी। मासान्त में दौड़-धूप तथा फिजूलखर्ची बढ़ेगी। राशि स्वामी शनि-राहु युक्त होने से मानसिक तनाव एवं परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा।

कुंभ–व्यवसाय व कारोबार में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय से व्यय अधिक होगा। स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न हो। प्रयास करने पर धन लाभ के अवसर पहले से बेहतर होंगे। ता. 17 से सूर्य-शनि-राहु का योग भाग्य स्थान पर होने से व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव एवं उथल-पुथल के आसार बनेंगे।

मीन–पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। मित्रों की सहायता से किसी कठिन कार्य में सिद्धि होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। परन्तु मासान्त में परिवार में धर्म-कर्म के कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। खुशी के अवसर भी मिलेंगे।

गुरु षष्ठस्थ संचार करने से सोची हुई योजनाओं में विलम्ब होगा। ता. 31 मई के बाद वर्षान्त तक गुरु की स्वगृही दृष्टि होने से रुके हुए कार्यों में सफलता होगी। ता. 7 नवं. से वर्षान्त तक राशि स्वामी गुरु वक्री अवस्था में संचार करेगा। गुरुवार का व्रत रखना धर्म ग्रन्थ का दान करना।

मकर राशि (Capricorn)

भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी

ग्रहगोचर : राशिस्वामी शनि वर्षभर उच्च राशिस्थ दशम भाव में राहु युक्त होकर संचार करेगा। फिजूलखर्ची, मानसिक चिन्ता रहेगी। वर्षारम्भ से 25 जन. तक मंगल उच्चस्थ संचार करने से धन लाभ होने के अवसर भी प्राप्त होंगे। ता. **30 मई तक गुरु की दृष्टि भी होने से शुभ** कार्यों पर खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 16 जुला. से 16 अग. के मध्य सूर्य की दृष्टि होने से स्वास्थ्य में विकार, खर्च भी बढ़ेंगे। ता. 4 जुला. से 5 अक्तू. तक मंगल की दृष्टि पड़ने से मान-प्रतिष्ठा तथा आय के साधनों में वृद्धि होगी। उपाय–शनिवार को सरसों के तेल में अपना चेहरा देखकर शनि मन्त्र पढ़ते हुए शनि मन्दिर में चढ़ाना। हर सोम और शनिवार को भगवान् शिव के मन्दिर में कच्ची लस्सी, बिल्वपत्र, "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र पढ़कर चढ़ाना शुभ होगा।

भविष्यफल–नवम्बर–सन् 2013 ई.

मेष–मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य की दृष्टि पड़ रही है। भागदौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिजूल खर्ची बढ़ेगी। दौड़धूप अधिक रहेगी। किसी निकट-बन्धु से मनमुटाव पैदा हो। ता. 26 से मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

वृष–पूर्वार्द्ध भाग में कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। परन्तु खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। शरीर कुछ अस्वस्थ रहे। उत्तरार्ध में स्थान परिवर्तन होने के योग हैं। सिर दर्द एवं आँखों में कष्ट की संभावना बनेगी।

मिथुन–इस मास विघ्न-बाधाओं के बावजूद प्रयोजन सिद्धि हो जाएगी। लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कुछ अप्रत्याशित सफलताएं प्राप्त होंगी। शत्रु प्रबल होंगे। ता. 28 से अकस्मात् धन-लाभ, बन्धु-मिलाप, स्त्री-सुख आदि शुभ समाचार मिलेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। नवीन कार्य की योजना बनेगी। श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ रहेगा।

कर्क–इस मास में रुकावटों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधन बढ़ेंगे। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। माता-पिता का सहयोग विशेष लाभकारी होगा। धार्मिक कार्य करने की इच्छा जागृत होगी। ता. 22 विदेशी मित्रों से धन लाभ होगा। परन्तु गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें। श्रीदुर्गा कवच का नित्य पाठ करना कल्याणकारी रहेगा।

सिंह–मासारम्भ में अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर में विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है। उत्तरार्द्ध भाग में किसी नए मित्र के साथ सम्पर्क पैदा होंगे। विद्या अथवा पूर्व में किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी।

कन्या–मासारम्भ में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण परिस्थितियां संघर्षपूर्ण रहेंगी। आराम कम व दौड़धूप अधिक रहेगी। भूमि व वाहन आदि पर खर्च होगा। ता. 15 से 17 को वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें। चोटादि का भय होगा। स्वास्थ्य में विकार एवं बनते कार्यों में विघ्न तथा खर्च अधिक रहेगा।

तुला–मासारम्भ में सूर्य-शनि-राहु का संचार इस राशि पर होने से बनते कामों में विघ्न और विलम्ब होगा। नौकरी में किसी से धोखा मिल सकता है। सावधानी बरतें। खर्च की अधिकता से मन परेशान और अशांत रहेगा। शरीर कष्ट और चोटादि का भय रहेगा। आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

वृश्चिक–शनि साढ़ेसति एवं ता. 26 नवं. तक मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से इस मास के पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। सवारी का सुख मिले। उत्तरार्द्ध भाग में घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान रहे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हों। निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति हो, खर्च की अधिकता रहे। श्रीहनुमान कवच का पाठ करना शुभ होगा।

धनु–मासारम्भ में गुरू की स्वगृही दृष्टि होने से मिश्रित प्रभाव रहेगा। धर्म-कर्म में रूझान रहेगा। परन्तु ता. 7 से राशिस्वामी गुरू वक्री अवस्था में संचार करने से आर्थिक दृष्टि से विशेष शुभ नहीं होगा। आय से खर्च अधिक एवं वृथा भागदौड़ रहे। बुजुर्गों से मतभेद रहेंगे।

मकर–कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। कोई रूका हुआ कार्य बनने के योग हैं। विदेश सम्बन्धी कार्यों में कुछ विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 20-21 को नए-नए सम्पर्क एवं गठजोड़ भाग्यवृद्धि में सहायक होंगे। परन्तु शनि-राहु के कारण मानसिक तनाव व खर्चों की अधिकता रहेगी।

कुंभ–ता. 16 नवं. तक भाग्यस्थान पर सूर्य-शनि-राहु का योग होने से इस समयावधि में विशेष उथल-पुथल एवं उतार-चढ़ाव का सामना रहेगा। परिवार में मतभेद उभरेंगे। परन्तु ता. 17 से उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क, धर्म-कर्म में रूझान एवं धन का खर्च अधिक होगा। श्रीआदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

मीन–शनि की ढैय्या के प्रभाव से बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होगी। मन उदासीन रहेगा। ता. 26-27 को कुछ विवादास्पद मामलें मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगी। धन खर्च अधिक, श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ रहेगा।

भविष्यफल–दिसम्बर–सन् 2013 ई.

मेष–राशिस्वामी मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से किसी नए कार्य की योजना बनेगी। व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु ता. 17 से दाम्पत्य जीवन में मतभेद होंगे। परेशानी और उलझनें उत्पन्न होंगी। विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक होगा।

वृष–दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। धर्म-कर्म में विशेष रुचि होगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो, परिवार में शुभ कार्यों पर व्यय होगा। मासान्त में व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बनें। परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें। आकस्मिक खर्चों में विशेष वृद्धि होगी।

मिथुन–मासारम्भ से ता. 20 तक बुध वृश्चिक राशिगत संचार करने से आय में कमी, धन का खर्च अकस्मात् बढ़ेगा। परिवार का सहयोग मिलेगा। परन्तु ता. 20 से बुध धनुराशिगत होने से कठिन व विपरीत परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहे।

कर्क–शनि की ढैय्या एवं चतुर्थस्थ शनि-राहु के प्रभाव से इस मास में

परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कारोबार में कई तरह के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेंगी। आकस्मिक खर्च होने के योग हैं। मासान्त में आर्थिक क्षेत्र में लाभ के योग हैं। किसी उच्चाधिकारी के साथ सम्पर्क रहेंगे।

सिंह–इस मास मिश्रित फल होंगे। व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। आर्थिक उलझनों के कारण तनाव व चिन्ताएँ रहेंगी। ता. 26 के बाद स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी रहेगी।

कन्या–शनि साढ़ेसति के प्रभाव से कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहे। शरीर अस्वस्थ रहे। ता. 20 के बाद दौड़-धूप एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। आय के साधनों में विघ्न-बाधाएं रहेंगी।

तुला–शनि-राहु का संचार एवं शनि साढ़ेसति होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। आय कम व खर्च अधिक हो। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान रहे। शरीर कष्ट हो। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे। अत्यन्त संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य ही धन की प्राप्ति के साधन बन पाएंगे। श्री लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक–शनि की साढ़ेसति होने से वृथा मानसिक तनाव एवं बनते कामों में विघ्नों का सामना रहेगा। परन्तु राशि स्वामी मंगल लाभ स्थान पर होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में लाभ के अवसर मिलेंगे। किन्तु परिवार में कुछ निजी समस्याओं का सामना रहेगा।

धनु–राशि स्वामी गुरू वक्री अवस्था में होने से धन लाभ में कुछ कमी रहेगी। परन्तु ता. 15 से हालात में कुछ परिवर्तन एवं किसी विशेष व्यक्ति के सम्पर्क साधनों से बिगड़े कामों सुधार होगा। मासान्त में परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा।

मकर–मास के पूर्वार्द्ध भाग में धन एवं सुख की प्राप्ति होगी। वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। आमोद-प्रमोद आदि साधनों में विस्तार एवं वृद्धि होगी। धर्म कर्म में भी रूझान रहेगा। उत्तरार्द्ध में परिवारिक उलझनों के कारण मन संतप्त रहे। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण तनाव रहे। शनिवार का व्रत करना शुभ होगा।

कुंभ–आशाओं में किंचित सफलता प्राप्त होगी। शनि-राहु की स्थिति भाग्यस्थान पर होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। नवीन कार्य को कार्य रूप देने का प्रयास लाभकारी रहेगा। मासान्त में कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। परन्तु धन का खर्च अधिक रहेगा। श्री सूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

मीन–मासारम्भ में गुरू वक्री होने से धन का खर्च अधिक, उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय एवं विदेशी कार्यों में कुछ प्रगति होगी। परन्तु ता. 18 से परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होगा। उत्साह से किए कार्यों में सफलता के आसार बढ़ेंगे। किन्तु स्वास्थ्य परेशानी रहेगी।

कुम्भ राशि (Aquarius)

गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द

ग्रहगोचर : शनि भाग्य स्थान में उच्चराशिगत (तुला) राहु युक्त होकर संचार करेगा। आय के साधनों में वृद्धि, भाग्योन्नति में कई बार अड़चने रहेंगी। ता. 25 जन. से 4 मार्च तक मंगल कुम्भ राशि में संचार करने से व्यवसाय व गृह सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। ता. 12 फर. से 14 मार्च तक कुम्भ राशि पर मंगल के साथ सूर्य का संचार होने से बनते कामों से विघ्न-बाधाएं, तथा तनाव की स्थिति रहे। ता. 31 मई से वर्षान्त तक गुरु की शुभ दृष्टि इस राशि पर रहने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। **उपाय**–शनिवार को शनिस्तोत्र का पाठ करके शनि मन्दिर में तेल चढ़ाना।

मीन राशि (Pisces)

दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि

ग्रहगोचर : वर्ष-भर शनि की ढैय्या के प्रभाव के कारण मानसिक तनाव, शरीर कष्ट आर्थिक उलझनें रहेंगी। गुप्त चिन्ताएं बढ़ेंगी। वर्षारम्भ से 30 मई तक राशि स्वामी गुरु तृतीयस्थ संचार व्यवसाय/नौकरी में प्रयास करने पर अनुकूल वातावरण व लाभ की स्थिति बनेगी। परन्तु किसी ता. 4 मार्च से 12 अप्रै. तक मंगल, फिर 14 मार्च से 13 अप्रै. तक सूर्य का इस राशि पर संचार होने से आय कम व खर्च अधिक। 31 मई से वर्षान्त तक गुरु मिथुन राशिगत चतुर्थ भाव में संचार करने से भूमि-जायदाद सम्बन्धी लाभ होगा। ता. 16 सितं. से 17 अक्तू. तक सूर्य की दृष्टि शुभ होगी। सूर्य उपासना करना शुभ होगा।

वि. संवत् २०७० में संवत्सर एवं राजा-मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्तयाव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्-चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व प्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुख सम्पत्ति हेतवे। **पराभव नामक** नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे अष्टत्रिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१३८) वर्ष प्रवेशे पण्डित पन्नालाल अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, द्वयोः पुत्रयोः पण्डित विवेक व पंकज शर्मा सहितोऽहं कुर्वे **पंचाँग दिवाकरम्।**

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,११४ के अन्तर्गते, **श्रीविक्रमी संवत् २०७०** कलि (कल्कि) संवत् ५११४ श्रीकृष्ण सम्वत् ५२४९ सप्तर्षि संवत् ५०८९, श्रीबुद्ध संवत् २६३६-३७, श्रीमहावीर निर्वाण **संवत् २५३८-३९,** शक संवत् **१९३५-३६,** हिजरी सन् १४३४-३५, इंग्लिश सन् २०१३-१४ ईसवी, फसली सन् १४२०-२१, खालसा संवत् ३१४-१५, नानकशाही सम्वत् ५४४-४५, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

"पराभव" नामक नव सम्वत्सर २०७०का फल

नववर्ष प्रवेश लगन

७ श. रा.	६	४
५	३	८
२ गु.	९	११
१ के.	१२ सू. च. मं.बु.शु.	१०

बार्हस्पत्यमान से ४०वां एवं विष्णुविंशती संवत्सरों के अन्तर्गत २०वाँ **'पराभव'** नामक नया **विक्रमी सम्वत् २०७०** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, प्रविष्टे २८ चैत्र, बुधवार, रेवती नक्षत्र एवं वैधृति योग कालीन, दुपैहर तीन बजकर 5 मिनट (इष्ट २२।१८) पर **सिंह लग्न** में प्रवेश करेगा। परन्तु शास्त्र नियमानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा आदि का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वारादि अनुसार ही किया जाता है। तदनुसार **पराभव** नामक नव **विक्रमी संवत् २०७० का** प्रारम्भ तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ ११ अप्रैल प्रविष्टे २९ चैत्र, गुरूवार, अश्विनी नक्षत्र व विष्कुम्भ योग में होगा।

चैत्र (वासन्त) नवरात्र, अर्थात् 11 अप्रैल (29 चैत्र), गुरुवार से जप, पाठ, पूजन, दान आदि, यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठान कर्मों के आदि में, **संकल्पादि** प्रयोग कार्यों में **पराभव** नमक नव सम्वत्सर का प्रयोग होगा। वर्ष का राजा गुरु तथा मन्त्री शनि होगा। **'पराभव'** नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों में इस प्रकार से वर्णित है-

पराभवाब्दे राज्ञः स्यात्मसमरः सहशत्रुभिः।
आमय क्षुद्र सस्यानि प्रभूतानि अल्पवृष्टयः।। (वर्ष प्रबोध)

अर्थात् **पराभव** सम्वत् का आगमन होने पर राष्ट्र प्रमुख नेता शत्रु राष्ट्रों के साथ युद्ध करने में तत्पर होंगे। लोगों में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति अधिक हो। उपयोगी वर्षा में कमी रहे तथा अनाज का उत्पादन भी कम हो।

नारद संहिता के अनुसार पराभव सम्वत्सर होने पर राजा लोगों अर्थात् अधिकांश राजनेताओं के मान-सम्मान में कमी हो अर्थात् वो तिरस्कृत होंगे। किंवा लोभी वृत्ति के होंगे। कहीं कम तो, कहीं अति वृष्टि होगी, जिससे मोटे अनाजों की पैदावार अच्छी होगी।

पराभवाब्दे राजानः प्राप्नुवन्ति पराभवम्।
आमयः क्षुद्रधान्यानि प्रभूतानि सुवृष्टयः।। (नारद संहिता)

● **रोहिणी का वास-(समुद्र पर)** समुद्रे तु महावृष्टि-संवत् २०७० में रोहिणी का वास समुद्र पर होगा जिससे इस वर्ष देश के कुछ भागों में बारिश बहुत अधिक होगी। गेहूँ, धान्यादि की पैदावार भी बहुत होगी। कहीं पर बाढ़ादि प्रकोपों से जन, धन, कृषि आदि की फसलों की हानि होने के योग हैं। कुछ भागों में धान्य, चावल, मक्की एवं फल-फूलों की पैदावार अच्छी होगी-

यदा पयोनिधि स्थले गतो विरंचिभं तदा।
अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्यवर्धनम्।। (वर्ष प्रबोध)

● **समय** अर्थात् **संवत्सर का वास माली** के घर होने से वर्षा पर्याप्त अर्थात् प्रचुर मात्रा में वर्षा होगी। सर्व प्रकार के दैनिक उपयोग की वस्तुएँ तेज भाव होंगी।

"सर्ववस्तुसमर्घं स्यान्मालाकार गृहेऽब्दके।
अपिच्चः मालिनः प्रचुरा वृष्टिः।।"

फिर भी वृक्षों व पौधों पर गन्ना, घास, तृण, फल-फूलों व खाद्यान्न की पैदावार अच्छी होगी। पर्वतीय तथा अन्य प्रदेशों में गेहूँ, चने, धान्य, चावल, उड़द, अनाज, घृत, दुग्ध पदार्थों का उत्पादन अधिक मात्रा में होने के बावजूद उनके मूल्यों में वृद्धि होगी।

-समय (संवत् २०७०) का वाहन चातक-

इसके प्रभावस्वरूप देश के कुछ भागों में वर्षा की कमी रहेगी। कहीं अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष, सूखा, पेयजल की कमी रहेगी। विशेषकर देश के पूर्वी, पश्चिमी एवं दक्षिणी क्षेत्र के कुछ भागों में उपयुक्त वर्षा की कमी एवं जलापूर्ति की कमी होने से कृषक वर्ग व सामान्य लोग परेशान व व्याकुल होंगे। सर्व प्रकार के खाद्यान्न, तिल, तैल, धान्य, ईख, फल-फूल, सब्जियों के मूल्यों में अत्यधिक तेजी होने से सामान्य लोग व्याकुल होंगे।

(1) वर्ष के राजा गुरु का फल–

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः।
यजन्ति विप्रा बहवोऽग्नि होत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते ॥

सम्वत् का राजा गुरु (बृहस्पति) होने से पृथ्वी पर वर्षा अच्छी होगी। गाय-भैंस आदि चौपाय समुचित मात्रा में दूध देंगे। ब्राह्मण एवं धर्मपरायण लोग यज्ञ, होमादि शुभ कार्यों में संलग्न होंगे। सांभ्रान्त एवं उच्चवर्ग के लोग बड़े उत्सवों में व्यस्त रहेंगे। विरोधी राष्ट्रों के मध्य भी शान्ति वार्ताएँ समायोजित होंगी। अनाज एवं कृषि का उत्पादन तथा मौसमी फलों की पैदावार अच्छी होगी।

(2) वर्ष के मन्त्री शनि का फल–

रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विनय संरहिता बहुदुखदाः।
न जलदा जलदा जनतापदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित्॥

अर्थात् वर्ष का मन्त्री शनि होने से राजनेताओं एवं प्रशासक वर्ग का सामान्य लोगों के प्रति व्यवहार कठोर, निर्दयतापूर्ण एवं दुखकारक होगा। देश के कुछ भागों में वर्षा की कमी होने से खाद्यान्नों में कमी एवं प्राकृतिक प्रकोप होने का भय होगा। सामान्य लोगों के पास धन-संपदा एवं सुख संसाधनों की कमी एवं उनमें गहन असंतोष की भावनाएँ व्याप्त रहें। लोहा, स्टील, ताम्बा, जिस्त, सिक्का, चान्दी, दालें, गेहूँ, चावल, तैल आदि खाद्यान्न पदार्थ, पैट्रोल, डीज़लादि और तेज़ भाव होंगे।

(3) सस्येश मंगल का फल–

प्रथम धान्यपतौ धरणी सुते गज तुरंग खरोष्ट्र गवामपि।
प्रभवदो बहुरोग धनों जलं न समसौख्य तुषधान्यहृत्॥

सस्येश (चौमासा फसल का स्वामी) मंगल होने से हाथी, घोड़े, गाय, बैल, भैंस, ऊँट, गधे आदि चौपायों में विचित्र प्रकार के रोग फैलें। कहीं उपयुक्त वर्षा की कमी रहेगी। ग्रीष्म के धान्य (जैसे गेहूँ, जौं, चने, धान्यादि) अनाज, सब्ज़ियों आदि की फसलों को हानि पहुंचेगी एवं च भावों में और तेजी होगी।

(4) धान्येश सूर्य का फल–

पश्चाद् धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद् धान्यं तदानहि।
विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीडनम॥

धान्यपति सूर्य हो, तो पीछे वाले धान्य (अर्थात् शीतकाल में पैदा होने वाली फसलों (जैसे मूंग, मोंठ, बाजरा, धान्य, ईखादि) की पैदावार में कमी हो, अथवा प्राकृतिक प्रकोपों के कारण कृषि उत्पादन को हानि पहुँचे। फलतः धान्यादि के मूल्यों में वृद्धि होगी। प्रशासकों (राजनेताओं) में परस्पर टकराव एवं विवाद उत्पन्न हों। देश में युद्ध जैसा वातावरण बने। सर्व प्रकार के अनाज तेज भाव हों। लोगों में विचित्र प्रकार के ज्वर एवं रोगों

(5) मेघेश शुक्र का फल–

भृगुसुतो जलदस्यपतिः यदा जलमुचो जलदादि–विशोभनाः।
धन–निधानयुता द्विजपालकाः नृपतयो जनता सुखदायकाः॥

मेघों अर्थात् वर्षा का स्वामी शुक्र होने से आगामी वर्ष वर्षा बहुत अच्छी होगी। उच्चप्रतिष्ठित राजनेता पण्डित एवं विद्वानों का हित करने में प्रयत्नशील होंगे। अधिकांश राजनेता एवं प्रशासक धन-धान्य से समृद्ध होंगे। कुछ नेता व प्रशासक जनता की भलाई एवं सुख कार्यों के लिए भी प्रयास करेंगे।

(6) रसेश गुरू का फल–

यदि गुरू रसपो जनसौख्यदः कमलवन्ति सरांसि तृणानि च।
जनपद द्विज पूजन तत्परा गजतुवाजि रथोष्ट्र युता नृपाः॥

रसों का स्वामी गुरू (बृहस्पति) हो, तो उस साल विशिष्ट लोगों में भौतिक सुखों की वृद्धि होगी। घास, तृण, फल-फूल आदि वृक्षों की पैदावार अच्छी होगी। सामान्य लोग विद्वान पण्डितों की सेवा-सत्कार में तत्पर हों। राजनेता हाथी, घोड़े, सवारी आदि सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे।

(7) नीरसेश (धातुओं के स्वामी) मंगल का फल–

नीरसेशो यदा भौमः प्रवाल रक्त वाससाम्।
रक्त चन्दन ताम्राणां अर्घ–वृद्धि दिनेदिने॥

नीरसेश अर्थात् धातुओं का स्वामी मंगल होने से माणिक्य, मूंगा, पुखराज, हीरे आदि रत्न, लाल वस्त्र, गर्म वस्त्र, लाल चन्दन, सोना, पीतल, ताम्बा, लाख, खल-बिनौले आदि लाल वर्ण के पदार्थ दिन-प्रतिदिन महँगे होंगे।

(8) फलेश शुक्र का फल–

यदि फलस्यपतौ भृगुजे धरामृदुकुमार महीरूहराशयः।
बहुफलानरनाथ सुभोगदा द्विजवराः श्रुतिपाठ–परायणाः॥

अर्थात् फलों का स्वामी शुक्र हो, तो उस साल वर्षा अच्छी होगी। पृथ्वी पर कोमल घास, तृण, फल-फूल एवं लघु पौधों का समूह अधिक पैदा होंगे। राजनेता एवं प्रशासक लोग विभिन्न प्रकार की धन-सम्पदा एवं ऐश्वर्यों से सम्पन्न होंगे। द्विजवर्ग अर्थात् कर्मकाण्डी पण्डित पाठ, यज्ञादि अनुष्ठान आदि कृत्य करते हुए लाभान्वित होंगे।

(9) धनेश (कोश) का स्वामी चन्द्र का फल–

धनपतिः मृगलांछनको यदा रसचय–क्रय–विक्रयतो धनम्।
वसन–शालि सुगन्ध रसं बहु द्रविण–तैल युतं नृपसौख्यदम्॥

धनेश (कोशपति) चन्द्रमा होने पर रसादि पदार्थों (दूध, घी, शर्बत, गुड़, जूस, तैल, सेब, मुसम्मी आदि रसकस) के क्रय-विक्रय (खरीद/बेच) द्वारा धन का लाभ अच्छा होगा।

इसके अतिरिक्त वस्त्र, अनाज, तैल, सुगन्धित तैल, दूध, घी, तैल, गुड़ आदि के व्यापारी भी विशेष लाभान्वित होंगे। अवसरवादी नेता विविध प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे।

(10) दुर्गेश (सेना के स्वामी) शुक्र का फल–

नगर-देश विशेष पतिर्यदा भृगुसुतो बहुसौख्यकरो मतः।
विनय–वाणिज गेहसमं सुखंनग वने निकटेऽपि च दूरतः॥

सेनापति शुक्र हो, तो देश के राजनेता एवं विशिष्ट वर्ग के लोग ही सुख-साधनों से सम्पन्न एवं समृद्ध होंगे। विनय एवं वाणी के व्यवहार से गृह जैसा सुख व शान्ति प्राप्त होगी। दूरस्थ वनों एवं पर्वतीय स्थलों पर भी सर्व प्रकार की सुख सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।

नवमेघों में "तम" नामक मेघ का फल–

रोगधिक्यं जायते नीरशेषर चौराधिक्यं नैवधान्यस्य पोषः।
यास्मिन् वर्षेस्यात्तमोनाम मेघः तस्मिन् दुखं प्राप्नुयाल्लोकसंघः॥

अर्थात् जिस संवत् में तम नाम का मेघ हो, तो उस वर्ष लोगों में विभिन्न प्रकार के रोगों की अधिकता रहे, तथा उपयोगी वर्षा की कमी रहे। चोरी, लूटमार और बेईमानी की वारदातें अधिक हों,तथा सामान्य लोग अनेक प्रकार के आर्थिक दुःखों एवं कष्टों से पीड़ित रहें।

द्वादश नागों में वासुकी नामक नाग का फल–

उदेतियत्र वत्सरेस वासुकिः भुजङ्गमः। प्रभूतन्धान्य दायकः सुवृष्टिकारकस्तथा॥

अर्थात् जिस वर्ष वासुकी नाम का नाग प्रकट हो, तो उस वर्ष देश में उत्तम एवं उपयोगी वर्षा हो तथा धान्य, ईख, गेहूँ आदि की फसलों का उत्पादन अच्छा होगा।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश फल–वि. २०७०

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुं.
21 जून, सं. 2013 ई., 28/33

बु. ३ शु. सू. गु.
२ मं.
१ के.
४
१२
५
११
६
८ चं.
१०
७ श. रा.
९

वि. संवत् २०७० में ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी तिथि, शुक्रवार तदनुसार 21 जून, सन् 2013 ई० को अनुराधा नक्षत्र, साध्य योग एवं वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा तथा वृष लग्न कालीन, अर्द्धरात्रि की 22 जून की प्रातः 4 बजकर 33 मिनट (28/33 पर सूर्य भगवान् आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कालीन वृष लग्न उदित हुआ है। वृष राशि, पृथ्वी तत्त्व राशि है। वृष-लग्नेश शुक्र (जल-तत्त्व कारक) द्वितीयस्थ मिथुन राशिस्थ है। मिथुन राशि वायुकारक है तथा यहाँ चतुर्ग्रही योग बना हुआ है। जल तत्त्व ग्रह **चन्द्रमा** भी जल तत्त्व राशि वृश्चिक में है। फलस्वरूप आगामी वर्ष विषम वर्षा के योग हैं। कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा से बाढ़ जैसे हालात तथा कुछ क्षेत्रों में अल्प वर्षा से अकाल, सूखे जैसी परिस्थितियां बन जाएंगी।

शनि-राहु पर गुरु की दृष्टि तथा सप्तमेश मंगल भी जलतत्त्व राशि (वृष) में होने से 21 जून के बाद भारत में व्यापक रूप से मानसून का प्रारम्भ हो जाएगा। परन्तु वायु वेग की कमी के कारण उपयोगी वर्षा की कमी रहे। यद्यपि उत्पादन में वृद्धि हो, परन्तु गेहूँ, गन्ना, मक्का आदि फसलों की पर्याप्त आकांक्षित पैदावार नहीं हो सकेगी। फलस्वरूप मूल्यों में वृद्धि होगी।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश चतुर्दशी तिथि कालीन होने से सम्पूर्ण धान्य, वस्त्र तथा अन्य दैनिक उपयोगी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होगी।

यथा–समस्त धान्यवासांसि महर्घाणि भवति हि।

आर्द्रा प्रवेश अनुराधा नक्षत्र में होने से प्रशासक वर्ग, नेता तथा उच्च वर्ग के लोग अधिक सम्पन्न एवं सन्तुष्ट होंगे-**सर्वलोकाश्च भूपाश्व संतुष्टाः स्युस्तदाभृशम्॥**

शनि की दृष्टि– 15 नवम्बर, सन् 2011 ई. से शनि देव तुला राशि में संचार कर रहे हैं। संवत् २०७० में भी शनि वर्षभर तुला राशि में ही संचार करेगा। इस राशि में संचार के दौरान शनि धनु, मेष तथा कर्क राशियों पर विशेष दृष्टियाँ रखेगा तथा कन्या, तुला एवं वृश्चिक राशि वाले जातक व राष्ट्रों पर शनि-साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। तुला राशि में रहते शनि की दृष्टि पश्चिम की तरफ रहेगी। अतएव पश्चिमी प्रान्तों तथा पश्चिमी देशों (विशेषकर मेष, कर्क एवं धनु राशि वाले देशों/प्रान्तों) जैसे-इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, श्रीलंका, हालैण्ड, सिन्ध, स्पेन, गुजरात, उ.प्र.) में प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, तूफान, भूकम्प, आतंकवादी, विस्फोट एवं हिंसक घटनाएं तथा राजनैतिक क्षेत्रों में उथल-पुथल होने की व्यापक सम्भावनाएँ होंगी।

गुर्राफल विचार–(सन् 2013-14 ई०)

इस्लामी नववर्ष कुण्डली

3
2 गु. के.
1
4
12
5
11
6 शु.
8 सू. बु. रा.
10
7 श.
9 चं. मं.

हिजरी सन् 1434

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है।

वि. संवत् 2069 में 16 नवं., सन् 2012 ई., शुक्रवार को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1434 शुरु होगा। शुक्रवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से हिजरी वर्ष का बादशाह शुक्र ही होगा। लग्न भाव में गुरु-केतु योग तथा लग्नेश शुक्र पंचम भाव में नीच स्थिति में है। उस पर गुरु की पंचम दृष्टि पड़ रही है।

फल–ग्रहस्थिति अनुसार इस वर्ष स्त्रियों की स्थिति कुछ बेहतर होगी। समाज तथा राजनीति में उनका प्रभाव बढ़ेगा। पाक, अफ़गानिस्तान, मिस्र, लीबिया, लैबनान, दक्षिणी सूडान, सीरिया आदि मुस्लिम राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति शोचनीय रहेगी। इन देशों की अर्थव्यवस्था अमरीका आदि बाह्य देशों की सहायता पर निर्भर करेगी। कहीं अप्रत्याशित रूप से पुनः सत्ता-परिवर्तन के योग हैं। पाकिस्तान में भी अगले वर्ष प्रधाननेता को त्यागपत्र देना पड़ेगा तथा नवाज़ शरीफ़ की पार्टी का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली

3 गु. | 2 | 1 के. | 12 | 11 | 4 | 10 | 7 सू. बु. श. रा. | 5 मं. | 9 शु. | 6 | 8 चं.

हिजरी सन् 1435

वि. संवत् 2070 में 5 नवंबर, सन् 2013 ई., मंगलवार को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1435 शुरु होगा। मंगलवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से हिजरी वर्ष का बादशाह मंगल (मरीख) ही होगा। लग्न भाव में केतु तथा गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग दो देशों के मध्य युद्ध जैसे हालात का संकेत दे रहे हैं।

सन् 2013-14 ई. में मुस्लिम देशों में अग्निकाण्ड, उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ अधिक होंगी। कहीं अप्रत्याशित रूप से सत्ता-परिवर्तन के भी योग हैं। गर्मी, खुश्की व त्वचा सम्बन्धी रोग अधिक होंगे। सीरिया, पाक, ईरान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम राष्ट्रों में सत्तारूढ़ सरकारों को ज़बरदस्त राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा। महंगाई, मुद्रा-स्फीति आदि में वृद्धि तथा आतंकी घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि होगी।

जल आदि चार स्तम्भों का फल–संवत् २०७०

(1) जल स्तम्भ–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क लगभग 26% है। जोकि गतवर्ष से भी कम है। गत वर्ष 36% सम्पर्क होने पर इसी कालम में सूखे, दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी (देखें पृष्ठ 61) की गई थी। आगामी वर्ष तो ओर भी कम 26% है। फलस्वरूप आगामी वर्ष देश में कम वर्षा के योग हैं। कहीं खण्ड वर्षा एवं कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। कहीं पेपजल की समस्याएं उत्पन्न होंगी, भूमिगत जलस्तर में गिरावट, नदियों के जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। दुर्भिक्ष की परिस्थितियां बनेंगी।

(2) तृण स्तम्भ–वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क मात्र 9% है। फलस्वरूप तिनके, बाँस, घास, पुष्पों, फलों, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों तथा वन्य-औषधियों के उत्पादन में कमी रहेगी। पशुचारे का भी अभाव रहे। फलस्वरूप गाँ, भैंस आदि चौपाय पशुओं द्वारा दुग्ध उत्पादन में कमी रहे। आयुर्वेदिक औषधियां, दूध, पनीर, मक्खन, डेयरी उत्पादन महंगे होंगे।

(3) वायु स्तम्भ–ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क 97% है। फलतः कुछ प्रदेशों में वायु वेग एवं अनुकूल मेघ संचार से वर्षा का क्रम अच्छा रहेगा। परन्तु कुछ प्रदेशों में भीषण वायु वेग, चक्रावात, तेज़ अन्धियों व तूफानों से खड़ी फसलों, जन-धनादि सम्पदा को हानि पहुँचेगी। कुछ क्षेत्रों में वायु का दबाव बढ़ेगा।

(4) अन्न स्तम्भ–आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क लगभग 85% है। फलस्वरूप जल व तृण स्तम्भ नगण्य होने तथा विपरीत जलवायु के बावजूद कुछ प्रदेशों में गेहूँ, जौं, चने, चावल, मक्का, ईख, धान्यादि की पैदावार अच्छी होगी। व्यापारी लोग कम पैदावार का अनुमान लगाकर तेजी का व्यापार करेंगे, जिससे महंगाई ओर बढ़ेगी। किसानों व [illegible] को लाभ मिलेगा।

ऊपरलिखित चार स्तम्भ किसी भी देश की आर्थिक स्थिति को समझने एवं मापने में विशेष महत्त्व रखते हैं क्योंकि अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से इन चार स्तम्भों पर निर्भर रहती है।

आर्षमान द्वारा रक्षा फल विचार

अर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले), समृद्धि एवं सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

(1) प्रथम आर्ष–गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का अभाव है।

(2) द्वितीय आर्ष–वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र 13 प्रतिशत है।

(3) तृतीय आर्ष–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क 16 प्रतिशत है।

(4) चतुर्थ आर्ष–कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का स्पर्श 36% है।

फल–इस वर्ष प्रथम दुर्ग का अभाव तथा शेष तीनों दुर्ग अत्यल्प-बली है। चारों दुर्गों का विचार चिन्ताजनक स्थिति का संकेत कर रहा है। सुरक्षा, समृद्धि एवं राजनीतिक दृष्टि से यह वर्ष विशेष उलझन एवं चुनौतिपूर्ण रहेगा। सीमावर्ती क्षेत्रों पर विशेषकर उत्तर-पूर्वी सीमा पर चीनी घुसपैठ, पाकिस्तान की ओर से आतंकवादियों की घुसपैठ तथा असम आदि सीमाओं पर बांग्लादेशी घुसपैठ से देश की आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा को गम्भीर संकट उत्पन्न होने का भय है। देश की सुरक्षा एजेन्सीयों को विशेष प्रयास करने की आवश्यकता रहेगी।

इस सम्बन्ध में भड्डुरी की कहावत भी लोक में प्रचलित है–

अखै तीज रोहिणी न होई। पौष अमावस मूल न जोई।।
राखी श्रवणो हीन बिचारो। कातिक पूनो कृतिका टारो।।
महि माहीं खल बलहिं प्रकासै। कहत भड्डुरी सालि विनासै।।

अर्थात् वैशाख की अक्षय तृतीया को यदि रोहिणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षाबन्धन के दिन श्रवण और कार्तिक की पूर्णिमा को कृतिका न हो, तो पृथ्वी पर दुष्टों का बल बढ़ेगा और उस वर्ष धान की उपज न होगी।

–वर्षादि के विश्वामान–

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०७० में धान्य के विश्वा ९ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन मध्यम से कुछ कम ही होगा।

वर्षा ९, धान्य ९, तृण ७, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १३, तृषा ९, निद्रा ११, आलस्य १३, उद्यम ५, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १, पाप १७, पुण्य ५, व्याधि ३, व्याधिनाश १७, आचार १७, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ९, देशउपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चोरभय ९, चोरनाश १, अग्नि १५, अग्निशान्त १, उद्भिज ५, जरायुज ३, अंडज १५, स्वेदज ३, टिड्डी ३, तोता १३, मूषक ३, सोना १७, तांबा ११, स्वचक्र ३, परचक्र ४, वृष्टि ७, अनावृष्टि १५।।

★ वि. संवत 2070 में लाभ-हानि चक्र ★

★ वि. संवत् 2070 में लाभ-हानि चक्र ★

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, आर्थिक समस्याएं उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
हानि	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

यमघण्टक योग

क्रकय योग, संवर्त, दग्ध, कुलिक, उत्पात, यमघण्टक आदि योग मंगल कर्मों का सम्पादन करने के लिए त्याज्य माने गए हैं। वसिष्ट जी के अनुसार-"**शुभकार्य प्रसूतौ च सर्वदा परिवर्जयेत्।**" शुभ यात्रा एवं छोटे बच्चों के शुभ कार्यों के सम्पादन में तथा छोटे शिशुओं की पैदायश काल में भी इस योग का विचार किया जाता है। ऋषि वसिष्ठ अनुसार दिवसकाल में यमघंटक आदि दुष्ट योग हो तो मृत्युतुल्य कष्ट देता है, परन्तु रात्रिकाल में इसका फल अशुभ नहीं माना जाता है।

दिवा मृत्युप्रदाः पापा दोषस्त्वेतेन न रात्रिषु।

ध्यान रहे, किसी कुयोग के समय अन्य सिद्धि आदि सुयोग भी वर्तमान हो जाए, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है-

अयोगः सिद्धि योगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धि योगः प्रवर्त्तते॥ (राजमार्तण्ड)

ज्वालामुखी योग-(वि. संवत् २०७०)

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस प्रकार 5 नक्षत्रों एवं 5 तिथियों के संयोग से ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग के अशुभ फल को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित लोकोक्ति प्रचलित है-

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गाँव,
नारी पहने चूड़ियां, पुरुष विहीनी होय।
बोवे तो काटे नहीं, कुएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ति अतिशयोक्तपूर्ण हो सकती है, परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्बन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो तो उसे अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कूआँ खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीर्ष सूख जाए-यदि कोई रोगग्रस्त हो तो जल्दी ठीक न हो-इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

ज्वालामुखी योग (संवत् २०७०)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
20 अप्रै.	8	15	20 अप्रै.	19	26
23 जून	17	02	23 जून	25	14
28 अग.	02	02	28 अग.	12	42
29 अग.	04	11	29 अग.	15	29
23 सितं.	14	50	23 सितं.	19	04
28 अक्तू.	20	14	28 अक्तू.	21	38
7 फर. 14	6	14	7 फर. 14	13	27
8 फर.	8	12	8 फर.	15	04
5 मार्च	13	59	6 मार्च	04	27

यमघण्टक योग (सन् 2013 ई.)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
5 जन.	सू.	उ.	5 जन.	13	42
7 जन.	11	31	8 जन.	सू.	उ.
10 जन.	04	53	10 जन.	सू.	उ.
4 फर.	सू.	उ.	4 फर.	16	48
6 फर.	13	33	7 फर.	सू.	उ.
24 फर.	25	21	25 फर.	सू.	उ.
6 मार्च	सू.	उ.	6 मार्च	18	14
19 मार्च	25	52	20 मार्च	सू.	उ.
24 मार्च	10	17	25 मार्च	सू.	उ.
16 अप्रै.	9	46	17 अप्रै.	सू.	उ.
21 अप्रै.	सू.	उ.	21 अप्रै.	20	20
14 मई	सू.	उ.	14 मई	19	57
6 जून	14	24	7 जून	सू.	उ.
7 जून	17	11	8 जून	सू.	उ.
4 जुला.	सू.	उ.	4 जुला.	23	03
5 जुला.	सू.	उ.	5 जुला.	26	06
2 अग.	सू.	उ.	2 अग.	8	22
10 अग.	26	13	11 अग.	सू.	उ.
7 सितं.	8	11	8 सितं.	सू.	उ.
5 अक्तू.	सू.	उ.	5 अक्तू.	15	48
7 अक्तू.	14	29	8 अक्तू.	सू.	उ.
4 नवं.	सू.	उ.	4 नवं.	21	24
2 दिसं.	सू.	उ.	2 दिसं.	7	44
4 दिसं.	सू.	उ.	4 दिसं.	24	06
17 दिसं.	25	14	18 दिसं.	सू.	उ.
22 दिसं.	12	53	23 दिसं.	सू.	उ.

वि. संवत् २०७० में ग्रहों की आकाशी कौंसिल व मुख्य भविष्यवाणियाँ

- नया वि० सम्वत् २०७० में 'पराभव' नामक होने से कुछ देशों के प्रमुख शत्रु राष्ट्रों के साथ टकराव एवं युद्ध करने में तत्पर होंगे। उपयोगी वर्षा में कमी तथा खाद्यान्न की पैदावार भी कम होने से मूल्यों में विशेष तेज़ी होगी। अधिकतर नेता अवसरवादी स्वार्थपरक एवं लोभी होंगे। सामान्य लोग उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखेंगे।
- वर्ष का राजा गुरू एवं मन्त्री शनि होने से विशेष प्रशिक्षित एवं कुशल लोग प्रतिष्ठित एवं सम्मानित होंगे। धर्म-परायण लोग यज्ञ-होम, धर्म-प्रचार आदि शुभ कार्यों में प्रवृत्त होंगे। धार्मिक एवं सांस्कृतिक समागम अधिक होंगे। भारत-पाक, अमेरिका-ईरान आदि विरोधी देशों के मध्य भी शान्ति वार्ताएँ आयोजित होंगी।
- वर्ष का मन्त्री शनि होने से राजनेताओं एवं प्रशासनिक अधिकारियों का व्यवहार सामान्य लोगों के प्रति कठोर एवं स्वार्थपरक रहेगा। सोना, लोहा, चान्दी, जिस्त, लकड़ी, ताम्बा, पीतल, गेहूँ, चने, चावल, वस्त्र, घृत, खाद्य तैल, बिल्डिंग मैटीरियल, पैट्रोलियम आदि पदार्थों के व्यापारी लोग विशेष रूप से लाभान्वित होंगे।
- नववर्ष प्रवेश कुं. में शुक्र उच्चस्थ होने पर भी अस्तंगत है। फलस्वरूप राष्ट्राध्यक्ष (प्रधानमन्त्री) की स्थिति निष्क्रिय एवं असमंजसपूर्ण रहेगी। स्वास्थ्यादि कारणों से कार्यकाल से पूर्व ही त्यागपत्र भी दे सकते हैं। केन्द्रिय मन्त्री मण्डल में श्री राहुल गान्धी को महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त होने के योग हैं।
- जगत् लग्न कुं. में सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग के प्रभावस्वरूप भारत, पाकिस्तान, सीरिया, ईराक आदि विकासशील देशों में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ संघर्षपूर्ण, अस्थिर एवं अनिश्चित होंगी। अरब एवं खाड़ी देशों जैसे—सीरिया, मिस्र, लीबिया, सूडान में क्रान्तिकारी परिवर्तन होंगे।
- भारत-पाक सहित कुछ यूरोपीय देश जैसे—स्पेन, फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, बैल्जियम, पुर्तगाल भी मन्दी एवं गम्भीर आर्थिक संकट की गिरफ्त में आ जाएंगे।
- अप्रैल, मई एवं जून महीनों में क्रमशः चार एवं पंचग्रही योग बनने से भारत में कहीं आतंकी, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत मिलते हैं।
- वर्तमान प्रधानमन्त्री एवं यू.पी.ए. सरकार की विश्वसनीयता में ज़बरदस्त कमी आएगी। लोकपाल, भ्रष्टाचार, महँगाई, काला-धन आदि ज्वलन्त समस्याओं के दृष्टिगत बाबा रामदेव जी, अन्ना हज़ारे आदि समाजसेवी संस्थाओं द्वारा संचालित जनान्दोलनों के प्रभावस्वरूप आगामी चुनावों में यू.पी.ए. कांग्रेस सरकार को भारी क्षति पहुँचने के योग हैं।
- वर्षभर तुला राशि में शनि-राहु योग तथा मंग.-शनि (12 अप्रै. से 23 मई), गुरु-शुक्र (30 अक्तू. से 4 दिसं.) के मध्य समसप्तक योग होने से पैट्रोल, डीज़ल, सोना, तांबा के मूल्यों में तथा महँगाई में आशातीत वृद्धि होगी। सीमावर्ती प्रदेशों में फौजी अतिक्रमण के कारण चीन व पाक के साथ युद्ध का भय बराबर बना रहेगा।
- आगामी कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों में यद्यपि कांग्रेस को नुकसान होगा, परन्तु भाजपा को भी कुछ क्षेत्रों में पराजय का सामना करना पड़ेगा। हिमाचल, गुजरात, दिल्ली, महाराष्ट्र आदि में यद्यपि भाजपा विजयी होगी, परन्तु कर्नाटक, ३६ गढ़ में कांग्रेस का प्रभाव बढ़ेगा। क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व भी बढ़ेगा।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥

अनादिकाल से मानव अज्ञात एवं अगोचर को जानने के लिए संवेदनशील एवं जिज्ञासु रहा है। उसकी इसी जिज्ञासा प्रवृत्ति के कारण चिन्तनशील प्रबुद्ध मनुष्यों ने अपने परिवेश से सहस्रों मील दूर संचरणशील ग्रह, नक्षत्र एवं ताराओं के स्वरूप एवं उनके पारस्परिक प्रभावों का गहन निरीक्षण, अध्ययन एवं चिन्तन करना प्रारम्भ कर दिया था।

मानव कल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए एवं मानव जीवन को स्वस्थ, सुव्यवस्थित एवं नियमित रूप प्रदान करने के लिए ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने अध्यात्म एवं वैदिक ज्ञान, दर्शनशास्त्र, संगीत, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि शास्त्रों का प्रणयन किया। ज्योतिष

प्रकाश के सम्बन्ध में ज्ञान करवाने वाला शास्त्र होता है-अर्थात् जिस शास्त्र से संसार का मर्म, जीवन-मृत्यु का रहस्य और जीवन के सुख-दुख के सम्बन्ध में प्रकाश मिले, वह **ज्योतिषशास्त्र** है। ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल की साकार कहानी है। मनुष्य के संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण (वर्तमान) कर्मों एवं उनके शुभाशुभत्व का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य के भूत-भविष्य सम्बन्धी शुभाशुभ घटनाएं, सुख-दुःख, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, मान-अपमान, भाग्योदय के कालादि का ज्ञान भी इसी शास्त्र द्वारा किया जा सकता है। जातक के जन्म समय सौर-मण्डल एवं जन्मकुण्डली में जिस प्रकार के ग्रहों की स्थिति होती है, उसी के अनुसार मनुष्य (जीव) का बाह्य एवं अभ्यान्तरिक जीवन प्रभावित होता रहता है-

परमपिता परमात्मा की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **''पंचांगदिवाकर'', 'मुफीद आलम जन्त्री'** (उर्दू-हिन्दी-पंजाबी) **एवं तिथ पत्रिका** (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०७० (2013-14 ई.) में **गौरवशाली 138 वर्ष** हो जाएंगें। इस पंचांग समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे पूज्य पितामह विश्व विख्यात **मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी** (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई-वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में **हमारी पंचांग, जन्त्री** एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक **पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका गुरूमुखी, मुफीद आलम जन्त्री तथा हमारी नव प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग'** एवं दशवर्षीय सहित (संवत् २००१ से २०७० तक) खरीदते समय प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए., पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल.एल.बी.) व पंकज शर्मा तथा मुख्य वितरक **'जनरल बुक डिपो'** जालन्धर का नाम अवश्य पढ़ लिया करें।

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों की चामत्कारिक भविष्यवाणियां

जो ईश्वर कृपा से अक्षरश: सही निकली हैं। जैसे-भारतवर्ष का ब्रिटिश शासन से आज़ाद होना सं० 2004 (1947-48 ई०), प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल का निधन 27 मई, 1964 ई. बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, ईरान-ईराक युद्ध (2039), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु संवत् 2041, सन् 1991 ई., पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु सन् 1990 ई., सन् 1998 में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (२०५५) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि। **संवत् २०५६ के पंचाँग दिवाकर पृ० 49 कालम-II पर** स्पष्टत: पढ़े ''जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती भागों में पाकिस्तानी सेना द्वारा घुसपैठ एवं गोलाबारी करना।'' ''जैसा कि कश्मीर-कारगिल क्षेत्र में हुआ। तथा हरियाणा में बंसीलाल सरकार का टूटना'', पृष्ठ 50 का I

संवत् २०५७ के पंचांगदिवाकर-पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलटना तथा आपात् स्थिति का लगना तथा शासन परिवर्तन, छत्रभंग, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएं होना (पृष्ठ 51-कालम I व II)

सं. २०५८ के पंचांगदिवाकर पृष्ठ 56, अमेरिका-(कालम II) पर जगत लग्न में कालसर्प योग के कारण मिथुन व धनु राशि वाले देशों में विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। जैसा कि अमरीका में दुखद त्रासदी घटित होना।

संवत् २०६० में ईराक में सत्ता परिवर्तन के योग के बारे में स्पष्टत: पढ़े पृष्ठ 63।

संवत् २०६१ की पंचांग में स्पष्टत: पढ़ें-**आगामी लोकसभा चुनावों में श्रीमती सोनिया गांधी की विजय तथा कांग्रेस पार्टी भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेगी।** पृष्ठ 67 कालम I.

संवत् २०६२ (2005-06) ''पाकिस्तान और भारत के मध्य दोस्ती और शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ना (पृष्ठ 56 का II, पृष्ठ 60-I)

संवत् २०६३ (2006-07) की पंचांग में पंजाब, बिहार में नेतृत्व परिवर्तन के योग (पृष्ठ 55) 24 मई से 12 जुलाई के मध्य मंगल-शनि योग के कारण कश्मीर, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उपद्रव, हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं (जैसा कि मुम्बई में 11 जुलाई को बम विस्फोट हुए) पृ. 59 का. II)

संवत् २०६४ (2007-08) में पृष्ठ 56 पर मुख्य बाक्स पर स्पष्टत: पढ़ें-''उ.प्र., उत्तराखण्ड, **पंजाब प्रदेशों में** नेतृत्व परिवर्तन के योग होंगे।'' नतीजे आपके सामने थे।

संवत् २०६५ (2008-09) के पृष्ठ 59 पर मुख्य बाक्स में आप स्पष्टत: पढ़ें-**'गुजरात में अनेक आन्तरिक एवं कांग्रेसी विरोध के बावजूद भाजपा एवं मोदी सरकार का विजयी होना।'**

पृष्ठ 64, कालम II **में हिमाचल प्रदेश** शीर्षक के नीचे स्पष्ट पढ़ें-**'भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा तथा शक्तिशाली विजयी पार्टी के रूप में उभरकर सामने आना।'**

संवत् २०६६ (2009-10 ई.) के पृष्ठ 71 पर कालम-I में अमेरिका शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टत: पढ़ें-**''डेमोक्रेट प्रत्याशी बराक ओबामा को संघर्षपूर्ण हालात के बाद सफलता प्राप्ति होना''** पृष्ठ 75 पर जम्मू-कश्मीर शीर्षक के अन्तर्गत **''आगामी विधान व लोकसभा चुनावों में श्रीफारुख एवं उमर अब्दुल्ला के नैशनल कांफ्रेंस गठबंधन का प्रभावक्षेत्र बढ़ना-**यही नहीं **राजस्थान शीर्षक** के अन्तर्गत पढ़ें-''प्रभावराशि पर केतु का संचार प्रधाननेता श्रीमती सिंधिया जी के लिए समय शुभ नहीं है। **भाजपा को चुनावों में हार का सामना। कांग्रेस को विधानसभा में सफलता प्राप्त होना।''**

संवत् २०६७ (2010-11 ई०) के पृष्ठ **67 पर** प्रमुख बाक्स में स्पष्टत: पढ़े-**''भारत की सीमाओं पर चीन, पाकिस्तान व अन्य आतंकी हमलों के खतरे बढ़ेंगे''**। इसी पृष्ठ पर और पढ़ें-**'दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी होना।**

हरियाणा प्रान्त के शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टत: पढ़ें-**''विपरीत हालात आक्रोश के बावजूद कांग्रेस विपक्षी दलों को हराकर कांग्रेस प्रत्याशी** श्री भूपेन्द्र हुड्डा पुन: एक और जीत हासिल करेंगे।'' (पृ० 75 कॉलम II)

संवत् २०६८ (2011-12 ई०) के पृष्ठ 68, कालम I में स्पष्ट पढ़ें-''राजा चन्द्र छटेभाव में सूर्य, बुध आदि ग्रहों के साथ क्षीण बली होने से **''केन्द्र के प्रमुख नेता राष्ट्र की मूलभूत समस्याओं के बारे में निर्णयात्मक पग उठाने में अक्षम दिखाई देंगे''।**

पृष्ठ 68 पर कालम II में प्रथम पंक्ति में स्पष्ट पढ़ें-**''अमेरिका सहित** कुछ देशों में आर्थिक मन्दी का प्रभाव।'' जैसा कि अगस्त, 2011 ई० में घटित हुआ। पृष्ठ 68 पर ही

तृतीय पैरा में पढ़े–'वर्ष कुं० में **मीन राशि पर पंचग्रही** योग बनने के कारण खाड़ी देशों में आन्तरिक हालात अस्थिर एवं उद्विग्न होंगे।'–जैसा कि अप्रैल से जुलाई के **मध्य लीबिया, मिस्र, सूडान, सीरिया, चिली, आदि देशों में आंतरिक क्रान्ति तथा सत्ता-परिवर्तन** के रूप में हुआ। पृष्ठ 68 पर 'पाकिस्तान' शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें–"**भारत के साथ वार्ताओं का क्रम पुनः समायोजित होना।**"

पृष्ठ 69, कालम I में पढ़े–**पैट्रोल, डीज़ल, रसोई गैस, बिजली, दूध, लोहा, सोना, चाँदी, ताम्बा आदि के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी का रुख बनेगा।** पृष्ठ 70, कालम-II में पढ़ें 6 जून से कुशल व्यापारी लाभान्वित होंगे।

गत वर्ष संवत् २०६९ के पृष्ठ 65 कालम I में स्पष्ट तौर पर पढ़ें–"समाज में, स्त्री-पुरुषों में बाह्य-आकर्षण, सौन्दर्य, श्रृंगार एवं फैशन परस्ती बढ़ेगी। सिनेमा, संगीत, अभिनय, नाच-गायन, टैलीविज़न का प्रयोग, मनोरंजन कार्य, नृत्य, उत्सव, धन-लोलुपता, पुरुषों व स्त्रियों में प्रदर्शन का रूझान अधिक बढ़ेगा। **देखें पृष्ठ 66 कालम I**—मुस्लिम बाहुल्य देशों जैसे लीबिया, सीरिया, मिस्र, यूगांडा, सीरिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान आदि देशों में हकूमतों के विरुद्ध विद्रोह, जनान्दोलन, हिंसक एवं विस्फोटक, घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं–लगभग सभी समाचार-पत्रों में इन देशों में हुई विस्फोटक घटनाओं के घटित होने के समाचार प्रकाशित हुए हैं। पुनः शासन तंत्र में परिवर्तन, खाड़ी देशों में वर्तमान निरंकुश **तानाशाह नेताओं के विरुद्ध, लोकतांत्रिक ग्रुप** विद्रोह पर उतर आएँगे। जिससे कुछ खाड़ी देशों में **हिसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होना।** देखें–पृष्ठ 66 कालम II. हिंसक टकराव स्वरूप व्यापक अग्निकांड, मृत्यु संहार के समाचार मिलना, पुनः पृष्ठ 67 कालम II अमेरिका सरकार द्वारा पाकिस्तान सरकार को ही जाने वाली वितीया सहायता को बन्द करने की खुली चेतावनी। **सीमावर्ती क्षेत्रों में कुछ कट्टर आतंकवादी ग्रुप विस्फोटक सामग्री एवं जाली करंसी आदि का** घुसपैठ कराने की कोशिशों में रहेंगे।

देखें पृष्ठ 68 I-बढ़ती महँगाई पर काबू पाने के सरकारी प्रयास खोखले सिद्ध होना। जैसा कि स्पष्ट है कि **प्रधानमन्त्री के आश्वासनों के बावजूद महँगाई दर में आशातीत वृद्धि होती रही। कालम II सत्तारूढ़ मन्त्रियों पर लगाए गए भ्रष्टाचार,** विभिन्न भूमि-घोटालों एवं महँगाई सम्बन्धी आरोपों के कारण भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली की गरिमा को गहरा धक्का पहुँचना।

पुनः देखें पृष्ठ 69 कालम I—'साधारण लोग महँगाई की चक्की में पिसते जाएंगे। भारत के उत्तरपूर्वी पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं आकस्मिक वर्षा, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण जन, धन एवं कृषि आदि सम्पदा की हानि होगी–**जैसा कि जुलाई, 12 में आसाम में भयंकर बाढ़ से व्यापक जन-धन हानि हुई।**' पुनः इसी पृष्ठ पर पढ़ें–**सोना, चान्दी, ताम्बा आदि धातुओं में विशेष तेजी का रूझान** रहेगा।

पृष्ठ 70 कालम II में पंजाब प्रदेश के कॉलम के अन्तर्गत स्पष्टतः पढ़ें–.....**अवरोधों के बावजूद अन्ततः अकाली-भाजपा गठबन्धन के पुनः विजयी होने के योग बनते हैं।–जैसा कि स्पष्ट है, मार्च 2012 ई. में अकाली-भाजपा गठबंधन पुनः विजयी हुई। इस विशेष भविष्यवाणी जो अक्षरशः ठीक हुई है के लिए हमें पाठकों के सैंकड़ों प्रशंसा-पत्र एवं फोन प्राप्त हुए हैं, जिसके लिए हम पाठकों एवं ईश्वर का धन्यवाद करते हैं।**

पृष्ठ 72 कालम I पर भी पढ़ें–"अदूरदर्शी ग़ैर-ज़िम्मेदार एवं स्वार्थी मनोवृत्ति वाले सहयोगी मन्त्रियों की गलत एवं दोषपूर्ण नीतियों के कारण वर्तमान प्रधानमन्त्री की ईमानदार छवि धूमिल होगी। भ्रष्टाचार आदि खास मुद्दों पर उनकी खामोशी एवं निष्क्रियता को लेकर देशभर में निन्दा (भार्त्सना) होगी"–जैसा कि विदित है प्रधानमन्त्री जी की निष्क्रियता के बारे में अमेरिका की Times मैग़ज़ीन ने भी अपनी प्रमुख खबर के रूप में जुलाई, 2012 में प्रकाशित किया है।

पृष्ठ 63-मुख्य भविष्यवाणियों में भी स्पष्ट पढ़ें–"कांग्रेस को आगामी विधानसभा चुनावों में पंजाब, यू.पी. आदि कुछ प्रदेशों में भारी कीमत चुकानी पढ़ेगी। भाजपा पार्टी अपेक्षाकृत अधिक सीटों से विजयी होगी।"

वि. सम्वत् २०७० में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

ग्रहों की **आकाशी कौंसिल** (ग्रह परिषद्) के **दश अधिकारों में से (इस वर्ष भी गत** संवत् की भान्ति) **छः (6) अधिकार शुभ** (सौम्य) **ग्रहों को** ओर चार अधिकार क्रूर (अशुभ) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा का प्रमुख अधिकार **देव गुरू** बृहस्पति को प्राप्त हुआ है, जबकि मन्त्री का महत्त्वपूर्ण अधिकार क्रूर ग्रह शनि को मिला है। **राजा बृहस्पति** (गुरू) को रसों का अधिकार भी प्राप्त हुआ है। इसके प्रभावस्वरूप साम्भ्रान्त एवं उच्चवर्ग के तथा राजनेता लोग बड़े-बड़े उत्सवों में व्यस्त रहेंगे। भारत-पाकादि विरोधी देशों के मध्य शान्ति वार्ताएँ समायोजित होंगी। कृषि का उत्पादन तथा मौसमी फलों की पैदावार अच्छी होगी। राजनेता एवं उच्चस्तरीय लोग/भूमि, वाहन, धन सम्पदा आदि सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे। तकनीकि एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में विशेष सुधार किए जाएँगे। धार्मिक, यौगिक एवं सांस्कृतिक समागम अधिक होंगे। मन्त्री शनि के कारण लोहा, स्टील, जिस्त, चान्दी, लकड़ी, ताम्बा, गेहूँ, दालें, घृत, तैल, पैट्रोलियम आदि, बिल्डिंग मैटीरियल, चमड़ा, कलपुर्जों आदि पदार्थों में सम्बन्धित व्यापारी लोग विशेषतया लाभान्वित होंगे। राजनेताओं एवं प्रशासनिक अधिकारियों का व्यवहार सामान्य लोगों के प्रति कठोर एवं निर्दयतापूर्वक होगा। देश के कुछ भागों में वर्षा एवं खाद्यान्नों की कमी रहेगी। लौह, स्टील, ताम्बा, वनस्पति तैल, खाद्यान्न, दालें, पैट्रोल, डीज़ल, बिजली, पेयजलादि उपभोग्य वस्तुएँ और अधिक तेज़ भाव होंगी। सामान्य लोगों में गहन असन्तोष, क्रोध एवं विक्षोभ व्याप्त होगा।

वर्षा (मेघ), फलों एवं **सेना–ये तीनों अधिकार** सौम्य ग्रह **शुक्र को** प्राप्त होने से अधिकांश राजनेता एवं प्रशासक अपना स्वार्थ ही सिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। वह बहु-धन-सम्पदा एवं संसाधनों से सम्पन्न होंगे। विभिन्न प्रकार के वृक्ष, फल, फूल, तृण-

घास आदि एवं फलदार पौधे अधिक होंगे। उच्च-स्तरीय विशेष वर्ग के लोग ही सुख-साधनों से और सम्पन्न होंगे। **धान्येश** सूर्य होने से राजनेताओं में परस्पर टकराव, विग्रह एवं विरोध रहें। देश में युद्ध जैसा वातावरण बने। सर्वप्रकार के अनाज तेज भाव हों। लोगों में क्लिष्ट प्रकार के ज्वर एवं रोग व्याप्ति हो। **सस्येश (कृषि) एवं नीरसेश** (धातुओं) के दोनों अधिकार **क्रूर ग्रह मंगल** को मिले हैं। जिससे श्रावण में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। ग्रीष्म ऋतु की कृषि जैसे-गेहूँ, जौं, मक्की, चरी, दालें, चना, सब्जियों की फसलों को हानि पहुँचे किंवा उनके भावों में तेज़ी हो। सोना, ताम्बा, पीतल, लाख, खल-बिनौले, पुखराज आदि रत्न दिन प्रतिदिन महँगे होंगे। **धन (कोश)** का अधिकार **चन्द्रमा** के पास होने से धन-दौलत का विस्तार अधिक होगा। सुगन्धित तैल, दूध, घी, वस्त्रों, सौन्दर्य प्रसाधनों का व्यापार करने वाले अच्छा लाभ कमा सकेंगे। अवसरवादी नेता अनेक प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे।

सं. २०७० में **पराभव** नामक नया सम्वत्सर होने से अधिकांश अवसरवादी नेता स्वार्थी, लोभी एवं लालची होंगे। सामान्य लोग उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखेंगे।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल-सं० २०७०

नववर्ष प्रवेश कुं. २२/१८

जगत् लग्न कुण्डली २५/२८
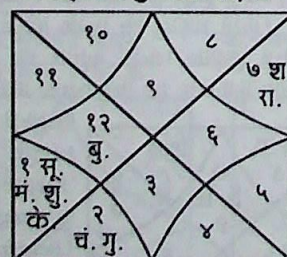
'पराभव' नामक नव वि. सम्वत् २०७० का प्रवेश 10 अप्रैल सन् 2013 ई. (प्रविष्टे २८ चैत्र), बुधवार, रेवती नक्षत्र एवं वैधृति योग कालीन, दुपैहर 3 बजकर, 5 मिनट पर **सिंह लग्न** में प्रविष्ट होगा। वर्ष लग्न में लग्नेश सूर्य **अष्टम भाव** (जोकि प्राकृतिक आपदाओं, आकस्मिक दुर्घटना एवं गुप्त योजनाओं का भाव है।) में चन्द्र, मंग., बुध एवं शुक्र सहित पँचग्रही योग बना हुआ है। वर्ष कुण्डली में **पंचम भाव** (प्रशासनिक बुद्धि व योजना) का **स्वामी** गुरू (जोकि **वर्ष का राजा** भी है) दशम भाव में शत्रुराशिगत है। सप्तमेश **(विपक्ष) शनि** (वर्ष का मंत्री) तृतीय भाव में उच्च राशिस्थ होने पर भी राजा गुरू के साथ **षडाष्टक स्थिति** में है। ध्यान रहे, शनि भारत की प्रभाव राशि (मकर) का स्वामी भी है।

ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के अधिकतर देशों के मध्य परमाणु एवं अन्य संहारक हथियारों के संग्रह की प्रतिस्पर्धा एवं होड़ बढ़ेगी। शनि-मंगल के मध्य षडाष्टक होने से दक्षिणी एशिया एवं खाड़ी देशों के अन्दरूनी हिस्सों में कहीं अग्निकाण्ड, हिंसक आन्दोलन एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। वर्ष के प्रथम चार मास भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश, चीन आदि देशों के लिए विशेष घटनाप्रद वाले सिद्ध होंगे। वर्ष लग्नेश सूर्य बुध, चन्द्र, मंगल, शुक्र सहित अष्टम में हैं। द्वितीयेश बुध नीच राशिस्थ है। शुक्र उच्चस्थ होने पर भी अस्तंगत है। फलस्वरूप राष्ट्राध्यक्ष (प्रधानमंत्री) की स्थिति निष्क्रिय एवं असमंजसपूर्ण रहेगी। कार्यकाल से पूर्व भी त्यागपत्र दे सकते हैं। **सूर्य, मंगल, शुक्र** सभी एक ही राशि में होने से सभी प्रकार के अनाज, घी, तैल, मसूरादि महँगे होंगे। कुछ देशों में छत्रभंग अर्थात् सत्ता परिवर्तन हो-

आदित्यो भार्गवश्चैव भूसुतः एक नक्षत्रराशिगाः।
घृतं तैल मसूरान्न महर्घं देश विग्रहः।। (अर्घ प्रकाश)

सिंह लग्न में वर्ष प्रवेश का फल इस प्रकार से लिखा गया है-

सिंहलग्नेदक्षिणस्यां दष्ट्राभयमुदीयते।
धान्येसमर्घतामास षट्कं यावत् धनं महत्।

अर्थात् सिंह में वर्ष प्रवेश हो, तो दक्षिण में उपद्रव, भय एवं धान्यादि अनाज में तेजी हो, और छः मास तक विशेष धन लाभ हो। पश्चिम में सब प्रकार की धातुएँ और फल महँगे हो। उत्तर में महावृष्टि, पूर्व में कृषि की हानि तथा मध्य देश में पांच मास राजयुद्ध रहे।

जगत् (वर्षेश) लग्न कुण्डली में धनु लग्न उदित हुआ है। लग्नेश गुरु छटे भाव में चन्द्र गुरु युक्त है। शनि-मंगल क्रूर ग्रहों का परस्पर **सम-सप्तक** योग बना हुआ है। **तुला राशिस्थ** शनि का मेषस्थ सूर्य के साथ भी समसप्तक योग बन रहा है। इसके प्रभावस्वरूप भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश, श्रीलंका आदि विकासशील देशों में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ संघर्षपूर्ण, अस्थिर एवं अनिश्चित होंगी। इन देशों में भ्रष्टाचार, महँगाई आदि **आर्थिक संकट बढ़ेंगे।** अरब एवं खाड़ी देशों जैसे-सीरिया, लीबिया, मिस्र, स्याम, यूगाण्डा, सूडान आदि देशों में क्रान्तिकारी ग्रुप निरंकुश तानाशाही नेताओं के विरुद्ध बगावत पर उतर आएँगे। कुछ देशों में हिंसक/हत्याएँ, सत्ता-परिवर्तन, यान-दुर्घटनाएँ होने के भी योग हैं। **भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि एशिया के कुछ देशों सहित अमेरिका एवं अन्य यूरोपीय देश-जैसे ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, इटली, बैल्जियम, पुर्तगाल, पोलैण्ड, डैनमार्क आदि देश जबरदस्त महँगाई एवं गम्भीर आर्थिक संकट की गिरफ्त में आ जाएँगे।**

● **विश्व का राजनीतिकमंच**-चीन व पाकिस्तान की बढ़ती सामरिक शक्ति एवं घातक परमाणु हथियारों के संग्रह तथा सीमाओं के विस्तारवाद की प्रवृत्ति के कारण विश्व के गुट

निरपेक्ष राष्ट्र संगठनों को **विश्व शान्ति** के लिए नए सिरे से सोचना होगा। संहारक परमाणु हथियारों के निर्माण के दौड़ में विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देश शामिल हो जाएँगे। कुछ देशों के मध्य गुप्त सामरिक समझौते विश्व शान्ति हेतु चिन्ता का विषय होंगे।

हिजरी संवत् 1934 के मुताबक नए इस्लामिक वर्ष (1 मुहर्रम) का प्रारम्भ 16 नवम्बर, 2012 ई. शुक्रवार, मूल नक्षत्र कालीन वृष लग्न में हो चुका है। लग्नेश शुक्र **पंचम भाव** (प्रशासनिक बुद्धि) में नीच राशि (कन्या राशि, जोकि पाकिस्तान, टर्की, बगदाद, ग्रीस आदि की भी राशि है) में पड़ा है। सप्तम भाव (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध) में सूर्य, राहु का अशुभ योग बना हुआ है। ग्रह स्थिति के अनुसार **बंगलादेश, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, सीरिया, ईराक, युगाण्डा, जार्डन, श्याम, मिस्र आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में राजनैतिक एवं सामाजिक** हालात अनिश्चित रहेंगे। उपरोक्त देशों प्रमुख नेतृत्व सरकारी व सुरक्षा-कर्मचारियों को अफगानी आतंकवादी कट्टर संगठनों द्वारा गम्भीर हिंसक चुनौतियों का सामना रहेगा। आतंकी हमलों एवं विस्फोटक घटनाओं के कारण सामान्य बेकसूर जनता जुल्मों का शिकार होगी।

मुस्लिम राष्ट्रों की वर्ष कुण्डली

नववर्ष प्रवेश कुण्डली और वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली-दोनों में ग्रह विश्लेषण से लक्षित होता है कि विश्व के अधिकांश देश अपने-अपने देशों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से घातक परमाणु हथियारों के संग्रह करने की दौड़ में शामिल रहेंगे। विश्व की दोनों बड़ी शक्तियाँ रूस किंवा चीन भी अरब एवं खाड़ी देशों में अमेरिका व कुछ अन्य यूरोपीय देशों का हस्तक्षेप सहन नहीं करेंगे। विश्व के प्रमुख देशों के मध्य आपसी टकराव एवं अवरोधों के बावजूद अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि विकसित देश तथा विकासशील देश, भारत, जापान, सिंगापुर, मलेशिया, हांगकांग, ईरान, पाकिस्तान आदि देशों के मध्य व्यापारिक एवं राजनीतिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी। विभिन्न देशों में व्यापारिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान, मनोरंजन, दूरसंचार, कम्प्यूटर्ज़, साईंस, हस्तशिल्प, तकनीकि क्षेत्रों, न्यूक्लियर साईंस, परमाणु ऊर्जा, दूरसंचार, अन्तरिक्ष विज्ञान, शिक्षा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति होगी।

सन् 2013 ई. में ग्रहगोचर और विश्व के हालात

सन् 2013 ई. के प्रारम्भ में ही **पौष मास** में पाँच शनि एवं **पाँच रविवार** होने से विश्व में अनेक देशों के समीकरणों में परिवर्तन एवं कहीं विद्रोहियों एवं तानाशाही सत्ताधारियों के बीच खूनी टकराव एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के समाचार मिलेंगे, विशेषकर **लीबिया, ईराक, सीरिया, स्याम, पाकिस्तान, अफगानिस्तान** आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में दहशतगर्दियों द्वारा हिंसक वारदातें होने के संकेत हैं-

यत्र मासे रविवाराः जायन्ते पंच सततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंग स्यात् दास्ते च महद्भयम्।।

कहीं युद्ध, सैनिक टकराव एवं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) होने के योग हैं। **फाल्गुन** मास में **पाँच मंगलवार** होने से विश्व में किसी प्रमुख नेता के निधन या अपदस्थ होने एवं शासन परिवर्तन होने के योग हैं-

यत्र मासे महीसूनो पंचवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।

चान्द्र वैशाख मास (26 अप्रै. से 26 मई) में **पाँच शनिवार** होने से भारत, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, नेपाल, सीरिया, लीबिया, कोरिया आदि अनेक देशों में आर्थिक संकट के बादल मंडराने लगेंगे। उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी होगी। सामान्य लोगों का जीना दूभर हो जाएगा। कहीं प्राकृतिक अपदाओं से भूस्खलन, भूकम्प, अग्किाण्ड आदि प्राकृतिक उत्पात एवं पूर्वोत्तरी मुस्लिम देश में छत्रभंग होने के संकेत हैं-

शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणीः।
ईशान देश भङ्गश्च वह्णि दाहो महर्धता।।

अप्रैल, मई एवं जून-तीन महीनों में क्रमशः मीन, मेष एवं वृष राशियों पर चार एवं **पाँच ग्रही** योग बनने से किसी खाड़ी देश-युगाण्डा, सीरिया, मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि देशों में आतंकी, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत मिलते हैं-

एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति मही सर्वां रूधिरेण जलेन वा।।

31 मई से गुरू अतिचार गति से मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा, शनि तुला राशि में पहले से वक्र गति से संचार कर रहा है, जिससे खाड़ी देशों एवं अन्य मुस्लिम देशों जैसे-पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सीरिया आदि देशों में युद्ध भय एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं-

अतिचार गते जीवे वक्री भूते शनिश्चरे।
हा ! हा ! भूतं जगत् सर्वं रूण्डमालां महीतले।।

5 जुलाई से 4 अक्तू. के बीच **मंगल-शनि** के मध्य परस्पर दृष्टि सम्बन्ध होने से चीन, जापान, बंगलादेश, नेपाल तथा अमेरिका, मैक्सिीको व यूरोप के कुछ देशों में, भूस्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट, समुद्री, तूफान, यान दुर्घटनाओं या प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन-धनादि की भारी क्षति होने के संकेत हैं।

तुला राशिस्थ शनि का प्रभाव

वि. संवत् २०७० के दौरान सारा वर्ष शनि तुला राशि में एवं स्वाती व विशाखा नक्षत्रों में संचार करेगा। तुला राशि में संचार का गोचरफल शास्त्र में अशुभ एवं अनिष्टकर लिखा

में संचार करेगा। तुला राशि में संचार का गोचरफल शास्त्र में अशुभ एवं अनिष्टकर लिखा गया है। विश्व में उपद्रव, अग्निकाण्ड, हिंसक एवं विध्वंसकारी घटनाएँ अधिक होंगी–

सूर्य पुत्रे तुले जाते हि अग्न्युपद्रवं आदिशेत्।
सप्त धान्य महर्घाणि मेदिनी नष्टकारिका।।

दैनिक उपभोग्य एवं आवश्यक वस्तुओं में जबरदस्त तेजी रहने के संकेत हैं। अधिकांश **देश आर्थिक मन्दी का शिकार होंगे।**

विश्व के कुछ अन्य देश

अमेरिका (America)—इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। वर्ष प्रवेश कुं. तथा वर्षेश (जगत् लग्न) दोनों कुण्डलियों में राशि स्वामी बुध अस्तंगत स्थिति में है। फलस्वरूप अमेरिका के वर्तमान नेतृत्व (ओबामा) को आगामी (भावी) चुनावों में गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। विपक्ष द्वारा देश में व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में व्याप्त मन्दी का मुख्य उत्तरदायित्व प्रैज़िडैण्ट ओबामा को ठहराए जाने से उनकी प्रतिष्ठा को भारी ठेस पहुँचेगी। सीरिया, स्याम, यमन आदि खाड़ी देशों में हस्तक्षेप के सम्बन्ध में रूस, चीन आदि देशों के साथ राजनैतिक टकराव एवं विरोध का सामना रहेगा। अफगानिस्तान में अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए पाकिस्तान को आर्थिक सहायता का क्रम जारी रखेगा। भारत के साथ भी राजनैतिक एवं कूटनीतिक सम्बन्ध द्वारा यथावत् बनाए रखेगा। राष्ट्रपति ओबामा द्वारा किसी विशेषवर्ग (लातीनी) को खुश करने के लिए नई इमीग्रेशन नीति एवं आव्रजन के नियमों में परिवर्तन करने की घोषणा करेंगे। परमाणु एवं अन्तरिक्ष कार्यक्रमों को विशेष प्रोत्साहित करेगा।

पाकिस्तान (Pakistan)–जगत् लग्न कुं. तथा वर्ष कुण्डली में इसकी प्रभावराशि (कन्या) का स्वामी नीचस्थ होकर पड़ा है जबकि मुस्लिम राष्ट्रों की कुं. में इसकी राशि पर शुक्र भी नीच राशि का है तथा शनि साढ़साती का असर भी अभी रहेगा। ग्रह स्थिति के अनुसार पाकिस्तान का सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक हालात अस्थिर एवं अनिश्चित रहेंगे। तानाशाही सैनिक दबाव तथा जनता की अमरीका विरोधी भावनाओं के दृष्टिगत नवनिर्वाचित प्रधानमन्त्री राजा परवेज़ अशरफ़ का पूरे कार्यकाल तक सत्तारूढ़ बने रहना संदिग्ध रहेगा। पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात उलझनपूर्ण रहेंगे। अफगानी सीमाओं से आतंकियों की घुसपैठ बढ़ेगी। कुछ शीर्षस्थ नेताओं की दोषपूर्ण नीतियों के कारण मुल्क के कुछ हिस्सों में दहशतगर्दी की हिंसक एवं विस्फोटक घटनाओं के कारण बेकसूर लोगों को अपने अमूल्य जीवन गँवाने पड़ेंगे। भारत के साथ शान्ति वार्ताओं के क्रम चलेंगे, परन्तु कोई ठोस परिणाम नहीं निकल पाएँगे।

वि. सम्वत् २०७० में ग्रह स्थिति और भारतवर्ष

जन्म कुं. स्वतंत्र भारत
15 अग., 1947 ई.
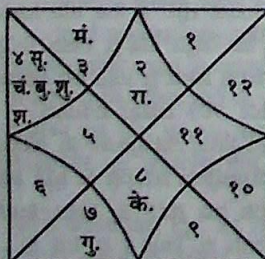
कुं. गणतंत्र दिवस
26 जन., 1950 ई.
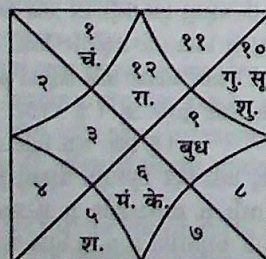
कुं. स्वतंत्र भारत (66वां वर्ष)
15 अग. 2012-13 ई.
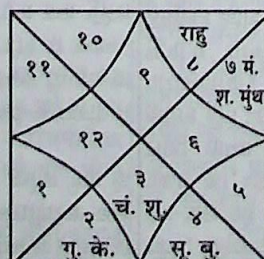
स्व. भारत वर्ष 67वाँ
15-08-2013 ई.
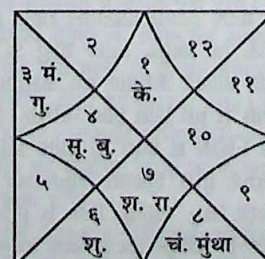
कुं. गणतन्त्र दिवस
26 जन. 2013 ई. वर्ष 64वाँ
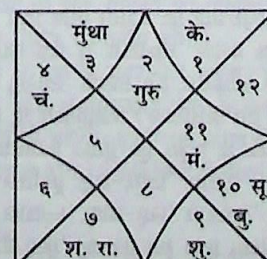
स्वतन्त्र भारत के 66वें साल की वर्ष कुण्डली में भारत धनु में प्रविष्ट हो चुका है। वर्ष लग्न का स्वामी ग्रह गुरू छटे भाव में शत्रु राशिगत होकर केतु युक्त है। ग्रह स्थिति के अनुसार आगामी वर्ष केन्द्रिय भारत सरकार तथा सामान्य प्रजा के लिए गम्भीर चुनौतियों एवं कठिन समस्याओं से भरे होंगे। देश के पूर्वी (असम, मेघालय आदि) सीमावर्ती इलाकों में जातीय दंगा-फिसाद तथा पूर्वोत्तरी भागों में माओवादी किंवा नक्सलवादी आतंकियों हिंसक वारदातों के कारण निर्दोष व्यक्तियों के हिंसा का शिकार होने के संकेत मिलते हैं।

द्वितीयेश (आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति का स्वामी) शनि एकादश स्थान में मंगल युक्त होकर मुंथा के साथ है। फलस्वरूप व्यापारिक क्षेत्रों में बढ़ता हुआ मुद्रा प्रसार, तीव्र

गति से बढ़ती जनसंख्या, दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों अत्यधिक वृद्धि, देश में दिन-प्रतिदिन बढ़ता भ्रष्टाचार, बेईमानी, कानून और व्यवस्था की समस्या, बेरोज़गारी, दुर्भिक्ष (सूखा) एवं अनेक राज्यों में बिजली और पेयजल का संकट इत्यादि बुनियादी समस्याओं में अत्यधिक वृद्धि के कारण सामान्य लोगों का जीना दूभर हो जाएगा। सामान्य लोगों में वर्तमान प्रधानमन्त्री एवं यू.पी.ए. II सरकार **की विश्वसनीयता में ज़बरदस्त कमी आएगी।**

18 अग. से 4 अक्तू. के मध्य **मंगल-शनि** के बीच पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध होने तथा **स्वतन्त्र-भारत के 67वें वर्ष की कुण्डली में अष्टमभाव में मुंथा नीचराशिस्थ चन्द्र युक्त होने से केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में विशेष** परिवर्तन होने तथा किसी मूर्धन्य नेता के अपदस्थ या आकस्मिक निधन होने के योग पाए जाते हैं।

गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी, 2013 ई.) के 64वें साल की वर्ष-कुण्डली में भारतवर्ष वृष लग्न में प्रवेश करेगा। वर्ष लग्नेश शुक्र अष्टम भाव (आकस्मिक विपत्ति या दुर्घटना भाव) में शत्रु राशि, धनु में है, तथा अष्टमेश गुरु लग्न में स्थित होने से स्थान-विपर्यय योग बना है, और अष्टमभावस्थ शुक्र पर मुंथा की विशेष दृष्टि पड़ना तथा मुंथेश बुध का भाग्य स्थान में होना इत्यादि स्थितियां संकेत करती हैं कि वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग (प्रथम 6 महीने) प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह तथा यू.पी.ए. सरकार के लिए संकटपूर्ण होंगे। देश के भीतर आन्तरिक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियां अस्थिर एवं चुनौतिपूर्ण होंगी। दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में उत्तरोत्तर वृद्धि एवं आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण सामान्य लोगों के धीरज का बाँध टूटने की कगार पर होगा। दिल्ली तथा देश के विभिन्न प्रदेशों में जबरदस्त महँगाई एवं व्याप्त भ्रष्टाचार, काला धन एवं टैक्सों में भारी वृद्धि आदि समस्याओं को लेकर यू.पी.ए. सरकार के विरोध में लोग अपना आक्रोश (गुस्सा) भूख हड़ताल, अनशन, राष्ट्रव्यापी जन-आन्दोलन के रूप में करेंगे। भारत की प्रभाव राशि मकर पर सूर्य बुध का योग बना हुआ है, तथा राशिपति शनि छटे भाव में राहु युक्त होकर स्थित है। ध्यान रहे, संवत् २०७० में शनि वर्ष का मन्त्री भी है। जिस कारण यू.पी.ए. के प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री, वित्त-मन्त्री आदि गठबन्धन सरकार की मजबूरियों के दृष्टिगत बढ़ती महँगाई, भ्रष्टाचार एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाली देशव्यापी, विपत्तियों के प्रति लाचार रहेंगे। कोई प्रभावी कदम नहीं उठा पाएंगे।

देश की उत्तर-पूर्वी सीमाओं पर तथा सीमावर्ती क्षेत्रों में माओवादी नक्सलवादी गुटों सहित चीनी सेनाओं का अतिक्रमण योजनाबद्ध साजिश के तहत जारी रहेगा। चीन के साथ युद्ध के बादल सतत मंडराते रहेंगे। इसके अतिरिक्त पश्चिमी सीमाओं पर तालिबानी संगठनों एवं आतंकी ग्रुपों द्वारा विस्फोटक हथियारों के साथ तथा नकली भारतीय करंसी सहित घुसपैठ करने की कुचेष्टाएँ करते रहेंगे। इस प्रकार भारत के शान्तिपूर्ण लोकतान्त्रिक ढाँचे को हानि पहुँचाने के सतत प्रयास करेंगे। चीन के साथ युद्ध का खतरा बराबर बना रहेगा।

भारत को अपने सुरक्षात्मक प्रबन्धों की ओर मज़बूत करने की आवश्यकता होगी तथा भारत सरकार को चीन, पाकिस्तान आदि पड़ोसी देशों की गुप्त एवं कुटिल सैन्य-गतिविधियों से चौकस रहना होगा।

केन्द्रिय सरकार की दोषपूर्ण नीतियों के कारण देश के साधन सम्पन्न धनी लोग और अमीर तथा अधिकांश सामान्य एवं साधारण लोग जबरदस्त महँगाई की चक्की में पिसते रहेंगे। दैनिक उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में आशातीत तेजी, बिजली एवं पानी विशेषकर पेय-जल की आपूर्ति में कमी, पैट्रोल, गैस, डीज़ल, खाद्यान्न, खाद्य-तेल, सब्ज़ियां, सभी प्रकार की दालें, दूध-पनीर, फलादि सभी उपभोग्य वस्तुओं जैसे-सोना, चान्दी, पीतल, लोहा, ताम्बा, स्टील आदि के थोक व परचून दाम साधारण लोगों की पहुँच से दूर एवं कठिन होते जाएँगे। वस्तुतः आने वाले वर्ष में भारतवर्ष के राजनीतिक (आन्तरिक एवं बाह्य परिस्थितियां) सामाजिक एवं आर्थिक हालात अत्यन्त क्लिष्ट, कठिन एवं संघर्षपूर्ण होंगे। यू.पी.ए. सरकार के लिए अग्नि परीक्षा का वर्ष होगा। देश में भ्रष्टाचार, काला बाज़ार उन्मूलन आदि को लेकर स्वतन्त्रता सेनानी अन्ना हज़ारे तथा बाबा रामदेव जी द्वारा संचालित सत्यग्रह, अनशन व जन आन्दोलन का देशव्यापी प्रभाव आगामी चुनावों में अवश्य पड़ेगा।

वि. सम्वत् २०७० में गोचरग्रह और भारत वर्ष

सन् 2013 ई. के प्रारम्भ में चांद्र पौष मास (1 जन. से 27 जन.) के मध्य पाँच शनि एवं पाँच रविवार होने से अनाजादि दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में जबरदस्त तेज़ी होने से लोगों में क्रोध, भय एवं अशान्ति बढ़ेगी। कुछ स्थलों पर लोगों में क्लिष्ट (पेचीदा) प्रकार के रोगों की व्याप्ति होगी। जन-आन्दोलन, उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी।

शनिवारा यदा पंच जायन्ते रविपंचकम्।
महर्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला पृथिवी।।

सन् 2013 ई. के वर्षारम्भ से वर्षान्त तक शनि (जोकि भारत की प्रभावराशि मकर का राशिस्वामी भी है) एवं राहु का योग बना रहेगा। जिसके प्रभावस्वरूप भारत में राजनैतिक समीकरणों में विशेष परिवर्तन देखने को मिलेंगे। कहीं उपद्रव हिंसक घटनाएं एवं युद्ध जैसे हालात बनेंगे-

यदा राहुस्तुले याति क्रूरः क्रूर समन्वितः।
मेदिन्यां सस्य नाशः स्याद् दुर्भिक्षं तत्र दारूणम्।।

फाल्गुण मास (26 फर. से 27 मार्च) में पाँच मंगलवार होने से देश के कुछ भागों में उपद्रव, साम्प्रदायिक टकराव, अग्निकाण्ड, राजनैतिक टकराव एवं हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं। **केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल** में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने के योग हैं। देश के प्रमुख नेतृत्त्व के लिए अशुभ किंवा अपदस्थ होने के योग हैं-

यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।

आगे चांद्र चैत्र मास (28 मार्च से 25 अप्रैल) में **पाँच वृहस्पति** (गुरु) वार होने से देश के कुछ भागों जैसे-असम, कश्मीर, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तरी बिहार-उड़ीसा, गुजरात आदि प्रदेशों में उपद्रव, आतंक एवं हिंसा की घटनाएँ होने के संकेत हैं। देश में भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी एवं अत्यन्त महँगाई के विरुद्ध अनेक समाजसेवी संगठन जैसे-अन्ना हज़ारे, बाबा रामदेव आदि दोषपूर्ण सरकारी नीतियों के विरुद्ध जबरदस्त जन-आंदोलन चलाएँगे। जिनका सरकारी तंत्र पर स्पष्टतः प्रभाव दिखलाई देगा-

यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः।
विग्रह पश्चिमी देशे खड्ग युद्धं जायते।।

सीरिया, स्याम तथा पश्चिमी एवं यूरोपीय देशों में भी कहीं आतंकी एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं।

13 अप्रैल को **वैशाख संक्रान्ति, शनिवार** को होने से सर्वप्रकार के अनाज बहुत महंगे होंगे। लोगों में विशिष्ट प्रकार के रोग होंगे। राजनेताओं और लोगों के मध्य टकराव हों तथा कहीं दुर्भिक्ष एवं युद्ध जैसी स्थितियां बनेंगी।

सौरेश्चवारे रवि संक्रमश्चेद्दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्।
पृथ्वी सरोगानृपतेः प्रजासु भवेन्महायुद्धभयं तदानीम्।।

25 अप्रैल को खण्ड चन्द्रग्रहण होने से खाद्यान्न में तेजीकारक होगा।

28 अप्रैल से 4 मई तक मेष राशि पर सूर्य-बुध, मंग-केतु आदि का पंचग्रही योग, तदनन्तर **5 मई से 12 मई तक** इसी राशि पर चारग्रही बनाने से देश में अनेक स्थानों अर्थात् प्रदेशों एवं यू.पी.ए. सत्तारूढ़ प्रमुख नेता के लिए अशुभ फलकारी होगा-

चत्वारः पंचवा खेटा बलिनस्त्वेक राशिगाः।
राज्ञां बहुभय दद्युः अरिभिः दुखदा मताः।।

देश को अनेक प्रकार से आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओं का भय होगा। **12 अप्रैल से 22 मई के बीच शनि-मंगल** ग्रहों के मध्य समसप्तक योग बना हुआ है। तथा **14 मई से 27 मई** के मध्य वृष राशि पर पुनः **चतुर्ग्रही योग** घटित होगा। इस **कालावधि में राजनीतिक** हालात अस्थिर एवं संघर्षपूर्ण होंगे। देश की अधिकांश विकास योजनाओं की गति धीमी रहेगी।

चान्द्र ज्येष्ठ मास (26 मई से 23 जून) में पाँच **रविवार** होने से देश में कहीं अनाज की कमी हो, अत्यधिक महंगाई व अकाल जैसी स्थिति बने। कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) के संकेत मिलते हैं। अनिश्चितताओं के कारण लोगों में भय व आतंक रहे-

यत्र मासे रविवाराः जायन्ते पंच सततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगस्यात् दास्ते च महद्भयम्।

13 अप्रैल से 22 मई तक **शनि-मंगल** के मध्य समसप्तक योग तथा 23 मई से 4 जुला. तक शनि-मंगल मध्ये षडाष्टक योग होने से देश के कुछ प्रदेशों जैसे-उ.प्र., मध्य प्रदेश, बिहार-उड़ीसा, असम, जम्मू-कश्मीर आदि के सीमावर्ती प्रदेशों में उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं।

जून के प्रारम्भ से ही गुरु अतिचारी गति से मिथुन राशि में प्रविष्ट हो चुका है, जबकि शनि पहले से तुला राशि में वक्री अवस्था संचार कर रहा है।

फलस्वरूप **जून-जुलाई** में अतिवर्षा के कारण कहीं बाढ़ आदि से जन-धन-धान्य आदि की क्षति होगी। कहीं कम वर्षा से दुर्भिक्ष एवं अनाज की कमी होगी। सत्तारूढ़ प्रमुख नेता के लिए हानिकारक होगा। मंत्रीमण्डल में परिवर्तन के योग हैं-

यदा सौम्य ग्रहः कोऽपि अतिचारोऽपि जायते।
दुर्भिक्षं नृप पीडाच शुभं न दृश्यते क्वचित्।।

सीमावर्ती प्रदेशों पर युद्ध भय एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं।

श्रावण मास (23 जुला. से 21 अग.:) में पुनः **पाँच मंगलवार** होने से सामाजिक व राजनीतिक वातावरण के लिए शुभ नहीं। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु अथवा सत्ता परिवर्तन के योग हैं। मंगलवारी अमावस (6 अगस्त) का फल भी शुभ नहीं- **"राज्य भ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्।"** राजनीतिक रूप से अनिश्चितता की स्थिति बनेगी।

18 अग. से 4 अक्तू. के मध्य **मंगल** कर्क (नीच) राशि में आकर **शनि** के साथ पारस्परिक (4-10) दृष्टि रहेगी।

कर्क राशि में मंगल होने से सब प्रकार के अनाज महँगे होंगे। गाय, भैंस, पशुचारा, ईख आदि महँगे होंगे। मंगल की शनि पर शत्रु दृष्टि होने से चीन, पाकिस्तान आदि पड़ोसी देशों के साथ टकराव एवं सम्बन्धों में तनाव पैदा होंगे। सीमाओं पर शत्रु-सैनिकों की गतिविधियां बढ़ेंगी। सत्तारूढ़ प्रमुख नेतृत्व के लिए यह समयावधि विशेष चिन्तनीय होगी।

17 अक्तूबर को **सूर्य तुला** में प्रविष्ट होकर शनि व राहु के साथ मेल करेगा। ऐसा योग आगामी फसलों के लिए हानिकारक होगा। किसी प्रदेश में अनाजादि कमी के कारण दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। धान्यादि अभावों के कारण ग़रीबी बढ़ेगी। इससे पूर्व संग्रह किए गए खाद्यान्न धान्यादि का समुचित संग्रह करना लाभप्रदायक होगा। ज्योतिषियों के लिए भी यह योग लाभ प्रदायक होगा-

तुला राशिं यदा राहुः संस्थितः संक्रमेरवेः।
तदाभवति दुर्भिक्षं पितुः पुत्रस्य विक्रयः।।
वार्षिक संग्रहं कुर्यात् व्रीहीणां च विशेषतः।
गणकानां तथा लोके लाभः कंबलकांस्यतः।।

चा. कार्तिक मास (19 अक्तू. से 17 नवं. तक) में पांच शनिवार एवं 5 रविवारों का समावेश होने से लोगों में विचित्र प्रकार के रोग प्रकट होंगे। कहीं उपद्रव, जन-आन्दोलन,

साम्प्रदायिक दंगे एवं विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने का भय है। सीमाओं पर शत्रु की सैनिक गतिविधियाँ बढ़ेंगी।

चान्द्र मार्गशीर्ष मास (18 नवं. से 17 दिसं.) के मध्य पाँच सोमवार तथा पाँच मंगलवार समाविष्ट होने से देश में धान्यादि की फसलें अच्छी होने के संकेत हैं। जनसंख्या में वृद्धि तथा उच्चवर्ग के लिए सुख-साधन व मनोरंजन के साधन बढ़ेंगे। 5 मंगलवार होने से देश के किसी प्रमुख नेता के लिए अशुभकारी होंगे। पाक-चीनादि विरोधी देशों के साथ टकराव के होने के संकेत हैं। केन्द्रिय मंत्रीमण्डल में अथवा किसी प्रान्त में सत्ता परिवर्तन होने के योग हैं। आवश्यक वस्तुओं में जबरदस्त तेजी के कारण प्रजा में आक्रोश एवं गहन असंतोष व्याप्त होगा। 15 दिसं. को रविवार की संक्रान्ति भी देश के प्रमुख प्रधान के लिए अशुभ होगी-

संक्रान्तिरादित्य दिने न शस्ताकरोति युद्धं नृपतेरतीव।
धान्यं महर्घं प्रतिरौद्र वार्ता प्रजाभवेद् दुःखिहीनदीना।।

प्रमुख राजनैतिक दल

–कांग्रेस पार्टी–

कुण्डली कांग्रेस पार्टी

9 (लग्न), 10 मं., 8 सू. बु., 11 रा., 7 गु. शु., 12, 6, 1, 5 के., 3, 2, 4, 1 चं. श.

कांग्रेस पार्टी की कुण्डली में धनु लग्न उदित है। वर्षारम्भ से 30 मई के लग्नेश गुरु षष्ठ भाव में वृष (शत्रु) राशिस्थ होकर संचार करेगा। ता. 31 मई से लग्नेश गुरु की स्वगृही दृष्टि रहेगी। परन्तु वर्षभर शनि की दृष्टि लग्न एवं राशि पर रहेगी। फलस्वरूप सन् 2012 ई. के अन्त या मई, 2013 ई. तक में कुछ राज्यों (हिमाचल, गुजरात, दिल्ली, महाराष्ट्र) में चुनाव हुए तो कांग्रेस पार्टी को हानि होने की सम्भावना रहेगी। ता. 23 मई से 18 अग. तक मंगल, अपरं च 31 मई से वर्षान्त तक गुरु की दृष्टि रहने से कुछ राज्यों में कांग्रेस की स्थिति बेहतर होगी। नए राजनीतिक मंच बनने के बावजूद कुछ राज्यों में कांग्रेस की स्थिति सुदृढ़ होगी। वर्ष के उत्तरार्ध में लोकसभा चुनावों की आहट होने के कारण पार्टी द्वारा लोक लुभावन की विभिन्न योजनाओं की उद्घोषणाएँ की जाएंगी। कांग्रेस कोर कमेटी, संगठन में विशेष परिवर्तन संकेत हैं। **श्री राहुल गाँधी** को भी मन्त्रीमण्डल में महत्त्वपूर्ण पद प्राप्ति के योग हैं।

–भारतीय जनता पार्टी–

भाजपा की स्थापना कुण्डली में मिथुन लग्न उदित है। राशिस्वामी मंगल 25 जन. से 4 मार्च तक शत्रु राशि (कुम्भ) में तथा 18 अग. से 4 अक्तू. के मध्य नीच राशिगत संचार करेगा। परन्तु 31 मई से गुरु इस राशि पर संचार करेगा। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष के उत्तरार्द्ध में पार्टी के संगठन में विशेष फेरबदल होगा। यद्यपि वर्ष 2012 के अन्त में कुछ राज्यों में विजयी होने के बाद सत्ता के आधिपत्य की भावना से ग्रस्त होने से बचकर पार्टी संगठन की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी, अन्यथा पार्टी में कुछ बिखराव एवं अन्तर्विरोध स्पष्ट रूप से सामने आएंगे। कुछ राज्यों में हार के कारण विश्लेषण की आवश्यकता रहेगी, सितम्बर, 13 के बाद शीर्ष नेतृत्व में श्री गडकरी, श्री अरुणजेतली, श्री लाल कृष्ण आडवानी एवम् श्रीमती सुषमा स्वराज के प्रयासों से पार्टी में अन्तर्कलह को विराम लगेगा तथा आगामी लोकसभा चुनावों के लिए स्पष्टतः रूपरेखा तैयार की जाएगी। पार्टी संगठन एवं कोर कमेटी में विशेष परिवर्तन होंगे।

कुं. भारतीय जनता पार्टी

3 (लग्न), 4, 2, 5 मं. गु. श. रा., 1, 6, 12 सू., 9, 7, 11 बु. के., 8 चं., 10

–भारत के कुछ मुख्य प्रान्त–

हिमाचल प्रदेश–इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कर्क है। 66वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में इसकी राशि पर शनि की ढैय्या तथा प्रभावराशि का स्वामी गुरु शत्रुराशिगत होकर केतु आक्रान्त है। फलस्वरूप इस वर्ष (अगस्त, 12 के बाद) तथा आगामी वर्ष प्रदेश के लिए कठिन समस्याएँ उत्पन्न होंगी। वर्षान्त में होने वाले विधानसभा चुनावों के दृष्टिगत धूमल जी के नेतृत्व वाली **भाजपा सरकार** द्वारा कई लोकभावन योजनाओं की घोषणाएं की जाएंगी तथा गतवर्षों में भाजपा सरकार द्वारा आरम्भ तथा क्रियान्वित की गई योजनाएं-जैसे-रोज़गार उपलब्धि, गाँवों को सड़कों से जोड़ने की योजना, मुख्य शहरों के बाई-पास, सुपर स्पैशलिटी हॉस्पिटल, पेयजल आपूर्त्ति तथा कई प्रकार की सुरंगों के निर्माण (रोहतांग सुरंग) आदि को बढ़ा-चढ़ा कर बतलाया जाएगा तथा सरकार द्वारा लोगों को मुफ्त बिजली उपकरण, पैंशन, बेरोज़गारी आदि भत्ता आकर्षण सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। परन्तु साधारण वर्ग के लोगों को **प्रदेशव्यापी योजनाओं** का समुचित लाभ नहीं पहुँच पाएगा। फलस्वरूप सत्तारूढ़ दल (भाजपा) को विशेष प्रयास करने होंगे, परन्तु विधानसभा चुनावों में सत्ता विरोधी लहर तथा कांटे की टक्कर के बावजूद अन्ततः भाजपा पार्टी ही विजयी होगी। नवगठित सरकार को हिमाचल की आंतरिक सुरक्षा तथा चीन से सम्पर्क वाली सीमाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी। गगनचुम्बी महंगाई के कारण जन-साधारण लोगों में असंतोष, बेचैनी तथा प्रदेश व केन्द्र-दोनों सरकारों के खिलाफ विक्षोभ रहेगा। वर्षान्त में प्राकृतिक आपदाओं से कृषि, धन एवं लोगों की क्षति होने के योग हैं।

पंजाब–इसकी नाम राशि कन्या तथा प्रभावराशि मीन है। नव गणतन्त्र दिवस कुण्डली तथा स्वतन्त्रता दि. कु. में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस प्रदेश के आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियां विषम सी प्रतीत हो रही हैं।

ध्यान दे, पंजाब शीर्षक के सन्दर्भ में भी गतवर्षीय सं. २०६९ के दिवाकर पंचांग ...

ध्यान दे, पंजाब शीर्षक के सन्दर्भ में भी गतवर्षीय सं. २०६९ के दिवाकर पंचांग के पृष्ठ 70-कालम II पर हमारी भविष्योक्ति (प्रभु-कृपावश) अक्षरशः सत्य प्रामाणित हुई है कि–"अन्ततः अकाली-भाजपा गठबन्धन के पुनः विजयी होने के योग बनते हैं।" पुनः पृष्ठ 63 पर मुख्य कॉलम में भी इस सम्बन्ध में पढ़ें–'**कांग्रेस को आगामी विधानसभा चुनावों में पंजाब, यू.पी. आदि कुछ प्रदेशों में भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।'–इस भविष्यवाणी के लिए हमें सैंकड़ों प्रशंसा पत्र एवं टैलीफोन कॉल्स प्राप्त हुईं, जिसके लिए हम अपने पाठकों का हृदय से धन्यवाद करते हैं।**

वर्तमान अकाली-भाजपा सरकार को आगामी वर्ष **वित्तीय प्रबन्धन** की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी। व्यवस्थागत प्रबन्धन में त्रुटियों के कारण किसान, लघु उद्यमी, श्रमिक तथा बढ़ती हुई महँगाई के कारण साधारण जनता अपने आप को असहाय महसूस करेंगे। पंजाब के अधिकांश क्षेत्रों में बिजली एवं पेयजल की कमी, उपभोग्य वस्तुओं की कीमतो में जबरदस्त वृद्धि, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, कानून-व्यवस्था सम्बन्धी समस्या, लघु एवं मध्यम स्तरीय व्यापारियों पर भारी टैक्स वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों की तुष्टिकरण, बिजली कटौती आदि समस्याओं के कारण वर्तमान भाजपा-अकाली सरकार के विरुद्ध शहरी प्रजा तथा व्यापारियों में गहन असन्तोष एवं आक्रोश रहेगा।

जम्मू-काश्मीर–नाम राशि मकर तथा प्रभाव राशि तुला है। 64वें गणतन्त्र दिवस कुण्डली में इसकी प्रभावराशि तुला पर शनि उच्चस्थ होकर राहु युक्त होकर षष्ठस्थ है। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष सन् 2013 ई. में केन्द्र सरकार द्वारा की गई आर्थिक सहायता के बावजूद राज्य आत्मनिर्भर होने के स्थान पर दिनों-दिन आश्रित होता जाएगा। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं गरीबी दर, शिक्षित, बेरोजगारी की समस्या, अनाज उत्पादन में कमी, बिजली एवं पेयजल की आपूर्त्ति, अफीम ड्रग्ज की खेती, छिटपुट आतंकवादी गतिविधियों, घटनाओं के कारण प्रदेश के विकास कार्यक्रमों को हानि पहुँचेगी। पाक प्रेरित आतंकवादी संगठन घाटी में अपनी विध्वंसक कार्यवाहियां करके विश्व का ध्यान काश्मीर की ओर करने की कुचेष्टा करते रहेंगे। अनेक अवरोधों के बावजूद राज्य में **पर्यटन उद्योग** को बढ़ावा मिलेगा। अन्य विकास योजनाओं की ओर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा।

दिल्ली–इसकी प्रभावराशि मकर मानी जाती है। 64वें गणतन्त्र कुण्डली में राशिस्वामी शनि छठे भाव में यद्यपि उच्चस्थ है, परन्तु राहु युक्त तथा अष्टमस्थ एवं व्यय भाव पर अशुभ दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप इस वर्ष भी सत्तारूढ़ श्रीमती शीला सरकार को गम्भीर चुनौतिपूर्ण उलझनों का सामना करना पड़ेगा। चुनाव पूर्व सरकार परिवहन, सड़क, फ्लाई-ओवर, शिक्षा, पर्यटन तथा खेल के क्षेत्रों में विकास हेतु अनेक सुधारात्मक पग उठाएगी, परन्तु उनका लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। भ्रष्टाचार, अव्यवस्थित वितरण प्रणाली एवं बढ़ती महँगाई के कारण सत्तारूढ़ सरकार की साख एवं प्रतिष्ठा के लिए अत्यधिक क्षतिकारक सिद्ध होगी। आगामी विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी की अपेक्षा भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिलने के संकेत हैं।

हरियाणा–इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि मिथुन है। नई गणतन्त्र कुण्डली में मिथुन राशिस्थ मुंथा तथा गु. शत्रु राशिगत होने से जलवायु अनुकूल न रहने से किसान तथा सम्बन्धित वर्ग को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। गुटखे पर प्रतिबन्ध, नई लैण्ड पूलिंग योजना, मैट्रो-विस्तार, वन-संरक्षण आदि जैसे-हुड्डा सरकार द्वारा कुछ जन हितैषी निर्णयों से प्रदेश के विकास को कुछ गति अवश्य मिलेगी, परन्तु साधारण जनता तक इसका लाभ पहुँचना सन्देहास्पद रहेगा। सरकार को जन-समस्याओं की ओर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा परिस्थितयाँ विकट होंगी। असमय वर्षा, खण्ड वर्षा तथा कहीं-कहीं वर्षा के अभाव से दुर्भिक्ष, अकाल जैसी स्थिति रहेगी। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि से जनता में आक्रोश रहेगा।

राजस्थान–प्रभावराशि कर्क तथा नामराशि तुला है। 64वें गणतन्त्र कुण्डली में नाम राशि पर वर्षभर शनि-राहु का संचार प्रभाव राशि पर शनि की दृष्टि आदि गोचरस्थिति अनुसार आगामी वर्ष राज्य के लिए कठिन एवं विषम परिस्थितियाँ लेकर आएगा। साधारण जनता में महँगाई एवं सरकारी नीतियों के विरुद्ध आक्रोश एवं असन्तोष रहेगा।

उपरोक्त भविष्यवाणियाँ देश, स्थान आदि की जन्म कुण्डलियों के ग्रहों की स्थिति दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव संकेतानुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वज्ञ भविष्यवक्ता तो स्वयं भगवान् ही हैं–

"फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः।
को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।"

लेख लिपिबद्धम्–
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा
2 अगस्त, गुरुवार, सं. 2012 ई.

शुभ चिन्तकः
पं. पन्ना लाल ज्योतिषी पंचाँगकर्त्ता
पं. विवेक शर्मा ज्यो. जालन्धर।

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2013-14 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश (वर्षारम्भ में धनु में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
13 जन.	मकर	30/59	16 अग.	सिंह.	24/08
12 फर.	कुम्भ	20/01	16 सितं.	कन्या	24/03
14 मार्च	मीन	16/56	17 अक्तू.	तुला	12/00
13 अप्रै.	मेष	25/28	16 नवं.	वृश्चिक	11/48
14 मई	वृष	22/21	15 दिसं.	धनु	26/28
14 जून	मिथुन	28/56	14 जन.(14)	मकर	13/13
16 जुला.	कर्क	15/46	12 फर.	कुम्भ	26/13
			14 मार्च	मीन	23/06

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

12 अप्रै.	मेष	19/36	5 अक्तू.	सिंह	19/40
23 मई	वृष	9/13	26 नवं.	कन्या	19/33
4 जुला	मिथुन	25/11	4 फर.(14)	तुला	14/25
18 अग.	कर्क	25/59	1 मार्च	वक्री	21/52
			25 मार्च	व. कन्या	9/48

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

28 अप्रै.	मेष	18/26	10 नवं.	मार्गी	26/51
13 मई	वृष	8/39	1 दिसं.	वृश्चिक	10/04
27 मई	मिथुन	24/43	20 दिसं.	धनु	20/56
26 जून	वक्री	18/37	8 जन(14)	मकर	13/19
20 जुला.	मार्गी	23/46	26 जन.	कुम्भ	23/54
4 अग.	कर्क	21/28	6 फर.	वक्री	27/12
20 अग.	सिंह	28/55	18 फर.	व. मकर	17/43
5 सितं.	कन्या	24/55	28 फर.	मार्गी	19/34
25 सितं.	तुला	6/34	12 मार्च	कुम्भ	9/33
21 अक्तू.	वक्री	15/54			

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वृष में)

31 मई	मिथुन	6/46	6 मार्च(14)	मार्गी	16/10
7 नवं.	वक्री	10/30	संवतान्त तक मिथुन में रहेगा।		

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

10 अप्रै.	मेष	17/31	17 जुला.	सिंह	19/32
4 मई	वृष	24/28	11 अग.	कन्या	20/48
29 मई	मिथुन	10/56	6 सितं.	तुला	8/40
[illegible]	[illegible]	[illegible]	2 अक्तू.	वृश्चिक	14/54

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
5 दिसं.	मकर	14/24
21 दिसं.	वक्री	27/24
(सन् 2014 ई.)		
6 जन.	व. धनु	23/29
31 जन.	मार्गी	26/20
26 फर.	मकर	11/48
31 मार्च	कुम्भ	10/03

—शनि—

(संवतारम्भ में तुला में वक्री)

पूरे संवत् (2013-14 ई.) में तुला राशि में ही संचार करेगा।

8 जुला.	मार्गी	10/29
2 मार्च (14)	वक्री	20/58

—राहु—

(संवतारम्भ में तुला में)

पूरा संवत् तुला में ही संचार करेगा।

—केतु—

(संवतारम्भ में मेष में)

पूरा संवत् मेष में ही संचार करेगा।

—यूरेनस—

सारा संवत् मीन राशि में ही संचार करेगा।

—नैपच्यून—

सारा संवत् कुम्भ राशि में ही संचार करेगा।

—प्लूटो—

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

1 मार्च (14) से वक्री		21/52

30 मार्च (संवतान्त तक वक्री रहेगा।

बुध

26 जून	वक्री	18/37
20 जुला.	मार्गी	23/46
21 अक्तू.	वक्री	15/54
10 नवं.	मार्गी	26/51
(सन् 2014 ई.)		
6 फर.	वक्री	27/12
28 फर.	मार्गी	19/34

गुरु

7 नवं.	वक्री	10/30
6 मार्च (14)	मार्गी	16/10

शुक्र

21 दिसं.	वक्री	27/24
31 जन.(14)	मार्गी	26/20

शनि

8 जुला.	मार्गी	10/29
2 मार्च (14)	वक्री	20/58

संवतान्त तक वक्री रहेगा।

—यूरेनस—

17 जुला.	वक्री	22/49
17 दिसं.	मार्गी	23/10

—नैपच्यून—

7 जून	वक्री	13/58
14 नवं.	मार्गी	00/16

—प्लूटो—

13 अप्रै.	वक्री	01/01

ग्रहों का उदय-अस्त-2013-14 ई.

मंगल

(संवतारम्भ से अस्त)

27 जून	पूर्वोदय	17/25

बुध

30 अप्रै.	पूर्वेऽस्त	5/33
23 मई	पश्चिमोदय	5/17
1 जुला.	व पश्चिमाऽस्त	15/20
18 जुला.	व. पूर्वोदय	19/48
12 अग.	पूर्वेऽस्त	10/15
9 सितं.	पश्चिमोदय	05/24
27 अक्तू.	व. पश्चिमाऽस्त	12/49
7 नवं.	व. पूर्वोदय	23/37
5 दिसं.	पूर्वेऽस्त	9/54
19 जन.(14)	पश्चिमोदय	04/19

बुध (2014 ई.)

9 फर.	व. पश्चिमाऽस्त	23/15
21 फर.	व. पूर्वोदय	25/50

गुरु

6 जून	पश्चिमेऽस्त	21/52
2 जुला.	पूर्वोदय	22/41

शुक्र

(संवतारम्भ से अस्त है)

22 अप्रै.	पश्चिमोदय	13/50
8 जन. (14)	पश्चिमेऽस्त	25/49
15 जन.	पूर्वोदय	04/52

शनि

20 अक्तू.	पश्चिमेऽस्त	14/18
23 नवं.	पूर्वोदय	17/32

✤ ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् २०७० वि. (सं. 2013-14 ई.) ✤

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2013 ई.	नक्षत्र	चरण
13 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	25/28
17 अप्रै.	अश्वि (2)	11/11
20 अप्रै.	अश्वि (3)	21/04
24 अप्रै.	अश्वि (4)	7/08
27 अप्रै.	भर. (1)	17/21
30 अप्रै.	भर. (2)	27/42
4 मई	भर. (3)	14/12
7 मई	भर. (4)	24/46
11 मई	कृति (1)	11/29
14 मई	कृति 2 वृष	22/21
18 मई	कृति (3)	9/19
21 मई	कृति (4)	20/29
25 मई	रोहि (1)	7/43
28 मई	रोहि (2)	19/04
1 जून	रोहि (3)	6/31
4 जून	रोहि (4)	18/01
8 जून	मृग (1)	5/35
11 जून	मृग (2)	17/23
14 जून	मृग 3 मिथुन	28/56
18 जून	मृग (4)	16/45
21 जून	आर्द्रा (1)	28/33
25 जून	आर्द्रा (2)	16/29
29 जून	आर्द्रा (3)	04/21
2 जुला	आर्द्रा (4)	16/18
5 जुला	पुर्न (1)	28/08
9 जुला	पुर्न (2)	16/04
13 जुला	पुर्न (3)	03/53
16 जुला	पुर्न (4)कर्क	15/46
19 जुला	पुष्य (1)	27/37
23 जुला	पुष्य (2)	15/29
26 जुला	पुष्य (3)	27/13
30 जुला	पुष्य (4)	14/58
2 अग.	आश्ले (1)	26/31

2013 ई.	नक्षत्र	चरण
6 अग.	आश्ले (2)	14/03
9 अग.	आश्ले (3)	25/29
13 अग.	आश्ले (4)	12/50
16 अग.	मघा 1 सिंह	24/08
20 अग.	मघा (2)	11/18
23 अग.	मघा (3)	22/25
27 अग.	मघा (4)	9/21
30 अग.	पू.फा. (1)	20/09
3 सितं.	पू.फा. (2)	6/49
6 सितं.	पू.फा. (3)	17/19
10 सितं.	पू.फा. (4)	03/40
13 सितं.	उ.फा. (1)	13/56
16 सितं.	उफा 2 कन्या	24/03
20 सितं.	उ.फा. (3)	10/02
23 सितं.	उ.फा. (4)	19/53
27 सितं.	हस्त (1)	05/30
30 सितं.	हस्त (2)	14/58
3 अक्तू.	हस्त (3)	24/16
7 अक्तू.	हस्त (4)	9/26
10 अक्तू.	चित्रा (1)	18/24
13 अक्तू.	चित्रा (2)	27/16
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	12/00
20 अक्तू.	चित्रा (4)	20/33
24 अक्तू.	स्वा. (1)	05/00
27 अक्तू.	स्वा. (2)	13/14
30 अक्तू.	स्वा. (3)	21/20
3 नवं.	स्वा. (4)	05/16
6 नवं.	विशा (1)	13/04
9 नवं.	विशा (2)	20/42
13 नवं.	विशा (3)	04/20
16 नवं.	विशा 4 वृश्चि.	11/48
19 नवं.	अनु. (1)	19/09
22 नवं.	अनु. (2)	26/24
26 नवं.	अनु. (3)	9/31
29 नवं.	अनु. (4)	16/31

2013 ई.	नक्षत्र	चरण
2 दिसं.	ज्ये. (1)	23/27
6 दिसं.	ज्ये. (2)	6/16
9 दिसं.	ज्ये. (3)	13/02
12 दिसं.	ज्ये. (4)	19/46
15 दिसं.	मूल 1 धनु	26/28
19 दिसं.	मूल (2)	9/06
22 दिसं.	मूल (3)	15/43
25 दिसं.	मूल (4)	22/12
28 दिसं.	पू.षा. (1)	28/43
(सन् 2014 ई.)		
1 जन.	पू.षा. (2)	11/12
4 जन.	पू.षा. (3)	17/42
7 जन.	पू.षा. (4)	24/09
11 जन.	उ.षा. (1)	6/39
14 जन.	उषा. 2 मकर	13/13
17 जन.	उ.षा. (3)	19/46
20 जन.	उ.षा. (4)	26/23
24 जन.	श्रव. (1)	9/02
27 जन.	श्रव. (2)	15/43
30 जन.	श्रव. (3)	22/27
3 फर.	श्रव. (4)	05/14
6 फर.	धनि. (1)	12/07
9 फर.	धनि. (2)	19/09
12 फर.	धनि. 3 कुम्भ	26/13
16 फर.	धनि. (4)	9/24
19 फर.	शत. (1)	16/43
22 फर.	शत. (2)	24/05
26 फर.	शत. (3)	7/38
1 मार्च	शत. (4)	15/16
4 मार्च	पू.भा. (1)	22/57
8 मार्च	पू.भा. (2)	6/50
11 मार्च	पू.भा. (3)	14/54
14 मार्च	पू.भा. 4 मीन	23/06
18 मार्च	उ.भा. (1)	7/26
21 मार्च	उ.भा. (2)	15/58

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2013-14 ई.	नक्षत्र	चरण
24 मार्च	उ.भा. (3)	24/35
28 मार्च	उ.भा. (4)	9/23
31 मार्च	रेव. (1)	18/15

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रेव. (4) में)

2013-14 ई.	नक्षत्र	चरण
12 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	19/36
17 अप्रै.	अश्वि (2)	05/36
21 अप्रै.	अश्वि (3)	16/06
26 अप्रै.	अश्वि (4)	03/10
30 अप्रै.	भर. (1)	14/45
4 मई	भर. (2)	26/51
9 मई	भर. (3)	15/33
14 मई	भर. (4)	04/48
18 मई	कृति (1)	18/40
23 मई	कृति 2 वृष	9/13
27 मई	कृति (3)	24/21
1 जून	कृति (4)	16/07
6 जून	रोहि (1)	8/33
10 जून	रोहि (2)	25/34
15 जून	रोहि (3)	19/19
20 जून	रोहि (4)	13/48
25 जून	मृग (1)	8/55
30 जून	मृग (2)	04/43
4 जुला.	मृग 3 मिथुन	25/11
9 जुला.	मृग (4)	22/23
14 जुला.	आर्द्रा (1)	20/14
19 जुला.	आर्द्रा (2)	18/48
24 जुला.	आर्द्रा (3)	18/13
29 जुला.	आर्द्रा (4)	18/22
3 अग.	पुर्न (1)	19/06
8 अग.	पुर्न (2)	20/32
13 अग.	पुर्न (3)	22/53
18 अग.	पुर्न 4 कर्क	25/59

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2013-14 ई.	नक्षत्र	चरण
24 अग.	पुष्य (1)	05/50
29 अग.	पुष्य (2)	10/31
3 सितं.	पुष्य (3)	15/56
8 सितं.	पुष्य (4)	22/12
14 सितं.	आश्ले. (1)	5/22
19 सितं.	आश्ले (2)	13/34
24 सितं.	आश्ले (3)	22/32
30 सितं.	आश्ले (4)	8/35
5 अक्तू.	मघा 1 सिंह	19/40
11 अक्तू.	मघा (2)	7/57
16 अक्तू.	मघा (3)	21/32
22 अक्तू.	मघा (4)	12/25
28 अक्तू.	पू.फा. (1)	04/40
2 नवं.	पू.फा. (2)	22/40
8 नवं.	पू.फा. (3)	18/22
14 नवं.	पू.फा. (4)	16/21
20 नवं.	उ.फा. (1)	16/36
26 नवं.	उफा. 2 कन्या	19/33
2 दिसं.	उ.फा. (3)	25/46
9 दिसं.	उ.फा. (4)	11/51
15 दिसं.	हस्त (1)	26/49
22 दिसं.	हस्त (2)	23/38
30 दिसं.	हस्त (3)	04/03
(सन् 2014 ई.)		
6 जन.	हस्त (4)	19/01
14 जन.	चित्रा (1)	25/21
24 जन.	चित्रा (2)	7/45
4 फर.	चित्रा 3 तुला	14/25
24 फर.	चित्रा (4)	26/20
1 मार्च	वक्री	21/52
6 मार्च	व. चित्रा (3)	20/12
25 मार्च	व. चित्रा 2 कं.	9/48

बुध नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. में)

2013 ई.	नक्षत्र	चरण
12 अप्रै.	उ.भा. (1)	12/14
14 अप्रै.	उ.भा. (2)	19/39
16 अप्रै.	उ.भा. (3)	24/47
18 अप्रै.	उ.भा. (4)	27/46
21 अप्रै.	रेव (1)	04/56
23 अप्रै.	रेव. (2)	04/27
24 अप्रै.	रेव. (3)	26/26
26 अप्रै.	रेव. (4)	23/05
28 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	18/26
30 अप्रै.	अश्वि (2)	12/40
2 मई	अश्वि (3)	05/50
3 मई	अश्वि (4)	21/57
5 मई	भर. (1)	13/13
7 मई	भर. (2)	03/46
8 मई	भर. (3)	17/38
10 मई	भर. (4)	6/58
11 मई	कृति (1)	19/54
13 मई	कृति 2 वृष	8/39
14 मई	कृति (3)	21/19
16 मई	कृति (4)	10/05
17 मई	रोहि (1)	23/11
19 मई	रोहि (2)	12/47
21 मई	रोहि (3)	03/05
22 मई	रोहि (4)	18/25
24 मई	मृग (1)	10/54
26 मई	मृग (2)	04/52
27 मई	मृग 3 मिथुन	24/43
29 मई	मृग (4)	22/43
31 मई	आर्द्रा (1)	23/21
2 जून	आर्द्रा (2)	27/10
5 जून	आर्द्रा (3)	11/10
7 जून	आर्द्रा (4)	24/28

बुध नक्षत्र प्रवेश

2013 ई.	नक्षत्र	चरण
10 जून	पुर्न (1)	21/31
14 जून	पुर्न (2)	6/53
18 जून	पुर्न (3)	19/33
26 जून	वक्री	18/37
4 जुला.	व. पुर्न (2)	
10 जुला.	व. पुर्न (1)	
16 जुला.	व.आर्द्रा (4)	24/50
20 जुला.	मार्गी	23/46
24 जुला.	पुर्न (1)	18/21
29 जुला.	पुर्न (2)	
2 अग.	पुर्न (3)	
4 अग.	पुर्न 4 कर्क	21/28
6 अग.	पुष्य (1)	27/11
8 अग.	पुष्य (2)	
10 अग.	पुष्य (3)	
12 अग.	पुष्य (4)	
14 अग.	आश्ले (1)	13/27
16 अग.	आश्ले (2)	
17 अग.	आश्ले (3)	
19 अग.	आश्ले (4)	
20 अग.	मघा 1 सिंह	28/55
22 अग.	मघा (2)	
24 अग.	मघा (3)	
26 अग.	मघा (4)	
27 अग.	पू.फा. (1)	22/38
29 अग.	पू.फा. (2)	
31 अग.	पू.फा. (3)	
2 सितं.	पू.फा. (4)	
3 सितं.	उ.फा. (1)	27/25
5 सितं.	उफा.2 कन्या	24/55
7 सितं.	उ.फा. (3)	
9 सितं.	उ.फा. (4)	
11 सितं.	हस्त (1)	23/39
13 सितं.	हस्त (2)	
18 सितं.	हस्त (4)	
20 सितं.	चित्रा (1)	14/31
22 सितं.	चित्रा (2)	

2013 ई.	नक्षत्र	चरण
25 सितं.	चित्रा 3 तुला	6/34
27 सितं.	चित्रा (4)	
30 सितं.	स्वा. (1)	6/33
2 अक्तू.	स्वा. (2)	
5 अक्तू.	स्वा. (3)	
8 अक्तू.	स्वा. (4)	
12 अक्तू.	विशा. (1)	11/47
17 अक्तू.	विशा. (2)	
21 अक्तू.	वक्री	15/54
25 अक्तू.	व. विशा. (1)	
29 अक्तू.	व. स्वा. (4)	10/37
31 अक्तू.	व. स्वा. (3)	
3 नवं.	व. स्वा. (2)	
6 नवं.	व. स्वा. (1)	
10 नवं.	मार्गी	26/51
15 नवं.	स्वा. (2)	
18 नवं.	स्वा. (3)	
21 नवं.	स्वा. (4)	
24 नवं.	विशा. (1)	12/03
26 नवं.	विशा (2)	
28 नवं.	विशा (3)	
1 दिसं.	विशा. 4 वृशि.	10/04
3 दिसं.	अनु. (1)	15/03
5 दिसं.	अनु. (2)	
7 दिसं.	अनु. (3)	
9 दिसं.	अनु. (4)	
12 दिसं.	ज्ये. (1)	7/20
14 दिसं.	ज्ये. (2)	
16 दिसं.	ज्ये. (3)	
18 दिसं.	ज्ये. (4)	
20 दिसं.	मूल (1) धनु	20/56
22 दिसं.	मूल (2)	
24 दिसं.	मूल (3)	
26 दिसं.	मूल (4)	
29 दिसं.	पू.षा. (1)	7/21
31 दिसं.	पू.षा. (2)	

2014 ई.	नक्षत्र	चरण
(सन् 2014 ई.)		
2 जन.	पू.षा. (3)	
4 जन.	पू.षा. (4)	
6 जन.	उ.षा. (1)	12/48
8 जन.	उषा 2 मकर	13/19
10 जन.	उ.षा. (3)	
12 जन.	उ.षा. (4)	
14 जन.	श्रव. (1)	13/14
16 जन.	श्रव. (2)	
18 जन.	श्रव. (3)	
20 जन.	श्रव. (4)	
22 जन.	धनि. (1)	14/40
24 जन.	धनि. (2)	
26 जन.	धनि 3 कुम्भ	23/54
29 जन.	धनि. (4)	
1 फर.	शत. (1)	14/49
7 फर.	वक्री	03/12
12 फर.	व. धनि (4)	14/11
15 फर.	व. धनि (3)	
18 फर.	व.धनि 2 मक.	17/43
22 फर.	व. धनि (1)	
28 फर.	मार्गी	19/34
7 मार्च	धनि. (2)	
12 मार्च	धनि. 3 कुम्भ	9/33
15 मार्च	धनि. (4)	
18 मार्च	शत. (1)	18/47
21 मार्च	शत. (2)	
23 मार्च	शत. (3)	
26 मार्च	शत. (4)	
28 मार्च	पू.भा. (1)	20/10
30 मार्च	पू.भा. (2)	

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रोहि. (3) में)

13 अप्रै.	रोहि (4)	17/32
30 अप्रै.	मृग (1)	16/56
16 मई	मृग (2)	8/16

गुरु नक्षत्र प्रवेश

2013-14 ई.	नक्षत्र	चरण
31 मई	मृग (3) मिथुन	6/46
14 जून	मृग (4)	21/10
29 जून	आर्द्रा (1)	10/15
13 जुला.	आर्द्रा (2)	27/56
29 जुला.	आर्द्रा (3)	9/44
14 अग.	आर्द्रा (4)	14/04
1 सितं.	पुर्न (1)	12/43
23 सितं.	पुर्न (2)	9/07
7 नवं.	वक्री	10/30
22 दिसं.	व. पुर्न (1)	11/11
(सन् 2014 ई.)		
16 जन.	व. आर्द्रा (4)	15/15
21 फर.	व. आर्द्रा (3)	15/12
6 मार्च	मार्गी	16/10
19 मार्च	आर्द्रा (4)	21/05

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अश्वि (1) में)

10 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	17/31
13 अप्रै.	अश्वि (2)	
15 अप्रै.	अश्वि (3)	
18 अप्रै.	अश्वि (4)	
21 अप्रै.	भर. (1)	12/09
24 अप्रै.	भर. (2)	
26 अप्रै.	भर. (3)	
29 अप्रै.	भर. (4)	
2 मई	कृति (1)	7/31
4 मई	कृति 2 वृष	24/28
7 मई	कृति (3)	
10 मई	कृति (4)	
12 मई	रोहि (1)	27/32
15 मई	रोहि (2)	
18 मई	रोहि (3)	
21 मई	रोहि (4)	
23 मई	मृग (1)	24/15
26 मई	मृग (2)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2013 ई.	नक्षत्र	चरण
29 मई	मृग 3 मिथुन	10/56
1 जून	मृग (4)	
3 जून	आर्द्रा (1)	21/43
6 जून	आर्द्रा (2)	
9 जून	आर्द्रा (3)	
11 जून	आर्द्रा (4)	
14 जून	पुर्न (1)	19/50
17 जून	पुर्न (2)	
20 जून	पुर्न (3)	
22 जून	पुर्न 4 कर्क	24/59
25 जून	पुष्य (1)	18/50
28 जून	पुष्य (2)	
1 जुला.	पुष्य(3)	
3 जुला.	पुष्य (4)	
6 जुला.	आश्ले (1)	18/41
9 जुला.	आश्ले (2)	
12 जुला.	आश्ले (3)	
14 जुला.	आश्ले (4)	
17 जुला.	मघा 1 सिंह	19/32
20 जुला.	मघा (2)	
23 जुला.	मघा (3)	
25 जुला.	मघा (4)	
28 जुला.	पू.फा. (1)	21/48
31 जुला.	पू.फा. (2)	
3 अग.	पू.फा. (3)	
6 अग.	पू.फा. (4)	
8 अग.	उ.फा. (1)	25/35
11 अग.	उ.फा.(2)कन्या	20/48
14 अग.	उ.फा. (3)	
17 अग.	उ.फा. (4)	
20 अग.	हस्त (1)	7/17
22 अग.	हस्त (2)	
25 अग.	हस्त (3)	
28 अग.	हस्त (4)	
31 अग.	चित्रा (1)	15/30

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2013-14 ई.	नक्षत्र	चरण
6 सितं.	चित्रा 3 तुला	8/40
9 सितं.	चित्रा (4)	
11 सितं.	स्वा. (1)	26/40
14 सितं.	स्वा. (2)	
17 सितं.	स्वा. (3)	
20 सितं.	स्वा. (4)	
23 सितं.	विशा (1)	17/54
26 सितं.	विशा (2)	
29 सितं.	विशा (3)	
2 अक्तू.	विशा 4 वृशि.	14/54
5 अक्तू.	अनु. (1)	14/44
8 अक्तू.	अनु. (2)	
11 अक्तू.	अनु. (3)	
14 अक्तू.	अनु. (4)	
17 अक्तू.	ज्ये. (1)	19/41
20 अक्तू.	ज्ये. (2)	
23 अक्तू.	ज्ये. (3)	
27 अक्तू.	ज्ये. (4)	
30 अक्तू.	मूल 1 धनु	14/25
2 नवं.	मूल(2)	
6 नवं.	मूल (3)	
9 नवं.	मूल (4)	
13 नवं.	पू.षा. (1)	10/44
17 नवं.	पू.षा. (2)	
20 नवं.	पू.षा. (3)	
25 नवं.	पू.षा. (4)	
29 नवं.	उ.षा. (1)	27/14
5 दिसं.	उषा 2 मकर	14/24
12 दिसं.	उ.षा. (3)	
21 दिसं.	वक्री	27/24
30 दिसं.	व. उ.षा. (2)	
(सन् 2014 ई.)		
6 जन.	व. उषा 1 धनु	23/29
12 जन.	व. पू.षा. (4)	12/33
18 जन.	व. पू.षा. (3)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2013-14 ई.	नक्षत्र	चरण
31 जन.	मार्गी	26/20
5 फर.	पू.षा. (3)	
15 फर.	पू.षा. (4)	
21 फर.	उ.षा. (1)	14/01
26 फर.	उषा. 2 मकर	11/48
2 मार्च	उ.षा. (3)	
6 मार्च	उ.षा. (4)	
10 मार्च	श्रव. (1)	19/37
14 मार्च	श्रव. (2)	
17 मार्च	श्रव. (3)	
21 मार्च	श्रव. (4)	
24 मार्च	धनि. (1)	21/03
27 मार्च	धनि (2)	
31 मार्च	धनि 3 कुम्भ	10/03

शनि नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में व. स्वा. (3) में)

9 मई	व. स्वा. (2)	15/58
8 जुला.	मार्गी	10/29
3 सितं.	स्वा. (3)	26/30
7 अक्तू.	स्वा. (4)	16/48
5 नवं.	विशा (1)	04/29
3 दिसं.	विशा (2)	11/09
(सन् 2014 ई.)		
5 जन.	विशा (3)	8/30
2 मार्च	वक्री	20/58

राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में विशा (2) में)

28 अप्रै.	विशा (1)	14/15
30 जून	स्वा. (4)	11/38
1 सितं.	स्वा. (3)	9/15
3 नवं.	स्वा. (2)	7/00
(सन् 2014 ई.)		
4 जन.	स्वा. (1)	28/37
9 मार्च	चित्रा (4)	8/00

केतु नक्षत्र प्रवेश

2013-14 ई.	नक्षत्र	चरण
(संवतारम्भ में भर. (4) में)		
28 अप्रै.	भर. (3)	14/15
30 जून	भर. (2)	11/38
1 सितं.	भर. (1)	9/15
3 नवं.	अश्वि (4)	7/00
(सन् 2014 ई.)		
4 जन.	अश्वि (3)	28/37
9 मार्च	अश्वि (2)	8/00

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में उ.भा. (4) में)

9 मई	रेव (1)	12/34
17 जुला.	वक्री	22/49
28 सितं.	व. उ.भा. 4	27/16
17 दिसं.	मार्गी	23/10
(सन 2014 ई.)		
1 मार्च	रेव. (1)	22/38

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में शत. (2) में)

7 जून	वक्री	13/58
24 अग.	व. शत. (1)	02/49
14 नवं.	मार्गी	00/16
(सन 2014 ई.)		
28 जन.	शत. (2)	01/58

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.षा. (2) में)

13 अप्रै.	वक्री	01/01
13 जन.	व. पू.षा. (1)	23/06
20 सितं.	मार्गी	20/52
15 दिसं.	पू.षा. (2)	22/17

ग्रहों की अंशात्मक युतियां

(सन् 2013-14 ई.)

18 जन.	सूर्य-बुध (मकर)
8 फर.	मंग.-बुध (कुम्भ)
26 फर.	मंग.-बुध (कुम्भ)
4 मार्च	सूर्य-बुध (कुम्भ)
7 मार्च	बुध-शुक्र (कुम्भ)
28 मार्च	सूर्य-शुक्र (मीन)
7 अप्रै.	मंग.-शुक्र (मीन)
18 अप्रै.	सूर्य-मंग. (मेष)
8 मई	मंग.-बुध (मेष)
11 मई	सूर्य-बुध (मेष)
25 मई	बुध-शुक्र (वृष)
9 जुला.	सूर्य-बुध (मिथुन)
22 जुला.	मंग.-गुरु (मिथुन)
24 अग.	सूर्य-बुध (सिंह)
18 सितं.	शुक्र-शनि (तुला)
20 सितं.	शुक्र-राहु (तुला)
25 सितं.	शनि-राहु (तुला)
29 अक्तू.	बुध-शनि (तुला)
30 अक्तू.	सूर्य-राहु (तुला)
6 नवं.	सूर्य-शनि (तुला)
26 नवं.	बुध-शनि (तुला)
29 दिसं.	सूर्य-बुध (धनु)
(सन 2014 ई.)	
8 जन.	बुध-शुक्र (धनु)
11 जन.	सूर्य-शुक्र (धनु)
15 फर.	सूर्य-बुध (कुम्भ)

अमृत-कण

धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के लिए शरीर को नीरोग रखना चाहिए। नीरोग शरीर से ही सभी पुरुषार्थ प्राप्त किए जा सकते हैं।

द्विग्रही-योग—सन् 2013-14

शनि-राहु	1 जन. से संवतान्त तक (तुला)
मंग.-केतु	12 अप्रै. से 23 मई तक (मेष)
गुरु-शुक्र	4 मई से 29 मई (वृष)
सूर्य-मंग.	23 मई से 14 जून (वृष)
गुरु-शुक्र	31 मई से 22 जून (मिथुन)
सूर्य-बुध	20 अग. से 5 सितं. (सिंह)
सूर्य-बुध	16 सितं. से 25 सितं. (सिंह)
(सन 2014 ई.)	
मंग.-शनि	4 फर. से 24 मार्च (तुला)

तीनग्रही-योग—सन् 2013-14

- 4 जन. से 13 जन. → सू.+बु.+शु. (धनु)
- 15 जन. से 24 जन. → सू.+मं.+बु. (मकर)
- 12 फर. से 3 मार्च → सू.+मं.+बु. (कुम्भ)
- 4 मार्च से 13 मार्च → सू.+बु.+शु. (कुम्भ)
- 28 अप्रै. से 4 मई → सू.+बु.+शु. (मेष)
- 14 मई से 29 मई → सू.+गु.+शु. (वृष)
- 31 मई से 22 जून → बु.+गु.+शु. (मिथुन)
- 15 जून से 22 जून → सू.+बु.+शु. (मिथुन)
- 15 जून से 16 जुला. → सू.+बु.+गु. (मिथुन)
- 5 जुला. से 16 जुला. → सू.+मं.+बु. (मिथुन)
- 4 जुला. से 4 अग. → मं.+बु.+गु. (मिथुन)
- 6 सितं. से 2 अक्तू. → शु.+श.+रा. (तुला)
- 25 सितं. से 2 अक्तू. → बु.+शु.+श. (तुला)
- 25 सितं. से 1 दिसं. → बु.+श.+रा. (तुला)
- 17 अक्तू. से 16 नवं. → सू.+श.+रा. (तुला)

(सन 2014 ई.)

- 6 जन. से 8 जन. → सू.+बु.+शु. (धनु)
- 4 फर. से 24 मार्च → मं.+श.+रा. (तुला)

चतुर्ग्रही-योग—सन् 2013-14

- 21 फर. से 3 मार्च → सू.+मं.+बु.+शु. (कुम्भ)
- 10 अप्रै. से 11 अप्रै. → सू.+मं.+बु.+शु. (मीन)
- 13 अप्रै. से 28 अप्रै. → सू.+मं.+शु.+के. (मेष)

चतुर्ग्रही-योग—सन् 2013-14

- 5 मई से 12 मई → सू.+मं.+बु.+के. (मेष)
- 14 मई से 27 मई → सू.+बु.+गु.+शु. (वृषे)
- 15 जून से 20 जून → सू.+बु.+गु.+शु (मिथुने)
- 5 जुला. से 15 जुला. → सू.+मं.+बु.+गु. (मिथुने)
- 17 अक्तू. से 16 नवं. → सू.+बु.+शु.+शनि (तुला)

–पंचग्रही योग–

- 28 अप्रै. से 4 मई → सू.+मं.+बु.+शु.+के. (मेष)
- 23 मई से 27 मई → सू.+मं.+बु.+गु.+शु. (वृषे)

–समसप्तक योग–

- 12 अप्रै. से 23 मई → मंग.+शनि (मेष-तुला)
- 13 अप्रै. 13 मई → (सूर्य-शनि) (मेष-तुला)
- 30 अक्तू से 4 दिसं. → (गुरु+शुक्र) (मिथुन-धनु)
- 6 जन. से 25 फर. (2014) → गु.+शु. (मिथुन-धनु

–षडाष्टक योग–

- 4 मार्च से 11 अप्रैल → शनि-मंगल
- 23 मई से 4 जुला. → शनि-मंगल

पितृकार्य (श्राद्ध) सम्बन्धी शास्त्र-वाक्य

(1) श्राद्ध में पितरों की तृप्ति ब्राह्मणों के द्वारा ही होती है। (स्कन्दपुराण-२२१/८७)

(2) श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को निमन्त्रित करना आवश्यक है। जो बिना ब्राह्मण के श्राद्ध करता है, उसके घर पितर भोजन नहीं करते तथा शाप देकर लौट जाते हैं। (पद्मपुराण-६७/२९-३१)

(3) जो श्राद्धकाल आने पर भी काम, क्रोध अथवा भय से, पाँच कोस के भीतर रहने वाले दामाद, भानजे तथा बहन को नहीं बुलाता और सदा दूसरों को ही भोजन कराता है, उसके श्राद्ध में पितर और देवता अन्न ग्रहण नहीं करते। (पद्मपुराण)

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय विवेचन—वि.सं. २०७०

(1) श्रीदुर्गा अष्टमी (18 अप्रै., गुरुवार)

इस वर्ष चैत्र शुक्ल अष्टमी की वृद्धि होने से अष्टमी तिथि दो दिन (18-19 अप्रै., 2013 ई.) प्राप्त हो रही है। पहले दिन 60 घड़ी (पूर्णा) तथा दूसरे दिन मात्र 2 घड़ी 18 पल है। शास्त्र वचनानुसार श्रीभवानी उत्पत्ति पर्व यद्यपि नवमी युता ही ग्रहण करने का निर्देश दिया गया है।

चैत्रशुक्लाष्टम्यां भवान्या उत्पत्तिः। तत्र नवमीयुता अष्टमी ग्राह्या।। (धर्मसिन्धु)

परन्तु यदि दूसरे दिन अष्टमी तीन मुहूर्त (6 घड़ी) से कम हो, तो उस स्थिति में नवमी विद्धा को त्यागकर पहले दिन पूर्णा तिथि में ही श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, पूजन करने का विधान कहा गया है।

अतः, **श्रीदुर्गाष्टमी** पर्व 18 अप्रैल, गुरुवार, सन् 2013 ई. को ही मान्य रहेगा। इसी दिन अशोक कलिकादि पत्रों सहित शिवगौरी का पूजन करके 8 कलिका पुनर्वसु नक्षत्रकालीन भक्षण (ग्रहण) करने से दुःखों की नवृत्ति होती है।

(2) श्रीरामनवमी व्रत (19 अप्रै., शुक्रवार)

शास्त्रानुसार यह व्रत पुनर्वसु नक्षत्र युक्ता तथा मध्याह्न व्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी में किया जाता है। यथा–

चैत्र शुक्ल नवमी रामनवमी।। अस्यां मध्याह्नव्यापिन्यामुपोषण कार्यम्।। पर्वेद्युरेव मध्याह्ने सत्त्वे सैव ग्राह्या।। .... शुद्धाया नवम्या अलाभे मुहूर्त्तत्रय न्यूनत्वे वा सर्वैरप्यष्टमीविद्धैवोपोष्येत्याहुः।। इदं व्रतं नित्यं काम्यं च। (धर्मसिन्धु)

अर्थात् चैत्र शुक्ल नवमी रामनवमी है। इसे **मध्याह्न व्यापिनी में उपवास करें। पहले दिन मध्याह्न में होय तो, वही ग्रहण करें।** अपरं च-यदि दूसरे दिन शुद्ध नवमी (सूर्योदय सहित) न मिलने पर अथवा तीन मुहूर्त्त से न्यून होने पर भी सभी अष्टमी से युक्त नवमी को उपवास करें। यह व्रत नित्य और काम्य है।

उपरोक्त प्रमाणानुसार इस वर्ष 19 अप्रैल, शुक्रवार, सन् 2013 ई. को ही नवमी मध्याह्नव्यापिनी है, अतएव रामनवमी 19 अप्रैल, शुक्रवार को ही शास्त्रसम्मत् एवं ग्राह्य होगी।

यद्यपि कुछ विद्वानों का मत है कि यदि नवमी दूसरे दिन तीन मुहूर्त्त मिले तो पहिले दिन अष्टमीविद्धा मध्याह्नव्यापिनी नवमी को छोड़कर दूसरे दिन यह व्रत करना चाहिए। परन्तु इस मत को अधिक मान्यता प्राप्त नहीं है क्योंकि **वामनपुराण** में भी **मध्याह्नव्यापिनी** नवमी को ही रामनवमी व्रत करने का निर्देश है। यथा–

चैत्र शुक्ला नवमी............सैव मध्याह्नयोगेन महापुण्यतमा भवेत्। (वामन पु.)

(3) अनङ्ग-त्रयोदशी व्रत (23 अप्रै., मंगलवार)

पूर्वविद्धा चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को यह व्रत किया जाता है। इस वर्ष यह त्रयोदशी 23 अप्रैल, मंगलवार को पूर्व (द्वादशी) विद्धा है। अतएव यह व्रत 23 अप्रैल को शास्त्रसम्मत होगा।

(4) भगवान् परशुराम जयन्ती (12 मई, रविवार)

वैशाख शुक्ल पक्ष की प्रदोष-व्यापिनी तृतीया तिथि में श्रीपरशुराम जयन्ती मनाई जाती है–"**इयं रात्रिप्रथमयामव्यापिनी ग्राह्या।।**" (धर्मसिन्धु)

भविष्यपुराण अनुसार भी वैशाखशुक्ल तृतीया तिथि की रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान् श्रीपरशुराम का अंशावतार हुआ था। यथा–

वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयां पुनर्वसौ।
निशायाः प्रथम यामे समाख्यः समये हरि।।

इस वर्ष 12 मई, रविवार को ही तृतीया तिथि रात्रि प्रथम प्रहर (प्रदोष) व्यापिनी है, अतएव भगवान् परशुराम जयन्ती 12 मई, रविवार को मनाई जाएगी।

(5) श्रीगंगा दशहरा (18 जून, मंगलवार)

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को हस्त नक्षत्र में स्वर्ग से श्रीगङ्गा का अवतरण हुआ था। अतएव इस दिन गङ्गा आदि का स्नान, अन्न-वस्त्रादि का दान, जप-तप, उपासना और उपवास किया जाए तो दस प्रकार के पाप (तीन प्रकार के कायिक, चार प्रकार के वाचिक और तीन प्रकार के मानसिक) दूर होते हैं। शास्त्रों में इस पर्व की तिथि के निर्णायक वाक्य इस प्रकार वर्णित हैं–

(i) **ज्येष्ठे मासि सिति पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः।**
व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ
दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।। —(स्कन्द-पुराण)

(ii) **ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।**
हरते दश पापानि तस्माद् दशहरा स्मृता।। (ब्रह्मपुराण)

इस प्रकार, यदि दशमी दो दिन पूर्वाह्णव्यापिनी हो तो निम्न दस योगों (तत्त्वों) में से अधिक योगों का समावेश (संयोग) जिस दिन हो, उसी दिन यह पर्व होगा। ये दस योग इस प्रकार हैं–(1) ज्येष्ठ मास, (2) शुक्ल पक्ष, (3) दशमी तिथि, (4) बुधवार, (5) हस्तनक्षत्र, (6) व्यतिपात योग, (7) गर करण, (8) आनन्द योग (बुधवार व हस्त नक्षत्र का संयोग हो तो), (9) वृष का सूर्य और (10) कन्यास्थ चन्द्र।

जिस दिन उपर्युक्त योग अधिक हों, उस दिन विशेष को गंगा दशहरा सम्बन्धी स्नान, दान, जप-तप, व्रतादि करने की शास्त्राज्ञा है।

इस वर्ष (वि. संवत् २०७०) **गंगा-दशहरा** सम्बन्धी योग 18 एवं 19 जून-दो दिन प्राप्त हो रहे हैं। उपरोक्त दस तत्त्वों को अलग-अलग बाँटने पर हमें स्पष्ट हो जाएगा कि गंगा दशहरा किस दिन प्रशस्त होगा। स्कन्दपुराणानुसार तो यदि दोनों दिन इन योगों की संख्या समान हो (5-5), तो यह पर्व पहले दिन प्रशस्त होगा।

18 जून को **(i)** ज्येष्ठ मास, **(ii)** शुक्ल पक्ष, **(iii)** दशमी तिथि, **(iv)** हस्त नक्षत्र, **(v)** गर करण, **(vi)** कन्यास्थ चन्द्रमा तथा 19 जून को **(i)** ज्येष्ठ मास, **(ii)** शुक्ल पक्ष, **(iii)** दशमी तिथि, **(iv)** बुधवार, **(v)** गर करण उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में **''यत्र बहूना योगाः सा ग्राह्या''** (जिस दिन उपरोक्त दस योगों में से अधिक योग बाहुल्य प्राप्त हों, उसी दिन **गंगादशहरा** पर्व मनाना चाहिए।) के शास्त्र-वाक्य **अनुसार 18 जून, मंगलवार** को ही गंगा दशहरा पर्व मनाया जाना चाहिए।

यद्यपि **19 जून, बुधवार को** भी दशमी उदित तिथि होने के कारण प्रातः 8/44 तक भी गंगा स्नान, दान, जप पूजनादि का माहात्म्य भी रहेगा। परन्तु **हरिद्वार आदि तीर्थ पर** स्नान, मेले, दानादि, मुख्य पर्व तो 18 जून, मंगलवार को ही होगा।

श्रीगंगा पूजा मन्त्र-'' ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।''

(6) श्रीसत्यनारायण व्रत (ज्येष्ठ-पूर्णिमा) (23 जून, शनिवार)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोष्व्यापिनी एवं चन्द्रोदय व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष ज्येष्ठ की पूर्णिमा 23 जून, 2013 ई. को 17 घं. 02 मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इस दिन प्रदोष व्यापिनी नहीं होगी। इस दिन या एक दिन पूर्व पंजाब, हिमाचल आदि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में प्रदोषकाल लगभग 19 घं. 32 मिं. से 22 घं. 20 मिं. तक रहेगा। 22 जून, 2013 ई. को पूर्णिमा 20 घं. 54 मिं. पर प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसी दिन प्रदोषव्यापिनी एवं रात्रिव्यापिनी पूर्णिमा होगी। अतएव श्रीसत्यनारायण का व्रत इसी दिन (22 जून, 2013 ई.) को रखना प्रशस्त होगा।

जबकि वटसावित्री का व्रत अगले दिन 23 जून, रविवार को ही प्रशस्त होगा।

(7) मधुश्रवा तृतीया/हरियाली तीज (9/10 अग., शुक्र/शनि)

चतुर्थी-विद्धा श्रावण शुक्ल तृतीया को यह पर्व मनाया जाता है। इस वर्ष 10 अग., 2013 ई. को तृतीया तीन मुहूर्त्त से कम होने के कारण चतुर्थी विद्धा नहीं है, अतएव इसे 9 अग., 2013 ई. को ही मनाना चाहिए। इसी दिन यह पूर्णा (60 घड़ी) भी है। यथा-

....परदिने त्रिमुहूर्त्तव्याप्त्यभावे पूर्वा ग्राह्या। —धर्मसिन्धु

कुछ प्रदेशों में इसे 10 अग., शनिवार को भी मनाया जाएगा। क्योंकि जहाँ सूर्योदय 10 अग. को 5/45 (घं. मिं.) या उससे पहले होगा, वहां 10 अग. को तृतीया तिथि का मान एक मुहूर्त्त (लगभग 2 घड़ी) हो जाएगा। क्योंकि शास्त्रानुसार गौरी तृतीया आदि व्रत द्वितीया युक्त नहीं करने का निर्देश है। यथा-

अत्र तृतीया मुहूर्त्तमात्रापि परा कार्या।। द्वितीयायुक्ता न कार्या।। चतुर्थीयुतायां वैधृत्यादियोगेपि सैव कार्या।। द्वितीयायोगनिषेधस्य बलवत्त्वात्।।

अतएव जिन-जिन नगरों में (उत्तराखण्ड, पूर्वी उ. प्र., बिहार आदि), सूर्योदय 5/45 या उससे पहले होगा, वहाँ **मधुस्रवा/हरियाली तीज 10 अग.** को मनायी जाएगी। **परन्तु पंजाब, हिमाचल, हरियाणा आदि उत्तर-पश्चिम प्रदेशों में 9 अग., शुक्रवार को ही मनायी जाएगी।**

(8) नाग-पंचमी (11 अगस्त, रविवार)

नाग-पंचमी उदयकालिक श्रावण शुक्ल पंचमी तथा पर (षष्ठी) विद्धा पंचमी के दिन मनायी जाती है। यदि उदयकालिक पंचमी तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी) से कम और पहिले दिन वह तीन मुहूर्त्त से न्यून चतुर्थी से विद्ध हो रही हो, तो पहिले दिन ही नाग-पंचमी मनानी चाहिए।

''श्रावणशुद्ध पंचमी नागपंचमी। इयमुदये त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी परविद्धा ग्राह्या। परेद्यु त्रिमुहूर्त्तन्यूना पंचमी पूर्वेद्युः त्रिमुहूर्त्तन्यूनचतुर्थ्या विद्धा तदा पूर्वैव।''-धर्मसिन्धु

इस वर्ष श्रावणशुक्ल पंचमी 11 अगस्त, रविवार, सन् 2013 ई. त्रिमुहूर्त्त से कम चतुर्थी से विद्ध हुई है, जबकि 12 अगस्त को स्वयं भी त्रिमुहूर्त से कम है। अतएव शास्त्र वचन अनुसार **नाग-पंचमी 11 अगस्त, रविवार को ही शास्त्रसम्मत होगी।**

(9) रक्षा-बन्धन (20/21 अगस्त)

रक्षा-बन्धन का पवित्र पर्व भद्रा रहित अपराह्न व्यापिनी पूर्णिमा में करने का शास्त्र विधान है-**''भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा-------।''**

यदि पहले दिन अपराह्न काल भद्रा व्याप्त हो तथा दूसरे दिन उदयकालिक पूर्णिमा तिथि तीन मुहूर्त्त या तीन मुहूर्त्त से अधिक हो, तो उसी उदयकालिक पूर्णिमा (दूसरे दिन) के अपराह्न काल में रक्षाबन्धन करना चाहिए। चाहे वह अपराह्न से पूर्व ही क्यों न समाप्त हो जाएं। परन्तु यदि आगामी दिन पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त से कम हो, तो पहिले दिन भद्रा रहित प्रदोष काल में करने का विधान कहा गया है।

''अथ रक्षाबन्धनमस्यामेव पूर्णिमायां भद्रारहितायां त्रिमुहूर्त्ताधिकोदय व्यापिनी अपराह्णे प्रदोषे वा कार्यम्।।''

–धर्मसिन्धु

इस वर्ष सन् 2013 ई. में श्रावण पूर्णिमा दो दिन व्याप्त है। पूर्णिमा 20 अग., मंगलवार को प्रातः 10/22 (घं. मिं.) से आगामी दिन 21 अग., बुधवार को प्रातः 7/15 घं. मिं. तक रहेगी। 20 अग. को भद्रा (मकर राशिगत) भी प्रातः 10घं.22मिं. से रात्रि 20घं. 49मिं. तक रहेगी। अतएव, शास्त्र-वचनानुसार तो 20 अग., मंगलवार को भद्रा रहित प्रदोषकाल में अर्तात् रात्रि (20घं.49मिं. के बाद) रक्षा-बन्धन पर्व मनाया जा सकेगा।

परन्तु पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में प्राचीनकाल से उदय-व्यापिनी पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल को ही रक्षा-बन्धन पर्व मनाने का प्रचलन है। अधिकांशतः भाई-बहिन, स्नान, पूजा-पाठादि नित्यकर्मों से निवृत्त होकर निराहार रहकर शुद्धमुख सहित मंत्रपूर्वक रक्षाबन्धन करते हैं। कुछ धर्मपरायण बहनें भगवान् श्रीनारायण

अथवा श्रीकृष्ण की मूर्त्ति को रक्षासूत्र (रखड़ी) बान्धकर, तिलक एवं भोगादि लगाकर बाद में निज भ्राताओं को मंगल टीका एवं रक्षा-बन्धन करती हैं। हिमाचल, हरियाणा, पंजाबादि प्रदेशों में लोग अधिकांशत: 21 अग., बुधवार को भद्रा रहित काल में **उदय कलिक पूर्णिमा** में रक्षा-बन्धन पर्व मनाएंगे।

20 अग., मंगलवार को जो लोग भद्रा समाप्ति (20घं. 49मिं.) के बाद रक्षा-बन्धन कर सकते हैं। परन्तु अति आवश्यक परिस्थितिवश परिहारस्वरूप शास्त्रनियम अनुसार भद्रा मुख (16घं. 28मिं. से 18घं. 12मिं. तक) काल त्याग कर अपराह्न काले भद्रा पुच्छ काल (15घं. 25मिं. से 16घं. 28मिं. तक) में भी रक्षाबन्धन करना शुभ एवं ग्राह्य होगा।

कार्येत्वावश्यके विष्टेः मुखमात्रं परित्यजेत्।। (मुहूर्त्तप्रकाश)

इसके अतिरिक्त 20 अग. को चन्द्रमा मकर राशिस्थ एवं भद्रा भूलोक में होने से भी भद्रा का परिहार रहेगा।

21 अग., बुधवार को पूर्णिमा यद्यपि प्रातः 7घं. 15मिं. तक ही व्याप्त होगी, तथापि प्रादेशिक परम्परानुसार एवं आवश्यक परिस्थितिवश मध्याह्न तक भद्रारहित काल में रक्षाबन्धन का पावन कृत्य सम्पादित किया जा सकेगा।

(10) श्रीदूर्वाष्टमी व्रत (28 अगस्त, बुधवार)

भाद्रपद शुक्ल अष्टमी (पूर्वविद्धा) को सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। शास्त्रानुसार **भाद्र शुक्लाष्टमी** के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए अथवा **अगस्त्य तारा का उदय** हो चुका हो, तो उस स्थिति में पूर्ववर्ती किसी अन्य मास की अष्टमी (भाद्र कृष्ण या श्रावण शुक्लाष्टमी) में यह व्रत करना चाहिए, जब अगस्तय तारा अदृश्य (अस्तगत) हो-

सिंहार्के एव कर्त्तव्या न कन्याऽर्के कदाचन्।
सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तम्।। (स्कन्द पुराण)
अन्येऽपि-**इदं दूर्वापूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्।।** (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष भाद्र. शुक्लाष्टमी 12 सितं. को है, परन्तु अगस्त्य तारा का उदय 4 सितम्बर को हो चुका होगा। इस स्थिति में 12 सितंबर को दूर्वाष्टमी का व्रतादि करना शुभ नहीं होगा। अतएव शास्त्र निर्देशानुसार भाद्र. कृष्णाष्टमी अर्थात् 28 अगस्त, बुधवार, सन् 2013 ई. को यह व्रत करना शुभ होगा।

(11) राधाष्टमी (12 सितम्बर, गुरुवार)

भविष्यपुराण अनुसार राधाष्टमी भाद्रपद शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को मध्याह्न काल, अभिजित् मुहूर्त्त और अनुराधा नक्षत्र योग में विशेष प्रशस्त मानी जाती है। यथा-

भाद्रे मासि सिते पक्षे अष्टमी या तिथिर्भवेत्।
अस्यां दिनार्द्धेऽभिजिते नक्षत्रे चानुराधिके।।

पूजन ठीक मध्याह्न में ही करना चाहिए। इस वर्ष भाद्र शुक्ल अष्टमी तिथि 13 सितम्बर को केवल प्रातः 9घं. 35मिं. तक रहेगी। ता. 12 सितम्बर, गुरुवार को सप्तमी तिथि 11घं. 38मिं. तक है। अतएव मध्याह्न व्यापिनी अष्टमी तिथि के योग से 12 सितम्बर, गुरुवार को ही राधाष्टमी व्रत एवं उत्सव मनाना शास्त्र-सम्मत होगा। इस दिन मध्याह्न काल भी लगभग 11घं. 11मिं. से 13घं. 38मिं. तक रहेगा।

(12) श्रवण-द्वादशी (विष्णुश्रृंखल योग)

भाद्र शुक्ल पक्ष में दिन के समय मुहूर्त्तमात्र भी द्वादशी एवं श्रवण नक्षत्र का योग हो, तो श्रवण-द्वादशी व्रत किया जाता है।

यदि पहले दिन एकादशी विद्धा द्वादशी होकर दूसरे दिन भी अनुवर्तमान हो और दोनों दिन श्रवणनक्षत्र का योग भी हो, तो पहले दिन एकादशी-द्वादशी और श्रवण-इन तीनों का विष्णुश्रृंखल नामक योग होने से पहले दिन में ही उपवास करना चाहिए।

'उपोष्य द्वादशीं पुण्यां विष्णुऋक्षेण संयुताम्। एकादश्युद्भवं पुण्यं नरः प्राप्नोत्यसंशयम्।' इति नारदोक्तेः **'श्रवणेन युता चेत्स्याद् द्वादशी सा हि वैष्णवैः।। स्मार्तैश्चोपीषणीया स्यात्यजेदेकादशीं तदा'** इति माधवोक्तेश्च।

इस वर्ष श्रवण नक्षत्र भाद्र शुक्ल एकादशी एवं द्वादशी-दोनों को स्पर्श कर रहा है। फलस्वरूप **'विष्णुश्रृंखल योग'** बन रहा है। विष्णुश्रृंखल योग 15 सितम्बर की रात्रि 24/19 से प्रारम्भ होकर 16 सितम्बर, सोमवार को रात्रि 22/27 (घं. मिं.) तक रहेगा। शास्त्रानुसार रात्रि के प्रथम प्रहर तक एकादशी-द्वादशी से योग होने पर ही विष्णुश्रृंखल योग माना जाता है। रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोष) के बाद श्रवण नक्षत्र का एकादशी-द्वादशी से योग होने पर यह योग स्वीकार नहीं किया जाता। विष्णुश्रृंखल योग होने पर श्रवणद्वादशी का व्रत विष्णुश्रृंखल योग वाले दिन ही किया जाएगा।

16 सितम्बर, सोमवार, भाद्र. शुक्लद्वादशी को भी सारा दिन तथा रात्रि के प्रथम प्रहर तक विष्णुश्रृंखल योग है। अतः श्रवण द्वादशी का व्रत इसी दिन करना शुभ रहेगा।

(13) द्वितीया एवं तृतीया का महालय श्राद्ध-

आश्विन कृष्ण पक्ष (पितृ-पक्ष) में मृत व्यक्ति की जो तिथि आए, उस तिथि में पार्वण श्राद्ध करने का विधान है। पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह, प्रपितामह, सपत्नीक अर्थात् माता, दादी और परदादी सहित छः जनों का श्राद्ध होता है। इन्हें अपराह्ण व्यापिनी मृत्युतिथि के दिन करने का निर्देश है-

यथा-पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धपराह्णे तु पैतृकम्।
एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धि निमित्तकम्।।

इस वर्ष द्वितीया तिथि का श्राद्ध 21 सितम्बर को होगा, क्योंकि 21 सितं. द्वितीया तिथि अपराह्न काल को अधिक समय तक स्पर्श कर रही है। 20 सितं. को द्वितीया तिथि का अपराह्न काल से स्पर्श मात्र 40 मिं. (15/56-15/16) रहेगा, जबकि 21 सितं. को स्पर्श 53 मिं. (14/25-13/32) रहेगा।

इसी भान्ति, तृतीया तिथि का श्राद्ध भी 21 सितं. को अधिक मान्य रहेगा, क्योंकि 21 सितं. को तृतीया तिथि अपराह्न काल को अधिक समय तक स्पर्श कर रही है। 21 सितं. को तृतीया तिथि का अपराह्न काल से स्पर्श 1 घं. 31 मिं. (15/56-14/25) रहेगा, जबकि 22 सितं. को स्पर्श काल केवल 44 मिं. (14/16-13/32) रहेगा।

इस प्रकार द्वितीया एवं तृतीया तिथि का महालय श्राद्ध 21 सितम्बर को ही होगा। परन्तु जो किसी कारणवश लोग **21 सितं. को तृतीया का श्राद्ध न कर सके**, वे **22 सितं.** को भी 13घं. 32मिं. से 14घं. 16मिं. तक श्राद्ध कार्य कर सकते हैं।

(14) श्रीहनुमान जयन्ती (उ. भारत)

व्रत रत्नाकर अनुसार आश्विन (कार्तिक) कृष्ण चतुर्दशी, भौमवार की महानिशा (अर्धरात्रि) में अञ्जना देवी के उदर से श्रीहनुमान जी का जन्म हुआ था।

आश्विनस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि। भौमवारेऽञ्जनादेवी हनुमन्तमजीजनत्।।

प्रस्तुत वर्ष 1 नवम्बर, 2013 ई. को कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी निशीथव्यापनी है, अतएव श्रीहनुमान जयन्ती पर्व इसी दिन मनाना शुभ होगा। यह हनुमान जयन्ती अधिकांश उपासक उत्तर भारत में परम्परा अनुसार मनाते हैं और व्रत करते हैं, परन्तु मतान्तर में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को भी श्रीहनुमज्जन्म का उल्लेख किया है, जोकि दक्षिण भारत में मनाई जाती है।

(15) बली पूजा, गोवर्धन-अन्नकूट पूजा (4 नवम्बर)

सामान्यतः कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को ही मनाने का विधान है।

अस्यां प्रतिपदि बलि पूजा दीपोत्सवो गोक्रीडनं गोवर्धन पूजा।।--धर्मसिन्धु

परन्तु शास्त्र वचनानुसार जिस प्रतिपदा तिथि में चन्द्रदर्शन होने की सम्भावना हो, तो उस द्वितीया युक्त प्रतिपदा में गोक्रीडन, गोवर्धन पूजा एवं बली पूजा आदि कृत्य नहीं करने चाहिएं। ऐसा करने से सभी पुत्रादि का क्षय, धन हानि एवं राजा का क्षय होने का भय होता है। उस स्थिति में पूर्व विद्धा अर्थात् **अमा. युक्त प्रतिपदा** को ही बली पूजा, गोपूजा, गोवर्धन पूजा आदि कृत्य करने होंगे।

अपरंच-गवां क्रीडादिने यत्र रात्रौ दृश्येत् चन्द्रमाः।।

सोमो राजा पशून हन्ति सुरभिः पूजा कांस्तथा।।-पुराण समुच्चय

शास्त्रानुसार, यदि प्रतिपदा 9 मुहूर्त्त से कम हो, तो उस दिन चाहे चन्द्रदर्शन हो अथवा न हो, उस दिन 'स्थूल चन्द्रदर्शन' मानकर इन सभी पर्वों को पहिले दिन (अमा. युक्ता प्रतिपदा) को ही मनाना चाहिए।

यदि नवमुहूर्त्तौं नास्ति तदा बलिपूजागोक्रीडागोवर्धनपूजामार्गपाली-
-बंधनवष्टिकाकर्षणानि पूर्वविद्धप्रतिपदि कार्याणि।।--धर्मसिन्धु

परन्तु यदि प्रतिपदा सूर्योदय के बाद 9 मुहूर्त्त (18 घड़ी) से अधिक हो, तो उस दिन चाहे वास्तविक चन्द्रदर्शन सायंकाल को हो जाए, परन्तु वहाँ स्थूल चन्द्रदर्शन का अभाव मानकर गोक्रीड़ा, गोवर्धन पूजा आदि उसी दिन मनाएं जाने चाहिए।

इस वर्ष 4 नवम्बर, 2013 ई. (कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा) को चाहे चन्द्रदर्शन की प्रबल सम्भावना है, परन्तु सूर्योदय अनन्तर प्रतिपदा 23 घड़ी होने के कारण यहाँ स्थूल चन्द्रदर्शन का अभाव मानकर 4 नवम्बर को ही उपरोक्त पर्व मनाने श्रेयस्कर एवं प्रशस्त रहेंगे।

(16) तुलसी-विवाह (13/14 नवंबर)

यह पर्व कार्तिक शुक्ल एकादशी या द्वादशी तिथि में विवाह नक्षत्र काल में करने का विधान है-

एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र क्वापि दिने कार्तिक शुक्लान्तर्गतविवाह नक्षत्रेषु वा विधानादनेक कालत्वं तथापि पारणाहे प्रबोधोत्सव कर्मणा सह---- ।।(धर्मसिन्धु)

तुलसी विवाह एका. व्रत के पारणा वाले दिन रात्रि के प्रथम भाग (प्रदोषकाले) में करने का निर्देश है-(**रात्रि प्रथमभागे प्रशस्तः**)

तुलसी विवाह-आगामी वर्ष दोनों दिन-अर्थात् **13 नवम्बर, बुधवार** को उत्तराभाद्रपद नक्षत्रकालीन भद्रा (19-12 घं. मिं.) के बाद करना शुभ होगा,

तथा 14 नवम्बर, **गुरूवार को सायंकाल** के समय **रेवती नक्षत्र कालीन भी करना शुभ होगा। यद्यपि अधिकांश लोग** शास्त्रानुसार एकादशी पारणा वाले दिन **तुलसी विवाह** का शुभ कार्य करते हैं, परन्तु प्रादेशिक परम्परानुसार कुछ लोग प्रबोधिनी एका. के दिन भी विवाह नक्षत्र कालीन सायं प्रदोष काल में भी तुलसी विवाह का शुभ कृत्य करते हैं।

(17) पद्मक योग (17 नवम्बर)

कार्तिक पूर्णिमा के दिन **चन्द्रमा कृतिका** नक्षत्र पर और सूर्य विशाखा नक्षत्र पर हो तो **'पद्मक'** योग होता है, यह योग पुष्कर तीर्थ में भी दुर्लभ है।

विशाखासु यदा भानुः कृतिकासु च चन्द्रमा।

स योगः पद्मको नाम पुष्करे स्वाति दुर्लभः।। (पद्मपुराण)

इस दिन सूर्य **स्तोत्र एवं गुरू स्तोत्र का पाठ तथा सूर्य गायत्री व गुरु गायत्री मन्त्रों का पाठ तथा दोनों ग्रहों के सम्बन्ध में यथाशक्ति दान, जप तथा कृतिका स्वामी (विश्वस्वामी सूर्य)** के दर्शन किए जाएँ, तो ब्राह्मण सात जन्म तक वेद परायण और धनाढय होता है-

कार्तिक्यां कृतिका योगे च कुर्यात् स्वामिदर्शनम्।

सप्तजन्म भवेद् विप्रो धनाढयो वेदपारगः। (काशीखण्ड)

वि. सम्वत् 2070 अर्थात् सन् 2013 में यह कार्तिक **पूर्णिमा, रविवार, 17 नवम्बर, 2013 ई. कृतिका नक्षत्र, वरियान योग, सूर्य के विशाखा नक्षत्र** रहते-यह प्रशस्त **पद्मक योग बना है।** प्रातः 11/40 बाद से शुरु होकर रात्रि 8/46 तक इसका विशेष माहात्म्य रहेगा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत-महोत्सव

(28 अगस्त, बुधवार-महापुण्य प्रदायक जयन्ती योग)

श्रीमद्भागवत्, भविष्यादि सभी पुराणों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रकृष्ण अष्टमी तिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष के चन्द्रमा कालीन, अर्द्धरात्रि के समय हुआ था–

मासि भाद्रपदे, अष्टम्यां कृष्णपक्षेऽर्द्ध रात्रके।
वृष राशि स्थितो चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणी युते।। (भविष्य. पु.)

श्री कृष्णजन्माष्टमी पर्व के समय **छहों तत्त्वों भाद्र. कृष्ण पक्ष, अर्द्धरात्रिकाल, अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र** एवं **वृष का चन्द्र** और **बुधवार या सोमवार** की विद्यमानता बड़ी कठिनता से प्राप्त होती है। अनेकों वर्षों में कई बार भा. कृ. अष्टमी की अर्द्धरात्रि को वृष का चन्द्र तो होता है, परन्तु रोहिणी नक्षत्र नहीं होता। इसी कारण पंचाँग में प्रायः सप्तमी विद्धा अष्टमी को स्मार्तानां तथा नवमी विद्धा अष्टमी को वैष्णवानां लिखा होता है। इस वर्ष **28 अगस्त** को प्रायः सभी तत्त्वों का दुर्लभ योग मिल रहा है। **जोकि गत 19 वर्षों के पश्चात् बन रहा है। अर्थात् 28 अगस्त को श्रीकृष्णजन्माष्टमी को बुधवार, अर्द्धरात्रिकालीन अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्रमा का दुर्लभ एवं पुण्य प्रदायक योग बन रहा है।** प्रायः सभी शास्त्रकारों ने ऐसे **दुर्लभ योग की मुक्तकण्ठ** से महिमा गाई है। यथा **निर्णयसिन्धु** में लिखा है कि आधी रात के समय रोहिणी में यदि अष्टमी तिथि मिल जाए, तो उसमें **श्रीकृष्ण का पूजनार्चन करने से तीन जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं–**

''रोहिण्यांऽर्धरात्रे च यदा कृष्णाष्टमी भवेत्।
तस्यांऽभ्यर्चनं शौरेः हन्ति पापं त्रिजन्मजम्।।'' (निर्णयसिन्धु)

बुधवार और रोहिणी नक्षत्र का योग हो, तो ऐसी जन्माष्टमी 100 वर्षों में भी मिले-अति उत्तम है–

''भवते बुध संयुक्ता प्राजापत्यर्क्ष संयुता।।
अपि वर्षशतेनापि लभ्यतेवाऽथवा न वा।।''

'गौतमी तन्त्र' में भी इस सम्बन्ध में स्पष्टतः लिखा गया है कि **भाद्रपद कृष्णाष्टमी यदि रोहिणी नक्षत्र और सोम या बुधवार से संयुक्त** हो जाए तो वह **जयन्ती नाम** से विख्यात होती है। जन्म-जन्मान्तरों के पुण्यसंचय से ऐसा योग मिलता है। जिस मनुष्य को जयन्ती-उपवास का सौभाग्य मिलता है, उसके **कोटि जन्मकृत पाप नष्ट हो जाते हैं** तथा जन्म बन्धन से मुक्त होकर वह परम दिव्य वैकुण्ठादि भगवद् धाम में निवास करता है–

अष्टमी रोहिणी युक्ता चार्धरात्रे यदा भवेत्।
उपोष्य तां तिथिं विद्वान् कोटियज्ञफलं लभेत्।।
सोमाहणि बुधवासरे वा अष्टमी रोहिणी युता।
जयन्ती सा समाख्याता सा लम्या पुण्य संचयैः।। (गौ. तन्त्र)

अस्तु, सभी धर्म एवं निबन्ध ग्रंथों में ऐसे दुर्लभ योग की विशेष महिमा कही है। उपरोक्त शास्त्र वचनों के अनुसार 28 अगस्त, बुधवार को प्रातः ध्वजारोहण एवं संकल्पपूर्वक व्रतानुष्ठान करके **ॐ नमः भगवते वासुदेवाय। ॐ कृष्णाय वासुदेवाय गोविन्दाय नमो नमः** आदि मन्त्र जप, श्रीकृष्ण नाम स्तोत्र पाठ, कीर्तनादि तथा रात्रि को श्रीकृष्ण बाल रूप की पूजार्चन, ध्वजारोहण, झूला-झुलाना, चन्द्रार्घ्यदान, जागरण-कीर्तनादि शुभ कृत्य करने चाहिएँ। **रात्रि को बारह बजे गर्भ से जन्म** लेने के प्रतीक स्वरूप **खीरा फोड़कर एवं शंख ध्वनि सहित** भगवान् का जन्मोत्सव मनाएँ। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्वलित कर सामूहिक स्वर से श्री भगवान् की आरती-स्तुति करें। फिर गंगाजल सहित दूध-जल, पुष्पाक्षत, गन्धादि पात्र में डालकर निम्न मन्त्र द्वारा चन्द्रमा को अर्घ्य देकर नमस्कार करें–

गृहणार्घ्यं शशांक इमं रोहिण्या सहितो।। ज्योत्स्नापते
नमस्तुभ्यां नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्।।

फिर नमस्कार करके प्रार्थना करें–

त्राहि मां सर्वपापघ्न दुखशोकार्णवात् प्रभो, अर्थात्–हे प्रभो ! दुख व शोक रूपी समुद्र से मेरी रक्षा करो। तत्पश्चात् मक्खन, मिश्री-धनिया, केले आदि फलों का प्रसाद ग्रहण करें। फिर भगवान् श्रीकृष्ण के ध्यान/नाम मन्त्रों का यथाशक्ति जाप करता रहे।

''ॐ नारायणाय नमः, अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, वासुदेवाय नमः।।''

दूसरे दिन **मिष्ठान्न सहित प्रसाद बांटना, ब्राह्मण भोजन** एवं यथाशक्ति दान करके **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दुर्लभ पर्व का अवश्य पुण्य लाभ उठाना चाहिए।**

इस दिन अभीष्ट सन्तान प्राप्ति के लिए विधिपूर्वक सन्तान गोपाल स्तोत्र का पाठ करने का भी विशेष माहात्म्य होगा। इस पर्व के सम्बन्ध में संशय या संदिग्ध कुछ भी नहीं है। फिर भी **'जयन्ती योग'** के उपलक्ष्य में माहात्म्य लिखा गया है। अपने स्थानीय नगर में **'श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी'** (28 अगस्त) के दिन का चन्द्रोदय जानने के लिए पृष्ठ 13-14 देखें।

दीपावली (श्रीमहालक्ष्मी पूजन)

(3 नवम्बर, रविवार, 2013 ई०)

'ब्रह्मपुराण' के अनुसार अर्द्धरात्रि व्यापिनी अर्थात् आधी रात तक रहने वाली अमावस्या ही श्रेष्ठ होती है। यदि वह आधी रात तक न रहे तो प्रदोषव्यापिनी लेनी चाहिए–

दीपान्दत्त्वा प्रदोषे तु लक्ष्मीं संपूज्य यथाविधि।
स्वालंकृतेन भोक्तव्यं सितवस्त्रोपशोभिना।। (निर्णयसिन्धुः)

लक्ष्मी-पूजा, दीपदानादि के लिए प्रदोषकाल ही विशेषतया प्रशस्त माना जाता है।

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।
तस्यां सम्पूज्येत देवी भोगमोक्ष प्रदायिनीम्।।

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण **अमावस 3 नवम्बर, रविवार को सूर्योदय** से लेकर सायं प्रदोषव्यापिनी (18घं. 20मिं. तक) होने से दीपावली पर्व इसी दिन होगा। रात्रि 11 बजकर 03 मिन्ट तक स्वाती नक्षत्र विशेष रूप से प्रशस्त होगा। आयुष्मान योग तथा तुला राशिस्थ

चन्द्रमा कालीन **अमावस पुण्यप्रदायक** रहेगी। दीपावली में अमावस तिथि, प्रदोषकाल, निशीथकाल एवं महानिशीथकाल विशेष महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

प्रदोष काल–3 नवम्बर को जालन्धर एवं निकटवर्ती नगरों में सूर्यास्त (17घं. 35मिं.) से लेकर 2घं. 39मिं. पर्यान्त (20घं. 14मिं.) प्रदोषकाल रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान अनुसार इसका समय निर्धारण करें-देखें पृष्ठ 265-266)

सायं 6/15 से रात्रि 8/09 तक वृष (स्थिर) लग्न भी विशेष प्रशस्त होगा। प्रदोषकाल में व्याप्त वृष लग्न, स्वाती नक्षत्र, तुला के सूर्य-चन्द्र होने से अत्यन्त शुभकाल रहेगा।

आगे 17घं. 35मिं. से 19घं. 14मिं. तक '**शुभ**' चौघड़ियां तथा तदुपरान्त 19घं. 14मिं. से 20घं. 54मिं. तक '**अमृत**' की चौघड़ियां भी रहने से इस योग में दीपदान, श्रीमहालक्ष्मीपूजन, कुबेर पूजन, बही-खाता पूजन, धर्म एवं गृह स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बांटना शुभ रहेगा।

इस वर्ष अमावस सायं 18घं. 20मिं. तक ही होने से प्रदोष काल का विशेष महत्त्व रहेगा तथा यथासम्भव इस काल तक पूजन प्रारम्भ कर लेना चाहिए। फिर भी निशीथ एवं महानिशीथ तंत्र, याज्ञिक क्रियाओं के लिए उपयुक्त रहेंगे।

निशीथ-काल–3 नवम्बर, रविवार को जालन्धर में निशीथकाल 20घं. 14मिं. से 22घं. 53मिं. तक रहेगा। ध्यान दें, 20घं. 09मिं. से 22घं. 23मिं. तक मिथुन लग्न मध्यम तदुपरान्त रात्रि 24घं. 46मिं. तक **कर्क** लग्न विशेष प्रशस्त रहेगा।

20घं. 54मिं. से रात्रि 22घं. 33मिं. तक 'चर' की चौघड़ियां भी शुभ रहेंगी। परन्तु तदुपरान्त रोग एवं काल की चौघड़ियां रहेंगी। इस अवधि में श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र एवं लक्ष्मी स्तोत्र आदि मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिए।

महानिशीथ काल–रात्रि 22घं. 53मिं. से अर्धरात्रि 25घं. 32मिं. तक महानिशीथ काल रहेगा। इस अवधि में रात्रि 22घं. 23मिं. से 24घं. 46मिं. तक '**कर्क**' लग्न तदुपरान्त सिंह लग्न भी (दोनों) विशेष रूप से प्रशस्त रहेंगे। ध्यान दें, 22घं. 33मिं. के बाद '**रोग**' एवं '**काल**' की चौघड़ियां अशुभ रहेंगी। इसलिए 'महालक्ष्मी' पूजन 22घं. 33मिं. से पहले कर लेना चाहिए। महानिशीथ काल में श्रीलक्ष्मी, महाशक्ति काली उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि क्रियाएं व साधना की जाती हैं।

नोट–अपने स्थानीय नगर में चौघड़ियां मुहूर्त्त (समय) जानने के लिए पृष्ठ 245 देखें तथा महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्थ वृष, कर्क आदि लग्न के लिए पृष्ठ 259-260 तक का अवलोकन कर निकालें अथवा स्थानीय पंडित जी से '**पंचांगदिवाकर**' दिखाकर परामर्श लें।

आद्या शक्ति की उपासना एवं प्रकट व गुप्त नवरात्रों की महिमा

देवी भगवती की उपासना का पर्व '**नवरात्र**' कहलाता है। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्रों के नौं दिनों में क्रमशः अलग-अलग पूजा की जाती है, जिसमें माँ प्रसन्न होकर आशीर्वाद देती है। '**नवरात्र**' शब्द में संख्या और काल का अद्‌भुत सम्मिश्रण है। **नवानां रात्रीणां समाहार: नवरात्रम्**।। अर्थात् नौं रात्रियों के सम्मिश्रण का नाम नवरात्र है। ध्यान रहे, यह नौं (नव) की संख्या अखण्ड, अविकारी एकरस ब्रह्म ही है। आप एक से दस तक नौं (नव) का पहाड़ा पढ़िए और देखिए कि पूरे पहाड़े में नौं ही नौं अखण्ड ब्रह्म की तरह चमकते रहेंगे। जैसे $9 \times 1 = 9$, $9 \times 2 = 18$, $9 \times 5 = 45$, $9 \times 8 = 72$, $9 \times 9 = 81$, $9 \times 10 = 90$ हर संख्या का जोड़ 9 ही रहेगा।

श्रीदेवीभागवत् में संवत् (वर्ष) में **चार नवरात्रों** का स्पष्ट वर्णन मिलता है–

(1) चैत्र नवरात्रे, (2) आषाढ़ नवरात्र, (3) आश्विन नवरात्र, (4) माघ नवरात्र

इनमें प्रत्येक मास की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तिथि तक नवरात्र कहलाते हैं। कालान्तर में दो **नवरात्र-चैत्र नवरात्र** और **आश्विन नवरात्रों** का अधिक प्रचलन होने के कारण उन्हें **प्रकट नवरात्र** कहते हैं तथा अन्य **दोनों नवरात्रों (आषाढ़ और माघ)** को **गुप्त नवरात्रों** के नाम से पुकारते हैं।

आद्या शक्ति की विशेष उपासना के लिए नौ (9) दिनों के नवरात्र नियत करने के पीछे भी विशेष मर्म (रहस्य) छिपा हुआ है। श्रीमार्कण्डेय पुराण के अनुसार माँ दुर्गा के नौं (नव) स्वरूप हैं–

१-प्रथमं शैलपुत्री, २-द्वितीयं ब्रह्मचारिणी, ३-चन्द्रघण्टा, ४-कूष्माण्ड, ५-स्कन्दमाता, ६-कत्यायनी, ७-कालरात्रि, ८-महागौरी, ९-सिद्धिदात्री-इसी आधार पर श्रीदुर्गा जी के नौ दिन (नवरात्र) व्रत-पूजनादि हेतु विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त वर्ष के मध्यम दिनों (360) को 9 से भाग देने पर 40 नवरात्र बनते हैं। शून्य (0) को अलग कर देने से 4 प्रमुख नवरात्र बन जाएंगे। यह गणना भी हमें श्रीदुर्गा पूजा के नौ दिन ही रखने का समर्थन करती है।

श्रीदुर्गा सप्तशती (श्री मार्कण्डयोक्त) में भी आद्या शक्ति द्वारा स्वयं के **कथनानुसार** भी नवरात्रों की प्रतिष्ठा एवं महिमा प्रकट होती है–

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वित:।।
सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य सुतान्वित:।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय:।।

अर्थात् शरद् ऋतु: में जो वार्षिक महापूजा अर्थात् नवरात्र पूजन होता है, उसमें श्रद्धा-भक्ति के साथ मेरे इस देवी-माहात्म्य (सप्तशती) का पाठ या श्रवण करना चाहिए। ऐसा करने पर नि:संदेह मेरे कृपा प्रसाद से मनुष्य सभी प्रकार की बाधाओं मुक्त होकर धन-धान्य, भूमि-पुत्रादि सम्पत्तियों से सम्पन्न हो जाता है।----(श्री दुर्गासप्तशती)

भारत के अनेक शक्तिपीठों एवं देवी-मन्दिरों में चारों नवरात्रों में नौ दिनों तक आद्या शक्ति

के व्रत और श्री दुर्गासप्तशती का संकल्पपूर्वक पाठ करने का प्रचलन रहा है। सर्वप्रथम प्रातः मंत्रपूर्वक घटस्थापन (जलापूरित) तथा घी का दीपक भी जलाना चाहिए। कलश पर देवी की मूर्ति भी स्थापित करके उसका षोडशोपचारपूर्वक पूजन करना चाहिए। घटस्थापन के साथ ही एक मिट्टी या धातु के खुले मुख वाले पात्र में जौं और गेहूँ बोयें।

तदनन्तर श्रीदुर्गासप्तशती का सम्पुट या साधारण पाठ प्रतिदिन विधि एवं क्रमानुसार करना चाहिए। पाठ की पूर्णाहुति के दिन दशांश हवन अथवा पाठ एवं कन्यापूजन करना चाहिए।

यहाँ पर पाठ की विधि अति संक्षेप से लिखी गई है। अधिक विस्तार से विधि जानने के लिए हमारे कार्यालय से छपी **"श्रीदुर्गा सप्तशती संस्कृत-हिन्दी" अथवा** केवल हिन्दी भाषा वाली मंगवाकर पाठ करें।

चैत्र एवं आश्विन के नवरात्रों के मध्य तो भारत में प्रायः सभी देवी मन्दिरों में श्रीदुर्गा पाठ होते हैं, परन्तु गत कुछ वर्षों में **आषाढ़ एवं माघ-गुप्त नवरात्रों में भी भगवती देवी की पूजार्चना** का चलन शुरु हो गया है।

महाशक्ति ही परब्रह्म परमात्मा है, जो विविध रूपों में विभिन्न लीलाएँ करती हैं। इन्हीं की शक्ति से ब्रह्मा विश्व की उत्पत्ति करते हैं। इन्हीं की शक्ति से श्रीविष्णु सृष्टि का फलन करते हैं। अर्थात् यही सृजन, पालन और संहार करने वाली आद्या पराशक्ति है। ये पराशक्ति नवदुर्गा, दशमहाविद्या हैं। ये ही अन्नपूर्णा, जगत्धारी, कात्यायनी एवं ललिताम्बा हैं। गायत्री, भुवनेश्वरी, काली, तारा, बगला, षोडशी, त्रिपुरा, धूमावती, मातङ्गी, वैष्णवी, कमला, पद्मावती, दुर्गा आदि इन्हीं के रूप हैं।

सभी देवताओं की कारणभूता सनातनी, वही होने के कारण वह सर्वदेवमयी है। वह विश्वरूपिणी है। वह दुखदारिद्रिया का शमन करने वाली, भवभीति से युक्त, व्यक्ति का उद्धार करने वाली, सर्व मन्त्रों की मातृका, सर्व शब्दों की ज्ञानरूपिणी, चिन्मयी, परमानन्द स्वरूपा और समस्त दुराचारों की विध्वंसिका उस शक्ति को पदे-पदे नमस्कार करना चाहिए।

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविधातिनीम्। नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।

श्री दुर्गा सप्तशती (हिन्दी भाषा में)

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्मग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रंथ है। पं. पन्ना ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा-सप्तशती के प्रस्तुत सरल हिन्दी भाषा संस्करण में अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है। इस पुस्तक में श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ एवं संकल्प विधि, श्री देवी कवच, श्री अर्गलास्तोत्र, श्री कीलक स्तोत्र, रात्रिसूक्त, नवार्णमन्त्र, 13 पाठ अध्याय, श्री चण्डी पूजा, चरित्र एवं स्तोत्र, चालीसा एवं आरतियों सहित विस्तृत वर्णन किया है।

ध्यान रहे–बिना संकल्प विधि के किया जप-पाठ एवं कोई भी अनुष्ठान पूर्ण फल नहीं देता। मार्कीट में बिकने वाली अधिकांश हिन्दी भाषी सप्तशतियों में संकल्पविधि, पूजन विधि आदि आवश्यक विषयों का अभाव मिलता है। श्रद्धा पूर्वक सही विधि द्वारा श्री दुर्गा जी के चरित्रों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य, सौभाग्यादि की प्राप्ति एवं मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति होती है। **भेंट–65 रु०**

श्रावण मास में

शिवभक्ति एवं आस्था का प्रतीक काँवड़ी जलाभिषेक

गोमुख, श्रीकेदारनाथ, श्रीअमरनाथ, श्री हरिद्वार, नीलकण्ठ एवं गंगादि तीर्थों से श्री गंगाजल के कलश भरकर भगवान श्री शिव की प्रसन्नता हेतु **आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान श्री शिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, विग्रहों, स्वरूपों एवं ज्योतिर्लिङ्गों** तथा क्षेत्रीय मन्दिरों में शिवभक्त काँवड़ियों द्वारा श्रद्धारूपी श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है।

स्कन्दपुराणानुसार श्रावण मास में नियमपूर्वक नक्त व्रत करें और महीने भर प्रतिदिन रूद्राभिषेक करें।

कुर्यात् नक्त व्रतं योगिन् श्रावणे नियतो नरः। रूद्राभिषेकं कुर्वीत मासमात्रं दिने दिने।।

कुछ लोगों का भ्रम है **कि श्रावण-भादों मास में नदियां रजस्वलारूप हो जाने से उनका जल पवित्र नहीं होता। परन्तु स्कन्दपुराण में स्पष्ट लिखा है कि सिन्धु, सूती, चन्द्रभागा, गंगा, सरयू, नर्मदा, यमुना, प्लक्षजाला, सरस्वती–ये सभी नदसंज्ञा वाली नदियाँ–ये रजोदोष से युक्त नहीं होती हैं।–ये सभी अवस्थाओं में निर्मल रहती हैं।**

श्री गंगादि तीर्थों से जल लाने एवं भगवान् शिवपूजन एवं शिवलिङ्ग को जलांजली अभिषेक करने की शुभ एवं पुण्य तारीखें–

पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें	पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें
आषा. शु. १३/१४	रवि	मूल	21 जुलाई	श्राव. शु. ५/६	सोम	चित्रा	12 अग.
आषा. पूर्णिमा	सोम	पू.षा.	22 जुलाई	श्राव. शु. १३/१४	सोम	उ.षा.	19 अग.
श्राव. कृ. १	मंगल	श्रवण	23 जुलाई	श्राव. शु. १४	मंगल	श्रवण	20 अग.
श्राव. कृ. ७/८	सोम	अश्वि	29 जुलाई	श्राव. पूर्णिमा	बुध	धनि.	21 अग.
श्राव. कृ. १४	सोम	पुर्न.	5 अग.	------------	----	----	-----

अभिषेक हेतु जलामृत लिवाने की यात्रा में शुभ दिन विचार

काँवडियां शुभयात्रा हेतु जाने से पूर्व चन्द्रमा का सम्मुख व दाएँ आदि दिशा वास जानकर शुभ यात्रा आरम्भ करें तो कल्याणकारी होगा। उदाहरणार्थ–जिस दिशा की ओर जाना हो उस राशि से सम्बन्धित दिशा सम्मुख अर्थात् कल्याणकारी कहलाएगी। उससे दाहिनी ओर की दिशा में पड़ने वाली चन्द्र राशि एवं उसकी दिशा भी शुभ एवं लाभकारी होगी। जबकि बाईं ओर पड़ने वाली एवं दिशा कष्टकारी एवं अशुभ होगी।

चन्द्रराशि अनुसार यात्रा में दिशा की शुभाशुभ विचार

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
द्वादश राशियां	मेष, सिंह, धनु	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	वृष, कन्या, मकर।

शंकाएँ, समस्याएँ और समाधान

लेखक :-पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर।

***समस्या*—(i) आपने पंचांगदिवाकर में लिखा है कि यदि लड़की की कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें मंगल हो और लड़के की कुण्डली में उन्हीं स्थानों पर शनि या राहु हों, तो कुण्डली में मंगलीक दोष भंग हो जाता है। इसका क्या प्रमाण है ?**

(ii) पंचांगदिवाकर में मंगलीक परिहार वाक्यों में आपने उच्च राशि मकर एवं स्वराशि मेष-वृश्चिक, द्वादश मीन के मंगल को भंग माना है। जबकि मेरे अनुभव एवं फलदीपिका-भावार्थप्रबोधिनी अनुसार भी उच्च व स्वराशि का मंगल और भी क्रूर हो जाता है ?

(iii) नाड़ीदोष के परिहार वाक्यों में आठ नक्षत्रों का परिहार बताया गया है ? कुछ ज्योतिषी इसे प्रमाण नहीं मानते। इसका क्या कारण है ?

-पं. ओम प्रकाश साँख्यान ज्यो., मलोट (बिलासपुर) हि. प्र.

***समाधान*—(i)** मंगलीक दोष एवं परिहार के अन्तर्गत हमने जो भी परिहार वाक्य लिखे हैं, वह सभी मुहूर्त्त चिन्तामणि एवं अन्य प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों के प्रमाणानुसार दिए गए हैं। ये सभी प्रमाण अपने मन से नहीं बनाए हैं। जैसे कि **शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो------वाला श्लोक मुहूर्त्त चिन्तामणि**-टीका पं. प्रवह श्री योगेश्वर पाठक, प्रकाशक ठाकुर प्रसाद & सन्ज़, वाराणसी द्वारा छापी गई है। पृष्ठ १९३ पर यह श्लोक देख सकते हैं।

-यही श्लोक **मुहूर्त्त पारिजात** (मुहूर्त्त ग्रंथ में) सम्पादक पण्डित सीताराम झा ज्योतिषाचार्य, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी के पृष्ठ ११३ पर भी मिलता है।

वर कन्या के मिलान पर अन्तिम निर्णय लेते समय अनेक तत्त्वों का विचार करना आवश्यक है। मात्र मंगल व शनि को देखकर शीघ्रता से निर्णय नहीं करना चाहिए। अन्य **महत्त्वपूर्ण सभी तत्त्वों पर भी** विचार करना चाहिए-जैसे **गुणमिलान,** राशि मैत्री, सप्तमेश की स्थिति, सप्तम भाव पर शुभाशुभ दृष्टि, चलित भाव व नवांश में लग्नेश व सप्तमेश की स्थिति, ग्रहदशा गोचर स्थिति आदि। हम एक ही परिहार वाक्य देखकर विवाह का निर्णय देने के पक्ष में नहीं बल्कि अन्य बातों पर भी ध्यान देने का परामर्श देते हैं। इस सम्बन्ध में पंचाँग दिवाकर सं. **२०६९ के मंगलीक योग** के साथ वाले पृष्ठ नं. 165 पर कालम I में मेलापक सम्बन्धी सर्वाङ्ग विवेचन के आगे लिखे छ: (६) नियमों को ध्यानपूर्वक पढ़ें। तभी किसी पर दोषारोपण करना उचित होगा। पंचाँग में दिए गए परिहारों के सम्बन्ध में हमारी शत प्रतिशत सहमति होना आवश्यक नहीं।

***समाधान*—(ii)** मुहूर्त्त चिन्तामणि में पृ. १९४ पर **मीन राशि** का मंगल होने की स्थिति में मंगलीक दोष अभाव लिखा है। हमने तो मंगलीक दोष एवं उसके परिहार सम्बन्धी प्रमाणों का प्रतिष्ठित ग्रंथों से संकलन किया है। फलित दृष्टि में यह श्लोक कहाँ तक उपयुक्त बैठते हैं ? इसकी परीक्षा तो आपको ही स्वयं करनी है।

हमारा परामर्श है कि मिलान में केवल एक ग्रह को लेकर अन्तिम निर्णय न लेवें। मिलान सम्बन्धी अन्य नियमों को भी ध्यान में रखें, इनमें से कुछ नियम पंचाँग २०६९ के पृष्ठ १६५ पर लिखे हुए हैं, पढ़ें।।

***समाधान*—(iii) नाड़ी दोष** के परिहार स्वरूप **ज्योतिष चिन्तामणि** का निम्न श्लोक को भी ज्योतिष विषयों के सम्बन्ध में प्रामाणिक पुस्तक **''ज्योतिनिर्बन्ध''** से उद्धृत किया गया है-श्री काशी विश्वनाथ पंचाँग २०६९ के पृष्ठ १० पर भी यह श्लोक देख सकते हैं। **रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नि पुष्य श्रवण पौष्णभम्।।**

अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते।।

यह श्लोक कुछ अन्य ग्रंथों में भी उपलब्ध होता है। यद्यपि रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा आदि नक्षत्रों में परिहार के सम्बन्ध में हम भी शतप्रतिशत सहमत नहीं हैं। अपने विद्वान् पाठकों की जिज्ञासा व जानकारी हेतु संकलित किया गया है।

***समस्या* (I)-क्या मृत्युबाण को वर-कन्या के वरण में भी वर्जित किया जाए ?**

पं. तिलक राज भारद्वाज शास्त्री, झिकली आरठ, पालमपुर (H.P.)

समाधान-मृत्युबाण दोष मुख्यत: वर-कन्या के विवाह के समय पर ही विचार करने की शास्त्राज्ञा है। हमारे मतानुसार वर-कन्या के वरण काल में मृत्युबाण का विचार करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वरण काल में वर-कन्या के वरण का केवल संकल्प ही किया जाता है, वास्तविक सम्बन्ध नहीं।

***समस्या* (II)-क्या ग्रहण के सूतक में मन्दिर बने कपाट बन्द करने शास्त्रोचित है ?**

***समाधान*—**ग्रहण काल में एवं ग्रहण के सूतक काल में श्री भगवान् के मन्दिर के कपाट बन्द करने शास्त्रोचित ही हैं, क्योंकि ग्रहण काल से पूर्व (चन्द्रग्रहण में 9 घंटे पूर्व तथा सूर्य ग्रहण में 12 घंटे पूर्व) प्राय: सभी सम्प्रदायों के लोगों को सूतक लगता है- **''सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहुदर्शने।।''**

अशौच अवस्था में तथा झूठे मुँह व हाथों से गौ, ब्राह्मण, अग्नि, देव प्रतिमा, आसन, **देवप्रतिमा,** गुरु, आसन, पुष्प वाले वृक्ष, यज्ञोपयोगी वृक्षादि का स्पर्श/अवलोकनादि नहीं करते।।

सूतके उच्छिष्टो वा न स्पृशेदग्नि ब्राह्मणं दैवतं गुरूम्।
स्वशीर्ष पुष्पवृक्षं च यज्ञवृक्षमधर्मिकम्।। (पद्मपुराण सृष्टि)

अतएव ग्रहणादि के सूतककाल में भगवान् की मूर्तियों का स्पर्श, दर्शनादि का शास्त्र निषेध होने के कारण मन्दिरों के कपाट बन्द करने की परम्परा उचित लगती है।

समस्या—आपके पंचाँग दिवाकर २०६९ में श्रावण कृष्ण पक्ष की कामिका एकादशी का व्रत, 14 जुला. शनिवार को लिखा गया है जबकि चण्डीगढ़ अक्षांश से छपने वाले एक पंचाँग में 14 जुला. की एकादशी को स्मार्तः लिखा है, कौन–सी ठीक है ? इस प्रकार हमारे इलाके के पण्डितों में भ्रम की स्थिति पैदा हो गई है। कृपया स्पष्टीकरण देवें।

—पं. सुभाष चन्द्र शर्मा, शिव मन्दिर, पलोरा, जम्मू।।

समाधान—जैसा कि सभी निबन्धकारों ने अरुणोदयकाल में दशमी से वेध युक्त एका. को विद्धा तथा अरुणोदयाकाल **काल में दशमी** से वेध रहित एका. को **शुद्धा** माना है। अरुणोदय में दशमी विद्धा एकादशी हो, तो उसको छोड़कर **वैष्णव** सम्प्र. वाले व्यक्ति को द्वादशी में उपवास करना चाहिए।

अरूणोदय वेधवती विद्धायां त्यक्त्वा वैष्णवै द्वादश्येवो पोष्या।।
अरूणोदय वेधरहिता शुद्धा।--------------------(धर्मसिन्धु)

यदि **अरूणोदय काल** में दशमी एका. को स्पर्श न करे, तो उस स्थिति में वर्तमान शुद्ध नाम्ना एकादशी ही व्रतादि कार्य हेतु ग्रहणीय होगी।

आपके द्वारा निर्दिष्ट कामिका एकादशी 14 जुलाई को ५५ घड़ी २३ पल (27 घं. 46 मिं.) तक व्याप्त है, 13 जुला. को दशमी (25 घं. 16 मिं.) पर समाप्त है, जबकि अरूणोदय 13 ता. को 28 घं. 01 मिंट से प्रारम्भ हो रहा था। इस प्रकार एकादशी में दशमी का वेध नहीं। जिससे स्पष्ट तौर पर एकादशी **14 जुलाई को ही शास्त्र सम्मत** थी।

इसके अतिरिक्त, द्वादशी की वृद्धि होने के कारण भी कामिका एकादशी व्रत (स्मा. व वैष्ण.) को ही शास्त्र सम्मत था। **निर्णयसिन्धु** में इस सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश है।

द्वादशी मात्र वृद्धौ तु शुद्धायां पूर्वैव ग्राह्या।। (निर्णय सिन्धु)

अर्थात् द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने की स्थिति में पूर्व दिन को शुद्धाख्या एकादशी व्रतार्थ ग्राह्य होगी।

ध्यान रहे, भारत के कुछ अन्य प्रामाणिक पंचाँग में भी कामिका एका. 14 जुलाई को ही मान्य थी।

सोमवती, भौमवासरी आदि अमावस्या का माहात्म्य—2013–14 ई.

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी–कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है–

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते। तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्।।

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्थान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार, यदि अमावस्या सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर योग** कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहणों में किए हुए दान–पुण्य से सौ गुणा अधिक होता है–

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्।।

स्नानदान आदि पुण्य कर्मों में मंगलवारी अमावस्या भी सोमवती अमावस्या के समान मनानी चाहिए। यदि मंगलवारी अमावस्या हो तो गंगा के स्नानमात्र से सहस्त्र गौओं के दान का फल होता है–

स्नानदानादौ भौमवती अपि सोमवती समा ज्ञेया। अमावस्या भवेद्वारे यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्नवी स्नान-मात्रेण गोसहस्त्रफलं लभेत्। —हेमाद्रौ शातातप

सोमवार से युक्त अमावस्या हो तो वहाँ अनन्त फल देने वाली और पितृगणों को दिया हुआ श्राद्ध अक्षय होता है–

सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्। तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षयम्।।

सोमवती एवं मंगलवारी अमावस्या के विशिष्ट योग में पितृदोष शान्ति, सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म शुद्धि, स्नानदान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन व्रत धारण करके भगवान श्री विष्णु एवं शिवपूजन, चन्द्रपूजन तथा पीपल वृक्ष की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, एवं पुष्प-फल-मिष्ठान से धूप-दीप आदि से पूजन करके 108 प्रदक्षिणा के उपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2013–14 ई. में प्रमुख अमावस्याएँ

(1) 10 फरवरी, 2013 ई., रवि (कुम्भ स्नान)
(2) 11 मार्च, 2013 ई. (सोमवती)
(3) 8 जून, 2013 ई. (शनिवासरी)
(4) 8 जुला. 2013 ई. (सोमवती)
(5) 6 अगस्त, 2013 ई. (भौमवती)
(6) 2 दिसम्बर, 2013 ई. (सोमवती)
(7) 30 जनवरी, 2014 ई. (गुरुवासरी–मौनी)
(8) 1 मार्च, 2014 ई. (शनैश्चरी)

वि. संवत् २०७०, चैत्र शुक्ल पक्ष शाकः १९३५ | सन् 2013 ई. (ता. 11 अप्रैल से 25 अप्रैल तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें: चैत्र शाक	जमा. उल	अप्रैल	सौर प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन—सायं गुरु पश्चिमक्षितिज के समीप और प्रातः बुध पूर्व में तथा शनि पश्चिमी कपाल में होगा। ता. 22 को शुक्र सायं पश्चिम से उदय होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३१.४३	१	गुरु	२४	३५	अश्वि	४२	२५	विष्क	५१	४०	बव	२४	३५	२१	२९	11	२९	मेष	पराभव नाम वि. संवत् २०७० प्रा., चैत्र (वासन्त) नवरात्रे प्रा. A	११	२७	१४	५३	६	०९	१८	५०
३१.४५	२	शुक्र	२८	१०	भर.	४७	४८	प्रीति	५२	१८	कौ	२८	१०	२२	जम	12	३०	मेष	मंगल अश्वि (१) मेष में ३३/४०, बुध उ.भा. में १५/१५, (B)	११	२८	१३	४४	६	०८	१८	५०
३१.५०	३	शनि	३२	५८	कृति	५४	१५	आयु	५३	४८	तै	०	३४	२३	२	13	वैश	वृ. ४/२०	सूर्य अश्वि (१) मेष में ४८/२३, वैशाख संक्रान्ति, मु. ३०, C	११	२९	१२	३२	६	०७	१८	५१
३१.५३	४	रवि	३८	४३	रोहि	६०	००	सौभा	५५	५८	व	५	५१	२४	३	14	२	वृष	भ. ५/५३ से ३८/४३ तक, दमनक चतुर्थी	०	००	११	१९	६	०६	१८	५१
३१.५७	५	चंद्र	४५	३	रोहि	१	३५	शोभ	५८	२८	बव	११	५३	२५	४	15	३	मि. ३५/२३	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, स. सि. यो.	०	०१	१०	०३	६	०५	१८	५२
३२.०३	६	मंग	५१	२५	मृग	९	१५	अति	६०	००	कौ	१८	१४	२६	५	16	४	मिथुन	**स्कन्द षष्ठी व्रत**	०	०२	०८	४५	६	०४	१८	५३
३२.१०	७	बुध	५७	२३	आर्द्रा	१६	५३	अति	१	००	गर	२४	२४	२७	६	17	५	मिथुन	भ. ५७/२३ से,	०	०३	०७	२३	६	०२	१८	५४
३२.१३	८	गुरु	६०	००	पुर्न	२३	४५	सुक	३	३	वि	२९	५१	२८	७	18	६	क. ७/०८	भ. २९/५१ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी** (देखें पृष्ठ 80), **भवान्युत्पत्ति**, अशोकाष्टमी, **D**	०	०४	०६	००	६	०१	१८	५४
३२.१७	८	शुक्र	२	१८	पुष्य	२९	२८	धृति	४	१८	बव	२	१८	२९	८	19	७	कर्क	**श्रीरामनवमी** (देखें पृष्ठ 80), नवरात्रे समाप्त, सूर्य सायन वृष में **(F)**	०	०५	०४	३६	६	००	१८	५५
३२.२३	९	शनि	५	४०	अश्ले	३३	३८	शूल	४	२३	कौ	५	४०	३०	९	20	८	सिं. ३३/३८	बुध रेव में ५७/२३, अगस्त्य अस्त, नवरात्रे पारणा	०	०६	०३	०९	५	५९	१८	५६
३२.२५	१०	रवि	७	१५	मघा	३५	५५	गंड	३	५	गर	७	१५	वैश	१०	21	९	सिंह	भ. ३७/०५ से, शुक्र भर. में १५/२८, शक वैशाख प्रारम्भ,	०	०७	०१	४०	५	५८	१८	५६
३२.३०	११	चंद्र	६	५५	पू.फा	३६	२३	वृद्धि ध्रुव	० ५६	२० ००	वि	६	५५	२	११	22	१०	कं. ५१/१३	भ. ६/५५ तक, कामदा एकादशी व्रत, **शुक्र पश्चिम में उदय १९/४३**	०	०८	००	०९	५	५७	१८	५७
३२.३३	१२	मंग	४	४३	उ.फा	३५	५	व्या.	५०	२३	बा	४	४३	३	१२	23	११	कन्या	भौम प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी (देखें पृ. 80) **शुक्र उदय 22 अप्रैल**	०	०८	५८	३५	५	५६	१८	५७
३२.३७	१३	बुध	०	४८	हस्त	३२	१०	हर्ष	४३	२८	तै	०	४८	४	१३	24	१२	कन्या	भ. ५५/२३ से, **श्रीमहावीर जयंती** (जैन)	०	०९	५७	००	५	५५	१८	५८
००.००	१४	बुध	५५	२३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	00	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय- तिथि, नक्षत्र, चन्द्रादि ग्रहों का घंटा मिंटों में आगामी पृष्ठों पर देखें	०	०	०	०	०	०	०	०
३२.४३	१५	गुरु	४८	५३	चित्रा	२८	००	वज्र	३५	३८	वि	२२	८	५	१४	25	१३	तु. ००/१५	भ. २२/०८ तक, **चैत्र पूर्णिमा, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (भारत में दृश्य)**(E)**	०	१०	५५	२३	५	५४	१८	५८

(A) घटस्थापन, वर्षफल श्रवण, ध्वजारोहण, चन्द्रदर्शन, स. सि. योग **B** जमादि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, प्लूटो वक्री ४७/१३ **C** पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 7/52 तक, **गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती**, गुरु रोहि. (४) में २८/३३ **(D)** मेला बाहूफोर्ट (जम्मू), स.सि.योगः **(F)** ५३/५३, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ **(E)**(देखें पृष्ठ 15-16), **श्रीहनुमान जयंती** (दक्षिण भारत), वैशाखस्नान प्रारम्भ

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	२	०	११	१	०	६	६	०
४	२८	४	११	२०	९	१४	२३	२३
४	१९	४	५१	५०	१७	५६	५२	५२
४७	००	५८	३९	५३	१	४५	५७	५७
58 38	724 46	45 6	95 13	11 33	74 11	4 26	3 11	3 11
अश्वि २	पुन ३	अश्वि २	उभा ३	रोहि ४	अश्वि ३	स्वा ३	विशा २	भर. ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ सू. मं. शु. के. | २ गु. | ३ चं. | ४ | ५ | ६ | ७ श. रा. | ८ | ९ | १० | ११ | १२ बु.

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	५	०	११	१	०	६	६	०
१०	२९	९	२३	२२	१७	१४	२३	२३
५४	४२	१९	३३	१३	५५	२५	३०	३०
२७	७	३७	२३	१४	५२	१६	४२	४२
58 24	868 24	44 45	107 00	12 3	74 3	4 33	3 11	3 11
अश्वि ४	चित्रा २	अश्वि ३	रेव ३	रोहि ४	भर. २	स्वा. ३	विशा २	भर. ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१ सू. मं. शु. के. | २ गु. | ३ | ४ | ५ | ६ चं. | ७ श. रा. | ८ | ९ | १० | ११ | १२ बु.

चैत्र शुक्ल पक्षफल—

11 अप्रैल, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, गुरुवार से **पराभव** नाम का नया विक्रमी सम्वत् 2070 प्रारम्भ होगा। व्रत, अनुष्ठान, यज्ञ, दानादि कार्यों के शुभ संकल्प में **पराभव** नामक सम्वत् का प्रयोग होगा। नए सम्वत् का **राजा गुरू** तथा **मन्त्री शनि** होगा। फलस्वरूप राजनेताओं में परस्पर विग्रह बढ़ेगा। उपयोगी वर्षा में कमी तथा अनाज के उत्पादन में भी कमी होगी। **राजनेताओं का व्यवहार सामान्य लोगों के प्रति कठोर एवं निर्दयतापूर्ण रहेगा। सर्वसाधारण लोग खाद्यान्न व अन्य आवश्यक वस्तुओं में महँगाई के कारण असंतुष्ट एवं दुःखी होंगे।। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त** (11 से 19 अप्रै. तक) प्रतिदिन **श्री दुर्गा एवं श्री गणेश** प्रतिमा के सामने शुद्ध चित्त होकर मंत्रपूर्वक कलश स्थापन एवं ज्योति प्रज्वलन करना तथा श्री **दुर्गासप्तशती** के पाठारम्भ का विधान है। इसी तिथि को ताम्र या मिट्टी के पात्र में शुद्ध रेत एवं मिट्टी डालकर उसमें गेहूँ व जौं के बीज बोकर शुद्ध जल के छींटे देकर मंगल मंत्र पढ़ने चाहिएँ तथा इसी दिन **ब्रह्मादि संवत्** देवताओं का पूजनआदि तथा ब्राह्मण या पूज्य श्रेष्ठ-जन के मुख से **सम्वत्सर फल**, व राजा-मन्त्री आदि का फल सुनना चाहिए। तत्पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दान-दक्षिणा, पंचाँग आदि देकर सम्मानित करना चाहिए। **वैशाख संक्रान्ति**–13 अप्रै., शनिवार को कृतिका नक्षत्र कालिक प्रवेश होने से यह संक्रान्ति 30 मुहूर्ति होगी जिससे गेहूँ, धान्य, चावल, ईख, दूध, गुड़ आदि पदार्थों के मूल्यों में तेजी होगी। **वै. संक्रान्ति** राक्षसी नाम की होने से नीच एवं दुष्टजनों को फलदायक होगी। **संक्रान्ति राशिफल**–मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व कुम्भ राशि के जातकों को लाभप्रदायक रहेगी।

वि. संवत् २०७०, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक: १९३५

सन् 2013 ई. (ता. 26 अप्रैल से 10 मई तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शनि पश्चिम में तथा बुध पूर्व में दिखाई देगा। ता. 29 अप्रै. से बुध पूर्व में दिखाई देना बन्द हो जाएगा। सायं शुक्र पश्चिमक्षितिज के पास, उससे ऊपर गु. होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	वैशा. शक	जमा. मु.	अप्रैल	वैशाख
३२.४७	१	शुक्र	४१	३५	स्वा.	२२	५५	सिद्धि	२७	००	बा	१५	१४	६	१५	26	१४
३२.५०	२	शनि	३३	५०	विशा	१७	१८	व्य.	१८	००	तै	७	४३	७	१६	27	१५
३२.५५	३	रवि	२६	००	अनु.	११	२५	वरी / परी	८ / ५९	४८ / ४०	वि	२६	००	८	१७	28	१६
३३.००	४	चंद्र	१८	२५	ज्ये.	५	४३	शिव	५०	५५	बा	१८	२५	९	१८	29	१७
३३.०३	५	मंग	११	२०	मूल / पू.षा.	० / ५५	२८ / ५३	सिद्ध	४२	४५	तै	११	२०	१०	१९	30	१८
३३.०८	६	बुध	५	००	उ.षा	५२	१८	साध्य	३५	२०	व	५	००	११	२०	मई	१९
००.००	७	बुध	५९	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०
३३.१३	८	गुरु	५५	२५	श्रव	४९	५०	शुभ	२८	४५	बा	२७	३२	१२	२१	2	२०
३३.१७	९	शुक्र	५२	२८	धनि	४८	३५	शुक्ल	२३	१०	तै	२३	५७	१३	२२	3	२१
३३.२२	१०	शनि	५०	४५	शत	४८	३५	ब्रह्म	१८	३८	व	२१	३७	१४	२३	4	२२
३३.२८	११	रवि	५०	२३	पू.भा	४९	५३	ऐंद्र	१५	५	बव	२०	३४	१५	२४	5	२३
३३.३५	१२	चंद्र	५१	१८	उ.भा	५२	२८	वैधृ	१२	३८	कौ	२०	५१	१६	२५	6	२४
३३.३८	१३	मंग	५३	२३	रेव	५६	८	विष्क	११	८	गर	२२	२१	१७	२६	7	२५
३३.४०	१४	बुध	५६	३३	अश्वि	६०	००	प्रीति	१०	२८	वि	२४	५८	१८	२७	8	२६
३३.४३	३०	गुरु	६०	००	अश्वि	०	५५	आयु	१०	४०	च	२८	४१	१९	२८	9	२७
३३.४८	३०	शुक्र	०	४८	भर	६	४०	सौभा	११	४३	ना	०	४८	२०	२९	10	२८

चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	०	११	५३	४४	५	५३	१९	००
वृ. ३/४५	भ. ५९/५५ से. सूर्य भर. में ५३/४३,	०	१२	५२	०३	५	५२	१९	००
वृश्चिक	भ. २६/०० तक, **बुध अश्वि (१) मेष में ३१/२८**, राहु विशा. १ **A**	०	१३	५०	२०	५	५१	१९	०१
ध. ५/४३	सती अनुसूया जयन्ती, **बुध पूर्व में अस्त** ५९/१८	०	१४	४८	३६	५	५०	१९	०२
धनु	मंगल भर. में २२/२०, गुरु मृग. (१) में २७/४८	०	१५	४६	५०	५	४९	१९	०२
म. ९/५५	भ. ५/०० से ३२/१८ तक, **मई मास प्रा., मज़दूर (श्रम) दिवस**	०	१६	४५	०३	५	४८	१९	०३
००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
मकर	शुक्र कृति. में ४/२०,	०	१७	४३	१४	५	४७	१९	०४
कुं. १९/०३	**पंचक प्रारम्भ** १९/०३ (13/23 घं. मिं.)	०	१८	४१	२३	५	४६	१९	०५
कुम्भ	भ. २१/३७ से ५०/४५ तक, **शुक्र वृष में ४६/४८**,	०	१९	३९	३२	५	४५	१९	०६
मी. ३४/२८	बुध भर. में १८/४३, **वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	०	२०	३७	३८	५	४४	१९	०७
मीन		०	२१	३५	४४	५	४२	१९	०८
मे. ५६/०८	भ. ५३/२३ से, **पंचक समाप्त** ५६/०८ (28/08 घं.मिं.), **भौम प्रदोष व्रत**	०	२२	३३	४९	५	४१	१९	०८
मेष	भ. २४/५८ तक, मास शिवरात्रि व्रत	०	२३	३१	५३	५	४१	१९	०९
मेष	**वैशाख अमावस** (पितृतर्पण, स्नानदानादि), व. शनि स्वा. (२) **B**	०	२४	२९	५४	५	४१	१९	१०
वृ. २३/१५	अमावस (प्रातः 5/59 तक), स्नान, दानादि	०	२५	२७	५४	५	४०	१९	११

तिथि, नक्षत्र, योग एवं सूर्यादि ग्रहों का प्रवेश घण्टों मिनटों में आगामी पृष्ठों पर देखें। पं. पन्ना लाल **A** केतु भर. ३ में २१/००, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 13-14) **B** में २५/४३, स. सि. योगः

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	०	०	१	०	६	६	०
१७	११	१४	६	२३	२६	१३	२३	२३
४२	३७	३१	३८	३८	३३	५३	८	८
३५	५२	४९	२२	५६	४८	२३	२६	२६
58 12	832 31	44 24	118 58	12 30	73 55	4 32	3 11	3 11
भर. २	श्रव ९	भर. ९	अश्वि २	मृग ९	भर. ४	स्वा ३	विशा ९	भर. ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

२ गु., १ सू. मं. बु. शु. के., १२, ३, ११, ४, १० चं., ७ श. रा., ५, ९, ६, ८

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	०	०	१	१	६	६	०
२५	२५	२०	२३	२५	६	१३	२२	२२
२७	१४	२५	१२	२०	२४	१७	४२	४२
३२	२५	३७	३	२२	४४	२९	५९	५९
58 00	722 17	43 59	129 40	12 55	73 47	4 23	3 10	3 10
भर. ४	भर. ४	भर. ३	भर. ३	मृग ९	कृति ३	स्वा. २	विशा ९	भर. ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

२ शु. गु., १ सू. चं. मं. बु. के., १२, ३, ११, ४, १०, ७ श. रा., ५, ९, ६, ८

वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास में धर्मपरायण व्यक्ति को गंगा आदि तीर्थ पर अथवा अपने निवास स्थान पर ही गंगाजल मिश्रित जल से स्नान करके नित्यप्रति भगवान् विष्णु व लक्ष्मी जी की पूजा करके वैशाख-माहात्म्य एवं '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मंत्र और सहस्रनामादि श्री विष्णु स्तोत्रों का पाठ श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। मासान्त में ब्राह्मणों को मिष्ठान्न सहित भोजन एवं वस्त्र अन्न, फलादि दक्षिणा सहित दान करना चाहिए। इससे अनेक जन्मों के पापों एवं कष्टों की निवृत्ति तथा मनोवाँछित फलों की प्राप्ति होती है। इस पक्ष में **मेष राशि पर 4 एवं 5 ग्रहों** का योग बना हुआ है। जिससे राजनेताओं में अनेक प्रकार के **संकटों एवं टकराव** का सामना रहेगा। कहीं उपद्रव एवं हिंसक घटनाओं के कारण जन-धन एवं राष्ट्र सम्पदा की हानि होगी। आन्तरिक एवं बाहरी शत्रुओं के साथ युद्धभय होगा। **एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वां रूधिरेण जलेन वा।।** लोक भविष्य–**वैशाख मास के प्रारम्भ में ही संक्रान्ति शनिवार** को होने से तथा **मेष राशि पर चतुर्ग्रही व पंचग्रही योग** बनने से सब प्रकार के अनाज, धान्य, चावल, चने, मक्की आदि महँगे होंगे। कहीं दुर्भिक्ष (अनाज की कमी) एवं दाल, सब्जी, दुग्ध, पनीर, वनस्पति, घृतादि स्निग्ध पदार्थ भी महँगे हो जाएँगे। राजनेताओं व विपक्षी नेताओं में परस्पर टकराव व युद्ध के समाचार मिलेंगे। इस पक्ष में **शनि-मंगल में समसप्तक** तथा पक्ष के उत्तरार्द्ध में गुरु-शुक्र एक ही राशि (वृष) में होने से उत्तर प्रदेश, म. प्रदेश, असम, बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक...

वि. संवत् २०७०, वैशाख शुक्ल पक्ष शाकः १९३५ तारीखें चंद्र राशि सन् 2013 ई. (ता. 11 मई से 25 मई तक) हिजरी सन् 1434 भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७०, वैशाख शुक्ल पक्ष शाक: १९३५ — सन् 2013 ई. (ता. 11 मई से 25 मई तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः शनि पश्चिमक्षितिज में डूबता हुआ नजर आएगा। सायं गुरु–शुक्र पास–पास पश्चिमक्षितिज में दिखेंगे। ता. 23 से बुध भी इनके साथ दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	वैशा. शक	जुमा. मु.	मई	वैशाख	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३३.५०	१	शनि	५	५३	कृति	१३	१८	शोभ	१३	२३	बव	५	५३	२१	३०	11	२९	वृष	सूर्य कृति में १४/३५, बुध कृति. में ३५/३८, चन्द्रदर्शन, स. सि. यो.	०	२६	२५	५१	५	३९	१९	११
३३.५३	२	रवि	११	४०	रोहि	२०	३०	अति	१५	३३	कौ	११	४०	२२	रज	12	३०	मि. ५४/१८	शुक्र रोहि. में ५४/४३, **भगवान् परशुराम जयंती** (देखें पृष्ठ 80) **(A)**	०	२७	२३	४८	५	३९	१९	१२
३३.५८	३	चंद्र	१७	५५	मृग	२८	१०	सुक	१८	५	गर	१७	५५	२३	२	13	३१	मिथुन	**अक्षय तृतीया**, भद्रा ५१/०५ से, **बुध वृष में** ७/३३, केदार-बदरी यात्रा **R**	०	२८	२१	४३	५	३८	१९	१३
३४.००	४	मंग	२४	१८	आर्द्रा	३५	५०	धृति	२०	४०	वि	२४	१८	२४	३	14	ज्ये.	मिथुन	भ. २४/१८ तक, **सूर्य वृष में ४१/५०, ज्येष्ठ संक्रान्ति**, मु. ४५, **B**	०	२९	१९	३६	५	३७	१९	१३
३४.०५	५	बुध	३०	२०	पुर्न	४३	१०	शूल	२३	५	बा	३०	२०	२५	४	15	२	क. २६/२५	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	१	००	१७	२९	५	३६	१९	१४
३४.०८	६	गुरु	३५	४०	पुष्य	४९	४३	गंड	२४	५८	कौ	३	००	२६	५	16	३	कर्क	गुरु मृग. (२) में ६/४३, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, गुरुपुष्य योग	१	०१	१५	१९	५	३५	१९	१४
३४.१३	७	शुक्र	३९	४८	अश्ले	५५	३	वृद्धि	२६	००	गर	७	४४	२७	६	17	४	सिं. ५५/०३	भ. ३९/४८ से, बुध रोहि. में ४४/०३, **श्रीगङ्गा जयन्ती**	१	०२	१३	०७	५	३४	१९	१५
३४.१५	८	शनि	४२	२०	मघा	५८	४५	ध्रुव	२५	५३	वि	११	४	२८	७	18	५	सिंह	भ. ११/०४ तक, मंगल कृति. में ३२/४५,	१	०३	१०	५३	५	३४	१९	१६
३४.२०	९	रवि	४३	८	पू.फा	६०	००	व्या.	२४	२५	बा	१२	४४	२९	८	19	६	सिंह	**सीता नवमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती**	१	०४	०८	४०	५	३३	१९	१७
३४.२३	१०	चंद्र	४१	५३	पू.फा	०	४३	हर्ष	२१	२३	तै	१२	३१	३०	९	20	७	कं. १५/५३	सूर्य सायन मिथुन में ५२/४८ (26/40 घं. मिं.)	१	०५	०६	२५	५	३३	१९	१८
३४.२५	११	मंग	३८	४८	उ.फा. हस्त	० ५८	४३ ५०	वज्र	१६	५३	व	१०	२१	३१	१०	21	८	कन्या	भ. १०/२१ से ३८/४८ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत**	१	०६	०४	०६	५	३२	१९	१८
३४.२८	१२	बुध	३३	५०	चित्रा	५५	१३	सिद्धि	१०	४८	बव	६	१९	ज्ये	११	22	९	तु. २७/१३	प्रदोष व्रत, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	१	०७	०१	४५	५	३२	१९	१९
३४.३०	१३	गुरु	२७	२३	स्वा.	५०	१०	व्य. वरी.	३ ५४	२३ ४८	कौ	०	३७	२	१२	23	१०	तुला	श्रीनृसिंह जयंती, **मंगल वृष में ९/१५, बुध पश्चिम में उदय ३/१५ C**	१	०७	५९	२६	५	३१	१९	१९
३४.३३	१४	शुक्र	१९	३८	विशा	४४	००	परि	४५	२०	व	१९	३८	३	१३	24	११	वृ. ३०/३८	भ. १९/३८ से ४५/२० तक, बुध मृग. में १३/२८, श्रीकूर्म जयन्ती **(D)**	१	०८	५७	०३	५	३१	१९	२०
३४.३५	१५	शनि	११	३	अनु	३७	१३	शिव	३५	२०	बव	११	३	४	१४	25	१२	वृश्चिक	**वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती**, सूर्य रोहि. में ५/३३, वैशाखस्नान **E**	१	०९	५४	४०	५	३०	१९	२०

(A) शिवाजी जयन्ती, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, **(B)** पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, **(C)** शुक्र मृग. में ४६/५० **(D)** श्रीसत्यनारायण व्रत **(E)** समाप्त **R** प्रारम्भ, स. सि. योग

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 18 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	१	१	१	६	६	०
३	०	२६	१०	२७	१६	१२	२२	२२
१०	५९	१६	३३	४	१४	४३	१७	१७
४६	२९	४	५९	५१	३२	१९	३३	३३
57 47	754 18	43 33	127 44	13 15	73 28	4 5	3 11	3 11
कृति २	मघा १	भर. ४	रोहि १	मृग २	रोहि २	स्वा. २	विशा १	भर. ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

भाव	ग्रह
१	के. मं.
२	सू. बु. गु. शु.
३	
४	
५	चं.
६	
७	श. रा.
८	
९	
१०	
११	
१२	

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 25 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	१	१	१	६	६	०
९	७	१	२४	२८	२४	१२	२१	२१
५४	१९	१९	४९	३८	४९	१५	५५	५५
४०	११	५०	४४	११	३३	४५	१८	१८
57 37	905 44	43 11	113 15	13 27	73 30	3 44	3 11	3 11
कृति ४	अनु. २	कृति २	मृ. १	मृ. २	मृ. १	स्वा. २	विशा १	भर. ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30

भाव	ग्रह
१	के.
२	सू. मं. बु. गु. शु.
३	
४	
५	
६	
७	श. रा.
८	चं.
९	
१०	
११	
१२	

वैशाख शुक्ल पक्षफल–

भगवान् परशुराम जी की जयन्ती शास्त्रानुसार वैशाख शुक्ल तृतीया (प्रदोष व्यापिनी) को मनाई जाती है। तदनुसार, 12 मई, रविवार को मृगशिर नक्षत्र कालीन सूर्यास्त के पश्चात् श्री परशुराम जयंती मनाई जाएगी। **अक्षय तृतीया** पर्व 13 मई सोमवार को मृगशिर नक्षत्र में तिथि घटित होने से यह दिन तीर्थ स्नान, जप-तप-दान, देव-पितृतर्पण आदि कृत्यों का विशेष पुण्य फल होगा। इस दिन जप-पाठ, दान होमादि कर्मों का फल अनन्त गुणा होता है। सभी कर्म अक्षय हो जाते हैं। इसी तिथि को **नर-नारायण, परशुराम** और **हयग्रीव** अवतार हुए थे तथा इसी दिन **त्रेतायुग** का भी आरम्भ हुआ था। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में होती है। अक्षय तृतीया बड़ी पवित्र और महान फल देने वाली तिथि है। इस दिन नवीन वस्त्र, शस्त्र और गाड़ी, आभूषण आदि क्रय करने और धारण करने शुभ माने जाते हैं। इसी दिन **गौरी-पार्वती** की भी पूजा होती है। अक्षय तृतीया व्रत की कथा, माहात्म्यादि का विवरण हमारी प्रकाशित **मुफीद आलम जन्त्री** 2013 ई. में पढ़ें। **लोक भविष्य**–ता. 14 मई, मंगलवार को ज्येष्ठ संक्रांति पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश होने से महोदरी नाम की चर सँज्ञक चोरों एवं बेईमानों को लाभ प्रदायक होगी। **मंगलवारी संक्रान्ति** होने से तिल, तैल, गुड़, वनस्पति व करियाना सम्बन्धी वस्तुएं तेज़ होंगी। पक्ष में वृष राशि पर चार या पाँच ग्रहों का सम्बन्ध होने से कहीं उपद्रव , अग्निकाण्ड, युद्ध व कहीं छत्रभंग होने का भय होगा। सतारुढ़ नेताओं के लिए चुनौतिपूर्ण समय होगा। आन्तरिक कलह व बाहरी शत्रुओं का भय होगा। **सं. राशिफल**–वृष, कर्क, कन्या, तुला, मकर एवं कुम्भ राशि वालों के लिए शुभ रहेगी।

वि. संवत् २०७०, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक: १९३५ | **सन् 2013 ई. (ता. 26 मई से 8 जून तक)** हिजरी सन् 1434 | भा. स्टैं. टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	रा. शक (तारीखें)	हिज. मु.	मई	प्र. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	**ग्रह दर्शन**—सायं शनि पूर्वकपाल में तथा बुध–गुरु–शुक्र पश्चिम क्षितिज में पास–पास होंगे। मंग. अभी अस्त है। ता. 5 जून से गुरु पश्चिम में अस्त होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.३८	१	रवि	१	५५	ज्ये.	३०	५	सिद्ध	२५	३	कौ	१	५५	५	१५	26	१३	ध. ३०/०५	श्रीनारद जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल विचार	१	१०	५२	१५	५	३०	१९	२१
००.००	२	रवि	५२	४५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.४३	३	चंद्र	४३	५५	मूल	२३	८	साध्य	१४	५३	व	१८	२०	६	१६	27	१४	धनु	भ. १८/२० से ४३/५५ तक, **बुध मिथुन में ४८/०५**	१	११	४९	५०	५	२९	१९	२२
३४.४५	४	मंग	३५	४८	पू.षा	१६	४३	शुभ शुक्ल	५ ५६	०५ ०३	बव	९	५२	७	१७	28	१५	म. ३०/१३	**अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14),	१	१२	४७	२४	५	२९	१९	२३
३४.४५	५	बुध	२८	४३	उ.षा.	११	१५	ब्रह्म	४८	००	कौ	२	१६	८	१८	29	१६	मकर	**शुक्र मिथुन में १३/३८**	१	१३	४४	५४	५	२९	१९	२३
३४.४८	६	गुरु	२३	००	श्रव	७	३	ऐंद्र	४१	८	व	२३	००	९	१९	30	१७	कुं. ३५/३३	भ. २३/०० से ५०/५८ तक, **पंचक प्रारम्भ** ३५/३३	१	१४	४२	२७	५	२९	१९	२४
३४.५०	७	शुक्र	१८	५५	धनि	४	२८	वैधृ	३५	४०	बव	१८	५५	१०	२०	31	१८	कुम्भ	बुध आर्द्रा में ४४/४३, **गुरु मृग ३ मिथुन में ३/१५ (6/46)**	१	१५	३९	५८	५	२८	१९	२४
३४.५०	८	शनि	१६	३३	शत	३	३३	विष्क	३१	३८	कौ	१६	३३	११	२१	जून	१९	मी. ४८/५८	जून मास प्रारम्भ	१	१६	३७	२७	५	२८	१९	२४
३४.५३	९	रवि	१५	५८	पू.भा	४	२०	प्रीति	२८	५५	गर	१५	५८	१२	२२	2	२०	मीन	भ. ४६/३२ से प्रा., स. सि. योग:	१	१७	३४	५७	५	२८	१९	२५
३४.५५	१०	चंद्र	१७	५	उ.भा	६	५३	आयु	२७	३५	वि	१७	५	१३	२३	3	२१	मीन	भ. १७/०५ तक, शुक्र आर्द्रा में ४०/४०, गुरुवार्धक्य प्रारम्भ ४१/००	१	१८	३२	२६	५	२७	१९	२५
३४.५८	११	मंग	१९	४०	रेव	१०	५३	सौभा	२७	२३	बा	१९	४०	१४	२४	4	२२	मे. १०/५३	**पंचक समाप्त १०/५३, अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी+**	१	१९	२९	५५	५	२७	१९	२६
३५.००	१२	बुध	२३	३३	अश्वि	१६	८	शोभ	२८	८	तै	२३	३३	१५	२५	5	२३	मेष	प्रदोष व्रत, + स. सि. योग 9/48 से.	१	२०	२७	२२	५	२७	१९	२७
३५.००	१३	गुरु	२८	२३	भर.	२२	२३	अति	२९	३८	व	२८	२३	१६	२६	6	२४	वृ. ३९/०५	भ. २८/२३ से, मंगल रोहि. में ७/४५, गुरु पश्चिम में अस्त ४१/०३ **A**	१	२१	२४	५०	५	२७	१९	२७
३५.००	१४	शुक्र	३३	५८	कृति	२९	२०	सुक	३१	४०	वि	१	११	१७	२७	7	२५	वृष	भ. १/११ तक, नैपच्यून वक्री २१/१८	१	२२	२२	१६	५	२७	१९	२७
३५.०३	३०	शनि	४०	००	रोहि	३६	४८	धृति	३४	०३	चतु	६	५९	१८	२८	8	२६	वृष	**ज्येष्ठ (भावुका) अमावस**, सूर्य मृग. में ०/२०, **वटसावित्री व्रत B**	१	२३	१९	३८	५	२७	१९	२७

गुरु अस्त 6 जून

A मासशिवरात्रि व्रत **B** (अमा. पक्ष), शनैश्चर जयन्ती, शनिवारी अमावस, स. सि. योग:

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 1 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	२	२	२	६	६	०
१६	१९	६	७	०	३	११	२१	२१
३७	१४	२१	४	१२	२३	५१	३३	३३
३४	१३	१	४४	५२	३९	०	२	२
57 30	790 44	42 49	93 32	13 37	73 23	3 17	3 10	3 10
रोहि २	शत ४	कृति ३	आर्द्रा १	मृग ३	मृग ४	स्वा. २	विशा १	भर. ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

शु. ३ गु. बु.
२ सू. मं.
१ के.
४
१२
५
११ चं.
६
८
१०
७ श. रा.
९

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 8 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	२	२	२	६	६	०
२३	१६	११	१६	१	११	११	२१	२१
१९	५	१९	५५	४८	५६	२९	१०	१०
४८	४६	४०	४४	३२	५८	३९	४७	४७
57 25	710 42	42 28	71 58	13 44	73 16	2 45	3 11	3 11
रोहि ४	रोहि २	रोहि १	आर्द्रा ४	मृग ३	आर्द्रा २	स्वा. २	विशा १	भर. ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रात: 5.30

शु. ३ गु. बु.
२ सू. चं. मं.
१ के.
४
१२
५
११
६
८
१०
७ श. रा.
९

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—

ज्येष्ठ मास में **अङ्गारकी** श्रीगणेश चतुर्थी (28 मई), **अपरा एकादशी** (भद्रकाली एका.) व्रत (4 जून), **शनैश्चर** जयन्ती (8 जून), वटसावित्री व्रत (8 जून) को सुहागिन स्त्रियां अपने पति एवं संतान की दीर्घायु की कामना से व्रत रखकर वट वृक्ष की पूजार्चना करके कच्चे सूत को लपेटते हुए परिक्रमा एवं प्रार्थना करती हैं। चा. ज्येष्ठ मास (26 मई) के प्रारम्भ में ही वृष राशि पर सूर्य, भौमादि ग्रहों का पंचग्रही योग बना हुआ है। जिसके प्रभावस्वरूप राष्ट्रनेताओं को आन्तरिक व बाह्य शत्रुओं एवं राजनीतिक संकट का सामना हो। सीमाओं पर चीनी माओवादी व नक्सलियों के द्वारा हिंसक व दु:खद घटनाएँ कराने के संकेत हैं–**चत्वार: पंचवा खेटा बलिनस्त्वेक राशिगा:। राज्ञां बहुभय दद्यु: अरिभि: दुखदा मता:।।** ज्येष्ठ मास में **पाँच रविवार** होने का फल भी नेष्ट कहा गया है–**यत्र मासे रविवारा: जायन्ते पञ्च सततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंग: स्यात् दास्ते च महद्भयम्।।** अर्थात् पाँच रविवार होने से कहीं अनाज की कमी, आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी, दुर्भिक्ष या अकाल जैसी स्थिति होगी। कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) के योग हैं। सामान्य लोगों में विक्षोभ व असंतोष रहे। 31 मई को **गुरू मिथुन राशि** में शुक्र के साथ योग करेगा। सीमाओं पर युद्ध भय एवं विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं। **अमावस** शनिवार को होने से साधारण लोगों को दुख व पीड़ाओं का सामना रहे। पिता–पुत्रादि नजदीकी नातेदारों में परस्पर सौहार्द व प्यार की

होगी कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) के योग हैं। सामान्य लोगों में विक्षोभ व असंतोष रहे। 31 मई को गुरू मिथुन राशि में शुक्र के साथ योग करेगा। सीमाओं पर युद्ध भय एवं
विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं। अमावस ... नजदीकी नातेदारों में परस्पर सौहार्द व प्यार की

वि. संवत् २०७०, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९३५ — सन् 2013 ई. (ता. 9 जून से 23 जून तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य उत्तर-दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं शनि पूर्वकपाल में तथा बुध-शुक्र पास-पास पश्चिम में होंगे। मंग.-गुरु अभी अस्त हैं।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	शक. दि.	मु. ति.	जून	प्रविष्टे	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	व्रत, पर्व आदि	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३५.०४	१	रवि	४६	१३	मृग	४४	२५	शूल	३६	३८	किं	१३	७	१९	२९	9	२७	मि. १०/३५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ**	१	२४	१७	०३	५	२७	१९	२८
३५.०५	२	चंद्र	५२	२८	आर्द्रा	५२	५	गंड	३९	१५	बा	१९	२१	२०	३०	10	२८	मिथुन	चन्द्रदर्शन, बुध पुर्न. में ४०/१३	१	२५	१४	२७	५	२६	१९	२८
३५.०८	३	मंग	५८	२३	पुर्न	५९	२५	वृद्धि	४१	३८	तै	२५	२६	२१	शब	11	२९	क. ४२/३८	**रम्भा तृतीया व्रत**, प्रताप जयंती (राज.), शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ	१	२६	११	५०	५	२६	१९	२९
३५.१०	४	बुध	६०	००	पुष्य	६०	००	ध्रुव	४३	४०	व	३१	३	२२	२	12	३०	कर्क	भ. ३१/०३ से प्रारम्भ,	१	२७	०९	१२	५	२६	१९	२९
३५.१०	४	गुरु	३	४३	पुष्य	६	१३	व्या.	४५	८	वि	३	४३	२३	३	13	३१	कर्क	भ. ३/४३ तक, स. सि. योग:	१	२८	०६	३३	५	२६	१९	३०
३५.१०	५	शुक्र	८	१३	अश्ले	१२	१०	हर्ष	४५	४५	बा	८	१३	२४	४	14	आ.	सिं. १२/१०	**सूर्य मिथुन में ५८/४५, आषाढ़ संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. A**	१	२९	०३	५३	५	२६	१९	३०
३५.१०	६	शनि	११	३०	मघा	१६	५८	वज्र	४५	१८	तै	११	३०	२५	५	15	२	सिंह	गण्डमूलादि विचार	२	००	०१	१३	५	२६	१९	३०
३५.१३	७	रवि	१३	२३	पू.फा	२०	१८	सिद्धि	४३	३८	व	१३	२३	२६	६	16	३	कं. ३५/५३	भ. १३/१३ से ४३/२७ तक,	२	००	५८	३१	५	२६	१९	३०
३५.१३	८	चंद्र	१३	३०	उ.फा	२२	००	व्य.	४०	३३	बव	१३	३०	२७	७	17	४	कन्या	**श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती**, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)	२	०१	५५	४९	५	२६	१९	३१
३५.१३	९	मंग	११	५०	हस्त	२१	५०	वरी	३५	५८	कौ	११	५०	२८	८	18	५	तु. ५१/०३	**श्रीगङ्गा दशहरा पर्व** (हरिद्वार)–देखें पृष्ठ 80	२	०२	५३	०६	५	२६	१९	३१
३५.१३	१०	बुध	८	१३	चित्रा	१९	४८	परि	२९	५०	गर	८	१३	२९	९	19	६	तुला	भ. ३५/३३ से, स्नान पूजन दानादि (हरिद्वार)	२	०३	५०	२५	५	२७	१९	३१
३५.१३	११	गुरु	२	५३	स्वा.	१६	५	शिव	२२	२३	वि	२	५३	३०	१०	20	७	वृ. ५७/१५	भ. २/५३ तक, **निर्जला एकादशी व्रत**, चम्पक द्वादशी	२	०४	४७	४०	५	२७	१९	३२
००.००	१२	गुरु	५५	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	00	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.१३	१३	शुक्र	४७	४५	विशा	१०	५०	सिद्ध	१३	४०	कौ	२१	५२	३१	११	21	८	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत, सूर्य आर्द्रा में ५७/४५**, सूर्य सायन कर्क में १२/४७, (B)	२	०५	४४	५५	५	२७	१९	३२
३५.१२	१४	शनि	३८	३८	अनु ज्ये.	४ ५७	२३ ५	साध्य शुभ	३ ५३	५८ ३५	गर	१३	१२	आ	१२	22	९	ध. ५७/०५	भ. ३८/३८ से, **शुक्र कर्क में ४८/५०**, शक आषाढ़ प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत देखें पृ. 81	२	०६	४२	०८	५	२७	१९	३२
३५.११	१५	रवि	२८	५५	मूल	४९	२५	शुक्ल	४२	५०	वि	३	४७	२	१३	23	१०	धनु	भ. ३/४७ तक, **ज्येष्ठ पूर्णिमा**, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) C	२	०७	३९	३२	५	२८	१९	३२

A अगले दिन, गुरु मृग. (४) में ३९/२०, शुक्र पुर्न. में ३६/००, **B** वर्षा ऋतु प्रारम्भ, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वटसावित्री व्रत प्रा., स. सि. यो. 9/47 से **C** सन्त कबीर जयन्ती, पूर्णिमा व्रत मतान्तरे, स. सि. यो.

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 17 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	२	२	२	६	६	०
१	५	१७	२५	३	२२	११	२०	२०
५५	१४	३९	३९	५२	५५	७	४२	४२
५९	३०	५१	३२	२०	३८	५८	१०	१०
57 17	793 9	41 58	39 43	13 46	73 5	1 58	3 11	3 11
मृग ३	उ.फा ३	रोहि ३	पुन २	मृग ४	पुन १	स्वा २	विशा १	भर ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

भाव	राशि	ग्रह
1	३	सू. बु. गु. शु.
2	२	मं.
3	१	के.
4	१२	
5	११	
6	१०	
7	९	
8	८	
9	७	श. रा.
10	६	चं.
11	५	
12	४	

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 23 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	१	२	२	३	६	६	०
७	०	२१	२८	५	०	१०	२०	२०
३९	४६	५०	३५	१४	१३	५७	२३	२३
२९	२१	५०	४	५४	४३	२८	५	५
57 13	916 58	41 40	13 58	73 45	72 56	1 25	3 11	3 11
आर्द्रा १	मूल १	रोहि ४	पुन ३	मृग ४	पुन ४	स्वा २	विशा १	भर ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30

भाव	राशि	ग्रह
1	३	सू. बु. गु.
2	२	मं.
3	१	के.
4	१२	
5	११	
6	१०	
7	९	चं.
8	८	
9	७	श. रा.
10	६	
11	५	
12	४	शु.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया (11 जून) को रम्भा देवी का विधिपूर्वक व्रत-दान करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। अष्टमी (17 जून) को माता खीर भवानी का मेला जम्मू-काश्मीर एवं दिल्ली मन्दिरों में खीर-पूरी के साथ बड़े उत्साह व श्रद्धा से मनाया जाता है। श्रीगंगा दशहरा का मुख्य पर्व (स्नान-दान जपादि हेतु) 18 जून मंगलवार को होगा। क्योंकि इस दिन प्रात: 10/10 बजे के बाद ज्येष्ठ शुक्ल, दशमी तिथि (पूर्वाह्न व्या.), हस्त नक्षत्र, गर करण एवं कन्या का चन्द्रमा-ये पाँच तत्त्व विद्यमान रहेंगे। ता. 19 जून को दशमी तिथि मात्र 8/44 (घं.मिं.) तक रहेगी। यद्यपि इस दिन को भी श्रीगंगा तीर्थ पर स्नान, दानादि का महत्त्व रहेगा। **निर्जला एकादशी** (20 जून) का निराहार व्रत रखकर स्नानादि के पश्चात् भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायण की पूजा मंत्र, जप एवं स्तोत्र पाठ करने के बाद द्वादशी के दिन ब्राह्मण को यथाशक्ति अन्न-वस्त्र, मौसमी फल, पंखा, जल-कुम्भादि-पात्र का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होगा। **आषाढ़ संक्रान्ति**, पंचमी तिथि, शुक्रवार एवं मघा नक्षत्रकालीन, 14 जून की मध्यरात्रि के बाद एवं 15 जून की प्रात: 4 बजकर 56 मिनट पर वृष लग्न में प्रवेश करेगी। 30 मुहूर्त्ति, वारानुसार मिश्रा नामक पशुपालकों को शुभ व लाभकारी एवं नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह संक्रान्ति शूद्रों एवं नीचजनों को लाभप्रद होगी। इस संक्रान्ति के स्नान, जप दानादि का फल 15 जून शनिवार को प्रात: 11/20 बजे तक होगा। **आषाढ़ संक्रान्ति** मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चि., कुम्भ राशि वालों को लाभप्रद होगी।

वि. संवत् २०७०, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक: १९३५ | सन् 2013 ई. (ता. 24 जून से 8 जुलाई तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं शनि याम्योत्तर के पास, शुक्र पश्चिम में तथा बुध भी पश्चिमक्षितिज के पास होगा। ता. (1) जुला से बु. पश्चिम में ही अस्त, 27 जून मं. और 2 जुला. से गुरू पूर्व में उदय होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें आषा.	शाबा मु.	जून	आषाढ़	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन	दि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५.११	१	चंद्र	१९	१३	पू.षा	४१	५३	ब्रह्म	३२	१०	कौ	१९	१३	३	१४	24	११	म. ५५/०३	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	२	०८	३६	३७	५	२८	१९	३२
३५.१०	२	मंग	९	४५	उ.षा	३४	५०	ऐंद्र	२१	५३	गर	९	४५	४	१५	25	१२	मकर	भ. ३५/२८ से, मंगल मृग. में ८/३५, शुक्र पुष्य में ३३/२३	२	०९	३३	४९	५	२९	१९	३२
३५.१०	३	बुध	१	१०	श्रव	२८	५५	वैधृ	१२	२३	वि	१	१०	५	१६	26	१३	कुं. ५६/२८	भ. १/१०, तक, **पंचक प्रारम्भ ५६/२८, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत A**	२	१०	३१	०२	५	२९	१९	३३
००.००	४	बुध	५३	५०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.१०	५	गुरु	४६	५०	धनि	२४	२५	विष्क प्रीति	? ५५	५८ ५५	कौ	२०	२०	६	१७	27	१४	कुम्भ	**मंगल पूर्व में उदय २९/५०,**	२	११	२८	१७	५	२९	१९	३३
३५.१०	६	शुक्र	४४	१३	शत	२१	४०	आयु	५१	२८	गर	१५	३२	७	१८	28	१५	कुम्भ	भ. ४४/१३ से,	२	१२	२५	२९	५	२९	१९	३३
३५.१०	७	शनि	४२	२५	पू.भा	२०	५८	सौभा	४७	४०	वि	१३	१९	८	१९	29	१६	मी. ५/५५	भ. १३/१९ तक, गुरु आर्द्रा (१) में ११/५५	२	१३	२२	४२	५	२९	१९	३३
३५.०९	८	रवि	४२	३८	उ.भा	२२	१३	शोभ	४५	२८	बा	१२	३२	९	२०	30	१७	मीन	राहु स्वा. (४) केतु भर. (२) में १५/२०, स. सि. योग:	२	१४	१९	५६	५	३०	१९	३३
३५.०८	९	चंद्र	४४	४८	रेव	२५	३०	अति	४४	५०	तै	१३	४३	१०	२१	जुला	१८	मे. २५/३०	**पंचक समाप्त २५/३०** (15/42 घं.मिं.), **वक्री बुध पश्चिम में अस्त B**	२	१५	१७	०९	५	३०	१९	३३
३५.०७	१०	मंग	४८	३८	अश्वि	३०	२८	सुक	४५	२८	व	१६	४३	११	२२	2	१९	मेष	भ. १६/४३ से ४८/३८ तक, गुरु पूर्व में उदय ४२/५८, स. सि. यो.	२	१६	१४	२३	५	३०	१९	३३
३५.०५	११	बुध	५३	३८	भर	३६	४०	धृति	४७	००	बव	२१	८	१२	२३	3	२०	वृ. ५३/२३	**योगिनी एकादशी व्रत, गुरु पूर्व में उदय २४/३५**	२	१७	११	३६	५	३१	१९	३३
३५.०४	१२	गुरु	५९	२५	कृति	४३	४८	शूल	४९	१३	कौ	२६	३२	१३	२४	4	२१	वृष	**मंगल मिथुन में ४९/०८** (25/11 घं.मिं.)	२	१८	०८	४९	५	३२	१९	३३
३५.०३	१३	शुक्र	६०	००	रोहि	५१	२३	गंड	५१	४५	गर	३२	३२	१४	२५	5	२२	वृष	प्रदोष व्रत, सूर्य पुर्न. में ५६/२८, गुरु बाल्यत्व समाप्त	२	१९	०६	०५	५	३३	१९	३३
३५.०२	१३	शनि	५	३८	मृग	५९	५	वृद्धि	५४	२५	व	५	३८	१५	२६	6	२३	मि. २५/१३	भ. ५/३८ से ३८/४६ तक, शुक्र आश्ले. में ३२/५०, मासशिवरात्रि व्रत	२	२०	०३	२१	५	३३	१९	३३
३५.००	१४	रवि	११	५३	आर्द्रा	६०	००	ध्रुव	५६	५५	श.	११	५३	१६	२७	7	२४	मिथुन		२	२१	००	३६	५	३४	१९	३३
३४.५६	३०	चंद्र	१७	५५	आर्द्रा	६	३५	व्या.	५९	८	ना	१७	५५	१७	२८	8	२५	क. ५७/००	**आषाढ़-सोमवती अमावस, शनि मार्गी १२/१८** (10/29 घं.मिं.)	२	२१	५७	५०	५	३४	१९	३२

गुरु पूर्वोदय 2 जुला

A (देखें पृष्ठ 13-14), बुध वक्री ३२/५० B २४/३५, जुलाई मास प्रारम्भ

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	१	२	२	३	६	६	०
१४	११	२६	२८	६	८	१०	२०	२०
१९	५३	४१	३७	५०	४३	४९	०	०
५६	२२	२१	२	५९	४७	२१	४९	४९
57 13	767 23	41 19	17 25	13 41	72 46	0 38	3 10	3 10
आर्द्रा ३	उ.भा ३	मृग २	पुन ३	आर्द्रा १	पुष्य २	स्वा २	विशा १	भर. ३
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

४ शु. | ३ सू. बु. गु. | २ मं. | १ के. | १२ चं. | ११ | १० | ९ | ८ | ७ श. रा. | ६ | ५

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	२	२	२	३	६	६	०
२१	१८	२	२४	८	१८	१०	१९	१९
५७	४०	१०	४६	४०	२५	४६	३५	३५
४१	५	२४	४९	१	२३	८	२३	२३
57 14	714 05	40 55	37 50	13 32	72 36	0 2	3 11	3 11
पुन १	आर्द्रा ४	मृग ३	पुन २	आर्द्रा १	आश्ले १	स्वा. २	स्वा. ४	भर. २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

४ शु. | ३ सू. चं. मं. बु. गु. | २ | १ के. | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ श. रा. | ६ | ५

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति श्री सहित विष्णु पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति छाता, जूते, आँवले, आम, खरबूजे, घड़ा, वस्त्रादि का दान करना पुण्यप्रद होता है। **स्वास्थ्य**–आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। इस मास में शीतल जल, सादा भोजन, मौसमी फलों का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रदायक होता है। **लोक भविष्य**–आषाढ़ मास के प्रारम्भ में ही सौम्य ग्रह गुरू मिथुन राशि में अतिचार गति से संचरित है तथा क्रूर ग्रह शनि वक्र गति से तुला राशि में संचार कर रहा है, फलस्वरूप देश के कुछ भागों में राज्य विग्रह, उपद्रव, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), दंगा-फिसाद, महँगाई, अग्निकाण्ड एवं हिंसा की घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं–**यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि अतिचारी तु सौम्यकः। पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्।।** कहीं विचित्र प्रकार के रोगों की व्याप्ति का भय होगा। राजनीतिक व्यवस्था में अस्थिरता का माहौल बनेगा, अत्यधिक महँगाई के कारण लोगों में गहन असंतोष बढ़ेगा। पक्षारम्भ में मंगल मिथुन राशि में पूर्व दिशा से उदित होगा तथा गुरू भी एकादशी तिथि को मिथुन राशिकालीन उदित होने से कुछ स्थलों पर आवश्यक वस्तुएँ दुष्प्राप्य होंगी। **चौपायों को पीड़ा किंवा उनके मूल्यों में भी आकस्मिक वृद्धि होगी–चतुष्पदकुलेयुग्मेन्दः प्राप्यता।।** इसी पक्ष में **8 जुलाई को सोमवती अमावस्या आर्द्रा एवं**

वस्तुएँ दुष्प्राप्य होंगी। चौपायों को पीड़ा किंवा ... ८ जुलाई को सोमवती अमावस्या आर्द्रा एवं

वि. संवत् २०७०, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाक: १९३५

सन् 2013 ई. (ता. 9 जुलाई से 22 जुलाई तक) हिजरी सन् 1434 — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

ग्रह दर्शन—प्रातः मंग, गुरु पूर्व क्षितिज में दिखाई देंगे। ता. 19 से बुध भी पूर्व क्षितिज में होगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त के पास तथा शुक्र पश्चिम में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आषा. प्र.	रमजान	जुलाई	आषाढ़	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.५५	१	मंग	२३	३३	पुर्न	१३	४३	हर्ष	६०	००	बव	२३	३३	१८	२९	9	२६	कर्क	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,	२	२२	५५	०४	५	३४	१९	३२
३४.५३	२	बुध	२८	३०	पुष्य	२०	१८	हर्ष	०	५५	कौ	२८	३०	१९	३०	10	२७	कर्क	चन्द्रदर्शन, रथ-यात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी)	२	२३	५२	१७	५	३५	१९	३२
३४.५२	३	गुरु	३२	४५	अश्ले	२६	१०	वज्र	२	१३	तै	०	३८	२०	रम	11	२८	सिं. २६/१०	**रमज़ान** (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्ड-मूलादि विचार	२	२४	४९	३४	५	३५	१९	३२
३४.४८	४	शुक्र	३६	५	मघा	३१	८	सिद्धि	२	५०	व	४	२५	२१	२	12	२९	सिंह	भ. ४/२५ से ३६/०५ तक, गण्डमूलादि	२	२५	४६	४८	५	३६	१९	३१
३४.४५	५	शनि	३८	१८	पू.फा	३५	५	व्य.	२	४३	बव	७	१२	२२	३	13	३०	कं. ५०/५३	गुरु आर्द्रा (२) में ५५/४८,	२	२६	४४	०४	५	३७	१९	३१
३४.४५	६	रवि	३९	१८	उ.फा	३७	५०	वरी. परि	१/५९	४०/३५	कौ	८	४८	२३	४	14	३१	कन्या	स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी, मंगल आर्द्रा में ३६/३३, स. सि. यो.	२	२७	४१	२१	५	३७	१९	३१
३४.४०	७	चंद्र	३८	४५	हस्त	३९	५	शिव	५६	१८	गर	९	२	२४	५	15	३२	कन्या	भ. ३८/४५ से, विवस्वत सप्तमी	२	२८	३८	३५	५	३८	१९	३१
३४.४०	८	मंग	३६	४३	चित्रा	३८	५०	सिद्ध	५१	४३	वि	७	४४	२५	६	16	श्रा.	तु. ९/१०	भ. ७/४५, तक, **सूर्य कर्क में** २५/१८, **श्रावण संक्रान्ति**, मु. ३०, **(A)**	२	२९	३५	५०	५	३८	१९	३०
३४.३५	९	बुध	३२	५८	स्वा.	३६	५५	साध्य	४५	४५	बा	४	५१	२६	७	17	२	तुला	**शुक्र** मघा (१) **सिंह में** ३४/४३ (19/32), भढली नवमी **(B)**	३	००	३३	०६	५	३९	१९	२९
३४.३५	१०	गुरु	२७	४०	विशा	३३	२८	शुभ	३८	३३	तै	०	१९	२७	८	18	३	वृ. १९/२८	भ. ५४/१५ से, वक्री बुध पूर्व में उदय ३५/२३	३	०१	३०	२०	५	३९	१९	२९
३४.३३	११	शुक्र	२०	५०	अनु	२८	३०	शुक्ल	३०	८	वि	२०	५०	२८	९	19	४	वृश्चिक	भ. २०/५० तक, **देवशयनी एकादशी व्रत**, सूर्य पुष्य में ५४/५३ **C**	३	०२	२७	३६	५	४०	१९	२९
३४.३०	१२	शनि	१२	५३	ज्ये.	२२	२५	ब्रह्म	२०	४८	बा	१२	५३	२९	१०	20	५	ध. २२/२५	शनि प्रदोष व्रत, **बुध मार्गी** ४५/१५ (23/46 घं. मिं.)	३	०३	२४	५३	५	४०	१९	२८
३४.२८	१३	रवि	४	००	मूल	१५	३०	ऐंद्र	१०	४३	तै	४	००	३०	११	21	६	धनु	भ. ५४/३८ से, **मेला ज्वालामुखी** (काश्मीर) प्रा., स. सि. योग:	३	०४	२२	०९	५	४१	१९	२८
००.००	१४	रवि	५४	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	00	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.२७	१५	चंद्र	४५	१३	पू.षा	८	१०	वैधृ विष्क	०/४९	१८/५०	वि	१९	५६	३१	१२	22	७	म. २१/१८	भ. १९/५५ तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा**, व्यास पूजा **D**	३	०५	१९	२६	५	४१	१९	२८

A पुण्यकाल सं. प्रात: 9/22 से, वक्री बुध आर्द्रा में ४८/००, **श्रीदुर्गाष्टमी** **B** **मेला शरीक भवानी** (काश्मीर), यूरेनस वक्री ४२/५५ **(C)** चातुर्मास्य व्रतादि नियम प्रारम्भ, स. सि. योग:
D **श्रीसत्यनारायण व्रत**, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, सूर्य सायन सिंह में 21/26 घं.मिं.

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 16 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	२	२	२	३	६	६	०
२९	२७	७	२०	१०	२८	१०	१९	१९
३५	५३	३६	१७	२७	५	४९	९	९
३३	७	११	७	३५	१९	६	५७	५७
57 14	810 56	40 30	21 15	13 19	72 22	0 49	3 11	3 11
पुन. 3	चित्रा 2	आर्द्रा 1	पुन. 1	आर्द्रा 2	अश्ले. 4	स्वा. 2	स्वा. 4	पू. 2
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

४ शु. | ३ सू. मं. बु. गु. | २ | १ के. | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ श. रा. | ६ चं. | ५

चंद्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 22 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	२	२	२	४	६	६	०
५	२४	११	१९	११	५	१०	१८	१८
१९	२९	३८	२२	४६	१८	५५	५०	५०
०	९	२३	५८	५६	५४	२७	५२	५२
57 16	910 43	40 11	9 50	13 5	72 7	1 23	3 11	3 11
पुष्य 1	पू.षा 4	आर्द्रा 2	आर्द्रा 4	आर्द्रा 2	मघा 2	स्वा. 2	स्वा. 4	पू. 2
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30

५ शु. | ४ सू. | ३ गु. बु. मं. | २ | १ के. | १२ | ११ | १० | ९ चं. | ८ | ७ श. रा. | ६

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया तिथि 10 जुला. को **भगवान् श्रीजगन्नाथ** की सपरिवार **रथ-यात्रा** का भव्य उत्सव बड़े उत्साह से पुरी (उड़ीसा) व अन्य तीर्थ स्थलों पर भक्तों द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। पुष्य नक्षत्र युक्ता द्वितीया तिथि होने से यह पर्व इस वर्ष विशेष पुण्यप्रदा होगा। **हरिशयनी एकादशी** से लेकर कार्तिक शुक्ल एका० पर्यन्त धर्मपरायण तपस्वी लोग चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए चार मास तक नित्य शतनाम आदि **विष्णु स्तोत्र** पाठ सहित भगवान् विष्णु की उपासना की जाती है। यद्यपि भगवान् क्षण भर भी कभी सोते नहीं, परन्तु **प्रबोधिनी एकादशी** के दिन भगवान् योगनिद्रा को त्यागकर प्रत्येक प्रकार की क्रिया में प्रवृत्त हो जाते हैं और प्राणी मात्र का पालन-पोषण और संरक्षण करते हैं। **गुरू पूर्णिमा** (22 जुलाई) के दिन **भगवान्-विष्णु और ऋषि वेदव्यास** की पूजा, अर्चना एवं स्तोत्र पाठ करके अपने इष्ट गुरू की यथाशक्ति धन, वस्त्र, फल, मिष्ठान्न सहित सेवा करनी चाहिए। **श्रावण संक्रान्ति**–16 जुलाई, अष्टमी तिथि, मंगलवार को चित्रा नक्षत्र कालीन 30 मुहूर्त्ति होगी। श्रावण संक्रान्ति दुपैहर 3 बजकर 45 मिनट पर वृश्चिक लग्न में दाखिल होगी। वारानुसार यह संक्रां. महोदरी नामक चर संज्ञक चोरों एवं दुष्ट लोगों को लाभकारी होगी। नक्षत्रानुसार राजनेताओं को लाभकारी एवं सुखकारी होगी। **श्रावण संक्रांति** मंगलवार की होने से राजनेताओं में परस्पर टकराव एवं विग्रह हो, कहीं छत्रभंग, उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित हों। बाढ़ादि प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ेंगी।

वि. संवत् २०७०, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक: १९३५ | तारीखें | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल | **सन् 2013 ई. (ता. 23 जुलाई से 6 अग. तक)** हिजरी सन् 1434 | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

ग्रह दर्शन—प्रातः मंग., बुध, गुरु पूर्व में तथा सायं शनि याम्योत्तरवृत्त में, शुक्र पश्चिम में दिखाई देंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	श्रा. शक.	रमजान	जुलाई	श्रावण	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.२३	१	मंग	३६	८	उ.षा./श्रव	०/५४	५०/०५	प्रीति	३९	४५	बा	१०	४१	श्रा	१३	23	८	मकर	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शक श्रावण प्रारम्भ, **अशून्यशयन व्रत**	३	०६	१६	४४	५	४२	१९	२७
३४.२०	२	बुध	२७	५५	धनि	४८	२३	आयु	३०	२५	तै	२	२	२	१४	24	९	कुं. २१/०५	भ. ५४/२८ से, **पंचक प्रारम्भ** २१/०५, बुध पुर्न. में ३१/३८,	३	०७	१४	००	५	४२	१९	२६
३४.१५	३	गुरु	२१	००	शत	४४	५	सौभा	२२	८	वि	२१	००	३	१५	25	१०	कुम्भ	भ. २१/०० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14),	३	०८	११	२०	५	४३	१९	२५
३४.१३	४	शुक्र	१५	४५	पू.भा	४१	३८	शोभ	१५	१५	बा	१५	४५	४	१६	26	११	मी. २७/०५		३	०९	०८	३८	५	४३	१९	२४
३४.१०	५	शनि	१२	२८	उ.भा	४१	१३	अति	१०	००	तै	१२	२८	५	१७	27	१२	मीन	**नाग-पंचमी** (राज. व बंगाल)	३	१०	०५	५९	५	४४	१९	२४
३४.०५	६	रवि	११	२०	रेव	४२	५८	सुक	६	२५	व	११	२०	६	१८	28	१३	मे. ४२/५८	भ. ११/२० से ४१/५२ तक, **पंचक समा.** ४२/५८, शुक्र पू.फा. में **(A)**	३	११	०३	२१	५	४५	१९	२३
३४.०३	७	चंद्र	१२	२३	अश्वि	४६	४०	धृति	४	३५	बव	१२	२३	७	१९	29	१४	मेष	गुरु आर्द्रा (३) में ९/५५, गण्डमूल 24/26 तक	३	१२	००	४४	५	४६	१९	२३
३४.००	८	मंग	१५	२३	भर	५२	१३	शूल	४	२३	कौ	१५	२३	८	२०	30	१५	मेष		३	१२	५८	०६	५	४६	१९	२२
३३.५५	९	बुध	१९	५८	कृति	५८	५५	गंड	५	२३	गर	१९	५८	९	२१	31	१६	वृ. ८/४५	भ. ५२/४९ से प्रा., स. सि. योगः	३	१३	५५	३०	५	४७	१९	२१
३३.५३	१०	गुरु	२५	४०	रोहि	६०	००	वृद्धि	७	२०	वि	२५	४०	१०	२२	अग	१७	वृष	भ. २५/४० तक, अगस्त मास प्रारम्भ	३	१४	५२	५४	५	४७	१९	२०
३३.५०	११	शुक्र	३१	५३	रोहि	६	२५	ध्रुव	९	४८	बा	३१	५३	११	२३	2	१८	मि. ४०/१५	सूर्य आश्ले. में ५१/४८, **कामिका एकादशी व्रत**	३	१५	५०	२२	५	४८	१९	१९
३३.४५	१२	शनि	३८	८	मृग	१४	५	व्या.	१२	२५	कौ	५	१	१२	२४	3	१९	मिथुन	मंगल पुर्न. में ३३/१३,	३	१६	४७	५०	५	४९	१९	१९
३३.४३	१३	रवि	४४	३	आर्द्रा	२१	३५	हर्ष	१४	५५	गर	११	६	१३	२५	4	२०	मिथुन	भ. ४४/०३ से, **प्रदोष व्रत, बुध कर्क** में ३९/०८ (21/28 घं. मिं.)	३	१७	४५	१९	५	४९	१९	१८
३३.४०	१४	चंद्र	४९	१८	पुर्न	२८	३०	वज्र	१६	५५	वि	१६	४१	१४	२६	5	२१	क. ११/५०	भ. १६/४१ तक, मासशिवरात्रि व्रत	३	१८	४२	४७	५	५०	१९	१८
३३.३८	३०	मंग	५३	४८	पुष्य	३४	४५	सिद्धि	१८	२५	चतु	२१	३३	१५	२७	6	२२	कर्क	**हरियाली/भौमवती अमावस**, बुध पुष्य में ५३/२३	३	१९	४०	१७	५	५०	१९	१७

(A) ४०/०८, शीतला सप्तमी

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	२	२	४	६	६	०
१२	१५	१६	२३	१३	१४	११	१८	१८
५७	५६	५८	२६	३०	५४	९	२५	२५
२८	१०	३४	१२	३०	५८	१७	२६	२६
57 22	730 12	39 49	56 39	12 45	71 51	2 9	3 11	3 11
पुष्य ३	भर १	आर्द्रा ४	पुर्न २	आर्द्रा ३	पू.फा १	स्वा २	स्वा ४	भर २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

४: सू. ; ५: शु. ; ३: बु. गु. मं. ; २ ; १: चं. के. ; १२ ; ११ ; १० ; ९ ; ८ ; ७: श. रा. ; ६

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	२	३	२	४	६	६	०
१९	९	२१	१	१४	२३	११	१८	१८
३९	२९	३६	५६	५८	१७	२६	३	३
३०	१०	१८	५	३७	६	१७	१०	१०
57 30	728 29	39 28	92 47	12 21	71 33	2 47	3 11	3 11
आश्ले १	पुष्य २	पुर्न १	पुर्न ४	आर्द्रा ३	पू.फा ३	स्वा २	स्वा ४	भर २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

४: सू. चं. बु. ; ५: शु. ; ३: गु. मं. ; २ ; १: के. ; १२ ; ११ ; १० ; ९ ; ८ ; ७: श. रा. ; ६

श्रावण कृष्ण पक्षफल—

श्रावण मास में भगवान् शिव की प्रसन्नता हेतु हर सोमवार का व्रतादि करके **शिव पूजन** करने का विशेष माहात्म्य होता है। प्रतिदिन अथवा प्रत्येक सोमवार को बिल्व पत्र, दूध, गंगाजल, पंचामृत सहित शिवलिङ्ग की षोडशोपचार पूजन एवं अभिषेक "ॐ नमः शिवाय" मंत्र का जप, श्रावण मास माहात्म्य और श्रीशिवमहापुराण का श्रवण एवं पठन करने से अभीष्ट फलों की प्राप्ति होती है। **श्रावण** के प्रत्येक मंगलवार को **श्रीमङ्गलागौरी** का व्रत, पूजनादि विधिपूर्वक करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। **6 अग.** को हरियाली अमावस **मंगलवार** को होने से इस दिन भी गङ्गा आदि तीर्थ पर स्नान, जप, दान आदि करने से (शास्त्रमतानुसार) एक हज़ार गोदान का फल मिलता है। परन्तु राजनीतिक पक्ष से **मंगलवारी अमावस** का फल शुभ नहीं माना गया। "**राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।।**" अर्थात् देश के किन्हीं राजनेताओं में विग्रह एवं टकराव हों, कहीं छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन), उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित हों। कहीं अतिवृष्टि या अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में जबरदस्त तेजी हो। **श्रावण** मास में ही **पाँच मंगलवारों** का होना भी सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं। देश में कहीं युद्ध भय, हिंसक घटनाओं की संभावना, राज्य परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का [illegible] मासे महीसुने जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी

वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में जबरदस्त तेजी हो। श्रावण मास में ही पाँच मंगलवारों का होना भी सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं। देश में कहीं युद्ध भय, हिंसक घटनाओं की संभावना, राज्य परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं–यत्रमासे महीसुने जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी

वि. संवत् २०७०, श्रावण शुक्ल पक्ष शाकः १९३५

सन् 2013 ई. (ता. 7 अगस्त से 21 अगस्त तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः मं., बु., गुरु पूर्व में दिखाई देंगे। ता. 12 अग. से बुध पूर्व में अस्त होगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर तथा शु. पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	श्रा. शाके	हि. मु.	अगस्त	श्रावण प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३.३३	१	बुध	५७	२०	अश्ले	४०	५	व्य.	१९	१५	किं	२५	३४	१६	२८	7	२३	सिं. ४०/०५	**श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) **प्रारम्भ**	३	२०	५७	५१	५	५१	१९	१६
३३.२८	२	गुरु	५९	५८	मघा	४४	३५	वरी	१९	२३	बा	२८	३९	१७	२९	8	२४	सिंह	चन्द्रदर्शन, शुक्र उ.फा. में ४९/१८	३	२१	३५	२४	५	५२	१९	१५
३३.२५	३	शुक्र	६०	००	पू.फा	४८	१३	परि	१८	४८	तै	३०	५१	१८	शव	9	२५	सिंह	मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज (देखें पृष्ठ 81), शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	३	२२	३२	५६	५	५२	१९	१४
३३.२०	३	शनि	१	४३	उ.फा	५०	५०	शिव	१७	२८	गर	१	४३	१९	२	10	२६	कं. ३/५५	भ. ३२/०६ से, **दूर्वा गणपति व्रत**, वरद् चतुर्थी	३	२३	३०	३३	५	५३	१९	१३
३३.१५	४	रवि	२	२८	हस्त	५२	२५	सिद्ध	१५	२०	वि	२	२८	२०	३	11	२७	कन्या	भ. २/२८ तक, **नाग-पंचमी** (देखें पृष्ठ 81), **शुक्र कन्या में** ३७/१५ A	३	२४	२८	०९	५	५४	१९	१२
३३.१२	५	चंद्र	२	१०	चित्रा	५२	५८	साध्य	१२	२५	बा	२	१०	२१	४	12	२८	तु. २२/४०	**बुध पूर्व में अस्त** १०/५३, **श्रीकल्कि जयन्ती**	३	२५	२५	४४	५	५४	१९	११
३३.०७	६	मंग	०	४३	स्वा.	५२	१८	शुभ	८	३०	तै	०	४३	२२	५	13	२९	तुला	भ. ५८/०५ से, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती	३	२६	२३	२१	५	५५	१९	१०
००.००	७	मंग	५८	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३.०२	८	बुध	५४	१३	विशा	५०	२३	शुक्ल ब्रह्म	३ ५७	४० ५०	वि	२६	९	२३	६	14	३०	वृ. ३५/५८	भ. २६/०९ तक, बुध आश्ले. में १८/५०, गुरु आर्द्रा (४) में २०/२३ B	३	२७	२०	५९	५	५५	१९	०८
३२.५७	९	गुरु	४९	०३	अनु	४७	१३	ऐंद्र	५०	५५	बा	२१	३८	२४	७	15	३१	वृश्चिक	**भारत स्वतन्त्रता दिवस**, स. सि. योग:	३	२८	१८	३९	५	५६	१९	०७
३२.५२	१०	शुक्र	४२	४३	ज्ये.	४२	५३	वैधृ	४३	०३	तै	१५	५३	२५	८	16	भा.	ध. ४२/५३	**सूर्य मघा (१) सिंह में** ४५/३०, **भाद्रपद संक्रान्ति**, ३० मु., C	३	२९	१६	२०	५	५७	१९	०६
३२.५०	११	शनि	३५	३०	मूल	३७	४०	विष्क	३४	२८	व	९	७	२६	९	17	२	धनु	भ. ९/०७ से ३५/३० तक, **पवित्रा एकादशी व्रत**	४	००	१४	००	५	५७	१९	०५
३२.४५	१२	रवि	२७	३०	पू.षा	३१	४०	प्रीति	२५	१३	बव	१	३०	२७	१०	18	३	म. ४५/०८	प्रदोष व्रत, **मंगल कर्क में** ५०/०३ (25/59 घं. मिं.)	४	०१	११	४४	५	५८	१९	०४
३२.४३	१३	चंद्र	१९	१५	उ.षा	२५	२५	आयु	१५	४३	तै	१९	१५	२८	११	19	४	मकर		४	०२	०९	२६	५	५८	१९	०३
३२.३७	१४	मंग	१०	५८	श्रव	१९	१३	सौभा शोभ	६ ५७	१३ ३	व	१०	५८	२९	१२	20	५	कुं. ४६/१८	भ. १०/५८ से ३७/०४ तक, **रक्षा-बन्धन** (देखें पृष्ठ 81), D	४	०३	०७	११	५	५९	१९	०२
३२.३५	१५	बुध	३	१०	धनि	१३	३३	अति	४८	३३	बव	३	१०	३०	१३	21	६	कुम्भ	श्रावण पूर्णिमा, **रक्षा-बन्धन** (पूर्णिमा प्रातः 7/15 तक) (देखें पृ. 81) F	४	०४	०४	५५	५	५९	१९	०१

A स. सि. योगः **B** श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी–चामुण्डादेवी–नैनादेवी **C** पुण्यकाल सं. अगले दिन **D** **पंचक प्रारम्भ** ४६/१८, **बुध मघा १ सिंह में** ५७/२०, अर्थवेदि–ऋग्वेदि उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, गायत्री जयं., दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, भद्रा. 20 अग. की प्रातः 10/22 से 20/49 तक **F** सूर्य सायन कन्या में ५६/२३, शरद् ऋतु प्रारम्भ, संस्कृत दिवस

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	२	३	२	५	६	६	०
२७	२१	२६	१६	१६	२	११	१७	१७
२०	३१	५०	०	३५	४८	५१	३७	३७
००	१०	४६	५३	४५	२४	५	४४	४४
57 37	828 23	39 5	117 44	11 51	71 12	3 29	3 11	3 11
आश्ले ४	चित्रा १	पुन ३	पुष्य ४	आर्द्रा ३	उ.फा २	स्वा २	स्वा ४	भ २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

५; ४; ३ गु. मं.; ६ शु.; सू. बु.; २; ७ चं. श. रा.; १ के.; ८; १०; १२; ९; ११

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	३	४	२	५	६	६	०
४	३	१	०	१७	११	१२	१७	१७
३	४	२३	२	५७	५	१७	१५	१५
४५	१	२०	५५	६	३४	१२	२९	२९
57 45	871 56	38 45	120 56	11 19	70 47	4 3	3 11	3 11
मघा २	धनि ३	पुन ४	मघा १	आर्द्रा ४	हस्त १	स्वा. २	स्वा. ४	भ. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

६ शु.; ४ मं.; ७ श. रा.; ५ सू. बु.; ३ गु.; ८; २; ९; ११ चं.; १ के.; १०; १२

श्रावण शुक्ल पक्षफल–

प्रतिपदा तिथि (7 अग.) से ही माता छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) का पावन मेला प्रारम्भ होगा। ता. 10 अग. को सिंघारा तीज के दिन सुहागिन स्त्रियां झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। 11 अग. नाग पंचमी के दिन अपनी गृह द्वार की दहलीज के दोनों ओर गोबर से सर्पाकृति बनाकर सर्पराज की दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्पाक्षत, लड्डूओं सहित पूजा करके नागस्तोत्र या "**ॐ कुरूकुल्ये हुँ फट् स्वाहा**" मन्त्र की 3 माला पाठ करने से गृह में विषधारी सर्पों का भय नहीं होता। ता. 16 अग., शुक्रवार को **भाद्रपद संक्रान्ति** मूल-नक्षत्र में प्रविष्ट होने से यह संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति, राक्षसी नामक होगी जो नीच एवं दुष्ट जनों को शुभ एवं लाभकारी होगी। श्रावण अष्टमी (14 अग.) **को माता चिन्तपूर्णी** (छिन्नमस्तिका) के दरबार में भव्य मेले एवं उत्सव का समायोजन होगा। **श्रावण पूर्णिमा** (20 एवं 21 अग.) को भाई-बहिनों के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक **रक्षाबन्धन** का त्यौहार समस्त भारत में मनाया जाएगा। 21 अग. को पूर्णिमा प्रातः 7-15 तक व्याप्त रहेगी। पंजाब, हरियाणा आदि में उदयकालिक पूर्णिमा के दिन ही रक्षाबन्धन मनाने की परम्परा के कारण इसी दिन यह पर्व मनाएंगे। भद्रा आदि दोष का कोई विचार नहीं होगा। इसी दिन **श्री अमरनाथ (काश्मीर)** के पावन तीर्थ की पवित्र गुफा में बर्फानी बाबा भगवान् शिवलिङ्ग के प्रत्यक्ष एवं दिव्य दर्शन होंगे। 20 अग. मंगलवार को प्रातः 10/22 के बाद रात्रि पर्यन्त पूर्णिमा विद्यमान रहेगी, परन्तु रात्रि 8/49 तक भद्रा व्याप्त रहेगी। (देखें पृष्ठ–81)

आकाश लक्षण–भारत के उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं। उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी।

वि. संवत् २०७०, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९३५

सन् 2013 ई. (ता. 22 अग. से 5 सितं. तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल पूर्व में, उससे ऊपर पूर्वकपाल में गुरु होगा। शुक्र सायं पश्चिम में तथा शनि पश्चिमकपाल में होगा। बुध प्रक्षारम्भः अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	रा. शक	शव्वाल मु.	अगस्त	भाद्र. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
००.००	१	बुध	५६	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२.३३	२	गुरु	५०	३३	शत	८	४८	सुक	४१	०३	तै	२३	२९	३१	१४	22	७	मी. ५१/२०		४	०५	०२	४२	६	००	१९	०१
३२.२८	३	शुक्र	४६	३०	पू.भा	५	२८	धृति	३४	५०	व	१८	३२	भाद्र	१५	23	८	मीन	भ. १८/३२ से ४६/३० तक, मंगल पुष्य में ५९/३३, **कज्जली तृतीया A**	४	०६	००	३३	६	०१	१९	००
३२.२३	४	शनि	४४	२३	उ.भा	३	४८	शूल	३०	०८	बव	१५	२७	२	१६	24	९	मीन	**श्रीगणेश संकष्ट** (बहुला) **चतुर्थी** (देखें पृष्ठ 13–14),	४	०६	५८	२३	६	०२	१८	५९
३२.१८	५	रवि	४४	२३	रेव	४	८	गंड	२७	८	कौ	१४	२३	३	१७	25	१०	मे. ४/०८	**पंचक समाप्त** ४/०८ (7/41 घं. मिं.), स. सि. यो., गण्डमूल आदि	४	०७	५६	१४	६	०२	१८	५७
३२.१३	६	चंद्र	४६	२०	अश्वि	६	२८	वृद्धि	२५	४०	गर	१५	२२	४	१८	26	११	मेष	भ. ४६/२० से, **चन्दन षष्ठी व्रत,** चन्द्रोदय 22/20 (जालं.), हल षष्ठी	४	०८	५४	०९	६	०३	१८	५६
३२.०८	७	मंग	५०	५	भर	१०	४३	ध्रुव	२५	४०	वि	१८	१३	५	१९	27	१२	वृ. २७/०३	भ. १८/१३ तक, बुध पू.फा. में ४१/२५, शीतला सप्तमी	४	०९	५२	०५	६	०४	१८	५५
३२.०५	८	बुध	५५	१८	कृति	१६	३५	व्या.	२६	५५	बा	२२	४२	६	२०	28	१३	वृष	**श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत,** गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव, दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 82)	४	१०	५०	००	६	०४	१८	५४
३२.००	९	गुरु	६०	००	रोहि	२३	३०	हर्ष	२८	५५	तै	२८	१७	७	२१	29	१४	मि. ५७/१५	श्री गुग्गा नवमी	४	११	४८	००	६	०५	१८	५३
३१.५५	९	शुक्र	१	१५	मृग	३१	३	वज्र	३१	२३	गर	१	१५	८	२२	30	१५	मिथुन	भ. ३७/५० से, सूर्य पू.फा. में ३५/१०	४	१२	४५	५९	६	०५	१८	५१
३१.५०	१०	शनि	७	२५	आर्द्रा	३८	३०	सिद्धि	३३	४५	वि	७	२५	९	२३	31	१६	मिथुन	भ. ७/२५ तक, शुक्र चित्रा में २३/३०	४	१३	४४	०३	६	०६	१८	५०
३१.४३	११	रवि	१३	१८	पुर्न	४५	२८	व्य.	३५	४३	बा	१३	१८	१०	२४	सितं	१७	क. २८/४५	**अजा एकादशी व्रत,** गुरु पुर्न. (१) में १६/३०, राहु स्वा (३) केतु B	४	१४	४२	०८	६	०७	१८	४८
३१.३८	१२	चंद्र	१८	२५	पुष्य	५१	३३	वरी	३७	०३	तै	१८	२५	११	२५	2	१८	कर्क	वत्स द्वादशी (पूजा), **सोम प्रदोष व्रत,** स. सि. योग	४	१५	४०	१५	६	०८	१८	४७
३१.३३	१३	मंग	२२	३३	अश्ले	५६	३३	परि	३७	३३	व	२२	२३	१२	२६	3	१९	सिं. ५६/३३	भ. २२/२३ से ५४/०३ तक, बुध उ.फा. में ५३/१०, शनि स्वा. (३) में C	४	१६	३८	२४	६	०९	१८	४६
३१.२८	१४	बुध	२५	३३	मघा	६०	००	शिव	३७	१३	श	२५	३३	१३	२७	4	२०	सिंह	**अगस्त्योदय**	४	१७	३६	३३	६	०९	१८	४४
३१.२५	३०	गुरु	२७	२०	मघा	०	२५	सिद्ध	३५	५५	ना	२७	२०	१४	२८	5	२१	सिंह	**भाद्रपद अमावस,** कुशाग्रहणी-पिठोरी अमावस, **बुध कन्या में ४६/५३**	४	१८	३४	४६	६	१०	१८	४४

(A) शक भाद्रपद प्रारम्भ **B** भर. (१) में ७/५०, सितम्बर मास प्रारम्भ **C** ५०/५३, मासशिवरात्रि व्रत, स. सि. यो.

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 28 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	३	४	२	५	६	६	०
१०	६	५	१३	१९	१९	१२	१६	१६
४८	२३	५३	५३	१४	१९	४७	५३	५३
३८	१७	३६	३	३४	४९	७	१३	१३
57 58	719 44	38 26	114 33	10 43	70 22	4 34	3 11	3 11
मघा ४	कृति ३	पुष्य १	पू.फा १	आर्द्रा ४	हस्त ३	स्वा. २	स्वा. ४	भर. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

६ शु. — ४ मं. — ७ — ५ सू. बु. — ३ गु. — श. रा. — ८ — २ चं. — ९ — ११ — १ के. — १० — १२

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 5 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	३	४	२	५	६	६	०
१८	१२	१०	२८	२०	२८	१३	१६	१६
३३	५३	५९	३५	३७	४०	२५	२७	२७
९	५१	४२	१६	४०	५८	४१	४७	४७
58 12	763 21	38 2	104 46	9 56	69 51	5 7	3 11	3 11
पू.फा २	मघा ४	पुष्य ३	उ.फा १	पुन १	चित्रा २	स्वा. ३	स्वा. ३	भर. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रात: 5.30

६ शु. — ४ मं. — ७ — ५ सू. चं. बु. — ३ गु. — श. रा. — ८ — २ — ९ — ११ — १ के. — १० — १२

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में श्रीगणेश चतुर्थी (24 अग.) तथा चन्दन षष्ठी (26 अग.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर रात्रि में उदित चन्द्रमा को अर्घ्य देने से कष्टों की निवृत्ति तथा गृहस्थ सुख, सौभाग्य-सन्तति, धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** व्रत (28 अग.) बुधवार को दुपै. 12/42 के बाद, सम्पूर्ण रात्रि में रोहिणी नक्षत्र व्याप्ति एवं अर्द्ध-रात्रि काल को वृष का चन्द्रमा होने से इस बार की श्री कृष्ण जन्माष्टमी को व्रत, जप, पाठ एवं दानादि कृत्यों में अत्यन्त दुर्लभ एवं पुण्यप्रदा रहेगी।

पद्म पुराणानुसार—प्रेतयोनि-गतानां तु प्रेतत्त्वं नाशितं तुतैः। यैः कृता श्रावणे (भाद्रे) मासि अष्टमी रोहिणी युता किं पुनः बुधवारेण सोमेनापि विशेषवः---कुल कुलकोटयास्तु मुक्तिदा।।–अर्थात् भाद्र कृष्णाष्टमी बुधवार व रोहिणी नक्षत्र युक्ता होने पर प्रेत योनि को प्राप्त भी पितरों एवं अनेक कुलों को तारने वाली होगी। **गुग्गा नवमी** (29 अग.) को शिव मन्दिर में दूध, चावल, बिल्वपत्र, पुष्पादि सहित शिव पूजन व नाग पूजा व अभिषेक करने का विशेष महत्त्व है। **अजा एकादशी** का व्रत (1 सितं.) विधिपूर्वक करने से जन्म-जन्म के सन्ताप हरण हो जाते हैं। **वत्सद्वादशी** (2 सितं.) को गोवत्स पूजन

शिव पूजन व नाग पूजा व अभिषेक करने का विशेष [illegible] जाते हैं। **वत्सद्वादशी** (2 सितं.) को गोवत्स पूजन

वि. संवद् २०७०, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाक: १९३५

सन् 2013 ई. (ता. 6 सितं. से 19 सितं. तक) हिजरी सन् 1434
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:

मा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रात:मंग.पूर्वकाल में, उससे ऊपर गुरु होगा। सायं मं-श.पश्चिम कपाल में होंगे। ता.10 से बुध भी पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	प्र. शक	शव्वाल	सितंबर	भाद्र. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३१.२३	१	शुक्र	२८	५	पू.फा	३	१५	साध्य	३३	५०	बव	२८	५	१५	२९	6	२२	कं. १८/४८	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र तुला में ६/१५	४	१९	३३	००	६	१०	१८	४३
३१.१८	२	शनि	२७	४८	उ.फा	५	००	शुभ	३०	५३	कौ	२७	४८	१६	३०	7	२३	कन्या	**चन्द्रदर्शन**, सामवेदि उपाकर्म (हस्त नक्षत्रे)	४	२०	३१	१४	६	११	१८	४१
३१.१३	३	रवि	२६	३३	हस्त	५	४८	शुक्ल	२७	१३	गर	२६	३३	१७	जि	8	२४	तु. ३५/५५	भ. ५५/३२ से, **हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया**, श्रीवराह जयंती A	४	२१	२९	३१	६	१२	१८	४०
३१.०८	४	चंद्र	२४	३०	चित्रा	५	४८	ब्रह्म	२२	५३	वि	२४	३०	१८	२	9	२५	तुला	भ. २४/३० तक, **सिद्धि विनायक व्रत**, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध) B	४	२२	२७	४८	६	१२	१८	३९
३१.०३	५	मंग	२१	३५	स्वा.	४	५८	ऐंद्र	१७	५३	बा	२१	३५	१९	३	10	२६	वृ. ४८/४८	**ऋषि पंचमी**, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)(पंचमी-पक्ष),	४	२३	२६	०९	६	१३	१८	३८
३०.५८	६	बुध	१७	५८	विशा	३	२०	वैधृ	१२	१८	तै	१७	५८	२०	४	11	२७	वृश्चिक	**सूर्य षष्ठी व्रत**, बुध हस्त में ४३/३५, शुक्र स्वा. में ५१/०८ (C)	४	२४	२४	२९	६	१३	१८	३६
३०.५३	७	गुरु	१३	३०	अनु ज्ये.	० ५७	५५ ५०	विष्क प्रीति	६ ५९	०० १३	व	१३	३०	२१	५	12	२८	ध. ५७/५०	भ. १३/३० से ४०/५७ तक, **श्रीराधाष्टमी** (देखें पृष्ठ 82) (D)	४	२५	२२	५१	६	१४	१८	३५
३०.४८	८	शुक्र	८	२३	मूल	५४	५	आयु	५१	५३	बव	८	२३	२२	६	13	२९	धनु	दधीची जयन्ती, सूर्य उ.फा. में १९/१५, मंगल आश्ले. में ५७/५० (E)	४	२६	२१	१६	६	१४	१८	३३
३०.४३	९	शनि	२	३५	पू.षा	४९	४५	सौभा	४४	३	कौ	२	३५	२३	७	14	३०	धनु	**श्रीचन्द्र नवमी** (उदासीन सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह प्रारम्भ	४	२७	१९	४५	६	१५	१८	३२
अवम्	१०	शनि	५६	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	दशमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३०.३८	११	रवि	४९	४५	उ.षा	४५	८	शोभ	३५	५५	व	२३	३	२४	८	15	३१	म. ३/३५	भ. २३/०३ से ४९/४५ तक, **पद्मा एकादशी व्रत** (स्मार्त), F	४	२८	१८	११	६	१६	१८	३१
३०.३५	१२	चंद्र	४३	८	श्रव	४०	२८	अति	२७	४५	बव	१६	२७	२५	९	16	आ.	मकर	**पद्मा एकादशी व्रत (वैष्णव), सूर्य कन्या में ४४/२५, आश्विन** G	४	२९	१६	४१	६	१६	१८	३०
३०.२८	१३	मंग	३६	४५	धनि	३५	५८	सुक	१९	४०	कौ	९	५७	२६	१०	17	२	कुं. ८/०८	**पंचक प्रारम्भ ८/०८, भौम प्रदोष व्रत**, विश्वकर्मा पूजन	५	००	१५	१०	६	१७	१८	२८
३०.२८	१४	बुध	३०	५८	शत	३२	५	धृति	१२	००	गर	३	५२	२७	११	18	३	कुम्भ	भ. ३०/५८ से ५८/३१ तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोढल (जालन्धर)**	५	०१	१३	४४	६	१७	१८	२८
३०.२०	१५	गुरु	२६	३	पू.भा	२९	५	शूल गंड	४ ५८	५५ ४८	बव	२६	३	२८	१२	19	४	मी. १४/४३	**भाद्रपद पूर्णिमा**, प्रोष्ठपदी, **महालय श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा श्राद्ध**	५	०२	१२	१७	६	१८	१८	२६

A बुध पश्चिम में उदय ५८/००, जिल्काद (मुस्लि.), स. सि. योग: **B** चन्द्रास्त 20/57 (जालन्धर), पत्थर चौथ **(C)** मुक्ताभरण, सन्तान सप्तमी व्रत **(D)** **श्रीमहालक्ष्मी** व्रतारम्भ (चं.उ. व्यापिनी) **(E)** श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ **F** विष्णुश्रृंखल योग 24/19 से, स. सि. यो. **G** **संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले दिन, वामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी, विष्णुश्रृंखल योग 22/27 तक (देखें पृ. 82), स. सि. योग:

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 13 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	३	५	२	६	६	६	०
२६	०	१६	१२	२१	७	१४	१६	१६
१९	४	२	०	५४	५७	८	२	२
३०	५८	३४	३२	४	२८	२६	२१	२१
58 25	853 40	37 38	95 34	9 2	69 11	5 37	3 11	3 11
पू.फा ४	मूल १	पुष्य ४	हस्त १	पुन १	स्वा १	स्वा ३	स्वा ३	भर १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

७ शु. श. रा. · ६ बु. · ५ सू. · ४ मं. · ३ गु. · ८ · २ · ९ चं. · ११ · १ के. · १० · १२

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 19 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	३	५	२	६	६	६	०
२	२६	१९	२१	२२	१४	१४	१५	१५
१०	६	४७	१७	४६	५१	४२	४३	४३
२२	१	३३	४७	२६	४	५६	१६	१६
58 35	833 27	37 19	89 8	8 18	68 35	5 56	3 11	3 11
उ.फा २	पू.भा २	आश्ले १	हस्त ४	पुन १	स्वा ३	स्वा ३	स्वा ३	भर १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30

रा. ७ श. शु. · ६ सू. बु. · ५ · ४ मं. · ८ · ९ · ३ गु. · १० · १२ · २ · ११ चं. · १ के.

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की तृतीया को सौभाग्यवती स्त्रियों को अखण्ड सुहाग की कामना से **हरितालिका तीज** (8 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक करना चाहिए। **श्रीगणेश चतुर्थी (पत्थर चौथ)** (9 सितं.) का व्रत रखकर सिद्धि विनायक गणेश जी को मीठे पुओं व लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए। इस दिन **चन्द्रदर्शन** करना निषेध माना जाता है। ता. 11 को **सन्तान सप्तमी** का व्रत सन्तान प्राप्ति की कामना से पति-पत्नी दोनों के द्वारा व्रत रखकर भगवान् शिव पार्वती एवं सूर्य देव की पूजा करनी चाहिए। ता. 12 सितं. को **श्रीराधा** एवं **श्रीमहालक्ष्मी** का व्रत एवं पूजन सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग व परिवार के सौभाग्य एवं सुख समृद्धि के लिए करती हैं। ता. 16 सितं. को **आश्विन संक्रान्ति** 30 मुहूर्त्ति, सोमवार वारानुसार ध्वांक्षी नामक वैश्यों को लाभ एवं सुखदायक होगी, नक्षत्रानुसार महोदरी नामक दुष्टों एवं चोरों को लाभ देने वाली होगी। आश्विन संक्रान्ति के स्नान दान आदि का विशेष पुण्यकाल 17 सितं. की प्रात: 6/27 तक होगा। 16 सितं. को ही **पद्मा एका.** व्रत वैष्णव तथा भगवान् विष्णु के **वामन अवतार** की पुण्य तिथि होगी। इस दिन भगवान् विष्णु का पूजन, स्तोत्र पाठ मन्त्र जप व दानादि करने का विशेष पुण्य होगा। ता. 18 सितं. को **अनन्त चौदश** का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्त स्वरूपों का ध्यान, जप-पाठ एवं दानादि किया जाता है। इसी दिन जालन्धर में भगवान् शिव के अंशावतार **बाबा सोढल** का भव्य मेला आयोजित होता है। भाद्र. पूर्णिमा (19 सितं.) को अपराह्न व्या. पूर्णिमा में अपने दिवंगत आत्मीय पितरों के निमित्त पूर्णिमा का श्राद्ध किया जाता है। **आकाश लक्षण**—भारत के उत्तर पश्चिमी भागों में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। परन्तु बिहार, उड़ीसा में विपुल वर्षा के संकेत हैं।

वि. संवद् २०७०, आश्विन कृष्ण पक्ष शाक: १९३५ | **सन् 2013 ई. (ता. 20 सितं. से 4 अक्तू. तक)** हिजरी सन् 1434 | भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य दक्षिणायन, उत्तरदक्षिण गोल, शरद् ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	भाद्र. शक	जिल्का मु.	सितं.	आश्विन	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
३०.१५	१	शुक्र	२२	२३	उ.भा	२७	२०	वृद्धि	५३	४८	कौ	२२	२३	२९	१३	20	५	मीन
३०.०८	२	शनि	२०	१५	रेव	२७	८	ध्रुव	५०	०५	गर	२०	१५	३०	१४	21	६	मे. २७/०८
३०.०३	३	रवि	१९	५०	अश्वि	२८	३५	व्या.	४७	४८	वि	१९	५०	३१	१५	22	७	मेष
३०.००	४	चंद्र	२१	१५	भर	३१	५०	हर्ष	४५	५३	बा	२१	१५	अ	१६	23	८	वृ. ४७/५५
२९.५५	५	मंग	२४	२३	कृति	३६	४०	वज्र	४७	१३	तै	२४	२३	२	१७	24	९	वृष
२९.५३	६	बुध	२९	००	रोहि	४२	५५	सिद्धि	४८	३५	व	२९	००	३	१८	25	१०	वृष
२९.५०	७	गुरु	३४	३८	मृग	५०	३	व्य.	५०	३८	वि	१	४९	४	१९	26	११	मि. १६/२३
२९.४५	८	शुक्र	४०	४५	आर्द्रा	५७	२५	वरी	५२	५३	बा	७	४२	५	२०	27	१२	मिथुन
२९.४३	९	शनि	४६	४८	पुर्न	६०	००	परि	५५	००	तै	१३	४७	६	२१	28	१३	क. ४७/५३
२९.३५	१०	रवि	५२	५	पुर्न	४	३५	शिव	५६	३३	व	१९	२७	७	२२	29	१४	कर्क
२९.३०	११	चंद्र	५६	२०	पुष्य	१०	५८	सिद्ध	५७	१०	बव	२४	१३	८	२३	30	१५	कर्क
२९.२५	१२	मंग	५९	१०	अश्ले	१६	१०	साध्य	५६	४८	कौ	२७	४५	९	२४	अक्तू	१६	सिं. १६/१०
२९.२०	१३	बुध	६०	००	मघा	२०	५	शुभ	५५	१८	गर	२९	५२	१०	२५	2	१७	सिंह
२९.१५	१३	गुरु	०	३३	पू.फा	२२	३०	शुक्ल	५२	३५	व	०	३३	११	२६	3	१८	कं. ३७/५३
२९.१३	१४	शुक्र	०	३०	उ.फा	२३	३५	ब्रह्म	४८	५३	श	०	३०	१२	२७	4	१९	कन्या
००.००	३०	शुक्र	५९	८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००

तिथि	ग्रह दर्शन—प्रातः मं. पूर्वकाल में तथा गु. पूर्व में ही याम्योत्तरवृत के समीप होगा। सायं बु.शु. पश्चिम में पास—2 तथा इनके ऊपर शु. विखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
१	पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, बुध चित्रा में २०/३०, श्राद्ध प्रतिपदा, प्लूटो मार्गी	५	०३	१०	५४	६	१९	१८	२५
२	भ. ५०/०३ से, पंचक समाप्त २७/०८, द्वितीया का श्राद्ध (14/25 तक), +	५	०४	०९	३३	६	१९	१८	२२
३	भ. १९/५० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14), तृतीया का श्राद्ध K	५	०५	०८	१५	६	२०	१८	२१
४	शक आश्विन प्रारम्भ, गुरु पुर्न (२) में ६/५८, शुक्र विशा. में २८/५५ A	५	०६	०६	५६	६	२०	१८	२०
५	पंचमी का श्राद्ध, स. सि. यो.	५	०७	०५	४२	६	२१	१८	१९
६	भ. २९/०० से, **बुध तुला में ०/३३**, षष्ठी का श्राद्ध, स. सि. यो.	५	०८	०४	२७	६	२१	१८	१८
७	भ. १/५० तक, सूर्य हस्त में ५७/५३, श्राद्ध सप्तमी, महालक्ष्मी व्रत B	५	०९	०३	१६	६	२१	१८	१७
८	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, जीवित्पुत्रिका व्रत**, अष्टमी का श्राद्ध	५	१०	०२	०८	६	२१	१८	१६
९	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृ नवमी, नवमी का श्राद्ध	५	११	०१	००	६	२२	१८	१५
१०	भ. १९/२७ से ५२/०५ तक, दशमी का श्राद्ध, स. सि. यो. (8/13 से)	५	११	५९	५७	६	२३	१८	१३
११	इन्दिरा एकादशी व्रत स्मार्त, बुध स्वा. में ०/२५, एकादशी का श्राद्ध	५	१२	५८	५६	६	२४	१८	१२
१२	सन्यासीनां श्राद्ध, **इन्दिरा एकादशी व्रत** (वैष्णव), **गजच्छाया योग** C	५	१३	५७	५७	६	२५	१८	१०
१३	प्रदोष व्रत, **शुक्र वृश्चिक में २१/१३**, गजच्छाया योग 14/27 तक D	५	१४	५६	५८	६	२५	१८	०९
१३	भ. ०/३३ से ३०/३३ तक, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध E	५	१५	५६	०५	६	२६	१८	०८
१४	आश्विन/महालय **अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध**, पितृ विसर्जन, चतुर्दशी/ F	५	१६	५५	१०	६	२६	१८	०७
३०	**अमावस तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

+ श्राद्ध तृतीया (देखें पृष्ठ 82-83) K (14/16 तक) (देखें पृष्ठ 82-83), सूर्य सायन तुला में ४९/४५, दक्षिण गोल प्रारम्भ A चतुर्थी का श्राद्ध B समाप्त (चं. उ. व्या.) C 30/05 से, श्राद्ध द्वादशी, अक्तूबर मास प्रा., स. सि. यो. D श्राद्ध त्रयोदशी, महात्मा गाँधी जयन्ती E मासशिवरात्रि व्रत F अमावस का श्राद्ध

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	३	६	२	६	६	६	०
१०	८	२४	२	२३	२३	१५	१५	१५
००	१३	४४	४०	४९	५६	३१	१७	१७
००	१७	४२	१२	५	३८	४८	५०	५०
58 52	711 39	36 55	80 7	7 13	67 41	6 20	3 11	3 11
हस्त १	आर्द्रा १	श्ले. ३	चित्रा ३	पुन. २	विशा. २	स्वा. ३	स्वा. ३	भर. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

श. ७ शु. बु. रा.
५
८
६ सू.
४ मं.
९
३ चं. गु.
१०
१२
२
११
१ के.

शुक्रे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	३	६	२	७	६	६	०
१६	४	२९	११	२४	१	१६	१४	१४
५२	१८	१	३२	३६	४७	१६	५५	५५
५२	४१	५६	५९	२६	४०	५३	३५	३५
59 07	795 28	36 31	68 41	6 9	66 45	6 36	3 11	3 11
हस्त ३	उ.फा. ३	श्ले. ४	स्वा. २	पुन. २	विशा. ४	स्वा. ३	स्वा. ३	भर. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

रा. ७ श. बु.
५
८ शु.
६ सू. चं.
४ मं.
९
३ गु.
१०
१२
२
११
१ के.

आश्विन कृष्ण पक्षफल—

आश्विन कृष्ण पक्ष, पितृ पक्ष कहलाता है। इस पक्ष में जो व्यक्ति अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु तिथि अनुसार तिल, कुशा, पुष्पाक्षत, शुद्ध जल या गंगाजल सहित उन्हें पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्र, दक्षिणादि सहित संकल्पपूर्वक दान करता है, उसके पितर संतृप्त होकर जातक को स्वास्थ्य, आरोग्य, दीर्घायु, धन-सुख सम्पदा का आशीर्वाद प्रदान करते हैं—"आयु पुत्रान् यशः स्वर्ग-कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।।" जो व्यक्ति जान-बूझ कर पितृ श्राद्धकर्म नहीं करता, वह पितरों द्वारा शापित होकर अनेक प्रकार के मानसिक व शारीरिक कष्टों से पीड़ित रहता है। इस पक्ष की अष्टमी तिथि (27 सितं.) को श्रीमहालक्ष्मी व्रत एवं जीवित्पुत्रिका व्रत पूजन सौभाग्यवती स्त्रियाँ पति एवं सन्तान सुख व उनकी दीर्घायु की कामना करती हैं। सभी ज्ञात-अज्ञात तिथि-आधारित माता-पिता आदि सभी पितरों का श्राद्ध **आश्विन अमावस (4 अक्तू.)** तिथि को किया जाएगा। **गजच्छाया योग**—इस योग में स्नान, दान, जप एवं ब्राह्मणों को भोजन, अन्न, वस्त्रादि का दान व श्राद्ध करने का विशेष माहात्म्य माना गया है। उपरोक्त पितृपक्ष में गजच्छाया का विशिष्ट योग सूर्योदय से दुपै. 2 बजकर 27 मिनट तक होगा। ता. 4 अक्तू. को सर्वपितृ श्राद्ध कर्म होगा। चतुर्दशी तिथि में मृतजनों का श्राद्ध [illegible]

करने का विशेष माहात्म्य माना गया है। उपरोक्त पितृपक्ष में [illegible] श्राद्ध कर्म होगा। चतुर्दशी तिथि में मृतजनों का श्राद्ध [illegible]

वि. संवद् २०७०, आश्विन शुक्ल पक्ष शाक: १९३५ | सन् 2013 ई. (ता. 5 अक्तू. से 18 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	शाका	जिल्हिज	अक्तू.	आश्विन	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन—प्रातः मं.पूर्वकपाल में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं बुध, शनि, शुक्र पश्चिम क्षितिज में पास—पास होंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२९.०८	१	शनि	५६	३३	हस्त	२३	२३	ऐंद्र	४४	१३	किं	२७	५१	१३	२८	5	२०	तु. ५२/५३	आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, मंगल मघा १ सिंह में ३३/०३ (A)	५	१७	५४	११	६	२७	१८	०६
२९.०३	२	रवि	५३	३	चित्रा	२२	८	वैधृ	३८	४५	बा	२४	४८	१४	२९	6	२१	तुला	चन्द्रदर्शनम्	५	१८	५३	२९	६	२७	१८	०४
२८.५८	३	चंद्र	४८	४८	स्वा.	२०	३	विष्क	३२	३८	तै	२०	५६	१५	जि	7	२२	तुला	शनि स्वा. (४) में २०/५०, जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	५	१९	५२	४३	६	२८	१८	०३
२८.५३	४	मंग	४३	५८	विशा	१७	१५	प्रीति	२६	००	व	१६	२३	१६	२	8	२३	वृ. ३/००	भ. १६/२३ से ४३/५८ तक,	५	२०	५१	५९	६	२९	१८	०२
२९.५०	५	बुध	३८	५०	अनु.	१४	५	आयु	१९	३	बव	११	२४	१७	३	9	२४	वृश्चिक	**उपाङ्ग ललिता व्रत**, ललिता पंचमी, स. सि. योग:	५	२१	५१	१४	६	२९	१८	०१
२८.४३	६	गुरु	३३	२३	ज्ये.	१०	३५	सौभा	११	५०	कौ	६	७	१८	४	10	२५	ध. १०/३५	सूर्य चित्रा में २९/४५, सरस्वती आवाहन मूलभे	५	२२	५०	३४	६	३०	१७	५९
२८.३८	७	शुक्र	२७	५०	मूल	६	५३	शोभ अति	४ ५७	२८ ०८	गर	०	३७	१९	५	11	२६	धनु	भ. २७/५० से ५५/०४ तक, सरस्वती पूजन (पू.षा.)	५	२३	४९	५४	६	३१	१७	५८
२८.३३	८	शनि	२२	१८	पू.षा. उ.षा.	३ ५९	१० ३५	सुक	४९	४८	बव	२२	१८	२०	६	12	२७	म. १७/१५	**श्रीदुर्गाष्टमी**, सरस्वती बलिदान (उ.षा.), महाष्टमी, बुध विशा. में १३/०८	५	२४	४९	११	६	३२	१७	५७
२८.२८	९	रवि	१६	५३	श्रव.	५६	१०	धृति	४२	३८	कौ	१६	५३	२१	७	13	२८	मकर	महानवमी, **नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा), शस्त्र पूजा B**	५	२५	४८	४३	६	३३	१७	५६
२८.२३	१०	चंद्र	११	४८	धनि	५३	८	शूल	३५	४८	गर	११	४८	२२	८	14	२९	कुं. २४/३८	भ. ३९/२८ से, **पंचक प्रारम्भ २४/३८** (16/24 घं. मिं.)	५	२६	४८	०७	६	३३	१७	५४
२८.१८	११	मंग	७	८	शत	५०	४५	गंड	२९	१८	वि	७	८	२३	९	15	३०	कुम्भ	भ. ७/०८ तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत**	५	२७	४७	३६	६	३४	१७	५३
२८.१३	१२	बुध	३	००	पू.भा	४९	००	वृद्धि	२३	२३	बा	३	००	२४	१०	16	३१	मी. ३४/२०	प्रदोष व्रत	५	२८	४७	०५	६	३५	१७	५२
००.००	१३	बुध	५९	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२८.१०	१४	गुरु	५७	२८	उ.भा	४८	१५	ध्रुव	१८	१०	गर	२८	३७	२५	११	17	का	मीन	भ. ५७/२८ से, **सूर्य तुला में १३/३३, कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ४५, C	५	२९	४६	३५	६	३५	१७	५१
२८.०५	१५	शुक्र	५६	२०	रेव	४८	३३	व्या.	१३	४३	वि	२६	५४	२६	१२	18	२	मे. ४८/३३	भ. २६/५४ तक, **आश्विन-शरद् पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती D**	६	००	४६	०९	६	३६	१७	५०

(A) शुक्र अनु. में २०/४३, मातामह (नाना) का श्राद्ध, महाराजा अग्रसेन जयन्ती **(B)** सरस्वती विसर्जन, अपराजिता पूजन **(C)** पुण्यकाल सं. प्रातः सूर्योदय से, शुक्र ज्ये. में ३२/४५
(D) कोजागर व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	४	६	२	७	६	६	०
२४	२५	३	१९	२५	१०	१७	१४	१४
४६	१८	५२	४६	२१	३७	१०	३०	३०
४६	३१	२५	४७	७	८	३७	८	८
59 22	850 59	36 12	49 13	4 50	65 23	6 51	3 11	3 11
चित्रा 1	पू.षा. 4	मघा 2	स्वा. 4	पुन. 2	अनु. 3	स्वा. 4	स्वा. 3	भर. 1
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

रा. ७ श. बु.
५ मं.
८ शु.
६ सू.
४
९ चं.
३ गु.
१०
१२
२
११
१ के.

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	११	४	६	२	७	६	६	०
०	१८	७	२३	२५	१७	१७	१४	१४
४३	४१	२७	३८	४७	६	५२	११	११
२६	१६	३९	७	३२	१७	६	४	४
59 33	793 00	35 39	20 32	3 48	64 5	7 00	3 11	3 11
चित्रा 3	रे. 1	मघा 3	विशा. 2	पुन. 2	ज्ये. 1	स्वा. 4	स्वा. 3	भर. 1
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

८ शु.
६
९
७ सू. बु. श. रा.
५ मं.
१०
४
११
१ के.
३ गु.
१२ चं.
२

आश्विन शुक्ल पक्षफल—

ता. 5 अक्तू., प्रतिपदा तिथि, शनिवार से शरद् नवरात्रों का शुभारम्भ होगा। प्रतिपदा को स्नान, ध्यानादि के बाद शुद्ध पात्र में रेत-मिट्टी डालकर मंगलमंत्रपूर्वक जौं/गेहूँ/सप्तधान्य के बीज वपन करने चाहिएँ तथा श्री दुर्गा जी की मूर्त्ति व गणेश प्रतिमा के पास सूर्योदय से 10 घटी तक अथवा अभिजित मुहूर्त्त में मंत्रोच्चारण सहित घटस्थापन करना चाहिए। फिर षोडशोपचार पूजन सहित श्री दुर्गा पूजन करके संकल्पपूर्वक प्रतिपदा से नवमी तिथि तक, श्री भगवती देवी के सम्मुख दीप जलाकर **श्री दुर्गा सप्तशती** का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए। **पूजन मन्त्र—'' ॐ नमश्चण्डिकायै। आगच्छ वरदे देवि !'' पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।** ता. 11 अक्तू. को श्री सरस्वती पूजन होगा। ता. 13 अक्तू. को **विजयदशमी** पर्व होगा। सायंकाल श्रवण नक्षत्रकालीन बुराई के प्रतीक रावण दाह का पर्व पाप पर सत्य के **विजय उत्सव** के रूप में समस्त भारत में मनाया जाता है। इसी दिन अपराह्नकाल में आयुध पूजा एवं अपराजिता पूजन भी किया जाता है। विजयदशमी स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त माना जाता है। **स कालो विजयोज्ञयः सर्व कार्य सिद्धये।।** ता. 15 अक्तू. को **पापांकुशा** एका. का व्रत **पुत्रदा (एकादशी)** कहलाती है। विधिवत् व्रत रखने से सब मनोकामना पूर्ण होती है। **शरद् पूर्णिमा** (18 अक्तू.) का व्रत रखकर भगवान् लक्ष्मी नारायण का पूजन करके तथा एक रात्रि पहिले छिटकती चाँदनी में किशमिश/बादाम युक्त रखी हुई खीर का भोग लगाकर ब्राह्मण सहित परिवार में मिल बांटकर खानी चाहिए। इससे अनेक मानसिक व शारीरिक रोगों में शान्ति होती है। इसी दिन से कार्तिक मास का स्नान शुरू हो जाएगा। **ता. 17 अक्तू., गुरुवार** से सौर **कार्तिक संक्रान्ति** प्रारम्भ होगी। स्नान, जपादि का माहात्म्य प्रातः 5 बजकर 36 मिनट से शुरू हो जाएगा। कार्तिक संक्रान्ति 45 मुहूर्त्ति उभा. नक्षत्र कालीन धनु लग्न में प्रविष्ट होगी। वार एवं नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह संक्रान्ति व्यापारियों को लाभ प्रदायक होगी।

वि. संवद् २०७०, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाक: १९३५ | सन् 2013 ई. (ता. 19 अक्तू. से 3 नवंबर तक) हिजरी सन् 1434

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतु: | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः मं. पूर्व में तथा गुरु याम्योत्तरवृत में होगा। बुध, शुक्र, शनि सायं पश्चिम में होंगे। ता. 20 से शनि तथा 26 अक्तू. से बु. पश्चिम में ही अस्त होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें: शक रा.	हिजरी मु.	अक्टू.	सौर प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२८.००	१	शनि	५६	३०	अश्वि	५०	८	हर्ष	१०	१५	बा	२६	२५	२७	१३	19	३	मेष	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	६	०१	४५	४४	६	३७	१७	४९
२७.५८	२	रवि	५८	१०	भर	५३	८	वज्र	७	५०	तै	२७	२०	२८	१४	20	४	मेष	शनि पश्चिम में अस्त १९/१३,	६	०२	४५	१९	६	३७	१७	४८
२७.५३	३	चंद्र	६०	००	कृति	५७	२८	सिद्धि	६	३३	व	२९	४०	२९	१५	21	५	वृ. ९/०३	भ. २९/४० से, **बुध वक्री २३/१०** (15/54 घं. मिं.)	६	०३	४५	००	६	३८	१७	४७
२७.४८	३	मंग	१	१०	रोहि	६०	००	व्य.	६	१८	वि	१	१०	३०	१६	22	६	वृष	भ. १/१० तक, श्रीगणेश चतुर्थी, **व्रत करवाचौथ** (करक चतुर्थी) **(A)**	६	०४	४४	४३	६	३९	१७	४६
२७.४३	४	बुध	५	३०	रोहि	३	३	वरी	७	३	बा	५	३०	का.	१७	23	७	मि. ३६/१५	सूर्य स्वा. में ५५/५०, शक कार्तिक प्रारम्भ, सूर्य सायन वृश्चिक **(B)**	६	०५	४४	२८	६	४०	१७	४५
२७.४०	५	गुरु	१०	५८	मृग	९	४३	परि	८	३८	तै	१०	५८	२	१८	24	८	मिथुन	**स्कन्द षष्ठी व्रत**	६	०६	४४	११	६	४०	१७	४४
२७.३५	६	शुक्र	१७	००	आर्द्रा	१६	५८	शिव	१०	४०	व	१७	००	३	१९	25	९	मिथुन	भ. १७/०० से ५०/०८ तक,	६	०७	४३	५९	६	४१	१७	४३
२७.३०	७	शनि	२३	१३	पुर्न	२४	१८	सिद्ध	१२	५०	बव	२३	१३	४	२०	26	१०	क. ७/२८	**अहोई अष्टमी व्रत** (चं. उ. व्या.)	६	०८	४३	५१	६	४२	१७	४२
२७.२५	८	रवि	२८	५८	पुष्य	३१	१५	साध्य	१४	४३	कौ	२८	५८	५	२१	27	११	कर्क	मंगल पू.फा. में ५४/५३, अहोई अष्टमी (पंजाब, हरि., आदि), **(C)**	६	०९	४३	४३	६	४३	१७	४१
२७.२३	९	चंद्र	३३	४८	अश्लें	३७	१८	शुभ	१६	००	तै	१	२३	६	२२	28	१२	सिं. ३७/१८		६	१०	४३	३५	६	४३	१७	४०
२७.१८	१०	मंग	३७	१०	मघा	४१	५५	शुक्ल	१६	१५	व	५	२९	७	२३	29	१३	सिंह	भ. ५/४९ से ३७/१० तक, वक्री बुध स्वा. (४) में ९/४३,	६	११	४३	३३	६	४४	१७	३९
२७.१३	११	बुध	३८	५३	पू.फा	४४	५५	ब्रह्म	१५	१८	बव	८	२	८	२४	30	१४	सिंह	**रमा एकादशी व्रत, शुक्र मूल १ धनु में १९/१०,** कौमुदि महोत्सव प्रा.	६	१२	४३	३२	६	४५	१७	३८
२७.०९	१२	गुरु	३८	४८	उ.फा	४६	१३	ऐंद्र	१२	५८	कौ	८	५१	९	२५	31	१५	कं. ०/२३	गोवत्स द्वादशी	६	१३	४३	३४	६	४६	१७	३७
२७.०३	१३	शुक्र	३६	५८	हस्त	४५	४५	वैधृ	९	१५	गर	७	५३	१०	२६	नवं	१६	कन्या	भ. ३६/५८ से, **प्रदोष वत, धन त्र्योदशी, श्रीहनुमान जयन्ती (D)**	६	१४	४३	३८	६	४७	१७	३६
२७.००	१४	शनि	३३	३५	चित्रा	४३	५०	विष्क प्रीति	४ ५८	१० ००	वि	५	२२	११	२७	2	१७	तु. १५/००	भ. ५/२२ तक, नरक चौदश, यमाय दीपदानं तर्पण,	६	१५	४३	४१	६	४७	१७	३५
२६.५८	३०	रवि	२८	५०	स्वा.	४०	३८	आयु	५०	५०	चतु	१	१३	१२	२८	3	१८	तुला	कार्तिक अमावस, **दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन**, राहु स्वा. (२), **(E)**	६	१६	४३	४१	६	४८	१७	३५

(A) चन्द्रोदय 20/20 (जालन्धर) (देखें पृष्ठ 13-14) **(B)** में १२/३०, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, स. सि. यो. सू. उ. से **(C)** वक्री बुध पश्चिम में अस्त १५/१५ **(D)** (देखें पृष्ठ 83), धनवन्तरी जयन्ती, यमाय प्रीत्यर्थं दीपदानं, नवम्बर मास प्रारम्भ **(E)** केतु अश्वि (४) में ०/३०, कुबेर पूजा, काली पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन)

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	४	६	२	७	६	६	०
९	९	१२	२२	२६	२६	१८	१३	१३
४०	४९	४६	८	१५	३३	५५	४२	४२
४१	३७	१०	८	१	३७	४३	२७	२७
59 52	720 21	35 3	52 49	2 7	61 37	7 8	3 11	3 11
स्वा. ९	पुष्य २	मघा ४	विशा. ९	पुन. २	ज्ये. ३	स्वा. ४	स्वा. ३	भर. ९
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

७ सू. बु. श. रा. | ८ शु. | ६ | ९ | ५ मं. | १० | ४ चं. | ११ | १ के. | ३ गु. | १२ | २

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	४	६	२	८	६	६	०
१६	९	१६	१४	२६	३	१९	१३	१३
४०	४०	४९	२	२५	३७	४५	२०	२०
३४	५०	५७	३६	४३	४९	५५	१२	१२
60 7	848 58	34 30	73 7	0 43	59 6	7 11	3 11	3 11
स्वा. ४	स्वा. ९	पू.फा. २	स्वा. ३	पुन. २	मूल २	स्वा. ४	स्वा. ३	भर. १
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

७ सू. चं. बु. श. रा. | ८ | ६ | ९ शु. | ५ मं. | १० | ४ | ११ | १ के. | ३ गु. | १२ | २

कार्तिक कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में **करवा चौथ** (22 अक्तू.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। सायं श्रीगणेश पूजन करके चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (26 अक्तू.) को व्रत, पूजन भी सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। 26 ता. को सप्तमी विद्धा चं.उ. व्यापिनी होगी जबकि 27 ता. को अहोई अष्टमी प्रदोष व्या. पंजाब, हि.प्र., हरि. आदि में ग्राह्य होगी। **धन त्र्योदशी** (1 नवं.) को औषधदान तथा नवीन बर्तन का क्रय करना शुभ होता है। ता. 1 को अर्द्ध-रात्रि चतुर्दशी में रूद्रवतार श्री हनुमान जयन्ती का पर्व उत्तरी भारत में मनाया जाएगा। इस रात्रि को हनुमान उपासना करनी शुभ होगी। ता. 3 नवं. को **श्री महालक्ष्मी** का पूजन व **दीपमाला** का शुभ पर्व है। प्रदोष व्या. अमावस्या को होगी। इस रात्रि को किए गए जप, तप, मन्त्र, अनुष्ठानादि करके का विशेष महत्त्व होता है। (देखें पृष्ठ–) **लोक भविष्य**–इस पक्ष के आरम्भ से ही तुला राशि पर **चतुर्ग्रही एवं पँचग्रही** योग बना हुआ है, जिससे सत्तारूढ़ यू.पी.ए. सरकार के लिए अत्यन्त कठिन समय अवधि होगी। भारत के पूर्ववर्ती प्रदेशों–जैसे छत्तीसगढ़, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, बिहार, मध्यप्रदेश आदि में पूर्ववर्ती सीमाओं पर नक्सलवादी एवं माओवादी विघटनकारी तत्त्वों का आतंक और पश्चिमोतरी सीमावर्ती प्रदेशों जैसे कश्मीर, राजस्थान, मध्यप्रदेश, आदि क्षेत्रों में आतंकी षडयन्त्रकारी तत्त्वों का अतिक्रमण एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने का भय है। दैनिक उपभोग की वस्तुओं जैसे–गेहूँ, चने, हल्दी, घी, तैल, मसर, मक्की, सब्जियाँ, दूध, चावल,

वि. संवत् २०७०, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाक: १९३५ | सन् 2013 ई. (ता. 4 नवं. से 17 नवं. तक) हिजरी सन् 1434-35

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु: — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः मं. पूर्वकपाल में तथा गु. याम्योत्तरवृत से पश्चिम में दिखेगा। 8 नवं से बु. भी पूर्व में दिखेगा। सायं शु. पश्चिम में होगा। शनि अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	का. रा.	मु. हि.	नवंबर	कार्तिक	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	व्रत, पर्व आदि	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.५३	१	चंद्र	२३	३	विशा	३६	२८	सौभा	४२	५३	बव	२३	३	१३	२९	4	१९	वृ. २२/३३	अन्नकूट-गोवर्धन पूजा (देखें पृ. 83), शनि विशा. (१) में ५४/१०, A	६	१७	४३	५८	६	४९	१७	३४
२६.४८	२	मंग	१६	३३	अनु	३१	३८	शोभ	३४	२८	कौ	१६	३३	१४	मुह	5	२०	वृश्चिक	**भ्रातृ-दूज**, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजन, मुहर्रम 1435 हिजरी प्रा.	६	१८	४४	१०	६	५०	१७	३३
२६.४५	३	बुध	९	४०	ज्ये.	२६	३३	अति	२५	५०	गर	९	४०	१५	२	6	२१	ध. २६/३३	भ. ४३/०७ से, सूर्य विशा. में १५/३५, दूर्वा गणपति व्रत	६	१९	४४	२१	६	५०	१७	३२
२६.४३	४	गुरु	२	४०	मूल	२१	२५	सुक	१७	१०	वि	२	४०	१६	३	7	२२	धनु	भ. २/४० तक, **गुरु वक्री ९/०८**, ज्ञान पंचमी, जया पंचमी **(B)**	६	२०	४४	३५	६	५१	१७	३२
००.००	५	गुरु	५५	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	पंचमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२६.३८	६	शुक्र	४९	३५	पू.षा	१६	३५	धृति	८	४३	कौ	२२	४५	१७	४	8	२३	म. ३०/२८	सूर्य षष्ठी (बिहार)	६	२१	४४	५२	६	५२	१७	३१
२६.३५	७	शनि	४३	५८	उ.षा	१२	२०	शूल/गण्ड	०/५३	४५/२०	गर	१६	४७	१८	५	9	२४	मकर	भ. ४३/५८ से,	६	२२	४५	०७	६	५२	१७	३०
२५.३०	८	रवि	३९	१०	श्रव	८	४८	वृद्धि	४६	३३	वि	११	३४	१९	६	10	२५	कुं. ३७/२३	भ. ११/३४ तक, **पंचक प्रारम्भ ३७/२३**, गोपाष्टमी, **बुध मार्गी ४९/५५**	६	२३	४५	२४	६	५३	१७	२९
२६.३०	९	चंद्र	३५	२०	धनि	६	१०	ध्रुव	४०	३५	बा	७	१५	२०	७	11	२६	कुम्भ	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत	६	२४	४५	४४	६	५३	१७	२९
२६.२५	१०	मंग	३२	३०	शत	४	३०	व्या.	३५	२५	तै	३	५५	२१	८	12	२७	मी. ४८/५५	ब्रह्मप्राप्ति व्रत	६	२५	४६	०६	६	५४	१७	२८
२६.२३	११	बुध	३०	४३	पू.भा	३	५०	हर्ष	३१	५	व	१	३७	२२	९	13	२८	मीन	भ. १/३७ से ३०/४३ तक, **देवप्रबोधिनी एकादशी**, शुक्र पू.षा. में C	६	२६	४६	२६	६	५५	१७	२८
२८.१८	१२	गुरु	३०	००	उ.भा	४	१३	वज्र	२७	३५	बव	०	२२	२३	१०	14	२९	मीन	नेहरू जयन्ती, तुलसी विवाह रेवत्यां भे	६	२७	४६	५५	६	५६	१७	२७
२६.१३	१३	शुक्र	३०	२०	रेव	५	३८	सिद्धि	२४	५३	कौ	०	१०	२४	११	15	३०	मे. ५/३८	**पंचक समाप्त** ५/३८ (9/13 घं. मिं.), प्रदोष व्रत, **वैकुण्ठ चतुर्दशी**	६	२८	४७	२३	६	५८	१७	२७
२६.०८	१४	शनि	३१	५०	अश्वि	८	८	व्य.	२३	३	गर	१	५	२५	१२	16	मा	मेष	भ. ३१/५० से, सूर्य वृश्चिक में १२/०३, **मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, मु. १५D	६	२९	४७	५१	६	५९	१७	२६
२६.०३	१५	रवि	३४	२५	भर	११	४०	वरी	२२	३	वि	३	८	२६	१३	17	२	वृ. २७/४३	भ. ३/०८ तक, **कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती**, दीपदान E	७	००	४८	२०	७	००	१७	२५

A चंद्रदर्शन, बलि व मार्गपाली पूजन, विश्वकर्मा पूजा (पंजाब) **(B)** वक्री बुध पूर्व में उदित (23/37 घं.मिं.) **C** ९/३३, भीष्मपंचक प्रारम्भ, चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त, **तुलसी विवाह रात्रि 19/12 बाद** (देखें पृष्ठ 83 पर), नैपच्यून मार्गी ४३/२३ **D** पुण्यकाल सं. प्रातः सूर्योदय से **E** भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, त्रिपुरोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मे. पुष्कर तीर्थ, **पद्मक योग** 11/40 से (देखें पृष्ठ 83)

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	४	६	२	८	६	६	०
२३	२०	२०	८	२६	१०	२०	१२	१२
४१	२७	४९	३०	२६	२२	३६	५७	५७
५९	३०	४६	४२	४०	२२	१८	५७	५७
60 18	839 7	33 54	4 20	0 39	55 51	7 12	3 11	3 11
विशा २	श्रव ४	पू.फा ३	स्वा १	पुन २	मूल ४	विशा १	स्वा २	अश्वि ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

७ सू. बु. श. रा. / ८ / ६ / ९ शु. / ५ मं. / १० चं. / ४ / ११ / ३ गु. / १ के. / १२ / २

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	४	६	२	८	६	६	०
०	२३	२४	११	२६	१६	२१	१२	१२
४४	२७	४५	२७	१७	४०	२६	३५	३५
३५	२३	१५	४०	५२	४९	३०	४१	४१
60 29	746 4	33 15	56 57	2 4	51 27	7 7	3 10	3 10
विशा ४	भर ४	पू.फा ४	स्वा २	पुन २	पू.षा २	विशा १	स्वा २	अश्वि ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

९ शु. / ८ सू. / रा. ७ श. बु. / १० / ६ / ११ / ५ मं. / १२ / २ / ४ / १ चं. के. / ३ गु.

कार्तिक शुक्ल पक्षफल—

शुक्ल प्रतिपदा (4 नवं.) को श्री कृष्ण भगवान् की प्रसन्नता के लिए अन्नकूट पर्व के उपलक्ष्य में छप्पन (56) भोग (अर्थात् अनेक प्रकार) के पकवान् बनाकर गोवर्धन व श्री कृष्ण की पूजा की जाती है। ता. 5 नवं. को भाई-बहन के परस्पर स्नेह का प्रतीक भ्रातृ-दूज का पर्व मनाया जाता है। इसमें शिव-पार्वती व यम-पूजनोपरान्त बहन अपने भाई की मंगल कामना हेतु उसे रोली व केशर का तिलक लगाती है। भाई, बहन को श्रद्धानुसार वस्त्र, अलंकार आदि भेंट स्वरूप प्रदान करता है। **हरिप्रबोधिनी एकादशी** (13 नवं.) को भगवान् लक्ष्मी नारायण की पूजा तथा भगवत्प्रीति के लिए पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि किया जाता है। इसी दिन **भीष्मपंचक** प्रारम्भ होंगे। इस दिन तुलसी विवाह रात्रि 19/12 के बाद भद्रा रहित काल में सम्पादित करना शुभ होगा। ता. 14 नवं. **गुरूवार** को रेवती नक्षत्र कालीन **तुलसी विवाह** करवाना शुभ होगा। ता. 15 को अरूणोदय व्यापिनी चतुर्दशी को प्रातःकाल, स्नानादि से निवृत्त होकर दिनभर व्रत रखकर श्री विष्णु स्तोत्र पाठ और रात्रि में भगवान् विष्णु की कमल-पुष्पों से पूजा व हरिकीर्तन करने का विधान है। तत्पश्चात् **भगवान् शिव** की पूजार्चना करनी चाहिए। ता. 17 नवं. को **कार्तिक पूर्णिमा का व्रत**, दान, पुण्यादि होगा। इसी दिन **भीष्मपंचकों** की समाप्ति होगी तथा इसी दिन **श्रीगुरुनानक** जयन्ती का पुण्य पर्व होगा। ता. 16 नवं. शनिवार को **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** भरणी नक्षत्र होने से यह **संक्रान्ति** 15 मुहूर्ति, वारानुसार राक्षसी नामक नीच एवं दुष्टों को लाभप्रद तथा भरणी नक्षत्रानुसार शूद्रजनों को लाभप्रदायक होगी। **शनिवारी** को १५ मुहूर्ति **संक्रान्ति** होने के कारण सब प्रकार के अनाज, धान्य (चावल), चने, मक्की, तिल, तैल, वनस्पति, घी, दुग्धादि रसदार पदार्थ तेज भाव होंगे। **कार्तिक मास में पाँच शनि एवं 5 रविवार पड़ने से** विश्व में कुछ स्थलों पर रोगोत्पत्ति, उपद्रव, जातीय एवं साम्प्रदायिक एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी। जरूरी वस्तुओं में महँगाई विशेष बढ़ेगी। **शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुलापृथिवी।।** ता. 7 नवं. को **गुरू मिथुन** राशि में वक्री होने से भूमि, चौपाय, पशुचारा, तिल, तैल, घी आदि स्निग्ध पदार्थ तेज भाव होंगे—**मिथुनस्थः सुरगुरू विकारं कुरूते यदा। अष्टमासी भवेत्क्रूरा चतुष्पद महर्घता।।**

वि. संवत् २०७०, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक: १९३५

सन् 2013 ई. (ता. 18 नवंबर से 2 दिसंबर तक) हिजरी सन् 1435 — मा.स्टैं.टा. — **जालन्धर**

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

ग्रह दर्शन–प्रातः बु. पूर्व में 23 नवं. से श. भी पूर्व में दिखेगा। मंग. पूर्व–कपाल में तथा गुरु याम्योत्तर से पश्चिम की ओर दिखाई देगा। प्रातः शु. पश्चिम में दीखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	कार्ति. ग.	मुह.	नवंबर	मार्गशीर्ष	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२६.००	१	चंद्र	३८	३	कृति	१६	१५	परि	२१	५३	बा	६	१४	२७	१४	18	३	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	७	०१	४८	५१	७	०१	१७	२५
२५.५५	२	मंग	४२	४०	रोहि	२१	४८	शिव	२२	२८	तै	१०	२२	२८	१५	19	४	मि. ५४/५५	सूर्य अनुराधा में ३०/१८,	७	०२	४९	२५	७	०२	१७	२४
२५.५३	३	बुध	४८	१०	मृग	२८	१३	सिद्ध	२३	४३	व	१५	२५	२९	१६	20	५	मिथुन	भ. १५/२५ से ४८/१० तक, मंगल उ.फा. में २३/५३, सौभाग्य सुन्दरी व्रत R	७	०३	४९	५९	७	०३	१७	२४
२५.५१	४	गुरु	५४	१८	आर्द्रा	३५	१८	साध्य	२५	३०	बव	२१	१४	३०	१७	21	६	मिथुन	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14), R स. सि. योग:	७	०४	५०	३२	७	०३	१७	२४
२५.४८	५	शुक्र	६०	००	पुर्न	४२	४३	शुभ	२७	३८	कौ	२७	२७	मा.	१८	22	७	क. २५/५०	सूर्य सायन धनु में ५/३५, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	७	०५	५१	०९	७	०४	१७	२३
२५.४५	५	शनि	०	३५	पुष्य	५०	५	शुक्ल	२९	४५	तै	०	३५	२	१९	23	८	कर्क	शनि पूर्व में उदय २६/०८,	७	०६	५१	४८	७	०५	१७	२३
२५.४३	६	रवि	६	४५	अश्ले	५६	५५	ब्रह्म	३१	३५	व	६	४५	३	२०	24	९	सिं. ५६/५५	भ. ६/४५ से ३९/३० तक, बुध विशा. में १२/२३	७	०७	५२	२८	७	०६	१७	२३
२५.४०	७	चंद्र	१२	१५	मघा	६०	००	ऐंद्र	३२	४५	बव	१२	१५	४	२१	25	१०	सिंह	कालभैरवाष्टमी	७	०८	५३	११	७	०७	१७	२३
२५.३८	८	मंग	१६	३५	मघा	२	४३	वैधृ	३२	५५	कौ	१६	३५	५	२२	26	११	सिंह	**मंगल कन्या में ३१/०३** (19/33 घं. मिं.)	७	०९	५३	५६	७	०८	१७	२३
२५.३३	९	बुध	१९	१८	पू.फा	७	५	विष्क	३३	४८	गर	१९	१८	६	२३	27	१२	कं. २२/५५	भ. ४९/४२ से,	७	१०	५४	४२	७	०९	१७	२२
२५.३०	१०	गुरु	२०	५	उ.फा.	९	४०	प्रीति	२९	१३	वि	२०	५	७	२४	28	१३	कन्या	भ. २०/०५ तक,	७	११	५५	३०	७	१०	१७	२२
२५.२९	११	शुक्र	१८	५५	हस्त	१०	२०	आयु	२५	५	बा	१८	५५	८	२५	29	१४	तु. ३९/५८	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**, शुक्र उ.षा. में ५०/१०,	७	१२	५६	१६	७	१०	१७	२२
२५.२८	१२	शनि	१५	४५	चित्रा	९	३	सौभा	१९	२३	तै	१५	४५	९	२६	30	१५	तुला	शनि प्रदोष व्रत	७	१३	५७	०५	७	११	१७	२२
२५.२५	१३	रवि	१०	४५	स्वा.	५	५८	शोभ	१२	१३	व	१०	४५	१०	२७	दिसं	१६	वृ. ४७/३८	भ. १०/४५ से ३७/३० तक, **बुध वृश्चिक में ७/१०**, मासशिवरात्रि A	७	१४	५७	५७	७	१२	१७	२२
२५.२३	१४	चंद्र	४	१५	विशा अनु	१ ५५	१८ ३३	अति सुक	३ ५४	५३ ३५	श	४	१५	११	२८	2	१७	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष/सोमवती अमावस** (8/55 बाद), सूर्य ज्ये. में ४०/३५, B	७	१५	५०	५०	७	१३	१७	२२
००.००	३०	चंद्र	५६	४०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**अमावस तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

A व्रत, दिसम्बर मास प्रारम्भ **B** श्रीबालाजी जयन्ती, देविका स्नान (कुरुक्षेत्र), मेला पुरमण्डल (जम्मू)

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	४	६	२	८	६	६	०
९	११	२९	२२	२५	२३	२२	१२	१२
४९	५७	४१	२३	५२	५५	३०	७	७
४८	००	३	५५	२४	९	७	४	४
60 43	742 35	32 20	85 37	3 47	43 46	6 58	3 10	3 10
अनु २	मघा ४	उफा १	विशा १	पुर्न २	पूषा ४	विशा १	स्वा २	अश्वि ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

९ शु. | रा. ७ श. बु. | १० | ८ सू. | ६ | ११ | ५ चं. मं. | १२ | २ | ४ | १ के. | ३ गु.

चंद्रे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	५	७	२	८	६	६	०
१५	१	२	१	२५	२८	२३	११	११
५४	५८	५३	१३	२६	१	११	४८	४८
२९	२१	२०	३	५६	१७	३५	००	००
60 51	884 3	31 37	90 24	4 52	36 52	6 50	3 11	3 11
अनु ४	विशा ४	उफा २	विशा ४	पुर्न २	उषा १	विशा १	स्वा २	अश्वि ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30

९ शु. | ७ रा. श. | १० | ८ सू. चं. बु. | ६ मं. | ११ | ५ | १२ | २ | ४ | १ के. | ३ गु.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की अष्टमी तिथि (25 नवं.) को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। **उत्पन्ना एकादशी** (29 नवं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका स्नान कुरुक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है। **सोमवार** (2 दिसं.) को मार्गशीर्ष अमावस होने से हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नान, जप-पाठ, तर्पण-दानादिका विशेष माहात्म्य होगा। **लोक भविष्य**–मार्गशीर्ष मास में 18 नवं. से 17 दिसं. तक पाँच सोम तथा पाँच मंगलवार होने से शुभाशुभ (मिश्रित) फल प्राप्त होंगे। पाँच सोमवारों के प्रभावस्वरूप देश में धान्य आदि शीतकालीन फसलें अच्छी होने के संकेत हैं। परन्तु पाँच मंगलवार होने से देश के किसी प्रमुख नेता के लिए अनिष्टकर प्रमाणित होंगे। पाक, चीन आदि विरोधी देश के साथ सैनिक टकराव की सम्भावना होगी। केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में अथवा किसी प्रान्त में सत्ता परिवर्तन के भी संकेत हैं। कई स्थानों पर हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ भी घटित होंगी–''**यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।**'' आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से प्रजा में आक्रोश एवं गहन असन्तोष व्याप्त रहे। **व्यापारिक रुख**–26 नवं. को मंगल कन्या राशि में आकर चतुर्थ दृष्टि से शुक्र को देखेगा। रूई, कपास, सूत, चाँदी, घी, हल्दी में मन्दी की जगह तेजी का रुख बनेगा। 1 दिसं. को बुध वृश्चिक में आने से रूई में मन्दी, गेहूँ, अलसी में विशेष तेजी। जौं, चना, गुड़ में भी तेजी रहे। चाँदी आदि धातु, सूत, सन, बिनौला, सरसों, घी तथा अनाजों में तेजी बने। **आकाश लक्षण**–ता. 22, 23 को मामूली वर्षा के योग हैं। [illegible]

सन् 2013 ई. (ता. 3 दिसं. से 17 दिसं. तक) हिजरी सन 1435 मा.स्टैं.टा.

वि. संवद् २०७०, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाक: १९३५

सन् 2013 ई. (ता. 3 दिसं. से 17 दिसं. तक) हिजरी सन् 1435
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः बु.–श. पूर्व में, मं. पूर्व से याम्योत्तरवृत्त के समीप तथा गु. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा। ता. 5 दिसं. से बु. पूर्व में अस्त होगा। सायं शु. पश्चिम में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मा.शाके.	मु.मा.	दिसंबर	मार्गशीर्ष	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै.रा.	सू.अ.	स्प.क.	ष्ट.वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
२५.२२	१	मंग	४८	१५	ज्ये.	४९	००	धृति	४४	४०	किं	२२	२८	१२	२९	3	१८	ध. ४९/००	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध अनुराधा में १९/३३	७	१६	५९	४१	७	१४	१७	२२
२५.२२	२	बुध	३९	३५	मूल	४२	१०	शूल	३४	३०	बा	१३	५५	१३	३०	4	१९	धनु	चन्द्रदर्शन	७	१८	००	३७	७	१४	१७	२२
२५.१८	३	गुरु	३०	५८	पू.षा	३५	२८	गंड	२४	२०	तै	५	१७	१४	सफ	5	२०	म. ४८/५०	भ. ५६/५६ से, शुक्र मकर में १७/५३, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ,	७	१९	०१	३१	७	१५	१७	२२
२५.१५	४	शुक्र	२२	५३	उ.षा	२९	१८	वृद्धि	१४	३५	वि	२२	५३	१५	२	6	२१	मकर	भ. २२/५३ तक,	७	२०	०२	२८	७	१६	१७	२२
२५.१३	५	शनि	१५	४३	श्रव	२४	३	पूर्व व्या.	५ ५७	२८ २०	बा	१५	४३	१६	३	7	२२	कुं. ५१/५३	**पंचक प्रारम्भ ५१/५३**, श्रीराम विवाहोत्सव, श्रीपञ्चमी, नागपंचमी	७	२१	०३	२६	७	१७	१७	२२
२५.११	६	रवि	९	४३	धनि	२०	००	हर्ष	५०	१८	तै	९	४३	१७	४	8	२३	कुम्भ	स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी	७	२२	०४	२४	७	१८	१७	२२
२५.१०	७	चंद्र	५	१०	शत	१७	२८	वज्र	४४	३३	व	५	१०	१८	५	9	२४	कुम्भ	भ. ५/१० से ३३/४० तक, मित्र (विष्णु) सप्तमी	७	२३	०५	२४	७	१८	१७	२२
२५.०९	८	मंग	२	१०	पू.भा	१६	२८	सिद्धि	३९	५८	बव	२	१०	१९	६	10	२५	मी. १/३३	श्रीदुर्गाष्टमी	७	२४	०६	२५	७	१९	१७	२२
२५.०८	९	बुध	०	४८	उ.भा	१७	००	व्य.	३६	३८	कौ	०	४८	२०	७	11	२६	मीन	श्रीनन्दा नवमी	७	२५	०७	२५	७	२०	१७	२२
२५.०६	१०	गुरु	०	५८	रेव	१८	५८	वरी	३४	२५	गर	०	५८	२१	८	12	२७	मे. १८/५८	भ. ३१/४६ से, **पंचक समाप्त १८/५८**, बुध ज्ये. में 7/20 घं. मिं. **A**	७	२६	०८	२६	७	२१	१७	२३
२५.०४	११	शुक्र	२	३३	अश्वि	२२	१८	परि	३३	१५	वि	२	३३	२२	९	13	२८	मेष	भ. २/३३ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती**	७	२७	०९	०६	७	२१	१७	२३
२५.०३	१२	शनि	५	००	भर	२६	४०	शिव	३२	५०	बा	५	००	२३	१०	14	२९	वृ. ४२/५५	**शनि प्रदोष व्रत**, अखण्ड द्वादशी, अनङ्ग त्रयोदशी	७	२८	१०	२८	७	२२	१७	२३
२५.०३	१३	रवि	९	५	कृति	३१	५८	सिद्ध	३३	१३	तै	९	५	२४	११	15	पौ	वृष	सूर्य मूल १ धनु में ४७/४३, **पौष संक्रान्ति**, मु. ४५, पुण्यकाल **(B)**	७	२९	११	३१	७	२२	१७	२४
२५.०३	१४	चंद्र	१३	४०	रोहि	३८	००	साध्य	३४	५	व	१३	४०	२५	१२	16	२	वृष	भ. १३/४० से ४६/१९ तक, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती**, श्रीसत्यनारायण व्रत **(C)**	८	००	१२	३२	७	२३	१७	२४
२५.०२	१५	मंग	१८	५८	मृग	४४	३८	शुभ	३५	२८	बव	१८	५८	२६	१३	17	३	मि. ११/१५	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा**, श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती, यूरेनस मार्गी ३९/२८	८	०१	१३	३६	७	२३	१७	२४

A स. सि. यो. **B** सं. अगले दिन, मंगल हस्त में ४८/३८, पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत **(C)** स. सि. यो.

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 10 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	५	७	२	९	६	६	०
२४	२८	७	१३	२४	२	२४	११	११
१	३८	२	२७	४३	१५	५	२२	२२
४८	७	२९	२८	२९	४८	१३	३३	३३
60 58	799 32	30 31	92 41	6 8	24 34	6 33	3 10	3 10
ज्ये. 3	पूभा 3	उफा ४	अनु ४	पुन २	उषा २	विशा २	स्वा २	अश्वि ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

८ सू. बु.
९
७ रा. श.
१० शु.
६ मं.
११ चं.
५
१२
२
४
१ के.
३ गु.

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 17 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१	५	७	२	९	६	६	०
१	२६	१०	२४	२३	४	२४	११	११
८	४८	३२	१८	५७	२६	५०	०	०
४७	३८	५५	३९	५१	५८	७	१८	१८
61 2	719 10	29 25	93 29	7 2	10 22	6 14	3 11	3 11
मूल 1	मृग २	हस्त 1	ज्ये. 3	पुन २	उषा 3	विशा २	स्वा २	अश्वि ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30

९ सू.
१० शु.
८ बु.
११
७ श. रा.
१२
६ मं.
१ के.
३ गु.
५
२ चं.
४

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन **श्रीपंचमी** को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी या, ताम्र अथवा चाँदी की मूर्ति को सुवर्णादि के कलश पर स्थापित कर गणपति पूजन, मातृका पूजन एवं पंचादि उपचारों से पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का पाठ, ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ता. 13 को **मोक्षदा एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसी दिन श्रीगीता जयन्ती के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके श्रीमदभगवद्गीता का पाठ एवं अध्ययन करना चाहिए। इसी दिन भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। ता. 16 दिसं. को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। चन्द्रोदय व्याप्त पूर्णिमा (श्रीसत्यनारायण) का व्रत भी इसी दिन रखना प्रशस्त होगा। **लोक भविष्य**–मार्गशीर्ष पक्ष में पौष संक्रान्ति का प्रवेश रविवार को होने से राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के संकेत हैं। कहीं अनाज की कमी के कारण दुर्भिक्ष एवं अराजकता व्याप्त हो। राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव पैदा होंगे–**संक्रान्तिरादित्य दिने न शस्ताकरोति युद्धं नृपतेरतीव। धान्यं महर्घं प्रतिरौद्रवार्ता, प्रजाभवेद् दु:खित हीनदीना।।** अनाज, घी, तैल आदि उपभोग्य पदार्थों में अत्यधिक तेजी के कारण प्रजा दु:खों एवं कष्टों से पीड़ित रहे। मार्गशीर्ष मास में पाँच मंगलवार होने का फल भी शुभ नहीं होगा। **यत्रमासे महीसूनो पंचवासरा:। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंगस्तथा भवेत्।।** कहीं छत्रभंग, उपद्रव, अग्निकाण्ड, उपद्रव होंगे। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु होने के योग है। **संक्रान्ति फल**–वृष कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर व कुम्भ राशि वाले जातकों को लाभदायक होगी।

वि. संवद् २०७०, पौष कृष्ण पक्ष शाक: १९३५

सन् 2013-14 ई. (ता. 18 दिसं. से 1 जन. तक) हिजरी सन् 1435 — भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

सूर्य दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु:

ग्रह दर्शन—बु. अस्त है। प्रातः शनि पूर्वकपाल में, मं. याम्योत्तरवृत्त में तथा गु. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मार्ग. शाके	सफर मु.	दिसंबर	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
२५.०२	१	बुध	२४	४५	आर्द्रा	५१	४०	शुक्ल	३७	१०	कौ	२४	४५	२७	१४	18	४	मिथुन
२५.०२	२	गुरु	३०	५८	पुर्न	५९	३	ब्रह्म	३९	१०	गर	३०	५८	२८	१५	19	५	क. ४२/१०
२५.०१	३	शुक्र	३७	२०	पुष्य	६०	००	ऐंद्र	४१	१५	व	४	९	२९	१६	20	६	कर्क
२५.००	४	शनि	४३	३८	पुष्य	६	२५	वैधृ	४३	१५	बव	१०	२९	३०	१७	21	७	कर्क
२५.००	५	रवि	४९	३०	अश्ले	१३	३८	विष्क	४५	००	कौ	१६	३४	पौष	१८	22	८	सिं. १३/३८
२५.०१	६	चंद्र	५४	३३	मघा	२०	१५	प्रीति	४६	५	गर	२२	२	२	१९	23	९	सिंह
२५.०२	७	मंग	५८	२०	पू.फा	२५	५८	आयु	४६	२०	वि	२६	२७	३	२०	24	१०	कं. ४२/१०
२५.०२	८	बुध	६०	००	उ.फा	३०	१३	सौभा	४५	२०	बा	२९	२४	४	२१	25	११	कन्या
२५.०३	८	गुरु	०	२८	हस्त	३२	४३	शोभ	४२	५५	कौ	०	२८	५	२२	26	१२	कन्या
२५.०३	९	शुक्र	०	३५	चित्रा	३३	१३	अति	३८	५०	गर	०	३५	६	२३	27	१३	तु. ३/१३
००.००	१०	शुक्र	५८	४०	०	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००
२५.०३	११	शनि	५४	३८	स्वा.	३१	४०	सुक	३३	८	बव	२६	३९	७	२४	28	१४	तुला
२५.०५	१२	रवि	४८	४५	विशा	२८	१३	धृति	२५	५३	कौ	२१	४२	८	२५	29	१५	वृ. १४/१५
२५.०५	१३	चंद्र	४१	१५	अनु	२३	३	शूल	१७	१५	गर	१५	००	९	२६	30	१६	वृश्चिक
२५.०६	१४	मंग	३२	३३	ज्ये.	१६	३०	गंड वृद्धि	७ ५६	२५ ५३	वि	६	५४	१०	२७	31	१७	ध. १६/३०
२५.०८	३०	बुध	२३	५	मूल	९	८	ध्रुव	४५	५०	ना	२३	५	११	२८	जन	१८	धनु

- पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ
- स. सि. योग
- भ. ४/०९ से ३७/२० तक, **बुध मूल १ धनु में ३३/४८,**
- **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14), शुक्र वक्री ४९/५५, सूर्य सायन **A**
- वक्री गुरु पुर्न (१) में ९/२३, शक पौष प्रारम्भ
- भ. ५४/३३ से,
- भ. २६/२७ तक,
- **क्रिसमिस डे (बड़ा दिन),** रूक्मणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध
- भ. २९/३८ से ५८/४० तक,
- दशमी तिथि का क्षय ०० ०० ००
- सफला एकादशी व्रत (स्मार्त), सूर्य पू.षा. में ५३/०५, बुध पू.षा. में ५९/४०,
- **सफला एकादशी व्रत (वैष्णव),** श्रीबोधनाचार्य जयन्ती, सुरूप-द्वादशी
- भ. ४१/१५ से, **सोम प्रदोष व्रत,** मासशिवरात्रि व्रत, स. सि. योग:
- भ. ६/५४ तक,
- **पौष अमावस, जनवरी, सन् 2014 ई. प्रारम्भ**

दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
८	०२	१४	३८	७	२४	१७	२५
८	०३	१५	५१	७	२४	१७	२६
८	०४	१६	५०	७	२५	१७	२६
८	०५	१७	५४	७	२६	१७	२६
८	०६	१९	०२	७	२६	१७	२७
८	०७	२०	०८	७	२७	१७	२७
८	०८	२१	१४	७	२७	१७	२८
८	०९	२२	२१	७	२७	१७	२८
८	१०	२३	३१	७	२७	१७	२९
८	११	२४	३९	७	२८	१७	२९
०	०	०	०	०	०	०	०
८	१२	२५	५१	७	२९	१७	३०
८	१३	२७	००	७	२९	१७	३१
८	१४	२८	१०	७	२९	१७	३१
८	१५	२९	२३	७	३०	१७	३२
८	१६	३०	३४	७	३०	१७	३३

A मकर में ३८/०८, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ,

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 25 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	५	८	२	९	६	६	०
९	२	१४	६	२२	४	२५	१०	१०
१७	४०	२३	५१	५९	४३	३८	३४	३४
२४	५८	३४	११	१	५०	३६	५२	५२
61 8	755 6	28 00	94 58	7 44	8 53	5 50	3 11	3 11
मूल ३	उफा २	हस्त २	मूल ३	पुर्न १	उषा ३	विशा २	स्वा २	अश्वि ४
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

१० शु. — ९ सू. बु. — ८ — ११ — ७ श. रा. — १२ — ६ चं. मं. — १ के. — ३ गु. — ५ — २ — ४

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 1 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	५	८	२	९	६	६	०
१६	९	१७	१८	२२	२	२६	१०	१०
२५	४४	३५	१	३	५०	१८	१२	१२
२९	२८	२०	४०	४२	३३	९	३६	३६
61 10	919 3	26 32	97 00	8 4	25 20	5 25	3 10	3 10
पूषा १	मूल ३	हस्त ३	पूषा २	पुर्न १	उषा २	विशा २	स्वा २	अश्वि ४
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रात: 5.30

१० शु. — ९ सू. चं. बु. — ८ — ११ — ७ श. रा. — १२ — ६ मं. — १ के. — ३ गु. — ५ — २ — ४

पौष कृष्ण पक्षफल—

पौष मास में धान्य, गेहूँ, चावल, चने आदि अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। 21 दिसं. को श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत रखने से मनोवांछित कामना पूरी होती है। इसी दिन से सायन उत्तरायण प्रारम्भ होगा तथा शिशिर ऋतु भी प्रारम्भ होगी। ता. 25 को क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन) समस्त विश्व में बड़े हर्ष उल्लास से मनाया जाएगा। इसी दिन रुक्मणी अष्टमी को कृष्ण, रुक्मिणी और प्रद्युम्न की मूर्तियों का गन्धयुक्त पूजनकर उत्तम पदार्थ अर्पण करें और सामर्थ्यानुसार सौभाग्यवती आठ स्त्रियों को भोजन करवाकर दक्षिणा [illegible] तो रुक्मिणी जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। ता. 29 दिसं. को **सफला एकादशी** का व्रत, एकादशी महात्म्य का पाठ, जप, श्री विष्णु स्तोत्र पाठ एवं यथाशक्ति अन्न, गुड़, गर्म-वस्त्र का दान करने का विशेष [illegible]ाहात्म्य होता है। ता. 30 दिसं. को सोम प्रदोष का व्रत विधि अनुसार करने से अभीष्ट कामना की सिद्धि होती है। **लोक भविष्य**—पक्षारम्भ में ता. 20 को बुध धनु राशि में प्रविष्ट होकर सूर्य के साथ मेल करेगा, [illegible]न पर मंगल की चतुर्थ तथा शनि की तृतीय दृष्टि होगी। फलस्वरूप अधिकांश लोग सरकारी तन्त्र से तंग होकर उपद्रव, दंगा-फिसाद एवं हिंसक घटनाओं में प्रवृत्त होंगे। कहीं अग्निकाण्ड एवं जन-धन व सम्पत्ति [illegible]का नुकसान होगा। मृग, हाथी, गाएं, भैंस आदि चौपाय महँगे होंगे—**धनु मीने बुधो याति मारयेन्तुमृगान्गाजान्। राजा विरोध कृत तत्र चान्यथान भविष्यति।।** ता. 22 (प्रात:) को शुक्र मकर राशि में वक्री हो [illegible] रहा है। जिससे घृत, तैल, तिल, हीरा इत्यादि सभी प्रकार के गहने, धान्य, तिल, तैल, घृत, रसदार पदार्थ तेज भाव होंगे। **यद्यादैत्यगुरूश्चैव राशि वक्रं चरिष्यति। धान्यार्घं च क्षयं कुर्यात् घृत तैलमहर्घता।।**

आकाश लक्षण—उत्तर-पश्चिमी भारत के अनेक क्षेत्रों में [illegible] वर्षा के योग हैं। [illegible]

वि. संवद् २०७०, पौष शुक्ल पक्ष शाकः १९३५ | सन् 2014 ई. (ता. 2 जन. से 16 जनवरी तक) हिजरी सन् 1435

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—बु. अस्त है। प्रातः श. पूर्व से याम्योत्तरवृत्त के समीप, मं. याम्योत्तरवृत्त में तथा गु. इस समय पश्चिमक्षितिज पर डूबता नज़र आएगा। शु. ता. 8 जन. को पश्चिम में अस्त होकर ता. 14 को पूर्व में उदय होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	पौष शाके	मुस्लिम	जनवरी	पौष प्रविष्टे	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.१०	१	गुरु	१३	२३	पू.षा. उ.षा.	१ ५३	१८ ३५	व्या.	३४	४५	बव	१३	२३	१२	२९	2	१९	म. १४/२०	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन	८	१७	३१	४७	७	३०	१७	३४
२५.११	२	शुक्र	३	५३	श्रव	४६	२८	हर्ष	२४	३	कौ	३	५३	१३	रबि	3	२०	मकर	रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, आरोग्य व्रत, स. सि. योगः	८	१८	३२	५८	७	३०	१७	३४
००.००	३	शुक्र	५५	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	तृतीया तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.१३	४	शनि	४७	२३	धनि	४०	२३	वज्र	१४	३	व	२१	१३	१४	२	4	२१	कुं. १३/१५	भ. २१/१३ से ४७/२३ तक, **पंचक प्रारम्भ १३/१५**, राहु स्वा. (१)A	८	१९	३४	०८	७	३०	१७	३५
२५.१५	५	रवि	४१	१५	शत	३५	४८	सिद्धि व्य.	५ ५७	५ २८	बव	१४	१९	१५	३	5	२२	कुम्भ	शनि विशा. (३) में २/३०, शुक्र वार्धक्य प्रा. ४५/४८ **शुक्र अस्त 8 जन.**	८	२०	३५	१९	७	३०	१७	३६
२५.१७	६	चंद्र	३६	५५	पू.भा	३३	००	वरी	५१	२०	कौ	९	५	१६	४	6	२३	मी. १८/३०	बुध उ.षा. में १३/१५, **वक्री शुक्र धनु में ३९/५८**	८	२१	३६	२८	७	३०	१७	३७
२५.१८	७	मंग	३४	३०	उ.भा	३२	३	परि	४६	४५	गर	५	४३	१७	५	7	२४	मीन	भ. ३४/३० से, मार्तण्ड सप्तमी, स. सि. यो.	८	२२	३७	३८	७	३१	१७	३८
२५.२०	८	बुध	३४	१०	रेव	३३	८	शिव	४३	४५	वि	४	२०	१८	६	8	२५	मे. ३३/०८	भ. ४/२० तक, **बुध मकर में १४/३०, शुक्र पश्चिम में अस्त** B	८	२३	३८	४७	७	३१	१७	३९
२५.२१	९	गुरु	३५	४३	अश्वि	३६	३	सिद्ध	४२	१०	बा	४	५७	१९	७	9	२६	मेष	स. सि. यो. **शुक्र उदय 14 जन.**	८	२४	३९	५६	७	३१	१७	३९
२५.२३	१०	शुक्र	३८	५३	भर.	४०	२८	साध्य	४१	४८	तै	७	१८	२०	८	10	२७	वृ. ५६/४८	सूर्य उ.षा. में ५७/५०,	८	२५	४१	०४	७	३१	१७	४०
२५.२५	११	शनि	४३	२०	कृति	४६	८	शुभ	४२	२३	व	११	७	२१	९	11	२८	वृष	भ. ११/०८ से ४३/२० तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**	८	२६	४२	१२	७	३१	१७	४१
२५.२८	१२	रवि	४८	४०	रोहि	५२	३८	शुक्ल	४३	३८	बव	१६	००	२२	१०	12	२९	वृष	वक्री शुक्र पू.षा. (४) में १२/३५, स्वा. विवेकानन्द जयंती	८	२७	४३	२०	७	३१	१७	४२
२५.३२	१३	चंद्र	५४	३५	मृग	५९	३८	ब्रह्म	४५	२०	कौ	२१	३८	२३	११	13	३०	मि. २६/०५	सोम प्रदोष व्रत, **लोहड़ी पर्व**, स. सि. यो.	८	२८	४४	२६	७	३१	१७	४३
२५.३३	१४	मंग	६०	००	आर्द्रा	६०	००	ऐंद्र	४७	१८	गर	२७	४४	२४	१२	14	मा	मिथुन	**सूर्य मकर में १४/१८, मकर संक्रान्ति**, मु. १५, पुण्यकाल सं. प्रातःC	८	२९	४५	२९	७	३०	१७	४३
२५.३५	१४	बुध	०	५३	आर्द्रा	६	५८	वैधृ	४९	२०	व	०	५३	२५	१३	15	२	क. ५७/३०	भ. ०/५३ से ३४/०२ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,	९	००	४६	३५	७	३०	१७	४४
२५.३८	१५	गुरु	७	१०	पुर्न	१४	२०	विष्क	५१	२३	बव	७	१०	२६	१४	16	३	कर्क	**पौष पूर्णिमा**, वक्री गुरु आर्द्रा (४) में १९/२३, माघ स्नान प्रारम्भ	९	०१	४७	४०	७	३०	१७	४५

A केतु अश्वि ३ में ५२/४८, **B** ४५/४५, पंचक समाप्त ३३/०८, बुधाष्टमी व्रत (महाभद्रा), श्रीदुर्गाष्टमी **C** 6/49 से, मंगल चित्रा में ४४/३८, बुध श्रव. में १४/२०, शुक्र पूर्व में उदय ५२/२५ (28/52 घं.मिं.)

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	५	८	२	८	६	६	०
२३	२१	२०	२९	२१	२९	२६	९	९
३३	४३	३६	२७	६	१६	५४	५०	५०
३९	१०	१	४३	५७	३७	३४	२१	२१
61 9	777 10	24 48	99 21	8 5	35 46	4 55	3 11	3 11
पू.षा ४	रेव २	हस्त ४	उ.षा १	पुन १	उ.षा १	विशा ३	स्वा १	अश्वि ३
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

- १०
- ९ सू. बु. शु.
- ८
- ११
- ७ श. रा.
- १२ चं.
- ६ मं.
- १ के.
- ३ गु.
- ५
- २
- ४

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	५	९	२	८	६	६	०
१	२९	२३	१२	२०	२४	२७	९	९
४२	३०	४६	४८	३	२७	३१	२४	२४
३५	२७	४९	४१	९	१४	५१	५५	५५
61 5	712 52	22 34	100 23	7 46	33 38	4 19	3 11	3 11
उ.षा २	पुन ३	चित्रा १	श्रव १	पुन १	पू.षा ४	विशा ३	स्वा १	अश्वि ३
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

- ११
- ९ शु.
- १० सू. बु.
- १२
- ८
- १ के.
- ७ श. रा.
- २
- ४
- ६ मं.
- ३ चं. गु.
- ५

पौष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की **सप्तमी तिथि** (7 जन.) मंगलवार को गुरू गोबिन्द सिंह जी का जन्मदिन समस्त भारत में बड़ी श्रद्धा से मनाया जाएगा। **पुत्रदा एकादशी** का व्रत रखकर भगवान् कृष्ण-राधा तथा भगवान् शिव-पार्वती की उपासना करने से मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। ता. 13 जन. को सोम प्रदोष का पुण्यप्रद व्रत रहेगा। इसी दिन लोहड़ी पर्व समस्त पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू आदि प्रदेशों में गृहों में अग्नि प्रदीप्त करके तिल-समिधा, रेवड़िया आदि सहित अग्नि पूजनोपरान्त उत्सव मनाया जाता है। ता. 14 मंगलवार को **मकर संक्रान्ति** दुपै. 1 बजकर 13 मिंट पर आर्द्रा नक्षत्रकालीन मेष लग्न में प्रविष्ट होगी। इस संक्रान्ति के स्नान, जप-पाठ, दानादि का पुण्यकाल प्रातः 6 बजकर 49 मिनट से शुरू हो जाएगा। स्नानादि के पश्चात् भगवान् विष्णु पूजन, सूर्यजप, पुरुष सूक्त, **स्तोत्र पाठ**, तिल-घृतादि सहित होम, तिल सहित तर्पण, ब्राह्मण भोजन एवं अनाज, वस्त्र, फल, गुड़, तिलादि के दान का विशेष महत्त्व होता है। इस दिन हरिद्वार, प्रयागराज, काशी, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर स्नान-दान, जपादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन से **माघ माहात्म्य** का पाठ आरम्भ करके माघ-मासान्त तक नित्य प्रति पाठ करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 15 जन. को पौष पूर्णिमा का व्रत तथा 16 जन. को स्नानदान के लिए पूर्णिमा होगी। इसी दिन से माघ स्नान का प्रारम्भ होगा। **मकर संक्रान्ति**—नामानुसार महोदरी नामक तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नाम की होगी। जोकि चोरों एवं दुष्टों के लिए लाभप्रदायक होगी। **लोक भविष्य**—मकर (माघ) संक्रान्ति 15 **मुहूर्ति** मंगलवार को होने से इस मास सर्वप्रकार के अनाज, गेहूँ, जौं, चने, धान्य, अलसी, तिल, सरसों, मूंग, उड़द, घी, गुड़, शक्कर, छोटी इलायची, दालें, गर्म-मसाले और अधिक तेज भाव होंगे। **मंगलवार की संक्रान्ति** भी उपरोक्त सर्व प्रकार के माल पंसारी तथा वनस्पति, घी, तैल, नमक, पशुचारा, चौपाय तेज भाव होंगे—**भौमस्यवारे यदि संक्रमश्च करोति पृथ्वयामसुखं महर्घता। क्षारं रसं व घृत तैल संयुतं-कर्पूरकस्यैव महर्घता च।।** कहीं राज्य में छत्रभंग होने के भी होने के संकेत हैं। **संक्रान्ति राशिफल**—माघ संक्रान्ति वृष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, मकर व कुम्भ राशि वालों को शुभ व लाभदायक रहेगी। शेष को मध्यफली। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में कहीं शीत-लहर, खण्ड वर्षा व तेज हवाएँ चलने के आसार हैं।

वि. संवद् २०७०, माघ कृष्ण पक्ष शाक: १९३५ | **तारीखें** | **चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल**

सन् 2014 ई. (ता. 17 जन. से 30 जनवरी तक) हिजरी सन् 1435 — सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः — मा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, शनि पूर्व से याम्योत्तरवृत्त के समीप, मंगल याम्योत्तर में दिखेगा। सायं गुरु पूर्व में, ता. 18 नवं. से बुध पश्चिम क्षितिज में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	सौर माघ	रवि मु.	जनवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	
२५.४०	१	शुक्र	१३	२५	पुष्य	२१	३८	प्रीति	५३	१८	कौ	१३	२५	२७	१५	17	४	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र बाल्यत्व समाप्त ५३/२५,
२५.४३	२	शनि	१९	२८	अश्ले	२८	४३	आयु	५४	५८	गर	१९	२८	२८	१६	18	५	सिं. २८/४३	भ. ५२/१७ से, बुध पश्चिम में उदय ५२/०३
२५.४५	३	रवि	२५	५	मघा	३५	२३	सौभा	५६	१५	वि	२५	५	२९	१७	19	६	सिंह	भ. २५/०५ तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14)**A**
२५.५३	४	चंद्र	३०	१०	पू.फा	४१	२८	शोभ	५७	००	बा	३०	१०	३०	१८	20	७	कं. ५७/४८	सूर्य सायन कुम्भ में ४/४० (9/21 घं.मिं.)
२५.५५	५	मंग	३४	१५	उ.फा	४६	३३	अति	५६	५८	कौ	२	१३	मा	१९	21	८	कन्या	शक माघ प्रारम्भ
२६.०३	६	बुध	३७	८	हस्त	५०	२८	सुक	५५	५३	गर	५	४२	२	२०	22	९	कन्या	भ. ३७/०८ से, बुध धनि. में १८/००, स. सि. यो.
२६.०३	७	गुरु	३८	२५	चित्रा	५२	४५	धृति	५३	३३	वि	७	४७	३	२१	23	१०	तु. २१/४८	भ. ७/४८ तक, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, नेताजी जयन्ती
२६.०५	८	शुक्र	३७	५३	स्वा	५३	१५	शूल	४९	४८	बा	८	९	४	२२	24	११	तुला	सूर्य श्रवण (१) में ३/५५,
२६.०८	९	शनि	३५	२८	विशा	५१	५५	गंड	४४	३३	तै	६	४१	५	२३	25	१२	वृ. ३७/२५	
२६.१०	१०	रवि	३१	५	अनु	४८	४०	वृद्धि	३७	४३	व	३	१७	६	२४	26	१३	वृश्चिक	भ. ३/१७ से ३१/०५ तक, **बुध कुम्भ में ४१/०८, भारत गणतन्त्र दिवस**
२६.१०	११	चंद्र	२४	५५	ज्ये.	४३	४३	ध्रुव	२९	३०	बा	२४	५५	७	२५	27	१४	ध. ४३/४३	**षट्तिला एकादशी व्रत**
२६.१५	१२	मंग	१७	१८	मूल	३७	२८	व्या.	२०	८	तै	१७	१८	८	२६	28	१५	धनु	**भौम प्रदोष व्रत**, तिल द्वादशी
२६.१८	१३	बुध	८	३०	पू.षा	३०	१०	हर्ष/वज्र	९/५८	४८/५५	व	८	३०	९	२७	29	१६	म. ४२/२५	भ. ८/३० से ५०/३० तक, मासशिवरात्रि व्रत, मेरू त्रयोदशी (जैन)
००.००	१४	बुध	५९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ००
२६.२३	३०	गुरु	४९	२०	उ.षा	२२	२८	सिद्धि	४७	५३	चतु	२४	१०	१०	२८	30	१७	मकर	**माघ (मौनी) अमावस**, मेला हरिद्वार, प्रयागराज आदि

दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
९	०२	४८	४५	७	३०	१७	४६
९	०३	४९	४६	७	३०	१७	४७
९	०४	५०	५०	७	३०	१७	४८
९	०५	५१	५४	७	२९	१७	५०
९	०६	५२	५६	७	२९	१७	५१
९	०७	५३	५५	७	२८	१७	५३
९	०८	५४	५७	७	२८	१७	५३
९	०९	५५	५९	७	२८	१७	५४
९	१०	५६	५८	७	२७	१७	५४
९	११	५७	५९	७	२७	१७	५५
९	१२	५८	५९	७	२७	१७	५५
९	१३	५९	५५	७	२६	१७	५६
९	१५	००	५४	७	२६	१७	५७
०	०	०	०	०	०	०	०
९	१५	०१	५०	७	२५	१७	५८

A सौभाग्य सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी, गण्डमूल 21/39 (घं. मिं.) तक

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	५	९	२	८	६	६	०
९	७	२६	२५	१९	२०	२८	८	८
५१	१०	३८	५३	३	४६	४	५९	५९
००	४४	८	६	२०	२०	७	२९	२९
61	794	19	91	7	18	3	3	3
1	3	50	47	4	1	38	11	11
उषा ४	स्वा १	चित्रा १	धनि १	आर्द्रा ४	पूषा ३	विशा ३	स्वा १	अश्वि ३
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

११ — ९ शु. — १० सू. बु. — १२ — ८ — १ के. — ७ चं. श. रा. — २ — ४ — ६ मं. — ३ गु. — ५

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	५	१०	२	८	६	६	०
१५	३	२८	४	१८	१९	१८	८	८
५६	२	३१	१२	२२	३४	२४	४०	४०
५८	११	२६	४५	३४	१२	४१	३२	३२
60	919	17	66	6	3	3	3	3
57	59	27	45	9	19	7	11	11
श्रव २	उषा २	चित्रा २	धनि ४	आर्द्रा ४	पूषा २	विशा ३	स्वा. १	अश्वि ३
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

११ बु. — ९ शु. — १० सू. चं. — १२ — ८ — १ के. — ७ श. रा. — २ — ४ — ६ मं. — ३ गु. — ५

माघ कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की चतुर्थी (19 जन.) को श्रीगणेश संकट चौथ के व्रत प्रातः स्नानादि के बाद संकल्प मन्त्र **''गणपत्ति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये''** पढ़कर व्रत करके '**ॐ गं गणपतये नमः**' मन्त्र-जप व स्तोत्र पाठ करें। रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय पर '**ॐ सोम् सोमाय नमः**' द्वारा अर्घ्य देने से भगवान् गणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। **षट्तिला एकादशी** (27 जन.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। फिर तिलों से निर्मित मोदक, बर्फी आदि का दान करें तथा स्वयं उनका सेवन करें तो अनेक पापों का क्षय होता है। ता. 30 जन. को माघ-मौनी अमावस का मौन व्रत रखकर स्नान, जप, पाठ, तर्पण एवं यथाशक्ति, अन्न, वस्त्र, तिल, घी, फल, गुड़ आदि यथाशक्ति दान करने का विधान है। **लोक भविष्य**—पक्षारम्भ में गुरु व शुक्र ग्रहों के मध्य समसप्तक योग बना हुआ है ; जिससे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, श्रीलंका, असम, उड़ीसा, पं. बंगाल, बिहार आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने की आशंका होगी। कहीं अग्निकाण्ड या प्राकृतिक प्रकोप होने का भय रहेगा। अत्यधिक महँगाई के कारण जनसाधारण में आक्रोश बढ़ेगा—यदा **सौरिभौमे सुरराज मन्त्री भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा। अयोध्या मध्यप्रदेशे लंकापुरे च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।** **आकाश लक्षण**—पूर्वार्द्ध भाग में तीव्र वायु वेग के साथ खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

शकुन अष्टमी के दिन सूर्य श्रवण नक्षत्र कालीन बूंदाबांदी हो तो आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७०, माघ शुक्ल पक्ष शाकः १९३५ — सन् 2014 ई. (ता. 31 जन. से 14 फरवरी तक) हिजरी सन् 1435

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रातः शुक्र पूर्व में, मंग.–शनि याम्योत्तर में दिखाई देंगे। सायं गु. पूर्वकपाल में तथा बु. पश्चिम में दिखेगा। ता. 8 से बु. पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	माघ शाके	रवि मं.	जनवरी	माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.२८	१	शुक्र	३९	५५	श्रव	१४	४५	व्य	३७	३	किं	१४	३८	११	२९	31	१८	कुं. ४१/००	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **पंचक प्रारम्भ ४१/००**, शुक्र मार्गी ४७/२०	९	१७	०२	४७	७	२४	१७	५९
२६.३०	२	शनि	३१	१५	धनि	७	३०	वरी	२६	४८	बा	५	३५	१२	३०	फर	१९	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, बुध शत. में १८/३३, फरवरी सन् 2014 ई. प्रारम्भ	९	१८	०३	४१	७	२४	१८	००
२६.३३	३	रवि	२३	४८	शत पू.भा.	१ ५६	१८ ३०	परि	१७	३०	गर	२३	४८	१३	रवि	2	२०	मी. ४२/३३	भ. ५०/५४ से, गौरी तृतीय व्रत, **श्रीगणेश तिल चतुर्थी**, वरद्–चौथ **A**	९	१९	०४	३६	७	२४	१८	०१
२६.३६	४	चंद्र	१८	००	उ.भा	५३	३८	शिव	९	३५	वि	१८	००	१४	२	3	२१	मीन	भ. २३/४८ तक,	९	२०	०५	२८	७	२३	१८	०१
२६.३८	५	मंग	१४	५	रेव	५२	४३	सिद्ध साध्य	३ ५८	८ ३०	बा	१४	५	१५	३	4	२२	मे. ५२/४३	**वसन्त पंचमी, पंचक समाप्त ५२/४३, मंगल तुला में १७/३५,**	९	२१	०६	२०	७	२३	१८	०२
२६.४३	६	बुध	१२	२३	अश्वि	५३	५८	शुभ	५५	१८	तै	१२	२३	१६	४	5	२३	मेष	दारिद्रयहर षष्ठी व्रत	९	२२	०७	०८	७	२२	१८	०३
२६.४८	७	गुरु	१२	५०	भर	५७	१३	शुक्ल	५३	४८	व	१२	५०	१७	५	6	२४	मेष	भ. १२/५० से ४४/०४ तक, सूर्य धनि. में ११/५५, रथ-आरोग्य **(B)**	९	२३	०७	५६	७	२१	१८	०४
२६.५३	८	शुक्र	१५	१८	कृति	६०	००	ब्रह्म	५३	४३	बव	१५	१८	१८	६	7	२५	वृ. १३/२०	भीष्माष्टमी	९	२४	०८	४१	७	२०	१८	०५
२६.५८	९	शनि	१९	२३	कृति	२	१३	ऐंद्र	५४	४३	कौ	१९	२३	१९	७	8	२६	वृष	स. सि. यो. 8/12 से	९	२५	०९	२५	७	१९	१८	०६
२७.०३	१०	रवि	२४	४५	रोहि	८	२८	वैधृ	५६	२५	गर	२४	४५	२०	८	9	२७	मि. ४१/५५	भ. ५७/४८ से, वक्री बुध पश्चिम में अस्त ३९/५३	९	२६	१०	०६	७	१८	१८	०७
२७.०५	११	चंद्र	३०	५०	मृग	१५	३३	विष्क	५८	३०	वि	३०	५०	२१	९	10	२८	मिथुन	भ. ३०/५० तक, **जया एकादशी व्रत**, स. सि. यो. 13/31 तक	९	२७	१०	५०	७	१८	१८	०८
२७.०७	१२	मंग	३७	१८	आर्द्रा	२३	००	प्रीति	६०	००	बव	४	४	२२	१०	11	२९	मिथुन	भीष्म द्वादशी, तिल द्वादशी	९	२८	११	२९	७	१७	१८	०८
२७.१३	१३	बुध	४३	४३	पुर्न	३०	३३	प्रीति	०	४८	कौ	१०	३१	२३	११	12	फा	क. १२/४०	सूर्य कुम्भ में ४७/२०, **फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **C**	९	२९	११	०७	७	१६	१८	०९
२७.१८	१४	गुरु	४९	४८	पुष्य	३७	४८	आयु	२	५५	गर	१६	४६	२४	१२	13	२	कर्क	भ. ४९/४८ से, **गुरु पुष्य योग**	१०	००	१२	४४	७	१५	१८	१०
२७.२३	१५	शुक्र	५५	२३	अश्ले	४४	३८	सौभा	४	४८	वि	२२	३६	२५	१३	14	३	सिं. ४४/३८	भ. २२/३६ तक, **माघ पूर्णिमा**, माघस्नान समाप्त, **श्रीगुरु रविदास जयंती D**	१०	०१	१३	२०	७	१४	१८	११

(A) कुन्द चतुर्थी, रबि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ **(B)** सप्तमी, पुत्र सप्तमी व्रत, अचला-भानु सप्तमी, **बुध वक्री ४९/३८** (27/12 घं.मिं.)
(C) सं. अगले दिन प्रातः 8/37 तक, प्रदोष व्रत, वक्री बुध धनि. (४) में १७/१८, मेला जैसलमेर (राज.) प्रारम्भ **(D)** श्रीसत्यनारायण व्रत

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	६	१०	२	८	६	६	०
२४	२६	०	९	१७	२०	२८	८	८
४	१७	३८	१६	३६	१३	४६	१५	१५
२	२०	३२	४७	१८	४१	५७	५	५
60 47	740 34	13 45	6 33	5 7	14 57	2 20	3 10	3 10
धनि १	श्र. ४	चित्रा ३	शत १	आर्द्रा ४	पुष्य ३	विशा ३	स्वा १	अश्वि ३
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

११ बु. · ९ शु. · १२ · १० सू. · ८ · १ चं. के. · ७ मं. श. रा. · २ · ४ · ६ · ३ गु. · ५

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	६	१०	२	८	६	६	०
१	२०	२	५	१७	२२	२९	७	७
८	१२	३	४	४	३९	१	५२	५२
५८	५८	५७	६	१२	६	२०	४९	४९
60 36	719 51	10 2	65 29	3 52	27 57	1 40	3 11	3 11
धनि ३	पू.फा. २	चित्रा ३	धनि ४	आर्द्रा ४	पुष्य ३	विशा ३	स्वा १	अश्वि ३
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१२ · १० · १ के. · ११ सू. बु. · ९ शु. · २ · ८ · ३ गु. · ५ · ७ मं. श. रा. · ४ चं. · ६

माघ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **तिल चतुर्थी को श्रीगणेश जी** का व्रत एवं पूजन, तिल, फल व गुड़ लड्डुओं सहित करने का विधान है। **वसन्त पंचमी** (4 फर.) को भगवान् श्री विष्णु व सरस्वती की धूप, दीप, नैवेद्य व गुलाल के साथ पूजा करनी चाहिए तथा पीले एवं मीठे चावलों का भोग लगाने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** (6 फर.) को सूर्य भगवान् को मन्त्रपूर्वक अर्घ्य प्रदान तथा लाल पुष्पों सहित पूजन एवं सूर्याष्टक स्तोत्र पाठ करने से स्वास्थ्य, आरोग्यता एवं पुत्र प्राप्ति होती है। **जया एकादशी** (10 फर.) का विधिवत् व्रत रखने से पिशाच, प्रेतादि दोषों से छुटकारा मिलता है। **फाल्गुन संक्रान्ति** (12 फर.) बुधवार को पुष्य नक्षत्र कालीन रात्रि 2 बजकर 12 मिनट पर वृश्चिक लग्न में दाखिल होगी। वारानुसार **मंदाकिनी** नाम की यह संक्रान्ति राजनेताओं को लाभकारी तथा नक्षत्रानुसार ध्वांक्षी नाम की वैश्यों अर्थात् व्यापारियों के लिए लाभकारी होगी। **राशिफल**–मिथुन, कर्क, सिंह, धनु व कुम्भ राशि के जातकों को इस संक्रान्ति का फल लाभदायक होगा। **लोक भविष्य**–पक्षारम्भ में 4 फर. से मंगल तुला राशि में प्रविष्ट होकर शनि के साथ मेल करेगा। जिससे देश में आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में जबरदस्त तेज़ी होने से लोगों में भय एवं आक्रोश बढ़ेगा। गेहूँ, धान्य, सोना, चाँदी, चीनी, दूध, पशुचारा, चौपायों में तेजी होगी। कहीं दुर्भिक्ष, राज्यभङ्ग (सत्ता परिवर्तन), हिंसक घटनाएँ घटित होंगी और कहीं अग्निकाण्ड एवं जातीय दंगों के कारण जन-धनादि की हानि होगी। **भौम सौरीश्चैक राशौद्वयो स्थिते यदि। दुर्भिक्षं राज्यभङ्गं च मेदिन्यामग्नितो भयम्।। आकाश लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्ध भाग में खण्ड वर्षा एवं कहीं बूंदा-बांदी के योग हैं।

शकुन–माघ शुक्ल पंचमी (वासन्त) को रेवती नक्षत्र कालीन वर्षा या बूंदा-बांदी हो, तो यह आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवद् २०७०, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाकः १९३५

सन् 2014 ई. (ता. 15 फर. से 1 मार्च तक) हिजरी सन् 1435

सूर्य उत्तरायण, शिशिर–वसन्त ऋतुः, दक्षिण गोल

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, 22 फर. से बु. भी पूर्व में दिखेगा। श. याम्योत्तर में तथा मंग. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं गु. पूर्वकपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ शाकः	[illegible]	फरवरी	फाल्गुन	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२७.२८	१	शनि	६०	००	मघा	५०	५५	शोभ	६	१५	बा	२७	५४	२६	१४	15	४	सिंह	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूलादि विचार	१०	०२	१३	५३	७	१३	१८	१२
२७.३३	१	रवि	०	२५	पू.फा	५६	३३	अति	७	१८	कौ	०	२५	२७	१५	16	५	सिंह		१०	०३	१४	२६	७	१२	१८	१३
२७.३८	२	चंद्र	४	४०	उ.फा	६०	००	सुक	७	४५	गर	४	४०	२८	१६	17	६	कं. १२/५०	भ. ३६/२४ से,	१०	०४	१४	५६	७	११	१८	१४
२७.४३	३	मंग	८	८	उ.फा	१	२५	धृति	७	३५	वि	८	८	२९	१७	18	७	कन्या	भ. ८/०८ तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14)(A)	१०	०५	१५	२६	७	१०	१८	१५
२७.४८	४	बुध	१०	३५	हस्त	५	२०	शूल	६	४३	बा	१०	३५	३०	१८	19	८	तु. ३६/५३	सूर्य शत. में २३/५५, स. सि. यो.	१०	०६	१५	५३	७	०९	१८	१६
२७.५३	५	गुरु	११	५५	चित्रा	८	१०	गंड	४	५८	तै	११	५५	फा	१९	20	९	तुला	शक फाल्गुन प्रारम्भ	१०	०७	१५	२१	७	०८	१८	१७
२७.५५	६	शुक्र	११	५५	स्वा	९	४५	वृद्धि ध्रुव	२ ५८	१३ १८	व	११	५५	२	२०	21	१०	वृ. ५४/५८	भ. ११/५५ से ४१/१२ तक, वक्री बुध पूर्व में उदय ४६/४८, (B)	१०	०८	१६	४६	७	०७	१८	१७
२८.००	७	शनि	१०	२८	विशा	९	५५	व्या.	५३	१३	बव	१०	२८	३	२१	22	११	वृश्चिक	जानकी व्रत (मतान्तरे)	१०	०९	१७	०९	७	०६	१८	१८
२८.०५	८	रवि	७	२८	अनु	८	३३	हर्ष	४६	५५	कौ	७	२८	४	२२	23	१२	वृश्चिक	गंडमूलादि (10/30 घं. बजे से)	१०	१०	१७	३१	७	०५	१८	१९
२८.०८	९	चंद्र	२	५५	ज्ये.	५	४३	वज्र	३९	२८	गर	२	५५	५	२३	24	१३	ध. ५/४३	भ. २९/५८ से ५६/५८ तक, स्वामी दयानन्द जयन्ती, गंडमूलादि	१०	११	१७	५३	७	०४	१८	१९
००.००	१०	चंद्र	५६	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	दशमी तिथि क्षय ०० ००	००	००	०	०	०	०	०	०
२८.१३	११	मंग	४९	४८	मूल पू.षा.	१ ५६	२८ ००	सिद्धि	३०	५८	बव	२३	२३	६	२४	25	१४	धनु	विजया एकादशी व्रत स्मार्त	१०	१२	१८	१३	७	०३	१८	२०
२८.१८	१२	बुध	४१	४८	उ.षा	४९	४५	व्य.	२१	३८	कौ	१५	४८	७	२५	26	१५	म. ९/३३	**विजया एकादशी व्रत वैष्णव, शुक्र मकर में ११/५५**	१०	१३	१८	३२	७	०२	१८	२१
२८.२३	१३	गुरु	३३	१५	श्रव	४३	५	वरी	११	४५	गर	७	३२	८	२६	27	१६	मकर	भ. ३३/१५ से ५८/५५ तक, प्रदोष व्रत, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**	१०	१४	१८	४९	७	०१	१८	२२
२८.२७	१४	शुक्र	२४	३५	धनि	३६	२०	परि शिव	१ ५१	४० ४०	श	२४	३५	९	२७	28	१७	कुं. ९/४३	पंचक प्रारम्भ ९/४३ (10/53 घं.मिं.), बुध मार्गी ३१/२५ (19/34)	१०	१५	१९	०५	७	००	१८	२३
२८.३३	३०	शनि	१६	२०	शत	३०	८	सिद्ध	४२	१०	ना	१६	२०	१०	२८	मा.	१८	कुम्भ	**फाल्गुन अमावस, मंगल वक्री ३७/१५, मार्च सन् 2014 ई. (C)**	१०	१६	१९	१६	६	५८	१८	२३

(A) वक्री बुध मकर में २६/२३, सूर्य सायन मीन में ४०/०३, वसन्त ऋतु प्रारम्भ **(B)** वक्री गुरु आर्द्रा (३) में २०/१३, शुक्र उ.षा. में १७/१५, **(C)** प्रारम्भ शनिवारी अमावस

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	६	९	२	८	६	६	०
१०	१३	३	२५	१६	१७	२९	७	७
१३	४७	१२	५६	३६	४३	१२	२४	२४
३३	३८	२५	१२	५	४५	३९	१२	१२
60 24	836 23	4 25	36 23	2 10	40 25	0 45	3 11	3 11
शत २	अनु ४	चित्रा ३	धनि १	आर्द्रा ३	उषा १	विशा ३	स्वा १	अश्लि ३
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१२ — ११ सू. — १० बु. — १ के. — ९ शु. — २ — ८ चं. — ३ गु. — ७ मं. श. रा. — ४ — ५ — ६

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 1 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	६	९	२	९	६	६	०
१६	११	३	२४	१६	२	२९	७	७
१५	३७	२८	६	२६	२	१५	५	५
३६	५४	२०	४८	०	५	३४	७	७
60 14	888 44	0 8	5 54	0 59	46 28	0 7	3 11	3 11
शत ३	मूल २	चित्रा ४	धनि १	आर्द्रा ३	उषा २	विशा ३	स्वा. १	अश्लि ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

१२ — ११ सू. चं. — १० शु. बु. — १ के. — ९ — २ — ८ — ३ गु. — ७ मं. श. रा. — ४ — ५ — ६

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में ता. 18 फर. मंगलवासरी श्री गणेश चतुर्थी होने से यह अङ्गारकी चतुर्थी कहलाएगी। शास्त्र अनुसार अंगारकी श्री गणेश चौथ का विधिवत् व्रत रखने से विभिन्न प्रकार के मानसिक, शारीरिक व आर्थिक कष्टों का निवारण होता है। इस पक्ष में **विजया एकादशी** (26 फर.) के व्रत, पूजन व यथाशक्ति दान का भी विशेष महत्त्व है। ता. 27 फर. गुरूवार को श्री महाशिवरात्रि का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेघ यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों सहित स्नानकर, व्रत धारण कर रात्रि में **भगवान् शिव-शंकर** की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिवकथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण को भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। **लोक भविष्य**—चांद्र फाल्गुन मास में पाँच शनिवार और पाँच रविवार समाविष्ट होंगे। जिससे दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं (जैसे पैट्रोल, डीज़ल, तैल, वनस्पति, घी, अनाज, सर्व प्रकार की दालें, दूध आदि) के मूल्यों में आशातीत तेजी के कारण लोगों में आक्रोश, बेचैनी व गहन असंतोष फैलेगा। लोगों में क्लिष्ट रोग व कष्टों में वृद्धि होगी। राजनीतिक वातावरण अनिश्चित होगा। कहीं सत्ता परिवर्तन, टकराव, अग्निकाण्ड व राजनीतिक उलट-फेर होने के संकेत हैं। **शनिवारा यदा पंचजायते रविपंचकम्। महर्घ जायते रोग शोककुला पृथिवी।।** पक्ष में **मंगल-शनि** का योग अभी बना हुआ है, जिससे सत्ता परिवर्तन एवं प्रधान प्रशासक के लिए अशुभ संकेत हैं। **आकाश लक्षण**—पक्ष के उत्तरार्द्ध में उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में धूलभरी आँधियाँ और खण्डवर्षा के योग हैं।

शकुन—तृतीया तिथि को बूंदाबांदी हो तो आगामी प्राकृतिक विपदा से कृषि या खड़ी फसलों की क्षति होने के संकेत हैं।

सन् 2014 ई. (ता. 2 मार्च से 16 मार्च तक) हिजरी सन् 1435 भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७०, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाकः १९३५ | सन् 2014 ई. (ता. 2 मार्च से 16 मार्च तक) हिजरी सन् 1435

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	फा. शाके	मु. रबि	मार्च	फा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन—प्रातः बुध पूर्व में, शुक्र पूर्वकपाल में, श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में, मंग. पश्चिमकपाल में दिखेगा। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२८.३८	१	रवि	८	४८	पू.भा	२४	४३	साध्य	३३	३०	बव	८	४८	११	२९	2	१९	मी. १०/५८	चन्द्रदर्शन, शनि वक्री ३५/०३ (20/58 घं. मिं.)	१०	१७	११	०७	६	५७	१८	२४
२८.४३	२	चंद्र	२	२८	उ.भा.	२०	१३	शुभ	२५	५५	कौ	२	२८	१२	जम	3	२०	मीन	श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	१०	१८	११	३८	६	५६	१८	२४
००.००	३	चंद्र	५७	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	तृतीया तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२८.४५	४	मंग	५४	४५	रेव	१८	१३	शुक्ल	१९	४३	व	२६	१३	१३	२	4	२१	मे. १८/१३	भ. २६/१३ से ५४/४५ तक, **पंचक समाप्त १८/१३**, सूर्य पू.भा. में ४०/०५	१०	१९	११	४७	६	५५	१८	२५
२८.५०	५	बुध	५३	५३	अश्वि	१७	४३	ब्रह्म	१५	५	बव	२४	१९	१४	३	5	२२	मेषे	याज्ञवलक्य जयन्ती, गण्डमूलादि	१०	२०	११	५४	६	५४	१८	२६
२८.५८	६	गुरु	५५	३	भर	१९	१३	ऐंद्र	१२	३	कौ	२४	२८	१५	४	6	२३	वृ. ३४/५३	**गुरु मार्गी २३/१३**	१०	२१	११	५६	६	५३	१८	२७
२९.००	७	शुक्र	५८	५	कृति	२२	३८	वैधृ	१०	३५	गर	२६	३४	१६	५	7	२४	वृष	भ. ५८/०५ से, प्रारम्भ	१०	२२	११	५८	६	५२	१८	२७
२९.०५	८	शनि	६०	००	रोहि	२७	४८	विष्कं	१०	३३	वि	३०	२७	१७	६	8	२५	वृष	भ. ३०/२७ तक, **होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा अष्टमी, स. सि. यो.	१०	२३	११	५८	६	५०	१८	२७
२९.१०	८	रवि	२	४८	मृग	३४	१३	प्रीति	११	३५	बव	२	४८	१८	७	9	२६	मि. ०/५५	राहु चित्रा (४) केतु अश्वि (२) में २/५८,	१०	२४	११	५६	६	४९	१८	२८
२९.१३	९	चंद्र	८	३०	आर्द्रा	४१	२८	आयु	१३	२५	कौ	८	३०	१९	८	10	२७	मिथुन	शुक्र श्रवण में ३२/०३,	१०	२५	११	५२	६	४८	१८	२९
२९.१८	१०	मंग	१४	४५	पुर्न	४८	५८	सौभा	१५	३८	गर	१४	४५	२०	९	11	२८	क. ३२/०५	भ. ४७/५७ से,	१०	२६	११	४६	६	४७	१८	३०
२९.२३	११	बुध	२१	८	पुष्य	५६	२०	शोभ	१७	५५	वि	२१	८	२१	१०	12	२९	कर्क	भ. २१/०८ तक, **बुध कुम्भ में ७/००, आमलकी एकादशी व्रत A**	१०	२७	११	३५	६	४५	१८	३०
२९.२८	१२	गुरु	२७	३	अश्ले	६०	००	अति	१९	५३	बा	२७	३	२२	११	13	३०	कर्क	गण्डमूलादि विचार	१०	२८	११	२५	६	४४	१८	३१
२९.३०	१३	शुक्र	३२	४५	अश्ले	३	१०	सुक	२१	२३	तै	३२	४५	२३	१२	14	चैत्र	सिं. ३/१०	सूर्य मीन में ४०/५८, **चैत्र संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. मध्याह्न **B**	१०	२९	११	१२	६	४३	१८	३१
२९.३५	१४	शनि	३६	३८	मघा	९	१५	धृति	२२	१५	गर	४	४२	२४	१३	15	२	सिंह	भ. ३६/३८, महेश्वर व्रत, गं.मू. 10/23 घं. मिं. तक	११	००	१८	५५	६	४१	१८	३१
२९.४०	१५	रवि	३९	५५	पू.फा	१४	२०	शूल	२२	२०	वि	८	१७	२५	१४	16	३	क. ३०/२५	भ. ८/१७ तक, **फाल्गुन पूर्णिमा**, होलिका दहन (भद्रा बाद), **C**	११	०१	१८	३९	६	४०	१८	३२

A गोविन्द द्वादशी **B** बाद, प्रदोष व्रत **C** **होली पर्व**, होलाष्टक समाप्त, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	६	९	२	९	६	६	०
२३	१६	३	२६	१६	७	२९	६	६
१६	५९	१३	४३	२३	४४	१४	४२	४२
३८	५१	३१	४६	१७	२०	१५	५१	५१
61 1	729 49	5 10	41 17	0 24	51 50	0 36	3 11	3 11
पूभा १	रोहि ३	चित्रा ३	धनि २	आर्द्रा ३	श्रव ४	विशा ३	स्वा १	अश्वि ३
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१२; ११ सू.; शु. १० बु.; ९; १ के.; २ चं.; ८; ३ गु.; ५; ७ मं. श. रा.; ४; ६

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	४	६	१०	२	९	६	६	०
१	२३	२	३	१६	१४	२९	६	६
१५	६	१०	४७	३१	५६	६	१७	१७
४४	५६	४४	३४	५८	१६	४१	२४	२४
59 43	745 49	11 16	65 39	1 57	56 30	1 23	3 11	3 11
पूभा ४	पुष्य ३	चित्रा ३	धनि ४	आर्द्रा ३	श्रव २	विशा ३	चित्रा ४	अश्वि २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१ के.; १२ सू.; ११ बु.; १० शु.; २; ३ गु.; ९; ४; ६; ८; ५ चं.; ७ मं. श. रा.

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल—

फाल्गुन **शुक्लाष्टमी** (8 मार्च), शनिवार से **होलाष्टक** प्रारम्भ होंगे। इनमें शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है। **आमलकी एकादशी** (12 मार्च) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति पूजा करनी चाहिए तथा पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान करना शुभ होता है। चैत्र संक्रान्ति 14 मार्च शुक्रवार को होगी। फाल्गुन पूर्णिमा (16 मार्च) को होली का शुभ उल्लासमय पर्व होगा। प्रातः 9/59 बाद भद्रा रहित काल में **होलिका दहन** होगा।

लोक भविष्य—संक्रान्ति कुण्डली के लग्न में ही शनि, मंगल राहु-ग्रहों का संचार हो रहा है। फलस्वरूप सर्व प्रकार के अनाज, गेहूँ, धान्य, चने, चावल, दालें आदि महँगे होंगे। **चैत्र संक्रान्ति** (14 मार्च) शुक्रवार को मघा नक्षत्र कालीन ३० मुहूर्त्ति रात्रि 11 बजकर 06 मिनट पर तुला लग्न में प्रविष्ट होगी। वारानुसार मिश्र नामक यह संक्रान्ति चौपायों को लाभकारी तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक शूद्रों को अर्थात् नीचजनों को लाभकारी होगी। राजनैतिक परिस्थितियाँ अस्थिर होंगी। सत्तारूढ़ व विपक्षी दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी। बढ़ती महँगाई के विरूद्ध उपद्रव, जनांदोलन एवं तोड़-फोड़ की घटनाएँ बढ़ेंगी। सुख में कमी हो, देश के कुछ भागों में युद्ध जैसे हालात बनेंगे। कहीं दुर्भिक्ष एवं कहीं सीमावर्ती क्षेत्रों में युद्ध का आतंक छाया रहे—**"शनि वक्रे दुर्भिक्षं च राज्ञां युद्धं परस्परम्। रूण्ड मुण्ड च मेदिनीम्।।"** **आकाश लक्षण**—भारत के उत्तर- पश्चिम क्षेत्रों में तेज हवाएँ (आँधियाँ) के साथ तीव्र बौछारें पड़ने के योग हैं। **शकुन**—फा.शु. अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र कालीन वर्षा हो, तो आगामी अच्छी फसल एवं सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७०, चैत्र कृष्ण पक्ष शाकः १९३५-३६

सन् 2014 ई. (ता. 17 मार्च से 30 मार्च तक) हिजरी सन् 1435

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः — भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः बुध पूर्व में, शुक्र पूर्वकपाल में, मंग. पश्चिमकपाल में तथा शनि भी पश्चिमकपाल के पास होगा। सायं गुरु याम्योत्तरवृत्त में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	फा. गते	जमा. मु.	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२९.४५	१	चंद्र	४२	१३	उ.फा	१८	२५	गंड	२१	४०	बा	११	४	२६	१५	17	४	कन्या	वसन्तोत्सव, होला-मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब)	११	०२	१८	१९	६	३९	१८	३३
२९.४८	२	मंग	४३	२८	हस्त	२१	३३	वृद्धि	२०	८	तै	१२	५१	२७	१६	18	५	तु. ५२/४०	सूर्य उ.भा. में २/००, बुध शत. में ३०/२३, सन्त तुकाराम जयन्ती	११	०३	१७	५६	६	३८	१८	३३
२९.५३	३	बुध	४३	३८	चित्रा	२३	३८	ध्रुव	१७	५०	व	१३	३३	२८	१७	19	६	तुला	भ. १३/३३ से ४३/२८ तक, गुरु आर्द्रा (४) में ३६/२०,	११	०४	१७	३३	६	३७	१८	३४
२९.५७	४	गुरु	४२	४८	स्वा	२४	४३	व्या.	१४	४३	बव	१३	१३	२८	१८	20	७	तुला	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14), श्रीभगवान्नारायण जयन्ती (A)	११	०५	१७	०६	६	३६	१८	३४
३०.००	५	शुक्र	४०	५५	विशा	२४	४८	हर्ष	१०	५०	कौ	११	५२	३०	१९	21	८	वृ. ९/५३	श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ	११	०६	१६	४२	६	३५	१८	३५
३०.०५	६	शनि	३८	३	अनु	२३	५३	वज्र	६	५	गर	९	२९	चैत्र	२०	22	९	वृश्चिक	भ. ३८/०३ से, शक चैत्र व सन् 1936 प्रारम्भ, एकनाथ षष्ठी	११	०७	१६	२५	६	३४	१८	३६
३०.१०	७	रवि	३४	१०	ज्ये.	२२	००	सिद्धि व्य.	०/५४	३८/१५	वि	६	७	२	२१	23	१०	ध. २२/००	भ. ६/२० तक, शीतला सप्तमी	११	०८	१५	४२	६	३२	१८	३७
३०.१७	८	चंद्र	२९	२०	मूल	१९	८	वरी	४७	१३	बा	१	४५	३	२२	24	११	धनु	शीतलाष्टमी व्रत, शुक्र धनि. में ३६/२०,	११	०९	१५	१०	६	३१	१८	३८
३०.२५	९	मंग	२३	४३	पू.षा	१५	२८	परि	३९	३५	गर	२३	४३	४	२३	25	१२	म. २९/२५	भ. ५०/३२ से, **वक्री मंगल कन्या में ८/१८,**	११	१०	१४	३६	६	२९	१८	३९
३०.२७	१०	बुध	१७	२०	उ.षा	११	३	शिव	३१	२५	वि	१७	२०	५	२४	26	१३	मकर	भ. १७/२० तक,	११	११	१४	०१	६	२८	१८	३९
३०.३२	११	गुरु	१०	३३	श्रव	६	१०	सिद्ध	२२	५५	बा	१०	३३	६	२५	27	१४	कुं. ३३/३८	पंचक प्रारम्भ ३३/३८, **पापमोचनी एकादशी व्रत**	११	१२	१३	२४	६	२७	१८	४०
३०.३५	१२	शुक्र	३	३८	धनि शत	१/५५	५/००	साध्य	१४	२३	तै	३	३८	७	२६	28	१५	कुम्भ	भ. ५६/४३ से, प्रदोष व्रत, बुध पू.भा. में ३४/२०, वारुणी योग (B)	११	१३	१२	४६	६	२६	१८	४०
००.००	१३	शुक्र	५६	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ००	००	०	०	०	०	०	०	०
३०.४१	१४	शनि	५०	१८	पू.भा	५१	३५	शुभ शुक्ल	५/५७	५८/५३	वि	२३	३१	८	२७	29	१६	मी. ३७/४०	भ. २३/३१ तक, मासशिवरात्रि, मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	११	१४	१२	०३	६	२४	१८	४१
३०.४५	३०	रवि	४४	४०	उ.भा	४७	५०	ब्रह्म	५०	३५	चतु	१७	२९	९	२८	30	१७	मीन	**चैत्र अमावस्या** स्नानदानादि, देवपितृ कार्येषु, वि. **संवत् २०७० पूर्ण C**	११	१५	११	२०	६	२३	१८	४१

A सूर्य सायन मेष में ३९/३८, उत्तर गोल प्रारम्भ, महाविषुव दिवस **(B)** (प्रातः 7/52 से 29 मार्च की प्रातः 4-52 तक) **C** स. सि. यो.

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	६	१०	२	९	६	६	०
९	८	०	१३	१६	२२	२८	५	५
१२	१५	२०	३१	५२	४१	५२	५१	५१
४१	०	६	१४	४७	६	५६	५७	५७
59 30	849 4	16 57	81 21	3 25	59 59	2 9	3 11	3 11
उ.भा २	मूल ३	चित्रा ३	शत ३	आर्द्रा ४	श्रव ४	विशा ३	चित्रा ४	अश्वि २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ के., ११ बु., १२ सू., १० शु., २, ३ गु., ९ चं., ४, ६, ८, ५, ७ मं. श. रा.

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	५	१०	२	९	६	६	०
१५	४	२८	२२	१७	२८	२८	५	५
९	४८	२९	३	१५	४६	३८	३२	३२
१०	४७	५४	२३	५९	१४	४७	५१	५१
59 19	851 49	20 51	90 44	4 29	61 59	2 40	3 11	3 11
उ.भा ४	उ.भा १	चित्रा २	पू.भा १	आर्द्रा ४	धनि २	विशा ३	चित्रा ४	अश्वि २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30

१ के., ११ बु., १२ सू. चं., १० शु., २, ३ गु., ९, ४, ६ मं., ८, ५, ७ श. रा.

चैत्र कृष्ण पक्षफल—

प्रतिपदा (17 मार्च) को परम्परानुसार कुछ प्रदेशों में गतरात्रि होलिका दहन के पश्चात् प्रतिपदा को होली पर्व मनाया जाएगा। इसी दिन होला-मेला तथा धुलण्डी का उत्सव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। कई स्थलों पर ध्वजारोहण भी किया जाता है। ता. 20 मार्च को **श्री गणेश चतुर्थी** का व्रत विधिपूर्वक रखने से अनिष्ट ग्रहों सम्बन्धी कष्टों से निवृत्ति होती है। इसी पक्ष में **पापमोचनी एकादशी** 27 मार्च का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 28 मार्च को **वारूणी पर्व** (स्नान, दान जपादि हेतु विशेष मुहूर्त्त) प्रातः 7/52 से लेकर 29 मार्च की प्रातः 4 बजकर 52 मिनट तक रहेगा। वारूणी योग में स्नान-दान जपादि का महत्त्व ग्रहण तुल्य विशेष होता है। ता. 30 मार्च, रविवार को चैत्र अमावस्या स्नानदान देव-पितृ आदि तर्पण के लिए प्रशस्त होगी। इसी दिन विक्रमी संवत् 2070 पूर्ण होगा। **लोक भविष्य—**इस पक्ष के आरम्भ में तुला राशि पर मंगल, शनि व राहु-तीनों क्रूर ग्रह वक्री होकर संचार कर रहे हैं जिससे उपद्रव, जनांदोलन, तोड़फोड़ एवं अग्निकाण्ड की घटनाएँ घटित होंगी। किसी राज्य में छत्रभंग होने के भी संकेत हैं। पूर्वी क्षेत्रों में विस्फोट एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं। ता. 25 मार्च मंगलवार से मंगल वक्री अवस्था में कन्या राशि में प्रविष्ट होगा। पाक, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों में अप्रत्याशित रूप से विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। भारत व पड़ोसी देशों में भी महँगाई के विरूद्ध उपद्रव एवं जनांदोलन तेज होंगे। प्रजा में विक्षोभ, क्रोध एवं गहन असंतोष फैलेगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में तेज हवाओं के साथ बौछारें (खण्ड वर्षा) होने के योग हैं। शकुन—प्रतिपदा के दिन बूंदा-बांदी हो, तो आगे अच्छी फसल होने के संकेत हैं। इति शुभम्।।

वि. संवत 2069-70 अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

वि. संवत् 2069-70, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः
चैत्र कृष्ण पक्ष (सं. 2069)	1	६	चंद्र	25	23	ज्ये	25	3	व्य	22	40	ध. 25/3	भ. 25/23 से, बुध पू.भा. में 15/01, अप्रैल, सं. 2013 ई. प्रारम्भ, एकनाथ षष्ठी
	2	७	मंग	23	10	मूल	23	34	वरी	19	42	धनु	भ. 12/17 तक,
	3	८	बुध	21	7	पू.षा.	22	16	परि	16	53	म. 27/58	शीतलाष्टमी व्रत
	4	९	गुरु	19	16	उ.षा.	21	10	शिव	14	13	मकर	
	5	१०	शुक्र	17	41	श्रव	20	19	सिद्ध	11	46	मकर	भ. 6/29 से 17/41 तक,
	6	११	शनि	16	23	धनि	19	46	साध्य	9	31	कुं. 8/00	**पंचक प्रारम्भ 8/00**, पापमोचनी एकादशी व्रत
	7	१२	रवि	15	25	शत	19	33	शुभ / शुक्ल	7 / 29	32 / 52	कुम्भ	प्रदोष व्रत, वारुणी योग 15/25 से 19/33 तक,
	8	१३	चंद्र	14	51	पू.भा.	19	44	ब्रह्म	28	31	मी. 13/39	भ. 14/51 से 26/47 तक, मास शिवरात्रि व्रत
	9	१४	मंग	14	43	उ.भा.	20	22	ऐंद्र	27	33	मीन	**बुध मीन में 25/53**, मेला पृथूदक, पिहोवातीर्थ (हरियाणा)
	10	३०	बुध	15	5	रेव	21	29	वैधृ	26	59	मे. 21/29	चैत्र अमावस, शुक्र मेष में 17/31, विक्रमी संवत् 2069 पूर्ण **(A)**
चैत्र शुक्ल पक्ष (सं. 2070)	11	१	गुरु	15	59	अश्वि	23	7	विष्क	26	49	मेष	पराभव नाम वि. संवत् 2070 प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) **नवरात्रे प्रारम्भ (B)**
	12	२	शुक्र	17	24	भर	25	15	प्रीति	27	3	मेष	**मंगल अश्वि (1) मेष में 19/36**, बुध उ.भा. में 12/14, जमादि-**(C)**
	13	३	शनि	19	18	कृति	27	49	आयु	27	38	वृ. 7/51	सूर्य अश्वि (1) मेष में 25/28, **वैशाख संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **(D)**
	14	४	रवि	21	35	रोहि	पूरा	दिन	सौभा	28	29	वृष	भ. 8/27 से 21/35 तक,
	15	५	चंद्र	24	6	रोहि	6	43	शोभ	29	28	मि. 20/14	श्री (लक्ष्मी) पंचमी
	16	६	मंग	26	38	मृग	9	46	अति	पूरा	दिन	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत
	17	७	बुध	28	59	आर्द्रा	12	47	अति	6	26	मिथुन	भ. 28/59 से प्रा.
	18	८	गुरु	पूरा	दिन	पुर्न	15	31	सुक	7	14	क. 8/52	भ. 17/57 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी** (देखें पृ. 80), भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी
	19	८	शुक्र	6	55	पुष्य	17	47	धृति	7	43	कर्क	**श्रीरामनवमी, नवरात्रे समाप्त**, सूर्य सायन वृष में 27/33, ग्रीष्मऋतु प्रारंभ
	20	९	शनि	8	15	अश्ले	19	26	शूल	7	44	सिं. 19/26	बुध रेव. में 28/56, अगस्त्य अस्त, नवरात्रे पारणा
	21	१०	रवि	8	52	मघा	20	20	गंड	7	12	सिंह	भ. 20/48 से, शक वैशाख प्रारम्भ, शुक्र भर. में 12/09
	22	११	चंद्र	8	43	पू.फा.	20	30	वृद्धि / ध्रुव	6 / 28	5 / 21	कं. 26/26	भ. 8/43 तक, **कामदा एकादशी व्रत**, शुक्र पश्चिम में उदय 13/50
	23	१२	मंग	7	49	उ.फा.	19	58	व्या.	26	5	कन्या	भौम प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी (देखें पृष्ठ 80) **शुक्र उदय 22 अप्रैल**
	24	१३	बुध	6	14	हस्त	18	47	हर्ष	23	18	तु. 30/00	भ. 28/04 से, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)
	०	१४	बुध	28	4	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००
	25	१५	गुरु	25	27	चित्रा	17	6	वज्र	20	9	तुला	भ. 14/46 तक, चैत्र पूर्णिमा, **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (भारत में दृश्य) **E**
वैशाख कृ.	26	१	शुक्र	22	31	स्वा.	15	3	सिद्धि	16	41	तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	27	२	शनि	19	24	विशा	12	47	व्य.	13	4	वृ. 7/22	भ. 29/50 से, सूर्य भर. में 27/21,
	28	३	रवि	16	15	अनु	10	25	वरी / परि	9 / 29	22 / 43	वृश्चिक	भ. 16/15 तक, **बुध अश्वि (1) मेष में 18/26**, राहु विशा 1 केतु भर 3 **F**
	29	४	चंद्र	13	12	ज्ये.	8	7	शिव	26	12	ध. 8/07	सती अनुसूया जयन्ती, बुध पूर्व में अस्त 29/33
	30	५	मंग	10	21	मूल / पू.षा.	6 / 28	00 / 10	सिद्ध	22	55	धनु	मंगल भर. में 14/45, गुरु मृग (1) में 16/56,

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	6/24	18/45	6/16	18/35	6/16	18/37	6/36	18/49
2	6/23	18/45	6/15	18/35	6/15	18/38	6/35	18/49
3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/14	18/38	6/34	18/49
4	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
5	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
6	6/17	18/49	6/10	18/38	6/10	18/40	6/32	18/49
7	6/16	18/50	6/09	18/39	6/09	18/41	6/31	18/49
8	6/15	18/51	6/08	18/39	6/08	18/42	6/30	18/50
9	6/14	18/52	6/07	18/40	6/06	18/42	6/30	18/50
10	6/12	18/52	6/06	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
11	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
12	6/10	18/54	6/03	18/41	6/03	18/45	6/28	18/51
13	6/08	18/54	6/02	18/42	6/02	18/45	6/27	18/51
14	6/07	18/55	6/01	18/43	6/01	18/46	6/26	18/51
15	6/06	18/56	6/00	18/43	5/59	18/46	6/25	18/52
16	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
17	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
18	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
19	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
20	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
21	5/59	19/00	5/54	18/46	5/53	18/50	6/21	18/53
22	5/58	19/00	5/53	18/47	5/52	18/51	6/20	18/54
23	5/57	19/01	5/52	18/48	5/51	18/52	6/19	18/54
24	5/55	19/02	5/51	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
००	००	००	००	००	००	००	००	००
25	5/54	19/02	5/50	18/49	5/49	18/53	6/18	18/54
26	5/53	19/03	5/49	18/49	5/48	18/54	6/17	18/55
27	5/52	19/04	5/48	18/50	5/47	18/54	6/17	18/55
28	5/51	19/05	5/47	18/50	5/46	18/55	6/16	18/56
29	5/50	19/06	5/47	18/51	5/45	18/55	6/16	18/56
30	5/49	19/07	5/46	18/52	5/44	18/56	6/15	18/56

(A) पंचक समाप्त 21/29 **(B)** घटस्थापन, चन्द्रदर्शन, वर्षफल श्रवण **(C)** उल्सानी (मु.) मास प्रा. **(D)** सं. अगले दिन प्रातः 7/52 तक, गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, गुरु रोहि (4) में 17/32
E (देखें पृष्ठ 15-16), श्रीहनुमान जयंती (दक्षिण भारत), वैशाखस्नान प्रारम्भ, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 13/50 **F** में 14/15, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14)

वि. संवत् 2070, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — ग्रीष्म ऋतुः
वैशाख कृष्ण पक्ष	1	६	बुध	7	48	उ.षा.	26	43	साध्य	19	56	म. 9/46	भ. 7/48 से 18/43 तक, मई मास प्रारम्भ, श्रम दिवस
	०	७	बुध	29	39	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि क्षय ०० ०० ००
	2	८	गुरु	27	57	श्रव	25	43	शुभ	17	17	मकर	शुक्र कृति. में 7/31,
	3	९	शुक्र	26	45	धनि	25	12	शुक्ल	15	2	कुं. 13/23	पंचक प्रारम्भ 13/23,
	4	१०	शनि	26	3	शत	25	11	ब्रह्म	13	12	कुम्भ	भ. 14/24 से 26/03 तक, शुक्र वृष में 24/28
	5	११	रवि	25	53	पू.भा.	25	41	ऐंद्र	11	46	मी. 19/31	बुध भर. में 13/13, वरूथिनी एकादशी व्रत, श्रीवल्लभाचार्य जयंती
	6	१२	चंद्र	26	13	उभा.	26	41	वैधृ	10	45	मीन	
	7	१३	मंग	27	2	रेव	28	8	विष्क	10	8	मे. 28/08	भ. 27/02 से, पंचक समाप्त 28/08, भौम प्रदोष व्रत, टैगोर जयंती
	8	१४	बुध	28	18	अश्वि	पूरा	दिन	प्रीति	9	52	मेष	भ. 15/40 तक, मास शिवरात्रि व्रत
	9	३०	गुरु	पूरा	दिन	अश्वि	6	3	आयु	9	57	मेष	वैशाख अमावस (पितृतर्पण, स्नानदानादि, देव-पितृादि कार्येषु), (A)
	10	३०	शुक्र	5	59	भर	8	20	सौभा	10	21	वृ. 14/58	अमावस (प्रात: 5/59 तक) स्नानादि
वैशाख शुक्ल पक्ष	11	१	शनि	8	00	कृति	10	58	शोभ	11	00	वृष	सूर्य कृति. में 11/29, बुध कृति. में 19/54, चन्द्रदर्शन
	12	२	रवि	10	19	रोहि	13	51	अति	11	52	मि. 27/22	शुक्र रोहि. में 27/32, भगवान् परशुराम जयंती (देखें पृ. 80), शिवाजी जयन्ती (B)
	13	३	चंद्र	12	48	मृग	16	54	सुक	12	52	मिथुन	अक्षय तृतीया, बुध वृष में 8/39, भ. 26/04 से
	14	४	मंग	15	20	आर्द्रा	19	57	धृति	13	53	मिथुन	भ. 15/20 तक, सूर्य वृष में 22/21, ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु. 45, पुण्यकाल (C)
	15	५	बुध	17	44	पुर्न	22	52	शूल	14	50	क. 16/10	आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयंती,
	16	६	गुरु	19	51	पुष्य	25	28	गंड	15	34	कर्क	गुरु मृग (2) में 8/16, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, गुरु पुष्य योग
	17	७	शुक्र	21	29	अश्ले	27	35	वृद्धि	15	58	सिं. 27/35	भ. 21/29 से, बुध रोहि. में 23/11, श्रीगङ्गा जयन्ती
	18	८	शनि	22	30	मघा	29	4	ध्रुव	15	55	सिंह	भ. 10/00 तक, मंगल कृति. में 18/40
	19	९	रवि	22	48	पू.फा.	पूरा	दिन	व्या.	15	19	सिंह	सीता नवमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती
	20	१०	चंद्र	22	18	पू.फा.	5	50	हर्ष	14	6	कं. 11/54	सूर्य सायन मिथुन में 26/40,
	21	११	मंग	21	3	उ.फा. हस्त	5 29	49 4	वज्र	12	17	कन्या	भ. 9/41 से 21/03 तक, मोहिनी एकादशी व्रत
	22	१२	बुध	19	4	चित्रा	27	37	सिद्धि	9	51	तु. 16/25	प्रदोष व्रत, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ
	23	१३	गुरु	16	28	स्वा.	25	35	व्य. वरी.	6 27	52 26	तुला	श्रीनृसिंह जयंती, मंगल वृष में 9/13, बुध पश्चिम में उदय 5/17, D
	24	१४	शुक्र	13	22	विशा	23	7	परि	23	39	वृ. 17/46	भ. 13/22 से 23/39 तक, बुध मृग. में 10/54, श्रीसत्यनारायण व्रत (E)
	25	१५	शनि	9	55	अनु	20	23	शिव	19	38	वृश्चिक	वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त, सूर्य रोहि. में 7/43
ज्येष्ठ कृष्ण	26	१	रवि	6	16	ज्ये.	17	32	सिद्ध	15	31	ध. 17/32	नारद जयन्ती, वीणादान
	०	२	रवि	26	36	०	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ०० ००
	27	३	चंद्र	23	3	मूल	14	44	साध्य	11	26	धनु	भ. 12/50 से 23/03 तक, बुध मिथुन में 24/43
	28	४	मंग	19	48	पू.षा.	12	10	शुभ शुक्ल	7 27	31 54	म. 17/34	अङ्गारकी गणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 13-14)
	29	५	बुध	16	58	उ.षा.	9	59	ब्रह्म	24	41	मकर	शुक्र मिथुन में 10/56,
	30	६	गुरु	14	41	श्रव	8	18	ऐंद्र	21	56	कुं. 19/42	भ. 14/41 से 25/52 तक, पंचक प्रारम्भ 19/42
	31	७	शुक्र	13	2	धनि	7	15	वैधृ	19	44	कुम्भ	बुध आर्द्रा में 23/21, गुरु मृग 3 मिथुन में 6/46

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	5/48	19/08	5/45	18/52	5/43	18/57	6/15	18/56
००	००	००	००	००	००	००	००	००
2	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
3	5/46	19/09	5/43	18/54	5/41	18/58	6/14	18/57
4	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
5	5/44	19/10	5/41	18/55	5/40	18/59	6/13	18/58
6	5/43	19/11	5/40	18/55	5/39	19/00	6/12	18/58
7	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
8	5/42	19/12	5/39	18/56	5/37	19/01	6/12	18/59
9	5/41	19/13	5/38	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
10	5/41	19/14	5/38	18/57	5/36	19/03	6/11	18/59
11	5/40	19/15	5/37	18/58	5/35	19/03	6/10	19/01
12	5/39	19/16	5/36	18/59	5/34	19/04	6/10	19/01
13	5/39	19/17	5/36	18/59	5/34	19/05	6/09	19/01
14	5/38	19/17	5/35	19/00	5/33	19/05	6/09	19/02
15	5/37	19/18	5/34	19/00	5/32	19/06	6/09	19/02
16	5/36	19/18	5/34	19/01	5/32	19/07	6/09	19/02
17	5/36	19/11	5/33	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
18	5/35	19/20	5/33	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
19	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
20	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
21	5/33	19/22	5/31	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
22	5/33	19/23	5/31	19/05	5/28	19/11	6/07	19/04
23	5/32	19/24	5/30	19/05	5/28	19/11	6/06	19/05
24	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
25	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
26	5/30	19/25	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
००	००	००	००	००	००	००	००	००
27	5/30	19/26	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
28	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
29	5/29	19/27	5/28	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
30	5/29	19/28	5/28	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
31	5/29	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

(A) [illegible] (B) [illegible] (C) [illegible] (D) [illegible] (E) [illegible]

वि. संवत् 2070, ... महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन 2013 ई.

वि. संवत् 2070, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य उत्तर-दक्षिणायन घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	1	८	शनि	12	5	शत	6	53	विष्क	18	7	मी. 25/03	जून मास प्रारम्भ
	2	९	रवि	11	51	पू.भा.	7	12	प्रीति	17	2	मीन	भ. 24/05 से शुरू
	3	१०	चंद्र	12	17	उ.भा.	8	12	आयु	16	29	मीन	भ. 12/17 तक, शुक्र आर्द्रा में 21/43, गुरुवार्धक्य प्रा. 21/52
	4	११	मंग	13	19	रेव	9	48	सौभा	16	24	मे. 9/48	पंचक समाप्त 9/48, अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी
	5	१२	बुध	14	52	अश्वि	11	54	शोभ	16	42	मेष	प्रदोष व्रत,
	6	१३	गुरु	16	48	भर	14	24	अति	17	18	वृ. 21/05	भ. 16/48 से, मंगल रोहि. में 8/33, मास शिवरात्रि व्रत, गुरु पश्चिम में अस्त 21/52
	7	१४	शुक्र	19	2	कृति	17	11	सुक	18	7	वृष	भ. 5/55 तक,
	8	३०	शनि	21	27	रोहि	20	10	धृति	19	4	वृष	ज्येष्ठ (भावुका) अमावस, सूर्य मृग. में 5/35, वटसावित्री व्रत A
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	9	१	रवि	23	56	मृग	23	13	शूल	20	6	मि. 9/41	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ
	10	२	चंद्र	26	25	आर्द्रा	26	16	गंड	21	8	मिथुन	चन्द्रदर्शन, बुध पुर्न. में 21/31
	11	३	मंग	28	47	पुर्न	29	12	वृद्धि	22	5	क. 22/29	रम्भा तृतीया व्रत, प्रताप जयंती (राज.), शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ
	12	४	बुध	पूरा	दिन	पुष्य	पूरा	दिन	ध्रुव	22	54	कर्क	भ. 17/51 से शुरू,
	13	४	गुरु	6	55	पुष्य	7	55	व्या.	23	29	कर्क	भ. 6/55 तक, गुरु पुष्य योग 7/55 तक
	14	५	शुक्र	8	43	अश्ले	10	18	हर्ष	23	44	सिं. 10/18	सूर्य मिथुन में 28/56, आषाढ़ संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल (B)
	15	६	शनि	10	2	मघा	12	13	वज्र	23	33	सिंह	गण्डमूलादि विचार 12/13 तक
	16	७	रवि	10	47	पू.फा.	13	33	सिद्धि	22	53	कं. 19/47	भ. 10/47 से 22/49 तक,
	17	८	चंद्र	10	50	उ.फा.	14	14	व्य.	21	39	कन्या	श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)
	18	९	मंग	10	10	हस्त	14	10	वरी	19	49	तु. 25/51	श्रीगङ्गा दशहरा पर्व (हरिद्वार) (देखें पृष्ठ 80-81)
	19	१०	बुध	8	44	चित्रा	13	22	परि	17	23	तुला	भ. 19/40 से,
	20	११	गुरु	6	36	स्वा.	11	53	शिव	14	24	वृ. 28/21	भ. 6/36 तक, निर्जला एकादशी व्रत, चम्पक द्वादशी
	०	१२	गुरु	27	50	०	०	०	०	०	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००
	21	१३	शुक्र	24	33	विशा	9	47	सिद्ध	10	55	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, सूर्य आर्द्रा में 28/33, सूर्य सायन कर्क में 10/34, (C)
	22	१४	शनि	20	54	अनु. ज्ये.	7 28	12 17	साध्य शुभ	7 26	2 53	ध. 28/17	भ. 20/54 से, शुक्र कर्क में 24/59, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 81), शक आषाढ़ प्रा.
	23	१५	रवि	17	2	मूल	25	14	शुक्ल	22	36	धनु	भ. 6/58 तक, ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन्त कबीर जयन्ती, वटसावित्री व्रत, D
आषाढ़ कृष्ण	24	१	चंद्र	13	9	पू.षा.	22	13	ब्रह्म	18	20	म. 27/29	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	25	२	मंग	9	23	उ.षा.	19	25	ऐंद्र	14	14	मकर	भ. 19/40 से, मंगल मृग. में 8/55, शुक्र पुष्य में 18/50
	26	३	बुध	5	57	श्रव	17	3	वैधृ	10	26	कुं. 28/04	भ. 5/57 तक, पंचक प्रारम्भ 28/04, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 13-14), बुध वक्री 18/37
	०	४	बुध	27	1	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि क्षय ०० ०० ००
	27	५	गुरु	24	43	धनि	15	15	विष्क प्रीति	7 28	4 15	कुम्भ	मंगल पूर्व में उदय 17/25,
	28	६	शुक्र	23	10	शत	14	9	आयु	26	4	कुम्भ	भ. 23/10 से शुरू,
	29	७	शनि	22	27	पू.भा.	13	52	सौभा	24	33	मी. 7/51	भ. 10/49 तक, गुरु आर्द्रा (1) में 10/15,
	30	८	रवि	22	33	उ.भा.	14	23	शोभ	23	41	मीन	राहु स्वा. (4) केतु भर. (2) में 11/38

गुरु अस्त 6 जून

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08
2	5/28	19/29	5/28	19/10	5/24	19/16	6/05	19/09
3	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
4	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
5	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
6	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
7	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/10
8	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/11
9	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
10	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
11	5/26	19/34	5/27	19/14	5/23	19/21	6/05	19/11
12	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
13	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
14	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
15	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
16	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/13
17	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
18	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
19	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
20	5/27	19/37	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/14
००	००	००	००	००	००	००	००	००
21	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
22	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/07	19/14
23	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
24	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
25	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
26	5/29	19/38	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
००	००	००	००	००	००	००	००	००
27	5/30	19/38	5/29	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
28	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
29	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/08	19/16
30	5/31	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16

A (अमा. पक्ष), शनैश्चर जयन्ती (B) सं. अगले दिन सू.उ. से दुपै. 11/20 तक, गुरु मृग (4) में 21/10, शुक्र पुर्न. में 19/50 (C) दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ D (पूर्णिमा पक्षे)

वि. संवत् 2070, जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

सूर्य दक्षिणायन | वर्षा ऋतुः | गुरु उदय 2 जुलाई

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	1	९	चंद्र	23	25	रेव	15	42	अति	23	26	मे. 15/42	पंचक समाप्त 15/42, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 15/20, जुलाई मास. प्रा.
	2	१०	मंग.	24	57	अश्वि	17	41	सुक	23	41	मेष	भ. 12/11 से 24/57 तक, गंड मूलादि, गुरु पूर्व में उदय 22/41
	3	११	बुध	26	58	भर	20	11	धृति	24	19	वृ. 26/52	योगिनी एकादशी व्रत,
	4	१२	गुरु	29	18	कृति	23	3	शूल	25	13	वृष	मंगल मिथुन में 25/11,
	5	१३	शुक्र	पूरा	दिन	रोहि	26	6	गंड	26	15	वृष	प्रदोष व्रत, सूर्य पुर्न. में 28/08
	6	१३	शनि	7	48	मृग	29	11	वृद्धि	27	19	मि. 15/38	भ. 7/48 से 21/04 तक, शुक्र आश्ले. में 18/41, मासशिवरात्रि व्रत
	7	१४	रवि	10	19	आर्द्रा	पूरा	दिन	ध्रुव	28	20	मिथुन	
	8	३०	चंद्र	12	44	आर्द्रा	8	12	व्या.	29	13	क. 28/22	आषाढ़-सोमवती अमावस, शनि मार्गी 10/29
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	9	१	मंग	14	59	पुर्न	11	3	हर्ष	पूरा	दिन	कर्क	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	10	२	बुध	16	59	पुष्य	13	42	हर्ष	5	57	कर्क	चन्द्रदर्शन, रथ-यात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी)
	11	३	गुरु	18	41	अश्ले	16	3	वज्र	6	28	सिं. 16/03	रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गंडमूलादि
	12	४	शुक्र	20	2	मघा	18	3	सिद्धि	6	44	सिंह	भ. 7/22 से 20/02 तक, गंडमूल विचार
	13	५	शनि	20	56	पू.फा.	19	39	व्य.	6	42	कं. 25/58	गुरु आर्द्रा (2) में 27/56
	14	६	रवि	21	20	उ.फा.	20	45	वरी परि	6 29	17 27	कन्या	स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी, मंगल आर्द्रा में 20/14,
	15	७	चंद्र	21	8	हस्त	21	16	शिव	28	9	कन्या	भ. 21/08 से, विवस्वत सप्तमी
	16	८	मंग	20	19	चित्रा	21	10	सिद्ध	26	19	तु. 9/18	भ. 8/44 तक, सूर्य कर्क में 15/46, श्रावण संक्रान्ति, मु. 30, A
	17	९	बुध	18	50	स्वा.	20	25	साध्य	23	57	तुला	शुक्र मघा 1 सिंह में 19/32, भढली नवमी
	18	१०	गुरु	16	43	विशा	19	2	शुभ	21	4	वृ. 13/26	भ. 27/22 से, वक्री बुध पूर्व में उदय 19/48
	19	११	शुक्र	14	00	अनु.	17	4	शुक्ल	17	43	वृश्चिक	भ. 14/00 तक, देवशयनी एकादशी व्रत, सूर्य पुष्य में 27/37, (B)
	20	१२	शनि	10	49	ज्ये.	14	38	ब्रह्म	13	59	ध. 14/38	शनि प्रदोष व्रत, बुध मार्गी 23/46, गंडमूलादि
	21	१३	रवि	7	17	मूल	11	53	ऐंद्र	9	58	धनु	भ. 27/32 से, गंडमूल विचार
	०	१४	रवि	27	32	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००
	22	१५	चंद्र	23	46	पू.षा.	8	57	वैधृ विष्क	5 25	48 37	म. 14/12	भ. 13/39 तक, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, C
श्रावण कृष्ण पक्ष	23	१	मंग	20	9	उ.षा. श्रव	6 27	2 20	प्रीति	21	36	मकर	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शक श्रावण प्रारम्भ, अशून्यशयन व्रत
	24	२	बुध	16	52	धनि	25	3	आयु	17	52	कुं. 14/08	भ. 27/30 से, पंचक प्रारम्भ 14/08, बुध पुर्न. में 18/21
	25	३	गुरु	14	7	शत	23	21	सौभा	14	34	कुम्भ	भ. 14/07 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 13-14)
	26	४	शुक्र	12	1	पू.भा.	22	22	शोभ	11	49	मी. 16/33	
	27	५	शनि	10	43	उ.भा.	22	13	अति	9	44	मीन	नाग पंचमी (राज. व बंगाल)
	28	६	रवि	10	17	रेव	22	56	सुक	8	19	मे. 22/56	भ. 10/17 से 22/30 तक, पंचक समा. 22/56, शुक्र पू.फा. में 21/48, शीतला ७
	29	७	चंद्र	10	43	अश्वि	24	26	धृति	7	36	मेष	गुरु आर्द्रा (3) में 9/44, गंडमूल विचार
	30	८	मंग	11	55	भर	26	39	शूल	7	31	मेष	
	31	९	बुध	13	46	कृति	29	21	गंड	7	56	वृ. 9/17	भ. 26/55 से प्रारम्भ,

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/09	19/16
2	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
3	5/32	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
4	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
5	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
6	5/33	19/38	5/33	19/18	5/29	19/25	6/11	19/16
7	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
8	5/34	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/12	19/16
9	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
10	5/35	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
11	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
12	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
13	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/16
14	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/14	19/16
15	5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/16
16	5/38	19/36	5/37	19/16	5/34	19/22	6/14	19/16
17	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
18	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/21	6/15	19/15
19	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/15
20	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
21	5/41	19/34	5/40	19/14	5/37	19/20	6/16	19/14
००	००	००	००	००	००	००	००	००
22	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
23	5/42	19/33	5/41	19/13	5/38	19/19	6/16	19/13
24	5/43	19/32	5/42	19/13	5/39	19/19	6/17	19/13
25	5/44	19/32	5/42	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
26	5/45	19/31	5/43	19/12	5/40	19/17	6/17	19/12
27	5/45	19/30	5/43	19/11	5/41	19/17	6/18	19/12
28	5/46	19/30	5/44	19/11	5/41	19/16	6/18	19/12
29	5/47	19/29	5/44	19/10	5/42	19/15	6/18	19/11
30	5/47	19/27	5/45	19/10	5/43	19/15	6/19	19/11
31	5/48	19/27	5/46	19/09	5/43	19/14	6/19	19/10

A पुण्यकाल सं. प्रातः 9/22 से, वक्री बुध आर्द्रा में 24/50, श्रीदुर्गाष्टमी (B) चातुर्मास्य व्रतादि नियम प्रारम्भ.
(C) श्री सत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, सूर्य सायन सिंह में [illegible]

वि. संवत् 2070, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा-शरद् ऋतुः
श्रावण कृष्ण	1	१०	गुरु	16	3	रोहि	पूरा	दिन	वृद्धि	8	43	वृष	भ. 16/03 तक, अगस्त मास प्रारम्भ,
	2	११	शुक्र	18	33	रोहि	8	22	ध्रुव	9	43	मि. 21/54	**कामिका एकादशी व्रत**, सूर्य आश्ले. में 26/31
	3	१२	शनि	21	4	मृग	11	27	व्या.	10	47	मिथुन	मंगल पुर्न. में 19/06,
	4	१३	रवि	23	26	आर्द्रा	14	27	हर्ष	11	47	मिथुन	भ. 23/26 से, **बुध कर्क में 21/28**, प्रदोष व्रत
	5	१४	चंद्र	25	33	पुर्न	17	14	वज्र	12	36	क. 10/34	भ. 12/30 तक, मासशिवरात्रि व्रत
	6	३०	मंग	27	21	पुष्य	19	44	सिद्धि	13	12	कर्क	हरियाली अमावस, **भौमवती अमावस**, बुध पुष्य में 27/11
श्रावण शुक्ल पक्ष	7	१	बुध	28	47	अश्ले	21	53	व्य.	13	33	सिं. 21/53	**श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ**
	8	२	गुरु	29	52	मघा	23	42	वरी	13	37	सिंह	**चन्द्रदर्शन**, शुक्र उ.फा. में 25/35
	9	३	शुक्र	पूरा	दिन	पू.फा.	25	9	परि	13	23	सिंह	**मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज** (देखें पृ. 81), शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रा.
	10	३	शनि	6	34	उ.फा.	26	13	शिव	12	52	कं. 7/27	भ. 18/44 से प्रा., दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी
	11	४	रवि	6	53	हस्त	26	52	सिद्ध	12	2	कन्या	भ. 6/53 तक, **नाग-पंचमी (देखें पृष्ठ 81), शुक्र कन्या में 20/48**
	12	५	चंद्र	6	46	चित्रा	27	5	साध्य	10	52	तु. 15/02	**बुध पूर्व में अस्त** 10/15, **श्रीकल्कि जयन्ती**
	13	६	मंग	6	12	स्वा.	26	50	शुभ	9	19	तुला	भ. 29/09 से, गो. तुलसीदास जयन्ती
	०	७	मंग	29	9	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि क्षय ०० ०० ००
	14	८	बुध	27	36	विशा	26	4	शुक्ल ब्रह्म	7 29	23 3	वृ. 20/18	भ. 16/23 तक, बुध आश्ले. में 13/27, गुरु आर्द्रा (4) में 14/04, **A**
	15	९	गुरु	25	33	अनु	24	49	ऐंद्र	26	18	वृश्चिक	**भारत स्वतन्त्रता दिवस**
	16	१०	शुक्र	23	2	ज्ये.	23	6	वैधृ	23	10	ध. 23/06	**सूर्य मघा 1 सिंह में 24/08, भाद्रपद संक्रान्ति**, ३० मु., पुण्यकाल सं. अगले दिन
	17	११	शनि	20	9	मूल	21	1	विष्क	19	44	धनु	भ. 9/36 से 20/09 तक, **पवित्रा एकादशी व्रत**
	18	१२	रवि	16	58	पू.षा.	18	38	प्रीति	16	3	म. 24/01	प्रदोष व्रत, **मंगल कर्क में 25/59**
	19	१३	चंद्र	13	40	उ.षा.	16	8	आयु	12	15	मकर	
	20	१४	मंग	10	22	श्रव	13	40	सौभा शोभ	8 28	28 48	कुं. 24/30	भ. 10/22 से 20/49 तक, **रक्षाबन्धन** (देखें पृष्ठ 81), **पंचक प्रा. 24/30, B**
	21	१५	बुध	7	15	धनि	11	24	अति	25	24	कुम्भ	**श्रावण पूर्णिमा, रक्षा-बन्धन** (पूर्णिमा प्रातः 7/15 तक) (देखें पृ. 81)
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	०	१	बुध	28	29	०	०	०	०	०	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय
	22	२	गुरु	26	13	शत.	9	31	सुक	22	25	मी. 26/28	सूर्य सायन कन्या में 28/32, शरद् ऋतुः प्रारम्भ
	23	३	शुक्र	24	37	पू.भा.	8	12	धृति	19	57	मीन	भ. 13/25 से 24/37 तक, मंगल पुष्य में 29/50, कजली तृतीया, शक **C**
	24	४	शनि	23	47	उ.भा.	7	33	शूल	18	5	मीन	**श्रीगणेश संकष्ट (बहुला) चतुर्थी)** (देखें पृष्ठ 13-14)
	25	५	रवि	23	47	रेव	7	41	गंड	16	53	मे. 7/41	**पंचक समाप्त 7/41**
	26	६	चंद्र	24	35	अश्वि	8	38	वृद्धि	16	19	मेष	भ. 24/35 से प्रा., **चन्दन षष्ठी व्रत**, चन्द्रोदय 22/20 (जालं.), हल षष्ठी
	27	७	मंग	26	6	भर	10	21	ध्रुव	16	20	वृ. 16/53	भ. 13/21 तक, बुध पू.फा. में 22/38, शीतला सप्तमी
	28	८	बुध	28	11	कृति	12	42	व्या.	16	50	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** (देखें पृ. 84), **गोकुलाष्टमी**, नन्दोत्सव, **दूर्वाष्टमी व्रत** (देखें पृ. 82)
	29	९	गुरु	पूरा	दिन	रोहि	15	29	हर्ष	17	39	मि. 28/59	**श्रीगुग्गा-नवमी**
	30	९	शुक्र	6	35	मृग	18	30	वज्र	18	38	मिथुन	भ. 19/50 से, सूर्य पू.फा. में 20/09
	31	१०	शनि	9	4	आर्द्रा	21	30	सिद्धि	19	36	मिथुन	भ. 9/04 तक, शुक्र चित्रा में 15/30,

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	5/48	19/25	5/46	19/08	5/44	19/13	6/20	19/10
2	5/49	19/25	5/47	19/08	5/44	19/12	6/20	19/09
3	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
4	5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19/08
5	5/51	19/23	5/48	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
6	5/52	19/22	5/49	19/05	5/47	19/09	6/21	19/07
7	5/52	19/21	5/49	19/04	5/47	19/08	6/22	19/07
8	5/53	19/20	5/50	19/03	5/48	19/07	6/22	19/06
9	5/53	19/19	5/51	19/02	5/49	19/06	6/22	19/05
10	5/54	19/18	5/51	19/01	5/49	19/05	6/22	19/05
11	5/55	19/17	5/52	19/01	5/50	19/04	6/22	19/04
12	5/56	19/16	5/52	19/00	5/51	19/03	6/23	19/03
13	5/57	19/15	5/53	18/59	5/51	19/02	6/23	19/03
००	००	००	००	००	००	००	००	००
14	5/57	19/13	5/53	18/58	5/52	19/02	6/23	19/02
15	5/58	19/12	5/54	18/57	5/52	19/01	6/23	19/02
16	5/59	19/11	5/54	18/56	5/53	19/00	6/24	19/01
17	5/59	19/10	5/55	18/55	5/54	18/59	6/24	19/01
18	6/00	19/09	5/55	18/54	5/54	18/58	6/24	19/00
19	6/00	19/08	5/56	18/53	5/55	18/56	6/24	19/00
20	6/01	19/06	5/56	18/52	5/55	18/55	6/24	19/00
21	6/01	19/05	5/57	18/51	5/56	18/54	6/25	18/59
००	००	००	००	००	००	००	००	००
22	6/02	19/04	5/58	18/50	5/56	18/53	6/25	18/58
23	6/02	19/03	5/58	18/49	5/57	18/52	6/25	18/57
24	6/03	19/02	5/59	18/48	5/58	18/51	6/25	18/56
25	6/04	19/01	5/59	18/47	5/58	18/50	6/26	18/55
26	6/04	19/00	6/00	18/46	5/59	18/49	6/26	18/54
27	6/05	18/59	6/00	18/45	5/59	18/47	6/26	18/53
28	6/06	18/57	6/01	18/44	6/00	18/46	6/27	18/52
29	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
30	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
31	6/08	18/53	6/02	18/41	6/02	18/43	6/28	18/49

(A) श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी-नैनादेवी **(B)** बुध मघा 1 सिंह में 28/55, अथर्वेदि-ऋग्वेदि उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत, गायत्री जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा (काश्मीर) **(C)** भाद्रपद प्रारम्भ

वि. संवत् 2070, सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद् ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
भाद्र कृष्ण	1	११	रवि	11	26	पुर्न	24	18	व्य.	20	24	क. 17/37	**अजा एकादशी व्रत**, गुरु पुर्न. (1) में 12/43, राहु स्वा. (3) **(A)**	1	6/08	18/52	6/03	18/39	6/02	18/42	6/29	18/48
	2	१२	चंद्र	13	30	पुष्य	26	45	वरी	20	57	कर्क	वत्स द्वादशी (पूजा), **सोम प्रदोष व्रत**	2	6/09	18/51	6/03	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
	3	१३	मंग	15	10	अश्ले	28	46	परि	21	10	सिं. 28/46	भ. 15/10 से 27/46 तक, बुध उ.फा. में 27/25, शनि स्वा. (3) में **B**	3	6/10	18/50	6/04	18/36	6/03	18/40	6/29	18/46
	4	१४	बुध	16	22	मघा	पूरा	दिन	शिव	21	2	सिंह		4	6/11	18/49	6/04	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
	5	३०	गुरु	17	6	मघा	6	20	सिद्ध	20	32	सिंह	**भाद्रपद अमावस**, कुशाग्रहणी-पिठोरी अमावस, **बुध कन्या में 24/55**,	5	6/11	18/48	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	6	१	शुक्र	17	24	पू.फा.	7	28	साध्य	19	42	कं. 13/41	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **शुक्र तुला में 8/40**	6	6/12	18/47	6/05	18/33	6/05	18/35	6/29	18/44
	7	२	शनि	17	18	उ.फा.	8	11	शुभ	18	32	कन्या	चन्द्रदर्शन, सामवेदि उपाकर्म (हस्त नक्षत्रे)	7	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
	8	३	रवि	16	49	हस्त	8	31	शुक्ल	17	5	तु. 20/34	भ. 28/25 से, **हरितालिका तृतीया, गौरी तीज**, जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रा.	8	6/13	18/43	6/06	18/31	6/06	18/33	6/30	18/43
	9	४	चंद्र	16	00	चित्रा	8	31	ब्रह्म	15	21	तुला	भ. 16/00 तक, **सिद्धि विनायक व्रत**, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध) **C**	9	6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
	10	५	मंग	14	51	स्वा.	8	12	ऐंद्र	13	22	वृ. 25/44	ऋषि पंचमी, सम्वत्सरी महापर्व (जैन) (पंचमी पक्ष)	10	6/14	18/40	6/07	18/28	6/07	18/30	6/30	18/41
	11	६	बुध	13	24	विशा	7	33	वैधृ	11	8	वृश्चिक	सूर्य षष्ठी व्रत, बुध हस्त में 23/39, शुक्र स्वा. में 26/40, मुक्ताभरण- **D**	11	6/15	18/38	6/07	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
	12	७	गुरु	11	38	अनु. ज्ये.	6 29	36 22	विष्क प्रीति	8 29	38 55	ध. 29/22	भ. 11/38 से 22/37 तक, श्रीराधाष्टमी (देखें पृ. 82), श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ (चं. उ. व्या.)	12	6/16	18/37	6/08	18/26	6/08	18/28	6/30	18/40
	13	८	शुक्र	9	35	मूल	27	52	आयु	26	59	धनु	दधीची जयंती, सूर्य उ.फा. में 13/56, मंगल आश्ले. में 29/22, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ	13	6/16	18/37	6/08	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
	14	९	शनि	7	17	पू.षा.	26	9	सौभा	23	52	धनु	**श्रीचन्द्र नवमी** (उदासीन सम्प्रदाय), **श्रीभागवत् सप्ताह प्रारम्भ**	14	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
	०	१०	शनि	28	47	०	०	०	०	०	०	००	दशमी तिथि क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	15	११	रवि	26	10	उ.षा.	24	19	शोभ	20	38	म. 7/42	भ. 15/29 से 26/10 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स्मार्त), विष्णुश्रृंखल **(E)**	15	6/17	18/35	6/09	18/22	6/10	18/24	6/30	18/37
	16	१२	चंद्र	23	31	श्रव	22	27	अति	17	22	मकर	पद्मा एकादशी व्रत (वैष्णव), **सूर्य कन्या में 24/03, आश्विन संक्रान्ति (F)**	16	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
	17	१३	मंग	20	59	धनि	20	40	सुक	14	9	कुं. 9/32	**पंचक प्रारम्भ 9/32**, भौम प्रदोष व्रत, विश्वकर्मा पूजन	17	6/18	18/31	6/10	18/20	6/11	18/22	6/31	18/35
	18	१४	बुध	18	40	शत	19	7	धृति	11	5	कुम्भ	भ. 18/40 से 29/42 तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोढल (जालंधर)**	18	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
	19	१५	गुरु	16	43	पू.भा.	17	56	शूल. गंड	8 29	16 49	मी. 12/11	भाद्रपद पूर्णिमा, प्रोष्ठपदी, महालय श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा श्राद्ध	19	6/20	18/28	6/11	18/17	6/12	18/19	6/31	18/34
आश्विन कृष्ण पक्ष	20	१	शुक्र	15	16	उ.भा.	17	15	वृद्धि	27	50	मीन	**पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ**, बुध चित्रा में 14/31, प्रतिपदा का श्राद्ध	20	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
	21	२	शनि	14	25	रेव	17	10	ध्रुव	26	21	मे. 17/10	भ. 26/21 से, **पंचक समाप्त 17/10**, द्वितीया एवं तृतीया का श्राद्ध (देखें पृ. 82)	21	6/22	18/26	6/12	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
	22	३	रवि	14	16	अश्वि	17	46	व्या.	25	27	मेष	भ. 14/16 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14), तृतीया का श्राद्ध **(G)**	22	6/22	18/25	6/13	18/14	6/14	18/15	6/32	18/31
	23	४	चंद्र	14	50	भर	19	4	हर्ष	25	5	वृ. 25/30	शक आश्विन प्रारम्भ, गुरु पुर्न (2) में 9/07, शुक्र विशा. में 17/54, श्राद्ध चतुर्थी	23	6/23	18/24	6/13	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
	24	५	मंग	16	6	कृति	21	1	वज्र	25	14	वृष	पंचमी का श्राद्ध	24	6/24	18/23	6/14	18/12	6/15	18/13	6/32	18/29
	25	६	बुध	17	57	रोहि	23	31	सिद्धि	25	47	वृष	भ. 17/57 से, **बुध तुला में 6/34**, षष्ठी का श्राद्ध	25	6/24	18/21	6/14	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
	26	७	गुरु	20	12	मृग	26	22	व्य.	26	36	मि.12/54	भ. 7/05 तक, सूर्य हस्त में 29/30, सप्तमी का श्राद्ध.	26	6/25	18/20	6/15	18/09	6/16	18/10	6/33	18/27
	27	८	शुक्र	22	40	आर्द्रा	29	20	वरी	27	31	मिथुन	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध	27	6/25	18/18	6/15	18/08	6/17	18/09	6/33	18/26
	28	९	शनि	25	5	पुर्न	पूरा	दिन	परि	28	22	क. 25/31	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृ नवमी, नवमी का श्राद्ध	28	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
	29	१०	रवि	27	13	पुर्न	8	13	शिव	29	00	कर्क	भ. 14/09 से 27/13 तक, दशमी का श्राद्ध	29	6/26	18/15	6/16	18/06	6/18	18/06	6/33	18/24
	30	११	चंद्र	28	56	पुष्य	10	47	सिद्ध	29	16	कर्क	इन्दिरा एकादशी व्रत स्मार्त, बुध स्वा. में 6/34, एकादशी का श्राद्ध	30	6/27	18/14	6/17	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

A केतु भर. (1) में 9/15 **B** 26/30, मासशिवरात्रि व्रत **C** पत्थर चौथ, चन्द्रास्त 20/57 (जालंधर), बुध पश्चिम से उदय 5/24 **(D)** संतान सप्तमी व्रत **(E)** योग 24/19 से **(F)** मु. 30, पुण्यकाल सं. अगले दिन, श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी (देखें पृष्ठ 82), विष्णुश्रृंखल योग 22/27 तक (G) (14/16 तक) [illegible]

वि. संवत् 2070, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

वि. संवत् 2070, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचाग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद्-हेमन्त ऋतुः
आश्विन कृष्ण	1	१२	मंग	30	5	अश्ले	12	53	साध्य	29	8	सिं. 12/53	इन्दिरा एकादशी व्रत (वैष्णव), अक्तू. मास प्रा., सन्यासीनां श्राद्ध, 0
	2	१३	बुध	पूरा	दिन	मघा	14	27	शुभ	28	32	सिंह	प्रदोष व्रत, शुक्र वृश्चिक में 14/54, महात्मा गांधी जयंती, गजच्छाया योग A
	3	१३	गुरु	6	39	पू.फा.	15	26	शुक्ल	27	28	क. 21/35	भ. 6/39 से 18/39 तक, माससशिवरात्रि व्रत, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि से B
	4	१४	शुक्र	6	38	उ.फा.	15	52	ब्रह्म	25	59	कन्या	आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, पितृ विसर्जन, चतुर्दशी/ C
	०	३०	शुक्र	30	5	०	०	०	०	०	०	००	अमावस तिथि का क्षय ०० ०० ००
आश्विन शुक्ल पक्ष	5	१	शनि	29	4	हस्त	15	48	ऐंद्र	24	8	तु. 27/36	आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, मंगल मघा 1 सिंह में 19/40, शुक्र अनु. D
	6	२	रवि	27	40	चित्रा	15	18	वैधृ	21	57	तुला	चन्द्रदर्शन,
	7	३	चंद्र	25	59	स्वा.	14	29	विष्क	19	31	तुला	शनि स्वा. (4) में 16/48, जिलहिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ
	8	४	मंग	24	4	विशा	13	23	प्रीति	16	53	वृ. 7/41	भ. 13/02 से 24/04 तक,
	9	५	बुध	22	1	अनु.	12	7	आयु	14	6	वृश्चिक	उपांग ललिता व्रत, ललिता पंचमी, गंडमूलादि 12/07 बाद
	10	६	गुरु	19	51	ज्ये.	10	44	सौभा	11	14	ध. 10/44	सूर्य चित्रा में 18/24, सरस्वती आवाहन मूलभे, गंडमूलादि
	11	७	शुक्र	17	39	मूल	9	16	शोभ अति	8 29	18 22	धनु	भ. 17/39 से 28/33 तक, सरस्वती पूजन (पू.षा.)
	12	८	शनि	15	27	पू.षा. उ.षा.	7 30	48 22	सुक	26	27	म. 13/26	श्रीदुर्गाष्टमी, सरस्वती बलिदान, महाष्टमी, बुध विशा. में 11/47
	13	९	रवि	13	18	श्रव	29	1	धृति	23	36	मकर	महानवमी, नवरात्रे समा., विजयादशमी (दशहरा), अपराजिता पूजन, (E)
	14	१०	चंद्र	11	16	धनि	27	50	शूल	20	52	कुं. 16/24	भ. 22/21 से, पंचक प्रारम्भ 16/24,
	15	११	मंग	9	25	शत	26	52	गंड	18	17	कुम्भ	भ. 9/25 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत
	16	१२	बुध	7	47	पू.भा.	26	11	वृद्धि	15	56	मी. 20/19	प्रदोष व्रत,
	०	१३	बुध	30	29	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ०० ००
	17	१४	गुरु	29	34	उ.भा.	25	53	ध्रुव	13	51	मीन	भ. 29/34 से, सूर्य तुला में 12/00, कार्तिक संक्रान्ति, मु. 45, F
	18	१५	शुक्र	29	8	रेव	26	1	व्या.	12	5	मे. 26/01	भ. 17/20 तक, आश्विन-शरद् पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीकि जयंती, (G)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	19	१	शनि	29	13	अश्वि	26	40	हर्ष	10	43	मेष	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ
	20	२	रवि	29	53	भर	27	52	वज्र	9	45	मेष	शनि पश्चिम में अस्त 14/18
	21	३	चंद्र	पूरा	दिन	कृति	29	37	सिद्धि	9	15	वृ. 10/15	भ. 18/30 से, बुध वक्री 15/54
	22	३	मंग	7	7	रोहि	पूरा	दिन	व्य.	9	10	वृष	भ. 7/07 तक, श्रीगणेश चतुर्थी, व्रत करवाचौथ, चन्द्रोदय-20/20 (जालं.) (H)
	23	४	बुध	8	52	रोहि	7	53	वरी	9	29	मि. 21/10	शक कार्तिक प्रारम्भ, सूर्य स्वा. में 29/00, सूर्य सायन वृश्चिक में 11/40, हेमन्त ऋतु प्रा.
	24	५	गुरु	11	3	मृग	10	33	परि	10	7	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत
	25	६	शुक्र	13	29	आर्द्रा	13	28	शिव	10	57	मिथुन	भ. 13/29 से 26/44 तक,
	26	७	शनि	15	59	पुर्न	16	25	सिद्ध	11	50	क. 9/41	अहोई अष्टमी व्रत (सप्तमी विद्धा)
	27	८	रवि	18	18	पुष्य	19	13	साध्य	12	36	कर्क	मंगल पू.फा. में 28/40, अहोई अष्टमी (पंजाब, हरि., हि. प्र. आदि), +
	28	९	चंद्र	20	14	अश्ले	21	38	शुभ	13	7	सिं. 21/38	गण्डमूल विचार +वक्री बुध पश्चिम में अस्त 12/49
	29	१०	मंग	21	36	मघा	23	30	शुक्ल	13	14	सिंह	भ. 8/55 से 21/36 तक, वक्री बुध स्वा. (4) में 10/37
	30	११	बुध	22	18	पू.फा.	24	43	ब्रह्म	12	52	सिंह	रमा एकादशी व्रत, शुक्र मूल 1 धनु में 14/25, कौमुदि महोत्सव प्रा.
	31	१२	गुरु	22	17	उ.फा.	25	15	ऐंद्र	11	57	कं. 6/55	गोवत्स द्वादशी

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
2	6/28	18/10	6/18	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
3	6/29	18/09	6/19	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
4	6/30	18/08	6/19	17/59	6/22	18/00	6/34	18/21
००	००	००	००	००	००	००	००	००
5	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
6	6/31	18/06	6/20	17/57	6/23	17/58	6/35	18/19
7	6/31	18/05	6/21	17/56	6/23	17/56	6/35	18/19
8	6/32	18/04	6/22	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
9	6/33	18/03	6/22	17/54	6/25	17/54	6/35	18/17
10	6/33	18/01	6/23	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
11	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
12	6/35	17/59	6/24	17/50	6/27	17/51	6/36	18/14
13	6/36	17/57	6/24	17/49	6/27	17/49	6/36	18/14
14	6/37	17/55	6/25	17/48	6/28	17/48	6/37	18/13
15	6/38	17/54	6/26	17/47	6/29	17/47	6/37	18/12
16	6/38	17/53	6/26	17/46	6/29	17/46	6/37	18/11
००	००	००	००	००	००	००	००	००
17	6/39	17/52	6/27	17/45	6/30	17/45	6/38	18/10
18	6/40	17/51	6/27	17/44	6/31	17/44	6/38	18/09
19	6/41	17/50	6/28	17/43	6/31	17/43	6/38	18/08
20	6/41	17/49	6/29	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
21	6/42	17/48	6/29	17/41	6/33	17/41	6/39	18/06
22	6/43	17/47	6/30	17/40	6/34	17/40	6/39	18/06
23	6/43	17/46	6/31	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
24	6/44	17/45	6/31	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
25	6/45	17/44	6/32	17/37	6/36	17/37	6/40	18/04
26	6/46	17/43	6/33	17/37	6/37	17/36	6/41	18/04
27	6/47	17/42	6/33	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
28	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
29	6/49	17/39	6/35	17/34	6/39	17/33	6/42	18/03
30	6/50	17/38	6/36	17/34	6/40	17/32	6/42	18/03
31	6/51	17/38	6/36	17/33	6/40	17/31	6/43	18/02

0 गजच्छाया योग 30/05 से, श्राद्ध द्वादशी (A) 14/27 तक, श्राद्ध त्रयोदशी (B) मृतों का श्राद्ध (C) अमावस का श्राद्ध, (D) में 14/44, मातामह (नाना) का श्राद्ध, महाराजा अग्रसेन जयंती E सरस्वती विसर्जन, शस्त्र (आयुध) पूजा (F) पुण्यकाल सं. प्रातः सूर्योदय से, शुक्र ज्येष्ठा में 19/41 (G) कोजागर व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत (H) (करक चतुर्थी) (देखें पृष्ठ 13-14)

वि. संवत् 2070, नवंबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — हेमन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
का. कृ.	1	१३	शुक्र	21	34	हस्त	25	5	वैधृ	10	29	कन्या	भ. 21/34 से, प्रदोष व्रत, **धन त्रयोदशी**, धनवन्तरी जयंती, यमाय **A**	1	6/51	17/35	6/37	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	१४	शनि	20	13	चित्रा	24	19	विष्क प्रीति	8 / 30	28 / 00	तु. 12/47	भ. 8/54 तक, **नरक चौदश**, यमाय तर्पण,	2	6/52	17/34	6/37	17/34	6/41	17/30	6/44	18/01
	3	३०	रवि	18	20	स्वा.	23	3	आयु	27	8	तुला	कार्तिक अमावस, **दीपावली महापर्व**, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, राहु स्वा. 2, **B**	3	6/53	17/33	6/38	17/33	6/42	17/29	6/44	18/01
कार्तिक शुक्ल पक्ष	4	१	चंद्र	16	2	विशा	21	24	सौभा	23	58	वृ. 15/50	**अन्नकूट-गोवर्धन** पूजा (देखें पृष्ठ 83), शनि विशा (1) में 28/29, **C**	4	6/54	17/32	6/39	17/32	6/43	17/28	6/45	18/00
	5	२	मंग	13	27	अनु.	19	29	शोभ	20	37	वृश्चिक	**भ्रातृ दूज**, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजन, 1 मुहर्रम 1435 हिजरी प्रा.	5	6/54	17/31	6/39	17/31	6/44	17/27	6/45	18/00
	6	३	बुध	10	42	ज्ये.	17	27	अति	17	10	ध. 17/27	भ. 21/19 से, सूर्य विशा. में 13/04, दूर्वा गणपति व्रत,	6	6/55	17/30	6/40	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
	7	४	गुरु	7	55	मूल	15	25	सुक	13	43	धनु	भ. 7/55 तक, **गुरु वक्री 10/30**, ज्ञान पंचमी, जया पंचमी **D**	7	6/56	17/30	6/41	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
	०	५	गुरु	29	13	०	०	०	०	०	०	००	पंचमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	8	६	शुक्र	26	42	पू.षा.	13	30	धृति	10	21	म. 19/03	सूर्य षष्ठी (बिहार)	8	6/57	17/29	6/42	17/29	6/46	17/25	6/46	17/58
	9	७	शनि	24	27	उ.षा.	11	48	शूल गंड	7 / 28	10 / 12	मकर	भ. 24/27 से,	9	6/58	17/28	6/43	17/28	6/47	17/24	6/47	17/58
	10	८	रवि	22	33	श्रव	10	24	वृद्धि	25	30	कुं. 21/50	भ. 11/30 तक, **पंचक प्रारम्भ 21/50**, गोपाष्टमी, बुध मार्गी 26/51	10	6/59	17/28	6/43	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
	11	९	चंद्र	21	1	धनि	9	21	ध्रुव	23	7	कुम्भ	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी	11	7/00	17/27	6/44	17/27	6/49	17/23	6/48	17/57
	12	१०	मंग	19	54	शत	8	42	व्या.	21	4	मी. 26/28		12	7/01	17/26	6/45	17/26	6/50	17/22	6/49	17/57
	13	११	बुध	19	12	पू.भा.	8	27	हर्ष	19	21	मीन	भ. 7/33 से 19/12 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत, **भीष्मपंचक प्रा. E**	13	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	14	१२	गुरु	18	56	उ.भा.	8	37	वज्र	17	58	मीन	नेहरू जयन्ती, तुलसी विवाह (देखें पृष्ठ 83), **मुहर्रम ताजिया**	14	7/03	17/26	6/46	17/25	6/51	17/21	6/50	17/56
	15	१३	शुक्र	19	6	रेव	9	13	सिद्धि	16	55	मे. 9/13	**पंचक समाप्त 9/13**, प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी, गंडमूल	15	7/04	17/25	6/47	17/24	6/52	17/21	6/50	17/56
	16	१४	शनि	19	43	अश्वि	10	14	व्य.	16	12	मेष	भ. 19/43 से, **सूर्य वृश्चिक में 11/48, मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, मु. 15, **F**	16	7/05	17/25	6/48	17/24	6/53	17/20	6/51	17/56
	17	१५	रवि	20	46	भर	11	40	वरी	15	49	वृ. 18/05	भ. 8/15 तक, कार्तिक पूर्णिमा, **श्रीगुरुनानक जयंती**, दीपदान, **G**	17	7/06	17/24	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/55
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	18	१	चंद्र	22	14	कृति	13	31	परि	15	46	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	18	7/07	17/23	6/50	17/23	6/55	17/19	6/52	17/55
	19	२	मंग	24	6	रोहि	15	45	शिव	16	1	मि. 29/00	सूर्य अनु. में 19/09	19	7/08	17/23	6/50	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	20	३	बुध	26	19	मृग	18	20	सिद्ध	16	32	मिथुन	भ. 13/13 से 26/19 तक, मंगल उ.फा. में 16/36, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	20	7/09	17/23	6/51	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
	21	४	गुरु	28	46	आर्द्रा	21	10	साध्य	17	15	मिथुन	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14)	21	7/10	17/22	6/52	17/22	6/57	17/18	6/54	17/55
	22	५	शुक्र	पूरा	दिन	पुर्न	24	9	शुभ	18	7	क. 17/24	सूर्य सायन धनु में 9/18, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	22	7/11	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
	23	५	शनि	7	19	पुष्य	27	7	शुक्ल	18	59	कर्क	शनि पूर्व में उदय 17/32	23	7/12	17/22	6/54	17/21	6/59	17/18	6/55	17/55
	24	६	रवि	9	48	आश्ले	29	52	ब्रह्म	19	44	सिं. 29/52	भ. 9/48 से 22/55 तक, बुध विशा. में 12/03,	24	7/13	17/21	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	25	७	चंद्र	12	1	मघा	पूरा	दिन	ऐंद्र	20	13	सिंह	**कालभैरवाष्टमी**	25	7/14	17/21	6/55	17/21	7/01	17/17	6/56	17/55
	26	८	मंग	13	46	मघा	8	13	वैधृ	20	18	सिंह	मंगल कन्या में 19/33,	26	7/15	17/21	6/56	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
	27	९	बुध	14	52	पू.फा.	9	59	विष्क	19	52	कं. 16/19	भ. 27/07 से,	27	7/16	17/20	6/57	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	28	१०	गुरु	15	12	उ.फा.	11	2	प्रीति	18	51	कन्या	भ. 15/12, तक,	28	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	29	११	शुक्र	14	44	हस्त	11	18	आयु	17	12	तु. 23/09	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**, शुक्र उ.षा. में 27/14	29	7/17	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/58	17/55
	30	१२	शनि	13	29	चित्रा	10	48	सौभा	14	56	तुला	शनि प्रदोष व्रत	30	7/18	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/59	17/55

A दीपदान, नवम्बर मास प्रारम्भ, श्रीहनुमान जयन्ती (देखें पृ. 83) **B** केतु अश्वि (4) में 7/00, कुबेर पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) **C** बलि व मार्गपाली पूजा, विश्वकर्मा पूजा (पं.), चन्द्रदर्शन **(D)** वक्री बुध पूर्व में उदय 23/37 **E** तुलसी विवाह 19/12 बाद (देखें पृष्ठ 83), शुक्र पू.षा. में 10/44, चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त, **F** [illegible]

वि. संवत 2070, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

वि. संवत् 2070, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश [सूर्य दक्षिण/उत्तरायणे] घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] [हेमन्त/शिशिर ऋतु:]	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
मार्ग कृ.	1	१३	रवि	11	30	स्वा.	9	35	शोभ	12	5	वृ. 26/15	भ. 11/30 से 22/13 तक, बुध वृश्चिक में 10/04, मासशिवरात्रि व्रत A	1	7/19	17/20	7/00	17/20	7/06	17/16	6/59	17/56
	2	१४	चंद्र	8	55	विशा. अनु.	7 29	44 26	अति सुक	8 29	46 3	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष/सोमवती अमावस** (8/55 बाद), सूर्य ज्येष्ठा में 23/27 B	2	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
	०	३०	चंद्र	29	53	०	०	०	०	०	०	००	अमावस तिथि क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	3	१	मंग	26	32	ज्ये.	26	50	धृति	25	6	ध. 26/50	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध अनु. में 15/03	3	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	4	२	बुध	23	4	मूल	24	6	शूल	21	2	धनु	चन्द्रदर्शन,	4	7/21	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	5	३	गुरु	19	38	पू.षा.	21	26	गंड	16	59	म. 26/47	भ. 30/02 से, **शुक्र मकर में 14/24**, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ C	5	7/22	17/20	7/03	17/20	7/09	17/16	7/02	17/57
	6	४	शुक्र	16	25	उ.षा.	18	59	वृद्धि	13	6	मकर	भ. 16/25 तक,	6	7/23	17/20	7/04	17/20	7/10	17/16	7/03	17/57
	7	५	शनि	13	34	श्रव	16	54	ध्रुव व्या.	9 30	28 13	कुं. 28/02	पंचक प्रारम्भ 28/02, श्रीरामविवाहोत्सव, श्रीपञ्चमी, नाग पंचमी	7	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
	8	६	रवि	11	11	धनि	15	18	हर्ष	27	25	कुम्भ	स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी	8	7/24	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/04	17/57
	9	७	चंद्र	9	22	शत	14	17	वज्र	25	7	कुम्भ	भ. 9/22 से 20/47 तक, मित्र (विष्णु) सप्तमी	9	7/25	17/20	7/06	17/21	7/12	17/17	7/05	17/58
	10	८	मंग	8	11	पू.भा.	13	54	सिद्धि	23	18	मी. 7/56	श्री दुर्गाष्टमी	10	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	11	९	बुध	7	39	उ.भा.	14	8	व्य.	21	59	मीन	श्रीनन्दा नवमी	11	7/27	17/21	7/07	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
	12	१०	गुरु	7	44	रेव	14	56	वरी	21	7	मे. 14/56	भ. 20/03 से, **पंचक समाप्त 14/56**, बुध ज्ये. में 7/20	12	7/28	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/07	17/59
	13	११	शुक्र	8	22	अश्वि	16	16	परि	20	39	मेष	भ. 8/22 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती**	13	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/18	7/07	17/59
	14	१२	शनि	9	29	भर	18	2	शिव	20	30	वृ. 24/32	शनि प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	14	7/29	17/22	7/09	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	15	१३	रवि	11	00	कृति	20	9	सिद्ध	20	39	वृष	सूर्य मूल 1 धनु में 26/28, **पौष संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल सं. D	15	7/30	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	16	१४	चंद्र	12	51	रोहि	22	35	साध्य	21	1	वृष	भ. 12/51 से 25/55 तक, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती**, श्रीसत्यनारायण व्रत	16	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
	17	१५	मंग	14	58	मृग	25	14	शुभ	21	34	मि.11/53	मार्गशीर्ष पूर्णिमा	17	7/31	17/23	7/11	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
पौष कृष्ण पक्ष	18	१	बुध	17	18	आर्द्रा	28	4	शुक्ल	22	16	मिथुन	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	18	7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/20	7/10	18/01
	19	२	गुरु	19	47	पुर्न	31	1	ब्रह्म	23	4	क. 24/16		19	7/32	17/23	7/12	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	20	३	शुक्र	22	21	पुष्य	पूरा	दिन	ऐंद्र	23	55	कर्क	भ. 9/04 से 22/21 तक, **बुध मूल 1 धनु में 20/56**	20	7/32	17/23	7/13	17/24	7/19	17/20	7/11	18/02
	21	४	शनि	24	53	पुष्य	10	00	वैधृ	24	44	कर्क	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय हेतु देखें पृ. 13-14, सूर्य सायन मकर में E	21	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
	22	५	रवि	27	14	अश्ले	12	53	विष्क	25	26	सिं.12/53	वक्री गुरु पुर्न. (1) में 11/11, शक पौष प्रारम्भ,	22	7/33	17/24	7/14	17/25	7/20	17/21	7/12	18/03
	23	६	चंद्र	29	16	मघा	15	33	प्रीति	25	53	सिंह	भ. 29/16 से, चेहलुम (मु.)	23	7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
	24	७	मंग	30	47	पू.फा.	17	50	आयु	25	59	कं. 24/19	भ. 18/02 तक,	24	7/34	17/26	7/15	17/26	7/21	17/23	7/13	18/04
	25	८	बुध	पूरा	दिन	उ.फा.	19	32	सौभा	25	35	कन्या	क्रिसमिस डे (बड़ा दिन), रुक्मणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	25	7/35	17/26	7/15	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
	26	८	गुरु	7	38	हस्त	20	32	शोभ	24	37	कन्या		26	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
	27	९	शुक्र	7	42	चित्रा	20	45	अति	23	00	तु. 8/45	भ. 19/19 से 30/56 तक,	27	7/36	17/27	7/16	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
	०	१०	शुक्र	30	56	०	०	०	०	०	०	००	दशमी तिथि क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	28	११	शनि	29	20	स्वा.	20	9	सुक	20	44	तुला	सफला एकादशी व्रत (स्मार्त), सूर्य पू.षा. में 28/43, बुध पू.षा. में 31/21	28	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
	29	१२	रवि	26	59	विशा	18	46	धृति	17	50	वृ. 13/11	**सफला एकादशी व्रत (वैष्णव)**, श्रीबोधनाचार्य जयन्ती	29	7/36	17/29	7/17	17/29	7/23	17/26	7/15	18/06
	30	१३	चंद्र	23	59	अनु.	16	42	शूल	14	23	वृश्चिक	भ. 23/59 से, **सोम प्रदोष व्रत**, मास शिवरात्रि व्रत	30	7/37	17/30	7/17	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
	31	१४	मंग	20	31	ज्ये.	14	6	गंड वृद्धि	10 30	28 15	ध. 14/06	भ. 10/15 तक, गण्डमूल विचार	31	7/37	17/31	7/18	17/31	7/24	17/27	7/15	18/07

A दिसम्बर मास प्रारम्भ **(B)** श्रीबालाजी जयन्ती, देविका स्नान **(C)** बुध पूर्व में अस्त 9/54 **(D)** अगले दिन, मंगल हस्त में 26/49, पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत
E 22/41, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, शुक्र वक्री 27/24

वि. संवत् 2070, जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य उत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
	1	३०	बुध	16	44	मूल	11	9	ध्रुव	25	50	धनु	पौष अमावस, जनवरी, सन् 2014 ई.प्रारम्भ	1	7/37	17/29	7/18	17/31	7/24	17/28	7/16	18/08
पौष शुक्ल पक्ष	2	१	गुरु	12	51	पू.षा. उ.षा.	8 28	1 56	व्या.	21	24	म. 13/14	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन,	2	7/37	17/30	7/18	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
	3	२	शुक्र	9	3	श्रव	26	5	हर्ष	17	7	मकर	रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	3	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
	०	३	शुक्र	29	31	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	4	४	शनि	26	27	धनि	23	39	वज्र	13	7	कुं. 12/48	भ. 15/59 से 26/27 तक, **पंचक प्रारम्भ 12/48**, राहु स्वा. (1) **(A)**	4	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
	5	५	रवि	24	00	शत	21	49	सिद्धि व्य.	9 30	32 29	कुम्भ	शनि विशा. (3) में 8/30, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 25/49 [शुक्र अस्त 8 जन.]	5	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	6	६	चंद्र	22	16	पू.भा.	20	42	वरी	28	2	मी. 14/54	बुध उ.षा. में 12/48, **वक्री शुक्र धनु में 23/29**	6	7/38	17/33	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	7	७	मंग	21	19	उ.भा.	20	20	परि	26	13	मीन	भ. 21/19 से,	7	7/38	17/34	7/19	17/35	7/25	17/32	7/17	18/12
	8	८	बुध	21	11	रेव	20	46	शिव	25	1	मे. 20/46	भ. 9/15 तक, **शुक्र पश्चिम में अस्त 25/49, बुध मकर में 13/19 B**	8	7/38	17/36	7/19	17/36	7/25	17/33	7/17	18/12
	9	९	गुरु	21	48	अश्वि	21	56	सिद्ध	24	23	मेष	गंडमूलादि विचार	9	7/39	17/37	7/19	17/37	7/25	17/34	7/17	18/13
	10	१०	शुक्र	23	4	भर	23	42	साध्य	24	14	वृ. 30/14	सूर्य उ.षा. में 30/39 [शुक्र उदय 14 जन.]	10	7/39	17/38	7/19	17/38	7/25	17/35	7/18	18/14
	11	११	शनि	24	51	कृति	25	58	शुभ	24	28	वृष	भ. 11/58 से 24/51 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**	11	7/39	17/38	7/20	17/38	7/25	17/36	7/18	18/14
	12	१२	रवि	26	59	रोहि	28	34	शुक्ल	24	58	वृष	वक्री शुक्र पू.षा. (4) में 12/33, स्वा. विवेकानंद जयंती	12	7/38	17/39	7/20	17/39	7/25	17/36	7/18	18/15
	13	१३	चंद्र	29	21	मृग	31	22	ब्रह्म	25	39	मि. 17/57	सोम प्रदोष व्रत, **लोहड़ी पर्व**,	13	7/38	17/39	7/19	17/40	7/25	17/37	7/19	18/16
	14	१४	मंग	पूरा	दिन	आर्द्रा	पूरा	दिन	ऐंद्र	26	25	मिथुन	**सूर्य मकर में 13/13, मकर संक्रान्ति**, मु. 15, पुण्यकाल सं. प्रातः **C**	14	7/38	17/40	7/19	17/41	7/25	17/38	7/19	18/17
	15	१४	बुध	7	51	आर्द्रा	10	17	वैधृ	27	14	क. 30/30	भ. 7/51 से 21/07 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत	15	7/38	17/42	7/19	17/42	7/25	17/39	7/19	18/17
	16	१५	गुरु	10	22	पुर्न.	13	14	विष्क	28	3	कर्क	**पौष पूर्णिमा**, वक्री गुरु आर्द्रा (4) में 15/15, माघस्नान प्रारम्भ	16	7/37	17/43	7/19	17/42	7/25	17/40	7/19	18/18
माघ कृष्ण पक्ष	17	१	शुक्र	12	52	पुष्य	16	9	प्रीति	28	49	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 28/52,	17	7/37	17/43	7/19	17/43	7/24	17/41	7/19	18/18
	18	२	शनि	15	17	अश्ले	18	59	आयु	29	29	सिं. 18/59	भ. 28/25 से, बुध पश्चिम में उदय 28/19, गंडमूलादि	18	7/37	17/44	7/19	17/44	7/24	17/42	7/19	18/19
	19	३	रवि	17	32	मघा	21	39	सौभा	30	00	सिंह	भ. 17/32 तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत**, चं.उ. (देखें पृ. 13-14) **D**	19	7/36	17/45	7/18	17/45	7/24	17/43	7/19	18/20
	20	४	चंद्र	19	33	पू.फा.	24	4	शोभ	30	17	कं. 30/36	सूर्य सायन कुम्भ में 9/21	20	7/36	17/46	7/18	17/46	7/24	17/43	7/19	18/20
	21	५	मंग	21	11	उ.फा.	26	6	अति	30	16	कन्या	शक माघ प्रारम्भ	21	7/36	17/47	7/18	17/47	7/24	17/44	7/19	18/21
	22	६	बुध	22	19	हस्त	27	39	सुक	29	49	कन्या	भ. 22/19 से, बुध धनि. में. 14/40	22	7/35	17/48	7/18	17/47	7/23	17/45	7/19	18/22
	23	७	गुरु	22	50	चित्रा	28	34	धृति	28	53	तु. 16/11	भ. 10/35 तक, स्वा. विवेकानन्द जयंती (मतान्तरे), नेताजी जयंती	23	7/35	17/49	7/17	17/48	7/23	17/46	7/19	18/22
	24	८	शुक्र	22	37	स्वा.	28	46	शूल	27	23	तुला	सूर्य श्रव. में 9/02	24	7/35	17/50	7/17	17/49	7/23	17/47	7/19	18/23
	25	९	शनि	21	38	विशा	28	13	गंड	25	16	वृ. 22/25		25	7/35	17/51	7/17	17/50	7/22	17/48	7/19	18/23
	26	१०	रवि	19	53	अनु.	26	55	वृद्धि	22	32	वृश्चिक	भ. 8/46 से 19/53 तक, **बुध कुम्भ में 23/54, भारत गणतंत्र दिवस**,	26	7/34	17/52	7/16	17/51	7/22	17/49	7/18	18/24
	27	११	चंद्र	17	25	ज्ये.	24	56	ध्रुव	19	15	ध. 24/56	**षट्तिला एकादशी व्रत**	27	7/33	17/53	7/16	17/52	7/21	17/50	7/18	18/24
	28	१२	मंग	14	21	मूल	22	25	व्या.	15	29	धनु	भौम प्रदोष व्रत, तिल द्वादशी	28	7/32	17/54	7/16	17/52	7/21	17/51	7/18	18/25
	29	१३	बुध	10	50	पू.षा.	19	30	हर्ष वज्र	11 31	21 00	म. 24/44	भ. 10/50 से 20/56 तक, मासशिवरात्रि व्रत	29	7/32	17/55	7/15	17/53	7/20	17/52	7/18	18/25
	०	१४	बुध	31	2	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	30	३०	गुरु	27	9	उ.षा.	16	24	सिद्धि	26	34	मकर	**माघ (मौनी) अमावस, मेला हरिद्वार, प्रयागराज आदि**	30	7/31	17/56	7/15	17/54	7/20	17/53	7/18	18/26
	31	१	शुक्र	23	22	श्रव.	13	18	व्य.	22	13	कुं. 23/48	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **पंचक प्रारम्भ 23/48, शुक्र मार्गी 26/20**	31	7/31	17/57	7/14	17/55	7/19	17/54	7/18	18/27

A केतु अश्वि (3) में 28/37 B पंचक समाप्त 20/46, गंडमूल विचार, श्रीदुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी व्रत C 6/49 से, मंगल चित्रा में 25/21, बुध श्रव. में 13/14, शुक्र पूर्व में उदय 28/52 D सौभाग्य सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी, गंडमूलादि

वि. संवत् 2070, फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

A केतु अश्वि (3) में 28/37 B पंचक समाप्त 20/46,

वि. संवत् 2070, फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचाग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर-वसन्त ऋतुः

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
माघ शुक्ल पक्ष	1	२	शनि	19	54	धनि	10	24	वरी	18	7	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, बुध शत. में 14/49, फरवरी, सन् 2014 ई. प्रारम्भ	1	7/30	17/57	7/14	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	2	३	रवि	16	55	शत / पू.भा.	7 / 30	55 / 00	परि	14	24	मी. 24/25	भ. 27/35 से, गौरी तृतीया व्रत, श्रीगणेश तिल चतुर्थी, वरद चौथ A	2	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
	3	४	चंद्र	14	35	उ.भा.	28	50	शिव	11	13	मीन	भ. 14/35 तक,	3	7/29	17/58	7/12	17/57	7/17	17/56	7/17	18/29
	4	५	मंग	13	1	रेव	28	28	सिद्ध / साध्य	8 / 30	38 / 43	मे. 28/28	**वसन्त पंचमी, पंचक समाप्त 28/28, मंगल तुला में 14/25,** गंडमूल	4	7/28	17/59	7/12	17/58	7/17	17/57	7/16	18/29
	5	६	बुध	12	19	अश्वि	28	57	शुभ	29	29	मेष	गण्डमूलादि विचार, दारिद्रयहर षष्ठी व्रत	5	7/28	18/00	7/11	17/59	7/16	17/58	7/16	18/30
	6	७	गुरु	12	29	भर	30	14	शुक्ल	28	52	मेष	भ. 12/29 से 24/58 तक, सूर्य धनि. में 12/07, रथ-आरोग्य सप्तमी B	6	7/27	18/02	7/11	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
	7	८	शुक्र	13	27	कृति	पूरा	दिन	ब्रह्म	28	49	वृ. 12/40	भीष्माष्टमी	7	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
	8	९	शनि	15	4	कृति	8	12	ऐंद्र	29	12	वृष		8	7/25	18/04	7/09	18/01	7/14	18/00	7/15	18/31
	9	१०	रवि	17	12	रोहि	10	41	वैधृ	29	52	मि. 24/04	भ. 30/29 से, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 23/15	9	7/24	18/05	7/09	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
	10	११	चंद्र	19	38	मृग.	13	31	विष्क	30	42	मिथुन	भ. 19/38 तक, **जया एकादशी व्रत**	10	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
	11	१२	मंग	22	12	आर्द्रा	16	29	प्रीति	पूरा	दिन	मिथुन	भीष्म द्वादशी, तिल द्वादशी	11	7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
	12	१३	बुध	24	45	पुर्न	19	29	प्रीति	7	35	क. 12/44	सूर्य कुम्भ में 26/13, **फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल **(C)**	12	7/22	18/07	7/06	18/05	7/11	18/04	7/13	18/33
	13	१४	गुरु	27	10	पुष्य	22	22	आयु	8	25	कर्क	भ. 27/10 से, **गुरु पुष्य योग**	13	7/21	18/08	7/05	18/05	7/10	18/04	7/12	18/34
	14	१५	शुक्र	29	23	आश्ले	25	5	सौभा	9	9	सिं. 25/05	भ. 16/17 तक, **माघ पूर्णिमा**, माघस्नान समाप्त, **श्रीगुरु रविदास जयंती (D)**	14	7/20	18/09	7/05	18/06	7/09	18/05	7/12	18/34
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	15	१	शनि	पूरा	दिन	मघा	27	35	शोभ	9	43	सिंह	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूलादि	15	7/19	18/09	7/04	18/07	7/08	18/06	7/11	18/35
	16	१	रवि	7	22	पू.फा.	29	49	अति	10	7	सिंह		16	7/18	18/10	7/03	18/08	7/07	18/07	7/11	18/35
	17	२	चंद्र	9	3	उ.फा.	पूरा	दिन	सुक	10	17	कं. 12/19	भ. 21/44 से प्रारम्भ,	17	7/17	18/11	7/02	18/08	7/06	18/08	7/10	18/36
	18	३	मंग	10	25	उ.फा.	7	44	धृति	10	12	कन्या	भ. 10/25 तक, **अंगारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 13), **वक्री बुध (E)**	18	7/16	18/12	7/01	18/09	7/05	18/09	7/09	18/36
	19	४	बुध	11	23	हस्त	9	17	शूल	9	50	तु. 21/54	सूर्य शत. में 16/43	19	7/15	18/13	7/00	18/10	7/04	18/09	7/09	18/37
	20	५	गुरु	11	54	चित्रा	10	24	गंड	9	7	तुला	शक फाल्गुन प्रारम्भ	20	7/14	18/14	6/59	18/11	7/03	18/10	7/08	18/37
	21	६	शुक्र	11	53	स्वा.	11	1	वृद्धि / ध्रुव	8 / 30	00 / 26	वृ. 29/06	भ. 11/53 से 23/35 तक, वक्री बुध पूर्व में उदय 25/50, **(F)**	21	7/13	18/15	6/59	18/11	7/02	18/11	7/08	18/37
	22	७	शनि	11	17	विशा.	11	4	व्या.	28	23	वृश्चिक		22	7/12	18/16	6/58	18/12	7/01	18/12	7/07	18/38
	23	८	रवि	10	4	अनु.	10	30	हर्ष	25	51	वृश्चिक		23	7/11	18/17	6/57	18/13	7/00	18/13	7/06	18/38
	24	९	चंद्र	8	14	ज्ये.	9	21	वज्र	22	51	ध. 9/21	भ. 19/03 से 29/51 तक, स्वामी दयानन्द जयन्ती, गण्डमूलादि	24	7/10	18/17	6/56	18/13	6/59	18/14	7/06	18/38
	०	१०	चंद्र	29	51	०	०	०	०	०	०	००	दशमी तिथि क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	25	११	मंग	26	58	मूल / पू.षा.	7 / 29	38 / 27	सिद्धि	19	26	धनु	विजया एकादशी व्रत स्मार्त	25	7/09	18/18	6/55	18/14	6/58	18/15	7/05	18/39
	26	१२	बुध	23	45	उ.षा.	26	56	व्य.	15	41	म. 10/51	**विजया एकादशी व्रत वैष्णव, शुक्र मकर में 11/48**	26	7/07	18/19	6/54	18/15	6/57	18/15	7/04	18/39
	27	१३	गुरु	20	19	श्रव	24	15	वरी	11	43	मकर	भ. 20/19 से 30/35 तक, प्रदोष व्रत, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**	27	7/06	18/20	6/53	18/15	6/56	18/16	7/03	18/39
	28	१४	शुक्र	16	50	धनि	21	32	परि. / शिव	7 / 27	40 / 40	कुं. 10/53	पंचक प्रारम्भ 10/53, **बुध मार्गी 19/34**	28	7/05	18/20	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39

A कुन्द चतुर्थी, रवि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ **B** पुत्र सप्तमी व्रत, अचला-भानु सप्तमी, **बुध वक्री 27/12** **(C)** सं. अगले दिन प्रातः 8/37 तक, प्रदोष व्रत, वक्री बुध धनि. (4) में 14/11
(D) श्रीसत्यनारायण व्रत **(E)** मकर में 17/43, सूर्य सायन मीन में 23/11, वसंत ऋतु प्रारम्भ **(F)** वक्री गुरु आर्द्रा (3) में 15/12, शुक्र उ.षा. में 14/01

वि. संवत् 2070, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण वसन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मि.	जम्मू सूर्यास्त घं.मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मि.	मुम्बई सूर्योदय घं.मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मि.
	1	३०	शनि	13	30	शत	19	1	सिद्ध	23	50	कुम्भ	फाल्गुन अमावस, मार्च सन् 2014 ई. प्रारम्भ, मंगल वक्री 21/52	1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	2	१	रवि	10	28	पू.भा.	16	50	साध्य	20	21	मी. 11/20	चन्द्रदर्शन, फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **शनि वक्री 20/58**	2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/01	18/40
	3	२	चंद्र	7	55	उ.भा.	15	11	शुभ	17	18	मीन	श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती, जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
	०	३	चंद्र	30	00	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	4	४	मंग	28	49	रेव	14	12	शुक्ल	14	48	मे. 14/12	भ. 17/25 से 28/49 तक, सूर्य पू.भा. में 22/57, **पंचक समाप्त 14/12**	4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
	5	५	बुध	28	27	अश्वि	13	59	ब्रह्म	12	56	मेष	याज्ञवल्क्य जयंती	5	6/58	18/26	6/46	18/19	6/49	18/20	7/00	18/42
	6	६	गुरु	28	54	भर	14	34	ऐंद्र	11	42	वृ. 20/50	**गुरु मार्गी 16/10**	6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/48	18/20	6/59	18/42
	7	७	शुक्र	30	6	कृति	15	55	वैधृ	11	6	वृष	भ. 30/06 से,	7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
	8	८	शनि	पूरा	दिन	रोहि	17	57	विष्क	11	3	वृष	भ. 19/01 तक, **होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा अष्टमी	8	6/54	18/29	6/43	18/21	6/45	18/22	6/57	18/43
	9	८	रवि	7	56	मृग	20	30	प्रीति	11	27	मि. 7/11	राहु चित्रा (4), केतु अश्वि (2) में 8/00	9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
	10	९	चंद्र	10	12	आर्द्रा	23	23	आयु	12	10	मिथुन	शुक्र श्रव. में 19/37	10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
	11	१०	मंग	12	41	पुनं	26	22	सौभा	13	2	क. 19/37	भ. 25/57 से,	11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/42	18/24	6/54	18/44
	12	११	बुध	15	12	पुष्य	29	17	शोभ	13	55	कर्क	भ. 15/12 तक, **बुध कुम्भ में 9/33, आमलकी एकादशी व्रत, A**	12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
	13	१२	गुरु	17	33	आश्ले	पूरा	दिन	अति	14	41	कर्क		13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
	14	१३	शुक्र	19	37	आश्ले	7	59	सुक	15	16	सिं. 7/59	**सूर्य मीन में 23/06, चैत्र संक्रान्ति**, मु. 30, प्रदोष व्रत, पुण्यकाल **B**	14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/26	6/52	18/44
	15	१४	शनि	21	20	मघा	10	23	धृति	15	35	सिंह	भ. 21/20 से प्रारम्भ, महेश्वर व्रत	15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
	16	१५	रवि	22	38	पू.फा.	12	24	शूल	15	36	कं.18/50	भ. 9/59, **फाल्गुन पूर्णिमा**, होलिका दहन (भद्रा बाद), **होली पर्व C**	16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
चैत्र कृष्ण पक्ष	17	१	चंद्र	23	32	उ.फा.	14	1	गंड	15	18	कन्या	चैत्र कृष्णपक्ष प्रा., वसन्तोत्सव, होली एवं होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा सा.)	17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/35	18/27	6/50	18/44
	18	२	मंग	24	1	हस्त	15	15	वृद्धि	14	41	तु. 27/42	सूर्य उ.भा. में 7/26, बुध शत. में 18/47, सन्त तुकाराम जयन्ती	18	6/42	18/35	6/32	18/27	6/34	18/27	6/49	18/45
	19	३	बुध	24	4	चित्रा	16	4	ध्रुव	13	45	तुला	भ. 12/03 से 24/04 तक, गुरु आर्द्रा (4) में 21/05	19	6/41	18/36	6/31	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
	20	४	गुरु	23	43	स्वा.	16	29	व्या.	12	29	तुला	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-14), श्रीभगवान्नारायण जयंती **D**	20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/31	18/29	6/47	18/45
	21	५	शुक्र	22	57	विशा	16	30	हर्ष	10	55	वृ. 10/32	श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रा.	21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/30	18/30	6/46	18/45
	22	६	शनि	21	47	अनु.	16	7	वज्र	9	00	वृश्चिक	भ. 21/47 से, शक चैत्र व सन् 1936 प्रारम्भ, एकनाथ षष्ठी	22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/29	18/30	6/45	18/46
	23	७	रवि	20	12	ज्ये.	15	20	सिद्धि व्य.	6 28	47 14	ध. 15/20	भ. 9/00 तक, शीतला सप्तमी	23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
	24	८	चंद्र	18	15	मूल	14	10	वरी	25	24	धनु	शीतलाष्टमी व्रत, शुक्र धनि. में 21/03	24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
	25	९	मंग	15	58	पू.षा.	12	40	परि	22	19	म. 18/15	भ. 26/41 से, **वक्री मंगल कन्या में 9/48**	25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/25	18/32	6/44	18/47
	26	१०	बुध	13	24	उ.षा.	10	53	शिव	19	2	मकर	भ. 13/24 तक,	26	6/33	18/41	6/22	18/31	6/24	18/33	6/43	18/47
	27	११	गुरु	10	40	श्रव	8	55	सिद्ध	15	37	कुं. 19/54	**पंचक प्रारम्भ 19/54, पापमोचनी एकादशी व्रत**	27	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47
	28	१२	शुक्र	7	52	धनि. शत	6 28	52 52	साध्य	12	10	कुम्भ	भ. 29/06 से, प्रदोष व्रत, बुध पू.भा. में 20/10, **वारुणी योग E**	28	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
	०	१३	शुक्र	29	6	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि क्षय ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	29	१४	शनि	26	31	पू.भा.	27	2	शुभ शुक्ल	8 29	47 33	मी. 21/28	भ. 15/49 तक, मासशिवरात्रि व्रत, मेला पृथूदक-पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	29	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48
	30	३०	रवि	24	15	उ.भा.	25	31	ब्रह्म	26	37	मीन	**चैत्र अमावस, वि. संवत् 2070 पूर्ण**	30	6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48

(A) गोविन्द द्वादशी (B) सं. मध्याह्न बाद (C) होलाष्टक समाप्त, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती D सूर्य सायन मेष में 22/27, उत्तर गोल प्रारम्भ, महाविषुव दिवस
E स्नान दानादि पुण्य प्रात: 7/52 से 29 मार्च की प्रात: 4/52 तक

...का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् २०७० (सन् 2013-14 ई.)

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टै. टा.) वि. संवत् २०७० (सन् 2013-14 ई.)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अप्रैल 2013	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
10/11 अप्र.	अश्वि.	21	29	3	53	10	18	16	42
11/12 अप्र.	भरणी	23	07	5	39	12	11	18	43
13 अप्र.	कृतिका	1	15	7	51	14	32	21	10
14 अप्र.	रोहिणी	3	49	10	32	17	16	23	59
15/16 अप्र.	मृग.	6	43	13	29	20	14	3	00
16/17 अप्र.	आर्द्रा	9	46	16	31	23	17	6	02
17/18 अप्र.	पुर्न	12	47	19	28	2	09	8	52
18/19 अप्र.	पुष्य	15	31	22	05	4	39	11	13
19/20 अप्र.	आश्ले	17	47	0	12	6	36	13	01
20/21 अप्र.	मघा	19	26	1	39	7	53	14	06
21/22 अप्र.	पू.फा.	20	20	2	22	8	25	14	27
22/23 अप्र.	उ.फा.	20	30	2	26	8	14	14	06
23/24 अप्र.	हस्त	19	58	1	40	7	23	13	05
24/25 अप्र.	चित्रा	18	47	0	22	6	00	11	31
25/26 अप्र.	स्वा.	17	06	22	35	4	05	9	34
26/27 अप्र.	विशा.	15	03	20	29	1	55	7	22
27/28 अप्र.	अनु.	12	47	18	11	23	36	5	00
28/29 अप्र.	ज्येष्ठा	10	25	15	50	21	16	2	41
29/30 अप्र.	मूल	8	07	13	35	19	04	0	32
30 अप्र.	पू.षा.	6	00	11	32	17	05	22	37
1 मई	उ.षा.	4	10	9	46	15	27	21	05
2 मई	श्रवण	2	43	8	28	14	13	19	58
3 मई	धनि	1	43	7	35	13	23	19	20
4 मई	शत	1	12	7	11	13	11	19	11
5 मई	पू.भा.	1	11	7	18	13	26	19	31
6 मई	उ.भा.	1	41	7	56	14	11	20	26
7 मई	रेवती	2	41	9	03	15	24	21	46
8 मई	अश्वि	4	08	10	37	17	05	23	34
9/10 मई	भरणी	6	03	12	37	19	12	1	46
10/11 मई	कृतिका	8	20	14	58	21	39	4	18
11/12 मई	रोहिणी	10	58	17	41	0	25	7	08
12/13 मई	मृग	13	51	20	37	3	22	10	08
13/14 मई	आर्द्रा	16	54	23	40	6	25	13	11
14/15 मई	पुर्न	19	57	2	41	9	24	16	10
15/16 मई	पुष्य	22	52	5	31	12	10	18	49

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मई 2013	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
17 मई	आश्ले	1	28	8	00	14	31	21	03
18 मई	मघा	3	35	9	57	16	20	22	42
19 मई	पू.फा.	5	04	11	15	17	27	23	38
20 मई	उ.फा.	5	50	11	54	17	49	23	49
21 मई	हस्त	5	49	11	38	17	26	23	15
22 मई	चित्रा	5	04	10	42	16	25	21	59
23 मई	स्वाती	3	37	9	06	14	36	20	05
24 मई	विशाखा	1	35	6	58	12	21	17	46
24/25 मई	अनु	23	07	4	26	9	45	15	04
25/26 मई	ज्येष्ठा	20	23	1	40	6	58	12	15
26/27 मई	मूल	17	32	22	50	4	08	9	26
27/28 मई	पू.षा.	14	44	20	05	1	27	6	48
28/29 मई	उ.षा.	12	10	17	34	23	05	4	32
29/30 मई	श्रवण	9	59	15	34	21	08	2	43
30/31 मई	धनि.	8	18	14	02	19	42	1	31
31/1 जून	शत	7	15	13	09	19	04	0	58
1/2 जून	पू.भा.	6	53	12	58	19	02	1	03
2/3 जून	उ.भा.	7	12	13	27	19	42	1	57
3/4 जून	रेवती	8	12	14	36	21	00	3	24
4/5 जून	अश्वि	9	48	16	19	22	51	5	22
5/6 जून	भरणी	11	54	18	31	1	09	7	46
6/7 जून	कृति	14	24	21	05	3	47	10	29
7/8 जून	रोहि	17	11	23	56	6	40	13	25
8/9 जून	मृग	20	10	2	56	9	41	16	27
9/10 जून	आर्द्रा	23	13	5	59	12	44	19	30
11 जून	पुर्न	2	16	9	00	15	44	22	29
11/12 जून	पुष्य	5	12	11	53	18	33	1	14
12/13 जून	अश्ले	7	55	14	31	21	06	3	42
14/15 जून	मघा	10	18	16	47	23	15	5	44
15/16 जून	पूफा	12	13	18	33	0	53	7	13
16/17 जून	उफा	13	33	19	47	1	54	8	04
17/18 जून	हस्त	14	14	20	13	2	12	8	11
18/19 जून	चित्रा	14	10	19	58	1	51	7	34
19/20 जून	स्वाती	13	22	19	00	0	37	6	15
20/21 जून	विशाखा	11	53	17	21	22	50	4	21

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जून 2013	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
21/22 जून	अनु.	9	47	15	08	20	30	1	51
22 जून	ज्येष्ठा	7	12	12	28	17	45	23	01
23 जून	मूल	4	17	9	31	14	46	20	00
24 जून	पू.षा.	1	14	6	29	11	43	16	58
24/25 जून	उ.षा.	22	13	3	29	8	49	14	07
25/26 जून	श्रवण	19	25	0	49	6	14	11	38
26/27 जून	धनि	17	03	22	36	4	04	9	42
27/28 जून	शत	15	15	20	58	2	42	8	25
28/29 जून	पू.भा.	14	09	20	05	2	00	7	51
29/30 जून	उ.भा.	13	52	20	00	2	07	8	15
30/1 जुला	रेवती	14	23	20	43	3	02	9	22
1/2 जुला	अश्वि	15	42	22	12	4	42	11	12
2/3 जुला	भरणी	17	41	0	18	6	56	13	34
3/4 जुला	कृतिका	20	11	2	52	9	37	16	20
4/5 जुला	रोहिणी	23	03	5	49	12	34	19	20
6 जुला	मृग	2	06	8	52	15	38	22	25
7/8 जुला	आर्द्रा	5	11	11	56	18	42	1	27
8/9 जुला	पुर्न	8	12	14	55	21	37	4	22
9/10 जुला	पुष्य	11	03	17	42	0	22	7	02
10/11 जुला	आश्ले	13	42	20	17	2	53	9	28
11/12 जुला	मघा	16	03	22	33	5	03	11	33
12/13 जुला	पू.फा.	18	03	0	27	6	51	13	15
13/14 जुला	उ.फा.	19	39	1	58	8	12	14	28
14/15 जुला	हस्त	20	45	2	53	9	00	15	08
15/16 जुला	चित्रा	21	16	3	15	9	18	15	12
16/17 जुला	स्वाती	21	10	2	59	8	47	14	36
17/18 जुला	विशाखा	20	25	2	04	7	44	13	26
18/19 जुला	अनु	19	02	0	32	6	03	11	33
19/20 जुला	ज्येष्ठा	17	04	22	28	3	51	9	15
20/21 जुला	मूल	14	38	19	57	1	15	6	34
21/22 जुला	पू.षा.	11	53	17	09	22	25	3	41
22/23 जुला	उ.षा.	8	57	14	12	19	30	0	46
23 जुला	श्रवण	6	02	11	21	16	41	22	00
24 जुला	धनि	3	20	8	46	14	08	19	37
25 जुला	शत	1	03	6	37	12	12	17	46

↕ चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.) ↕

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जुला. 2013	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
25/26जुला	पू.भा.	23	21	5	06	10	52	16	33
26/27जुला	उ.भा.	22	22	4	20	10	17	16	15
27/28जुला	रेवती	22	13	4	24	10	34	16	45
28/29जुला	अश्वि	22	56	5	18	11	41	18	03
30 जुला.	भरणी	0	26	6	59	13	33	20	06
31 जुला.	कृतिका	2	39	9	17	16	00	22	40
1/2 अग	रोहिणी	5	21	12	06	18	52	1	37
2/3 अग	मृग	8	22	15	08	21	54	4	41
3/4 अग	आर्द्रा	11	27	18	12	0	57	7	42
4/5 अग	पुर्न	14	27	21	09	3	50	10	34
5/6 अग	पुष्य	17	14	23	51	6	29	13	06
6/7 अग	अश्ले	19	44	2	16	8	49	15	21
7/8 अग	मघा	21	53	4	20	10	48	17	15
8/9 अग	पू.फा.	23	42	6	04	12	25	18	47
10 अगस्त	उ.फा.	1	09	7	27	13	41	19	57
11 अगस्त	हस्त	2	13	8	23	14	32	20	42
12 अगस्त	चित्रा	2	52	8	55	15	02	21	02
13 अगस्त	स्वाती	3	05	9	01	14	58	20	54
14 अगस्त	विशाखा	2	50	8	38	14	27	20	18
15 अगस्त	अनु	2	04	7	45	13	27	19	08
16 अगस्त	ज्येष्ठा	2	49	6	23	11	58	17	32
16/17 अग	मूल	23	06	4	35	10	03	15	32
17/18 अग	पू.षा.	21	01	2	25	7	50	13	14
18/19 अग	उ.षा.	18	38	0	01	5	23	10	45
19/20 अग	श्रवण	16	08	21	31	2	54	8	17
20/21 अग	धनि	13	40	19	06	0	30	5	58
21/22 अग	शत	11	24	16	56	22	27	3	59
22/23 अग	पू.भा.	9	31	15	11	20	52	2	28
23/24 अग	उ.भा.	8	12	14	02	19	53	1	43
24/25 अग	रेवती	7	33	15	35	19	37	1	39
25/26 अग	अश्वि.	7	41	13	55	20	10	2	24
26/27 अग	भरणी	8	38	15	04	21	29	3	55
27/28 अग	कृतिका	10	21	16	53	23	32	6	07
28/29 अग	रोहिणी	12	42	19	24	2	05	8	47
29/30 अग	मृग	15	29	22	14	4	59	11	45

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अग. 2013	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
30/31 अग	आर्द्रा	18	30	1	15	8	00	14	45
31/1 सितं.	पुर्न	21	30	4	12	10	54	17	37
2 सितं.	पुष्य	0	18	6	55	13	31	20	08
3 सितं.	अश्ले	2	45	9	15	15	46	22	16
4 सितं.	मघा	4	46	11	09	17	33	23	56
5/6 सितं.	पू.फा.	6	20	12	37	18	54	1	11
6/7 सितं.	उ.फा.	7	28	13	41	19	49	2	00
7/8 सितं.	हस्त	8	11	14	16	20	21	2	26
8/9 सितं.	चित्रा	8	31	14	31	20	34	2	31
9/10 सितं.	स्वाती	8	31	14	26	20	22	2	17
10/11सितं.	विशाखा	8	12	14	02	19	53	1	44
11/12सितं.	अनु	7	33	13	19	19	04	0	50
12 सितं.	ज्येष्ठा	6	36	12	17	17	59	23	40
13 सितं.	मूल	5	22	10	59	16	37	22	14
14 सितं.	पू.षा.	3	52	9	26	15	01	20	35
15 सितं.	उ.षा.	2	09	7	42	13	14	18	46
16 सितं.	श्रवण	0	19	5	51	11	23	16	55
16/17सितं.	धनि	22	27	4	00	9	32	15	07
17/18सितं.	शत	20	40	2	17	7	53	13	30
18/19सितं.	पू.भा.	19	07	0	49	6	32	12	11
19/20सितं.	उ.भा.	17	56	23	46	5	35	11	25
20/21सितं.	रेवती	17	15	23	14	5	12	11	11
21/22सितं.	अश्वि	17	10	23	19	5	28	11	37
22/23सितं.	भरणी	17	46	0	05	6	25	12	44
23/24सितं.	कृतिका	19	04	1	30	8	03	14	32
24/25सितं.	रोहिणी	21	01	3	38	10	16	16	53
25/26सितं.	मृग	23	31	6	14	12	54	19	39
27 सितं.	आर्द्रा	2	22	9	06	15	51	22	35
28/29सितं.	पुर्न	5	20	12	03	18	47	1	31
29/30सितं.	पुष्य	8	13	14	51	21	30	4	08
30/1 अक्तू.	अश्ले	10	47	17	18	23	50	6	21
1/2 अक्तू.	मघा	12	53	19	16	1	40	8	03
2/3 अक्तू.	पू.फा.	14	27	20	42	2	56	9	11
3/4 अक्तू.	उ.फा.	15	26	21	35	3	39	9	45
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अक्तू. 2013	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
5/6 अक्तू.	चित्रा	15	48	21	40	3	36	9	25
6/7 अक्तू.	स्वाती	15	18	21	06	2	53	8	41
7/8 अक्तू.	विशाखा	14	29	20	12	1	56	7	41
8/9 अक्तू.	अनु	13	23	19	04	0	45	6	26
9/10 अक्तू.	ज्येष्ठा	12	07	17	46	23	26	5	05
10/11अक्तू.	मूल	10	44	16	22	22	00	3	38
11/12अक्तू.	पू.षा.	9	16	14	54	20	32	2	10
12/13अक्तू.	उ.षा.	7	48	13	26	19	05	0	43
13 अक्तू.	श्रवण	6	22	12	02	17	41	23	21
14 अक्तू.	धनि	5	01	10	43	16	24	22	06
15 अक्तू.	शत	3	48	9	34	15	20	21	06
16 अक्तू.	पू.भा.	2	52	8	42	14	31	20	19
17 अक्तू.	उ.भा.	2	11	8	06	14	02	19	57
18 अक्तू.	रेवती	1	53	7	55	13	57	19	59
19 अक्तू.	अश्वि	2	01	8	11	14	20	20	30
20 अक्तू.	भरणी	2	40	8	58	15	16	21	34
21 अक्तू.	कृतिका	3	52	10	15	16	45	23	11
22/23अक्तू.	रोहिणी	5	37	12	11	18	45	1	19
23/24अक्तू.	मृग	7	53	14	33	21	10	3	53
24/25अक्तू.	आर्द्रा	10	33	17	17	0	00	6	44
25/26अक्तू.	पुर्न	13	28	20	12	2	57	9	41
26/27अक्तू.	पुष्य	16	25	23	07	5	49	12	31
27/28अक्तू.	अश्ले	19	13	1	49	8	26	15	02
28/29अक्तू.	मघा	21	38	4	06	10	34	17	02
29/30अक्तू.	पू.फा.	23	30	5	48	12	07	18	25
31 अक्तू.	उ.फा.	0	43	6	55	12	59	19	07
1 नवं.	हस्त	1	15	7	12	13	10	19	08
2 नवं.	चित्रा	1	05	6	53	12	47	18	30
3 नवं.	स्वाती	0	19	6	00	11	41	17	22
3/4 नवं.	विशाखा	23	03	4	38	10	14	15	50
4/5 नवं.	अनु	21	24	2	55	8	27	13	58
5/6 नवं.	ज्येष्ठा	19	29	0	58	6	28	11	57
6/7 नवं.	मूल	17	27	22	56	4	26	9	56
7/8 नवं.	पू.षा.	15	25	20	56	2	28	7	59
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

↕ चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.) ↕

↕ चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.) ↕

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
नवं. 2013	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9/10 नवं.	श्रवण	11	48	17	27	23	06	04	45
10/11 नवं.	धनि	10	24	16	08	21	50	3	37
11/12 नवं.	शत.	9	21	15	11	21	02	2	52
12/13 नवं.	पू.भा.	8	42	14	38	20	35	2	28
13/14 नवं.	उ.भा.	8	27	14	29	20	32	2	34
14/15 नवं.	रेवती	8	37	14	46	20	55	3	04
15/16 नवं.	अश्वि.	9	13	15	28	21	44	3	59
16/17 नवं.	भरणी	10	14	16	35	22	57	5	18
17/18 नवं.	कृतिका	11	40	18	05	0	35	7	03
18/19 नवं.	रोहिणी	13	31	20	04	2	38	9	11
19/20 नवं.	मृग	15	45	22	24	5	00	11	41
20/21 नवं.	आर्द्रा	18	20	1	02	7	45	14	27
21/22 नवं.	पुर्न	21	10	3	55	10	39	17	24
23 नवं.	पुष्य	24	09	6	53	13	38	20	22
24 नवं.	अश्ले	3	07	9	48	16	30	23	11
25/26 नवं.	मघा	5	52	12	27	19	03	1	38
26/27 नवं.	पू.फा.	8	13	14	39	21	06	3	32
27/28 नवं.	उ.फा.	9	59	16	19	22	30	4	46
28/29 नवं.	हस्त	11	02	17	06	23	10	5	14
29/30 नवं.	चित्रा	11	18	17	10	23	09	4	55
30/1 दिसं.	स्वाती	10	48	16	30	22	11	3	53
1/2 दिसं.	विशाखा	9	35	15	07	20	40	2	15
2/3 दिसं.	अनु.	7	44	13	12	18	40	0	08
3 दिसं.	ज्येष्ठा	5	26	10	47	16	08	21	29
4 दिसं.	मूल	2	50	8	09	13	28	18	47
5 दिसं.	पू.षा.	0	06	5	26	10	46	16	06
5/6 दिसं.	उ.षा.	21	26	2	47	8	13	13	36
6/7 दिसं.	श्रवण	18	59	0	28	5	56	11	25
7/8 दिसं.	धनि	16	54	22	30	4	02	9	42
8/9 दिसं.	शत	15	18	21	03	2	47	8	32
9/10 दिसं.	पू.भा.	14	17	20	11	2	06	7	56
10/11 दिसं	उ.भा.	13	54	19	57	2	01	8	04
11/12 दिसं	रेवती	14	08	20	20	2	32	8	44
12/13 दिसं	अश्वि	14	56	21	16	3	36	9	56
13/14 दिसं	भरणी	16	16	22	42	5	09	11	35

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
दिसं. 2013	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
14/15 दिसं	कृतिका	18	02	0	32	7	05	13	37
15/16 दिसं	रोहिणी	20	09	2	45	9	22	15	58
16/17 दिसं	मृग	22	35	5	15	11	53	18	34
18 दिसं	आर्द्रा	1	14	7	56	14	39	21	21
19/20 दिसं	पुर्न	4	04	10	48	17	33	0	16
20/21 दिसं	पुष्य	7	01	13	46	20	30	3	15
21/22 दिसं	अश्ले	10	00	16	43	23	27	6	10
22/23 दिसं	मघा	12	53	19	33	2	13	8	53
23/24 दिसं	पू.फा.	15	33	22	07	4	42	11	16
24/25 दिसं	उ.फा.	17	50	0	19	6	41	13	06
25/26 दिसं	हस्त	19	32	1	47	8	02	14	17
26/27 दिसं	चित्रा	20	32	2	35	8	45	14	42
27/28 दिसं	स्वाती	20	45	2	36	8	27	14	18
28/29 दिसं	विशा.	20	09	1	48	7	28	13	11
29/30 दिसं	अनु	18	46	0	15	5	44	11	13
30/31 दिसं	ज्येष्ठा	16	42	22	03	3	24	8	45
31/1 जन.	मूल.	14	06	19	22	0	37	5	53
1/2 जन2014	पू.षा.	11	09	16	22	21	35	2	48
2 जन	उ.षा.	8	01	13	14	18	28	23	42
3 जन	श्रवण	4	56	10	13	15	31	20	48
4 जन	धनि	2	05	7	28	12	48	18	15
4/5 जन	शत	23	39	5	11	10	44	16	16
5/6 जन	पू.भा.	21	49	3	32	9	16	14	54
6/7 जन	उ.भा.	20	42	2	36	8	31	14	25
7/8 जन	रेवती	20	20	2	26	8	33	14	39
8/9 जन	अश्वि	20	46	3	03	9	21	15	38
9/10 जन	भरणी	21	56	4	22	10	49	17	15
10/11 जन	कृतिका	23	42	6	14	12	50	19	24
12 जन	रोहिणी	1	58	8	37	15	16	21	55
13/14 जन	मृग	4	34	11	16	17	57	0	40
14/15 जन	आर्द्रा	7	22	14	06	20	49	3	33
15/16 जन	पुर्न	10	17	17	01	23	46	6	30
16/17 जन	पुष्य	13	14	19	58	2	41	9	25
17/18 जन	अश्ले	16	09	22	51	5	34	12	16
18/19 जन	मघा	18	59	1	39	8	19	14	59

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जन. 2014	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
19/20 जन	पू.फा.	21	39	4	15	10	52	17	28
21 जन	उ.फा.	24	04	6	36	13	05	19	35
22 जन	हस्त	2	06	8	29	14	53	21	16
23 जन	चित्रा	3	39	9	53	16	11	22	20
24 जन	स्वाती	4	34	10	37	16	40	22	43
25 जन	विशाखा	4	46	10	38	16	29	22	25
26 जन	अनु	4	13	9	53	15	34	21	14
27 जन	ज्येष्ठा	2	55	8	25	13	56	19	26
28 जन	मूल	0	56	6	18	11	41	17	03
28/29 जन	पू.षा.	22	25	3	41	8	58	14	14
29/30 जन	उ.षा.	19	30	0	44	5	57	11	10
30/31 जन	श्रवण	16	24	21	37	2	51	8	04
31/1 फर	धनि	13	18	18	34	23	48	5	07
1/2 फर	शत	10	24	15	47	21	09	2	32
2/3 फर	पू.भा.	7	55	13	26	18	58	0	25
3 फर	उ.भा.	6	00	11	42	17	25	23	07
4 फर	रेवती	4	50	10	44	16	39	22	33
5 फर	अश्वि	4	28	10	35	16	43	22	50
6 फर	भरणी	4	57	11	16	17	36	23	55
7/8 फर	कृतिका	6	14	12	40	19	13	1	42
8/9 फर	रोहि.	8	12	14	49	21	27	4	04
9/10 फर	मृग.	10	41	17	23	0	04	6	48
10/11 फर	आर्द्रा	13	31	20	15	3	00	9	44
11/12 फर	पुर्न	16	29	23	14	5	59	12	44
12/13 फर	पुष्य	19	29	2	12	8	56	15	39
13/14 फर	अश्ले	22	22	5	03	11	43	18	24
15 फर	मघा	1	05	7	42	14	20	20	57
16 फर	पू.फा.	3	35	10	08	16	42	23	15
17/18 फर	उ.फा.	5	49	12	19	18	46	1	15
18/19 फर	हस्त	7	44	14	07	20	31	2	54
19/20 फर	चित्रा	9	17	15	34	21	54	4	07
20/21 फर	स्वाती	10	24	16	33	23	43	4	52
21/22 फर	विशाखा	11	01	17	02	23	02	5	06
22/23 फर	अनु.	11	04	16	55	22	47	4	38
23/24 फर	ज्येष्ठा	10	30	16	13	21	55	3	38

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
फर. 2014	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
24/25 फर.	मूल	9	21	14	55	20	30	2	04
25/26 फर.	पू.षा.	7	38	13	05	18	33	0	00
26 फर.	उ.षा.	5	27	10	51	16	12	21	34
27 फर.	श्रवण	2	56	8	16	13	35	18	55
28 फर.	धनि.	0	15	5	34	10	53	16	13
28/1 मार्च	शत	21	32	2	54	8	17	13	39
1/2 मार्च	पू.भा.	19	01	0	28	5	56	11	20
2/3 मार्च	उ.भा.	16	50	22	25	4	01	9	36
3/4 मार्च	रेवती	15	11	20	56	2	42	8	27
4/5 मार्च	अश्वि	14	12	20	09	2	05	8	02
5/6 मार्च	भरणी	13	59	20	08	2	16	8	25
6/7 मार्च	कृतिका	14	34	20	50	3	15	9	35
7/8 मार्च	रोहिणी	15	55	22	25	4	56	11	26
8/9 मार्च	मृग	17	57	0	35	7	11	13	52
9/10 मार्च	आर्द्रा	20	30	3	13	9	57	16	40
10/11 मार्च	पुर्न	23	23	6	08	12	52	19	37
12 मार्च	पुष्य	2	22	9	06	15	49	22	33
13/14 मार्च	आश्ले	5	17	11	57	18	38	1	18
14/15 मार्च	मघा	7	59	14	35	21	11	3	47
15/16 मार्च	पू.फा.	10	23	16	53	23	24	5	54
16/17 मार्च	उ.फा.	12	24	18	50	1	13	7	37
17/18 मार्च	हस्त	14	01	20	19	2	38	8	56
18/19 मार्च	चित्रा	15	15	21	27	3	42	9	52
19/20 मार्च	स्वाती	16	04	22	10	4	17	10	23
20/21 मार्च	विशाखा	16	29	22	29	4	30	10	32
21/22 मार्च	अनु.	16	30	22	24	4	19	10	13
22/23 मार्च	ज्येष्ठा	16	07	21	55	3	44	9	32
23/24 मार्च	मूल	15	20	21	02	2	45	8	27
24/25 मार्च	पू.षा.	14	10	19	47	1	25	7	02
25/26 मार्च	उ.षा.	12	40	18	15	23	48	5	21
26/27 मार्च	श्रवण	10	53	16	23	21	54	3	24
27/28 मार्च	धनि	8	55	14	24	19	54	1	23
28 मार्च	शत	6	52	12	22	17	52	23	22
29 मार्च	पू.भा.	4	52	10	24	15	57	21	28
30 मार्च	उ.भा.	3	02	8	39	14	17	19	54

मध्यम एवं स्पष्ट राहु-केतु (Mean and True Rahu)

जैसा कि **'पंचाँग दिवाकर'** के सुविज्ञ पाठक जानते होंगे कि राहु-केतु प्रत्यक्ष चक्षुओं से दिखाई देने वाले ग्रह नहीं, बल्कि सम्पात् बिन्दु हैं। इसी कारण इन्हें छाया ग्रह कहते हैं। क्रान्ति वृत्त पर चन्द्रमा तथा पृथ्वी की परिक्रमणपथ-दोनों एक दूसरे को काटते हैं। उन्हीं दो सम्पात बिन्दुओं को राहु-केतु कहते हैं। उत्तरी सम्पात बिन्दु को राहु तथा दक्षिणी सम्पात् बिन्दु को केतु कहते हैं। अद्यकाल में राहु या केतु के भोगांश के लिए दो प्रकार की गति का आकलन किया जाता है, **मध्यम और स्पष्ट।** पंचांग प्रणाली के प्रारम्भकाल से ही (सुविधा की दृष्टि से) हमारे पूर्वज **पंचांगों में** राहु की मध्यम गति 3 कला, 11 विकला (3 कला, 10.7708″ विकला) की दैनिक गति का प्रयोग करते आए हैं। जबकि गत कुछ वर्षों से, विशेषकर कम्पयूटर प्रणाली के आगमन से कम्पयूटर में **स्पष्ट राहु** (True and apparant position) का प्रयोग होने लगा है। **मध्यम राहु एवं स्पष्ट राहु में** अधिकतम अन्तर लगभग 1¾ अंशों का अन्तर सम्भव है। **मध्यम राहु** में तो राहु की गति लगभग एक समान ३, ११ कला/विकला रहती है तथा राहु सदा वक्री (Retrograte) रहता है, परन्तु स्पष्ट राहु (True Rahu) में राहु की गति चंद्र-बुध की गति की भान्ति एक समान नहीं रहती, कभी मार्गी भी हो जाती है। इसी कारण मध्यम राहु एवं स्पष्ट राहु द्वारा राशि-परिवर्तन के समय में कुछ दिनों का अन्तर पड़ जाता है। जैसे कि सन् 2014 ई० में **मध्यम राहु** की गति अपेक्षाकृत कुछ अधिक होने से राहु 12 जुला., 2014 ई. को कन्या राशि में प्रविष्ट होगा, जबकि **स्पष्ट राहु** की गति अल्पतर होने से वह 13 जुलाई, 2014 ई. को कन्या राशि में प्रविष्ट होगा।

स्पष्ट राहु का भोग निस्सन्देह **मध्यम राहु** की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मतर है, परन्तु **फलित** ज्योतिष की दृष्टि से इस विषय पर अभी गहन अनुसंधान की आवश्यकता है।

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

- आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पूफा, उफा., हस्त, चित्रा, स्वाती-इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।
- विशा., अनु., ज्ये., मूल, पूषा, उषा, श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।
- रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)
- पूभा, उभा = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता।। चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं–मान लीजिए, आपको **12 अप्रैल, 2013 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **12 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट (11–28°–12′–13″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 12 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (13) अप्रै. में से 12 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (58′/51″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17–12) कला तथा 30 मिनट की गति (1–14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′-26) हुई, इसको **12 अप्रैल प्रातः सूर्य स्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 12 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11–28°–30′–39″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3′	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5′	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7′	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9′	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11′	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13′	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15′	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17′	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19′	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21′	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23′	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25′	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27′	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29′	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31′	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33′	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35′	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37′	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39′	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41′	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43′	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45′	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47′	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49′	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51′	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53′	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55′	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57′	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58′	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59′	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60′	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61′	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63′	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65′	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67′	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69′	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71′	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73′	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75′	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77′	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79′	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81′	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83′	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85′	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87′	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89′	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90′	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92′	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94′	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96′	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98′	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99′	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100′	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102′	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104′	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106′	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108′	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110′	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112′	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114′	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116′	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118′	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2070 (सन् 2013-14 ई.)

नोट–अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। *(11 अप्रै. से 13 मई तक)* 1 मई, 2013 ई० को अयनांश, 24°/02′/48″

ता.	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि (वक्री)				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रांति		चंद्र क्रांति		ता.
अप्रै.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	
11	11	27	13	20	0	4	12	6	11	28	47	51	11	1	33	7	1	19	32	23	0	0	37	8	6	15	27	4	6	24	15	12	6	22	51	30	+8	18	+12	25	11
12	11	28	12	13	0	16	37	3	11	29	33	18	11	2	56	11	1	19	43	21	0	1	51	28	6	15	22	50	6	24	12	02	6	22	50	21	8	41	15	34	12
13	11	29	11	4	0	28	49	6	0	00	18	42	11	4	21	3	1	19	54	23	0	3	5	47	6	15	18	34	6	24	8	51	6	22	50	26	9	03	17	57	13
14	0	0	9	53	1	10	50	30	0	1	4	3	11	5	47	42	1	20	5	30	0	4	20	3	6	15	14	15	6	24	5	40	6	22	51	26	9	24	19	30	14
15	0	1	8	40	1	22	44	12	0	1	49	22	11	7	16	8	1	20	16	43	0	5	34	19	6	15	9	55	6	24	2	29	6	22	53	00	9	46	20	10	15
16	0	2	7	24	2	4	33	57	0	2	34	37	11	8	46	16	1	20	28	2	0	6	48	35	6	15	5	34	6	23	59	19	6	22	54	39	10	07	19	55	16
17	0	3	6	7	2	16	24	0	0	3	19	49	11	10	18	7	1	20	39	25	0	8	2	48	6	15	1	10	6	23	56	08	6	22	56	02	10	29	18	48	17
18	0	4	4	47	2	28	19	0	0	4	4	58	11	11	51	39	1	20	50	53	0	9	17	1	6	14	56	45	6	23	52	57	6	22	56	49	10	50	16	51	18
19	0	5	3	25	3	10	23	46	0	4	50	4	11	13	26	52	1	21	2	26	0	10	31	12	6	14	52	19	6	23	49	46	6	22	56	51	11	10	14	09	19
20	0	6	2	1	3	22	42	57	0	5	35	7	11	15	3	46	1	21	14	3	0	11	45	22	6	14	47	51	6	23	46	35	6	22	56	05	11	31	10	47	20
21	0	7	00	34	4	5	20	45	0	6	20	7	11	16	42	19	1	21	25	44	0	12	59	30	6	14	43	21	6	23	43	25	6	22	54	40	11	52	6	52	21
22	0	7	59	6	4	18	20	30	0	7	5	4	11	18	22	33	1	21	37	30	0	14	13	37	6	14	38	51	6	23	40	14	6	22	52	52	12	12	+2	31	22
23	0	8	57	35	5	1	44	11	0	7	49	58	11	20	4	29	1	21	49	20	0	15	27	44	6	14	34	20	6	23	37	03	6	22	50	58	12	32	–2	06	23
24	0	9	56	2	5	15	32	1	0	8	34	49	11	21	48	5	1	22	1	15	0	16	41	48	6	14	29	48	6	23	33	52	6	22	49	19	12	52	–6	44	24
25	0	10	54	27	5	29	42	7	0	9	19	37	11	23	33	23	1	22	13	14	0	17	55	52	6	14	25	16	6	23	30	42	6	22	48	07	13	11	–11	09	25
26	0	11	52	51	6	14	10	31	0	10	4	22	11	25	20	23	1	22	25	17	0	19	9	55	6	14	20	43	6	23	27	31	6	22	47	32	13	31	–15	00	26
27	0	12	51	12	6	28	51	31	0	10	49	4	11	27	9	6	1	22	37	24	0	20	23	56	6	14	16	10	6	23	24	20	6	22	47	31	13	50	–17	57	27
28	0	13	49	32	7	13	38	19	0	11	33	43	11	28	59	31	1	22	49	35	0	21	37	57	6	14	11	36	6	23	21	09	6	22	47	57	14	09	–19	44	28
29	0	14	47	50	7	28	23	58	0	12	18	19	0	0	51	40	1	23	1	50	0	22	51	56	6	14	7	3	6	23	17	58	6	22	48	37	14	28	–20	08	29
30	0	15	46	7	8	13	2	8	0	13	2	51	0	2	45	31	1	23	14	8	0	24	5	54	6	14	2	29	6	23	14	47	6	22	49	16	14	46	–19	11	30
मई	0	16	44	22	8	27	27	52	0	13	47	22	0	4	41	5	1	23	26	30	0	25	19	51	6	13	57	56	6	23	11	37	6	22	49	43	+15	04	–17	00	मई
2	0	17	42	35	9	11	37	52	0	14	31	49	0	6	38	22	1	23	38	56	0	26	33	48	6	13	53	23	6	23	8	26	6	22	49	55	15	22	–13	49	2
3	0	18	40	47	9	25	30	23	0	15	16	13	0	8	37	20	1	23	51	26	0	27	47	43	6	13	48	51	6	23	5	15	6	22	49	50	15	39	–9	56	3
4	0	19	38	58	10	9	5	1	0	16	0	34	0	10	37	56	1	24	3	59	0	29	1	38	6	13	44	19	6	23	2	04	6	22	49	35	15	57	–5	37	4
5	0	20	37	7	10	22	22	18	0	16	44	52	0	12	40	8	1	24	16	35	1	0	15	31	6	13	39	48	6	22	58	53	6	22	49	17	16	14	–1	07	5
6	0	21	35	15	11	5	23	22	0	17	29	7	0	14	43	51	1	24	29	14	1	1	29	24	6	13	35	18	6	22	55	43	6	22	49	3	16	31	+3	21	6
7	0	22	33	22	11	18	9	35	0	18	13	20	0	16	49	2	1	24	41	57	1	2	43	16	6	13	30	49	6	22	52	32	6	22	48	58	16	48	+7	36	7
8	0	23	31	26	0	0	42	28	0	18	57	29	0	18	55	33	1	24	54	43	1	3	57	6	6	13	26	21	6	22	49	21	6	22	49	1	17	04	+11	26	8
9	0	24	29	30	0	13	3	34	0	19	41	35	0	21	3	17	1	25	7	32	1	5	10	56	6	13	21	55	6	22	46	10	6	22	49	8	17	20	+14	44	9
10	0	25	27	32	0	25	14	25	0	20	25	37	0	23	12	3	1	25	20	22	1	6	24	44	6	13	17	29	6	22	42	59	6	22	49	13	17	36	17	20	10
11	0	26	25	32	1	7	16	42	0	21	9	36	0	25	21	43	1	25	33	17	1	7	38	31	6	13	13	6	6	22	39	49	6	22	49	9	17	52	19	07	11
12	0	27	23	29	1	19	12	15	0	21	53	33	0	27	32	4	1	25	46	15	1	8	52	18	6	13	8	44	6	22	36	38	6	22	48	51	18	07	20	03	12
13	0	28	21	26	2	1	3	21	0	22	37	26	0	29	42	50	1	25	59	15	1	10	6	3	6	13	4	25	6	22	33	27	6	22	48	17	+18	22	20	04	13

(14 मई से 18 जून 2013 ई. तक) ... 2013 ई. को अयनांश 24°/02′/52″

[illegible]	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(14 मई से 18 जून 2013 ई. तक) 1 जून 2013 ई. को अयनांश 24°/02'/52"

ता. मई	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.
14	0 29 19 22	2 12 52 36	0 23 21 17	1 1 53 47	1 26 12 18	1 11 19 48	6 13 0 7	6 22 30 16	6 22 47 28	+18 37	+19 12
15	1 0 17 15	2 24 43 6	0 24 5 4	1 4 4 40	1 26 25 23	1 12 33 31	6 12 55 52	6 22 27 05	6 22 46 31	18 51	17 30
16	1 1 15 7	3 6 38 23	0 24 48 46	1 6 15 10	1 26 38 29	1 13 47 12	6 12 51 38	6 22 23 55	6 22 45 35	19 05	15 03
17	1 2 12 57	3 18 42 26	0 25 32 27	1 8 25 2	1 26 51 39	1 15 0 54	6 12 47 27	6 22 20 44	6 22 44 51	19 19	11 55
18	1 3 10 46	4 0 59 29	0 26 16 4	1 10 33 59	1 27 4 51	1 16 14 32	6 12 43 19	6 22 17 33	6 22 44 27	19 32	8 15
19	1 4 8 33	4 13 33 47	0 26 59 37	1 12 41 43	1 27 18 06	1 17 28 00	6 12 39 14	6 22 14 22	6 22 44 31	19 45	+4 08
20	1 5 6 18	4 26 29 18	0 27 43 8	1 14 47 59	1 27 31 22	1 18 41 47	6 12 35 12	6 22 11 11	6 22 45 2	19 58	−0 17
21	1 6 4 1	5 9 49 15	0 28 26 35	1 16 52 33	1 27 44 40	1 19 55 23	6 12 31 12	6 22 8 1	6 22 45 55	20 10	−4 50
22	1 7 1 43	5 23 35 32	0 29 9 59	1 18 55 11	1 27 58 0	1 21 8 58	6 12 27 15	6 22 4 50	6 22 46 56	20 22	−9 18
23	1 7 59 24	6 7 48 3	0 29 53 19	1 20 55 42	1 28 11 22	1 22 22 31	6 12 23 22	6 22 1 39	6 22 47 46	20 34	−13 24
24	1 8 57 3	6 22 24 22	1 0 36 37	1 22 53 56	1 28 24 46	1 23 36 3	6 12 19 32	6 21 58 28	6 22 48 8	20 45	−16 47
25	1 9 54 40	7 7 19 11	1 1 19 50	1 24 49 44	1 28 38 11	1 24 49 33	6 12 15 45	6 21 55 18	6 22 47 46	20 56	−19 08
26	1 10 52 17	7 22 24 55	1 2 3 1	1 26 42 59	1 28 51 38	1 26 3 3	6 12 12 1	6 21 52 7	6 22 46 34	21 07	−20 09
27	1 11 49 52	8 7 32 31	1 2 46 9	1 28 33 36	1 29 5 7	1 27 16 32	6 12 8 22	6 21 48 56	6 22 44 38	21 17	−19 43
28	1 12 47 26	8 22 32 41	1 3 29 14	2 0 21 30	1 29 18 38	1 28 30 0	6 12 4 46	6 21 45 45	6 22 42 14	21 27	−17 54
29	1 13 44 59	9 7 17 22	1 4 12 14	2 2 6 36	1 29 32 9	1 29 43 25	6 12 1 13	6 21 42 35	6 22 39 46	21 36	−14 55
30	1 14 42 32	9 21 40 50	1 4 55 13	2 3 48 52	1 29 45 42	2 0 56 51	6 11 57 45	6 21 39 24	6 22 37 40	21 46	−11 06
31	1 15 40 3	10 5 39 59	1 5 38 9	2 5 28 15	1 29 59 16	2 2 10 16	6 11 54 20	6 21 36 13	6 22 36 21	21 54	−6 47
जून 1	1 16 37 34	10 19 14 13	1 6 21 1	2 7 4 44	2 0 12 52	2 3 23 39	6 11 51 0	6 21 33 2	6 22 36 0	22 03	−2 14
2	1 17 35 4	11 2 24 57	1 7 3 50	2 8 38 16	2 0 26 29	2 4 37 2	6 11 47 43	6 21 29 52	6 22 36 37	22 11	+2 18
3	1 18 32 33	11 15 14 50	1 7 46 36	2 10 8 49	2 0 40 7	2 5 50 24	6 11 44 31	6 21 26 41	6 22 37 58	22 18	6 37
4	1 19 30 2	11 27 47 7	1 8 29 20	2 11 36 21	2 0 53 47	2 7 3 45	6 11 41 25	6 21 23 30	6 22 39 36	22 25	10 33
5	1 20 27 29	0 10 5 16	1 9 12 0	2 13 0 51	2 1 7 27	2 8 17 5	6 11 38 21	6 21 20 19	6 22 40 59	22 32	13 58
6	1 21 24 57	0 22 12 34	1 9 54 36	2 14 22 15	2 1 21 7	2 9 30 23	6 11 35 22	6 21 17 8	6 22 41 35	22 39	16 44
7	1 22 22 23	1 4 11 52	1 10 37 10	2 15 40 34	2 1 34 49	2 10 43 42	6 11 32 28	6 21 13 58	6 22 40 58	22 45	18 45
8	1 23 19 48	1 16 5 46	1 11 19 40	2 16 55 44	2 1 48 32	2 11 56 58	6 11 29 39	6 21 10 47	6 22 38 52	22 50	19 55
9	1 24 17 13	1 27 56 28	1 12 2 8	2 18 7 42	2 2 2 16	2 13 10 14	6 11 26 54	6 21 7 36	6 22 35 16	22 55	20 11
10	1 25 14 37	2 9 45 56	1 12 44 32	2 19 16 22	2 2 16 0	2 14 23 29	6 11 24 15	6 21 4 25	6 22 30 21	23 00	19 34
11	1 26 12 0	2 21 36 9	1 13 26 52	2 20 21 43	2 2 29 44	2 15 36 42	6 11 21 39	6 21 1 15	6 22 24 31	23 05	18 05
12	1 27 9 22	3 3 29 12	1 14 9 10	2 21 23 40	2 2 43 29	2 16 49 55	6 11 19 9	6 20 57 4	6 22 18 21	23 09	15 50
13	1 28 6 43	3 15 27 29	1 14 51 25	2 22 22 9	2 2 57 15	2 18 3 6	6 11 16 45	6 20 54 53	6 22 12 28	23 12	12 54
14	1 29 4 3	3 27 33 46	1 15 33 36	2 23 17 4	2 3 11 1	2 19 16 16	6 11 14 25	6 20 51 42	6 22 7 31	23 15	9 25
15	2 0 1 23	4 9 51 15	1 16 15 44	2 24 8 20	2 3 24 47	2 20 29 25	6 11 12 11	6 20 48 32	6 22 3 55	23 18	5 28
16	2 0 58 41	4 22 23 35	1 16 57 49	2 24 55 52	2 3 38 33	2 21 42 32	6 11 10 2	6 20 45 21	6 22 1 57	23 21	+1 14
17	2 1 55 59	5 5 14 30	1 17 39 51	2 25 39 32	2 3 52 20	2 22 55 38	6 11 7 58	6 20 42 10	6 22 1 32	23 22	−3 11
18	2 2 53 16	5 18 27 39	1 18 21 49	2 26 19 15	2 4 6 6	2 24 8 43	6 11 6 0	6 20 38 59	6 22 2 17	+23 24	−7 35

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(19 जून से 24 जुलाई 2013 ई. तक)*

1 जुलाई, 2013 ई. को अयनांश 24°/02′/57″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
19	2 3 50 32	6 2 5 57	1 19 3 43	2 26 54 54	2 4 19 52	2 25 21 45	6 11 4 6	6 20 35 48	6 22 3 30	+23 25	−11 45	19
20	2 4 47 47	6 16 11 3	1 19 45 35	2 27 26 25	2 4 33 36	2 26 34 47	6 11 2 18	6 20 32 38	6 22 4 23	23 26	−15 23	20
21	2 5 45 2	7 0 42 17	1 20 27 23	2 27 53 41	2 4 47 23	2 27 47 47	6 11 0 36	6 20 29 27	6 22 4 9	23 26	−18 12	21
22	2 6 42 15	7 15 36 15	1 21 9 9	2 28 16 36	2 5 1 9	2 29 0 46	6 10 59 0	6 20 26 16	6 22 2 12	23 26	−19 51	22
23	2 7 39 29	8 0 46 21	1 21 50 50	2 28 35 4	2 5 14 54	3 0 13 43	6 10 57 28	6 20 23 05	6 21 58 21	23 25	−20 07	23
24	2 8 36 42	8 16 3 19	1 22 32 30	2 28 49 2	2 5 28 39	3 1 26 39	6 10 56 3	6 20 19 54	6 21 52 47	23 25	−18 54	24
25	2 9 33 54	9 1 16 25	1 23 14 6	2 28 58 26	2 5 42 24	3 2 39 34	6 10 54 43	6 20 16 43	6 21 46 8	23 23	−16 21	25
26	2 10 31 7	9 16 15 22	1 23 55 39	2 29 3 14	2 5 56 8	3 3 52 28	6 10 53 29	6 20 13 33	6 21 39 14	23 21	−12 44	26
27	2 11 28 19	10 0 51 57	1 24 37 10	2 29 3 27	2 6 9 52	3 5 5 20	6 10 52 21	6 20 10 22	6 21 33 02	23 19	−8 27	27
28	2 12 25 31	10 15 1 7	1 25 18 36	2 28 59 4	2 6 23 34	3 6 18 9	6 10 51 17	6 20 7 11	6 21 28 15	23 17	−3 48	28
29	2 13 22 44	10 28 41 12	1 26 00 0	2 28 50 14	2 6 37 17	3 7 30 59	6 10 50 20	6 20 4 00	6 21 25 20	23 14	+0 52	29
30	2 14 19 56	11 11 53 22	1 26 41 21	2 28 37 2	2 6 50 59	3 8 43 47	6 10 49 21	6 20 0 49	6 21 24 15	23 10	+5 22	30
जुला	2 15 17 9	11 24 40 45	1 27 22 40	2 28 19 37	2 7 4 40	3 9 56 33	6 10 48 43	6 19 57 39	6 21 24 34	+23 06	9 28	जुला
2	2 16 14 21	0 7 7 39	1 28 3 55	2 27 58 15	2 7 18 20	3 11 9 19	6 10 48 3	6 19 54 28	6 21 25 33	23 02	13 04	2
3	2 17 11 34	0 19 18 41	1 28 45 7	2 27 33 11	2 7 32 0	3 12 22 3	6 10 47 30	6 19 51 17	6 21 26 15	22 58	16 02	3
4	2 18 8 47	1 1 18 32	1 29 26 17	2 27 4 47	2 7 45 38	3 13 34 46	6 10 47 2	6 19 48 06	6 21 25 45	22 53	18 15	4
5	2 19 6 0	1 13 11 22	2 0 7 23	2 26 33 27	2 7 59 16	3 14 47 28	6 10 46 40	6 19 44 56	6 21 23 18	22 47	19 39	5
6	2 20 3 14	1 25 0 44	2 0 48 26	2 25 59 37	2 8 12 51	3 16 0 7	6 10 46 23	6 19 41 45	6 21 18 27	22 41	20 10	6
7	2 21 0 27	2 6 49 32	2 1 29 27	2 25 23 54	2 8 26 27	3 17 12 46	6 10 46 12	6 19 38 34	6 21 11 9	22 35	19 48	7
8	2 21 57 41	2 18 40 5	2 2 10 24	2 24 46 49	2 8 40 1	3 18 25 23	6 10 46 8मा	6 19 35 23	6 21 1 40	22 29	18 34	8
9	2 22 54 55	3 0 34 10	2 2 51 19	2 24 8 59	2 8 53 33	3 19 37 59	6 10 46 10	6 19 32 12	6 20 50 39	22 22	16 32	9
10	2 23 52 8	3 12 33 18	2 3 32 10	2 23 31 3	2 9 7 4	3 20 50 33	6 10 46 17	6 19 29 01	6 20 39 1	22 14	13 47	10
11	2 24 49 22	3 24 38 53	2 4 12 57	2 22 53 39	2 9 20 33	3 22 3 5	6 10 46 30	6 19 25 51	6 20 27 46	22 6	10 26	11
12	2 25 46 36	4 6 52 33	2 4 53 42	2 22 17 28	2 9 34 1	3 23 15 35	6 10 46 49	6 19 22 40	6 20 17 53	21 58	6 37	12
13	2 26 43 50	4 19 16 13	2 5 34 24	2 21 43 8	2 9 47 27	3 24 28 4	6 10 47 15	6 19 19 29	6 20 10 9	21 50	+2 28	13
14	2 27 41 4	5 1 52 14	2 6 15 3	2 21 11 14	2 10 0 51	3 25 40 31	6 10 47 46	6 19 16 18	6 20 4 59	21 41	−1 51	14
15	2 28 38 18	5 14 43 30	2 6 55 39	2 20 42 24	2 10 14 14	3 26 52 56	6 10 48 23	6 19 13 07	6 20 2 18	21 32	−6 10	15
16	2 29 35 33	5 27 53 7	2 7 36 11	2 20 17 7	2 10 27 35	3 28 5 19	6 10 49 6	6 19 9 57	6 20 1 34	21 22	−10 19	16
17	3 0 32 47	6 11 24 3	2 8 16 41	2 19 55 52	2 10 40 54	3 29 17 41	6 10 49 55	6 19 6 46	6 20 1 49	21 12	−14 03	17
18	3 1 30 1	6 25 18 36	2 8 57 8	2 19 39 5	2 10 54 11	4 0 30 0	6 10 50 50	6 19 3 35	6 20 1 51	21 2	−17 07	18
19	3 2 27 15	7 9 37 30	2 9 37 30	2 19 27 8	2 11 7 24	4 1 42 16	6 10 51 50	6 19 0 24	6 20 0 32	20 51	−19 13	19
20	3 3 24 30	7 24 19 9	2 10 17 51	2 19 20 18	2 11 20 37	4 2 54 31	6 10 52 57	6 18 57 13	6 19 57 1	20 40	−20 05	20
21	3 4 21 45	8 9 18 56	2 10 58 8	2 19 18 51	2 11 33 48	4 4 6 44	6 10 54 9	6 18 54 03	6 19 50 56	20 29	−19 34	21
22	3 5 19 0	8 24 29 9	2 11 38 23	2 19 22 58	2 11 46 56	4 5 18 54	6 10 55 27	6 18 50 52	6 19 42 30	20 17	−17 39	22
23	3 6 16 16	9 9 39 52	2 12 18 34	2 19 32 48	2 12 0 1	4 6 31 1	6 10 56 50	6 18 47 41	6 19 32 29	20 05	−14 30	23
24	3 7 13 32	9 24 40 28	2 12 58 42	2 19 48 28	2 12 13 4	4 7 43 7	6 10 58 20	6 18 44 30	6 19 22 1	+19 52	−10 27	24

1 अगस्त, 2013 ई. को अयनांश 24°/03′/02″

(25 जुला. से 29 अग. 2013 ई. तक)

मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति

1 अगस्त, 2013 ई. को अयनांश 24°/03'/02''

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (25 जुला. से 29 अग. 2013 ई. तक)

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (मार्गी)	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जुलाई
जुला	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं. क.वि.	रा. अं. क.वि.	अं.क.	अं.क.	
25	3 8 10 49	10 9 21 34	2 13 38 48	2 20 9 59	2 12 26 5	4 8 55 11	6 10 59 55	6 18 41 20	6 19 12 16	+19 40	–5 51	25
26	3 9 8 7	10 23 36 34	2 14 18 51	2 20 37 27	2 12 39 3	4 10 7 13	6 11 1 36	6 18 38 9	6 19 4 16	19 27	-1 04	26
27	3 10 5 26	11 7 22 17	2 14 58 51	2 21 10 50	2 12 51 59	4 11 19 12	6 11 3 28	6 18 34 58	6 18 58 38	19 13	+3 38	27
28	3 11 2 45	11 20 38 48	2 15 38 48	2 21 50 7	2 13 4 52	4 12 31 10	6 11 5 15	6 18 31 47	6 18 55 24	18 59	+8 00	28
29	3 12 0 6	0 3 28 41	2 16 18 42	2 22 35 16	2 13 17 43	4 13 43 5	6 11 7 13	6 18 28 36	6 18 54 8	18 45	11 51	29
30	3 12 57 28	0 15 56 10	2 16 58 34	2 23 26 12	2 13 30 30	4 14 54 58	6 11 9 17	6 18 25 26	6 18 53 58	18 31	15 03	30
31	3 13 54 50	0 28 6 22	2 17 38 23	2 24 22 51	2 13 43 15	4 16 6 49	6 11 11 26	6 18 22 15	6 18 53 46	18 16	17 31	31
अग.	3 14 52 14	1 10 4 31	2 18 18 10	2 25 25 9	2 13 55 57	4 17 18 37	6 11 13 41	6 18 19 04	6 18 52 27	18 02	19 10	अग.
2	3 15 49 39	1 21 55 41	2 18 57 52	2 26 32 56	2 14 8 34	4 18 30 23	6 11 16 0	6 18 15 53	6 18 49 8	17 46	19 58	2
3	3 16 47 5	2 3 44 23	2 19 37 33	2 27 46 5	2 14 21 10	4 19 42 7	6 11 18 26	6 18 12 43	6 18 43 12	17 31	19 52	3
4	3 17 44 32	2 15 34 21	2 20 17 11	2 29 4 27	2 14 33 42	4 20 53 49	6 11 20 58	6 18 9 32	6 18 34 30	17 15	18 54	4
5	3 18 42 0	2 27 28 33	2 20 56 46	3 0 27 51	2 14 46 11	4 22 5 29	6 11 23 35	6 18 6 21	6 18 23 21	16 59	17 06	5
6	3 19 39 30	3 9 29 10	2 21 36 18	3 1 56 5	2 14 58 37	4 23 17 6	6 11 26 17	6 18 3 10	6 18 10 26	16 42	14 33	6
7	3 20 37 0	3 21 37 39	2 22 15 46	3 3 28 52	2 15 10 58	4 24 28 39	6 11 29 4	6 17 59 59	6 17 56 44	16 26	11 22	7
8	3 21 34 31	4 3 54 54	2 22 55 12	3 5 5 59	2 15 23 16	4 25 40 11	6 11 31 57	6 17 56 48	6 17 43 24	16 09	7 40	8
9	3 22 32 3	4 16 21 34	2 23 34 35	3 6 47 7	2 15 35 31	4 26 51 40	6 11 34 55	6 17 53 38	6 17 31 34	15 52	+3 36	9
10	3 23 29 37	4 28 58 22	2 24 13 55	3 8 31 57	2 15 47 41	4 28 3 7	6 11 37 58	6 17 50 27	6 17 22 8	15 34	–0 41	10
11	3 24 27 11	5 11 46 10	2 24 53 12	3 10 20 6	2 15 59 48	4 29 14 31	6 11 41 8	6 17 47 16	6 17 15 36	15 17	–5 00	11
12	3 25 24 46	5 24 46 21	2 25 32 26	3 12 11 15	2 16 11 51	5 0 25 51	6 11 44 22	6 17 44 05	6 17 11 57	14 59	–9 09	12
13	3 26 22 22	6 8 0 42	2 26 11 38	3 14 4 58	2 16 23 50	5 1 37 9	6 11 47 41	6 17 40 55	6 17 10 36	14 41	–12 56	13
14	3 27 20 0	6 21 31 10	2 26 50 46	3 16 0 53	2 16 35 45	5 2 48 24	6 11 51 5	6 17 37 44	6 17 10 33	14 22	–16 08	14
15	3 28 17 37	7 5 19 33	2 27 29 51	3 17 58 37	2 16 47 36	5 3 59 36	6 11 54 34	6 17 34 33	6 17 10 33	14 04	–18 28	15
16	3 29 15 15	7 19 26 49	2 28 8 53	3 19 57 46	2 16 59 22	5 5 10 44	6 11 58 9	6 17 31 22	6 17 9 21	13 45	–19 44	16
17	4 0 12 55	8 3 52 18	2 28 47 52	3 21 57 58	2 17 11 3	5 6 21 48	6 12 1 47	6 17 28 12	6 17 6 00	13 26	–19 45	17
18	4 1 10 36	8 18 33 8	2 29 26 48	3 23 58 53	2 17 22 41	5 7 32 50	6 12 5 31	6 17 25 01	6 17 00 06	13 07	–18 26	18
19	4 2 8 18	9 3 23 58	3 0 5 42	3 26 0 12	2 17 34 14	5 8 43 48	6 12 9 20	6 17 21 50	6 16 51 48	12 47	–15 52	19
20	4 3 6 1	9 18 17 11	3 0 44 33	3 28 1 38	2 17 45 42	5 9 54 43	6 12 13 13	6 17 18 39	6 16 41 49	12 28	–12 16	20
21	4 4 3 45	10 3 4 1	3 1 23 20	4 0 2 55	2 17 57 6	5 11 5 34	6 12 17 12	6 17 15 29	6 16 31 16	12 08	–7 56	21
22	4 5 1 30	10 17 35 57	3 2 2 5	4 2 3 51	2 18 8 25	5 12 16 21	6 12 21 15	6 17 12 18	6 16 21 21	11 48	–3 13	22
23	4 5 59 18	11 1 46 19	3 2 40 47	4 4 4 13	2 18 19 39	5 13 27 5	6 12 25 22	6 17 9 07	6 16 13 6	11 27	+1 35	23
24	4 6 57 6	11 15 30 58	3 3 19 27	4 6 3 53	2 18 30 48	5 14 37 45	6 12 29 34	6 17 5 56	6 16 7 10	11 07	6 09	24
25	4 7 54 57	11 28 48 44	3 3 58 3	4 8 2 41	2 18 41 53	5 15 48 22	6 12 33 51	6 17 2 45	6 16 3 43	10 46	10 17	25
26	4 8 52 49	0 11 40 59	3 4 36 37	4 10 0 33	2 18 52 51	5 16 58 55	6 12 38 12	6 16 59 35	6 16 2 23	10 26	13 48	26
27	4 9 50 43	0 24 11 0	3 5 15 9	4 11 57 22	2 19 3 46	5 18 9 24	6 12 42 38	6 16 56 24	6 16 2 25	10 05	16 34	27
28	4 10 48 38	1 6 23 17	3 5 53 36	4 13 53 3	2 19 14 34	5 19 19 49	6 12 47 7	6 16 53 13	6 16 2 51	9 44	18 30	28
29	4 11 46 36	1 18 23 1	3 6 32 2	4 15 47 36	2 19 25 17	5 20 30 11	6 12 51 41	6 16 50 02	6 16 2 36	+9 22	+19 35	29

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(30 अगस्त से 4 अक्तूबर, 2013 ई. तक)*

1 सितंबर, 2013 ई. को अयनांश 24°/03'/05'' 1 अक्तू., 2013 ई. को अयनांश 24°/03'/08''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (मार्गी)	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अगस्त
अग.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
30	4 12 44 35	2 0 15 27	3 7 10 25	4 17 40 57	2 19 35 55	5 21 40 30	6 12 56 20	6 16 46 52	6 16 0 51	+9 01	+19 46	30
31	4 13 42 36	2 12 5 38	3 7 48 45	4 19 33 6	2 19 46 27	5 22 50 44	6 13 1 3	6 16 43 41	6 15 57 1	8 39	19 05	31
सितं.	4 14 40 39	2 23 58 6	3 8 27 2	4 21 24 0	2 19 56 53	5 24 0 55	6 13 5 51	6 16 40 30	6 15 50 52	8 18	17 33	सितं.
2	4 15 38 44	3 5 56 39	3 9 5 16	4 23 13 40	2 20 7 14	5 25 11 2	6 13 10 42	6 16 37 19	6 15 42 36	7 56	15 16	2
3	4 16 36 50	3 18 4 17	3 9 43 28	4 25 2 6	2 20 17 29	5 26 21 5	6 13 15 38	6 16 34 08	6 15 32 45	7 34	12 18	3
4	4 17 34 59	4 0 23 0	3 10 21 36	4 26 49 18	2 20 27 37	5 27 31 4	6 13 20 37	6 16 30 58	6 15 22 8	7 12	8 45	4
5	4 18 33 9	4 12 53 51	3 10 59 42	4 28 35 16	2 20 37 40	5 28 40 58	6 13 25 41	6 16 27 47	6 15 11 42	6 50	4 47	5
6	4 19 31 21	4 25 37 12	3 11 37 44	5 0 20 2	2 20 47 36	5 29 50 49	6 13 30 48	6 16 24 36	6 15 2 27	6 27	+0 32	6
7	4 20 29 35	5 8 32 48	3 12 15 43	5 2 3 35	2 20 57 26	6 1 0 34	6 13 36 0	6 16 21 25	6 14 55 9	6 5	–3 49	7
8	4 21 27 50	5 21 40 10	3 12 53 40	5 3 45 57	2 21 7 9	6 2 10 16	6 13 41 15	6 16 18 15	6 14 50 16	5 43	–8 03	8
9	4 22 26 7	6 4 58 51	3 13 31 33	5 5 27 9	2 21 16 46	6 3 19 52	6 13 46 34	6 16 15 04	6 14 47 49	5 20	–11 57	9
10	4 23 24 25	6 18 28 37	3 14 9 22	5 7 7 11	2 21 26 15	6 4 29 23	6 13 51 56	6 16 11 53	6 14 47 23	4 57	–15 17	10
11	4 24 22 45	7 2 9 30	3 14 47 9	5 8 46 5	2 21 35 38	6 5 38 50	6 13 57 22	6 16 8 42	6 14 48 11	4 35	–17 48	11
12	4 25 21 7	7 16 1 39	3 15 24 53	5 10 23 52	2 21 44 54	6 6 48 12	6 14 2 52	6 16 5 32	6 14 49 11	4 12	–19 19	12
13	4 26 19 30	8 0 4 58	3 16 2 34	5 12 0 32	2 21 54 4	6 7 57 28	6 14 8 26	6 16 2 21	6 14 49 26	3 49	–19 39	13
14	4 27 17 55	8 14 18 38	3 16 40 12	5 13 36 6	2 22 3 6	6 9 6 39	6 14 14 3	6 15 59 10	6 14 48 07	3 26	–18 45	14
15	4 28 16 21	8 28 40 37	3 17 17 47	5 15 10 35	2 22 12 1	6 10 15 44	6 14 19 43	6 15 55 59	6 14 44 53	3 03	–16 39	15
16	4 29 14 49	9 13 7 33	3 17 55 17	5 16 43 59	2 22 20 48	6 11 24 42	6 14 25 26	6 15 52 49	6 14 39 49	2 40	–13 30	16
17	5 0 13 18	9 27 34 35	3 18 32 45	5 18 16 19	2 22 29 29	6 12 33 36	6 14 31 13	6 15 49 38	6 14 33 26	2 16	–9 33	17
18	5 1 11 49	10 11 56 02	3 19 10 11	5 19 47 35	2 22 38 2	6 13 42 23	6 14 37 3	6 15 46 27	6 14 26 33	1 53	–5 04	18
19	5 2 10 22	10 26 6 01	3 19 47 33	5 21 17 47	2 22 46 26	6 14 51 4	6 14 42 56	6 15 43 16	6 14 20 03	1 30	–0 22	19
20	5 3 8 57	11 9 59 28	3 20 24 52	5 22 46 55	2 22 54 44	6 15 59 39	6 14 48 52	6 15 40 05	6 14 14 43	1 07	+4 16	20
21	5 4 7 34	11 23 32 44	3 21 2 8	5 24 14 59	2 23 2 54	6 17 8 7	6 14 54 51	6 15 36 55	6 14 11 4	0 43	8 35	21
22	5 5 6 13	0 6 44 08	3 21 39 22	5 25 41 58	2 23 10 56	6 18 16 29	6 15 0 54	6 15 33 44	6 14 09 17	+0 20	12 22	22
23	5 6 4 54	0 19 33 53	3 22 16 32	5 27 7 52	2 23 18 50	6 19 24 44	6 15 6 59	6 15 30 33	6 14 9 9	- 0 03	15 27	23
24	5 7 3 37	1 2 03 58	3 22 53 39	5 28 32 40	2 23 26 36	6 20 32 53	6 15 13 7	6 15 27 22	6 14 10 12	- 0 27	17 43	24
25	5 8 2 22	1 14 17 39	3 23 30 43	5 29 56 21	2 23 34 14	6 21 40 55	6 15 19 18	6 15 24 12	6 14 11 48	- 0 50	19 07	25
26	5 9 1 11	1 26 19 11	3 24 7 44	6 1 18 52	2 23 41 44	6 22 48 50	6 15 25 32	6 15 21 01	6 14 13 14	- 1 13	19 36	26
27	5 10 0 0	2 8 13 17	3 24 44 42	6 2 40 12	2 23 49 5	6 23 56 38	6 15 31 48	6 15 17 50	6 14 13 56	- 1 37	19 12	27
28	5 10 58 52	2 20 4 56	3 25 21 37	6 4 0 19	2 23 56 18	6 25 4 19	6 15 38 8	6 15 14 39	6 14 13 26	- 2 00	17 57	28
29	5 11 57 47	3 1 59 01	3 25 58 28	6 5 19 10	2 24 3 21	6 26 11 51	6 15 44 28	6 15 11 29	6 14 11 36	- 2 23	15 56	29
30	5 12 56 43	3 14 0 05	3 26 35 16	6 6 36 39	2 24 10 16	6 27 19 17	6 15 50 53	6 15 8 18	6 14 08 27	- 2 47	13 13	30
अक्तू	5 13 55 42	3 26 12 01	3 27 12 1	6 7 52 47	2 24 17 2	6 28 26 35	6 15 57 19	6 15 5 07	6 14 4 17	- 3 10	9 54	अक्तू
2	5 14 54 43	4 8 37 56	3 27 48 43	6 9 7 26	2 24 23 39	6 29 33 45	6 16 3 48	6 15 1 56	6 13 59 32	- 3 33	6 06	2
3	5 15 53 47	4 21 19 52	3 28 25 21	6 10 20 32	2 24 30 7	7 0 40 47	6 16 10 20	6 14 58 45	6 13 54 47	- 3 56	+1 56	3
4	5 16 52 52	5 4 18 41	3 29 1 56	6 11 32 59	2 24 36 26	7 1 47 49	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(... से 9 नवंबर, 2013 ई. तक) 1 नवंबर, 2013 ई. को अयनांश 24°/03'/10''

1 नवंबर, 2013 ई. को अयनांश 24°/03'/10''

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (5 अक्तूबर से 9 नवंबर 2013 ई. तक)

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अक्टूबर
अक्टू	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं. क.वि.	रा. अं. क.वि.	अं.क.	अं.क.	
5	5 17 51 59	5 17 34 09	3 29 38 27	6 12 41 40	2 24 42 35	7 2 54 25	6 16 23 29	6 14 52 24	6 13 47 24	-4 43	-6 43	5
6	5 18 51 9	6 1 4 58	4 0 14 55	6 13 49 27	2 24 48 35	7 4 1 1	6 16 30 7	6 14 49 13	6 13 45 29	-5 6	-10 48	6
7	5 19 50 20	6 14 49 02	4 0 51 19	6 14 55 13	2 24 54 25	7 5 7 27	6 16 36 47	6 14 46 02	6 13 44 53	-5 29	-14 21	7
8	5 20 49 34	6 28 43 48	4 1 27 40	6 15 58 46	2 25 00 5	7 6 13 44	6 16 43 29	6 14 42 51	6 13 45 21	-5 52	-17 09	8
9	5 21 48 49	7 12 46 36	4 2 3 57	6 16 59 56	2 25 5 36	7 7 19 51	6 16 50 14	6 14 39 41	6 13 46 30	-6 14	-18 56	9
10	5 22 48 6	7 26 54 53	4 2 40 10	6 17 58 29	2 25 10 56	7 8 25 48	6 16 57 0	6 14 36 30	6 13 47 48	-6 37	-19 32	10
11	5 23 47 25	8 11 6 15	4 3 16 20	6 18 54 11	2 25 16 7	7 9 31 34	6 17 3 48	6 14 33 19	6 13 48 47	-7 00	-18 55	11
12	5 24 46 46	8 25 18 31	4 3 52 25	6 19 46 47	2 25 21 7	7 10 37 8	6 17 10 37	6 14 30 08	6 13 49 06	-7 23	-17 06	12
13	5 25 46 8	9 9 29 30	4 4 28 27	6 20 36 0	2 25 25 57	7 11 42 31	6 17 17 28	6 14 26 57	6 13 48 33	-7 45	-14 15	13
14	5 26 45 32	9 23 36 57	4 5 4 25	6 21 21 28	2 25 30 37	7 12 47 42	6 17 24 21	6 14 23 47	6 13 47 15	-8 07	-10 36	14
15	5 27 44 58	10 7 38 25	4 5 40 19	6 22 2 51	2 25 35 7	7 13 52 40	6 17 31 15	6 14 20 36	6 13 45 24	-8 30	-6 22	15
16	5 28 44 25	10 21 31 18	4 6 16 9	6 22 39 43	2 25 39 26	7 14 57 26	6 17 38 11	6 14 17 25	6 13 43 20	-8 52	-1 51	16
17	5 29 43 55	11 5 13 02	4 6 51 56	6 23 11 37	2 25 43 35	7 16 1 58	6 17 45 8	6 14 14 14	6 13 41 26	-9 14	+2 43	17
18	6 0 43 26	11 18 41 16	4 7 27 39	6 23 38 7	2 25 47 32	7 17 6 17	6 17 52 6	6 14 11 04	6 13 39 59	-9 36	+7 05	18
19	6 1 42 59	0 1 54 16	4 8 3 18	6 23 58 39	2 25 51 20	7 18 10 22	6 17 59 6	6 14 7 53	6 13 39 08	-9 57	11 02	19
20	6 2 42 34	0 14 50 59	4 8 38 53	6 24 12 44	2 25 54 56	7 19 14 12	6 18 6 7	6 14 4 42	6 13 38 56	-10 19	14 21	20
21	6 3 42 12	0 27 31 24	4 9 14 25	6 24 19 46	2 25 58 22	7 20 17 47	6 18 13 9	6 14 1 31	6 13 39 16	-10 40	16 56	21
22	6 4 41 51	1 9 56 30	4 9 49 53	6 24 19 15	2 26 1 37	7 21 21 7	6 18 20 12	6 13 58 21	6 13 39 58	-11 02	18 38	22
23	6 5 41 33	1 22 8 16	4 10 25 16	6 24 10 38	2 26 4 40	7 22 24 11	6 18 27 17	6 13 55 10	6 13 40 49	-11 23	19 27	23
24	6 6 41 16	2 4 9 33	4 11 0 35	6 23 53 27	2 26 7 32	7 23 26 57	6 18 34 21	6 13 51 59	6 13 41 37	-11 44	19 21	24
25	6 7 41 2	2 16 4 02	4 11 35 51	6 23 27 25	2 26 10 13	7 24 29 28	6 18 41 28	6 13 48 48	6 13 42 14	-12 05	18 23	25
26	6 8 40 51	2 27 55 52	4 12 11 2	6 22 52 27	2 26 12 42	7 25 31 42	6 18 48 34	6 13 45 38	6 13 42 36	-12 25	16 37	26
27	6 9 40 41	3 9 49 37	4 12 46 10	6 22 8 8	2 26 15 1	7 26 33 37	6 18 55 43	6 13 42 27	6 13 42 43	-12 46	14 09	27
28	6 10 40 33	3 21 49 58	4 13 21 13	6 21 15 19	2 26 17 8	7 27 35 14	6 19 2 51	6 13 39 16	6 13 42 39	-13 06	11 04	28
29	6 11 40 28	4 4 1 32	4 13 56 11	6 20 14 30	2 26 19 3	7 28 36 32	6 19 10 1	6 13 36 05	6 13 42 30	-13 26	7 29	29
30	6 12 40 25	4 16 28 29	4 14 31 6	6 19 6 47	2 26 20 47	7 29 37 30	6 19 17 11	6 13 32 55	6 13 42 23	-13 46	+3 30	30
31	6 13 40 24	4 29 14 19	4 15 5 56	6 17 53 42	2 26 22 18	8 0 38 7	6 19 24 21	6 13 29 44	6 13 42 23	-14 05	-0 44	31
नवं.	6 14 40 26	5 12 21 20	4 15 40 41	6 16 37 8	2 26 23 38	8 1 38 24	6 19 31 32	6 13 26 33	6 13 42 31	-14 24	-5 04	नवं.
2	6 15 40 29	5 25 50 27	4 16 15 21	6 15 19 18	2 26 24 47	8 2 38 18	6 19 38 43	6 13 23 22	6 13 42 43	-14 44	-9 17	2
3	6 16 40 34	6 9 40 50	4 16 49 57	6 14 2 36	2 26 25 43	8 3 37 49	6 19 45 55	6 13 20 12	6 13 42 54	-15 02	-13 06	3
4	6 17 40 41	6 23 49 48	4 17 24 27	6 12 49 29	2 26 26 26	8 4 36 55	6 19 53 6	6 13 17 01	6 13 42 55	-15 21	-16 16	4
5	6 18 40 50	7 8 12 59	4 17 58 53	6 11 42 16	2 26 26 59	8 5 35 38	6 20 0 18	6 13 13 51	6 13 42 39	-15 39	-18 27	5
6	6 19 41 1	7 22 44 52	4 18 33 14	6 10 42 58	2 26 27 20	8 6 33 55	6 20 7 30	6 13 10 40	6 13 42 6	-15 58	-19 28	6
7	6 20 41 13	8 7 19 30	4 19 7 30	6 9 53 13	2 26 27 28	8 7 31 46	6 20 14 43	6 13 7 29	6 13 41 19	-16 15	-19 10	7
8	6 21 41 27	8 21 51 07	4 19 41 41	6 9 14 13	2 26 27 25	8 8 29 8	6 20 21 55	6 13 4 18	6 13 40 26	-16 33	-17 37	8
9	6 22 41 42	9 6 14 58	4 20 15 46	6 8 46 37	2 26 27 8	8 9 26 0	6 20 29 6	6 13 1 08	6 13 39 41	-16 50	-14 58	9

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (10 नवंबर से 15 दिसंबर 2013 ई. तक)

1 दिसं., 2013 ई. अयनांश = 24°/03′/14″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि(वक्री)	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	नवंबर
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
10	6 23 41 59	9 20 27 30	4 20 49 46	6 8 30 42	2 26 26 40	8 10 22 22	6 20 36 18	6 12 57 57	6 13 39 16	−17 07	−11 27	10
11	6 24 42 17	10 4 26 37	4 21 23 40	6 8 26 22	2 26 26 1	8 11 18 13	6 20 43 30	6 12 54 46	6 13 39 22	−17 24	−7 22	11
12	6 25 42 36	10 18 11 20	4 21 57 30	6 8 33 8	2 26 25 9	8 12 13 30	6 20 50 41	6 12 51 35	6 13 40 00	−17 40	−2 57	12
13	6 26 42 56	11 1 41 32	4 22 31 14	6 8 50 25	2 26 24 6	8 13 8 13	6 20 57 52	6 12 48 24	6 13 41 03	−17 57	+1 33	13
14	6 27 43 20	11 14 57 35	4 23 4 52	6 9 17 23	2 26 22 50	8 14 2 19	6 21 5 2	6 12 45 14	6 13 42 17	−18 12	5 54	14
15	6 28 43 43	11 28 0 9	4 23 38 25	6 9 53 11	2 26 21 22	8 14 55 49	6 21 12 12	6 12 42 03	6 13 43 21	−18 28	9 55	15
16	6 29 44 9	0 10 49 52	4 24 11 53	6 10 36 53	2 26 19 43	8 15 48 39	6 21 19 21	6 12 38 52	6 13 43 54	−18 43	13 24	16
17	7 0 44 35	0 23 27 23	4 24 45 15	6 11 27 40	2 26 17 52	8 16 40 49	6 21 26 30	6 12 35 41	6 13 43 37	−18 58	16 12	17
18	7 1 45 4	1 5 53 27	4 25 18 30	6 12 24 37	2 26 15 48	8 17 32 16	6 21 33 37	6 12 32 31	6 13 42 20	−19 12	18 11	18
19	7 2 45 34	1 18 8 59	4 25 51 40	6 13 27 1	2 26 13 33	8 18 23 0	6 21 40 44	6 12 29 20	6 13 40 03	−19 26	19 18	19
20	7 3 46 5	2 0 15 13	4 26 24 45	6 14 34 6	2 26 11 7	8 19 12 59	6 21 47 51	6 12 26 09	6 13 36 56	−19 40	19 30	20
21	7 4 46 38	2 12 13 56	4 26 57 44	6 15 45 14	2 26 8 29	8 20 2 10	6 21 54 56	6 12 22 58	6 13 33 18	−19 54	18 49	21
22	7 5 47 13	2 24 7 24	4 27 30 36	6 16 59 52	2 26 5 39	8 20 50 32	6 22 2 1	6 12 19 48	6 13 29 33	−20 07	17 18	22
23	7 6 47 49	3 5 58 36	4 28 3 22	6 18 17 27	2 26 2 37	8 21 38 3	6 22 9 4	6 12 16 37	6 13 26 09	−20 19	15 04	23
24	7 7 48 27	3 17 51 07	4 28 36 2	6 19 37 34	2 25 59 23	8 22 24 41	6 22 16 7	6 12 13 26	6 13 23 31	−20 32	12 12	24
25	7 8 49 7	3 29 49 04	4 29 8 36	6 20 59 50	2 25 55 58	8 23 10 24	6 22 23 8	6 12 10 15	6 13 21 57	−20 44	8 49	25
26	7 9 49 48	4 11 57 00	4 29 41 3	6 22 23 55	2 25 52 24	8 23 55 9	6 22 30 7	6 12 07 04	6 13 21 34	−20 55	5 02	26
27	7 10 50 31	4 24 19 35	5 0 13 23	6 23 49 32	2 25 48 37	8 24 38 55	6 22 37 5	6 12 3 54	6 13 22 17	−21 07	+0 57	27
28	7 11 51 16	5 7 1 24	5 0 45 37	6 25 16 25	2 25 44 39	8 25 21 39	6 22 44 3	6 12 00 43	6 13 23 46	−21 17	−3 17	28
29	7 12 52 2	5 20 6 25	5 1 17 44	6 26 44 24	2 25 40 29	8 26 3 17	6 22 50 58	6 11 57 32	6 13 25 28	−21 28	−7 30	29
30	7 13 52 49	6 3 37 23	5 1 49 43	6 28 13 15	2 25 36 9	8 26 43 49	6 22 57 53	6 11 54 21	6 13 26 47	−21 38	−11 29	30
दिसं.	7 14 53 38	6 17 35 13	5 2 21 35	6 29 42 51	2 25 31 38	8 27 23 10	6 23 4 45	6 11 51 11	6 13 27 04	−21 47	−14 58	दिसं.
2	7 15 54 29	7 1 58 21	5 2 53 20	7 1 13 3	2 25 26 56	8 28 1 17	6 23 11 35	6 11 48 00	6 13 25 52	−21 56	−17 39	2
3	7 16 55 20	7 16 42 24	5 3 24 57	7 2 43 47	2 25 22 4	8 28 38 9	6 23 18 25	6 11 44 49	6 13 23 01	−22 05	−19 13	3
4	7 17 56 13	8 1 40 13	5 3 56 26	7 4 14 57	2 25 17 3	8 29 13 42	6 23 25 12	6 11 41 38	6 13 18 41	−22 13	−19 29	4
5	7 18 57 7	8 16 42 53	5 4 27 47	7 5 46 27	2 25 11 51	8 29 47 52	6 23 31 58	6 11 38 27	6 13 13 23	−22 21	−18 23	5
6	7 19 58 2	9 1 41 01	5 4 59 0	7 7 18 14	2 25 6 28	9 0 20 34	6 23 38 41	6 11 35 17	6 13 7 50	−22 29	−16 00	6
7	7 20 58 57	9 16 26 18	5 5 30 5	7 8 50 16	2 25 0 57	9 0 51 48	6 23 45 22	6 11 32 06	6 13 2 54	−22 36	−12 38	7
8	7 21 59 53	10 0 52 42	5 6 1 1	7 10 22 30	2 24 55 17	9 1 21 27	6 23 52 1	6 11 28 55	6 12 59 15	−22 42	−8 34	8
9	7 23 0 50	10 14 56 52	5 6 31 50	7 11 54 54	2 24 49 27	9 1 49 28	6 23 58 39	6 11 25 44	6 12 57 17	−22 48	−4 07	9
10	7 24 1 48	10 28 38 07	5 7 2 29	7 13 27 28	2 24 43 29	9 2 15 48	6 24 5 13	6 11 22 33	6 12 57 2	−22 54	+0 26	10
11	7 25 2 46	11 11 57 39	5 7 33 0	7 15 0 9	2 24 37 21	9 2 40 22	6 24 11 46	6 11 19 23	6 12 58 4	−22 59	4 50	11
12	7 26 3 44	11 24 57 59	5 8 3 22	7 16 32 57	2 24 31 6	9 3 3 5	6 24 18 16	6 11 16 12	6 12 59 38	−23 04	8 56	12
13	7 27 4 44	0 7 42 00	5 8 33 34	7 18 5 51	2 24 24 41	9 3 23 54	6 24 24 42	6 11 13 01	6 13 00 48	−23 08	12 32	13
14	7 28 5 44	0 20 12 40	5 9 3 38	7 19 38 53	2 24 18 10	9 3 42 46	6 24 31 7	6 11 9 50	6 13 00 40	−23 12	15 30	14
15	7 29 6 44	1 2 32 36	5 9 33 33	7 21 12 1	2 24 11 31	9 3 59 37	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

1 जनवरी, 2014 ई. को अयनांश 24°/03′/20″

[16 दिसंबर (13) से 20 जनवरी, सं. 2014 ई. तक]

1 जनवरी, 2014 ई. को अयनांश 24°/03'/20"

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *[16 दिसंबर (13) से 20 जनवरी, सं. 2014 ई. तक]*

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	दिनांक
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
16	8 0 7 45	1 14 44 01	5 10 3 19	7 22 45 17	2 24 4 44	9 4 14 22	6 24 43 50	6 11 3 28	6 12 54 00	–23 18	+19 05	16
17	8 1 8 47	1 26 48 38	5 10 32 55	7 24 18 39	2 23 57 51	9 4 26 58	6 24 50 7	6 11 0 18	6 12 47 03	–23 21	19 34	17
18	8 2 9 49	2 8 47 48	5 11 2 20	7 25 52 8	2 23 50 49	9 4 37 20	6 24 56 21	6 10 57 07	6 12 38 06	–23 23	19 10	18
19	8 3 10 52	2 20 42 55	5 11 31 36	7 27 25 47	2 23 43 43	9 4 45 27	6 25 2 32	6 10 53 56	6 12 27 49	–23 24	17 55	19
20	8 4 11 56	3 2 35 21	5 12 0 43	7 28 59 34	2 23 36 30	9 4 51 14	6 25 8 41	6 10 50 46	6 12 17 08	–23 25	15 54	20
21	8 5 13 0	3 14 26 56	5 12 29 39	8 0 33 31	2 23 29 11	9 4 54 39	6 25 14 46	6 10 47 35	6 12 07 02	–23 26	13 13	21
22	8 6 14 5	3 26 19 56	5 12 58 24	8 2 7 39	2 23 21 46	9 4 55 38	6 25 20 49	6 10 44 24	6 11 58 23	–23 26	10 00	22
23	8 7 15 11	4 8 17 23	5 13 26 58	8 3 41 56	2 23 14 15	9 4 54 11	6 25 26 47	6 10 41 13	6 11 51 52	–23 26	6 22	23
24	8 8 16 17	4 20 22 58	5 13 55 21	8 5 16 27	2 23 6 40	9 4 50 15	6 25 32 43	6 10 38 02	6 11 47 47	–23 25	+2 27	24
25	8 9 17 24	5 2 40 58	5 14 23 34	8 6 51 11	2 22 59 1	9 4 43 50	6 25 38 36	6 10 34 52	6 11 46 1	–23 24	–1 39	25
26	8 10 18 32	5 15 16 04	5 14 51 34	8 8 26 9	2 22 51 17	9 4 34 57	6 25 44 26	6 10 31 41	6 11 45 59	–23 22	–5 47	26
27	8 11 19 40	5 28 12 58	5 15 19 23	8 10 1 22	2 22 43 29	9 4 23 33	6 25 50 12	6 10 28 30	6 11 46 47	–23 20	–9 47	27
28	8 12 20 49	6 11 35 50	5 15 47 0	8 11 36 51	2 22 35 38	9 4 9 41	6 25 55 55	6 10 25 19	6 11 47 16	–23 17	–13 25	28
29	8 13 21 58	6 25 27 30	5 16 14 25	8 13 12 36	2 22 27 43	9 3 53 25	6 26 1 34	6 10 22 09	6 11 46 18	–23 14	–16 27	29
30	8 14 23 8	7 9 48 30	5 16 41 37	8 14 48 39	2 22 19 45	9 3 34 45	6 26 7 10	6 10 18 58	6 11 43 06	–23 10	–18 34	30
31	8 15 24 18	7 24 36 16	5 17 8 35	8 16 24 59	2 22 11 44	9 3 13 46	6 26 12 41	6 10 15 47	6 11 37 16	–23 06	–19 31	31
जन. 2014	8 16 25 29	8 9 44 28	5 17 35 20	8 18 1 40	2 22 3 42	9 2 50 33	6 26 18 9	6 10 12 36	6 11 29 01	–23 01	–19 05	जन. 2014
2	8 17 26 39	8 25 3 31	5 18 1 52	8 19 38 40	2 21 55 38	9 2 25 13	6 26 23 34	6 10 9 26	6 11 19 05	–22 56	–17 17	2
3	8 18 27 50	9 10 21 53	5 18 28 9	8 21 15 58	2 21 47 32	9 1 57 52	6 26 28 53	6 10 6 15	6 11 8 36	–22 51	–14 15	3
4	8 19 29 0	9 25 28 13	5 18 54 13	8 22 53 38	2 21 39 25	9 1 28 39	6 26 34 9	6 10 3 04	6 10 58 50	–22 45	–10 19	4
5	8 20 30 11	10 10 13 25	5 19 20 2	8 24 31 39	2 21 31 18	9 0 57 44	6 26 39 22	6 9 59 53	6 10 50 52	–22 38	–5 50	5
6	8 21 31 20	10 24 31 47	5 19 45 37	8 26 10 0	2 21 23 11	9 0 25 17	6 26 44 30	6 9 56 42	6 10 45 22	–22 32	–1 09	6
7	8 22 32 30	11 8 21 21	5 20 10 56	8 27 48 42	2 21 15 4	8 29 51 30	6 26 49 34	6 9 53 32	6 10 42 27	–22 24	+3 27	7
8	8 23 33 39	11 21 43 10	5 20 36 1	8 29 27 43	2 21 6 57	8 29 16 37	6 26 54 34	6 9 50 21	6 10 41 36	–22 17	7 44	8
9	8 24 34 48	0 4 40 20	5 21 0 49	9 1 7 4	2 20 58 52	8 28 40 51	6 26 59 29	6 9 47 10	6 10 41 51	–22 08	11 31	9
10	8 25 35 56	0 17 17 05	5 21 25 22	9 2 46 43	2 20 50 48	8 28 4 27	6 27 4 20	6 9 43 59	6 10 41 56	–22 00	14 41	10
11	8 26 37 4	0 29 37 54	5 21 49 39	9 4 26 37	2 20 42 44	8 27 27 40	6 27 9 6	6 9 40 49	6 10 40 36	–21 51	17 06	11
12	8 27 38 12	1 11 47 03	5 22 13 40	9 6 6 47	2 20 34 44	8 26 50 47	6 27 13 48	6 9 37 38	6 10 36 51	–21 41	18 42	12
13	8 28 39 18	1 23 48 13	5 22 37 23	9 7 47 8	2 20 26 46	8 26 14 2	6 27 18 26	6 9 34 27	6 10 30 03	–21 31	19 27	13
14	8 29 40 24	2 5 44 24	5 23 0 49	9 9 27 37	2 20 18 50	8 25 37 42	6 27 23 0	6 9 31 16	6 10 20 09	–21 21	19 19	14
15	9 0 41 30	2 17 37 55	5 23 23 59	9 11 8 10	2 20 10 58	8 25 2 1	6 27 27 28	6 9 28 05	6 10 07 32	–21 10	18 19	15
16	9 1 42 35	2 29 30 27	5 23 46 49	9 12 48 41	2 20 3 9	8 24 27 14	6 27 31 51	6 9 24 55	6 09 53 04	–20 59	16 33	16
17	9 2 43 40	3 11 23 19	5 24 9 23	9 14 29 4	2 19 55 23	8 23 53 36	6 27 36 10	6 9 21 44	6 09 37 54	–20 48	14 04	17
18	9 3 44 44	3 23 17 45	5 24 31 36	9 16 9 12	2 19 47 43	8 23 21 20	6 27 40 25	6 9 18 33	6 09 23 17	–20 36	11 01	18
19	9 4 45 48	4 5 15 02	5 24 53 32	9 17 48 54	2 19 40 6	8 22 50 37	6 27 44 34	6 9 15 22	6 09 10 23	–20 24	7 30	19
20	9 5 46 52	4 17 17 04	5 25 15 8	9 19 27 59	2 19 32 34	8 22 21 41	6 27 48 39	6 9 12 12	6 08 00 08	–20 11	+3 40	20

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (21 जन. से 25 फरवरी 2014 ई. तक)

1 फरवरी, 2014 ई. को अयनांश 24°/03′/25″

दि.	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु			
जन.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
21	9	6	47	54	4	29	26	14	5	25	36	24	9	21	6	14	2	19	25	7
22	9	7	48	56	5	11	45	40	5	25	57	20	9	22	43	23	2	19	17	46
23	9	8	49	58	5	24	19	6	5	26	17	55	9	24	19	7	2	19	10	30
24	9	9	51	0	6	7	10	44	5	26	38	8	9	25	53	6	2	19	3	20
25	9	10	52	1	6	20	24	47	5	26	57	58	9	27	24	53	2	18	56	16
26	9	11	53	2	7	4	4	49	5	27	17	27	9	28	54	3	2	18	49	19
27	9	12	54	2	7	18	12	52	5	27	36	33	10	0	20	2	2	18	42	30
28	9	13	55	1	8	2	48	24	5	27	55	16	10	1	42	15	2	18	35	47
29	9	14	56	0	8	17	47	24	5	28	13	34	10	3	0	4	2	18	29	12
30	9	15	56	58	9	3	2	11	5	28	31	26	10	4	12	45	2	18	22	34
31	9	16	57	55	9	18	22	10	5	28	48	53	10	5	19	30	2	18	16	25
फर.	9	17	58	52	10	3	35	31	5	29	5	55	10	6	19	36	2	18	10	14
2	9	18	59	47	10	18	31	27	5	29	22	31	10	7	12	12	2	18	4	12
3	9	20	0	41	11	3	2	6	5	29	38	39	10	7	56	31	2	17	58	18
4	9	21	1	33	11	17	3	17	5	29	54	20	10	8	31	45	2	17	52	34
5	9	22	2	24	0	00	34	27	6	0	9	33	10	8	57	13	2	17	46	59
6	9	23	3	14	0	13	37	48	6	0	24	17	10	9	12	23	2	17	41	34
7	9	24	4	2	0	26	17	20	6	0	38	32	10	9	16	47	2	17	36	18
8	9	25	4	49	1	8	37	54	6	0	52	17	10	9	10	14	2	17	31	11
9	9	26	5	34	1	20	44	33	6	1	5	33	10	8	52	47	2	17	26	16
10	9	27	6	18	2	2	42	2	6	1	18	18	10	8	24	46	2	17	21	30
11	9	28	7	0	2	14	34	32	6	1	30	32	10	7	46	47	2	17	16	55
12	9	29	7	41	2	26	25	32	6	1	42	13	10	6	59	50	2	17	12	30
13	10	0	8	20	3	8	17	41	6	1	53	22	10	6	5	5	2	17	8	17
14	10	1	8	58	3	20	12	58	6	2	3	57	10	5	4	6	2	17	4	12
15	10	2	9	34	4	2	12	49	6	2	13	59	10	3	58	37	2	17	0	20
16	10	3	10	9	4	14	18	22	6	2	23	25	10	2	50	26	2	16	56	39
17	10	4	10	42	4	26	30	38	6	2	32	16	10	1	41	25	2	16	53	8
18	10	5	11	14	5	8	50	57	6	2	40	32	10	0	33	20	2	16	49	49
19	10	6	11	44	5	21	20	58	6	2	48	11	9	29	27	50	2	16	46	41
20	10	7	12	14	6	4	2	52	6	2	55	13	9	28	26	19	2	16	43	46
21	10	8	12	42	6	16	59	22	6	3	1	36	9	27	30	00	2	16	41	1
22	10	9	13	8	7	0	13	23	6	3	7	21	9	26	39	44	2	16	38	27
23	10	10	13	33	7	13	47	38	6	3	12	25	9	25	56	12	2	16	36	5
24	10	11	13	57	7	27	44	1	6	3	16	50	9	25	19	49	2	16	33	55
25	10	12	14	20	8	12	2	48	6	3	20	32	9	24	50	46	2	16	31	56

दि.	शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रांति		चंद्र क्रांति		जनवरी
जन.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	
21	8	21	54	38	6	27	52	38	6	9	9	01	6	08	53	00	−19	58	−0	21	21
22	8	21	29	39	6	27	56	33	6	9	5	50	6	08	48	56	−19	44	−4	25	22
23	8	21	6	52	6	28	0	23	6	9	2	39	6	08	47	20	−19	31	−8	22	23
24	8	20	46	20	6	28	4	7	6	8	59	29	6	08	47	10	−19	16	−12	02	24
25	8	20	28	19	6	28	7	45	6	8	56	18	6	08	47	07	−19	02	−15	12	25
26	8	20	12	24	6	28	11	19	6	8	53	07	6	08	45	50	−18	47	−17	38	26
27	8	19	59	7	6	28	14	48	6	8	49	56	6	08	42	19	−18	32	−19	05	27
28	8	19	48	20	6	28	18	12	6	8	46	53	6	08	36	00	−18	16	−19	20	28
29	8	19	40	2	6	28	21	30	6	8	43	43	6	08	27	02	−18	00	−18	14	29
30	8	19	34	12	6	28	24	41	6	8	40	32	6	08	16	06	−17	44	−15	51	30
31	8	19	30	53	6	28	27	48	6	8	37	21	6	08	04	25	−17	28	−12	21	31
फर.	8	19	30	0	6	28	30	50	6	8	34	10	6	07	53	19	−17	11	−8	03	फर.
2	8	19	31	31	6	28	33	45	6	8	30	59	6	07	43	59	−16	54	−3	19	2
3	8	19	35	25	6	28	36	35	6	8	27	49	6	07	37	15	−16	36	+1	28	3
4	8	19	41	37	6	28	39	19	6	8	24	38	6	07	33	18	−16	19	6	01	4
5	8	19	50	7	6	28	42	57	6	8	21	27	6	07	31	44	−16	1	10	07	5
6	8	20	0	49	6	28	44	30	6	8	18	16	6	07	31	39	−15	42	13	34	6
7	8	20	13	41	6	28	46	57	6	8	15	05	6	07	31	52	−15	24	16	15	7
8	8	20	28	38	6	28	49	17	6	8	11	55	6	07	31	07	−15	05	18	08	8
9	8	20	45	38	6	28	51	33	6	8	8	44	6	07	28	23	−14	46	19	08	9
10	8	21	4	37	6	28	53	42	6	8	5	33	6	07	23	03	−14	27	19	15	10
11	8	21	25	31	6	28	55	46	6	8	2	22	6	07	14	54	−14	07	18	31	11
12	8	21	48	17	6	28	57	44	6	7	59	11	6	07	04	14	−13	47	16	59	12
13	8	22	13	50	6	28	59	35	6	7	56	00	6	06	51	47	−13	27	14	44	13
14	8	22	39	6	6	29	1	20	6	7	52	49	6	06	38	33	−13	07	11	52	14
15	8	23	7	3	6	29	3	0	6	7	49	38	6	06	25	39	−12	47	8	29	15
16	8	23	36	36	6	29	4	34	6	7	46	27	6	06	14	12	−12	26	4	45	16
17	8	24	7	43	6	29	6	1	6	7	43	16	6	06	05	4	−12	05	+0	46	17
18	8	24	40	19	6	29	7	23	6	7	40	06	6	05	58	46	−11	44	−3	17	18
19	8	25	14	21	6	29	8	38	6	7	36	55	6	05	55	19	−11	23	−7	15	19
20	8	25	49	46	6	29	9	47	6	7	33	44	6	05	54	17	−11	1	−10	57	20
21	8	26	26	31	6	29	10	51	6	7	30	33	6	05	54	48	−10	40	−14	12	21
22	8	27	4	31	6	29	11	48	6	7	27	22	6	05	55	47	−10	18	−16	48	22
23	8	27	43	45	6	29	12	39	6	7	24	12	6	05	56	02	−9	56	−18	31	23
24	8	28	24	10	6	29	13	24	6	7	21	01	6	05	54	38	−9	34	−19	10	24
25	8	29	5	41	6	29	14	1	6	7	17	50	6	05	51	06	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (26 फर. से 1 अप्रैल, 2014 ई. तक) 1 मार्च, 2014 ई. को अयनांश 24°/03′/28″ 1 अप्रै., 2014 ई. को अयनांश 24°/03′/30″

1 मार्च, 2014 ई. को अयनांश 24°/03'/28''   1 अप्रै., 2014 ई. को अयनांश 24°/03'/30''

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (26 फर. से 1 अप्रैल, 2014 ई. तक)

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	फरवरी
फर.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं. क.वि.	रा. अं. क.वि.	अं.क.	अं.क.	
26	10 13 14 41	8 26 41 48	6 3 23 34	9 24 29 6	2 16 30 9	8 29 48 17	6 29 14 34	6 7 14 39	6 05 45 24	–8 50	–16 51	26
27	10 14 15 1	9 11 36 2	6 3 25 52	9 24 14 41	2 16 28 34	9 0 32 55	6 29 15 0	6 7 11 28	6 05 38 05	–8 27	–13 56	27
28	10 15 15 19	9 26 37 52	6 3 27 28	9 24 7 21	2 16 27 11	9 1 16 32	6 29 15 20	6 7 8 17	6 05 30 01	–8 05	–10 04	28
मार्च	10 16 15 36	10 11 37 54	6 3 28 20	9 24 6 48	2 16 26 0	9 2 2 5	6 29 15 34	6 7 5 07	6 05 22 16	–7 42	–5 35	मार्च
2	10 17 15 50	10 26 26 38	6 3 28 28	9 24 12 42	2 16 25 1	9 2 48 33	6 29 15 41	6 7 1 56	6 05 15 47	–7 19	–0 49	2
3	10 18 16 3	11 10 56 0	6 3 27 52	9 24 24 42	2 16 24 14	9 3 36 52	6 29 15 42 वक्री	6 6 58 45	6 05 11 15	–6 56	+3 55	3
4	10 19 16 15	11 25 0 33	6 3 26 30	9 24 42 26	2 16 23 39	9 4 24 2	6 29 15 37	6 6 55 34	6 05 8 53	–6 33	8 18	4
5	10 20 16 24	0 8 37 50	6 3 24 24	9 25 5 33	2 16 23 15	9 5 12 59	6 29 15 26	6 6 52 23	6 05 8 28	–6 10	12 06	5
6	10 21 16 31	0 21 48 14	6 3 21 32	9 25 33 43	2 16 23 4	9 6 2 42	6 29 15 8	6 6 49 12	6 05 9 24	–5 47	15 10	6
7	10 22 16 36	1 4 34 16	6 3 17 54	9 26 6 33	2 16 23 5	9 6 53 10	6 29 14 35	6 6 46 01	6 05 10 51	–5 24	17 22	7
8	10 23 16 38	1 16 59 51	6 3 13 31	9 26 43 46	2 16 23 17	9 7 44 20	6 29 14 15	6 6 42 51	6 05 11 57	–5 00	18 41	8
9	10 24 16 39	1 29 9 40	6 3 8 21	9 27 25 3	2 16 23 41	9 8 36 10	6 29 13 39	6 6 39 40	6 05 11 58	–4 37	19 05	9
10	10 25 16 37	2 11 8 42	6 3 2 26	9 28 10 8	2 16 24 17	9 9 28 41	6 29 12 57	6 6 36 29	6 05 10 24	–4 13	18 37	10
11	10 26 16 34	2 23 1 41	6 2 55 44	9 28 58 46	2 16 25 5	9 10 21 49	6 29 12 9	6 6 33 18	6 05 7 06	–3 50	17 20	11
12	10 27 16 28	3 4 53 2	6 2 48 16	9 29 50 42	2 16 26 4	9 11 15 35	6 29 11 16	6 6 30 07	6 05 2 11	–3 26	15 18	12
13	10 28 16 20	3 16 46 31	6 2 40 3	10 0 45 44	2 16 27 15	9 12 9 55	6 29 10 16	6 6 26 57	6 04 56 03	–3 03	12 39	13
14	10 29 16 10	3 28 45 11	6 2 31 3	10 1 43 40	2 16 28 38	9 13 4 50	6 29 9 10	6 6 23 46	6 04 49 17	–2 39	9 26	14
15	11 0 15 58	4 10 51 28	6 2 21 16	10 2 44 20	2 16 30 12	9 14 0 17	6 29 7 59	6 6 20 35	6 04 42 37	–2 15	5 49	15
16	11 1 15 44	4 23 6 56	6 2 10 44	10 3 47 34	2 16 31 58	9 14 56 16	6 29 6 41	6 6 17 24	6 04 36 43	–1 52	+1 54	16
17	11 2 15 27	5 5 32 45	6 1 59 28	10 4 53 13	2 16 33 55	9 15 52 46	6 29 5 18	6 6 14 13	6 04 32 9	–1 28	–2 09	17
18	11 3 15 9	5 18 9 37	6 1 47 26	10 6 1 10	2 16 36 3	9 16 49 46	6 29 3 49	6 6 11 02	6 04 29 14	–1 04	–6 11	18
19	11 4 14 49	6 0 58 7	6 1 34 40	10 7 11 16	2 16 38 23	9 17 47 13	6 29 2 14	6 6 7 51	6 04 28 02	–0 40	–9 59	19
20	11 5 14 27	6 13 58 44	6 1 21 10	10 8 23 18	2 16 40 53	9 18 45 9	6 29 0 34	6 6 4 40	6 04 28 21	–0 17	–13 22	20
21	11 6 14 3	6 27 12 5	6 1 6 57	10 9 37 38	2 16 43 35	9 19 43 31	6 28 58 48	6 6 1 29	6 04 29 39	+0 07	–16 07	21
22	11 7 13 38	7 10 38 54	6 0 52 1	10 10 53 42	2 16 46 28	9 20 42 19	6 28 56 56	6 5 58 19	6 04 31 19	+0 31	–18 02	22
23	11 8 13 10	7 24 19 46	6 0 36 23	10 12 11 35	2 16 49 32	9 21 41 30	6 28 54 58	6 5 55 08	6 04 32 43	0 54	–18 56	23
24	11 9 12 41	8 8 15 0	6 0 20 6	10 13 31 14	2 16 52 47	9 22 41 6	6 28 52 46	6 5 51 57	6 04 33 18	1 18	–18 43	24
25	11 10 12 11	8 22 24 4	6 0 3 9	10 14 52 35	2 16 56 12	9 23 41 5	6 28 50 47	6 5 48 46	6 04 32 48	1 42	–17 20	25
26	11 11 11 38	9 6 45 20	5 29 45 34	10 16 15 36	2 16 59 48	9 24 41 27	6 28 48 34	6 5 45 35	6 04 31 09	2 5	–14 52	26
27	11 12 11 4	9 21 15 36	5 29 27 22	10 17 40 13	2 17 3 35	9 25 42 10	6 28 46 15	6 5 42 24	6 04 28 40	2 29	–11 27	27
28	11 13 10 28	10 5 50 13	5 29 8 35	10 19 6 24	2 17 7 33	9 26 43 12	6 28 43 51	6 5 39 13	6 04 25 47	2 52	–7 19	28
29	11 14 9 50	10 20 23 22	5 28 49 15	10 20 34 7	2 17 11 41	9 27 44 34	6 28 41 22	6 5 36 02	6 04 22 59	3 16	–2 45	29
30	11 15 9 10	11 4 48 47	5 28 29 54	10 22 3 23	2 17 15 59	9 28 46 14	6 28 38 47	6 5 32 51	6 04 20 45	3 39	+1 56	30
31	11 16 8 29	11 19 0 36	5 28 9 3	10 23 34 7	2 17 20 28	9 29 48 13	6 28 36 7	6 5 29 40	6 04 19 22	4 02	+6 26	31
अप्रै.	11 17 7 45	0 2 54 5	5 27 48 15	10 25 6 20	2 17 25 6	10 0 50 28	6 28 33 23	6 5 26 29	6 04 18 57	+4 26	+10 30	अप्रै.

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रात: 5/30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. २०७० (2013-14 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
1	11 14 36 39	10 10 10	8 17 31
4	11 14 46 51	10 10 16	8 17 31
7	11 14 57 09	10 10 21	8 17 32
10	11 15 07 15	10 10 26	8 17 32
13	11 15 17 21	10 10 32	8 17 32
16	11 15 27 21	10 10 36	8 17 32
19	11 15 37 15	10 10 41	8 17 31
22	11 15 47 03	10 10 45	8 17 31
25	11 15 56 39	10 10 50	8 17 30
28	11 16 06 03	10 10 54	8 17 28
मई	11 16 15 21	10 10 57	8 17 27
4	11 16 24 27	10 11 01	8 17 25
7	11 16 33 21	10 11 04	8 17 23
10	11 16 42 00	10 11 07	8 17 21
13	11 16 50 21	10 11 09	8 17 18
16	11 16 58 27	10 11 12	8 17 15
19	11 17 06 21	10 11 14	8 17 12
22	11 17 14 00	10 11 15	8 17 09
25	11 17 21 15	10 11 17	8 17 06
28	11 17 28 09	10 11 18	8 17 02
31	11 17 34 45	10 11 19	8 16 59
जून	11 17 37 00	10 11 19	8 16 57
4	11 17 43 09	10 11 19	8 16 54
7	11 17 49 00	10 11 20	8 16 50
10	11 17 54 21	10 11 20	8 16 45
13	11 17 59 27	10 11 19	8 16 41
16	11 18 04 09	10 11 18	8 16 37
19	11 18 08 27	10 11 17	8 16 33
22	11 18 12 21	10 11 16	8 16 28
25	11 18 15 51	10 11 15	8 16 24
28	11 18 18 51	10 11 13	8 16 19
जुला	11 18 21 33	10 11 11	8 16 15
4	11 18 23 45	10 11 08	8 16 10
7	11 18 25 33	10 11 06	8 16 05

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जुला	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
10	11 18 26 51	10 11 03	8 16 01
13	11 18 27 45	10 11 00	8 15 57
16	11 18 28 15	10 10 57	8 15 52
19	11 18 28 15	10 10 53	8 15 48
22	11 18 27 51	10 10 50	8 15 44
25	11 18 27 00	10 10 46	8 15 39
28	11 18 25 45	10 10 42	8 15 35
31	11 18 24 03	10 10 37	8 15 32
अग.	11 18 23 21	10 10 36	8 15 30
4	11 18 21 09	10 10 32	8 15 27
7	11 18 18 27	10 10 27	8 15 23
10	11 18 15 21	10 10 22	8 15 20
13	11 18 12 00	10 10 18	8 15 17
16	11 18 08 09	10 10 13	8 15 14
18	11 18 03 57	10 10 08	8 15 11
22	11 17 59 21	10 10 03	8 15 08
25	11 17 54 33	10 09 58	8 15 06
28	11 17 49 21	10 09 53	8 15 04
31	11 17 43 51	10 09 48	8 15 02
सितं.	11 17 41 57	10 09 47	8 15 01
4	11 17 36 03	10 09 42	8 15 00
7	11 17 29 57	10 09 37	8 14 59
10	11 17 23 39	10 09 32	8 14 58
13	11 17 17 03	10 09 28	8 14 57
16	11 17 10 21	10 09 23	8 14 56
19	11 17 03 27	10 09 18	8 14 56
22	11 16 56 27	10 09 14	8 14 56
25	11 16 49 21	10 09 10	8 14 57
28	11 16 42 09	10 09 06	8 14 57
अक्तू.	11 16 34 51	10 09 02	8 14 58
4	11 16 27 39	10 08 58	8 14 59
7	11 16 20 21	10 08 54	8 15 01
10	11 16 13 03	10 08 51	8 14 03
13	11 16 05 57	10 08 48	8 15 05

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अक्तू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
16	11 15 58 51	10 08 45	8 15 07
19	11 15 51 51	10 08 43	8 15 09
22	11 15 45 03	10 08 40	8 15 12
25	11 15 38 21	10 08 38	8 15 15
28	11 15 31 51	10 08 36	8 15 19
31	11 15 25 39	10 08 35	8 15 22
नवं.	11 15 23 33	10 08 34	8 15 23
4	11 15 17 39	10 08 33	8 15 27
7	11 15 12 03	10 08 32	8 15 31
10	11 15 06 39	10 08 32	8 15 36
13	11 15 01 39	10 08 32	8 15 40
16	11 14 56 57	10 08 32	8 15 45
19	11 14 52 39	10 08 32	8 15 50
22	11 14 48 39	10 08 33	8 15 55
25	11 14 45 03	10 08 34	8 16 00
28	11 14 41 57	10 08 35	8 16 06
दिसं.	11 14 39 09	10 08 37	8 16 11
4	11 14 36 51	10 08 39	8 16 17
7	11 14 34 57	10 08 41	8 16 23
10	11 14 33 33	10 08 43	8 16 29
13	11 14 32 39	10 08 46	8 16 35
16	11 14 32 09	10 08 49	8 16 41
19	11 14 32 03	10 08 53	8 16 47
22	11 14 32 27	10 08 56	8 16 53
25	11 14 33 21	10 09 00	8 16 59
28	11 14 34 45	10 09 04	8 17 06
31	11 14 36 33	10 09 09	8 17 12
जन. 2014	11 14 37 15	10 09 10	8 17 14
4	11 14 39 39	10 09 15	8 17 20
7	11 14 42 33	10 09 20	8 17 27
10	11 14 45 57	10 09 31	8 17 33
13	11 14 49 39	10 09 31	8 17 39
16	11 14 53 57	10 09 36	8 17 46
19	11 14 58 33	10 09 42	8 17 52

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
22	11 15 03 39	10 09 48	8 17 58
25	11 15 09 03	10 09 54	8 18 04
28	11 15 14 57	10 10 00	8 18 09
31	11 15 21 09	10 10 06	8 18 15
फर.	11 15 23 15	10 10 09	8 18 17
4	11 15 30 03	10 10 15	8 18 23
7	11 15 37 03	10 10 22	8 18 28
10	11 15 44 27	10 10 28	8 18 33
13	11 15 52 09	10 10 35	8 18 38
16	11 16 00 09	10 10 42	8 18 43
19	11 16 08 21	10 10 49	8 18 48
22	11 16 16 57	10 10 55	8 18 52
25	11 16 25 39	10 11 02	8 18 57
28	11 16 34 45	10 11 09	8 19 01
मार्च	11 16 37 45	10 11 11	8 19 02
4	11 16 47 03	10 11 18	8 19 06
7	11 16 56 33	10 11 25	8 19 09
10	11 17 06 09	10 11 32	8 19 13
13	11 17 15 57	10 11 38	8 19 16
16	11 17 25 51	10 11 45	8 19 18
19	11 17 35 51	10 11 51	8 19 21
22	11 17 45 57	10 11 58	8 19 23
25	11 17 56 09	10 12 04	8 19 25
28	11 18 06 21	10 12 10	8 19 27
31	11 18 16 39	10 12 16	8 19 28
अप्रै.	11 18 20 03	10 12 24	8 19 29
4	11 18 30 21	10 12 24	8 19 30
7	11 18 40 33	10 12 30	8 19 31
10	11 18 50 51	10 12 35	8 19 31
13	11 19 01 03	10 12 40	8 19 31
16	11 19 11 09	10 12 45	8 19 31
19	11 19 21 09	10 12 50	8 19 31
22	11 19 31 09	10 12 54	8 19 30
25	11 19 40 57	10 12 59	8 19 29
28	11 19 50 39	10 13 03	8 19 28

... जालन्धर (भा. स्टै. टा.), (सन् 2013-14 ई.)

दैनिक चन्द्रोदयास्त–जालन्धर (भा. स्टैं. टा.), (सन् 2013–14 ई.)

तारीख	जनवरी 2013 उदय घं. मिं.	जनवरी 2013 अस्त घं. मिं.	फरवरी 2013 उदय घं. मिं.	फरवरी 2013 अस्त घं. मिं.	मार्च 2013 उदय घं. मिं.	मार्च 2013 अस्त घं. मिं.	अप्रैल 2013 उदय घं. मिं.	अप्रैल 2013 अस्त घं. मिं.
1	21 26	9 39	23 16	10 01	22 12	8 41	— —	9 53
2	22 24	10 13	— —	10 40	23 16	9 23	0 14	10 52
3	23 21	10 47	0 19	11 23	— —	10 09	1 09	11 55
4	— —	11 23	1 22	12 11	0 19	11 01	2 00	12 58
5	0 22	11 59	2 26	13 03	1 21	11 57	2 45	14 01
6	1 23	12 39	3 29	14 03	2 20	12 57	3 26	15 02
7	2 28	13 25	4 27	15 07	3 13	14 00	4 03	16 03
8	3 33	14 16	5 20	16 12	4 02	15 04	4 40	17 02
9	4 39	15 14	6 09	17 19	4 46	16 09	5 16	18 01
10	5 43	16 19	6 52	18 25	5 27	17 12	5 51	18 58
11	6 41	17 26	7 32	19 28	6 05	18 13	6 28	19 55
12	7 33	18 34	8 10	20 29	6 42	19 13	7 06	20 50
13	8 20	19 41	8 46	21 29	7 17	20 12	7 47	21 43
14	9 01	20 46	9 21	22 26	7 54	21 09	8 32	22 34
15	9 39	21 47	9 58	23 23	8 31	22 06	9 18	23 22
16	10 15	22 46	10 35	— —	9 10	23 00	10 06	— —
17	10 50	23 44	11 15	0 18	9 53	23 52	10 57	0 07
18	11 24	— —	11 58	1 11	10 37	— —	11 51	0 49
19	12 00	0 39	12 43	2 02	11 25	0 42	12 45	1 29
20	12 38	1 34	13 33	2 50	12 15	1 29	13 41	2 05
21	13 19	2 28	14 24	3 36	13 07	2 13	14 37	2 41
22	14 03	3 20	15 18	4 20	14 01	2 59	15 36	3 16
23	14 49	4 10	16 13	5 00	14 58	3 34	16 36	3 53
24	15 40	4 57	17 10	5 38	15 54	4 10	17 39	4 31
25	16 33	5 42	18 09	6 15	16 59	4 47	18 45	5 11
26	17 27	6 24	19 07	6 50	17 53	5 22	19 53	5 56
27	18 24	7 04	20 07	7 26	18 55	5 59	20 59	6 46
28	19 20	7 40	21 09	8 02	19 59	6 38	22 03	7 42
29	20 18	8 16	— —	— —	21 05	7 19	23 03	8 43
30	21 16	8 50	— —	— —	22 10	8 05	23 56	9 46
31	22 16	9 25	— —	— —	23 14	8 57	— —	— —

तारीख	मई 2013 उदय घं. मिं.	मई 2013 अस्त घं. मिं.	जून 2013 उदय घं. मिं.	जून 2013 अस्त घं. मिं.	जुलाई 2013 उदय घं. मिं.	जुलाई 2013 अस्त घं. मिं.	अगस्त 2013 उदय घं. मिं.	अगस्त 2013 अस्त घं. मिं.
1	— —	10 50	0 42	12 51	0 30	13 36	1 06	15 05
2	0 44	11 55	1 18	13 49	1 07	14 33	1 51	15 55
3	1 26	12 57	1 53	14 46	1 44	15 27	2 39	16 41
4	2 05	13 57	2 29	15 42	2 25	16 19	3 29	17 24
5	2 41	14 56	3 05	16 37	3 08	17 10	4 21	18 05
6	3 16	15 54	3 44	17 31	3 54	17 58	5 14	18 42
7	3 51	16 51	4 25	18 23	4 43	18 44	6 09	19 18
8	4 27	17 47	5 10	19 13	5 34	19 26	7 03	19 52
9	5 04	18 42	5 57	20 01	6 26	20 05	7 59	20 26
10	5 44	19 36	6 47	20 45	7 19	20 41	8 55	21 01
11	6 27	20 28	7 38	21 26	8 13	21 16	9 52	21 36
12	7 13	21 17	8 30	22 04	9 08	21 50	10 50	22 15
13	8 01	22 03	9 25	22 39	10 03	22 24	11 50	22 57
14	8 51	22 46	10 18	23 14	10 59	22 59	12 53	23 44
15	9 43	23 26	11 13	23 47	11 57	23 35	13 55	— —
16	10 36	— —	12 09	— —	12 57	— —	14 56	0 37
17	11 31	0 03	13 06	0 26	14 00	0 14	15 54	1 36
18	12 25	0 39	14 07	0 57	15 03	0 59	16 49	2 39
19	13 22	1 13	15 10	1 36	16 07	1 50	17 39	3 45
20	14 20	1 48	16 15	2 19	17 10	2 48	18 24	4 54
21	15 21	2 24	17 22	3 09	18 09	3 51	19 06	6 00
22	16 24	3 02	18 27	4 05	19 02	4 58	19 46	7 06
23	17 31	3 44	19 29	5 07	19 50	6 07	20 25	8 09
24	18 38	4 31	20 25	6 14	20 34	7 16	21 02	9 11
25	19 44	5 25	21 16	7 22	21 14	8 22	21 41	10 11
26	20 48	6 25	22 00	8 31	21 52	9 26	22 20	11 09
27	21 46	7 29	22 40	9 37	22 30	10 27	23 03	12 05
28	22 38	8 36	23 18	10 40	23 06	11 27	23 47	12 58
29	23 24	9 42	23 55	11 41	23 43	12 24	— —	13 48
30	— —	10 48	— —	12 39	— —	13 20	0 34	14 36
31	0 05	11 51	— —	— —	0 24	14 14	1 24	15 21

दैनिक चन्द्रोदयास्त–जालन्धर (भा. स्टैं. टा.), (सन् 2013-14 ई.)

तारीख	सितम्बर 2013		अक्तूबर 2013		नवम्बर 2013		दिसम्बर 2013		जनवरी 2014		फरवरी 2014		मार्च 2014		अप्रैल 2014		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	2 15	16 02	2 46	15 50	4 18	16 08	5 05	16 07	6 57	17 44	8 04	19 54	6 36	18 37	7 12	20 31	1
2	3 07	16 40	3 41	16 25	5 19	16 48	6 10	17 00	7 54	18 53	8 46	21 00	7 18	19 42	7 55	21 32	2
3	4 02	17 18	4 37	17 00	6 21	17 32	7 15	17 58	8 46	20 02	9 27	22 03	7 59	20 46	8 38	22 28	3
4	4 56	17 53	5 34	17 37	7 26	18 21	8 17	19 02	9 31	21 10	10 07	23 05	8 39	21 49	9 25	23 22	4
5	5 52	18 27	6 34	18 14	8 31	19 16	9 15	20 08	10 13	22 15	10 46	— —	9 20	22 49	10 14	— —	5
6	6 48	19 02	7 35	18 55	9 33	20 15	10 08	21 15	10 53	23 17	11 25	0 04	10 02	23 46	11 04	0 12	6
7	7 45	19 38	8 38	19 40	10 31	21 18	10 54	22 21	11 32	— —	12 08	1 02	10 47	— —	11 55	0 58	7
8	8 45	20 16	9 41	20 30	11 25	22 22	11 37	23 24	12 09	0 19	12 52	1 57	11 33	0 41	12 46	1 40	8
9	9 45	20 57	10 42	21 25	12 14	23 26	12 16	— —	12 47	1 17	13 38	2 49	12 22	1 32	13 39	2 19	9
10	10 47	21 43	11 42	22 24	12 57	— —	12 54	0 27	13 27	2 14	14 27	3 38	13 12	2 19	14 31	2 55	10
11	11 48	22 33	12 37	23 26	13 37	0 30	13 30	1 26	14 09	3 09	15 17	4 24	14 02	3 03	15 25	3 30	11
12	12 48	23 29	13 28	— —	14 15	1 32	14 07	2 25	14 54	4 03	16 08	5 06	14 54	3 44	16 19	4 04	12
13	13 46	— —	14 14	0 29	14 52	2 32	14 45	3 22	15 41	4 53	17 00	5 46	15 47	4 21	17 14	4 38	13
14	14 41	0 29	14 57	1 33	15 28	3 31	15 26	4 19	16 30	5 41	17 54	6 22	16 40	4 57	18 11	5 14	14
15	15 31	1 32	15 36	2 36	16 07	4 31	16 10	5 14	17 21	6 26	18 47	6 58	17 35	5 31	19 10	5 50	15
16	16 17	2 37	16 14	3 39	16 46	5 29	16 56	6 07	18 13	7 08	19 41	7 31	18 29	6 05	20 10	6 31	16
17	17 00	3 43	16 52	4 40	17 28	6 25	17 44	6 57	19 06	7 46	20 35	8 05	19 24	6 40	21 11	7 14	17
18	17 39	4 47	17 30	5 41	18 13	7 20	18 35	7 44	19 59	8 22	21 30	8 39	20 21	7 16	22 11	8 03	18
19	18 18	5 52	18 10	6 40	19 01	8 12	19 26	8 28	20 52	8 56	22 27	9 14	21 19	7 53	23 09	8 56	19
20	18 56	6 53	18 50	7 39	19 50	9 02	20 18	9 08	21 45	9 29	23 24	9 52	22 19	8 33	— —	9 54	20
21	19 35	7 55	19 34	8 35	20 41	9 47	21 11	9 45	22 39	10 02	— —	10 32	23 18	9 17	0 04	10 55	21
22	20 15	8 54	20 20	9 29	21 33	10 30	22 04	10 20	23 35	10 37	0 24	11 18	— —	10 06	0 55	11 57	22
23	20 57	9 52	21 08	10 20	22 25	11 09	22 57	10 53	— —	11 12	1 24	12 09	0 16	11 00	1 42	13 02	23
24	21 41	10 47	21 58	11 08	23 18	11 45	23 51	11 26	0 32	11 50	2 23	13 06	1 13	11 59	2 26	14 05	24
25	22 28	11 39	22 49	11 52	— —	12 20	— —	12 00	1 18	12 34	3 20	14 08	2 07	13 01	3 06	15 —	25
26	23 16	12 29	23 41	12 33	0 12	12 53	0 46	12 35	2 33	13 23	4 15	15 13	2 58	14 05	3 46	— —	26
27	— —	13 15	— —	13 11	1 06	13 27	1 45	13 13	3 35	14 19	5 06	16 20	3 44	15 11	4 26	— —	27
28	0 07	13 58	0 35	13 47	2 02	14 02	2 44	13 55	4 36	15 20	5 52	17 29	4 28	16 17	5 05	— —	28
29	0 58	14 38	1 28	14 22	3 01	14 40	3 48	14 43	5 35	16 26			5 09	17 22	5 47	— —	29
30	1 51	15 14	2 24	14 56	4 01	15 21	4 52	15 38	6 29	17 35			5 50	18 26	6 30	— —	30
31	— —	— —	3 20	15 31	— —	— —	5 55	16 38	7 18	18 45			6 31	19 30			[illegible]

...मुहूर्त—सं. २०७० वि. (सन् 2013-14 ई.)

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त—सं. २०७० वि. (सन् 2013–14 ई.)

समय शुद्धि विचार••••••

✡ शुक्रास्तोदय–शुक्र 10 फरवरी, 2013 ई. को पूर्व में अस्त होकर **22 अप्रैल, 2013 ई., सोमवार को पश्चिम से उदय होगा।** 23 से 25 अप्रै. तक शुक्र बाल्यत्व (दोष) का विचार रहेगा।

✡ खण्ड चन्द्रग्रहण–चैत्र पूर्णिमा, **25 अप्रैल, गुरुवार** की रात्रि को **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** लगेगा, जो कि भारत में दृष्टिगोचर होगा।

✡ गुरु अस्तोदय–6 जून से 1 जुलाई तक गुरु पश्चिम में अस्त रहेगा, ता. (2) जुलाई को पूर्व में उदित होगा।

✡ श्राद्ध पक्ष–19 सितम्बर से 4 अक्तू. तक श्राद्ध रहेंगे।

✡ कार्तिक मास–17 अक्तू. से 15 नवम्बर तक **कार्तिक मास** रहेगा। इस अवधि में पर्वतीय प्रदेशों में विवाहादि शुभ कार्य सम्पादित किए जाते हैं।

✡ भीष्म पंचक–(13 से 17 नवम्बर)–पंजाब, हिमाचलादि कुछ प्रदेशों में विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्यों का सम्पादन शुभ नहीं माना जाता है, जबकि भारत के अधिकांश अन्य प्रदेशों में जैसे उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, गुजरात आदि में वि. आदि शुभ कृत्यों का निषेध नहीं माना जाता।

✡ चातुर्मास्यादि में विवाह मुहूर्त–पंजाब, हि. प्र., दिल्ली, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर आदि प्रदेश में चातु. मासों (आषा. शु. 11 से कार्ति. पूर्णिमा तक) में अनेकों वर्षों से परम्परावश विवाहादि शुभ मु. मान्य माने जाते हैं। **मुहूर्त्त चिंतामणि** पीयूषधारा में भी इसकी पुष्टि की गई है। **–पं. पन्ना लाल**

✡ पुनः शुक्रास्तोदय–8 जन. से 13 जन. 2014 ई. के मध्य शुक्र पश्चिम में अस्त रहेगा। 14 जन. 2014 ई० मध्य रात्रि के बाद की प्रातः 4/52 पर पूर्व में उदय होगा।

✡ होलाष्टक–8 मार्च से 16 मार्च 2014 ई. तक होलाष्टक रहेंगे। इस अवधि में भी विवाह आदि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे।

✡ स्पष्टीकरण–नीचे विवाह मुहूर्त्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्तिसाम्य (९), दग्धा तिथि (१०)–इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) **दोषाभाव** अर्थात् **गुण की सूचक** है जबकि आड़ी रेखा (ऽ) **दोष की** सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। **परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। मुहूर्त्तों में सूक्ष्म क्रान्ति–साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।**

विवाह मुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण–विवाह मुहूर्त्तों में लग्न **विवरण में १ को मेष**, २ को वृष, **३ को मिथुन**, ४ को कर्क, ५ को सिंह, **६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक**, ९ को धनु, १० को मकर, **११ को कुम्भ** तथा १२ की संख्या को **मीन लग्न** जानें॥

दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न–

चं. दा. = अर्थात् इस विवाह लग्न में चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान व पूजा करके विवाह कर सकते हैं। इसी प्रकार मं. दा., बु. दा. आदि अन्य ग्रहों को समझें।

✲ वैशाख मास (अप्रैल–मई) ✲ सन् 2013 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
वैशा. कृष्ण ४, सोम	29 अप्रै.	१७ वैशा.	मूल	मेष	धनु	।।।।ऽ गु.ऽचौ. ।ऽ।।	दि. ल. ३ (चं. बु. का दान), ५ (बु. शु. दान), गोधूली, रा. ल. १० (चं. केतु दान), ११ (बु. शु. दा.), १२ (मीने मं. बु. का दान)।
वैशा. कृष्ण ५, मंग.	30 अप्रै.	१८ वैशा.	उ.षा.	मेष	धनु	।ऽसा।ऽगु. ।।।।।(।ऽ)	रात्रि ल. १२ (मं., बु. शु. दान, मीन ल. रात्रि 28/10 बाद, पादेन गुरू वेधाभावः, दग्धा परि.
वैशा.कृष्ण ६/७, बुध	1 मई	१९ वैशा.	उ.षा.	मेष	धनु/मक	।ऽ।ऽगु. ।ऽरो. ।।।(ऽ।)	दि. ल. २ (मं. शु. दान), ४ (चं. मं. रा. दान), रात्रि ल. ११ (चं., मं., शु. दान), दिवस लग्ने द. तिथि दोष परिहार, रात्रौऽभाव, बुधास्ते पूज्य दान व, भद्रा पातालगे शुभप्रदा
वैशा. कृष्ण ७, बुध	1 मई	१९ वैशा.	श्रवण	मेष	मकर	ऽबु.श. ।।।।ऽरो. ।ऽ।।	रात्रि ल. ११ (चं. मं. शु. दान), १२ (मीने बु. गु. दान)
वैशा. कृष्ण ८, गुरू	2 मई	२० वैशा.	श्रवण	मेष	मकर	ऽबु.श.।।।।।।ऽ।।	दि. ल. २ (मं. शु. दान), ४ (चं. मं. राहु दान), गोधूली च.
वैशा. कृष्ण ८, गुरू	2 मई	२० वैशा.	धनि.	मेष	मकर	।।।।।।ऽऽ।।	रा. ल. ११ (चं. मं. शु. दा.), १२ (बु. गु. दान)
वैशा. कृष्ण ९, शुक्र	3 मई	२१ वैशा.	धनि.	मेष	मक/कुंभ	।।।।।ऽऽऽ।।	दि. ल. २ (मं. शु. दान), ४ (चं. मं. राहु दान) [दुपै. 13/15 से रात्रि 25/35 तक मृत्युबाण दोष]
वैशा. कृष्ण १२, सोम	6 मई	२४ वैशा.	उ.भा.	मेष	मीन	ऽशु.ऽ।।।ऽ नृप ऽवि. ।।।	दि. ल. ४ (प्रातः 10/45 के बाद, मं. रा. दा.) गोधू. रात्रि, ल. १० एवं ११ (राहु, मंग., बुध दान)
वैशा. शु. १/२, शनि	11 मई	२९ वैशा.	रोहिणी	मेष	वृष	ऽमं.ऽअति. ।।।।।।।।	दि. ल. ५ (मं. बु. दा., सिंह ल. 13/24 बाद), दुपै. 13/24 तक अतिगण्ड दोषः रात्रि ल. १० (मं. के. बु. दा.), ११ (बु. के. दा.), १२ (गु. शु. दान)

शुभ विवाह मुहूर्त—वैशाख मास

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
वैशा. शुक्ल २, रवि	12 मई	३० वैशा.	रोह.	मेष	वृष	ऽ मं. ऽ । । । । ऽ । । ।	दि. ल. २ (मं. बु. दा.), ३ (चं. दा.), ४ (मं. बु. दा.), ५ (मं. बु. दा.) (सिंह ल. 13/51 तक)
वैशा. शु. २/३, रवि	12 मई	३० वैशा.	मृग.	मेष	वृष	। । ऽ गु. । । ऽ ऽ । । ।	दि. ल. ५ (मं. बु. दा.), गोधूली च, रात्रि 20/35 के बाद मृत्युबाण दोष
वैशा. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा.	मृग.	मेष	मिथुन	। । ऽ गु. । । ऽ ऽ । । ।	दि. ल. ४ (चं. रा. दा.), ५ अक्षयतीज, सिद्ध मु., मासांत दोष रात्रि 22/21 बाद (आवश्यके) मिथुन लग्ने मृ.बा. दोषः, पादेन गु. युति अभाव

✲ ज्येष्ठ मास (मई—जून) ✲ सन् 2013 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
वैशा. शुक्ल ८, शनि	18 मई	५ ज्येष्ठ	मघा	वृष	सिंह	ऽ गु. के. । । । ऽ नृप । ऽ । ।	दि. ल. ३ (बु. शु. दा.), ४ (मं., बु. रा. दान), रात्रि ल. ११ (चं., बु. दान)
वैशा. शुक्ल १०, सोम	20 मई	७ ज्येष्ठ	उ.फा.	वृष	सिं./कं.	। ऽ हर्ष । । । ऽ चौ । ऽ । ।	दि. ल. ३ (बु. शु. दा.), ४ (मं. बु. रा. दान), ५ (बु. शु. दा., सिंह ल. 11/54 के बाद) गोधू. रात्रि ल. १० (मं. शु. दा.), १२ (मीने चंद्र, बु. शु. दान)
वैशा. शुक्ल ११, मंग.	21 मई	८ ज्येष्ठ	हस्त	वृष	कन्या	। । । । । ऽ चौ. ऽ व. । । ।	दि. ल. ३ (बु. शु. दा.) ४ (मं. बु. रा. दान), ५ (बु. शु. दान), गोधूलि च रा. ल. १० (मं. शु. दान), १२ (चं. बु. शु. दान) भद्रा पाताले शुभदाः
वैशा. शुक्ल १२, बुध	22 मई	९ ज्येष्ठ	चित्रा	वृष	कं./तुले	ऽ सू. । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ३ (बु. शु. दान), ४ (मं. बु. रा. दान), ५ (बु. मं. शु. दा.), गोधूलि च रा. ल. १० (मं. शु. दान), ११ (चं. बु. दान)-शिव पूजन, रुद्राभिषेक (आवश्यके)
ज्ये. कृ. १/२, रवि	26 मई	१३ ज्येष्ठ	मूल	वृष	धनु	। ऽ सा. । । ऽ बु.गु.शु. ऽ अ. । । । ।	गोधूलि, रा. ल. १० (चं. मं. केतु दान), ११ (मं. बु. दान), १२ (मीने मं. शु. का दान)
ज्ये. कृष्ण ३, सोम	27 मई	१४ ज्येष्ठ	मूल	वृष	धनु	। ऽसा. । । ऽबु.गु.शु. । । । । ।	दि. ल. ३ (च. मं. बु. दान), ५ (मं. बु. का दान), ६ (सू. बु. का दान), कन्या लग्न 14/44 तक, भद्रा पातालगे शुभप्रदा
ज्ये. कृष्ण ४, मंग.	28 मई	१५ ज्येष्ठ	उ.षा.	वृष	धनु/मक	। । । ऽगु.शु. । ऽनृ. । ऽ । ऽ	दि. ल. ५ (मं. दान, सिंह ल. दुपै. 12/10 बाद), ६ (मं., रा. दान), गोधूलि रा. ल. ११ (चं. मं. दान), १२ (मं. शु. दान), दग्धा तिथि परिहार, पादेन गु. शु. वेधऽभाव
ज्ये. कृष्ण ५, बुध	29 मई	१६ ज्येष्ठ	उ.षा.	वृष	मकर	। । । ऽगु.शु. ।ऽनृ । ऽ । ऽ	दि. ल. ३ (मं., बु. का दान), ४ (चं. बु. दान), पादेन गु. शु. वेधाभाव
ज्ये. कृष्ण ५, बुध	29 मई	१६ ज्येष्ठ	श्रवण	वृष	मकर	। । । । । । । ऽ ऽ ।	दि. ल. ४ (चं. बु. दा.), ६ (मं. रा. दान), गोधूलि, च रा. ल. ११ (चं. मं. का दान), १२ (मं. गु. का दान)
ज्ये. कृ. ६, गुरु	30 मई	१७ ज्येष्ठ	श्रवण	वृष	मकर	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ३ (8/18 तक) (मं. चं. दान पूज्य च) अष्टम चंद्र परिहार-आवश्यके
ज्ये. कृष्ण ६, गुरू	30 मई	१७ ज्येष्ठ	धनि.	वृष	मक/कुं	। ऽ । । । ऽ चौ.ऽ । । ।	दि. ल. ४ (चं. शु. दा.), ६ (मं. शु. का दान कन्या ल. 14/40 तक, भद्रापूर्वे), गोधू., रा. ल. १२ (गु. शु. दा. मीन ल. रात 1/52 बाद, भद्रोत्तरे)
ज्ये. कृष्ण ९, रवि	2 जून	२० ज्येष्ठ	उ.भा.	वृष	मीन	। । । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (सू. मं. दा.), ४ (श. रा. दा.), ६ (चं. गु. दा.) गोधूलि रा. ल. ११ (मं. दा. कुंभ ल. रात 12/05 तक अल्पकाले ग्राह्य, तदुपरान्त भद्रा दोष, आवश्यके

✲ आषाढ़ मास (जुलाई—अगस्त) ✲ सन् 2013 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आषा. शुक्ल ३, गुरू	11 जुला	२८ आषा	मघा	मिथुन	सिंह	ऽ के. । । । । । । । । ।	ल. गोधूलि, रा. ल. ११ (चं. शु. दा., छटे शत्रु राशिगत शुक्र परि.), २ (मं. शु. बु. का दान)
आषा. शुक्ल ४, शुक्र	12 जुला	२९ आषा	मघा	मिथुन	सिंह	ऽ के. । । । । ऽ नै. । । । ।	दि. ल. ४ (गु. रा. मं. दा., कर्क लग्न प्रातः 7/21 तक भद्रापूर्वे ग्राह्य

शुभ विवाह मुहूर्त—आषाढ़ मास (जुलाई—अगस्त)

शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)

शुभ विवाह मुहूर्त—आषाढ़ मास (जुलाई-अगस्त)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आषा. शुक्ल ५, शनि	13 जुला	३० आषा.	उ.फा	मिथुन	सिं./कं.	। । । । । । । । । ।	रा. ल. ११ (चं. शु. दा.), छटे शत्रु राशिस्थ शुक्र परि.), २ (मं., शु. बु. दान)
आषा. शुक्ल ६, रवि	14 जुला	३१ आषा.	उ.फा.	मिथुन	कन्या	। । । । । ऽ । । । ।	दि. ल. ४ (सू. मं. रा. दान), ५ (सू. मं. शु. दान), गोधूलि च.
आषा. शु. ६/७, रवि	14 जुला	३१ आषा	हस्त	मिथुन	कन्या	। । । । । ऽ अ ऽ परि ऽ । ।	रात्रि ल. १२ (चं. मं. दान), २ (मं. शु. बु. दानपूर्वक)

✲ श्रावण मास (जुलाई–अगस्त) ✲ सन् 2013 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आषा. शु. १२, शनि	20 जुला	५ श्रावण	मूल	कर्क	धनु	ऽसू. । । । । ऽ नृ. । । । ।	रा. ल. १२ (मं. शु. दा. शत्रुक्षेत्रे छटे शुक्र परिहार)
आषा.शु.१३/१४,रवि	21 जुला	६ श्रावण	मूल	कर्क	धनु	ऽ सू. । । । । । । । । ।	दि. ल. ५ (सू. दा.), ६ (मं. गु. दा.) कन्या ल. दुपै. 11/53 तक
आषा. शु. १५, सोम	22 जुला	७ श्रावण	उ.षा.	कर्क	धनु./म.	। । । । । ऽ चो.ऽवि.ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू. दा., लग्न 8/57 बाद ग्राह्य), ६ (मं. गु. दान), गोधूलि रा. ल. १२ (मं. शु. दा. छटे शुक्र परि.), २ (मं. दा.), भद्रा पाताले शुभप्रदा.
श्राव. कृष्ण १, मंग.	23 जुला	८ श्रावण	श्रवण	कर्क	मकर	ऽ श. । । ऽशु.ऽसू. । । ऽ । ।	दि.ल.६ (मं.गु.दा.), गोधू., रा.ल.१२ (मं.शु.दा.), २ (मं.गु.दा.), पादेन शुक्र वेधाभावः
श्राव. कृष्ण २, बुध	24 जुला	९ श्रावण	धनि.	कर्क	मकर	ऽ रा. । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ६ (मं. गु. दा.), **गोधूलि,** रा. ल. १२ (मं. शु. दा.), २ (मं. गु. दा., वृष लग्न रात 1/03 (25/03 घं. मिं.) तक
श्राव. कृ. ४/५, शुक्र	26 जुला	११ श्रावण	उ.भा.	कर्क	मीन	। ऽ ति । । । ऽ । ऽ । ।	रात्रि ल. २ (मं. गु. दान), अर्ध-रात्रि 3/13 (27/13 घं.मिं.) के बाद मृत्युबाण दोष., दुपै. 2/15 घं.मिं. तक अतिगण्ड दोष चिंतनीय
श्राव. कृष्ण ५, शनि	27 जुला	१२ श्रावण	उ.भा.	कर्क	मीन	। ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ	रा. ल. ११ (शु. ७वें पूज्य दानपूर्वक तिथि दोष, आवश्यके)
श्राव. कृष्ण ५, शनि	27 जुला	१२ श्रावण	रेवती	कर्क	मीन	। । । । । ऽ अ ऽ । । ऽ	रात्रि ल. २ (मं. गु. दान)
श्राव. कृष्ण ६, रवि	28 जुला	१३ श्रावण	रेवती	कर्क	मीन	। । । । । ऽ अ ऽ । । ऽ	दि. ल. ६ (चं. मं. दान), **कन्या ल. प्रातः 10/16 तक,** तदुपरांत भद्रा दोष व्याप्ति, कन्या लग्ने गुरू केन्द्रे, तिथि दोष परिहार
श्राव.कृष्ण ६/७, रवि	28 जुला	१३ श्रावण	अश्वि	कर्क	मेष	ऽबु । । ऽ शु. । ऽ । ऽ । ।	रा. ल. २ (चं. मं. का दान), पादेन शुक्र वेधाभावः
श्राव. कृष्ण ७, सोम	29 जुला	१४ श्रावण	अश्वि	कर्क	मेष	ऽबु. । । ऽ शु. । । । ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू. चं. दान), गोधूलि, रा. ल. १२ (शु. चं. दा., छटे शुक्र शत्रु राशि- -गतेन परिहारः, पादेन शुक्र वेधाभावः)
श्राव. कृष्ण १०, गुरु	1 अग.	१७ श्रावण	रोहि.	कर्क	वृष	। । । । । ऽ चौ. ऽ ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू. दा.), ६ (मं. रा. दान), गोधू., रात्रि ल. १२ (शु. मं. दा.) छटे शुक्र परिहार, २ (वृषे चं. मं. दान)
श्राव. कृष्ण ११. शुक्र	2 अग.	१८ श्रावण	रोहि.	कर्क	वृष	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू. मं. दान)
श्राव.कृ.११/१२, शुक्र	2 अग.	१८ श्रावण	मृग.	कर्क	वृ./मिथु	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू. मं. दा.), ६ (मं. रा. दा.), गोधूलि रा. ल. १२ (चं. शु. दा., शुक्र छटे परिहार), २ (चं. मं. शु. दा.)
श्राव. कृ. १२, शनि	3 अग.	१९ श्रावण	मृग	कर्क	मिथुन	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू. दा.), ६ (मं. रा. का दान)
श्राव. शुक्ल १, बुध	7 अग.	२३ श्रावण	मघा	कर्क	सिंह	। । । । । । । । । ।	रा. ल. २ (वृषे चन्द्र-मंगल का दान)
श्राव शुक्ल २, गुरु	8 अग.	२४ श्रावण	मघा	कर्क	सिंह	। । । । । ऽ नृ. । । । ।	दि. ल. ६ (चं. मं. शु. दान), गोधू., रा. ल. ११ (चं. शु. ७वें पूज्य व दान)

शुभ विवाह मुहूर्त—श्रावण मास

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
श्राव. शुक्ल ३, शुक्र	9 अग.	२५ श्रावण	उ.फा.	कर्क	सिंह	। । । । । । । । । ।	रा. ल. २ (चं. मं. शु. दा., वृष ल. 25/09 के बाद)
श्राव. शु. ३/४, शनि	10 अग.	२६ श्रावण	उ.फा	कर्क	कन्या	। । । । । ऽ चौ । । । ।	दि. ल. ५ (ल. 7/27 के बाद, सू. बु. दा.), रा. ल. १२ (चं. शु. दान), २ (चं. मं. दा.) भद्रा पातालगे शुभप्रदा
श्राव. शु. ४/५, रवि	11 अग.	२७ श्रावण	हस्त	कर्क	कन्या	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ५ (सू. बु. दा.), गोधू, रा. ल. १२ (चं. शु. दा.) (षष्ठे शुक्र परिहार), रा. ल. २ (चं. मं. शु. दान)
श्राव. शु. ५/६, सोम	12 अग.	२८ श्रावण	चित्रा	कर्क	कं./तु.	। ऽ सा. । । । ऽ रो. । । । ऽ	दि. ल. ५ (सू. बु. दान), गोधू., रात्रि ल. २ (चं. मं. शु. दान, चंद्र षष्ठे शत्रुराशिस्थ परिहारः)

※ भाद्रपद मास (अगस्त—सितम्बर) ※ सन् 2013 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
श्राव. शुक्ल १२, रवि	18 अग.	३ भाद्र.	उ.षा.	सिंह	ध/मक	ऽसू. । । । ऽ मं. ऽअ । । । ।	ल. गोधू., रा. ल. १२ (शु. ७वें पूज्य दान व), २ (मं. शु. दा. वृष ल. रात 12/01 के बाद ग्राह्य, ३ (चं. दा. पूज्य व, शत्रु राशिगत अष्टमस्थ चंद्र परिहार, मिथुन लग्न रात्रि 1/59 बाद ग्राह्य)
श्राव. शुक्ल १३, सोम	19 अग.	४ भाद्र.	उ.षा.	सिंह	मकर	ऽसू. । । । ऽ मं.ऽअ. । । । ।	दि. ल. ६ (सू. बु. शु. दा.), ९ (गु. श. दान, धनु लग्न सायं 16/08 तक ग्राह्य, नीच राशिगते भौमाष्टम परिहार
श्राव. पूर्णिमा मंग	20 अग.	५ भाद्र.	धनि.	सिंह	म/कुंभ	ऽ रा. । । । । ऽ नृ ऽ ऽ । ।	दि. ल. ९ (गु., मं. दा., भौमाष्टम परि.), भद्रा पातालगे शुभप्रदा, गोधू., रा. ल. २ (मं. शु. दान)
श्राव. पूर्णिमा बुध	21 अग.	६ भाद्र.	धनि.	सिंह	कुम्भ	ऽ रा. । । । । ऽ नृ ऽ ऽ । ।	दि. ल. ६ (चं. बु. शु. दा.) शत्रुराशिगत चन्द्र छटे परिहार—आवश्यके
भाद्र. कृष्ण ३, शुक्र	23 अग.	८ भाद्र.	उ.भा.	सिंह	मीन	। । । ऽ शु. । ऽ चौ । । । ।	दि. ल. ६ (चं. बु. दा. लग्न प्रातः 8/12 बाद), रात्रि ल. ३ (मं. बु. दान) पादेन शुक्र वेधाभावः, दुपै. 13/25 से रात्रि 24/37 तक भद्रादोष
भाद्र कृष्ण ४, शनि	24 अग.	९ भाद्र.	रेव.	सिंह	मीन	। ऽ । । ऽ शु. । ऽ ऽ । ।	रात्रि ल. २ (मं., शु. दान), ३ (मं. बु. दा.) प्रातः 7/33 से सायं 18/05 तक शूल दोष।।
भाद्र. कृष्ण ५, रवि	25 अग.	१० भाद्र.	अश्वि.	सिंह	मेष	। ऽ । ऽ बु. । ऽ रो. । ऽ ऽ ।	दि. ल. ९ (मं. गु. दान), भौमाष्टम परिहार, गोधू., रात्रि ल. २ (चं. मं. का दान), ३ (मिथुने चं. बु. का दान), पादेन बुध वेधाभावः
भाद्र. कृष्ण ८, बुध	28 अग.	१३ भाद्र.	रोह.	सिंह	वृष	। ऽ । । । ऽअऽव्या. ऽ । ।	गोधूलि., रात्रि ल. २ (मं. शु. का दान), ३ (मं. बु. शु. दान) व्याघात की प्रथम ९ घड़ियाँ त्याज्य
भाद्र. कृष्ण ९, गुरु	29 अग.	१४ भाद्र.	रोह.	सिंह	वृष	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ६ (मं. शु. दानपूर्वक)
भाद्र. कृष्ण ९, गुरु	29 अग.	१४ भाद्र.	मृग	सिंह	वृ./मिथु	ऽ बु. ऽ हर्ष । । । । । ऽ । ।	ल. गोधू., रात्रि ल. २ (मं. शु. दान), ३ (मं. बु. शु. दान) रात्रौ हर्षण दोषाभावः
भाद्र. कृ. ९/१० शुक्र	30 अग.	१५ भाद्र.	मृग	सिंह	मिथुन	ऽ बु. ऽ । । । ऽ नृ.ऽ ऽ । ऽ	दि. ल. ६ (मं. शु का दान, केन्द्रे गुरू योगेन तिथि परिहारः) ९ (चं. गु. मं. दान, धनुषि अष्टम भौम परि.)
भाद्र. शुक्ल १, शुक्र	6 सितं.	२२ भाद्र.	उ.फा.	सिंह	सिं./कं.	ऽगु.ऽसा.ऽबु. । ।ऽअ. । । । ।	दि. ल. ६ (चं. बु. शु. दान), ९ (गु. मं. दान, भौमाष्टम परि.), गोधूलि रात्रि ल. २ (मं. शु. दा.), ३ (मं. शु. बु. दान)—कन्या लं. प्रातः 7/28 बाद
भाद्र. शुक्ल २, शनि	7 सितं.	२३ भाद्र.	हस्त	सिंह	कन्या	। । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ९ (मं. गु. का दान, भौमाष्टम परि.) (14/13 से 20/12 तक क्रान्तिसाम्य दोष) रात्रि ल. २ (मं. शु. दान), ३ (मं. बु. दान)
भाद्र. शुक्ल ३, रवि	8 सितं.	२४ भाद्र.	चित्रा	सिंह	कं./तु.	। । ऽ शु. । । ऽ नृ. । । । ।	दि. ल. ९ (गु. मं. दान, भौमाष्टम परि.), गोधू., रात्रि ल. ३ (चं. मं. शु. का दान), पादेन शुक्र युति परि.
भाद्र. शुक्ल ४, सोम	9 सितं.	२५ भाद्र.	चित्रा	सिंह	तुला	। । ऽ शु. । । ऽ नृ. । । । ।	दि. ल. ६ (चं. रा. दान), भद्रा पातालगे शुभ फलप्रदा, पादेन शुक्र युति परिहार
भाद्र शुक्ल ८, शुक्र	13 सितं.	२९ भाद्र.	मूल	सिंह	धनु	ऽ सू. । । ऽ गु. । ऽ । ऽ । ।	दि. ल. ६ (मं. रा. दान), ९ (चं. मं. गु. दा., लग्नोपरि गुरू दृष्टि शुभफला), गोधू., रा. ल. ३ (चं. मं. दान), पादेन गुरु वेधाभावः

शुभ विवाह मुहूर्त—आश्विन मास (सित...) (सन् 2013 ई.)

…का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)

शुभ विवाह मुहूर्त—आश्विन मास (सित.-अक्तू.) (सन् 2013 ई.)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आश्वि. शुक्ल १, शनि	5 अक्तू	२० आश्वि	हस्त	कन्या	कन्या	।।ऽसू.।।।ऽ।।।	दि. ल. ९ (सू. चं. मं. गु. दान)-सूर्य-युति एवं भौम अष्टम परिहार
आश्वि. शुक्ल १, शनि	5 अक्तू	२० आश्वि	चित्रा	कन्या	कं./तुला	।।।।।।।।।।	रा. ल. ३ (चं. मं. शु. दा., शुक्र छटे परि.) ल. ४ (चं. गु. रा. की पूजा दान वा) चन्द्र की विशेष पूजा व दानपूर्वक
आश्वि. शुक्ल २, रवि	6 अक्तू	२१ आश्वि	चित्रा	कन्या	तुला	।।।।।ऽ।।।।	रा. ल. ३ (चं. मं. दा.), ४ (चं. गु. रा. दान), रात्रौ लग्न 21/57 बाद, वैधृति योग उपरान्त
आश्वि. शु. ६/७, गुरु	10 अक्तू	२५ आश्वि	मूल	कन्या	धनु	।।।ऽगु.।।ऽऽ।।	दि. ल. ९ (चं. गु. शु. दा.) लग्नस्थ चंद्र उपरि गुरु दृष्टि शुभा, **गोधूलि** रा. ल. ३ (चं. शु. दान पूज्य, शत्रु राशिस्थ छटे शुक्रः परिहार:
आश्वि. शुक्ल ८, शनि	12 अक्तू	२७ आश्वि	उ.षा.	कन्या	ध/मक	।।।।ऽगु.।।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (चं. गु. शु. दा.), लग्नस्थ चंद्रोपरि गुरू दृष्टि शुभदा, रा. ल. २ (शुक्र सप्तम पूज्य दान व), ३ (चं. शु. दा. चंद्राष्टम व षष्ट शुक्र परिहार), ४ (चं. गु. दान)
☼ कार्तिक मास (अक्तू.-नवं.) (पर्वतीय क्षेत्रों के लिए) ☼ सन् 2013 ई.							
कार्ति. कृष्ण १, शनि	19 अक्तू	३ कार्ति	अश्वि	तुला	मेष	।ऽहर्ष।।ऽसू.ऽअ.।ऽ।।	दि. ल. ९ (चं. गु. शु. दा.), १२ (सू. बु. दा.), रा. ल. ३ (चं. शु. दा., छटे शुक्र परि.), ४ (सू. रा. दान)
कार्ति. कृष्ण ३, सोम	21 अक्तू	५ कार्ति	रोहि.	तुला	वृष	।ऽ।।।ऽनृ.ऽऽ।।	रात्रि ल. ६ (मं. शु. सू. दान), स्वर्गगते भद्रा शुभप्रदा।।
कार्ति. कृ. ३/४, मंग.	22 अक्तू	६ कार्ति	रोहि.	तुला	वृष	।ऽ।।।।ऽऽ।।	सायं ल. १२ (सू. बु. दान), गोधू., रात्रि ल. ३
कार्ति. कृ. ४/५, बुध	23 अक्तू	७ कार्ति	मृग	तुला	वृ./मिथु	।ऽपरि.।।ऽशु.ऽचौ.।ऽ।।	सायं ल. १२ (सू. बु. दान), **गोधू., रात्रि** ल. ३ (सू. बु. शु. दान:, छटे शत्रुराशिस्थ शुक्र परिहार, मिथुन ल. रात 21/10 तक), ल. ४ (मं. रा., बु. का दान), ६ (सू. बु. मं. दान)
कार्ति. कृ.९/१०, सोम	28 अक्तू	१२ कार्ति	मघा	तुला	सिंह	।।।।।ऽअ।ऽ।ऽ	रात्रि ल. ३ (सू. बु. शु. दा.)- मिथुन ल. 21/38 के बाद, ल. ४ (सू. बु. रा. दान), ६ (सू. चं. मं. बु. दा.) = **मिथुन व कन्या** लग्नों में तिथि दोष परिहार:
कार्ति. कृ. १०, मंग.	29 अक्तू	१३ कार्ति	मघा	तुला	सिंह	।।।।।।।ऽ।ऽ	रा. ल. ३ (बु. शु. दा., मिथुन लग्न 21/36 बाद, भद्रोत्तरे), ४ (सू. बु. राहु दानपूर्वक, कर्क ल. 23/30 तक ग्राह्य)-मिथुन दग्धातिथिदोषऽभाव:
कार्ति. कृ. ११, बुध	30 अक्तू	१४ कार्ति	उ.फा.	तुला	सिंह	ऽगु.।।।।ऽनृप।ऽ।।	रात्रि ल. ४ (सू. बु. रा. दान-कर्क लग्न रात्रि 12/43 के बाद), ६ (चं. बु. शु. मं. दानपूर्वक)
कार्ति कृ. १२, गुरू	31 अक्तू	१५ कार्ति	उ.फा.	तुला	कन्या	ऽगु.।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (गु. बु. दान), १२ (चं., बु. सू. दान), ३ (शु. ७वें पूज्य दान व), ४ (सू. रा. शु. दान-शुक्र छटे परिहार)
कार्ति. शु. १/२, सोम	4 नवं.	१९ कार्ति	अनु.	तुला	वृश्चि.	।।।।।।ऽ।।।	रा. ल. ३ (चं. बु. शु. दान, मिथुन ल. 21/24 बाद), ४ (चं. शु. रा. दान, छटे नीच राशिस्थ चन्द्र परिहार), ६ (चं. मं. बु. दान)
कार्ति. शु. २, मंग.	5 नवं.	२० कार्ति	अनु.	तुला	वृश्चि.	।।।।।ऽऽ।।।	दि. ल. ९ (चं. गु. दा.), दुपैहर 13/10 के बाद मृत्युबाण दोष: व्याप्ति
कार्ति. शु. ३/४, बुध	6 नवं.	२१ कार्ति	मूल	तुला	धनु	।।ऽशु.ऽगु.।ऽअग्नि।।।।	रा. ल. ३ (चं. बु. शु. दा.), ६ (बु. रा. दान) पादेन शुक्र युति एवं गुरु वेधाभाव:
कार्ति शु. ४/५, गुरु	7 नवं.	२२ कार्ति	मूल	तुला	धनु	।।ऽशु.ऽगु.।।।।।।	दि. ल. ९ (चं. गु. दान, लग्ने चंद्रोपरि गुरू दृष्टि प्रशस्त, १२ (सू. बु. दान, मीन ल. 15/25 तक ग्राह्य।
कार्ति शुक्ल ७, शनि	9 नवं.	२४ कार्ति	उ.षा.	तुला	मकर	।ऽमं.।।ऽगु.।ऽगं.।।।	दि. ल. ९ (सू.-राहु दानपूर्वक)
कार्ति. शुक्ल ७, शनि	9 नवं.	२४ कार्ति	श्रव.	तुला	मकर	।ऽगं.।।ऽगु.।ऽ।।।	सायं ल. १२ (सू. बु. रा. दा.), रा. ल. ४ (चं. रा. शु. दा), छटे शुक्र परि., ६ (मं. रा. सू. दान)

शुद्ध विवाह मुहूर्त—कार्तिक मास

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
कार्ति. शुक्ल ८, रवि	10 नवं.	२५ कार्ति	श्रव.	तुला	मकर	।ऽ।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (सू. रा. दान)–लग्न प्रातः 10/24 तक, भद्रा पाताले शुभप्रदा।।
कार्ति. शुक्ल ८, रवि	10 नवं.	२५ कार्ति	धनि.	तुला	म/कुंभ	ऽश.।।।।ऽचौऽऽ।।	दि. ल. ९ (सू. रा. दान), १२ (सू. बु. रा. पूजा दान व), रा. ल. ४ (चं. रा. सू. शु. दान), ६ (सू. मं. रा. दान), दिवा लग्ने भद्रा पाताले।
कार्ति. शु. ११, बुध	13 नवं.	२८ कार्ति	उ.भा.	तुला	मीन	।ऽहर्ष।।।।।ऽ।।ऽ	ल. गोधू., रा. ल. ३ (शु. ७वें पूज्य दान वा-सू. रा. दा. गुरू केन्द्रे शुभदाः, ४ (सू. रा. शु. दान), ६ (सू. चं. रा. दा.), मिथुने दग्धा तिथि परिहार (प्रातः 7/33 से 19/12 तक भद्रा दोष)
कार्ति. शु. १२, गुरु	14 नवं.	२९ कार्ति	रेव	तुला	मीन	ऽसू.।।।।ऽऽ।।ऽ	दि. ल. ९ (मं. गु. दा.), रात्रि ल. ६ (सू. रा. चं. दा.) दुपै. 12/10 से रात 24/10 तक मृत्युबाण दोष, धनु व कन्या लग्ने मृत्युबाण दोषऽभावः

✲ मार्गशीर्ष मास (नवं.–दिसं.) ✲ सन् 2013 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
मार्ग. कृष्ण १, सोम	18 नवं.	३ मार्ग.	रोहि.	वृश्चिक	वृष	।ऽपरि.।।।ऽअ.ऽ।।।	दि. ल. १२ (बु. रा. दान), गोधू., रा. ल. ३ (चं. शु. पू. दान वा, लग्ने गुरु शुभप्रदाः), ४ (बु. रा. शु. दान-छटे शुक्र परिहार), ६ (बु. रा. दान)
मार्ग. कृष्ण २, मंग.	19 नवं.	४ मार्ग.	रोहि.	वृश्चिक	वृष	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. १२ (बु. रा. का दान)
मार्ग कृष्ण २, मंग	19 नवं.	४ मार्ग.	मृग	वृश्चिक	वृ./मिथु	।।।।।।ऽ।।।	ल. गोधू., रा. ल. ३ (चंद्र, शुक्र पूज्य दान व),
मार्ग. कृष्ण ३, बुध	20 नवं.	५ मार्ग.	मृग.	वृश्चिक	मिथुन	।।।।।ऽनृ.ऽ।।।	दि. ल. ९ (चं. गु. दा.), १२ (बु. रा. दा.), गोधू., मीन लग्ने भद्रा परिहारः
मार्ग. कृ. ६/७, सोम	25 नवं.	१० मार्ग.	मघा	वृश्चिक	सिंह	ऽबु.।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (सू., गु. दा.), गोधू., ल. ३ (शु. रा. दा. शुक्र ७वें पूज्य), ४ (राहु, शुक्र परिहार, शत्रुक्षेत्रे शुक्र परिहार), ६ (चं. मं. शु. दान)
मार्ग. कृ.९/१०, बुध	27 नवं.	१२ मार्ग.	उ.फा.	वृश्चिक	सिं./कं.	ऽगु.।ऽमं.।।ऽअ.।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (गु. श. दा., धनु ल. प्रातः 9/59 बाद), ल. ११ (चं. मं. दा.), गोधूलि रा. ल. ३ (शुक्र ७वें पूज्य दान व), ४ (गु. शु. दा.) भौमयुति एवं तिथिदोष परिहारः
मार्ग. कृष्ण १०, गुरु	28 नवं.	१३ मार्ग.	उ.फा.	वृश्चिक	कन्या	ऽगु.।ऽमं.।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (गु. मं. दान), १० (प्रातः 11/02 तक), भद्रा एवं भौमयुति परिहार, दग्ध तिथि च परि.
मार्ग. कृ.१०/११,गुरु	28 नवं.	१३ मार्ग.	हस्त	वृश्चिक	कन्या	।।।।।।ऽऽ।ऽ	दि. ल. १० (शु. मं. दा.), ११ (चं. मं. दा.), गोधू., रा. ल. ३ (शुक्र ७वें पूज्य दान व) ४ (गु. शु. रा. दा.), ५ (चं. मं. दा.), भद्रा व दग्ध तिथि परिहार
मार्ग. कृ. ११, शुक्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	हस्त	वृश्चिक	कन्ये	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ९ (गु. मं. दा.), १० (प्रातः 11/18 तक, शुक्र दान)
मार्ग. कृ.११/१२,शुक्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	चित्रा	वृश्चिक	कं./तुले	ऽमं.।।।।ऽनृ.।ऽ।।	दि. ल. १० (शु. दा.), ११ (मं. दान, भौमाष्टम परिहार), गोधू. रा. ल. ४ (शु. दा.-छटे शुक्र परि.), ५ (सू. बु. का दान)
मार्ग. कृष्ण १२, शनि	30 नवं.	१५ मार्ग.	चित्रा	वृश्चिक	तुला	ऽमं.।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (गु. मं. का दान), रात्रौ स्वात्यां राहु-युति
मार्ग. शुक्ल २, बुध	4 दिसं.	१९ मार्ग.	मूल	वृश्चिक	धनु	।ऽ।ऽगु.।।ऽ।।।	रा. ल. ५ (मं. शु. का दान) सू.उ. से रात 21/02 तक शूलदोष (सिंह लग्ने शूल दोष अभावः)
मार्ग. शुक्ल ४, गुरु	5 दिसं.	२० मार्ग.	उ.षा.	वृश्चिक	ध/मक	।।ऽशु.।ऽगु.ऽ।।।।	रा. ल. ५ (चं. मं. दा., सिंह लग्ने मृत्युबाण दोष अभाव) मृ. बाण दोष 18/42 तक
मार्ग. शुक्ल ४, शुक्र	6 दिसं.	२१ मार्ग.	उ.षा.	वृश्चिक	मकरे	।।ऽशु.।ऽगु.ऽअ.।।।।	दि. ल. ९ (चं. गु. दा.), ११ (चं. मं. दा. भौमाष्टम परि.), गोधू. च.
मार्ग. शुक्ल ५, शुक्र	6 दिसं.	२१ मार्ग.	श्रवण	वृश्चिक	मकर	।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ५ (चं. शु. दा., चंद्र-शुक्र छटे परिहार)
मार्ग. शुक्ल ५, शनि	7 दिसं.	२२ मार्ग.	श्रवण	वृश्चिक	म/कुंभ	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ९ (गु. दा.), ११ (चं. मं. दान, भौमाष्टम परिहारः)
मार्ग. शुक्ल ६, शनि	7 दिसं.	२२ मार्ग.	धनि.	वृश्चिक	कुम्भ	ऽश. रा. ऽ।।।।ऽ।।।	ल. गोधू., रा. ल. ५ (चं. शु. मं. दानपूर्वक, चं. शु. छटे परिहारः)
मार्ग. शुक्ल ६, रवि	8 दिसं.	२३ मार्ग.	धनि.	वृश्चिक	कुम्भ	ऽश.रा.ऽहर्ष.।।।ऽनृऽ।।।	दि. ल. ९ (मं. शु. दान), १० (चं. गु. दान)

शुद्ध विवाह मुहूर्त—मार्गशीर्ष मास

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
मार्ग. शुक्ल ९, मंग.	10 दिसं.	२५ मार्ग.	उ.भा.	वृश्चि.	मीन	।।।।ऽमं. ऽ चौ. ।।।।	ल. गोधू., रा. ल. ४ (राहु दा.) शुक्र ७वें पूज्य दानं वा)
मार्ग. शुक्ल ११, गुरु	12 दिसं.	२७ मार्ग.	अश्वि.	वृश्चि.	मेष	।।ऽके. ।।ऽरो. ।।।।	ल. गोधू., रा. ल. ४ (चं. रा. शु. पूज्य दान व–केतु युति परिहार:-आवश्यके)
मा. शु. ११/१२, शुक्र	13 दिसं.	२८ मार्ग.	अश्वि.	वृश्चि.	मेष	।ऽपरि.ऽके. ।।।ऽ।।।	दि. ल. ९ (चं. गु. मं. दा.), १० (चं. दा.), ११ (चं. मं. दा.) केतु युति परिहार:

✲ माघ मास (जनवरी–फरवरी) सन् 2014 ई. ✲

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
माघ कृष्ण ५, सोम	20 जन.	७ माघ	उ.फा.	मकर	सिं/कं.	।।।।।ऽचौ. ।ऽ।।	रात्रि ल. ९ (गु. मं. दान)
माघ कृष्ण ५, मंग.	21 जन.	८ माघ	उ.फा.	मकर	कन्ये	।।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ११ (चं. मं. दा., अष्टमस्थ भौम चंद्र परिहार) दि. ल. २ (शुक्र-गुरु दान व पूजा, शुक्राष्टमस्थ उपरि गुरु दृष्टि प्रशस्त:, गोधूलि च
माग कृष्ण ६, मंग.	21 जन.	८ माघ	हस्त	मकर	कन्ये	।ऽति ।।।।ऽ।।।	रा. ल. ९ (धनु-मं. गु. का दान), **प्रात: 6/42 बाद अतिगंडदोषाभाव**
माघ कृष्ण ६, बुध	22 जन.	९ माघ	हस्त	मकर	कन्ये	।।।।।ऽरो. ।।।।	दि. ल. ११ (चं. मं. दा., अष्टमस्थ चंद्र-**मंगल शत्रु** राश्यां परिहार:) ल. २ (गु. शु. दान व पूजा, शुक्राष्टमोपरि गुरू दृष्टि प्रशस्त:, गोधू., रात्रौऽभाव:
माघ कृष्ण ७, बुध	22 जन.	९ माघ	चित्रा	मकर	कन्ये	।।ऽमं. ।।।।ऽ।।	रा. ल. ९ (मं. गु. चं. का दान), चंद्र मित्र क्षेत्र में होने से भौम युति परिहार
माघ कृष्ण ७, गुरु	23 जन.	१० माघ	चित्रा	मकर	कं./तुले	।।ऽमं. ।।।।ऽ।।	दि. ल. ११ (चं. मं. दान, भौमाष्टम परिहार), २ (गु. शु. दा.) भौम युति परिहारश्च
माघ कृष्ण १०, शनि	25 जन.	१२ माघ	अनु.	मकर	वृश्चि.	ऽबु. ।।।।।ऽऽ।।	रात्रि ल. ९ (चं. मं. गु. दा., लग्नोपरि गुरू दृष्टि प्रशस्त:
माघ कृष्ण १०, रवि	26 जन.	१३ माघ	अनु.	मकर	वृश्चि.	ऽबु. ।।।।।ऽऽऽ।	दि. ल. ११ (सू. मं. दान-शत्रुक्षेत्रे अष्टमस्थ भौम परिहार, भद्रा च परिहार दुपै. 12/34 से 28/43 तक अर्थात् 27 जन. की प्रात: 4/43 तक क्रांतिसाम्य दोष:
माघ कृष्ण १२, सोम	27 जन.	१४ माघ	मूल	मकर	धनु	।।।।।ऽनृ. ऽऽ।ऽ	रा. ल. ९ (चं. गु. दा., लग्नोपरि गुरू दृष्टि शुभदा)
माघ कृष्ण १२, मंग.	28 जन.	१५ माघ	मूल	मकर	धनु	।ऽव्या.।।।।ऽऽ।ऽ	दि. ल. ११ (सू. मं. चं. दान), गोधू., रात्रौलग्नाभाव:
माघ शुक्ल १, शुक्र	31 जन.	१८ माघ	धनि.	मकर	म./कुंभे	ऽश.रा.ऽऽबु.।।।ऽरो.।।।।	रात्रि ल. ९ (गु. मं. दान)-रात्रि 22/13 तक व्यतीपात, धनु लग्ने व्यतीपात दोष अभाव:
माघ शुक्ल २, शनि	1 फर.	१९ माघ	धनि	मकर	कुम्भ	ऽश.रा.ऽऽबु. ।।।।।।।	दि. ल. ११ (सू. चं. दा., लग्नस्थ चन्द्रोपरि गुरू-दृष्टि शुभप्रदा)
माघ शु. ४/५, सोम	3 फर.	२१ माघ	उ.भा.	मकर	मीन	।।।।।ऽअ. ऽऽ।।	ल. गोधू., रा. ल. ९ (मं. गु. दान), प्रात: सू.उ. से दुपै. 14/35 तक भद्रा दोष.
माघ शुक्ल ५, सोम	3 फर.	२१ माघ	रेवती	मकर	मीन	।।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ९ (धनु लग्ने मं. गु. का दान)
माघ शुक्ल ५, मंग.	4 फर.	२२ माघ	रेवती	मकर	मीन	।ऽसा. ।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ११ (सू. का दान), २ (शु. दा. अष्टमस्थ शुक्र परिहार), गोधूलि रा. ल. ९ (चं. गु. का दान, धनु ल. 28/28 तक)
माघ शुक्ल ६, मंग.	4 फर.	२२ माघ	अश्वि.	मकर	मेष	।ऽसा.ऽके.।ऽमं.ऽ नृ ऽऽ।।	रा. ल. ९ (चं. के. मं. का दान, चंद्र मित्र क्षेत्रे, केतु युति का परिहार)
माघ शु. ६/७, बुध	5 फर.	२३ माघ	अश्वि.	मकर	मेष	।ऽऽके.।ऽमं.ऽ नृऽऽ।।	दि. ल. ११ (सू. दा.), २ (शु. दा., अष्टम शुक्र: गुरु दृष्ट्या परिहार), गोधूलि रात्रि ल. ९ (चं. गु. दा.) चंद्र मित्रक्षेत्रेण युति परिहार:
माघ शु. ९/१०, शनि	8 फर.	२६ माघ	रोह.	मकर	वृष	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ११ (सू. दा., कुंभ ल. प्रात: 8/12 बाद), २ (शु. दान, शुक्राष्टम परिहार), ३ (शु. 7वें पूज्य दान व, चं. दा.), रात्रौऽभाव:
माघ शुक्ल ११, सोम	10 फर.	२८ माघ	मृग.	मकर	मिथुन	।ऽवि. ।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ११ (सू. दा.), २ (शु. दान, अष्टमस्थ शुक्र परिहार) वृष लग्न दुपै. 13/31 तक ग्राह्य

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त–फाल्गुन मास (फर.-मार्च, सन् 2014 ई.)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	सूर्य राशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
माघ पूर्णिमा, शुक्रे	14 फर.	३ फागु	मघा	कुंभ	सिंह	।।।।ऽ सू.बु.ऽअ.ऽऽ।।	रात्रि ल. ९ (धनु लग्ने चं. गु. दान)
फागु. कृष्ण १, शनि	15 फर.	४ फागु	मघा	कुंभ	सिंह	।।।।ऽसू.बु.ऽअ. ऽऽ।।	दि. ल. २ (शु. दा., अष्टम शुक्र परिहार), ३ (शु. दा., शुक्र पूज्य दान व), ४ (शु. दा. व. पू., छटे शुक्र परिहार, रा. ल. ९ (गु. दा.-धनु लग्न रात्रि 27/35 तक)
फागु. कृ. २/३, सोम	17 फर.	६ फागु	उ.फा.	कुंभ	सिं/कं.	।।।।।ऽनृ. ऽ।।।	दि. ल. २ (शु. दा., अष्टम शुक्र परि., ३ (शु. 7वें पूज्य दान व), ४ (सू. बु. दा.), गोधूलि रा. ल. ९ (गु. दा.), १० (मं. रा. दान), धनु व मकरे भद्रा परिहार
फागु. कृ. ३/४, मंग.	18 फर.	७ फागु	हस्त	कुंभ	कन्या	।।।।।ऽचौ. ।ऽ।ऽ	दि. ल. २ (शुक्र 8वें दान व पूजा, शत्रु राशि भावेन परिहार), ३ (बु. शु. ७वें पूज्य दान व) गोधू., रा. ल. ९ (शु. दा.), १० (मं. रा. का दान)
फागु. कृ. ४/५, बुध	19 फर.	८ फागु	चित्रा	कुंभ	कं./तुले	।ऽऽमं.।।ऽचौ.।ऽ(ऽ।)	दि. ल. २ (शु. दा., 8वें शुक्र परि., गोधू., भौमयुति परिहार, रात्रौ 26/49 बाद क्रांतिसाम्यदोष
फागु. कृ. ७/८, शनि	22 फर.	११ फागु	अनु.	कुंभ	वृश्चिक	ऽबु.ऽव्या.।।।ऽऽऽ।।	दि. ल. २ (चं. शु. पूज्य दान व वृष ल. 11/04 बाद), ६ (चं. रा. दान) रात्रि 23/52 के बाद मृत्युबाणदोष, व्याघात की प्रथम ९ घड़ी दोषपूर्ण
फागु. कृष्ण१०, सोम	24 फर.	१३ फागु	मूल	कुंभ	धनु	।ऽ।।।ऽअ. ऽवऽ।।	ल. गोधू., रा. ल. ६, ९ (लग्ने चन्द्र परिहार दान व), १० (चं. मं. दा.) भद्रा पाताले शुभप्रदा
फागु. कृष्ण११, मंग.	25 फर.	१४ फागु	उ.षा.	कुंभ	धनु	।ऽऽशु. ।।ऽनृ. ऽऽ।।	रात्रि ल. १० (चं. मं. दा., मकर लग्न 26 फर. की प्रात: 5/27 के बाद), पादेन शुक्र युति अभाव:
फागु. कृष्ण१२, बुध	26 फर.	१५ फागु	उ.षा.	कुंभ	ध/मक	।ऽऽशु.।।ऽनृऽऽ।।	ल. गोधू., रा. ल. ६, मु. 23/45 तक, रात्रि लग्ने व्यतीपात अभाव, पादेन शुक्र युति अभाव:
फागु. शु. १/२, रवि	2 मार्च	१९ फागु	उ.भा.	कुंभ	मीन	।ऽसा. ।।।।ऽ।।।	ल. गोधू., रा. ल. ६ (चं. दान), ९ (गु. दान), १० (म. रा. दान)
फागु. शु. २/३, सोम	3 मार्च	२० फागु	उ.भा.	कुंभ	मीन	।ऽ।।।।ऽ।।।	दि. ल. २ (गु. के. का दान)
फागु. शुक्ल ३, सोम	3 मार्च	२० फागु	रेव.	कुंभ	मीन	।।।।।ऽ।।।।	दि. ल. ४ (राहु व बु. शु. 7वें पूज्य दान व), सायं 17/50 से रात्रि 23/12 तक–क्रांतिसाम्य दोष तथा रात्रि 23/00 के बाद मृत्युबाण दोष
फागु. शुक्ल ४, मंग.	4 मार्च	२१ फागु	अश्वि.	कुंभ	मेष	।।ऽके. ।ऽमं.ऽअ. ।।।ऽ	ल. गोधू., रा. ल. ९ (गु. चं. मं. दा.), १० (बु. शु. दा.), रात्रौ लग्ने तिथि दोष परिहार चन्द्र मित्र क्षेत्रेण युति दोष अभाव, स्वर्गे भद्रा शुभप्रदा
फागु. शुक्ल ५, बुध	5 मार्च	२२ फागु	अश्वि.	कुंभ	मेष	।।ऽके.।ऽमं.ऽअ.।।।।	दि. ल. २ (चं. मं. के. दान), चन्द्र मित्रक्षेत्रे, युति दोष परिहार
फागु. शुक्ल ७, शुक्र	7 मार्च	२४ फागु	रोहिणी	कुंभ	वृष	।ऽ।।।।ऽवि. ऽ।।	ल. गोधू, ६ (मं. रा. दा.), १० (मं. गु. रा. दान)

8 मार्च से 16 मार्च 2014 ई० तक होलाष्टक रहेंगे।

आगामी संवत् २०७१ में सम्भावित समय-शुद्धि–(i) गुरु 12 जुलाई, 2014 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 3 अग., 2014 ई. को पूर्व में उदय होगा। (ii) ता. 9 सितं. से 23 सितं. तक श्राद्धकाल होगा तथा (iii) 3 अक्तू., 2014 ई. को शुक्र पूर्व में अस्त होकर 26 नवं. 2014 ई. को पश्चिम में उदय होगा।। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, गणितकर्त्ता

...विवाह-मुहूर्त, संवत् २०७० वि. (सन् 2013-14 ई.)

वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त, संवत् २०७० वि. (सन् 2013-14 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित) विवाह मुहूर्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**—अग. 2013 ई. में मेष राशि का लड़का और मिथुन राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त **अगस्त** (भाद्रपद) में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 28, 29, 30 अगस्त की तारीखों एवं मुहूर्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे**, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यतः लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अतः गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३, ६ (चं. दा.), ११, १२, १३, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०, जून की २ (चं. दा.), जुला की ११, १२, १३, १४, अग. की १८, १९, २०, २१, २३-२४ (चं. दा.), २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६, ७, ८, ९, १३ अक्तू. की ५, ६, १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९ (चं. दा.), २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ६, ७, ९, १०, १३-१४ (चं. दा.)] सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. की १, ३-४ (चं. दा.), ५, ८, १०, १४, १५, १७, १८, १९, २४, २५, २६, मार्च की २-३ (चं. दा.), ४, ५, ७ शुभ होंगी।	मेष राशि के वर को आषा., आश्विन, माघ-फागु. शुभ, वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण-मार्गशीर्ष मास त्याज्य माने गए हैं। इस राशि की कन्या को 30 मई तक गुरु शुभ, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**मेष राशि**—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३, ६, ११, १२, १३, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०, जून की २, जुला. की ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६, ७, ८, ९, १३, अक्तू. की ५, ६, १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ६, ७, ९, १०, १३, १४], मार्ग में नवं. की १८, १९, २०, २५, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की ४, ५, ६, ७, ८, १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. की १, ३, ४, ५, ८, १०, १४, १५, १७, १८, १९, २४, २५, २६, मार्च की २, ३, ४, ५, ७ शुभ होंगी।
वृष राशि—मई की २० (11/54 बाद), २१, २२, २८ (17/34 बाद), २९, ३०, जून की २, जुला. की १३ (25/58 बाद), १४, २२ (14/12 बाद), २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २, ३, १०, ११, १२, अक्तू. की ५, ६, १२ (13/26 बाद), [कार्तिक मासे अक्तू. की १९ (चं. दा.), २१, २२, २३, ३१, नवं. की ४, ५, ९, १०, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २७ (16/19 बाद), २८, २९, ३०, दिसं. की ५ (26/47 बाद), ६, ७, ८, १०, १२, १३ सन् 2014 ई० में जन. की २० (30/36 बाद), २१, २२, २३, २५, २६, ३१, फर. की १, ३, ४-५ (चं. दा.) ८, १०, १७ (12/19 बाद), १८, १९, २२, २६ (10/51 बाद), मार्च की २, ३, ४-५ (चं. दा.), ७ शुभ होंगी।	वृष के लड़के को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास शुभ, ज्येष्ठ-आश्विन-मार्ग. माघ मासों में सूर्य पूज्य तथा वैशाख-भाद्र. मास अशुभ एवं त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या के लिए 30 मई तक गुरू साधारण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**वृष राशि**—मई की १ (9/46 बाद), २, ३, ६, ११, १२, १३, २० (11/54 बाद), २१, २२, २८ (17/34 बाद), २९, ३०, जून की २, जुला. की १३ (25/58 बाद), १४, २२ (14/12 बाद), २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २, ३, १०, ११, १२, १८ (24/01 बाद), १९, २०, २१, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६ (13/41 बाद), ७, ८, ९, अक्तू. की ५, ६, १२ (13/26 बाद) [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३, ३१, नवं. की ४, ५, ९, १०, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २७ (16/19 बाद), २८, २९, ३०, दिसं. की ५ (26/47 बाद), ६, ७, ८, १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २० (30/36 बाद), २१, २२, २३, २५, २६, ३१, फर. की १, ३, ४, ५, ८, १०, १७ (12/19 बाद), १८, १९, २२, २६ (10/51 बाद), मार्च की २, ३, ४, ५, ७ शुभ होंगी।
मिथुन राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १ (9/46 तक), ३ (13/23 बाद), ६, ११-१२ (चं. दा.), १३, जुला. की ११, १२, १३ (25/58 तक), २०, २१ २२ (14/12 तक), २६, २७, २८, २९, अग. की १-२ (चं. दा.), ३, ७, ८, ९, १२ (15/02 बाद), १८ (24/01 तक), २० (24/30 बाद), २१, २३, २४, २५, २८-२९ (चं. दा.), ३०, सितं. की ६ (13/41 तक), ८ (20/34 बाद), ९, १३ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१-२२-२३ (चं. दा.), २८, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १० (21/50 बाद), १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८-१९ (चं. दा.), २०, २५, २७ (16/19 तक), २९, (23/09 बाद), ३०, दिसं. की ४, ५ (26/47 तक), ७ (28/02 बाद), ८, १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में फर. की १४, १५, १७ (12/19 तक), १९ (21/54 बाद), २२, २४, २५, २६ (10/51 तक), मार्च की २, ३, ४, ५, ७ (चं. दा.) तारीखें शुभ रहेंगी।	मिथुन के वर को वैशाख, भादों, मार्गशीर्ष मास विवाहादि के लिए शुभ, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फागुन मासों में सूर्य पूज्य तथा ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त साधारण पूज्य रहेगा।	**मिथुन राशि**—अप्रै. की २९, ३०, मई की १ (9/46 तक), ३ (13/23 बाद), ६, ११-१२ (चं. दा.), १३, १८, २० (11/54 तक), २२ (16/25 बाद), २६, २७, २८ (17/34 तक), ३० (19/42 बाद), जून की २, जुला. की ११, १२, १३ (25/58 तक), २०, २१, २२ (14/12 तक), २६, २७, २८, २९, अग. की १, २, ३, ७, ८, ९, १२ (15/02 बाद), १८ (24/01 तक), २० (24/30 बाद), २१, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६ (13/41 तक), ८ (20/34 बाद), ९, १३, अक्तू. की ५ (27/36 बाद), ६, १०, १२ (13/26 तक) [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३, २८, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, १० (21/50 बाद), १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २५, २७ (16/19 तक), २९ (23/09 बाद), ३०, दिसं. की ४, ५ (26/47 तक), ७ (28/02 बाद), ८, १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २० (30/36 तक), २३ (16/11 बाद), २५, २६, २७, २८, ३१ (23/48 बाद), फर. की १, ३, ४, ५, ८, १०, १४, १५, १७ (12/19 तक), १९ (21/54 बाद), २२, २४, २५, २६ (10/51 तक), मार्च की २, ३, ४, ५, ७ शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कर्क राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३ (13/23 तक), ६, ११, १२, १३ (चं. दा.), १८, २०, २१, २२ (16/25 तक), २६, २७, २८, २९, ३० (19/42 तक), जून की २, जुला. की २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २-३ (चं. दा.), ७, ८, ९, १०, ११, १२ (15/02 तक), १८, १९, २० (24/30 तक), २३, २४, २५, २८, २९-३० (चं. दा.), सितं. की ६, ७, ८ (20/34 तक), १३, अक्तू. की ५ (27/36 तक), १०, १२, नवं. की १८, १९-२० (चं. दा.), २५, २७, २८, २९ (23/09 तक), दिसं. की ४, ५, ६, ७ (28/02 तक), १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३ (16/11 तक), २५, २६, २७, २८, ३१ (23/48 तक), फर. की ३, ४, ५, ८, १० (चं. दा.) शुभ होंगी।	कर्क के लड़के को विवाहादि के लिए वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास शुभ, श्रावण, भाद्र., मार्ग. व माघ मासों में सूर्य की पूजा, दान तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। कर्क राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक शुभ, तदुपरान्त विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	***कर्क राशि***—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३ (13/23 तक), ६, ११, १२, १३, १८, २०, २१, २२ (16/25 तक), २६, २७, २८, २९, ३० (19/42 तक), जून की २, जुला. की ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२ (15/02 तक), १८, १९, २० (24/30 तक), २३, २४, २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६, ७, ८ (20/34 तक), १३, अक्तू. की ५ (27/36 तक), १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ६, ७, ९, १० (21/50 तक), १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २५, २७, २८, २९ (23/09 तक), दिसं. की ४, ५, ६, ७ (28/02 तक), १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३ (16/11 तक), २५, २६, २७, २८, ३१ (23/48 तक), फर. की ३, ४, ५, ८, १०, १४, १५, १७, १८, १९ (21/54 तक), २२, २४, २५, २६, मार्च की २, ३, ४, ५, ७ शुभ होंगी।
सिंह राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३, ११, १२, १३, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०, जुला की ११, १२, १३, १४, अग. की १८, १९, २०, २१, २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६, ७, ८, ९, १३, अक्तू. की ५, ६, १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ६, ७, ९, १०] सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. की १, ४ (28/28 बाद), ५, ८, १०, १४, १५, १७, १८, १९, २४, २५, २६, मार्च की ४, ५, ७ तारीखें शुभ एवं ग्रहणीय होंगी।	सिंह राशि के लड़के को आश्विन, फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा/दानादि रहेगा। ज्ये., आषा., कार्तिक एवं माघ मास शुभ होंगे तथा चैत्र, श्रावण और मार्गशीर्ष मास त्याज्य होंगे। सिंह राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक साधारण पूज्य तदुपरान्त शुभ रहेगा।	***सिंह राशि***—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३, ११, १२, १३, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २८, (22/56 बाद) २९, अग. की १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०, २१, २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६, ७, ८, ९, १३, अक्तू. की ५, ६, १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ६, ७, ९, १०] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २५, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की ४, ५, ६, ७, ८, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१, फर. की १, ४ (28/28 बाद), ५, ८, १०, १४, १५, १७, १८, १९, २४, २५, २६, मार्च की ४, ५, ७ शुभ होंगी।
कन्या राशि—मई की १८-२० (चं. दा.), २१, २२, २८ (17/34 बाद), २९, ३०, जून की २, जुला. की ११, १२, १३, १४, २२ (14/12 बाद), २३, २४, २६, २७, २८ (22/56 तक), अग. की १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, अक्तू. की ५, ६, १२ (13/26 बाद) [कार्तिक मासे अक्तू. की २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ९, १०, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २५, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की ५ (26/47 बाद), ६, ७, ८, १०, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३१, फर. की १, ३, ४ (28/28 तक), ८, १०, १४-१५-१७ (चं. दा.), १८, १९, २२, २६ (10/51 बाद), मार्च की २, ३, ७ शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को आषा., श्रावण, मार्गशीर्ष व फागुन मास शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि होगा। वैशाख, भाद्र. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक शुभ, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	***कन्या राशि***—मई की १ (9/46 बाद), २, ३, ६, ११, १२, १३, १८-२०, २१, २२, २८ (17/34 बाद), २९, ३०, जून की २, जुला. की ११, १२, १३, १४, २२ (14/12 बाद), २३, २४, २६, २७, २८ (22/56 तक), अग. की १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १८ (24/01 बाद), १९, २०, २१, २३, २४, २८, २९, ३०, सितं. की ६, ७, ८, ९, अक्तू. की ५, ६, १२ (13/26 बाद) [कार्तिक मासे अक्तू. की २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ९, १०, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २५, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की ५ (26/47 बाद), ६, ७, ८, १०, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३१, फर. की १, ३, ४ (28/28 तक), ८, १०, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २६ (10/51 बाद), मार्च की २, ३, ७ शुभ होंगी।
तुला राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १ (9/46 तक), ३ (13/23 बाद), ६, १३, जुला. की ११, १२, १३-१४ (चं. दा.), २०, २१, २२ (14/12 तक), २६, २७, २८, २९, अग. की २ (21/54 बाद), ३, ७, ८, ९, १०-११ (चं. दा.), १२, १८ (24/01 तक), २० (24/30 बाद), २१, २३, २४, २५, २९ (28/59 बाद), ३०, सितं की ६, ७, ८, ९, १३ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २३ (21/10 बाद), २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ६, ७, १० (21/50 बाद), १३, १४] मार्ग. में नवं. की १९ (29/00 बाद), २०, २५, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की ४, ५ (26/47 तक), ७ (28/02 बाद), ८, १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में फर. की १४, १५, १७-१८-१९ (चं. दा.), २२, २४, २५, २६ (10/51 तक), मार्च की २, ३, ४, ५ शुभ रहेंगी।	तुला के वर को श्रावण, भाद्रपद शुभ ; वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्ग व फागुन मासों में सूर्य की पूजा/दान होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	***तुला राशि***—अप्रै. की २९, ३०, मई की १ (9/46 तक), ३ (13/23 बाद), ६, १३, १८, २०-२१-२२ (चं. दा.), २६, २७, २८ (17/34 तक), ३० (19/42 बाद), जून की २, जुला. की ११, १२, १३-१४ (चं. दा.), २०, २१, २२ (14/12 तक), २६, २७, २८, २९, अग. की २ (21/54 बाद), ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १८ (24/01 तक), २० (24/30 बाद), २१, २३, २४, २५, २९ (28/59 बाद), ३०, सितं. की ६, ७, ८, ९, १३, अक्तू. की ५, ६, १०, १२ (13/26 तक) [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २३ (21/10 बाद), २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ६, ७, १० (21/50 बाद), १३, १४] मार्ग. में नवं. की १९ (29/00 बाद), २०, २५, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की ४, ५ (26/47 तक), ७ (28/02 बाद), ८, १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २५, २६, २७, २८, ३१ (23/48 बाद), फर. की १, ३, ४, ५, १०, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४, २५, २६ (10/51 तक), मार्च की २, ३, ४, ५ शुभ रहेंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य [illegible] मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
		—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३ (13/23 तक), ६,

२९ (चं. दा.), २२, २४, २५, २६ (10/51 तक), मार्च की

☐ वर (लड़का) ☐	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	☐ कन्या (लड़की) ☐
वृश्चिक राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३ (13/23 तक), ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२ (चं. दा.), २६, २७, २८, २९, ३० (19/42 तक), जून की २, जुला. की २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २ (21/54 तक), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २० (24/30 तक), २३, २४, २५, २८, २९ (28/59 तक), सितं. की ६, ७, ८-९ (चं. दा.), १३, अक्तू. की ५-६ (चं. दा.), १०, १२, नवं. की १८, १९ (29/00 तक), २५, २७, २८, २९-३० (चं. दा.), दिसं. की ४, ५, ६, ७ (28/02 तक), १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३ (चं. दा.), २५, २६, २७, २८, ३१ (23/48 तक), फर. की ३, ४, ५, ८, शुभ रहेंगी।	वृश्चिक राशि के वर को वैशाख, भादों, आश्विन एवं माघ मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण और मार्ग. मासों में सूर्य पूजा/दानादि तथा आषाढ़-कार्तिक फाल्गुन त्याज्य हैं। इस राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक शुभ, तदुपरांत विशेष रूपेण पूज्य होगा।	**वृश्चिक राशि**—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३ (13/23 तक), ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२ (चं. दा.), २६, २७, २८, २९, ३० (19/42 तक), जून की २, जुला. की ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २ (21/54 तक), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २० (24/30 तक), २३, २४, २५, २८, २९ (28/59 तक), सितं. की ६, ७, ८-९ (चं. दा.), १३, अक्तू. की ५-६, १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३ (21/10 तक), २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ६, ७, ९, १० (21/50 तक), १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९ (29/00 तक), २५, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की ४, ५, ६, ७ (28/02 तक), १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २५, २६, २७, २८, ३१ (23/48 तक), फर. की ३, ४, ५, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४, २५, २६, मार्च की २, ३, ४, ५, ७ शुभ होंगी।
धनु राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३, ११, १२, १३, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ११, १२, १३, १४, अग. की १८, १९, २०, २१, २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६, ७, ८, ९, १३, अक्तू. की ५, ६, १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ६, ७, ९, १०] सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २५-२६ (चं. दा.), २७, २८, ३१, फर. की १, ४ (28/28 बाद), ५, ८, १०, १४, १५, १७, १८, १९, २२ (चं. दा.), २४, २५, २६, मार्च की ४, ५, ७ शुभ होंगी।	धनु राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक एवं फाल्गुन मास शुभ ; वैशा., आषा., भाद्रपद मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण मार्गशीर्ष और चैत्र मास त्याज्य हैं। इस राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक साधारण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**धनु राशि**—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३, ११, १२, १३, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०, जुला. की ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २८ (22/56 बाद), २९, अग. की १, २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०, २१, २५, २८, २९, ३०, सितं. की ६, ७, ८, ९, १३, अक्तू. की ५, ६, १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३, २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ६, ७, ९, १०] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २५, २७, २८, २९, ३०, दिसं. की ४, ५, ६, ७, ८, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३, २५, २६, २७, २८, ३१, फर. की १, ४ (28/28 बाद), ५, ८, १०, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४, २५, २६, मार्च की ४, ५, ७ शुभ होंगी।
मकर राशि—मई की २० (11/54 बाद), २१, २२, २६-२७-२८ (चं. दा.), २९, ३०, जून की २, जुला. की १३ (25/58 बाद), १४, २०-२१-२२ (चं. दा.), २३, २४, २६, २७, २८ (22/56 तक), अग. की १, २, ३, १०, ११, १२, अक्तू. की ५, ६, १०-१२ (चं. दा.) [कार्तिक मासे अक्तू. की २१, २२, २३, ३१, नवं. की ४, ५, ६-७ (चं. दा.), ९, १०, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९, २०, २७ (16/19 बाद), २८, २९, ३०, दिसं. की ४-५ (चं. दा.), ६, ७, ८, १०, सन् 2014 ई० में जन. की २० (30/36 बाद), २१, २२, २३, २५, २६, २७-२८ (चं. दा.), ३१, फर. की १, ३, ४ (28/28 तक), ८, १०, १७ (12/19 बाद), १८, १९, २२, २४-२५-२६ (चं. दा.), मार्च की २, ३, ७ शुभ होंगी।	मकर के वर को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग., चैत्र मास शुभ ; ज्ये., श्रावण व आश्विन मासों में सूर्य की पूजा तथा वैशाख-भाद्रपद और पौष मास त्याज्य/अशुभ होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण रुपेण शुभ रहेगा।	**मकर राशि**—अप्रै. की २९-३०, मई की १ (चं. दा.), २, ३, ६, ११, १२, १३, २० (11/54 बाद), २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०, जून की २, जुला. की १३ (25/58 बाद), १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८ (22/56 तक), अग. की १, २, ३, १०, ११, १२, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २८, २९, ३०, सितं. की ६ (13/41 बाद), ७, ८, ९, १३, अक्तू. की ५, ६, १०-१२ [कार्तिक मासे अक्तू. की २१, २२, २३, ३१, नवं. की ४, ५, ६, ७, ९, १०, १३, १४] मार्ग में नवं. की १८, १९, २०, २७ (16/19 बाद), २८, २९, ३०, दिसं. की ४, ५, ६, ७, ८, १०, सन् 2014 ई० में जन. की २० (30/36 बाद), २१, २२, २३, २५, २६, २७, २८, ३१, फर. की १, ३, ४ (28/28 तक), ८, १०, १७ (12/19 बाद), १८, १९, २२, २४, २५, २६, मार्च की २, ३, ७ शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कुम्भ राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १-२-३ (चं. दा.), ६, १३, जुला. की ११, १२, १३ (25/58 तक), २०, २१, २२-२३-२४ (चं. दा.), २६, २७, २८, २९, अग. की २ (21/54 बाद), ३, ७, ८, ९, १२ (15/02 बाद), १८-१९-२० (चं. दा.), २१, २३, २४, २५, २९ (28/59 बाद), ३०, सितं. की ६ (13/14 तक), ८ (20/34 बाद), ९, १३ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २३ (21/10 बाद), २८, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, ९-१० (चं. दा.), १३, १४] मार्ग. में नवं. की १९ (29/00 बाद), २०, २५, २७ (16/19 तक), २९ (23/09 बाद), ३०, दिसं. की ४, ५-६ (चं. दा.), ७, ८, १०, १२, १३. **सन् 2014 ई० में फर. की** १४, १५, १७ (12/19 तक), १९ (21/54 बाद), २२, २४, २५, २६ (चं. दा.), मार्च की २, ३, ४, ५ शुभ होंगी।	कुम्भ के वर को वैशाख, मार्ग., श्रावण मास शुभ ; आषाढ़, भाद्रपद व कार्तिक मास में सूर्य की पूजा ; ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य रहेंगे। कुम्भ राशि की कन्या को गुरु संवतारम्भ से 30 मई तक विशेष रुपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**कुम्भ राशि**—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३, ६, १३, १८, २० (11/54 तक), २२ (16/25 बाद), २६, २७, २८-२९-३० (चं. दा.), जून की २, जुला. की ११, १२, १३ (25/58 तक), २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की २ (21/54 बाद), ३, ७, ८, ९, १२ (15/02 बाद), १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २९ (28/59 बाद), ३०, सितं. की ६ (13/41 तक), ८ (20/34 बाद), ९, १३, अक्तू. की ५ (27/36 बाद), ६, १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २३ (21/10 बाद), २८, २९, ३०, नवं. की ४, ५, ६, ७, ९, १०, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १९ (29/00 बाद), २०, २५, २७ (16/19 तक), २९ (23/09 बाद), ३०, दिसं. की ४, ५, ६, ७, ८, १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २० (30/36 तक), २३ (16/11 बाद), २५, २६, २७, २८, ३१, फर. की १, ३, ४, ५, १०, १४, १५, १७ (12/19 तक), १९ (21/54 बाद), २२, २४, २५, २६, मार्च की २, ३, ४, ५ शुभ होंगी।
मीन राशि—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३ (चं. दा.), ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२ (16/25 तक), २६, २७, २८, २९, ३० (चं. दा.), जून की २, जुला. की २०, २१, २२ ,२३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २ (21/54 तक), ७, ८, ९, १०, ११, १२ (15/02 तक), १८, १९, २०-२१ (चं. दा.), २३, २४, २५, २८, २९ (28/29 तक), सितं. की ६, ७, ८ (20/34 तक), १३, अक्तू. की ५ (27/36 तक), १०, १२, नवं. की १८, १९ (29/00 तक), २५, २७, २८, २९ (23/09 तक), दिसं. की ४, ५, ६, ७-८ (चं. दा.), १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३ (16/11 तक), २५, २६, २७, २८, ३१, फर. की १ (चं. दा.), ३, ४, ५, ८, शुभ होंगी।	मीन के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्ग. मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की कन्या को गुरु 30 मई तक साधारण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त् तक विशेष रुपेण पूज्य रहेगा। –विवेक शर्मा	**मीन राशि**—अप्रै. की २९, ३०, मई की १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२ (16/25 तक), २६, २७, २८, २९, ३०, जून की २, जुला. की ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९, अग. की १, २ (21/54 तक), ७, ८, ९, १०, ११, १२ (15/02 तक), १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २८, २९ (28/59 तक), सितं. की ६, ७, ८ (20/34 तक), १३, अक्तू. की ५ (27/36 तक), १०, १२ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २२, २३ (21/10 तक), २८, २९, ३०, ३१, नवं. की ४, ५, ६, ७, ९, १०, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १८, १९ (29/00 तक), २५, २७, २८, २९ (23/09 तक), दिसं. की ४, ५, ६, ७, ८, १०, १२, १३, सन् 2014 ई० में जन. की २०, २१, २२, २३ (16/11 तक), २५, २६, २७, २८, ३१, फर. की १, ३, ४, ५, ८, १४, १५, १७, १८, १९ (21/54 तक), २२, २४, २५, २६, मार्च की २, ३, ४, ५, ७ शुभ होंगी।

"त्रिबल शुद्धि-चक्र"

त्रिग्रह बल→	सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरूबल
शुभ एवं ग्राह्य	३, ६, १०, ११	१, ३, ६, ७, १०, ११	२, ५, ७, ९, ११
अल्प-शुभ एवं पूज्य	१, २, ५, ७, ९	२, ५, ९, १२	१, ३, ६, १०
निन्द्य एवं त्याज्य	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

वर तथा कन्या दोनों की राशि से विवाह मुहूर्त्त समय की राशि (गोचर चन्द्र) १, ३, ६, ७, १० या ११वें हो, तो वह चन्द्र शुभ होता है एवं २, ५, ९ या १२वें चन्द्र हो, तो कुछ अशुभ एवं पूज्य होता है तथा ४ या ८वें चन्द्र हो, तो अशुभ एवं निन्द्य माना जाता है। (मु. पारिजात) ऊपर दिए गए त्रिबल-शुद्धि चक्र से वर-कन्या के शुभ विवाह मुहूर्त्त का निर्णय करने में सुविधा होगी।

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त–संवत् २०७०

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त—संवत् २०७०

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्त्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र-वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात- वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड-वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्त्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है—**विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥** ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त भी ग्राह्य नहीं होता।

'पंचांग दिवाकर' में लगाए जाने वाले सभी मुहूर्त्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथा सम्भव पालन किया जाता है। निवेदक पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर।

मुण्डन मुहूर्त्त—२०७० वि.

✡ बालक के मुण्डन जन्म या गर्भाधान काल से १, ३, ५ इत्यादि विषम वर्षों में करने का विधान है। उत्तरायण मासों में तारा बल एवं निर्धारित मुहूर्त्तों में ही मुण्डन करना शुभ होता है। कुछ विद्वान् बालक के जन्म मास एवं जन्म नक्षत्र और विरूद्ध चन्द्र (४,८,१२)वें चूड़ाकरण करने का निषेध मानते हैं—**न जन्म मासे न च जन्म भे तथा विधो विरूद्धेऽशुभ तारकासु। युग्माब्दमासे न च कृष्णपक्षे चूडा न कार्या खलु चैत्र मासे।।** (चूड़ामणि) ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में करने का भी निषेध माना है। कुल परम्परानुसार नवरात्रों में सिद्ध शक्ति पीठ या तीर्थ स्थलों पर बिना निर्धारित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य सम्पादित कराते हैं। **निः-पं. पन्ना लाल ज्यो.**

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ८,गुरु	2 मई	२० वैशा.	श्रव.	ल. २, ४ (मं. शु. रा. दान)
वै. कृ. ९, शुक्र	3 मई	२१ वैशा.	धनि.	ल. २ (मं.शु.दा.), ३ (चं.दा.) (रिक्ता तिथि—आवश्यके)
वै. शु. २, रवि	12 मई	३० वैशा.	रोह.	ल. 11/52 बाद, अभिजित्, (विप्राणां केवल)
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा.	मृग.	ल. २, अभि. (अक्षय तृ. मुहू.)
वै. शु. ५, बुध	15 मई	२ ज्ये.	पुर्न.	३, ४ (चं. दा.) शूल की प्रथम 5 घड़ी (2 घंटे) विशेषरूप त्याज्य
वै. शु. ६, गुरु	16 मई	३ ज्ये.	पुष्य	ल. ३, अभिजित
वै. शु. १२, बुध	22 मई	९ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, ४,
ज्ये. कृ. १, रवि	26 मई	१३ ज्ये.	ज्ये.	ल. ३, ४, अभि. विप्रो के लिए
ज्ये. कृ. ५, बुध	29 मई	१६ ज्ये.	श्रव.	४, ६, चं. बु. मं. रा. दा.
ज्ये. कृ. ६, गुरू	30 मई	१७ ज्ये.	धनि.	ल. ४ (चं. शु. रा. दा.), ६ (मं. शु. दान)
आ. शु. २, बुध	10 जुला	२७ आषा	पुष्य	ल. ५, ६ (सिंह व कन्या लग्न)

—सन् 2014 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ कृ. ६, बुध	22 जन.	९ माघ	हस्त	ल. ११-चं. मं. दा., २ (वृष)
माघ कृ. ७, गुरु	23 जन.	१० माघ	चित्रा	ल. ११-चं. मं. दा., २ अभि.
मा.कृ.११, सोम	27 जन.	१४ माघ	ज्येष्ठ	ल. ११ (मं. दा.), अभि.
मा. शु. १, शनि	1 फर.	१९ माघ	धनि.	ल. ११ अभि. वैश्यों के लिए प्रशस्त
माघ शु. २, रवि	2 फर.	२० माघ	शत	मु. प्रातः 7/55 तक
मा. शु. ५, मंग	4 फर.	२२ माघ	रेव.	ल. ११, अभि. क्षत्रियों के लिए
मा. शु. ६, बुध	5 फर.	२३ माघ	अश्वि	ल. ११, १२ (कुंभ व मीन)
मा. शु. ९, शनि	8 फर.	२६ माघ	रोहि.	११, १२, अभि., वैश्यों को शुभ
मा. शु. १०, रवि	9 फर.	२७ माघ	रो/मृ.	ल. ११, अभि. ब्राह्मणों को शुभ
मा.शु. ११, सोम	10 फर.	२८ माघ	मृग	ल. ११, अभि., चं. रा. दान
मा. शु. १४, गुरु	13 फर.	२ फागु	पुष्य	ल. १२, अभि. गुरूपुष्य योग
फा. कृ. ५, बुध	19 फर.	८ फागु.	चित्रा	दुपै. 11/23 बाद, २ (वृष)
फा. कृ. ५, गुरू	20 फर.	९ फागु.	चित्रा	मु. प्रातः 10/24 तक
फा.कृ.१०, सोम	24 फर.	१३ फागु	ज्येष्ठा	प्रातः 8/14 से 9/21 तक
फा. शु. ५, बुध	5 मार्च	२२ फागु	अश्वि	२ (वृषे गुरु, केतु दान)

नींव एवं गृहारम्भ मुहूर्त्त—२०७०

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्त्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्त्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। गृहारम्भ में ५, ७, ९, १५, २१, २४ प्रविष्टों में भूमि-शयन (सुप्त भूमि) का भी विचार किया गया है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै.कृ. ६/७, बुध	1 मई	१९ वैशा	उ.षा.	वृष, लग्ने मं.-शु. दान
वै. कृ. ८, गुरू	2 मई	२० वैशा	श्रव.	वृष (मं., शु. दा.), अभि.
वै.शु. १/२, शनि	11 मई	२९ वैशा	रोह.	ल. सिंह (13/24 बाद), अभि.
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा	मृग.	ल. अभिजित, ५, (अक्षय ३)
वै. शु. ५, बुध	15 मई	२ ज्ये.	पुर्न.	ल. ५, लग्न (सिंह)
वै. शु. ६, गुरू	16 मई	३ ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ५, अभि. (चं. दा.)
ज्ये. कृ. ५, बुध	29 मई	१६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ३, (चं. दा.), गुरु केन्द्रे शुभः
ज्ये. कृ. ५, बुध	29 मई	१६ ज्ये.	श्रव.	६ (कन्यायां गुरू केन्द्रे)
ज्ये. कृ. ६, गुरू	30 मई	१७ ज्ये.	श्र/ध	ल. अभि., कन्या 14/40 तक
ज्ये. कृ. ८, शनि	1 जून	१९ ज्ये.	शत	ल. ३, ५, (चं. दा.), अभि.
आषा.शु.२, बुध	10 जुला	२७ आषा	पुष्य	ल. ५, ६ (सिंह, कन्या)
श्रा. कृ. ५, शनि	27 जुला	१२ श्राव.	रेव.	ल. ६, अभिजित
श्रा. कृ. ७, सोम	29 जुला	१४ श्राव.	अश्वि	ल. ६, चं. मं. दान, लग्न प्रातः (10/16 तक)
श्रा.कृ. १०, गुरु	1 अग.	१७ श्राव.	रोहि.	ल. ५, ६, अभिजित
श्रा.कृ. ११, शुक्र	2 अग.	१८ श्राव.	रो/मृ.	ल. ५, (सू. मं. दा.), ६
श्रा. कृ.१२, शनि	3 अग.	१९ श्राव.	मृग	ल. ५, ६, अभिजित्
श्रा.शु. ३, शनि	10 अग.	२६ श्राव.	उफा.	प्रातः 6/34 तक, रिक्तापूर्व
श्रा.शु.५/६, सोम	12 अग.	२८ श्राव.	चित्रा	ल. ५ (सू. बु. दा.), अभि.
श्रा.शु. १३, सोम	19 अग.	४ भाद्र.	उ.षा.	ल. ६, अभिजित्
श्रा. पूर्णिमा, बुध	21 अग.	६ भाद्र.	धनि	ल. ६ (कन्या ल. चं. दा.)
भा. कृ. ३, शुक्र	23 अग.	८ भाद्र.	उ.भा.	ल. ६ (चं. बु. दा., मु. 8/12 बाद), अभिजित
भा. कृ. ६, सोम	26 अग.	११ भाद्र	अश्वि	मु. प्रातः 8/38 तक
भा. कृ. ८, बुध	28 अग.	१३ भाद्र	रोहि.	मु. दुपै. 12/42 बाद (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)

—नींव-गृहारम्भ मुहूर्त्त—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भा.कृ. १२,सोम	2 सितं.	१८ भाद्र.	पुष्य	ल. ६, ९, अभिजित
भा. शु. १, शुक्र	6 सितं.	२२ भाद्र.	उफा.	ल. ६, अभिजित
भा. शु. २, शनि	7 सितं.	२३ भाद्र.	हस्त	ल. अभि., ९ (मं. दा.)
आश्वि पूर्णि.शुक्र	18 अक्टू	२ कार्ति	रेव	ल. ९, अभिजित
का. कृ. १,शनि	19 अक्टू	३ कार्ति	अश्वि	ल. ९, अभि. चं. गु. दा.
का. कृ. ७,शनि	26 अक्टू	१० कार्ति	पुर्न	अभिजित्
का. शु.१२, गुरु	14 नवं.	२९ कार्ति.	रेवती	९ (मं. गु. दा.), अभि.
मा. कृ. १,सोम	18 नवं.	३ मार्ग.	रोहि.	१२ (बु. रा. दान)
मा.कृ.५/६,शनि	23 नवं.	८ मार्ग.	पुष्य	अभिजित्, मीन (बु. रा. दा.)
मा. कृ.१०, गुरू	28 नवं.	१३ मार्ग.	उ.फा.	ल. ९, अभि., १२ (चं. दा.)
मा. कृ.११,शुक्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	ह/चि	ल. ९, अभिजित
मा. शु. ५, शनि	7 दिसं.	२२ मार्ग	श्रव.	ल. ९, अभि., गु. दा
मा.शु.११/१२,शुक्र	13 दिसं.	२८ मार्ग.	अश्वि	ल. ९, अभि., चं. मं. दान
—सन् 2014 ई. में—				
मा. कृ. ७, गुरू	23 जन.	१० माघ	चित्रा	ल. ११, अभि., चं. मं. दा.
मा. शु. २, शनि	1 फर.	१९ माघ	धनि	ल. ११ (सू. चं. दान), अभि.
मा. शु.५,सोम	3 फर.	२१ माघ	उ.भा.	दुपै. 14/35 के बाद
मा. शु. ६, बुध	5 फर.	२३ माघ	अश्वि	ल. ११, सू. चं. दा.
मा.शु. ९, शनि	8 फर.	२६ माघ	रोह.	दुपै. 15/04 के बाद
मा.शु. ११,सोम	10 फर.	२८ माघ	मृग	ल. ११, अभि.,
फा.कृ.२/३,सोम	17 फर.	६ फागु	उ.फा.	ल. २, ३, अभि., शु. दा.
फा. कृ. ५, बुध	19 फर.	८ फागु	चित्रा	ल. २ (शु. दा., शुक्र 8वें परि.) (वृष ल. दुपै. 11/23 बाद),
फा.कृ.७/८,शनि	22 फर.	११ फागु	अनु.	ल. २ (चं. शु. पू. दा.), मु. 11/04 के बाद
फा. शु. २,सोम	3 मार्च	२० फागु.	उ.भा.	ल. २, अभि., गु. के. दान
फा. शु.५, बुध	5 मार्च	२२ फागु.	अश्वि	ल. २, के. गु. दा.
फा. शु. ७, शुक्र	7 मार्च	२४ फागु.	रोह.	मु. 15/55 के बाद

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त—संवत् २०७०

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर **नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति**, नवग्रह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै.कृ. ६/७,बुध	1 मई	१९ वैशा.	उ.षा.	२ (चं., मं. शु. दा.) [illegible]
वै. कृ. १२,सोम	6 मई	२४ वैशा.	उ.भा.	मु. प्रातः 10/45 बाद, अभि.
वै.शु.१/२, शनि	11 मई	२९ वैशा	रोह.	ल.५, अभि., सिंह 13/24 बाद
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा.	मृग	अभि. ल. ५, अक्षय तृतीया दिने मासांत दो. अभाव, अपरं गुरू केन्द्रे)
वै. शु. ५, बुध	15 मई	२ ज्येष्ठ	पुर्न.	ल. ५,
वै. शु. ६, गुरू	16 मई	३ ज्येष्ठ	पुष्य	ल. ३, ५ (चं. दा.), अभि.
वै. शु. १०,सोम	20 मई	७ ज्येष्ठ	उ.फा.	ल. ३ (बु. शु. दा.), अभि.
वै. शु. १२, बुध	22 मई	९ ज्येष्ठ	चित्रा	ल. ३, ५, अभि.
ज्ये. कृ. ५, बुध	29 मई	१६ ज्ये.	श्र/ध.	ल. ३, ५, (चंद्र ६, ८वें परि.) मिथुने गुरू केन्द्रे प्रशक्त)
ज्ये. कृ. ८, शनि	1 जून	१९ ज्ये.	शत.	ल. ३, ५ (चं. दा.), अभि.
आ. शु. २, बुध	10 जुला	२७ आषा	पुष्य	ल. ५, ६,
अश्वि पूर्णि.शुक्र	18 अक्टू	२ कार्ति.	रेव	ल. ९ (धनु), अभि.
का. कृ. १,शनि	19 अक्टू	३ कार्ति.	अश्वि	ल. ९, चं. गु. दा., अभि.
का. कृ. ७,शनि	26 अक्टू	१० कार्ति	पुर्न	अभिजित
का. कृ. १२,गुरू	31 अक्टू	१५ कार्ति	उफा	ल. ९, गु. दा., अभि.
का. शु. ७, शनि	9 नवं.	२४ कार्ति.	उ.षा.	ल. ९ (सू. रा. दा.), अभि.
का. शु. १२,गुरू	14 नवं.	२९ कार्ति.	रेवती	ल. ९ (मं. गु. दा.), अभि.
मा. कृ. १,सोम	18 नवं.	३ मार्ग	रोह.	ल. १२ (बु. रा. दा.), अभि.
मा. कृ. ३, बुध	20 नवं.	५ मार्ग.	मृग.	ल. ९ (चं. गु. दा.), अभि.
मा. कृ. ५, शुक्र	22 नवं.	७ मार्ग.	पुन	ल. ९, चं. गु. दा.,
मा.कृ.५/६,शनि	23 नवं.	८ मार्ग.	पुष्य	अभिजित्
मा. कृ.१०, गुरू	28 नवं.	१३ मार्ग.	उ/ह	ल.९, ११ (चं. मं. दा.), अभि.
मा. कृ.११,शुक्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	ह/चि	ल. ९, अभिजित
मा. कृ.१२,शनि	30 नवं.	१५ मार्ग.	चित्रा	ल. ९ (गु. मं. दा.), अभि.
मा. शु. ५, शनि	7 दिसं.	२२ मार्ग.	श्रव.	ल. ९ (गु. मं. दा.), अभि.
मा.शु.११/१२,शु.	13 दिसं.	२८ मार्ग.	अश्वि	ल. ९ (मं. दा.), अभि.
—सन् 2014 ई. में—				
मा. कृ. ६, बुध	22 जन.	९ माघ	हस्त	११, २ (गु. शु. दा.)
मा. कृ. ७, गुरू	23 जन.	१० माघ	चित्रा	ल. ११ (चं. मं. दा.), अभि. २
मा. शु. २, शनि	1 फर.	१९ माघ	धनि.	ल. ११ (सू. चं. दा.), अभि.
मा. शु. ५, सोम	3 फर.	२१ माघ	उ.भा.	दुपै. 14/35 बाद, भद्रोत्तरे
मा. शु. ६, बुध	5 फर.	२३ माघ	अश्वि	ल. ११ (सू. चं. दा.),
मा.शु. १०, शनि	8 फर.	२६ माघ	रोहि.	मु. दुपै. 15/04 के बाद
मा.शु. ११,सोम	10 फर.	२८ माघ	मृग	ल. ११, अभि., (चं. रा. दा.)
फा.कृ.२/३, सोम	17 फर.	६ फागु.	उफा.	ल. २, ३ (शु. दा.), अभि.
फा. कृ. ५, बुध	19 फर.	८ फागु.	चित्रा	ल. २ (वृष ल. दुपै. 11/23 बाद), (शुक्र [illegible])
फा. कृ.५, गुरु	20 फर.	९ फागु.	चित्रा	मुहूर्त प्रातः 10/24 तक
फा.कृ.७/८, शनि	22 फर.	११ फागु	अनु.	ल. २ (चं. शु. पू. दान), अभि. (वृष लग्न 11/04 के बाद)
फा. शु. २, चंद्र	3 मार्च	२० फागु.	उभा.	ल. २ (गु. के. दान) अभि.
फा. शु. ५, बुध	5 मार्च	२२ फागु.	अश्वि	ल. २ (गु. के. दा.), अभि.
फा. शु. ७, शुक्र	7 मार्च	२४ फागु	रोह.	अपराह्न 15/55 बाद, आवश्ये

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त-वि. सं. २०७०

अस्थायी तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए **नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।** ध्यान रहे, पुराने निजी या किराये के मकान में प्रवेश के समय भी कलश पूजन, देव पूजन, नवग्रह शान्ति दान, दक्षिण सहित ब्राह्मण भोजन आदि करवाना शुभ होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, गुरु	11 अप्रै.	२९ चैत्र	अश्वि	ल. २ (चं. शु. दा.), अभि. (स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त)
वै. कृ. ६, बुध	1 मई	१९ वैशा.	उषा.	ल. २, ४, चं. शु. दान
वै. कृ. ८, गुरु	2 मई	२० वैशा.	श्रव.	२, ४ (चं. शु. दा.), अभि
वै. कृ. ९, शुक्र	3 मई	२१ वैशा.	धनि.	ल. २, ४ (मं. चं. रा. दा.), अभि.
वै. कृ.१२, सोम	6 मई	२४ वैशा.	उ.भा.	प्रातः 10/45 के बाद, अभि.
वै.शु.१/२, शनि	11 मई	२९ वैशा	रोह.	अभि. ५-दुपै. 13/24 बाद
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा.	मृग.	अभि. ल. ५, अक्षय तीज
वै. शु. ५, बुध	15 मई	२ ज्येष्ठ	पुर्न	ल. ५, ल. सिंहे (चं. दान)
वै. शु. ६, गुरू	16 मई	३ ज्येष्ठ	पुष्य	ल. ३, ५ (चं. दा.), अभि.
वै. शु. १०,सोम	20 मई	७ ज्येष्ठ	उ.फा.	ल. ३ (बु. शु. दा.), अभि.
वै. शु. १२, बुध	22 मई	९ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, ५, चं. बु. दान
ज्ये. कृ.५, बुध	29 मई	१६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ३ (चं. दा.),
ज्ये. कृ. ६, गुरू	30 मई	१७ ज्ये.	श्र/ध	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. कृ. ८, शनि	1 जून	१९ ज्ये.	शत.	ल. ३, ५, अभिजित
आ. शु. २, बुध	10 जुला	२७ आषा	पुष्य	ल. ५, ६ (चं. मं. दान)
आ. शु. ६, रवि	14 जुला	३१ आषा	उ.फा.	ल. ४, ५, अभि., सू. बु. दा.
आ. शु. ७,सोम	15 जुला	३२ आषा	हस्त	ल. ४, ५, अभि. आवश्यके
आ. पूर्णि १५, सोम	22 जुला	७ श्राव.	उषा	ल. ५, अभिजित
श्राव. कृ.२, बुध	24 जुला	९ श्राव.	धनि.	ल. ६ (चं. बु. दान)
श्राव.कृ. ३, गुरू	25 जुला	१० श्राव.	शत.	दुपै. 14/07 बाद, भद्रोत्तरे
श्रा. कृ. ७, सोम	29 जुला	१४ श्राव.	अश्वि	ल. ५, अभिजित
श्रा. कृ १०, गुरु	1 अग.	१७ श्राव.	रोहि.	ल. ५ (सू. मं. दा.), अभि.
श्रा.कृ. ११,शुक्र	2 अग.	१८ श्राव.	रोहि.	ल. ५ (सू. मं. दा.) [illegible]

... मुहूर्त्त सं. २०७०

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
				प्रातः 6/34 तक, रिक्ता पू.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आश्वि शु.१,शनि	5 अक्टू	२० आश्वि	हस्त	ल. ९, अभिजित
[illegible]	[illegible]	[illegible] आश्वि	उषा.	ल. ९, अभिजित

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
श्रा. शु. ३, शनि	10 अग.	२६ श्राव.	उ.फा.	प्रातः 6/34 तक, रिक्ता पू.
श्रा.शु.५/६,सोम	12 अग.	२८ श्राव.	चित्रा	ल. ५ (सू. बु. दा.), अभि.
का. कृ. १, शनि	19 अक्तू	३ कार्ति.	अश्वि	ल. ९ (चं. गु. दा.), अभि.
का. कृ. ७, शनि	26 अक्तू	१० कार्ति.	पुर्न	अभिजित्
का.कृ. १२, गुरू	31 अक्तू	१५ कार्ति.	उफा	ल. ९ (गु. दा.), अभि.
का. शु. ७, शनि	9 नवं.	२४ कार्ति.	उषा.	ल. ९ (सू. रा. दा.), अभि.
का. शु.१२, गुरू	14 नवं.	२९ कार्ति.	रेवती	ल. ९ (मं. गु. दा.), अभि.
मार्ग कृ. १, सोम	18 नवं.	३ मार्ग.	रोह.	ल. १२ (बु. रा. दा.), अभि.
मा. कृ. ३, बुध	20 नवं.	५ मार्ग.	मृग.	ल. ९ (चं. गु. दा.), १२ मीन
मा. कृ. ५, शुक्र	22 नवं.	७ मार्ग.	पुन.	ल. ९ (चं. गु. दा.), १२, अभि.
मा.कृ.५/६, शनि	23 नवं.	८ मार्ग.	पुष्य	अभि., १२ (बु. रा. दा.)
मा.कृ. १०, गुरु	28 नवं.	१३ मार्ग.	उ.फा.	ल. ९, अभिजित
मा. कृ.११, शुक्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	ह/चि	ल. ९, अभि.,
मा. कृ.१२, शनि	30 नवं.	१५ मार्ग	चित्रा	ल. ९, अभिजित
मा. शु. ५, शनि	7 दिसं.	२२ मार्ग.	श्रव.	ल. ९, ११ (चं. मं. दा.), अभि.
मा. शु.११, शुक्र	13 दिसं.	२८ मार्ग.	अश्वि	ल. ९ (चं. गु. दा.), १०, ११, अभि.

—सन् 2014 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
माघ कृ. १, शुक्र	17 जन.	४ माघ	पुष्य	अभिजित्
माघ कृ. ६, बुध	22 जन.	९ माघ	हस्त	ल. ११, २ (गु. शु. दा.),
माघ कृ. ७, गुरू	23 जन.	१० माघ	चित्रा	ल. ११, २, अभि., चं.मं.दा.
माघ शु. २, शनि	1 फर.	१९ माघ	ध/श	ल. ११, अभिजित
माघ शु. ३, रवि	2 फर.	२० माघ	शत	मु. प्रातः 7/55 तक,
मा.शु.४/५, सोम	3 फर.	२१ माघ	उभा.	दुपै. 14/35 के बाद
माघ शु. ६, बुध	5 फर.	२३ माघ	अश्वि	ल. ११ (चं. दा.), अभि.
मा. शु.१०, शनि	8 फर.	२६ माघ	रोह.	मु. दुपै. 15/04 के बाद
मा. शु.११, सोम	10 फर.	२८ माघ	मृग	ल. ११, अभि. (चं. रा. दान)
मा. शु. १४, गुरू	13 फर.	२ फागु.	पुष्य	ल. १२, अभि. (गुरु पुष्य)
फा.कृ.२/३, सोम	17 फर.	६ फागु.	उ.फा.	२, ३ (शु. दा.), अभि.
फा. कृ. ५, बुध	19 फर.	८ फागु.	चित्रा	ल. २ (11/23 के बाद)
फा. कृ. ५, गुरू	20 फर.	९ फागु.	चित्रा	प्रातः 10/24 तक
फा.कृ.७/८, शनि	22 फर.	११ फागु.	अनु.	२, अभि. वृष ल. 11/04 बाद
फा. कृ.१२, बुध	26 फर.	१५ फागु.	उषा.	मु. 15/41 के बाद
फा. शु. २, सोम	3 मार्च	२० फागु.	उभा.	ल. २, अभि. (गु. दान)
फा. शु. ५, बुध	5 मार्च	२२ फागु.	अश्वि	ल. २, (गु. केतु दान)
फा. शु. ७, शुक्र	7 मार्च	२४ फागु.	रोह.	दुपै. 15/55 के बाद)

नया व्यवसाय या दुकानादि शुरू करने के मुहूर्त २०७० (2013-14 ई.)

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय आदि शुरु करने के मुहूर्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव पूजा, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश स्थापन एवं कन्या पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए।

—दुकान, व्यवसायादि के मुहूर्त—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)

मुहूर्त वाले दिन वार स्वामी वक्री, अस्तादि हो, तो उसका दान आदि करके कार्यारम्भ करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ८, गुरू	2 मई	२० वैशा.	श्रव.	ल. २, ४, अभि. (मं. शु. दा.)
वै. कृ. १२, सोम	6 मई	२४ वैशा.	उभा.	ल. प्रातः 10/45 बाद, अभि.
वै.शु.१/२, शनि	11 मई	२९ वैशा.	रोह.	अभि., कर्क (10/58 उप.), सिंह
वै. शु. २, रवि	12 मई	३० वैशा.	रोह.	ल. २, ३, अभि. (मं.बु.दा.)
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा	मृग.	अभि., सिंह, अक्षय तीज प्रशस्त
वै. शु. ६, गुरू	16 मई	३ ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ५, अभि. (बु. दान)
वै. शु. १०, सोम	20 मई	७ ज्ये.	उफा.	ल. ३, अभि., बुध दान
ज्ये. कृ. ५, बुध	29 मई	१६ ज्ये.	श्रव.	ल. ३ (चं. दा.), ६
ज्ये. कृ. ६, गुरू	30 मई	१७ ज्ये.	श्र/ध	ल. ३, ६, अभिजित
ज्ये. कृ.१०, रवि	2 जून	२० ज्ये.	उभा.	ल. ३, ६, अभिजित
आ. शु. ६, रवि	14 जुला	३१ आषा.	उफा.	ल. ५ (बु. शु. दा.), अभि.
आ.शु.१५, सोम	22 जुला	७ श्राव.	उषा.	ल. ५, ६, अभि. बु. शु. दा.
श्रा. कृ. २, बुध	24 जुला	९ श्राव.	धनि.	ल. ६, अभि. बु. शु. दा.
श्रा. कृ. ५, शनि	27 जुला	१२ श्राव.	उभा.	ल. ६ (चं. दा.), अभिजित
श्रा. कृ. ६, रवि	28 जुला	१३ श्राव.	रेव.	ल. ६ (चं.दा. ल. 10/16 तक)
श्रा. कृ. ७, सोम	29 जुला	१४ श्राव.	अश्वि	ल. ५ (सू. चं. दान), अभि.
श्रा. कृ.१०, गुरू	1 अग.	१७ श्राव.	रोहि.	ल. ५-६ (सू. मं. दा.), अभि.
श्रा. कृ.११, शुक्र	2 अग.	१८ श्राव.	रो/मृ	ल. ५ (सू. दा.), ६ (मं.रा.दा.)
श्रा. शु. ५, रवि	11 अग.	२७ श्राव.	हस्त	ल. ५ (सू.बु.दा.) अभिजित
श्रा.शु.५/६, सोम	12 अग.	२८ श्राव.	चित्रा	अभिजित
श्रा. शु.१३, सोम	19 अग.	४ भादों	उषा	ल. ६, अभिजित
भा. कृ. ३, शुक्र	23 अग.	८ भाद्र	उभा.	ल. ६, अभिजित
भा. कृ. ५, रवि	25 अग.	१० भाद्र.	अश्वि	ल. ९ (मं. गु. दा.), अभि.
भा. कृ. ८, बुध	28 अग.	१३ भाद्र.	रोह.	दुपै. 12/42 बाद, श्री कृष्ण ८
भा. कृ.१०, शुक्र	30 अग.	१५ भाद्र.	मृग.	ल. ६ (बु.शु.दा.), अभि.
भा. कृ.१२, सोम	2 सितं.	१८ भाद्र.	पुष्य	ल. ६ (बु. शु. दा.), अभि.
भा. शु. १, शुक्र	6 सितं.	२२ भाद्र.	उ.फा.	ल. ६, ९, अभिजित
भा. शु. २, शनि	7 सितं.	२३ भाद्र.	हस्त	अभिजित, ९
भा. शु. ३, रवि	8 सितं.	२४ भाद्र.	हस्त	मु. प्रातः 8/31 तक तथा
भा. शु. ३, रवि	8 सितं.	२४ भाद्र	चित्रा	अभि. एवं ल. ९
आश्वि शु.१, शनि	5 अक्तू	२० आश्वि	हस्त	ल. ९, अभिजित
आ. शु. ८, शनि	12 अक्तू	२७ आश्वि	उषा.	ल. ९, अभिजित
आ. पूर्णि. शुक्र	18 अक्तू	२ कार्ति.	रेव.	ल. ९ अभिजित
का. कृ. १, शनि	19 अक्तू	३ कार्ति	अश्वि	ल. ९, अभिजित
का. कृ. ८, रवि	27 अक्तू	११ कार्ति.	पुष्य	अभिजित्, चंद्र दान
का. शु. ८, रवि	10 नवं.	२५ कार्ति	श्रव.	ल. ९ (सू. रा. दा.), अभि
मा. कृ. १, सोम	18 नवं.	३ मार्ग	रोह.	दुपै. 13/32 के बाद
मा. कृ. ३, बुध	20 नवं.	५ मार्ग.	मृग.	ल. ९ (चं. गु. दा.),
मा. कृ. ५, शुक्र	22 नवं.	७ मार्ग.	पुन.	ल. ९ (चं. गु. दा.), अभि
मा.कृ.५/६, शनि	23 नवं.	८ मार्ग.	पुष्य	अभिजित्
मा. कृ. १०, गुरु	28 नवं.	१३ मार्ग.	उ.फा.	ल. ९ (गु. मं. दा.), अभि
मा. कृ.११, शुक्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	ह/चि	ल. ९ (गु. दा.), अभि.
मा. कृ.१२, शनि	30 नवं.	१५ मार्ग	चित्रा	ल. ९ (गु. मं. दा.), अभि
मा. शु. ५, शनि	7 दिसं.	२२ मार्ग.	श्रव.	ल. ९ (गु. मं. दा.), अभि
मा. शु. ११, शुक्र	13 दिसं	२८ मार्ग.	अश्वि	ल. ९ (मं. दा.), अभि.

—सन् 2014 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
माघ कृ. १, शुक्र	17 जन.	४ माघ	हस्त	अभिजित् बाल्यत्वे शुक्र दा
मा. कृ. ६, बुध	22 जन.	९ माघ	हस्त	ल. ११, २,
मा. कृ. ७, गुरू	23 जन.	१० माघ	चित्रा	ल. ११, २, अभि. चं.मं.द
मा. कृ.१०, रवि	26 जन.	१३ माघ	अनु.	ल. ११, अभिजित्
मा. शु. २, शनि	1 फर.	१९ माघ	धनि	ल. ११, अभिजित
मा. शु. ५, सोम	3 फर.	२१ माघ	उ.भा.	मु. दुपै. 14/35 के बाद
मा. शु. ६, बुध	5 फर.	२३ माघ	अश्वि	ल. ११ (चं. दा.),
मा. शु. १०, शनि	8 फर.	२६ माघ	रोह.	मु. दुपै. 15/04 के बाद
मा. शु.११, सोम	10 फर.	२८ माघ	मृग	ल. ११, अभि. चं. रा. दा.
फा.कृ.२/३, सोम	17 फर.	६ फागु.	उ.फा.	ल. २, ३ (शु. दा.), अभि
फा.कृ.७/८, शनि	22 फर.	११ फागु.	अनु.	ल. २ (11/04 बाद), अभि
फा. शु.२, सोम	3 मार्च	२० फागु.	अश्वि	ल. २, अभि. (गु. दा.)
फा. शु. ५, बुध	5 मार्च	२२ फागु.	अश्वि	ल. २, (गु. के. दा.)
फा. शु. ७, शुक्र	7 मार्च	२४ फागु.	रोह.	दुपैहर 15/55 के बाद

नोट—मुहूर्त वाले दिन अपनी राशि से चन्द्र ४, ८, १२वें हो, तो वह दिन त्याग करें। वार स्वामी भी उदित होना चाहिए. —पं. पन्ना लाल।

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०७०

विशेष–मुहूर्त के दिन बालक की राशि से चन्द्र एवं गुरू चौथे, आठवें या बारहवें स्थान पर नहीं होना चाहिए। बुधवार के दिन बुधास्त हो, तो उस दिन को भी त्याज्य मानें। पक्षारम्भ में बुध अस्त है। यज्ञोपवीत धारण में जन्म मास तथा ज्येष्ठ लड़के के लिए ज्येष्ठ मास-त्याज्य माना जाता है। गर्भाधान से अथवा जन्म से ब्राह्मणों को ८ से १६ वर्ष, क्षत्रिय को १२ से २२ वर्ष तथा वैश्यों को १३ से २४ वर्ष पर्यन्त, उपनयन संस्कार कराना गौण काल माना जाता है। मुहूर्त्त वाले दिन बालक की राशि से चन्द्र ४, ८, या १२वें स्थान पर नहीं होना चाहिए। सं. २०७० के कुछ मुहूर्त्त इस प्रकार से होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु. २. रवि	12 मई	३० वैशा.	रोहि.	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा.	मृग.	ल. ४, ५, अक्षय तीज, सिद्ध मुहूर्त्त (रात्रौ मासांत दोष)
वै. शु. ५, बुध	15 मई	२ ज्येष्ठ	पुर्न.	ल. ५, (बुध पूज्य व दान)
वै. शु. ६, गुरू	16 मई	३ ज्येष्ठ	पुष्य	ल. ३, ५, अभि. (बुध दा.)
वै. शु. १०,सोम	20 मई	७ ज्येष्ठ	उफा.	ल. ३, अभि. (बु.पू. दान व)
वै. शु. १२, बुध	22 मई	९ ज्ये.	चित्रा	ल. ३,४,५, बु. दा.
ज्ये. कृ. ३,सोम	27 मई	१४ ज्ये.	मूल	ल. ३, ५, ६, अभिजित
ज्ये. कृ. ५, बुध	29 मई	१६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ३, ४,
—सन् 2014 ई. में—				
मा. कृ. १, शुक्र	17 जन.	४ माघ	पुष्य	अभिजित, चं. शु. दान
मा. शु. २, शनि	1 फर.	१९ माघ	ध/श	ल. ११, अभिजित
मा. शु. ३, रवि	2 फर.	२० माघ	शत.	मु. प्रात: 7/55 तक
मा. शु. ६ बुध	5 फर.	२३ माघ	अश्वि	ल. ११ (चं. दा.), अभि.
मा. शु. १०,रवि	9 फर.	२७ माघ	रोह.	मु. 10/41 तक, आवश्यके
मा. शु.११,सोम	10 फर.	२८ माघ	मृग	ल. ११ (सू. दा.), २, अभि.
फा.कृ.२/३,सोम	17 फर.	६ फागु.	उफा.	ल. २,३ (शु. दा.), अभि.
फा. कृ. ५, बुध	19 फर.	८ फागु.	चित्रा	ल. २ प्रात: 11/23 के बाद,
फा. शु. २,सोम	3 मार्च	२० फागु.	उभा.	ल. २, अभि., गु. दा.

मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-2013-14 ई.

विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्त्तो के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है–आजकल कुछ ज्योतिषी परिस्थितिवश एवं लोकाचार स्वरूप रवि एवं शनिवार भी ग्रहण करने लगे हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ५, सोम	29 अप्रै.	१७ वैशा.	मूल	ल. ५ (बु. शु. दा.)
वै.कृ.६/७, बुध	1 मई	१९ वैशा.	उ.षा.	ल. २, ४ (चं. मं. शु. दा.)
वै. कृ. ८, शुक्र	2 मई	२० वैशा.	श्रव.	ल. ११, १२ (मं. शु. बु. दा.)
वै. कृ. १२,सोम	6 मई	२४ वैशा.	उ.भा.	मु. 10/45 बाद, अभिजित
वै. शु. २, रवि	12 मई	३० वैशा.	रोहि.	ल. २, ३, अभिजित
मार्ग कृ. १,सोम	18 नवं.	३ मार्ग.	रोहि.	ल. १२, अभिजित
मार्ग कृ. ३, बुध	20 नवं.	५ मार्ग.	मृग.	ल. ९ (चं.गु.दा.), १२
मार्ग कृ. ५,शुक्र	22 नवं.	७ मार्ग.	पुर्न.	ल. ९ (चं. गु. दा.), अभि.
मा.कृ.५/६,शनि	23 नवं.	८ मार्ग.	पुष्य	अभि., १२ (बु.रा.दा.), आव
मा. कृ.१०, गुरू	28 नवं.	१४ मार्ग.	उफा.	ल. ९, अभिजित
मा. कृ.११,शुक्र	29 नवं.	१५ मार्ग.	ह/चि	ल. ९, अभिजित
मा. शु. ५, शनि	7 दिसं.	२२ मार्ग.	श्रव.	ल. ९, ११ (चं.मं.दा.), अभि.
मा. शु. ११,शुक्र	13 दिसं.	२८ मार्ग.	अश्वि	ल. ९, १०, अभि.
—सन् 2014 ई. में—				
मार्ग शु.१४,गुरु	13 फर.	२ फागु.	पुष्य	ल. १२, अभिजित्, गुरूपुष्य
फा.कृ.२/३,सोम	17 फर.	६ फागु.	उफा.	ल. २, ३, अभिजित
फा. कृ. ५, बुध	19 फर.	८ फागु.	चित्रा	ल. २ (प्रात: 11/23 के बाद)
फा. कृ. ५, गुरू	20 फर.	९ फागु.	चित्रा	प्रात: 11/24 तक
फा. कृ. १२,बुध	26 फर.	१५ फागु.	उ.षा.	मु. 15/41 के बाद
फा. शु. २,सोम	3 मार्च	२० फागु.	उभा.	ल. २, अभि. (गु. दा.)
फा. शु. ५, बुध	5 मार्च	२२ फागु.	अश्वि	ल. २ (गु. के. दा.)
फा. शु. ७, शुक्र	7 मार्च	२४ फागु.	रोह.	दुपै. 15/55 के बाद

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०७०

आगे लिखे मुहूर्त्त प्राय: सभी देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कूआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा देवी/देव का जयंती दिन विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, एवं शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ८, गुरू	2 मई	२० वैशा.	श्रव.	ल. २, ४, अभि. शिव-शक्ति
वै. कृ.१२, सोम	6 मई	२४ वैशा.	उभा.	मु. प्रात: 10/45 बाद, अभि.
वै.शु.१/२, शनि	11 मई	२९ वैशा.	रोह.	ल. ४ (10/58 उप.), ५, अभि.
वै. शु. २, रवि	12 मई	३० वैशा.	रोह.	ल. २, ३, अभि. रामकृष्ण
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा.	मृग.	अभि. ५, अक्षय तीज, स्वयं सिद्ध- -भगवान् विष्णु श्रीराम श्रीकृष्ण
वै. शु. ५, बुध	15 मई	२ ज्येष्ठ	पुर्न	ल. ५, श्रीकृष्ण राधा, श्रीराम
वै. शु. ६, गुरू	16 मई	३ ज्येष्ठ	पुष्य	ल. ३, ५, अभि., शिवगौरी
वै. शु.१०, सोम	20 मई	७ ज्येष्ठ	उफा.	ल. ३, अभि., शिव-शक्ति
वै. शु.१२, बुध	22 मई	९ ज्येष्ठ	चित्रा	ल. ३, ५, लक्ष्मी-नारायण
ज्ये. कृ.५, बुध	29 मई	१६ ज्येष्ठ	श्रव.	ल. ३, ६, कृष्ण-राधा
ज्ये. कृ. ६, गुरू	30 मई	१७ ज्ये.	श्र/ध	ल. ३, ६, अभि., शिव-शक्ति
ज्ये.कृ.९/१०,रवि	2 जून	२० ज्ये.	उभा.	ल. ३, ६, अभि., श्रीदुर्गा
आ.शु. २, बुध	10 जुला	२७ आषा	पुष्य	ल. ५, ६, शिव-शक्ति
—सन् 2014 ई. में—				
माघ कृ. ६,बुध	22 जन.	९ माघ	हस्त	ल. ११, २, राधा-कृष्ण
माघ कृ. ७,गुरू	23 जन.	१० माघ	चित्रा	ल. ११, २, अभि., सूर्य, राम
मा. कृ.१०, रवि	26 जन.	१३ माघ	अनु.	ल. ११, अभि., शिव सूर्य
मा. कृ.११,सोम	27 जन.	१४ माघ	ज्ये.	ल. ११ (मं. दा.), अभि.
माघ शु. २,शनि	1 फर.	१९ माघ	ध/श	ल. ११, अभि., श्रीदुर्गा
माघ शु. ६, बुध	5 फर.	२३ माघ	अश्वि	ल. ११ (चं. दा.), शिव शक्ति
मा.शु. ११,सोम	10 फर.	२८ माघ	मृग	ल. ११ (चं. रा. दा.), अभि.
मा. शु. १४,गुरू	13 फर.	२ फागु.	पुष्य	ल. १२, अभि. गुरू पुष्य शिव
फा.कृ.२/३,सोम	17 फर.	६ फागु.	उफा.	ल. २, ३ (शु. दा.), अभि.
फा.कृ. ५, बुध	19 फर.	८ फागु.	चित्रा	ल. २ (दुपै. 11/23 बाद) श्रीविष्णु, श्री कृष्ण, शिव
फा.कृ.५/६,गुरू	20 फर.	९ फागु.	चित्रा	मु. प्रा. 10/24 तक
फा. शु.७/८, शनि	22 फर.	११ फागु.	अनु.	ल. २ (11/04 बाद), शिव
फा.शु. २, सोम	3 मार्च	२० फागु.	उभा.	ल. २, अभि., भग. शिव

श्री दुर्गा/गौरी प्रभृति देवी प्रतिष्ठा २०७०

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
मा. शु. २, शनि	1 फर.	१९ माघ	धनि	ल. ११, अभिजित

श्री दुर्गा/गौरी प्रभृति देवी प्रतिष्ठा २०७०

(निम्न मुहूर्त्त जो द्वितीया या तृतीया तिथियों को लगाए गए हैं, देवी गौरी प्रतिष्ठा में भी ग्राह्य होंगे।)

नोट—यही मुहूर्त्त श्री माता के जागरण के लिए भी प्रशस्त एवं ग्राह्य होंगे।

—निवेदक पं. पन्ना लाल ज्यो.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा कृ.५, सोम	29 अप्रै.	१७ वैशा.	मूल	ल. ३, ५, अभिजित
वै. कृ. ८, गुरु	2 मई	२० वैशा.	श्रव.	ल. २, ४, अभिजित
वै. कृ. ९, शुक्र	3 मई	२१ वैशा.	धनि	ल. २, ४, अभिजित
वै. शु.१/२,शनि	11 मई	२९ वैशा.	रोह.	मु. 10/58 बाद, ५, अभि.
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा.	मृग	२, अभि.-स्वयं सिद्ध मु.
वै. शु. ६, गुरु	16 मई	३ ज्ये.	पुष्य	ल. ३, अभि. गुरुपुष्य
ज्ये. कृ. ३,सोम	27 मई	१४ ज्ये.	मूल	ल. ३, ५, अभि.
ज्ये. कृ.६, गुरु	30 मई	१७ ज्ये.	श्र/ध	ल. ३, ६, अभिजित
ज्ये. कृ.९, रवि	2 जून	२० ज्ये.	उभा.	ल. ३, ६, अभिजित
आ. शु. २, बुध	10 जुला	२७ आषा	पुष्य	ल. ५, ६, बु. दा.
श्रा. कृ. ५, शनि	27 जुला	१२ श्राव.	उभा.	ल. ६, अभि. चं. दा.
श्रा. कृ.६, रवि	28 जुला	१३ श्राव.	रेवती	ल. ६ (प्रात: 10/16 तक)
श्रा. शु.४/५,रवि	11 अग.	२७ श्राव.	हस्त	ल. ५, अभि. रा. ल. १२
भा. कृ. ५, रवि	25 अग.	१० भादों	अश्वि	ल. ९, रा. ल. २ जागरण
भा. कृ. ९, गुरु	29 अग.	१४ भादों	रोह.	ल. ६, रा. ल. २, ३, (प्रतिष्ठा व जागरण हेतु)
भा. शु. २, शनि	7 सितं.	२३ भादों	हस्त	ल. ९, रा. ल. २, ३
आ. शु. १, शनि	5 अक्तू	२० आश्वि	चित्रा	रा. ल. ३, ४, जागरण
आ.शु.६/७,गुरु	10 अक्तू	२५ आश्वि	मूल	ल. ९, रा. ल. ३
आ.शु.८/९,शनि	12 अक्तू	२७ आश्वि	उषा.	ल.९, अभि.,रा.ल.२, जागरण
आ. शु. ९, रवि	13 अक्तू	२८ आश्वि	श्रव.	ल.९, अभि. चं.गु.दा. स्वयं सिद्ध मु. (विजयदशमी)
का. कृ. १,शनि	19 अक्तू	३ कार्ति.	अश्वि	ल. ९, रा. ल. ३ (जागरण)
का.शु.४/५, गुरु	7 नवं.	२२ कार्ति.	मूल	दि. ल. ९, १२, अभिजित
का. शु. ८, रवि	10 नवं.	२५ कार्ति	श्र/ध	ल. ९ (प्रात: 10/24 तक) रा. ल. ४, ६ (जागरण में)
मार्ग कृ. ३,बुध	20 नवं.	५ मार्ग	मृग	ल. ९, १२
मा. कृ. ९, बुध	27 नवं.	१२ मार्ग	उफा.	ल. ९, लग्न धनु
मा. कृ.१२,शनि	30 नवं.	१५ मार्ग	चित्रा	ल. ९, अभि. (जागरण)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
—सन् 2014 ई. में—				
माघ कृ. ६,बुध	22 जन.	९ माघ	हस्त	ल. ११ (कुंभे चं. सू. दान)
मा. कृ.१०, रवि	26 जन.	१३ माघ	अनु.	दि. ल. ११, अभि., जागरण
मा. कृ.१२, मंग	28 जन.	१५ माघ	मूल	ल. ११ (चं. सू. दा.)
मा. शु. ५, मंग.	4 फर.	२२ माघ	रेव.	ल. ११, २, अभि., वसंत ५
मा. शु. ९, शनि	8 फर.	२६ माघ	रोह.	ल. ११ (सू. दा.), २
फा.कृ.७/८,शनि	22 फर.	११ फागु.	अनु.	दि. ल. २, रा. ल. ९, जागरण
फा. कृ. ९/१०,सोम	24 फर.	१३ फागु.	मूल	प्रात: 9/21 बाद, अभि.
फा.शु.२/३,सोम	3 मार्च	२० फागु.	उ/रेव	ल. २, ४, अभिजित

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०७०

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिंङ्ग स्थापन हेतु मुख्य मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषत: शुभ एवं ग्राह्य होंगे।

—पं. पन्ना लाल ज्यो.

शिव प्रतिमा प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्तों में '**शिववास चक्र**' का भी प्रयोग करें तो विशेष शुभ होगा।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वै. कृ. ५, सोम	29 अप्रै.	१७ वैशा.	मूल	ल. ३, ५, अभिजित
वै. कृ. ८, गुरू	2 मई	२० वैशा.	श्रव.	ल. २, ४, अभिजित
वै. शु. ३, सोम	13 मई	३१ वैशा.	मृग	ल. २, अभि., स्वयं सिद्ध मु.
वै. शु. ८, शनि	18 मई	५ ज्ये.	मघा	ल. ३, ४, अभिजित
वै. शु. १२, बुध	22 मई	९ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, ४,
ज्ये.कृ.१/२,रवि	26 मई	१३ ज्ये.	ज्ये.	ल. ३, ५, अभि., चं. दा.
ज्ये. कृ. ३,सोम	27 मई	१४ ज्ये.	मूल	ल. ३, ५, अभिजित
आ.कृ.१४, रवि	7 जुला	२४ आषा	आर्द्रा	ल. ४ (चं. दा.), ५, ६
आ. शु. ५, शनि	13 जुला	३० आषा	पूफा	ल. ४, ६ (चं. दा.)
आ. शु.१३,रवि	21 जुला	६ श्राव	मूल	ल. ५, ६, अभिजित
श्रा. कृ.६, रवि	28 जुला	१३ श्राव	रेवती	ल. ६ (10/16 तक), अभि.
श्रा.कृ. ७, सोम	29 जुला	१४ श्राव	अश्वि	ल. ५, अभिजित
श्रा. कृ.१३,रवि	4 अग.	२० श्राव.	आर्द्रा	ल. ५, ६, अभिजित
श्रा. शु. ५/६,सोम	12 अग.	२८ श्राव.	चित्रा	ल. ५ (सू. बु. दा.), अभि.
भा.कृ. १२,सोम	2 सितं.	१८ भाद्र.	पुष्य	ल. ६ (बु. शु. दा.), अभि.
अश्वि शु.६, गुरु	10 अक्तू	२५ आश्वि	मूल	ल. ९, अभि., मं. दा.
अश्वि शु.९, रवि	13 अक्तू	२८ आश्वि	श्रवण	ल. ९, अभि., स्वयं सिद्ध
मा. कृ. १२/१३, शनि	4 दिसं.	१९ मार्ग	मूल	अभिजित, आवश्यके
—सन् 2014 ई. में—				
मा. कृ.१०, रवि	26 जन.	१३ माघ	अनु.	ल.११, अभि. (दु. 12/30 तक)
मा. कृ.११,सोम	27 जन.	१४ माघ	ज्ये.	ल. ११ (मं. दा.), अभि.
मा. कृ.१२, मंग	28 जन.	१५ माघ	मूल	ल. ११ (मं. दा.), अभिजित

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
मा. शु. २, शनि	1 फर.	१९ माघ	धनि	ल. ११, अभिजित
मा. शु.११,सोम	10 फर	२८ माघ	मृग	ल. ११, अभिजित
फा.कृ.२/३,सोम	17 फर.	६ फागु.	उफा	ल. २, ३, अभिजित
फा.कृ.७/८,शनि	22 फर.	११ फागु	अनु.	२ (दुपै. 11/04 बाद), अभि.
फा. कृ. १३/१४, गुरू	27 फर.	१६ फागु.	श्रव.	श्रीमहाशिवरात्रि
फा. शु. २,सोम	3 मार्च	२० फागु.	अश्वि	ल. २, अभिजित

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त—२०७०

पीछे लिखे सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त आगे लिखे **श्री गणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त भी विशेतया ग्राह्य होंगे।**

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वै. कृ. ४, सोम	29 अप्रै.	१७ वैशा.	मूल	ल. ३, ५, अभिजित
वै. शु. ४, मंग	14 मई	१ ज्ये.	आर्द्रा	ल. ४, ५, अभि. आवश्यके
ज्ये.कृ. ४, मंग	28 मई	१५ ज्ये.	पू.षा.	ल. ३ (चं. दा.), अभि.
आ. कृ. ४, बुध	26 जून	१३ आषा	श्रव.	ल. ४ (चं. दा.)
श्रा. कृ.४, शुक्र	26 जुला	११ श्राव.	पू.भा.	ल. ५ (चं. दा.) अभिजित
भा. कृ. ४, श.	24 अग.	९ भादों	उभा.	ल. ६ (चं. दा.), अभिजित
भा. शु. ४, चंद्र	9 सितं.	२५ भादों	चित्रा	सायं 4 बजे के बाद, भद्रोत्तरे
का.कृ.३/४, मंग	22 अक्तू	६ कार्ति	रोहि.	अभिजित
मा. कृ. ४, गुरु	21 नवं.	६ मार्ग.	आर्द्रा	ल. ९ (चं. गु. दा.), अभि.
पौष कृ.४, शनि	21 दिसं.	७ पौष	अश्ले	मु. प्रात: 10/00 के बाद
—सन् 2014 ई. में—				
मा. कृ. ४, चंद्र	20 जन.	७ माघ	पूफा	ल. ११ (चं. दा.), अभि.
फा. कृ. ४, मंग.	18 फर.	फागु.	उफा	अभिजित्
फा.कृ.१३/१४,गुरू	27 फर.	१६ फागु	श्रव.	रा. ल. ९-१० (चं. गु. दा.)

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा, रेवती।

शुभ लग्न—(इ) १, ४, ७, १०।

विशेष—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो।

संसद् में शपथ ग्रह के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

वाहन आदि क्रय करने के मुहूर्त-सन् 2013 ई.

नीचे लिखे मुहूर्त कार, स्कूटर, साईकिल, ट्रकादि वाहन का क्रय करने तथा कम्पयूटर, फ्रिज, आभूषण, टैलीविजन, नवीन बर्तन, वस्त्र, भूमि-जायदाद आदि का क्रय करने के लिए भी समान रूप से उपयोगी होंगे। जिनकी कुण्डली में शनि नीचादि अशुभ अवस्था में हो, उन्हें शनिवार को क्रय करने से परहेज करना चाहिए। बुधवार को बुध अस्त हो, तो बुधवार को क्रय न करें। अपनी राशि से चतुर्थ, अष्टम व 12वें स्थित चन्द्र राशि का भी विचार रखें। कोई भी बहुमूल्य वस्तु खरीद करने के बाद अपने अभीष्ट देवी/देवता को मिष्ठान्न का भोग लगाकर भेंट चढ़ाकर प्रसाद बांटे। पण्डित जी से मंगल मन्त्र पढ़वाकर, उनका आशीर्वाद भी ग्रहण करें।

—निवेदक पं. पन्ना लाल ज्यो.

तारीख	वार	नक्षत्र	लग्न मुहूर्त
2 मई	गुरु	श्रवण	ल. वृष, कर्क, अभि.
6 मई	सोम	उ.भा.	प्रात: 10/45 बाद, अभि.
11 मई	शनि	रोह.	प्रात: 10/58 बाद,
13 मई	सोम	मृग	अभिजित, अक्षय ३
16 मई	गुरु	पुष्य	ल. ३, अभि., बु. दा.
20 मई	सोम	उ.फा.	ल. ३, ६, अभि. बु. दा.
29 मई	बुध	श्रव.	ल. ३, ६, बु. दा.
22 जुला	सोम	उषा	ल. ६, अभिजित
24 जुला	बुध	धनि	ल. ६,
27 जुला	शनि	उभा	ल. ६, अभिजित्
29 जुला	सोम	अश्वि	अभिजित
2 अग.	शुक्र	मृग	ल. ६, अभिजित्
3 अग.	शनि	मृग	ल. ६, अभिजित्
12 अग.	सोम	चित्रा	अभिजित
19 अग.	सोम	उ.षा.	ल. ६, अभिजित्
23 अग.	शुक्र	उ.भा.	ल. ६, अभिजित्
28 अग.	बुध	रोह.	दुपै. 12/42 बाद, बु. दा.
30 अग.	शुक्र	मृग	ल. ६, अभिजित्
2 सितं.	सोम	पुष्य	ल. ६, अभि., बु. दान
6 सितं	शुक्र	उ.फा.	ल. ६, ९, अभिजित
7 सितं	शनि	हस्त	ल. ९, अभिजित

तारीख	वार	नक्षत्र	लग्न मुहूर्त
5 अक्टू	शनि	हस्त	ल. ९, अभिजित्
12 अक्टू	शनि	उ.षा.	ल. ९, अभिजित्
18 अक्टू	शुक्र	रेव.	ल. ६, अभिजित्
19 अक्टू	शनि	अश्वि	ल. ९, अभिजित्
18 नवं.	सोम	रोहि.	ल. १२, अभिजित्
20 नवं.	बुध	मृग.	ल. धनु (चं.दा.)
22 नवं.	शुक्र	पुन.	ल. धनु (चं.दा.), अभि.
23 नवं.	शनि	पुष्य	ल. अभि., शनिदान
28 नवं.	गुरु	हस्त	ल. ९, अभिजित
29 नवं.	शुक्र	चित्रा	ल. ९, अभिजित
30 नवं.	शनि	चित्रा	ल. ९, अभिजित
7 दिसं.	शनि	श्रवण	ल. ९, अभिजित
13 दिसं.	शुक्र	अश्वि	ल. ९, अभिजित

स्वयं सिद्ध मुहूर्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, दीपावली-तिथियां स्वयं सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितिवश गृहारम्भादि मुहूर्तों में कोई मुहूर्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

गृहारम्भ के मुहूर्त शोधन में

—वृष वास्तु-चक्र विचार—

बैल के अंग	शिर	अगले पाद (पांव)	पृष्ठपाद (पिछले पांव)	पृष्ठ (पीठ)	दक्ष कुक्षि (दाईं कोख)	पुच्छ (पूँछ)	वाम कुक्षि (बाईं कोख)	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि-भय	शून्य (०)	स्थिरता शान्तिप्रद	श्रीलक्ष्मी प्राप्ति	लाभ-प्रद	स्वामी कष्टकारी	दारिद्र्य	सदा पीड़ा व कष्ट

गत पृष्ठों में दिए गए गृहारम्भ के मुहूर्तों में से मास शुद्धि, ग्रह-बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त का दिन बदल लेना चाहिए।

उदाहरण—जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि-कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

निष्कर्षतः—गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

नामकरण संस्कार मुहूर्त २०७०

(अन्न प्राशन मुहूर्त में भी ग्राह्य)

अपनी कुल परम्परा अनुसार सूतक समाप्ति के पश्चात् जन्मदिन से १०, ११, १२, १३, १६, १९ या २२वें या ४१वें तथा **विपणि** में दिए गए शुभ मुहूर्तों में नामकरण संस्कार करना चाहिए। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में उसकी प्रसिद्ध नाम राशि का विशेष महत्त्व होता है। व्यापार, व्यवहार, सर्विस, संकल्पपूर्वक दान दीक्षा-मंत्र-सिद्धि आदि कार्यों में नाम की ही प्रधानता रहती है। नामकरण संस्कार अपने कुल के वृद्ध व्यक्ति, महात्मा, गुरु, पण्डित, ज्योतिषी, पिता या कुल पुरोहित जी से परामर्श के अनुसार अथवा जन्म-नक्षत्र के चरणाक्षर से प्रारम्भ होने वाले अक्षर से युक्त किसी महान् पुरुष, कुलदेवता, ईश्वर या देववाचक, मंगल/कल्याणार्थक तथा कानों को मधुर लगने वाले अक्षर वाला नाम रखना चाहिए। यदि जन्म नक्षत्र/राशि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो लग्न, लग्नेश या भाग्येश ग्रह से सम्बन्धित राशि वाले अक्षर से प्रारम्भ होने वाला नाम रखना चाहिए। उस दिन किसी ब्राह्मण द्वारा स्वास्ती वाचन, पंचदेव एवं नवग्रह पूजनादि करवा कर ब्राह्मण का भोजन, वस्त्र, फल दक्षिणा आदि द्वारा सत्कार करना चाहिए।

श्री मदभागवत, हरिवंशपुराण, रामायणादि ...

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना में उपयोगी

—शिववास चक्र—

श्री मद्भागवत, हरिवंशपुराण, रामायणादि प्रारम्भ मुहूर्त्त-सम्वत् २०७० वि.

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्री मद्भागवत्, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्त्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष **श्रेष्ठतर** माना गया है। श्री शिवपुराण पाठारम्भ में श्रावण, माघ व फागुन मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्रीदेवीभागवत् वाचन हेतु श्री दुर्गा प्रतिष्ठा में लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशाख			
वैशा. कृ. ८, गुरू	2 मई	श्रवण	ल. २, ४, अभिजित्
वै. कृ.१२, सोम	6 मई	उ.भा.	ल. २, ४, अभिजित्
वैशा. शु. २, रवि	12 मई	रोह.	ल. २, ३, अभिजित
ज्येष्ठ			
वैशा. शु. ५, बुध	15 मई	पुर्न	ल. ४, ५
वैशा. शु. ६, गुरू	16 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित्
वैशा. शु.१०, सोम	20 मई	उ.फा.	ल. ३, अभिजित
वैशा. शु. १२, बुध	22 मई	चित्रा	ल. ३, ६, (मिथुन कन्या)
ज्ये. कृ. ५, बुध	29 मई	श्रव	ल. ३, ६
ज्ये. कृ. १०, रवि	2 जून	उ.भा.	ल. ३, ६
आषाढ़			
आषा शु. २, बुध	10 जुला	पुष्य	ल. ५, ६
आषा. शु. ६, रवि	14 जुला	उ.फा.	ल ५, अभिजित्
श्रावण			
आ. शु. १५, सोम	22 जुला	उ.षा.	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. कृ. २, बुध	24 जुला	धनि.	ल. ६,
श्राव. कृ. ६, रवि	28 जुला	रेव	ल. ६ (प्रातः 10/16 तक) अभिजित
श्रा. कृ. ७, सोम	29 जुला	अश्वि	ल. ५, अभिजित्
श्रा. कृ. ११, शुक्र	2 अग.	रोह/मृ	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. शु. ५, रवि	11 अग.	हस्त	ल. ५, अभिजित्
श्रा. शु. ५/६, सोम	12 अग.	चित्रा	ल. ५, अभिजित्
भाद्रपद			
श्रा. शु. १३, सोम	19 अग.	उ.षा.	ल. ६, अभिजित्

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
श्रा. शु. १५, बुध	21 अग.	धनि.	ल. ६,
भाद्र. कृ. ५, रवि	25 अग.	अश्वि	ल. ९, अभिजित्
भाद्र. कृ. ८, बुध	28 अग.	रोह.	दुपै. 12/42 के बाद
भाद्र. शु. १, शुक्र	6 सितं	उफा	ल. ६, ९, अभिजित्
भाद्र. शु. ३, रवि	8 सितं	हस्त	मु. प्रातः 8/31 तक
आश्विन			
अश्वि शु. १, शनि	5 अक्तू	हस्त	ल. ९, अभिजित्
अश्वि २, रवि	6 अक्तू	चित्रा	ल. ९, अभिजित्
कार्तिक			
अश्वि. पूर्णिमा शुक्र	18 अक्तू	स्वा.	ल. ९ अभि.
कार्ति. कृ. ५, गुरु	24 अक्तू	मृग.	मु. 10/33 तक
कार्ति कृ. ८, रवि	27 अक्तू	पुष्य	अभिजित
कार्ति कृ.११, बुध	30 अक्तू	पू.फा.	ल. ९,
कार्ति कृ. १२, गुरु	31 अक्तू	उ.फा.	ल. ९, अभिजित्
कार्ति शु. ६, शुक्र	8 नवं.	पू.षा.	ल. ९, अभिजित्
का. शु. ८, रवि	10 नवं.	श्रवण	ल. ९, अभिजित्
मार्गशीर्ष			
मार्ग कृ. १, सोम	18 नवं.	रोह.	मु. दुपै. 13/32 बाद
मार्ग. कृ. ३ बुध	20 नवं.	मृग.	ल. ९
मार्ग. कृ. ५, शुक्र	22 नवं.	पुर्न.	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ. १०, गुरू	28 नवं.	उफा.	ल. ९, अभि.
मा. कृ. ११, शुक्र	29 नवं.	ह/चित्रा	ल. ९, अभि.
मा. शु. ३, गुरू	5 दिसं	पूषा	ल. ९, अभि.
मार्ग. शु. ६, रवि	8 दिसं	धनि.	ल. ९, १० अभि.
मार्ग. शु. ७, सोम	9 दिसं	शत	ल. ९, १०, अभि.
मा. शु. ११, शुक्र	13 दिसं	अश्वि	ल. ९, १०, अभिजित्

—शिववास चक्र—

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्रविहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है–उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना। उदाहरण–मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

शिववास चक्र

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ-लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(शून्य)	श्मशान	नेष्ट फल

प्रदोष व्रतम् माहात्म्य

यह व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनि प्रदोष व्रत** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम प्रदोष** ऋणमोचन के लिए, मनः शान्ति एवं सुरक्षा के लिए **सोम प्रदोष व्रत** तथा आरोग्य प्राप्ति एवं आयु वृद्धि के लिए **अर्क (रवि)** प्रदोष व्रत विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करके शिव पूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् **''भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रूद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने उग्रयोग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः॥''** से प्रार्थना करके भोजन करें॥

दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त–संवत् २०७० वि. (2013–14 ई.)

नीचे वि. संवत् २०७० में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका प्रत्यक्षत: कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। जहाँ पर क्रूर-ग्रह की युति का परिहार मिल गया है अथवा भौम-शुक्रादि ग्रह की युति आदि का परिहार हो गया है, उन मुहूर्तों में शामिल कर लिया गया है। निवेदक–पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, गणितकर्त्ता

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
*10 फर. से 22 अप्रै. 2013 ई० तक शुक्रास्त			
***23 अप्रै. से 25 अप्रै. शुक्र बाल्यत्व दोष**			
***25 अप्रै. से 27 अप्रै. ग्रहणशूल**			
*28 अप्रै.	रवि	अनु	केतु का वेध
30 अप्रै.	मंग.	मूल	नक्षत्रान्त, लग्नाभाव
5 मई	रवि	उ.भा.	**वैधृति दोष**
6 मई	चंद्र	रेवती	कृष्ण त्र्योदशी
13 मई	चंद्र	मृ.आर्द्रा	मासान्त दोष (रात्रि 22/20 से)
17 मई	शुक्र	मघा	लग्नाभाव
21 मई	मंग.	उ.फा.	नक्षत्रान्त, लग्नाभाव
21 मई	मंग.	चित्रा	लग्नाभाव
22/23मई	बु/गु	स्वा.	ग्रहण शूल
24 मई	शुक्र	अनु.	केतु का वेध
25 मई	शनि	अनु.	केतु का वेध
31 मई	शुक्र	धनि.	वैधृति दोष
2 जून	रवि	उ.भा.	रात्रि 12/05 के बाद भद्रा दोष व्याप्ति, भद्रा भू-लोके
*3 जून से 5 जून तक गुरु वार्धक्य दोष			
*6 जून से 1 जुलाई तक गुरू अस्त पश्चिमे			
*3 जुला. से 5 जुला. गुरू बाल्यत्व दोष			
15 जुला.	चंद्र	हस्त	मासान्त
17 जुला.	बुध	स्वा.	राहु युति एवं मृत्युबाण
18 जुला.	गुरू	अनु.	केतु का वेध
19 जुला.	शुक्र	अनु.	केतु का वेध
23 जुला.	मंग.	उ.षा.	नक्षत्रान्त, लग्नाभाव
23 जुला.	मंग.	धनि.	लग्नाभाव
31 जुला.	बुध	रोह.	क्रान्तिसाम्य दोष लग्नाभाव
10 अग.	शनि	हस्त	लग्नाभाव
11 अग.	रवि	चित्रा	लग्नऽभाव
12 अग.	चंद्र	स्वा.	शनि–राहु युति, लग्नाभाव
13 अग.	मंग.	स्वा.	शनि–राहु युति एवं क्रान्तिसाम्य

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
14 अग.	बुध	अनु.	केतु का वेध
16 अग.	शुक्र	मूल	संक्रान्ति
17 अग.	शनि	मूल	मंगल का वेध
19 अग.	चंद्र	श्रवण	सूर्य का वेध
20 अग.	मंग.	श्रवण	सूर्य का वेध
24 अग.	शनि	उ.भा.	लग्नाभाव, भुजंगपात
25 अग.	रवि	रेवती	लग्नाभाव
26 अग.	सोम	अश्वि	लग्नाभाव
4 सितं.	बुध	मघा	भा. कृष्ण चतुर्दशी
7 सितं.	शनि	उ.फा.	लग्नाभाव
8 सितं.	रवि	हस्त	लग्नाभाव
9 सितं.	सोम	स्वा.	शनि, राहु की युति, अपरिहार्य
10 सितं.	मंग.	स्वा.	शनि–राहु युति, अपरिहार्य
10 सितं.	मंग.	स्वा.	शनि–राहु युति, अपरिहार्य
11 सितं.	बुध	अनु.	केतु का वेध
12 सितं.	गुरू	अनु.	केतु का वेध
12 सितं.	गुरू	मूल	लग्नाभाव
14 सितं.	शनि	उषा.	मृत्युबाण दोष
15 सितं.	रवि	उषा/श्र	मृत्युबाण + मासान्त
16 सितं.	सोम	श्रव.	संक्रान्ति
17 सितं.	मंग.	धनि.	मंगल का वेध
19 सितं. से 4 अक्तू. तक श्राद्ध रहेंगे।			
6 अक्तू.	रवि	चित्रा	मृत्युबाण व वैधृति
7 अक्तू.	सोम	स्वा.	अपरिहार्य श. रा. युति
8 अक्तू.	मंग.	अनु.	केतु का वेध
9 अक्तू.	बुध	अनु.	केतु का वेध
11 अक्तू.	शुक्र	मूल	लग्नाभाव
12 अक्तू.	शनि	श्रव.	मंगल का वेध
13 अक्तू.	रवि	श्रव.	मंगल का वेध
13 अक्तू.	रवि	धनि.	लग्नाभाव
14 अक्तू.	सोम	धनि	भुजंगपात, भद्रादोष

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
16 अक्तू.	बुध	उ.भा.	मासान्त
17 अक्तू.	गुरु	उ.भा.	संक्रान्ति
18 अक्तू.	शुक्र	रेव	मृत्युबाण दोष (दुपै. 12/10 से रात्रि 24/29 तक)
18 अक्तू.	शुक्र	अश्वि	लग्नाभाव
23 अक्तू.	बुध	रोह.	लग्नाभाव
24 अक्तू.	गुरू	मृग	लग्नाभाव
31 अक्तू.	गुरू	हस्त	का. कृष्ण त्र्योदशी
8 नवं.	शुक्र	उषा.	भुजंगपात
11 नवं.	सोम	धनि.	लग्नाभाव
14 नवं.	गुरू	उभा.	लग्नाभाव
15 नवं.	शुक्र	रेव.	मासान्त
16 नवं.	शनि	अश्वि	मार्ग. संक्रान्ति
24 नवं.	रवि	अश्वि	मार्ग. संक्रान्ति
26 नवं.	मंग.	मघा	लग्नाभाव
30 नवं.	शनि	स्वा.	राहु–युति अपरिहार्य
1 दिसं.	रवि	स्वा.	राहु की युति–अपरि.
3 दिसं.	मंग.	मूल	लग्नाभाव
11 दिसं.	बुध	उभा.	**व्यतीपात दोष**
11 दिसं.	बुध	रेव	मंगल का वेध
12 दिसं.	गुरू	रेव	मंगल का वेध
15 दिसं.	रवि	रोह.	पौष संक्रान्ति
(सन् 2014 ई०)			
18 जन.	शनि	मघा	लग्नाभाव
19 जन.	रवि	मघा	भद्रा–दोष
23 जन.	गुरू	स्वा.	राहु–युति
24 जन.	शुक्र	स्वा.	शूल योग, मृत्युबाण
31 जन.	शुक्र	श्रवण	अपरिहार्य सूर्य युति, व्यति
2 फर.	रवि	उभा.	भद्रा दोष व्याप्त
9 फर.	रवि	रोह.	वैधृति दोष,
9 फर.	रवि	मृग	वैधृति दोष
16 फर.	रवि	उफा	लग्नाभाव
18 फर.	मंग.	उफा	लग्नाभाव

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
19 फर.	बुध	हस्त	भुजंगपात, लग्न अभाव
20 फर.	गुरू	चित्रा	भौम युति, क्रांतिसाम्य
20 फर.	गुरु	स्वा.	सूर्य का वेध
21 फर.	शुक्र	स्वा.	सूर्य का वेध
23 फर.	रवि	अनु.	मृत्युबाण
25 फर.	मंग.	मूल	लग्नाभाव
26 फर.	बुध	श्रव.	कृष्णत्रोदशी
27 फर.	गुरु	श्रव.	फा. कृ. त्र्योदशी
4 मार्च	मंग.	रेव.	मृत्युबाण दोष

8 मार्च से 16 मार्च तक होलाष्टक

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्राय: सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है–**दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्ते हि अभिजित् प्रभु:। चक्रमादाय गोविन्द: सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। 'नारद पुराण' के अनुसार अभिजित् के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को अभिजित् काल कहा जाता है।

उदाहरण–मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घं. मिं.) होगा।

...शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

...अष्टमस्थ लग्न–वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। **तिथि** को शरीर, **चन्द्रमा** को मन, **योग-नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा **लग्न** को आत्मा माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु–माद्याः —ज्योतिर्निबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम-संहितानुसार, लग्न स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

''त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे–चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥''

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न–मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें **मंगल**, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं–

लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न–वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवीं राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्–

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी** ग्रह **समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी**, केन्द्र स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष–लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि दोष होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार–कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार–मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार–नीच राशि, शत्रु राशि या नीच-राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे–बृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो, अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है–

''अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः॥'' (पियूषधारा)

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तंड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद–नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे–

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त्त चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र-गुरु–सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **''चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।''**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र-त्रिकोण में **गुरु**, **शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार–पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने पर

विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। **–ज्योर्तिनिबन्ध**

युतिदोष परिहार–पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है।

यथा–

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) दग्धा तिथि परिहार–विवाह लग्न समय केन्द्र-त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।**–मु० गणपति**

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त्त लगाए गए हैं।

कश्यपर्वि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है .

काव्यो गुरू र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

––तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता-(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

चतुर्कोणों में दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, वायव्य (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा **''एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च।**
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत योगिनी पूर्वम॥।''–(पीयूषधारा)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.– इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष– ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

भद्रा का शुभाशुभ एवं परिहार समीक्षा –पं. पन्ना लाल ज्यो. पंचांगकर्त्ता

भद्रा का शुभाशुभ एवं परिहार समीक्षा

—पं. पन्ना लाल ज्यो. पंचांगकर्त्ता

तिथि के अर्द्ध. भाग. अर्थात्-विष्टि नामक करण को ही भद्रा कहते हैं। एक पक्ष में प्राय: चार बार भद्रा की आवृत्ति होती है। **शुक्ल पक्ष** में अष्टमी (८) व पूर्णिमा (१५) तिथियों के **पूर्वार्द्ध** में तथा चतुर्थी (४) एवं एकादशी (११) तिथि. के **उत्तरार्द्ध** में भद्रा होती है। जबकि **कृष्ण पक्ष** की तृतीया (३) व दशमी (१०) तिथि के **उत्तरार्द्ध** में तथा कृष्ण. की सप्तमी एवं चतुर्दशी के पूर्वार्ध में **भद्रा** की व्याप्ति रहती है। (मु. चि.)

मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि लगभग सभी मुहूर्त्त ग्रन्थों में भद्राकाल में मुण्डन, गृहारम्भ, विवाह, गृह-प्रवेश, रक्षाबन्धन, शुभ यात्रा, नया व्यवसाय एवं मंगल. कार्यों को आरम्भ करना अशुभ माना गया है।

भद्रा में अग्नि, युद्ध, कैद करना, विषादि, विवाद, **क्रूर** कर्म करना, शस्त्र-प्रयोग, आप्रेशन करना, शत्रु का उच्चाटन, भैंस, ऊँट, घोड़े आदि पशु सम्बन्धी कार्य, मुकद्दमा करना, दुष्ट शत्रु दमन आदि कृत्य करने उचित (ठीक) माने जाते हैं।

सामान्य परिस्थितियों में तो विवाह, मुण्डन, नामकरण, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का यथासम्भव त्याग ही करना चाहिए। परन्तु मुहूर्त चिन्तामणि, मुहूर्त्त-मार्तण्ड, मु. परिजात..........आदि ग्रंथों में ही कुछ स्थितियों में भद्रा दोष के परिहार सम्बन्धी विभिन्न शास्त्र वाक्य भी मिलते हैं। निम्नलिखित कुछ प्रमुख परिहारों का वर्णन दिया जाता है।

मुहूर्त्त एवं संहिता ग्रंथों में उपलब्ध परिहार वाक्य

(1) भद्रा वास मतानुसार परिहार—मु. चिन्तामणि अनुसार जब चन्द्रमा **कर्क, सिंह, कुम्भ एवं मीन** राशियों में रहता है, इस समय **भद्रा का वास पृथिवी** पर होता है। जब चन्द्रमा **मेष, वृष, मिथुन** और **वृश्चिक** राशियों पर हो, तो भद्रा स्वर्ग लोक में रहती है। तथा कन्या, धनु, तुला और **मकर** राशियों में चन्द्रमा के रहने पर भद्रा पाताल लोक में रहती है। भद्रा जिस समय जहां रहती है, वहाँ ही (उसी लोक में) अपना फल देती है।''

इस प्रकार चन्द्रमा जब कर्क (४), सिंह (५), कुम्भ (११), एवं मीन (१२) राशि. में संचार करेगा। उस समयावधि में भद्रा पृथिवी लोक में रहने से दोषकारक मानी जाएगी। जबकि **स्वर्गलोक** तथा **पाताल** लोक में रहने वाली भद्रा अशुभ नहीं होगी, अपितु शुभ फलप्रदायिनी कही जाएगी।

स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम्।
मृत्युलोक स्थिता भद्रा सर्व कार्य विनाशनी॥ (पीयूषधारा)

एक अन्य मुहूर्त्त ग्रंथानुसार भी यही स्पष्ट है—

स्थिताभूर्लोख्या भद्रा सदात्याज्या स्वर्ग पातालगा शुभा (मुहूर्त्त मार्त्तण्ड)

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हैं कि मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु एवं मकर राशि के चन्द्रमा कालीन पड़ने वाली भद्रा (अर्थात्-स्वर्ग एवं पाताल वासी) भद्रा शुभ एवं मंगल कार्यों हेतु ग्राह्य रहेंगी।।

भद्रा लोकवास के बारे में मतान्तर

लल्लाचार्य प्रभृति कुछ आचार्यों ने वृश्चिक राशिगत भद्रा को **पृथिवी पर** तथा **कर्क राशिस्थ** भद्रा का वास **स्वर्ग** में माना है। **कन्या, तुला, धनु व मकर राशिस्थ भद्रा** का वास पाताल में ही रखा है, शेष सभी राशियों का वास **यथावत् मुहूर्त्त चिन्तामणि** अनुसार ही रखा गया है,

परन्तु अधिकांश प्रामाणिक मुहूर्त्त ग्रंथ एवं संहिता ग्रंथ तथा पंचाँगकारों ने **वृश्चिक-राशि की भद्रा** को **स्वर्ग लोक** में तथा **कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशियों की भद्रा को भूलोक** (पृथ्वी) के अन्तर्गत ही ग्रहण करते हैं। जैसे—मुहूर्त्त चिन्तामणि, मुहूर्त्त गणपति, मु. चिन्तामणि पीयूषधारा, मुहूर्त्त मार्त्तण्ड, मुहूर्त्त-परिजात, बृहज्योतिषसार, बृहद्अबकहडाचक्रम्-इत्यादि।

भारत के **अधिकांश पंचाँगकार** इन्हीं मुहूर्त्त ग्रंथों में वर्णित भद्रावास का अनुसरण कर रहे हैं।

भद्रा लोक वास चक्रम्

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू-लोक
चन्द्राशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा-मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

मर्त्यलोक (भूलोक) पर भद्रा सदा सम्मुख होने से सर्वदा त्याज्य मानी जाती है।

भद्रा सम्बन्धी कुछ अन्य प्रमुख परिहार—

(2) यदि दिन की भद्रा रात्रि में और रात्रि की भद्रा दिन में आ जावे, तो भद्रा निर्दोष मानी जाती है अर्थात् भद्रा का दोष नहीं होता है। इस प्रकार की भद्रा कल्याण करने वाली होती है— **दिवा भद्रा रात्रौ, रात्रि भद्रा यदा दिवा ।**
न तत्र भद्रा दोषः स्यात् सा भद्रा भद्रदायिनी ॥ (ब्रह्मयामल)

'मु. चि. पीयूषधारा' टीका में भी इसी प्रकार के वचन मिलते हैं—

(ii) **रात्रि भद्रा यदाह्नि स्यात्दिवा भद्रा यदा निशि ।**
न तत्र भद्रा दोषः स्यात् सा भद्रा भद्रदायिनी ॥

अर्थात् रात की भद्रा जब दिन में हो, तथा दिन की भद्रा जब रात में आ जाये तो भद्रा

दोष नहीं होता है। ऐसी भद्रा कल्याण करने वाली होती है।

(3) प्रकारान्तर से **उत्तरार्द्ध** की भद्रा दिन में तथा **पूर्वार्द्ध** की भद्रा रात्रि में शुभ होगी।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिन भद्रा परार्धजा ।
भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति ।।

(4) भद्रा के मुख, एवं पुच्छ द्वारा परिहार–

आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा** तथा **भद्रा मुख-काल** को त्यागकर (अन्य विकल्प न होने पर) स्वर्ग एवं पातालगत भद्राकाल में तथा भद्रा पुच्छकाल में मंगल कार्य किए जा सकते हैं–

पृथिव्यां यानि कर्माणि शुभान्यपि अशुभानि वा ।
तानि सर्वाणि सिद्धयन्ति विष्टि पुच्छे न संशयः ।।

भद्रा मुख एवं पुच्छ जानने की विधि–

मु० चिन्तामणि अनुसार शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि के **(भद्रा के कुल मान के) पाँचवें प्रहर** की आदि की **पाँच (५)** घड़ियों में भद्रा मुख होता है। इसी प्रकार अष्टमी के दूसरे प्रहर के (कुल मान से) आदि की ५ घटियाँ, एकादशी के सातवें प्रहर की प्रथम ५ घड़ियाँ तथा **पूर्णिमा** के (भद्रा के कुलमान के) **चौथे प्रहर** के आदि की **५ घड़ियों** (षष्ठांश तुल्य) में **भद्रा मुख** होता है। इसी भान्ति कृष्ण पक्ष की तृतीया के आठवें प्रहर में आदि की ५ घड़िया **भद्रा मुख**, कृष्ण सप्तमी के तीसरे प्रहर में आदि की ५ घटी में भद्रा मुख होता है.........इसी प्रकार से कृष्ण पक्ष की शेष दोनों तिथियों (१०, १४) के प्रहरों के क्रमशः (६, १) प्रथम ५ घटी मुख जानें।

भद्रा पुच्छ–शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि के अष्टम प्रहर की अन्त्य की ३ घटी (दशमांश तुल्य) भद्रा की पुच्छ होती है। **पूर्णिमा** की तीसरे प्रहर की अंतिम 3 घड़ी में भद्रापुच्छ होती है। स्पष्टता के लिए **'पंचांगदिवाकर'** सं. २०६९ का अवलोकन करें।

कुछ विशेष कार्यों में भद्रा परिहार

'ज्योतिष विदाभरण' अनुसार हरितालिका (भाद्र. शुक्ल तृतीया) पूजनविधि में उत्सर्ग में, जातकर्म, विनिमय (किसी वस्तु के बदले में वस्तु लेने या देने) में, शिवपार्वती के पूजन में, श्रावणी कर्म में, होलिका, जलाशय के पूजन में, पाक क्रिया में, यज्ञकार्य में, यज्ञकार्यों के आरम्भ में, इष्टपूजन में तथा राजा (नेता) को कोई वस्तु प्रदान करने में भद्रा सदैव **शुभफल प्रदायिनी** होती है–

विष्टिः स्यात् हरितालिकार्चनविधावुत्सर्ग जातक्रिया वैमेयेषु शिवार्ययोः फलवती होमे सदैवार्चने।

सोपाकर्म्म हुताशनी जलधरार्चापाक यज्ञ क्रियास्वारब्धेऽध्वरकर्मणीष्टयजने भूपप्रदाने तथा।।

भद्रा में जो कार्य विहित (बताए गए हैं।), उन कार्यों को राजा तथा ब्राह्मणों की आज्ञा से करने अथवा कार्य से पूर्व शिव की आराधन करने से भद्रा मनुष्यों के कार्यों को सफल कराती है।

भद्रा विहित कार्याणां नृपभूदेवताज्ञया। नृणां सफल यत्यर्थं सा वा भर्गसपर्यया।।

(5) भविष्य पुराणोक्त भद्रा परिहार–

(क) भविष्य पुराणानुसार भद्रा की **पाँच घड़ी** मुख में, दो घड़ी **कण्ठ में, ११** हृदय में, चार घड़ी नाभि में, पाँच घड़ी कटि में और तीन घड़ी पुच्छ में स्थित रहती हैं। जब भद्रा मुख में रहती है, तब कार्य का नाश होता है, कण्ठ में धन का नाश, हृदय में प्राणों का भय, नाभि में कलह, कटि में अर्थहानि होती है, परन्तु पुच्छ में निश्चित रूप में विजय एवं कार्य सिद्धि हो जाती है–

मुखेतु घटिका : पंच द्वे कण्ठे तु सदा स्थिते। हृदि चैकादश प्रोक्ताः चतस्रो नाभिमण्डले।।
कटयां पंचैव विज्ञेयातिस्त्राः पुच्छे जयावहाः। मुखे कार्य विनाशाय ग्रीवायां धननाशिनी।।

(भविष्यपुराण तथा बृहद् ज्योतिष सार में भी ऐसा ही मिलता-जुलता प्रमाण है।)

(ख) भविष्य पुराण (अध्याय ११७) के अनुसार जो व्यक्ति सपत्नीक विधि अनुसार एवं श्रद्धापूर्वक एकभुक्त भद्रा व्रत रखता है तथा व्रतोपरान्त उद्यापन भी करता है, उसके किसी भी कार्य में विघ्न नहीं पड़ता। **भद्राव्रत** करने वाले व्यक्ति को प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा अनिष्ट ग्रह आदि कष्ट नहीं देते। उसका इष्ट से वियोग नहीं होता और अन्त में उसको सूर्य. लोक की प्राप्ति होती है।

भद्राव्रत की विधि एवं विस्तृत जानकारी के लिए **भविष्य पुराण का अवलोकन करें।**

(ग) भविष्य पुराण में ही भद्रा के बारहनाम का स्तोत्र भी कहा गया है। जो इस बारह नाम वाले स्तोत्र का प्रातःकाल में श्रद्धापूर्वक पाठ करता है, उसे व्याधि का भय ही होता, और उसके सभी ग्रह अनुकूल हो जाते हैं। उसके कार्यों में कोई विघ्न नहीं होते। युद्ध में तथा राजदरबार में विजय प्राप्त होती है।

धन्या दधिमुखी भद्रा महामारी खराननना। कालरात्रि महारुद्रा विष्टिश्च कुलपुत्रिका।
भैरवी च महाकाली असुराणां क्षयंकारी। द्वादशैव। तु नामानि प्रातरूत्थाय यः पठेत्।।
न च व्याधिर्भवेत् तस्य रोगी रोगात् प्रमुच्यते। ग्रहाः सर्वेऽनुकूलाः स्युर्न च विघ्नादि जायते।।
रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत्।। (उत्तरपूर्व, ११७ / २७-३०) भविष्यपुराणे

(6) बृहद् ज्योतिष अनुसार–

भद्रा, मंगलवार, व्यतिपात, वैधृति योग और प्रत्यरि तारा (अपने जन्म या नाम नक्षत्र से ५, १४, २३वाँ नक्षत्र) एवं (जन्म नक्षत्र एवं उससे १०वां या १९वां अशुभ नक्षत्र)–ये सब मध्याह्न के बाद शुभ हो जाते हैं–

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतिपातोऽथ वैधृति।
प्रत्यरि जन्म नक्षत्रं मध्यान्हात्परतः शुभम्।।

(7) घोड़ा, गदहे आदि के प्रसव (जन्म) में, श्रीदुर्गा पूजन में, अन्नादि तुला दान में, दाह एवं घात कार्यों में, शत्रुदमन, शास्त्रार्थ, मुकद्दमा, चोरी आदि में भद्रा शुभ होती है, अन्य कार्यों में भद्रा अशुभ होती है।

खराश्वा, प्रसवे दुर्गा पूजने दानकर्माणि।
दाहघातादि के भद्रा शस्ता नान्यत्र शोभनाः ।। (बृहद् ज्योतिषसार)

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। "आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥"

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये।
जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः। —वाराहमिहिर॥
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम्

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। मुनि भारद्वाज के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं (**मु. मार्तण्ड**)। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। (**नारद**), परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें (**वसिष्ठ**) तथा जिस वर को अपनी कन्या न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें (**वसिष्ठ**) तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे (**नारदः**)।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है (**वृन्द्धमनुः**)। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे (**शार्गंधर**) जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद यदि [illegible] माता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे–

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिष्ण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है–

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

विवाह में सम–विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। -अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है–

अब्देषु युग्मेषु च कन्याकानां स्वजन्म वर्षात् शुभदो विवाहः।
अयुग्म वर्षेषु शुभो नराणां विपर्यये दुःखगद प्रदःस्यात्॥ (ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

कन्या वरण मुहूर्त्त–

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

आवश्यक मुहूर्त्त विचार

नोट—सभी मुहूर्तों में अधिक मास, पितृ पक्ष, रिक्ता तिथि (४, ९, १४), वैधृति आदि दुष्ट योगों एवं गुरु/शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥ व पूर्णिमा	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में तथा चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत और रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. आषाढ़ तक) ५वें या ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा–तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल, १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (मास तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३(शुक्ल),१५ तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा–३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी आरम्भ करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव–रेव।
स्कूटर, कारादि गाड़ी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में। तथा द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में।	अश्वि, उत्तरा–३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा–३, पूर्वा–३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु. धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.)ष १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भाद्र., मार्ग., माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा (३), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (५,७,९,१५,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्टे।
नए घर में प्रवेश करना	१(कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, कार्ति., मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, वार- चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आषाढ़, श्रावण, भाद्र. आश्वि, मार्ग, माघ और फागु.।	अश्वि, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मूल, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१(कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. श. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रवण, धनि., रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूल, धनि., रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु, शनि	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूल, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८,१०,१३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा–३, ज्ये., मूल, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृ)२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३(शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ),२, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोर्टस Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकदमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त

मास–वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार–सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र–अशिव. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न–शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें प्रहाभाव।

विशेष–आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

–मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद–(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है–

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा–

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता–

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥–फलित संग्रह अन्येऽपि–

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष भंग होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिषुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, बृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

यथोक्तम्–

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ **–मु. पारिजात**

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

''द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते'' **–मु. चिंतामणि**

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता–

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ **–मुहूर्त्त दीपक**

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता–

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥ **–मुहूर्त्त दीपक**

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता–

''केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥'' **–मु. चिंतामणि**

अपरं च–

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता–

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ **–मु. चिंतामणि**

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

–मुहूर्त्त दीपक

विवेचन–उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (''लग्ने व्यये पाताले–'') के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे–विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा–

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ –मु. संग्रह दर्पण

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

शिव-मन्त्रावली

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। सभी लग्न कुण्डलियों में मंगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलियों में मंगल अथवा मंगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है, परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के सहचर्य से योगकारक हो, उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो, तो मंगल अशुभ की अपेक्षा **शुभ प्रभाव कारक** होगा। जैसे-मकर, मेष, बृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि के मंगल को शुभ माना जाता है तथा **कर्क** एवं **सिंह** लग्नों में मंगल **केन्द्र त्रिकोणपति** होने से मंगल अशुभ न होकर योगकारक माना जाएगा-

> **"सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहा शुभफलप्रदाः।**
> **इसी भान्ति स्वोच्चस्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णम्।**
> **नीचर्क्षगस्तु विपलं रिपु मन्दिरेऽल्पम्॥** (सारावली)
> **भाव सर्वे शुभपतियुता वीक्षितः वा शुभेशै-**
> **तत्तद्भावाः सकल फलदाः पापदृक्योगहीनाः॥"**

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मंगलीक पर ही अर्त्याधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी **अन्य तत्त्वों** का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जिनमें कुछ मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं-

(१) **चलित भाव कुण्डली**-जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली बनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में **मंगल** सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(२) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(३) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(४) इसके विपरीत सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप दृष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का **पूर्ण सुख नहीं होता**-

दुःस्थे कामपतौ तु पाप ग्रहगे पापेक्षिते-तद्युते। तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभं चान्यथा॥

(५) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलाबल का विचार करना भी नितान्त आवश्यक है।

(६) अष्टकूट नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमैत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (२७ या अधिक) गुण मिलते हों तो भी मंगलीक दोष अविचारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभत्व का सम्यक् विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को मेलापक सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे-सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वस्थ (शरीर) और आयु-इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, स्त्रीदूर, **कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में-विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :-

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** -ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग** ३६ होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार-४, ८, १२ राशियों का **ब्राह्मण**, १, ५, ९ का **क्षत्रिय**, २, ६, १० **वैश्य** तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। **वर का वर्ण** कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार-यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार-सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। समान वश्य होने पर २ गुण, एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार-कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार-अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे-गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[**नोट**-योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण-वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री-ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार-वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा-

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —बृहज्जयोतिः सार

अपवाद-वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा-

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार-अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण**, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण**, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूला, धनि. और शत. का **राक्षसगण**।

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम**, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन-वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा

नव पंचम परिहार-

(१) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्या	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गण दोष परिहार–

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। **—पीयूषधारा**

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। **—मुहूर्त्त मार्त्तण्ड**

(७) भकूट विचार—इसे **राशिकूट** भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा–१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि**, **राशीश-मैत्री**, **राशिवश्यैक्य**, अथवा **राशि स्वामी ग्रह समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा–

न वर्गवर्णो न गणो: न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ **—बृ. ज्योतिस्सार**

नव पंचक परिहार–

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है–

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

—बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर–ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ —शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार–

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पति प्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **—मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे–वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया– **मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।**
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ **—ज्योतिनिबन्ध**

(८) नाड़ी दोष विचार—अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है–आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की आदि (प्रथम) नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, मध्य नाड़ी हो, तो दोनों की हानि तथा अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। **—बृहज्योतिषसार**

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार–

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार–

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है–

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नित्तान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्यओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता–अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ **–मुहूर्त संग्रह दर्पण**

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा–

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है– दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है–

पराशरः प्राह नवांशभेदाद् एकनक्षत्र राशयोरपि सौमनस्यम्॥

*नोट–ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा **दूसरे एवं तीसरे पाद** में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) 'नरपतिजचर्या' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है।

आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन यादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्प दोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद-इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ **–ज्यो० चिन्तामणि**

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार–

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है–

अन्यत्र भी लिखा है–श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त–

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), नवपंचम में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा द्विद्वादश में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-देष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा–

हेमान्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषापनुत्तये॥ (मुहूर्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र → / कन्या नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८॥ 1236	२१॥ 1,2,3	२२॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३॥ 3,8	३१॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३॥ 14567
भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४॥ 1238	१८ 1358	२६॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१॥ 3	२३॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८॥ 8,9व	२६ 9,व	२१॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
कृति 1 चरण	२७॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६॥ 1236	२० 1356	२०॥ 1356	२१ 1356	२५॥ 3,6	२६॥ 3,6	२३॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६॥ 3,6	१७॥ 2,3,6	१७॥ 2,3,6	१८॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३॥ 3,9
रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२॥ 3468	१०॥ 3568	२४॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
मृग 1-2	२३॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९॥ 1,2,8	२४॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९॥ 456व	१५ 3458	२४॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१॥ 3,4	१९॥ 2,4,5	१२ 2358	१४॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८॥ 3,व	३१॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
आर्द्रा 1 से 4	१९॥ 3,5,8	२७॥ 3,5	२१॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२०॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९॥ 3,4व	२१॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७॥ 4,6
पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३॥ 3,5,6	२०॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७॥ 3,6
पुन. 4	२३ 1,3,8	२९॥ 1,3	२५॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९॥ 3,6	१६॥ 1246	२०॥ 1234	१५॥ 1238	१८ 1358	१९॥ 1358	२१ 1356
पुष्य 1 से 4	३०॥ 1,3	२१॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११॥ 12358	१८॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५॥ 1238	२३॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२॥ 14568
श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५॥ 1246	१८॥ 1236	२१॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६॥ 8,9,व	१७॥ 158व	९॥ 1568व	१७॥ 156व	२१॥ 146व	२२॥ 136व	२१ 1346व	१६॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६॥ 1236	२१॥ 123व
पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३॥ 145व	१५॥ 1458	२० 148व	२८॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२॥ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	१६॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७॥ 1268
उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१॥ 1,3,8	१७॥ 2,3,8	२५॥ 2,3	२० 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६॥ 128व	१३॥ 1236
उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४॥ 3,9	३१॥ 1,3	२३॥ 1,3,8	२४॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७॥ 8	२५ 3,4,6
हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८॥ 236व	२२॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
चित्रा 1,2	१३ 3567	४॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५॥ 1,3,6	२१॥ 356व	१२॥ 3568व	२७ 35,व	२२॥ 2,3,व	८॥ 2368व	१४॥ 2346व	२४॥ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मैलापक सारिणी – (भाग-२)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२ ॥ 3,4,6	१४ 3468	२८,॥ 3,4	२४ 3,7	२० ॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९ ॥ 3,6,9	२० ॥ 3,5,6	११ 3568	२६ ॥ 3,5,व	२५ ॥ 3,5,व	११ ॥ 3568	१७ ॥ 456व	१७ ॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,6
	स्वा. 1 से 4	२७ ॥ 3,4	२९ ॥ 3	१७ ॥ 3,6,8	१३ 3678	१५ ॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६ ॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५ ॥ 3,5व	२५ ॥ 3,5व	२६ 2,3	२७ ॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२ ॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२० ॥ 3,4,8	१५ ॥ 3478	१० ॥ 3678	१८ ॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१ ॥ 4,5,6	१८ ॥ 3,5,8	१७ ॥ 358,व	१९ ॥ 356व	१७ ॥ 2346	१७ ॥ 2346	११ 2346	२७ ॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४ ॥ 1478	१९ ॥ 1,4,8	१४ ॥ 1368	२२ ॥ 1,3,6	१२ ॥ 1567	१३ 1567	१३ ॥ 1567	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	१५ ॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३ ॥ 136व	२१ ॥ 146व	१७ ॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५ ॥ 1378	२० 1367	२४ ॥ 1,3,6	२७ ॥ 1,3,4	२० ॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२० ॥ 1,5,7	२६ ॥ 9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९ ॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११ ॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८ ॥ 1367	२५ 1,3,7	२९ ॥ 1,3	२२ ॥ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५ ॥ 135678	१० ॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४ ॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९ ॥ 1,5,7	१३ 1567	१३ ॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७ ॥ 4678	१७ ॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९ ॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८ ॥ 8,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 1457	११ 14578	१८ ॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	१३ 3478	१७ ॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७ ॥ 8,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३ ॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७ ॥ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	२३ ॥ 3,7,व	८ ॥ 678व	८ ॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२८ ॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,4,5	२८ ॥ 4,5	१४ ॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२ ॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४ ॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ ॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६ ॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६ ॥ 5678	१८ ॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४ ॥ 4,9व	१९ ॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११ ॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२० ॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९ ॥ 4,5,7	५ ॥ 5678	१२ ॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१० ॥ 4568	२६ 3,4,5	३० ॥ 3,4	२७ 4,6	१९ ॥ 4,6,8	१२ 4689	१९ 4,6,9	१८ ॥ 3469	१३ 4567	४ ॥ 45678	१९ ॥ 357व	२५ ॥ 3,5,व	११ 568व	१८ ॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२ ॥ 3	२५ ॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६ ॥ 3,5,व	२० ॥ 356व	१२ ॥ 568व	११ ॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१ ॥ 3,4	३१ ॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७ ॥ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	१३ ॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९ ॥ 5,6,व	२५ ॥ 4,5व	१६ ॥ 458व	१५ ॥ 4,7,8	१५ ॥ 3478	१७ ॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४ ॥ 1248	२२ 1234	१६ ॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८ ॥ 1458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३ ॥ 1347	१४ ॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८ ॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७ ॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७ ॥ 9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७ ॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४ ॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७ ॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४ ॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७ ॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३ ॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	११ ॥ 1456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मैलापक सारिणी – (भाग-३)

	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२ ॥ 1346	२६ ॥ 1,3,4	२२ ॥ 1346	१८ ॥ 3467	२५ ॥ 3,7	१४ ॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३ ॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२० ॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
मेष	भर 1 से 4	१३ ॥ 1368	२९ 1,3	२१ ॥ 1,3,6	१७ ॥ 3467	१७ ॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८ ॥ 8,9	२६ 4,9	२७ ॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९ ॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	२७ 2,3
मेष	कृति 1 चरण	२७ ॥ 1,3,4	१५ 1368	१९ ॥ 1348	१५ ॥ 3478	१९ ॥ 3,6,7	२५ ॥ 3,7	२५ 3,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 6,8,9	१३ ॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९ ॥ 1356	१७ ॥ 2346	१९ ॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४ ॥ 1378	२० ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,6	३० ॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१० ॥ 4689	२४ 3,4,9	२९ ॥ 1,3,4	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
वृष	रोह 1 से 4	१९ ॥ 1,6,7	१५ ॥ 1378	९ ॥ 1678	१५ 1368	२९ ॥ 3,4	२४ 3,6	१४ ॥ 3567	१९ ॥ 3,5,7	११ ॥ 4578	१६ 4,8,9	१७ ॥ 4,8,9	२० ॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
वृष	मृग 1-2	१२ 1678	२५ ॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१ ॥ 3,5,8	२४ ॥ 3,6	१५ 3567	१० ॥ 3578	१७ ॥ 3457	२२ 3,4,9	२५ ॥ 4,9	१३ 4689	१९ ॥ 1468	२७ 1,4,6	२९ ॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८ ॥ 3458	२५ 3,4,5	२० ॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१ ॥ 6,9	२४ 3,9	२५ ॥ 3,5,व	१७ ॥ 3,5,8	२६ ॥ 3,5,व
मिथुन	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२० ॥ 4,6,9	१३ 4567	१७ ॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१८ 467व	१९ ॥ 4,6,7	१२ ॥ 689	१७ ॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६ ॥ 3,5व	२७ 3,5,व
मिथुन	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१७ ॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८ ॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७ ॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८ ॥ 14678	२१ 147व	२१ ॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८ ॥ 1567	१० ॥ 14578	१६ ॥ 4,8,9	२६ ॥ 9	२६ 3,9
कर्क	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६ ॥ 1,3,5	२१ ॥ 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	१७ ॥ 1367	११ ॥ 1478	२१ ॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४ ॥ 145678	१४ 13567	१८ ॥ 1457	२४ 4,9	१९ 8,9	२७ 9
कर्क	श्ले. 1 से 4	२५ ॥ 1,3,5	१२ 1568	१७ ॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२० ॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७ ॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७ ॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४ ॥ 1,3,5	११ ॥ 13568	१६ ॥ 1358व	२२ ॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९ ॥ 6,9व	८ ॥ 689व	३ ॥ 15678	४ ॥ 15678	१८ ॥ 1,5,7	२४ ॥ 1,5,व	२५ ॥ 1,5,व	१८ ॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३ ॥ 6,7,8
सिंह	पू.फा. 1 से 4	१० ॥ 1568	२५ ॥ 135व	१८ ॥ 156व	२४ 3,6व	२३ ॥ 3,8व	२५ ॥ 3,6व	२० 6,9व	१७ ॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८ ॥ 1,5,7	४ ॥ 15678	११ 1568	१९ ॥ 156व	२४ ॥ 135व	२५ 3,7	१७ ॥ 3,7,8	२६ 3,7
सिंह	उ.फा. 1	१७ 13456	२५ ॥ 1,3,5	१६ ॥ 13456	२२ ॥ 3,4,6	३१ ॥ 3,व	१७ ॥ 3,6,8	९ ॥ 3689	२५ 9,व	२५ ॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११ ॥ 1567	१७ ॥ 1356	११ 3568	१५ ॥ 358व	१६ 3478	२६ ॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६ ॥ 1246	२५ ॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७ ॥ 3,5व	१३ ॥ 568व	१४ 3568	२९ ॥ 5	२९ ॥ 5	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६ ॥ 1367	१० ॥ 3678	१४ ॥ 1378	१७ ॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
कन्या	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६ ॥ 1,2,3	१८ ॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३ ॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८ ॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८ ॥ 34678	१३ ॥ 1378	१६ ॥ 3458	२६ ॥ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
कन्या	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६ ॥ 1,2,3	२८ ॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७ ॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५ ॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६ ॥ 1467	१९ ॥ 3456	१० 34568	१९ ॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-४)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 3,7,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
वृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12568	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1व236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3,4	३१ 3,4	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3,4	२२॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि ... नक्षत्रों का विचार

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्टाद्यपादेऽवग्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूल नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से "**व्रत और त्यौहार**" एवं **सप्तवार कथा** मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि–सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। **आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्॥** अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें–"**एहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर**" स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूं, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि–यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर "**ॐ नमः शिवाय**" आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे-चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज मंत्र "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः" की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि–सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, हृदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए "**ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**" बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारणा करना शुभ होता है। **मंगल देवता** का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए–

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि–इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र "**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**" का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे–मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि–यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरू के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः" का यथाशक्ति पाठ करें। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समाप्ति

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हविष्य सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को ... पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा [illegible]
शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

"ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः" की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथाशक्ति मात्रा में करें-मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। [illegible] मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नील पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करे। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा कावल, जौं आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के बीजमंत्र **"ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥"** का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र **"ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः"** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरंभ न करे। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५.	कं. २७	मे. २०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उषा
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर(मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पूषा
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूला
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उभा
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पूभा
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मित्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूला	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥ज२	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उफा

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहा:	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समा:	बुध:	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	बृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम–कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषत: त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष–लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषत: त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें गत पृष्ठ।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्तों का निर्णय स्वंय करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है-

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं-

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।

☞(१) गर्भाधान संस्कार-यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला)स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां-१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार-सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र-रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न-लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल-रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त-यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार-रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल व बुध वारों** में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां-१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र-रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞(३) सीमन्त संस्कार-यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**-रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां-२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र-मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवण:

लग्न-१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त-यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां-२, ७, १२

शुभ वार-चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र-रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞(४) जातकर्म संस्कार-कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां-१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)

शुभ वार = चं., बु,, गु., शु.

नक्षत्र-अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞मेधा-जनन संस्कार-जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोघृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः **''ॐ भूस्त्वपि धधामि।'' ॐ भुस्त्वपि दधामि।''** तथा **ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞स्तनपान का मुहूर्त्त-जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि-१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र-रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार-चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न-२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞षष्ठी पूजन-जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी पूजन,**

कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☛ प्रसूता स्नान मुहूर्त्त–सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार–रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र–आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☛ नामकरण संस्कार–यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है–

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''

गृहारम्भ–प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☛ नामकरण–सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ–१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्विं, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न–१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युञ्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☛ झूला आरोहन मुहूर्त्त–बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☛ निष्क्रमण मुहूर्त्त–जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न–२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☛ भुम्युपवेशन-मुहूर्त्त–जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त–

शुभ तिथियां–१ (कृ) 2,3,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न–२,५,८,११ राशि लग्न।

☛ जीविका परीक्षा–'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☛ अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त–जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष–अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके ... स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते ... तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☞ कर्ण वेध का मुहूर्त्त—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव, विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की श्लाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☞ कन्या की नासिका छेदन—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं–२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यतः लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्तः एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी खीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

☞ मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में –वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयातीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ बर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

☞ क्षौर (हजामत) कर्म मुहूर्त्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हजामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुनः ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग टेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि जमीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, **सूर्य-नक्षत्र** से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला—सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है–(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रात: ७/३० से प्रात: ९ बजे तक
मंगलवार–अपरान्ह ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार–दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार–दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार–प्रात: १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार–प्रात: ९/०० से प्रात: १०/३० बजे तक
रविवार–सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

नींव खोदने के लिए विशेष ज्ञातव्य

(*i*) सूर्य वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) कोण में करें।

(*ii*) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या तुला) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) से करें।

(*iii*) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) से करें।

(*iv*) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गु. या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) से करें।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वीं को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- **(विशेष)** –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पांव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

अथ [illegible] का विचार

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हों।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

ग्रह व राशियों के तत्त्वों पर से शारीरिक स्थिति

जन्म समय जिस प्रकार की उदित लग्न राशि और ग्रह के तत्त्व होंगे, जातक की शरीर संरचना भी वैसी ही होगी। शरीर की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करने के लिए ग्रह और राशियों के तत्त्व नीचे लिखे जाते हैं–

ग्रह	शुष्कादि	तत्त्व	कद
सूर्य	शुष्क ग्रह	अग्नि	मध्यम
चन्द्र	जल ग्रह	जल	दीर्घ
मंगल	शुष्क ग्रह	अग्नि	ह्रस्व
बुध	जलीय	पृथ्वी	मध्यम
गुरु	जलीय	आकाश या तेज	मध्यम या ह्रस्व
शुक्र	जलीय	जल तत्त्व	ह्रस्व
शनि	शुष्क	वायु तत्त्व	दीर्घ
राहु	शुष्क	वायु	दीर्घ
केतु	शुष्क	वायु	मध्यम

(१) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जल तत्त्व ग्रह की स्थिति हो, तो जातक का शरीर मोटा एवं पुष्ट होगा।

(२) लग्न एवं लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो, तो भी शरीर स्थूल एवं पुष्ट होगा।

(३) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि का हो और अग्नि तत्त्व के ग्रह उसमें स्थित हों, तो मनुष्य शक्तिशाली एवं बली होता है, पर शरीर देखने में दुबला लगेगा।

(४) पृथ्वी राशि का लग्न हो और उसका राशि स्वामी ग्रह जल राशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

(५) पृथ्वी राशि लग्न हो और लग्नपति ग्रह पृथ्वी राशि में हो, तो शरीर स्थूल और दृढ़ होता है।

(६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्त्व की हो और उसमें पृथ्वी तत्त्व का ही ग्रह पड़ा हो, तो जातक नाटे (छोटे) कद वाला होता है।

(७) यदि लग्न वायु तत्त्व राशि वाला हो और उसमें वायु तत्त्व के ग्रह हों, तो जातक दुबला, परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा।

(८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्त्व की राशि वाला हो और लग्नाधिपति जल राशिगत हो तो शरीर स्थूल होगा।

(९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्त्व की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो, तो हड्डियाँ साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट होगा।

इसके साथ ही लग्न की राशि ह्रस्व, दीर्घ या सम (मध्यम), जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की ऊँचाई समझनी चाहिए।

इसी भान्ति लग्न राशि और लग्नेश ग्रह के अनुसार जातक के रूप-रंग का निर्णय करना चाहिए।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 11 अप्रै., 2013 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/04 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/09) से 5 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 5 मिनट के घटी पल 13 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे,** सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

11 अप्रैल, 2013 ई. को जालन्धर का पंचांग—11 अप्रैल, 2013 ई. को दिल्ली का पंचांग

घटी पल	घटी पल
तिथि – २४/३५ (समाप्ति काल)	तिथि – २४/४८ (समाप्ति काल)
नक्षत्र – ४२/२५	नक्षत्र – ४२/३८
योग – ५१/४०	योग – ५१/५३

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०७० मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा प्रविष्टे २९ चैत्र, तदनुसार 11 अप्रै., 2013 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ५० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२७°/३५'/१३" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २७° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें २/२३ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/५० में जमा कर देने से कुल जोड़ २३/१३ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/१२ सिंह (४) राशि के सामने और २ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २३/१३ से केवल १ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा १ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/५० घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, २ अंश, ०५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/०२°/०५'/००")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक 'ज्योतिष तत्त्व' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।५० **लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)** चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३° पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५९	३ ६	३ १४	३ २१	३ २९	३ ३७	३ ४४	३ ५२	४ ०	४ ९	४ १८	४ २६	४ ३५	४ ४४	४ ५२	५ १	५ १०	५ १८	५ २७	५ ३५	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५३	७ २	७ १०
१ वृष	७ १०	७ १९	७ २८	७ ३६	७ ४५	७ ५४	८ २	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२	९ २८	९ ३३	९ ४३	९ ५३	१० ४	१० १४	१० २४	१० ३५	१० ४५	१० ५५	११ ५	११ १६	११ २६	११ ३६	११ ४६	११ ५७	१२ ७
२ मिथुन	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३७	१२ ४८	१२ ५८	१३ ९	१३ १९	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २३	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५६	१६ ८	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ ५३	१७ ४	१७ १५	१७ २७	१७ ३८
३ कर्क	१७ ३८	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २३	१८ ३४	१८ ४६	१८ ५७	१९ ८	१९ १९	१९ ३१	१९ ४२	१९ ५३	२० ५	२० १६	२० २७	२० ३९	२० ५०	२१ १	२१ १२	२१ २४	२१ ३५	२१ ४६	२१ ५८	२२ ९	२२ २०	२२ ३२	२२ ४३	२२ ५४	२३ ५	२३ १७
४ सिंह	२३ १७	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३०	२५ ४१	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३६	२६ ४७	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५३	२८ ४	२८ १४	२८ २५	२८ ३६	२८ ४७
५ कन्या	२८ ४७	२८ ५८	२९ ९	२९ २०	२९ ३१	२९ ४२	२९ ५३	३० ४	३० १५	३० २६	३० ३७	३० ४८	३० ५८	३१ ९	३१ २०	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २६	३२ ३७	३२ ४८	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४२	३३ ५३	३४ ४	३४ १५
६ तुला	३४ १५	३४ २६	३४ ३७	३४ ४८	३४ ५९	३५ १०	३५ २०	३५ ३२	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २८	३६ ४०	३६ ५१	३७ २	३७ १४	३७ २५	३७ ३६	३७ ४७	३७ ५९	३८ १०	३८ २१	३८ ३३	३८ ४४	३८ ५५	३९ ७	३९ १८	३९ २९	३९ ४०	३९ ५२
७ वृश्चिक	३९ ५२	४० ३	४० १४	४० २६	४० ३७	४० ४८	४० ५९	४१ ११	४१ २२	४१ ३३	४१ ४५	४१ ५६	४२ ७	४२ १८	४२ ३०	४२ ४१	४२ ५२	४३ ३	४३ १५	४३ २६	४३ ३७	४३ ४९	४४ ००	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १९	४५ ३०
८ धनु	४५ ३०	४५ ४१	४५ ५२	४६ ४	४६ १५	४६ २६	४६ ३८	४६ ४९	४६ ५९	४७ ९	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ १	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४२	४८ ५२	४९ २	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५४	५० ४	५० १४	५० २४	५० ३५	५० ४५
९ मकर	५० ४५	५० ५५	५१ ५	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५७	५२ ५	५२ १४	५२ २३	५२ ३१	५२ ४०	४२ ४९	५२ ५७	५३ ६	५३ १४	५३ २३	५३ ३२	५३ ४०	५३ ४९	५३ ५८	५४ ६	५४ १५	५४ २४	५४ ३२	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५८	५५ ७	५५ १५
१० कुम्भ	५५ १५	५५ २४	५५ ३३	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ७	५६ १६	५६ २३	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४६	५६ ५४	५७ १	५७ ९	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४७	५७ ५५	५८ २	५८ १०	५८ १७	५८ २५	५८ ३३	४८ ४१	५८ ४७	५८ ५५	५९ ३	५९ ११
११ मीन	५९ ११	५९ १८	५९ २६	५९ ३३	५९ ४१	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १९	० २७	० ३४	० ४२	० ४९	० ५७	१ ५	१ १२	१ २०	१ २७	१ ३५	१ ४३	१ ५०	१ ५८	२ ५	२ १३	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५१	२ ५९

अक्षांश २७° पलभा ६।६।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ६	४ १४	४ २२	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५६	५ ४	५ १२	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ ११	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५२
१ वृष	६ ५२	७ १	७ ९	७ १७	७ २६	७ ३४	७ ४२	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१	९ १	९ ११	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३२	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १३	११ २३	११ ३३	११ ४३
२ मिथुन	११ ४३	११ ५३	१२ ३	१२ १३	१२ २३	१२ ३३	१२ ४४	१२ ५४	१३ ५	१३ १६	१३ २८	१३ ३९	१३ ५१	१४ २	१४ १४	१४ २५	१४ ३६	१४ ४८	१४ ५९	१५ ११	१५ २२	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५७	१६ ८	१६ १९	१६ ३१	१६ ४२	१६ ५४	१७ ५	१७ १७
३ कर्क	१७ १७	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ००	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४६	१९ ५८	२० ९	२० २१	२० ३३	२० ४४	२० ५६	२१ ७	२१ १९	२१ ३१	२१ ४२	२१ ५४	२२ ५	२२ १७	२२ २९	२२ ४०	२२ ५२	२३ ३
४ सिंह	२३ ३	२३ १५	२३ २७	२३ ३८	२३ ५०	२४ १	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५९	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४४	२५ ५५	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४०	२६ ५२	२७ ३	२७ १४	२७ २५	२७ ३७	२७ ४८	२७ ५९	२८ ११	२८ २२	२८ ३३	२८ ४५
५ कन्या	२८ ४५	२८ ५६	२९ ७	२९ १८	२९ ३०	२९ ४१	२९ ५२	३० ०४	३० १५	३० २६	३० ३८	३० ४९	३१ ००	३१ ११	३१ २३	३१ ३४	३१ ४५	३१ ५७	३२ ८	३२ १९	३२ ३१	३२ ४२	३२ ५३	३३ ४	३३ १६	३३ २७	३३ ३८	३३ ५०	३४ १	३४ १२	३४ २४
६ तुला	३४ २४	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५७	३५ ९	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २९	३६ ४१	३६ ५२	३७ ०४	३७ १५	३७ २७	३७ ३९	३७ ५०	३८ २	३८ १३	३८ २५	३८ ३७	३८ ४८	३९ ००	३९ ११	३९ २३	३९ ३५	३९ ४६	३९ ५८	४० ०९
७ वृश्चिक	४० ९	४० २१	४० ३३	४० ४४	४० ५६	४१ ७	४१ १९	४१ ३१	४१ ४२	४१ ५३	४२ ५	४२ १६	४२ २८	४२ ३९	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २५	४३ ३६	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ०८	४५ १९	४५ ३१	४५ ४२	४५ ५४
८ धनु	४५ ५४	४६ ५	४६ १६	४६ २८	४६ ३९	४६ ५१	४७ २	४७ १४	४७ २४	४७ ३४	४७ ४४	४७ ५४	४८ ४	४८ १४	४८ २४	४८ ३४	४८ ४५	४८ ५५	४९ ५	४९ १५	४९ २५	४९ ३६	४९ ४५	४९ ५५	५० ५	५० १५	५० २६	५० ३६	५० ४६	५० ५६	५१ ०६
९ मकर	५१ ६	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५६	५२ ०७	५२ १७	५२ २५	५२ ३३	५२ ४२	५२ ५०	५२ ५८	५३ ७	५३ १५	५३ २३	४३ ३२	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ५	५४ १३	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४७	५४ ५५	५५ ३	५५ १२	५५ २०	५५ २८
१० कुम्भ	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ २	५६ १०	५६ १८	५६ २७	५६ ३४	५६ ४१	५६ ४८	५६ ५६	५७ ०३	५७ १०	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५३	५८ १	५८ ८	५८ १५	५८ २२	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५९	५९ ६	५९ १३
११ मीन	५९ १३	५९ २०	५९ २७	५९ ३५	५९ ४२	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १८	० २५	० ३३	० ४०	० ४७	० ५४	१ १	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३०	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ७	२ १४	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५०

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३००) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) पलभा ७।४८।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	ग.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३८

लग्न सारिणी (अक्षांश–२८°)

(अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनू, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३९	४७	५५	०३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१६	२४	३३	४०
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४९	५७	०५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३९	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०३	१५	२६	३८	४९	०१
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२८	३९	५१	०३	१४	२६	३८	४९
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	०९	२०	३१	४३	५४	०५	२०	२८	४०	५१	०२	१४
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	५०	०१
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१२	२४	३५	४७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१८	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०	१९	२९	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	२९	३७	४५	५४	०२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	०८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	०६	१४	२२
१० कुंभ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३१	३९	४७	५६	०४	१२	२०	२९	३६	४३	५०	५८	०४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	०६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१३	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४७	५४	०१	०८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी (अक्षांश–३२°)

(अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
	प.	४०	४७	५३	०	०७	१४	२१	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
	प.	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	२९	४१
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	५२	०४	१६	२७	३९	५०	०३	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१८	३०	४२	५४	०६	१८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	११	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३०	४०	५०	०	१०	१९	२९	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
१० कुंभ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	०८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	०२	०९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३७	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३७	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३२	३९	४५	५२	०	६	१२	१९	२६	३३

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४

अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१३ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।—लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से सूर्य स्पष्ट** (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगांकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त** हो जाती हैं।

—पं० पन्ना लाल ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

षड्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	वर्ग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	रा. षट्	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
११	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (−) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (−) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (−) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (−) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (−) ऋण करें। स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आंध्रप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश ; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (बिहा.) = बिहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू-काश्मीर।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अमृतसर (पं.)	31 37	74 55	−30 20
अजनाला (पं.)	31 51	74 48	−30 48
अटारी (पं.)	31 37	74 36	−31 36
अमलोह (पं.)	30 37	76 15	−25 00
अहमदगढ़ (पं.)	30 41	75 51	−26 36
अबोहर (पं.)	30 08	74 12	−33 12
अकालगढ़ (पं.)	29 50	75 54	−26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	−25 56
अलावलपुर (पं.)	31 26	75 39	−27 24
अम्ब (हि. प्र.)	31 43	76 06	−25 36
अर्की (हि. प्र.)	31 09	76 59	−22 04
आनी (हि. प्र.)	31 28	77 20	−20 40
अम्बाला (हरि.)	30 21	76 52	−22 32
अलीपुर (हरि.)	29 10	75 52	−26 36
अगरोहा (हरि.)	29 20	75 38	−27 88
अनन्तनाग (ज. का.)	33 43	75 12	−29 12
अखनूर (ज. का.)	32 54	74 45	−31 00
अवन्तीपुरा (ज. का.)	33 56	75 03	−29 48
अमरनाथगुफा (जं.का.)	34 13	75 33	−27 48
अजमेर (राज.)	26 27	74 42	−31 12
अनूपगढ़ (राज.)	29 07	73 06	−37 36
अलवर (राज.)	27 34	76 38	−23 28
असोप (राज.)	26 48	73 44	−35 04
अलीगढ़ (राज.)	25 58	76 07	−25 30
अमेट (राज.)	25 20	73 59	−34 04
अगर (म. प्र.)	23 42	76 01	−25 56
अजयगढ़ (म. प्र.)	24 53	80 13	−09 08
अंजद (म. प्र.)	22 02	75 03	−29 48
अमरकंटक (म. प्र.)	22 40	81 45	−03 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अमला (म. प्र.)	21 56	78 07	−17 32
अम्बाह (म. प्र.)	26 43	78 14	−17 04
अन्नूपुर (म. प्र.)	22 40	81 48	−05 18
अलिराजपुर (म. प्र.)	22 19	74 21	−32 36
अशोकनगर (म. प्र.)	24 34	77 43	−19 08
अम्बिकापुर (छत्ती.)	23 07	83 12	+02 48
अल्मोड़ा (उत्तरां.)	29 37	79 40	−11 20
अलीगढ़ (उ. प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अमरोहा (उ. प्र.)	28 55	78 28	−16 08
अमेठी (उ. प्र.)	26 08	81 50	−02 40
अयोध्या (उ. प्र.)	26 48	82 14	−01 04
अकबरपुर (उ. प्र.)	26 25	82 33	+00 12
अगोरी (उ. प्र.)	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा (उ. प्र.)	27 12	77 46	−18 56
अम्बाह (उ. प्र.)	26 44	78 15	−17 00
अतरौली (उ. प्र.)	28 00	78 16	−16 48
अफज़लगढ़ (उ. प्र.)	29 23	78 41	−15 16
अल्लापुर (उ. प्र.)	27 52	79 19	−12 44
अलीगंज (उ. प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अगरतला (त्रिपु.)	23 49	91 18	+35 12
अहमदाबाद (गुज.)	23 02	72 40	−39 20
अंकलेश्वर (गुज.)	21 36	73 00	−38 00
अकोला (महा.)	20 44	77 00	−22 00
अहमदनगर (महा.)	19 05	74 48	−30 48
अमरावती (महा.)	20 56	77 45	−19 00
आनन्दपुर सा. (पं.)	31 15	76 32	−23 52
आदमपुर (पं.)	31 25	75 43	−27 08
आनी (हि. प्र.)	31 28	77 20	−20 40
आलमपुर (हि. प्र.)	31 54	76 30	−24 00
आबू (राज.)	24 40	72 45	−39 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
आमेर (राज.)	26 59	75 52	−26 32
आसनसोल (बंगा.)	23 42	87 01	+18 04
आरंग (छत्ती.)	21 12	81 58	−02 08
आमपाटा (उत्तरा.)	30 17	78 37	−15 32
आदिब्रदी (उत्तरा.)	30 10	79 12	−13 12
आनन्द (गुज.)	22 34	72 56	−38 16
आज़मगढ़ (उ. प्र.)	26 03	83 13	+02 52
आगरा (उ. प्र.)	27 11	78 01	−17 56
इन्दौरा (हि. प्र.)	32 06	75 41	−27 16
इष्कुमान (ज. का.)	36 36	73 50	−34 40
इच्छापुर (म. प्र.)	21 05	76 09	−25 24
इच्छावर (म. प्र.)	23 01	77 01	−21 56
इटारसी (म. प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा (म. प्र.)	24 05	78 12	−17 12
इन्दौर (म. प्र.)	22 43	75 50	−26 40
इन्द्रगढ़ द. (म. प्र.)	25 56	78 35	−15 40
इलाहाबाद (उ. प्र.)	25 28	81 54	−02 24
इटावा (उ. प्र.)	26 46	79 02	−13 52
इटवा (उ. प्र.)	27 20	82 42	+00 48
ईसानगर (उ. प्र.)	27 54	81 14	−05 04
इम्फाल (मणि.)	24 46	93 58	+45 52
उरमर-टाण्डा (पं.)	31 40	75 41	−27 16
ऊना (हि. प्र.)	31 32	76 18	−24 48
उड़ी (ज. का.)	34 04	74 02	−33 52
ऊधमपुर (ज. का.)	32 56	75 08	−29 28
उदयपुर (राज.)	24 35	73 41	−35 16
उज्जैन (म. प्र.)	23 11	75 46	−26 56
उमरी (म. प्र.)	26 33	79 00	−14 00
उमरिया (म. प्र.)	23 32	80 50	−06 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उमरिया (बा.गढ़)(म.प्र.)	23 48	80 56	−06 16
उत्तरकाशी (उत्तरा.)	30 44	78 27	−16 12
उरवीमठ (उत्तरा.)	30 31	79 07	−13 32
उझानी (उ. प्र.)	28 00	79 02	−13 52
उतरौला (उ. प्र.)	27 19	82 25	−00 20
उन्नाव (उ. प्र.)	26 33	80 31	−07 56
उरई (उ. प्र.)	25 58	79 27	−12 12
उस्का (उ. प्र.)	27 08	83 12	+02 48
ऋषिकेश (उत्तरा.)	30 07	78 18	−15 12
एकलिंगजी (राज.)	24 44	73 46	−34 56
एटा (उ. प्र.)	27 38	78 40	−15 20
ऐत (उ. प्र.)	25 56	79 12	−13 12
ऐज़ावल (मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56
ओरछा (म. प्र.)	25 21	78 39	−15 24
औबेदुल्लागंज (म. प्र.)	22 59	77 36	−19 36
औरैया (उ. प्र.)	26 26	79 32	−11 52
औरंगाबाद (उ. प्र.)	24 44	84 22	+07 28
औरंगाबाद (महा.)	19 53	75 23	−28 28
कटक (उड़ी.)	20 28	85 54	+13 36
कपूरथला (पं.)	31 23	75 25	−28 20
करतारपुर (पं.)	31 27	75 30	−28 00
करसोग (हि. प्र.)	31 23	77 14	−21 04
कसौली (हि. प्र.)	30 55	76 57	−22 12
कथला (हि. प्र.)	31 59	76 47	−22 52
कल्पा (हि. प्र.)	31 34	78 16	−16 56
कण्डाघाट (हि. प्र.)	30 57	77 08	−21 28
करनाल (हरि.)	29 42	77 02	−21 52
कलानौर (हरि.)	28 52	76 23	−24 28
कठुआ (ज. का.)	32 22	75 31	−27 56

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कटरा (ज. का.)	33 01	74 58	−30 08
करौली (राज.)	26 30	77 01	−21 56
कटंगी (म. प्र.)	21 44	79 48	−10 48
कटनी (म. प्र.)	23 51	80 24	−08 24
कवर्धा (छत्ती.)	22 00	81 15	−05 00
कर्णप्रयाग (उत्तरा.)	30 15	79 16	−12 56
कपकोट (उत्तरा.)	29 58	79 54	−10 54
कच्छवा (उ. प्र.)	25 15	82 43	+00 52
कटारनियां घाट (उ.प्र.)	28 22	81 10	−05 20
कदौरा (उ. प्र.)	26 00	79 50	−10 40
कन्नौज (उ. प्र.)	27 03	79 58	−10 08
कमसिन (उ. प्र.)	25 32	80 56	−06 16
करहल (उ. प्र.)	27 02	78 58	−14 08
कर्वी (उ. प्र.)	25 12	80 54	−06 24
कसिया (उ. प्र.)	26 44	83 56	+05 44
कादियां (पं.)	31 49	75 23	−28 28
काला अम्ब (हि. प्र.)	30 29	77 13	−21 08
काँगड़ा (हि. प्र.)	32 05	76 18	−24 48
कालका (हरि.)	30 49	76 57	−22 12
कारगिल (ज. का.)	34 30	76 13	−25 08
कांकरोली (राज.)	25 02	73 54	−34 24
कांकेर (छत्ती.)	20 17	81 29	−04 04
काठघोरा (छत्ती.)	22 30	82 33	+00 12
काठगोदाम (उत्तरा.)	29 16	79 32	−11 52
काशीपुर (उत्तरा.)	29 13	78 57	−14 12
काण्डी (उत्तरा.)	29 56	78 25	−16 20
कानपुर (उ. प्र.)	26 28	80 22	−08 32
कांठ (उ. प्र.)	29 01	78 38	−15 28
कादीपुर (उ. प्र.)	26 11	82 24	−00 24
कान्धला (उ. प्र.)	29 20	77 15	−21 00
काम्पिल (उ. प्र.)	27 36	79 16	−12 56
काल्पी (उ. प्र.)	26 06	79 44	−11 04
कासगंज (उ. प्र.)	27 50	78 40	−15 20
किन्नौर (हि. प्र.)	31 32	78 20	−16 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
किस्तवाड़ (ज. का.)	33 19	75 48	−26 48
किशनगढ़ (राज.)	26 33	74 52	−30 32
किच्छौच्छा (उ. प्र.)	26 23	82 50	+01 20
कीतरपुर साहिब (पं.)	31 11	76 34	−23 44
कीरतपुर (उ. प्र.)	29 31	78 12	−17 12
कुराली (पं.)	30 50	76 35	−23 40
कुफरी (हि. प्र.)	31 07	77 12	−21 12
कुम्हारहट्टी (हि. प्र.)	30 52	77 03	−21 48
कुल्लू (हि. प्र.)	31 58	77 10	−21 20
कुमारसेन (हि. प्र.)	31 18	77 37	−19 32
कुनिहार (हि. प्र.)	30 58	77 10	−21 20
कुरुक्षेत्र (हरि.)	29 59	76 48	−22 48
कुलगाम (ज. का.)	33 42	75 02	−29 52
कुकशी (म. प्र.)	22 12	74 45	−31 00
कुतरू (छत्ती.)	19 05	80 48	−06 48
कुरसेकोडी (छत्ती.)	20 12	80 48	−06 48
कुच्छा (उ. प्र.)	28 06	84 21	+07 24
कुण्डा (उ. प्र.)	25 43	81 30	−04 00
कुराओं (उ. प्र.)	25 00	82 05	−01 40
कुरौली (उ. प्र.)	27 25	79 00	−14 00
कुलपहाड़ (उ. प्र.)	25 20	79 40	−11 20
कूँच (उ. प्र.)	26 00	79 08	−13 28
केलांग (हि. प्र.)	32 37	77 05	−21 40
केसरी (हरि.)	30 15	76 53	−26 28
कैथल (हरि.)	29 48	76 26	−24 16
केरन (ज. का.)	34 40	73 59	−34 04
केकड़ी (राज.)	25 55	75 10	−29 20
केदारनाथ (उत्तरा.)	30 44	79 04	−13 44
केनूर (उत्तरा.)	30 03	79 01	−13 56
कैसरगंज (उ. प्र.)	27 20	81 34	−03 44
कैप्टनगंज (उ. प्र.)	26 56	83 43	+04 52
कैराना (उ. प्र.)	29 24	77 14	−21 02
कैमगंज (उ. प्र.)	27 35	79 20	−12 40
कोटकपूरा (पं.)	30 34	74 52	−30 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कोटखाई (हि. प्र.)	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़ (हि. प्र.)	31 19	77 29	−20 04
कोटला (हि. प्र.)	32 17	76 02	−25 52
कोटली (ज. का.)	33 30	73 53	−34 12
कोटा (राज.)	25 10	75 52	−26 32
कोठी (म. प्र.)	24 45	80 45	−07 00
कोरवई (म. प्र.)	24 08	78 03	−17 48
कोईसारी (छत्ती.)	23 57	81 45	−03 00
कोंगूर (छत्ती.)	19 53	81 27	−04 12
कोण्डागांव (छत्ती.)	19 36	81 40	−03 20
कोरबा (छत्ती.)	22 21	82 41	+00 44
कोटद्वार (उत्तरा.)	29 45	78 32	−15 52
कोरा (उ. प्र.)	26 06	80 27	−08 12
कोरियालाघाट (उ. प्र.)	28 20	81 04	−05 44
कोसी (उ. प्र.)	27 50	77 26	−20 16
कोचीन (केरला)	09 58	76 14	−25 04
कौपागंज (उ. प्र.)	26 00	83 34	+04 16
कोहिमा (नागा.)	25 41	94 07	+46 28
कोलकत्ता (पं. बंगा.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर (महा.)	16 42	74 16	−32 56
क्षिप्रा (म. प्र.)	22 54	78 00	−26 00
खन्ना (पं.)	30 42	76 13	−25 08
खरड़ (पं.)	30 45	76 37	−23 32
खजियार (हि. प्र.)	32 31	76 03	−25 40
खतौली (हरि.)	30 37	76 58	−22 08
खयालू (ज. का.)	35 10	76 20	−24 40
खरताक्षो (ज. का.)	34 53	76 12	−25 12
खण्डेला (राज.)	27 37	75 32	−27 52
खजुराहो (म. प्र.)	24 50	79 58	−10 08
खण्डवा (म. प्र.)	21 50	76 20	−24 40
खरगोन (म. प्र.)	21 49	75 36	−27 36
खनियाधाना (म. प्र.)	25 01	78 07	−17 32
खतौली (उ. प्र.)	29 18	77 43	−19 08
खानपुर (उत्तरा.)	29 36	78 07	−17 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
खाती (उत्तरा.)	30 08	79 54	−10 54
खागा (उ. प्र.)	25 48	81 07	−05 32
खिलचीपुर (उ. प्र.)	24 00	76 34	−23 44
खुर्जा (उ. प्र.)	28 15	77 50	−18 40
खेमकरण (पं.)	31 08	74 35	−31 40
खेड़ी (उ. प्र.)	27 55	80 49	−06 44
खेतिया (म. प्र.)	21 40	74 35	−31 40
खैर (उ. प्र.)	27 57	77 50	−18 40
खैरागढ़ (उ. प्र.)	26 58	77 53	−18 28
खैराबाद (उ. प्र.)	27 31	80 45	−07 00
खुरई (म. प्र.)	24 03	78 19	−16 44
गया (बिहा.)	24 49	85 01	+10 04
गड़दीवाल (पं.)	31 44	75 45	−27 00
गढ़शंकर (पं.)	31 13	76 08	−25 28
गर्ली (परागपुर)(हि.प्र.)	31 48	76 18	−24 48
गगरेट (हि. प्र.)	31 41	76 04	−25 44
गंगापुर (टोंक) (राज.)	26 29	76 46	−22 56
गंगापुर (भीलवाड़ा)(रा.)	25 13	74 16	−32 56
गरजिया (उत्तरा.)	29 29	79 06	−13 36
गंगनाणी (उत्तरा.)	30 55	78 42	−15 12
गंगोत्तरी (उत्तरा.)	30 39	79 02	−13 52
गंगापुर (उत्तरा.)	26 30	76 44	−23 04
गंगोह (सहार.) उ. प्र.	29 45	77 16	−20 56
गढ़मुक्तेश्वर (उ. प्र.)	28 49	77 05	−17 40
गरौठा (उ. प्र.)	25 35	79 19	−12 44
गंगटोक (सि.)	27 22	88 36	+24 24
गादरवाड़ा (म. प्र.)	22 55	78 47	−14 52
गाज़ियाबाद (उ. प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर (उ. प्र.)	25 34	83 35	+04 20
गिरगांव (उत्तरा.)	30 02	80 07	−09 32
गिलगित (ज. का.)	35 55	74 22	−32 32
गुरदासपुर (पं.)	32 03	75 27	−28 12
गुरुहरसहाय (पं.)	30 40	74 32	−31 42
गुड़गांव (हरि.)	28 29	77 04	−21 44

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
गुलमर्ग (ज. का.)	34 05	74 25	−32 20
गुरयास (ज. का.)	34 38	74 56	−30 16
गुवाहाटी (आसा.)	26 11	91 47	+37 08
गुना (म. प्र.)	24 39	77 19	−20 44
गुरसराए (उ. प्र.)	25 38	79 12	−13 12
गुन्नौर (उ. प्र.)	28 15	78 27	−16 12
गुलावठी (उ. प्र.)	28 37	77 48	−18 48
गोईन्दवाल सा. (पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोराया (पं.)	31 06	75 47	−26 52
गोविन्दगढ़ मण्डी (पं.)	30 41	76 18	−24 28
गोहर (हि. प्र.)	31 32	77 02	−21 52
गोहाना (हरि.)	29 09	76 41	−23 16
गोगुण्डा (राज.)	24 46	73 34	−35 44
गोहद (म. प्र.)	26 26	78 27	−16 12
गोण्डा (उ. प्र.)	27 08	82 01	−01 56
गोरखपुर (उ. प्र.)	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ (उ.प्र.)	28 06	80 30	−08 00
गोवर्धन (उ. प्र.)	27 32	77 28	−20 08
गौरीफण्टा (उ. प्र.)	28 40	80 32	−07 52
गोधरा (गुज.)	22 45	73 38	−35 28
गोवा (पंजिम)	15 27	73 50	−34 40
गोलकुण्डा (आं. प्र.)	17 24	78 23	−16 28
ग्वालियर (म. प्र.)	26 13	78 10	−17 20
घनौर (पं.)	30 21	76 37	−23 32
घुमारवीं (हि. प्र.)	31 28	76 42	−23 12
घरौण्डा (हरि.)	29 34	76 58	−22 08
घोटारू (राज.)	27 18	70 04	−49 44
घरमघर (उत्तरा.)	29 52	80 01	−09 56
घनस्याली (उत्तरा.)	30 27	78 13	−17 08
चमकौर साहि. (पं.)	30 55	76 24	−24 24
चण्डीगढ़	30 44	76 53	−22 28
चम्बा (हि. प्र.)	32 34	76 08	−25 28
चच्योट (हि. प्र.)	31 36	77 04	−21 44
चरखी-दादरी (हरि.)	28 36	76 16	−24 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चन्दला (म. प्र.)	25 05	80 12	−09 12
चन्देरी (म. प्र.)	24 43	78 08	−17 28
चकराता (देह.)उत्तरा.	30 42	77 51	−18 36
चम्बा (उत्तरा.)	30 18	78 25	−16 20
चमौली (उत्तरा.)	30 24	79 21	−12 36
चन्दौसी (उत्तरा.)	28 27	78 46	−14 56
चम्पावत (उत्तरा.)	29 20	80 06	−09 36
चकला (उ. प्र.)	25 02	83 12	+ 02 48
चकिया (उ. प्र.)	26 26	85 02	+10 08
चन्दौसी (उ. प्र.)	28 28	78 48	−14 48
चरखाड़ी (उ. प्र.)	25 25	79 46	−10 56
चामुण्डा देवी (हि.प्र.)	32 08	76 22	−24 32
चायल (हि. प्र.)	31 03	77 14	−21 04
चात्सू (राज.)	26 36	75 59	−26 04
चाचोरा (म. प्र.)	24 10	76 59	−22 04
चापरा (म. प्र.)	22 44	76 20	−24 40
चाम्पा (छत्ती.)	22 03	82 39	+00 36
चिन्तपूरणी (हि. प्र.)	31 47	76 04	−25 44
चिनेनी (ज. का.)	33 01	75 20	−28 40
चिलास (ज. का.)	35 27	74 06	−33 36
चितौड़गढ़ (राज.)	24 54	74 42	−31 12
चित्रकूटधाम (उ. प्र.)	25 12	80 52	−06 32
चिरगांव (उ. प्र.)	25 36	78 50	−14 40
चुशूल (ज. का.)	33 35	78 39	−15 24
चूरू (राज.)	28 19	75 01	−29 56
चुरानी (उत्तरा.)	29 47	78 55	−14 20
चुनार (उ. प्र.)	25 10	82 56	+01 44
चेन्नई (ता.ना.)	13 05	80 17	−08 52
चोमू (राज.)	27 08	75 47	−26 52
चोटां (राज.)	25 28	71 06	−45 36
चोपां (उ. प्र.)	24 30	83 00	+02 00
छपरा (बिहार)	25 47	84 45	+09 00
छहरटा (पं.)	31 16	74 53	−30 28
छम्ब (ज. का.)	32 51	74 23	−32 28

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
छतरपुर (म. प.)	24 55	79 36	−11 36
छतरपुर (उ. प्र.)	24 56	79 38	−11 28
छपरा (उ. प्र.)	24 39	76 48	−22 48
छाबरा (राज.)	24 40	76 54	−22 24
छाम (उत्तरा.)	30 29	78 19	−16 44
छाटा (उ. प्र.)	27 45	77 30	−20 00
छिन्दवाड़ा (म. प्र.)	22 04	78 56	−14 16
छितौनी (उ. प्र.)	27 10	83 58	+05 52
छोटीसदड़ी (राज.)	24 24	74 36	−31 36
छोटा छिन्दवाड़ा (म.प्र.)	23 03	79 29	−12 04
जण्डियाला गुरु (पं.)	31 51	75 37	−27 32
जण्डियाला (जालं.) पं.	31 10	75 37	−27 32
जगरांव (पं.)	30 48	75 30	−28 00
जलालाबाद (पं.)	30 37	74 15	−33 00
जस्सूर (हि. प्र.)	32 17	75 55	−26 20
जतोग (हि. प्र.)	31 08	77 08	−21 28
जगाधरी (हरि.)	30 10	77 16	−20 56
जम्मू (ज. का.)	32 43	74 54	−30 24
जंगला (ज. का.)	33 40	77 00	−22 00
जयपुर (राज.)	26 55	75 52	−26 32
जसवंतपुरा (राज.)	24 48	72 30	−40 00
जबलपुर (म. प्र.)	23 10	79 57	−10 12
जऔरा (म. प्र.)	28 38	75 08	−29 28
जगदलपुर (छत्ती.)	19 04	82 02	−01 52
जशपुरनगर (छत्ती.)	22 54	84 09	+06 36
जसपुर (उत्तरा.)	29 16	78 48	−14 48
जमनोत्री (उत्तरा.)	31 01	78 27	−16 12
जगदीशपुर (उ. प्र.)	25 30	84 26	+07 44
जंघई (उ. प्र.)	25 35	82 18	−00 48
जपिया (उ. प्र.)	24 34	84 00	+06 00
जरवा (उ. प्र.)	27 40	82 31	+00 04
जलालपुर (उ. प्र.)	26 19	82 45	+01 00
जलालाबाद (उ. प्र.)	27 44	79 40	−11 20
जलेसर (उ. प्र.)	27 29	78 20	−16 36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जसरा (उ. प्र.)	25 17	81 48	−02 48
जसराना (उ. प्र.)	27 15	78 42	−15 12
जसवन्तनगर (उ. प्र.)	26 52	78 56	−14 16
जहांगीराबाद (उ. प्र.)	28 26	78 06	−17 36
जहानाबाद (उ. प्र.)	25 12	84 58	+09 52
जमशेदपुर (बिहा.)	22 50	86 10	+14 40
जलगांव (महा.)	21 03	75 39	−27 24
जाखल (पं.)	29 48	75 41	−26 36
जालन्धर (पं.)	31 19	75 34	−27 44
जालन्धर कैंट (पं.)	31 20	75 26	−28 16
जाखल (हरि.)	29 49	75 49	−26 44
जास्कार (ज.का.)	33 20	77 00	−22 00
जालौर (राज.)	25 22	72 38	−39 28
जावद (म. प्र.)	24 38	74 52	−30 32
जाईस (उ. प्र.)	26 16	81 30	−04 00
जानसठ (मु.) उ. प्र.	29 20	77 52	−18 32
जालौन (उ. प्र.)	26 10	79 20	−12 40
जामनगर (गुज.)	22 28	70 04	−49 44
जिगनी (उ. प्र.)	25 46	79 26	−12 16
जीरा (पं.)	30 57	74 59	−30 04
जीन्द (हरि.)	29 19	76 21	−24 36
जूनागढ़ (गुज.)	21 31	70 28	−48 08
जैतों (पं.)	30 28	74 53	−30 28
जैजों (पं.)	31 21	76 09	−25 24
जैसलमेर (राज.)	26 55	70 54	−46 24
जोधपुर (राज.)	26 18	73 04	−37 44
जोधासर (राज.)	28 07	73 50	−34 40
जोबर (म. प्र.)	22 25	74 34	−31 44
जोशीमठ (उत्तरा.)	30 34	79 34	−11 44
जोरहाट (आसा.)	26 46	94 16	+47 04
जौनपुर (उ. प्र.)	25 45	82 40	+00 40
जोगिन्द्रनगर (हि. प्र.)	31 58	76 45	−23 00
ज्वाली (हि. प्र.)	32 06	76 01	−25 56
ज्वालामुखी (हि. प्र.)	31 53	76 20	−24 40

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
झज्जर (हरि.)	28 38	76 39	−23 24
झरिया (बि.)	23 50	86 24	+15 36
झालावाड़ (राज.)	24 36	76 09	−25 24
झाबुआ (म. प्र.)	22 46	74 36	−31 36
झाँसी (उ. प्र.)	25 27	78 37	−15 32
झुंझुनू (राज.)	28 06	75 25	−28 20
टनकपुर (उत्तरा.)	29 02	80 08	−09 28
टप्पल (उ. प्र.)	28 04	77 36	−19 36
टाण्डा (उ. प्र.)	26 32	82 39	+00 36
टाण्डा (उ. प्र.)	28 56	78 59	−14 04
टिहरी (उत्तरा.)	30 32	78 31	−15 56
टीकमगढ़ (म. प्र.)	24 46	78 53	−14 28
टूण्डला (उ. प्र.)	27 10	78 15	−17 00
टैकाडी (उ. प्र.)	24 58	84 50	+09 20
टोहाना (हरि.)	29 43	75 53	−26 28
टोडारायसिंह (राज.)	26 00	75 29	−28 04
टोंक (राज.)	26 11	75 50	−26 40
ठयोग (हि. प्र.)	31 08	77 33	−19 48
ठाकुरद्वारा (उ. प्र.)	29 10	78 50	−14 40
डबवाली मण्डी (पं.)	29 59	74 42	−31 12
डमटाल (हि. प्र.)	32 13	75 41	−27 16
डगशाई (हि. प्र.)	30 53	77 06	−21 36
डलहौज़ी (हि. प्र.)	32 31	76 00	−26 00
डांगचौरा (उत्तरा)	30 17	78 19	−15 32
डाण्डा (उत्तरा.)	29 10	79 55	−10 20
डिबाई (उ. प्र.)	28 12	78 16	−16 56
डिब्रूगढ़ (आ.)	27 29	94 56	+49 44
डिगबोई (आ.)	27 22	95 40	+52 40
डीडवाना (राज.)	27 17	74 25	−32 20
डीडीहाट (उत्तरा.)	29 48	80 12	−09 12
डूँगरपुर (राज.)	23 50	73 43	−35 08
डूँगरगढ़ (छत्ती.)	21 12	80 50	−06 40
डेरापुर (उ. प्र.)	26 28	79 48	−10 48
डैहर (हि. प्र.)	31 29	76 52	−22 22

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
डोडा (ज.का.)	33 11	75 34	−27 44
डोईवाला (उत्तरा.)	30 12	78 06	−17 36
ढिलवां (पं.)	31 25	75 19	−28 44
ढलियारा (हि. प्र.)	31 52	76 11	−25 16
तपा मण्डी (पं.)	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन (पं.)	31 28	74 58	−30 08
तलवाड़ा (पं.)	32 05	75 38	−27 38
तलवंडी साबो (पं.)	29 59	74 59	−30 04
तारादेवी (हि. प्र.)	31 04	77 10	−21 20
तत्तापानी (हि. प्र.)	31 14	77 10	−21 20
ताजपुर (उ. प्र.)	29 08	78 30	−16 00
तिजारा (राज.)	27 55	76 50	−22 40
तिरोदी (म. प्र.)	21 41	79 42	−11 12
तिरुपति (आंध्र.)	13 40	79 24	−12 24
तेजम (उत्तरा.)	29 56	80 10	−09 20
तेरु (ज.का.)	36 11	72 45	−39 00
तेजपुर (आसा.)	26 38	92 49	+41 16
त्रिलोकनाथ (हि. प्र.)	32 43	76 39	−23 24
त्रिलोकपुर (हि. प्र.)	30 34	77 09	−21 24
त्रिवेन्द्रम (के.)	08 29	76 57	−22 12
थानेसर (हरि.)	29 58	76 56	−22 16
थानागाजी (राज.)	27 25	76 19	−24 44
दतारपुर (पं.)	31 53	75 45	−27 00
दसूहा (पं.)	31 49	75 38	−27 28
दमदमा साहिब (पं.)	30 50	76 04	−25 44
ददाहू (हि. प्र.)	30 35	77 28	−20 08
दतिया (म. प्र.)	25 40	78 28	−16 08
दमोह (म. प्र.)	23 50	79 27	−12 12
दन्तेवाड़ा (छत्ती.)	18 54	81 21	−04 36
दरयाबाद (उ. प्र.)	26 54	81 34	−03 44
द्वारिका (गुज.)	22 14	68 58	−54 08
दार्जिलिंग (पं.बं.)	27 03	88 18	+23 12
दादरी (हरि.)	28 33	77 32	−19 52
दानापुर (उ. प्र.)	25 40	85 02	+10 08
दालमऊ (उ. प्र.)	26 02	81 02	−05 52
दिन्दोरी (म. प्र.)	22 57	81 05	−05 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
दिल्ली	28 39	77 12	−21 12
दीनानगर (पं.)	32 08	75 30	−28 00
दुर्ग (छत्तीस.)	21 11	81 17	−04 52
दुर्गापुर (बंगा.)	23 30	87 20	+19 20
दूधी (उ. प्र.)	24 13	83 15	+03 00
द्रास (ज.का.)	34 22	75 50	−26 40
देहरा गोपीपुर (हि. प्र.)	31 55	76 14	−25 04
देहरादून (उत्तरा.)	30 19	78 02	−17 52
देओरा (राज.)	26 30	70 42	−47 12
देचू (राज.)	26 47	72 20	−40 40
देवगांव (उ. प्र.)	25 24	83 01	+02 04
देवबन्द (उ. प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया (उ. प्र.)	26 32	83 45	+05 00
देहरी (उ. प्र.)	24 52	84 11	+06 44
दोराहा मण्डी (पं.)	30 49	76 01	−25 56
दोहरीघाट (उ. प्र.)	26 16	83 31	+04 04
दौलतपुर (पं.)	31 58	75 38	−27 28
दौलतपुर (हि. प्र.)	31 46	75 58	−26 08
दौसा (राज.)	26 51	76 21	−24 36
धर्मकोट (पं.)	30 53	75 14	−29 04
धनेटा (हि. प्र.)	31 38	76 29	−24 04
धर्मशाला (हि. प्र.)	32 16	76 23	−24 48
धर्मपुर (हि. प्र.)	30 54	77 04	−21 44
धमतरी (छत्ती.)	20 41	81 34	−03 44
धर्मजयगढ़ (छत्ती.)	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम (छत्ती.)	18 16	80 55	−06 20
धनोलटी (उत्तरा.)	30 25	78 19	−16 44
धनौरा (उ. प्र.)	28 58	78 15	−17 00
धनबाद (बि.)	23 47	86 30	+16 00
धारीवाल (पं.)	31 57	75 19	−28 44
धारा (हि. प्र.)	31 49	77 15	−21 00
धार (म. प्र.)	22 36	75 18	−28 48
धामपुर (उ. प्र.)	29 19	78 31	−15 56
धूरी (पं.)	30 22	75 52	−26 32
धौलाकुआं (हि. प्र.)	30 30	77 29	−20 04
धौलपुर (राज.)	26 42	77 53	−18 28

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
नकोदर (पं.)	31 07	75 29	−28 04
नवांशहर (पं.)	31 07	76 08	−25 28
नंगल (पं.)	31 23	76 23	−24 28
नगर (हि. प्र.)	32 07	77 10	−21 20
नगरोटा बगवां (हि.प्र.)	32 06	76 22	−24 32
नगरोटा (हि. प्र.)	32 07	76 23	−24 28
नरवाणा (हरि.)	29 36	76 08	−25 28
नवांशहर (ज. का.)	32 30	74 46	−30 56
नवलगढ़ (राज.)	27 51	75 18	−28 48
नसीराबाद (राज.)	26 18	74 46	−30 56
नयागाँव (म. प्र.)	25 54	77 10	−21 20
नरसिंहपुर (म. प्र.)	22 57	79 12	−13 12
नवापाड़ा (छत्ती.)	20 58	81 53	−02 28
नरेन्द्रनगर (उत्तरा.)	30 10	78 18	−16 48
नन्दप्रयाग (उत्तरा.)	30 19	79 24	−12 24
नकूर (उ. प्र.)	29 55	77 18	−20 48
नगीना (उ. प्र.)	29 27	78 27	−16 12
नजीबाबाद (उ. प्र.)	29 38	78 20	−16 40
नरैनी (उ. प्र.)	25 11	80 29	−08 04
नवाबगंज (उ. प्र.)	28 33	79 38	−11 28
नवाबगंज (उ. प्र.)	26 52	82 08	−01 28
नाभा (पं.)	30 25	76 09	−25 24
नादौन (हि. प्र.)	31 47	76 22	−24 32
नाहन (हि. प्र.)	30 33	77 21	−20 36
नालागढ़ (हि. प्र.)	30 57	76 22	−24 32
नारकण्डा (हि. प्र.)	31 15	77 28	−20 08
नारनौल (हरि.)	28 02	76 14	−25 04
नारायणगढ़ (हरि.)	30 30	77 09	−21 24
नाहर (हरि.)	28 23	76 23	−24 28
नागपुर (महा.)	21 09	79 09	−13 24
नागिर (ज. का.)	36 17	74 45	−31 00
नागौर (राज.)	27 11	73 40	−35 20
नाचना (राज.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा (राज.)	24 56	73 50	−34 40
नागोद (म. प्र.)	24 30	80 40	−07 20

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
नानपाड़ा (उ. प्र.)	27 52	81 30	−04 00
नासिक (महा.)	20 01	73 50	−34 40
निरमण्ड (हि. प्र.)	31 28	77 34	−19 44
निघासन (उ. प्र.)	28 14	80 52	−06 32
निहतौर (उ. प्र.)	29 20	78 23	−16 28
नीलोखेड़ी (हरि.)	29 52	76 54	−22 24
नीम का थाना (राज.)	27 44	75 48	−26 48
नीमच (म. प्र.)	24 28	74 52	−30 32
नूरमहल (पं.)	31 01	75 22	−28 32
नूरपुर बेदी (पं.)	31 09	76 29	−24 04
नूरपुर (हि. प्र.)	32 18	75 56	−26 16
नैनादेवी (हि. प्र.)	31 19	76 31	−23 56
नोएडा (उ. प्र.)	28 35	77 20	−20 40
नैनपुर (म. प्र.)	22 26	80 07	−09 32
नैनीताल (उत्तरा.)	29 23	79 27	−12 12
नोखा (राज.)	27 35	73 29	−36 04
नौशेहरा (ज. का.)	33 11	74 17	−32 52
नौहर (राज.)	29 11	74 46	−30 56
नौतांवा (उ. प्र.)	27 26	83 25	+03 40
पटना (बिहा.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला (पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी (पं.)	31 17	74 51	−30 36
पठानकोट (पं.)	32 17	75 42	−27 12
पच्छाद (हि. प्र.)	31 47	77 08	−21 28
पण्डोह (हि. प्र.)	31 41	77 07	−21 32
पपरोला (हि. प्र.)	32 04	76 34	−23 44
परवाणू (हि. प्र.)	30 52	77 05	−21 40
पंचकूला (हरि.)	30 45	76 53	−22 28
पटौदी (हरि.)	28 19	76 48	−22 48
पलवर (हरि.)	28 10	77 19	−20 44
पदम (ज. का.)	33 28	76 54	−22 24
पहलगांव (ज. का.)	34 01	75 24	−28 24
परिपंजाल (ज. का.)	33 36	74 22	−22 32
पचपदरा (राज.)	25 55	72 21	−40 36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
परबतसर (राज.)	26 53	74 47	−30 52
पल्लू (राज.)	28 56	74 13	−33 08
पंचमढ़ी (म. प्र.)	22 30	78 26	−16 16
पठारिया (म. प्र.)	23 54	79 12	−13 12
पन्ना (म. प्र.)	24 43	80 12	−09 12
पण्डारिया (छत्ती.)	22 14	81 25	−04 20
परताबपुर (छत्ती.)	23 29	83 13	+02 52
पट्टी (उ. प्र.)	25 55	82 12	−01 12
पदरौना (उ. प्र.)	26 55	83 59	+05 56
पयागपुर (उ. प्र.)	27 25	81 48	02 48
पवायां (उ. प्र.)	28 04	80 06	−09 36
पाओंटा साहिब (हि.प्र.)	30 28	77 38	−19 28
पालमपुर (हि. प्र.)	32 06	76 33	−23 48
पानीपत (हरि.)	29 23	77 01	−21 56
पाली (राज.)	25 46	73 25	−36 20
पाटन (म. प्र.)	23 18	79 42	−11 12
पांधुरना (म. प्र.)	21 36	78 31	−15 56
पिंजौर (हरि.)	30 49	76 55	−22 20
पिपली (हरि.)	29 59	76 52	−22 32
पिहोवा (हरि.)	29 56	76 36	−23 36
पिलानी (राज.)	28 23	75 35	−27 40
पिचोर (म. प्र.)	25 11	78 11	−17 16
पिछोर (ग्वा.) (म.प्र.)	25 58	78 24	−16 24
पिपारिया (म. प्र.)	22 45	78 21	−16 36
पिन्सवार (उत्तरा.)	30 38	78 42	−15 12
पिथौरगढ़ (उत्तरा.)	29 35	80 13	−09 08
पिलखुआं (उ. प्र.)	28 43	77 39	−19 24
पिहानी (उ. प्र.)	27 38	80 12	−09 12
पीपलकोटी (उत्तरा.)	30 26	79 27	−12 12
पीलीभीत (उ. प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ (ज. का.)	33 51	74 08	−33 28
पुष्कर (राज.)	26 30	74 34	−31 44
पुरुलिया (पं. बंगा.)	23 20	86 24	+15 36
पुरोला (उत्तरा.)	30 52	78 42	−15 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पुखरायां (उ. प्र.)	26 14	79 51	−10 36
पुरवा (उ. प्र.)	26 28	80 50	−06 40
पूरनपुर (उ. प्र.)	28 31	80 09	−09 24
पूना (महा.)	18 34	73 53	−34 28
पोखरन (राज.)	26 56	71 55	−42 20
पोखरी (उत्तरा.)	30 31	79 12	−13 12
पोर्टब्लेयर (अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पौड़ीगढ़वाल (उत्तरा.)	30 09	78 47	−14 52
पोर्टब्लेयर (अं. नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोरबन्दर (गुज.)	21 38	69 36	−51 36
प्रतापगढ़ (उ. प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़ (म. प्र.)	24 02	74 47	−30 52
फरीदकोट (पं.)	30 40	74 57	−30 12
फगवाड़ा (पं.)	31 13	75 47	−26 52
फतेहगढ़ सा. (पं.)	30 39	76 22	−24 32
फतेहगढ़ (फिरो.) पं.	31 03	75 03	−29 48
फतेहाबाद (हरि.)	29 31	75 30	−28 00
फरीदाबाद (हरि.)	28 25	77 22	−20 32
फतेहपुर (राज.)	28 00	75 00	−30 00
फलौदी (राज.)	27 09	72 22	−40 32
फतेहपुर (उ. प्र.)	25 56	80 48	−06 48
फतेहपुरसीकरी (उ. प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद (उ. प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फरीदनगर (उ. प्र.)	28 46	77 37	−19 32
फरीदपुर (उ. प्र.)	28 13	79 33	−11 48
फर्रूखाबाद (उ. प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का (पं.)	30 24	74 04	−33 44
फिल्लौर (पं.)	31 01	75 48	−26 48
फिरोजपुर (पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद (उ. प्र.)	27 09	78 25	−16 20
फूलपुर (उ. प्र.)	25 33	82 06	−01 36
फुलेरा (राज.)	26 52	75 16	−28 56
फैज़ाबाद (उ. प्र.)	26 47	82 08	−01 28
बरनाला (पं.)	30 23	75 33	−27 48

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बस्सी (पं.)	30 35	76 50	−22 40
बसी-पठाना (पं.)	30 40	76 23	−24 28
बटाला (पं.)	31 49	75 14	−29 04
बंगा (पं.)	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर (पं.)	31 03	76 19	−24 44
बरसर (भोटा) हि.प्र.	31 34	76 28	−24 08
बसौली (हि. प्र.)	31 34	76 23	−24 28
बंगाना तै. (हि. प्र.)	31 33	76 27	−24 16
बड़ागांव (हि. प्र.)	31 20	77 15	−21 00
बंजार (हि. प्र.)	31 40	77 20	−20 40
बनीखेत (हि. प्र.)	32 32	75 58	−26 08
बकलोह (हि. प्र.)	32 27	75 59	−26 04
बल्लभगढ़ (हरि.)	28 21	77 19	−20 44
बहादुरगढ़ (हरि.)	28 42	76 55	−22 20
बरवाला (हरि.)	29 22	75 54	−26 44
बनिहाल (ज. का.)	33 32	75 19	−28 44
बटोटी (ज. का.)	33 06	75 19	−28 44
बटोत (ज. का.)	33 06	75 19	−28 44
बड़गाम (ज. का.)	34 00	74 44	−31 04
बसौली (ज. का.)	32 30	75 49	−26 24
बड़ी सादड़ी (राज.)	24 25	74 28	−32 08
बयाना (राज.)	26 55	77 17	−20 52
बन्दा (म. प्र.)	24 03	78 57	−14 12
बरनगर (म. प्र.)	23 03	75 22	−28 32
बरवानी (म. प्र.)	22 02	74 54	−30 24
फतेहपुर (उ. प्र.)	27 10	81 13	−05 08
बरवाह (म. प्र.)	22 16	76 03	−25 48
बलोदाबाज़ार (छत्ती.)	21 40	82 10	−01 20
बस्तर (छत्ती.)	19 12	81 57	−02 12
बद्रीनाथ (उत्तरा.)	30 44	79 29	−12 04
बक्सर (उ. प्र.)	25 35	83 59	+05 56
बगहा (उ. प्र.)	27 06	84 05	+06 20
बदायूँ (उ. प्र.)	28 02	79 07	−13 32
बनारस (उ. प्र.)	25 20	83 00	+02 00
बबीना (उ. प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बहजोई (उ. प्र.)	28 24	78 37	−15 32

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बहराइच (उ. प्र.)	27 35	81 36	−03 36
बहेड़ी (उ. प्र.)	28 47	79 30	−12 00
बरवासागर (उ. प्र.)	25 23	78 44	−15 04
बरौट (उ. प्र.)	29 06	77 16	−20 56
बलिया (उ. प्र.)	25 45	84 10	+06 40
बरेली (उ. प्र.)	28 21	79 25	−12 20
बलरामपुर (उ. प्र.)	27 26	82 11	−01 16
बस्ती (उ. प्र.)	26 48	82 43	+00 52
बड़ौदा (गुज.)	22 18	73 13	−37 08
बालसमन्द (हरि.)	29 05	75 29	−28 04
बारामूला (ज. का.)	34 10	74 20	−32 40
बाड़मेर (राज.)	25 46	71 25	−44 20
बांदीकुई (राज.)	27 02	76 34	−23 44
बाप (राज.)	27 24	72 22	−40 32
बारौं (राज.)	25 07	76 30	−24 00
बांसवाड़ा (राज.)	23 30	74 24	−32 24
बालोतरा (राज.)	25 50	72 14	−41 04
बालाघाट (म. प्र.)	21 48	80 11	−09 16
बासोदा (म. प्र.)	23 51	77 56	−18 16
बान्धवगढ़ (म. प्र.)	23 53	79 05	−13 40
बागेश्वर (उत्तरा.)	29 52	79 42	−11 12
बागपत (उ. प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाड़ी (उ. प्र.)	26 39	77 36	−19 36
बादशाहपुर (उ. प्र.)	25 47	82 49	+01 16
बान्दा (उ. प्र.)	25 29	80 20	−08 40
बाराबंकी (उ. प्र.)	26 55	81 12	−05 12
बांसी (उ. प्र.)	27 11	82 56	+01 44
बाह (उ. प्र.)	26 53	78 36	−15 36
बिलगा (पं.)	31 02	75 26	−28 16
बिलासपुर (हि. प्र.)	31 19	76 45	−23 00
बिलाड़ा (राज.)	26 11	73 42	−35 12
बिछिया (म. प्र.)	22 27	80 42	−07 12
विजयपुर (म. प्र.)	26 03	77 22	−20 32
बिजावर (म. प्र.)	24 38	79 30	−12 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिलासपुर (छत्ती.)	22 05	82 09	−01 24
बिजनौर (उ. प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिधूना (उ. प्र.)	26 49	79 31	−11 56
बिलग्राम (उ. प्र.)	27 11	80 02	−09 52
बिलसी (उ. प्र.)	28 08	78 55	−14 20
बिलारी (उ. प्र.)	28 38	78 48	−14 48
बिलासपुर (उ. प्र.)	28 53	79 16	−12 56
बीकानेर (राज.)	28 01	73 22	−36 32
बीना (इटावा) म.प्र.	24 11	78 11	−17 16
बीजापुर (छत्ती.)	18 48	80 49	−06 44
बीसलपुर (उ. प्र.)	28 18	79 48	−10 48
बुढलाडा (पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुरहानपुर (म. प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर (उ. प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुढ़ाना (उ. प्र.)	29 17	77 28	−20 08
बून्दी (राज.)	25 27	75 40	−27 20
बेला (पं.)	30 56	76 24	−24 24
बेरी (उ. प्र.)	28 42	76 35	−23 40
बेला (उ. प्र.)	25 56	81 59	−02 04
बेगुसराय (बि.)	25 25	86 08	+14 32
बैजनाथ (हि. प्र.)	32 03	76 36	−23 36
बैतूल (म. प्र.)	21 55	77 54	−18 24
बैकुण्ठपुर (छत्ती.)	23 15	82 33	+00 12
बैजनाथ (उ. प्र.)	29 55	79 37	−11 32
बैंगलुरू (कर्ना.)	12 58	77 36	−19 36
ब्यास (पं.)	31 32	75 18	−28 48
भटिण्डा (पं.)	30 11	75 00	−30 00
भवानीगढ़ (पं.)	30 16	76 01	−25 56
भरवाईं (हि. प्र.)	31 47	76 07	−25 36
भरमौर (हि. प्र.)	32 27	76 32	−23 52
भद्रवाह (ज. का.)	33 01	75 50	−26 40
भरतपुर (राज.)	27 05	77 30	−20 00
भरतपुर (छत्ती.)	23 44	81 45	−03 00
भगवानपुर (उत्तरा.)	29 59	77 56	−18 16
भटवाड़ी (उत्तरा.)	30 49	78 36	−15 36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
भदोही (उ. प्र.)	25 25	82 34	+00 16
भरथाना (उ. प्र.)	26 45	79 14	−13 04
भाखड़ा (हि. प्र.)	31 20	76 30	−24 00
भादसों (हरि.)	29 56	76 56	−22 16
भादरा (राज.)	29 15	75 20	−28 40
भाटपाड़ा (छत्ती.)	21 44	81 56	−02 16
भाण्डेर (उ. प्र.)	25 44	78 45	−15 00
भावनगर (गुज.)	21 46	72 09	−41 24
भिवानी (हरि.)	28 47	76 08	−25 48
भिण्ड (म. प्र.)	26 34	78 48	−14 48
भिलई (छत्ती.)	21 13	81 26	−04 16
भीखीविण्ड (पं.)	31 21	74 52	−31 12
भींगा (उ. प्र.)	27 43	81 56	−02 16
भीलवाड़ा (राज.)	25 21	74 40	−31 20
भीनमाल (राज.)	25 01	72 19	−40 44
भुलत्थ (पं.)	31 32	75 32	−27 32
भुच्चो (मण्डी) पं.	30 13	75 06	−29 36
भुन्तर (हि. प्र.)	31 54	77 09	−21 24
भुवनेश्वर (उड़ी.)	20 10	85 50	+13 00
भुज (गुज.)	23 15	69 40	−51 20
भोपाल (म. प्र.)	23 16	77 24	−20 24
भोनगांव (उ. प्र.)	27 15	79 11	−13 16
भोवाली (उ. प्र.)	29 23	79 31	−11 56
मजीठा (पं.)	31 46	74 57	−30 12
मलोट (पं.)	30 13	74 29	−32 04
मलेरकोटला (पं.)	30 31	75 59	−26 04
मलकाणा (पं.)	29 56	75 03	−29 48
मण्डी (हि. प्र.)	31 43	76 58	−22 08
मनाली (हि. प्र.)	32 17	77 10	−21 20
मनीकरण (हि. प्र.)	32 01	77 20	−20 40
मशोबरा (हि. प्र.)	31 07	77 14	−21 04
मंगवाल (हि. प्र.)	32 03	76 05	−25 40
महासू (हि. प्र.)	31 05	77 13	−21 08
मनसादेवी (हरि.)	30 44	76 52	−22 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मनीमाजरा (हरि.)	30 42	76 52	−22 32
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	28 18	76 09	−25 24
मनावर (ज. का.)	32 50	74 25	−32 20
मकराना (राज.)	27 04	74 43	−31 08
महाजन (राज.)	28 49	73 56	−34 16
मऊगंज (म. प्र.)	24 41	81 53	−02 28
मकराई (म. प्र.)	22 04	77 06	−21 36
मण्डला (म. प्र.)	22 36	80 23	−08 28
मनावर (म. प्र.)	22 14	75 05	−29 40
मन्दसौर (म. प्र.)	24 04	75 04	−29 44
महाराजपुर (म. प्र.)	25 01	79 44	−11 04
महेश्वर (म. प्र.)	22 11	75 35	−27 40
महासमुन्द (छत्ती.)	21 06	82 06	−01 36
मंगलौर (उत्तरा.)	29 48	77 52	−18 32
मनेरी (उत्तरा.)	30 41	78 30	−16 00
मंसूरी (उत्तरा.)	30 27	78 05	−17 40
मऊ (उ. प्र.)	25 17	81 23	−04 28
मऊ-ऐम्मा (उ. प्र.)	25 42	81 55	−02 20
मऊनाथभंजन (उ. प्र.)	25 57	83 33	+04 12
मऊरानीपुर (उ. प्र.)	25 15	79 08	−13 28
मखदूमनगर (उ. प्र.)	26 28	82 46	+01 04
मछलीशहर (उ. प्र.)	25 41	82 25	−00 20
मथुरा (उ. प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मन्दावर	29 30	78 08	−17 28
मवाना (उ. प्र.)	29 06	77 55	−18 20
मलीहाबाद (उ. प्र.)	26 55	80 43	−07 08
महमूदाबाद (उ. प्र.)	27 18	81 07	−05 32
महरौली (उ. प्र.)	24 35	78 43	−15 08
महाराजगंज (उ. प्र.)	26 07	84 29	+07 56
महाराजगंज (उ. प्र.)	27 09	83 34	+04 16
महोबा (उ. प्र.)	25 17	79 52	−10 32
मंसूरपुर (उ. प्र.)	29 24	77 41	−19 16
माच्छीवाड़ा (पं.)	30 56	76 14	−25 04
मानसा (मण्डी) पं.	29 59	75 23	−28 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
माहम (हरि.)	28 58	76 19	−24 44
मार्तण्ड (ज. का.)	33 48	75 18	−28 48
मांगरोल (राज.)	25 21	76 30	−24 00
मारवाड़ जंक्शन (रा.)	25 44	73 45	−35 00
मावली (राज.)	24 48	73 58	−34 08
मानपुर (म. प्र.)	23 46	81 08	−05 28
माणिकपुर (उ. प्र.)	25 04	81 07	−05 32
मिनीमर्ग (ज. का.)	34 49	75 02	−29 52
मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)	25 09	82 35	+00 20
मिसरिख (उ. प्र.)	27 27	80 31	−07 56
मुकेरिया (पं.)	31 57	75 37	−27 32
मुबारिकपुर (पं.)	30 37	76 51	−22 36
मुक्तसर (पं.)	30 29	74 31	−31 56
मुबारकपुर (हि. प्र.)	31 44	75 59	−26 04
मुज़फ्फराबाद (ज. का.)	34 22	73 31	−35 56
मुकन्दबाड़ा (राज.)	24 49	76 01	−25 56
मुनाबाओ (राज.)	25 43	70 15	−49 00
मुरवाड़ा (म. प्र.)	23 51	80 24	−08 24
मुरैना (म. प्र.)	26 30	78 09	−17 24
मुलताई (म. प्र.)	21 46	78 15	−17 00
मुंगराबादशाहपुर (उ.)	25 40	82 11	−00 16
मुज़फ्फरनगर (उ. प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुगलसराय (उ. प्र.)	25 18	83 07	+02 28
मुबारकपुर (उ. प्र.)	26 05	83 18	+03 12
मुरादाबाद (उ. प्र.)	28 51	78 49	−14 44
मुरादनगर (गा.)उ. प्र.	28 47	77 30	−20 00
मुस्किरा (उ. प्र.)	25 40	79 48	−10 48
मुहम्मदाबाद (उ. प्र.)	26 02	83 23	+03 32
मुहम्मदी (उ. प्र.)	27 57	80 13	−09 08
मुम्बई (महा.)	19 00	72 54	−38 24
मेड़ता सिटी (राज.)	26 40	74 06	−33 36
मेड़ता रोड़ (राज.)	26 44	73 55	−34 20
मेरठ (उ. प्र.)	28 59	77 42	−19 12
मेहनगर (उ. प्र.)	25 53	83 07	+02 28
मेहन्दाबाल (उ. प्र.)	26 59	83 07	+02 28

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मैहतपुर (हि. प्र.)	31 22	76 17	−24 52
मैहर (म. प्र.)	24 16	80 45	−07 00
मैनपुरी (उ. प्र.)	27 14	79 01	−13 56
मैलानी (उ. प्र.)	28 17	80 21	−08 36
मैसूर (कर्ना.)	12 18	76 42	−23 12
मोगा (पं.)	30 48	75 10	−29 20
मोरांवली (पं.)	31 18	76 01	−25 56
मोरिण्डा (पं.)	30 48	76 30	−24 00
मोहाली (पं.)	30 43	76 42	−23 12
मोहाना (हरि.)	29 04	76 50	−22 40
मोहनगढ़ (राज.	27 17	71 18	−44 48
मोलनेऊँ (उत्तरा.)	30 22	78 36	−15 36
मौडहा (उ. प्र.)	25 41	80 07	−09 32
यमुनानगर (हरि.)	30 08	77 16	−20 56
रतनगढ़ (राज.)	28 05	74 39	−31 24
रघुगढ़ (म. प्र.)	24 27	77 12	−21 12
रतलाम (म. प्र.)	23 19	75 04	−29 44
रसरा (उ. प्र.)	25 51	83 51	+05 24
राजपुरा (पं.)	30 29	76 34	−23 44
रामपुरा फूल (पं.)	30 17	75 14	−29 04
रायकोट (पं.)	30 41	75 36	−27 36
राहों (पं.)	31 03	76 07	−25 32
रामपुर बुशैहर (हि.)	31 28	77 39	−19 24
राजगढ़ (हि. प्र.)	30 52	77 22	−20 32
रायसन (हि. प्र.)	32 05	77 07	−21 32
रादौर (हरि.)	30 02	77 06	−21 36
रामनगर (ज. का.)	32 50	75 22	−28 32
राजौरी (ज. का.)	33 23	74 18	−32 48
रामबन (ज. का.)	33 14	75 15	−29 00
रानीवाड़ा (राज.)	24 46	72 13	−41 08
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	−29 20
रामगढ़ (जैसलमेर)	27 23	70 30	−48 00
रायसिंहनगर (राज.)	29 32	73 27	−36 12
राजगढ़ (म. प्र.)	23 56	76 58	−22 08
राजपुर (म. प्र.)	25 23	81 09	−05 24

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
रामनगर (म. प्र.)	22 13	80 47	−06 52
रामपुरा (म. प्र.)	24 28	75 26	−28 16
रायसेन (म. प्र.)	23 20	77 48	−18 48
राहतगढ़ (म. प्र.)	23 47	78 22	−16 32
राजनान्दगांव (छत्ती.)	21 06	81 02	−05 52
रामानुजगंज (छत्ती.)	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़ (छत्ती.)	21 55	83 26	+03 44
रायपुर (छत्ती.)	21 14	81 38	−03 28
रालम (उत्तरा.)	30 16	80 12	−09 12
रानीखेत (उत्तरा.)	29 39	79 25	−12 20
राजगढ़ी (उत्तरा.)	30 52	78 49	−14 44
रामनगर (उत्तरा.)	29 24	79 07	−13 32
राजपुर (उत्तरा.)	30 25	78 06	−17 36
रामपुर (उत्तरा.)	28 49	79 02	−13 52
रायपुर (उत्तरा.)	30 19	78 06	−17 36
राजाखेड़ा (उ. प्र.)	26 55	78 11	−17 16
राथ (उ. प्र.)	25 35	79 34	−11 44
राबर्ट्सगंज (उ. प्र.)	24 42	83 04	+02 16
रामनगर (उ. प्र.)	25 17	83 02	+02 08
रायबरेली (उ. प्र.)	26 13	81 14	−05 04
राँची (झार.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट (गुज.)	22 18	70 47	−46 52
रामेश्वरम् (ता.)	09 17	79 22	−12 32
रिवाड़ी (हरि.)	28 12	76 40	−23 20
रिवासा (हरि.)	28 48	75 57	−26 12
रियासी (ज. का.)	33 04	74 53	−30 28
रीगस (राज.)	27 21	75 34	−27 44
रीवा (म. प्र.)	24 32	81 18	−04 48
रूपनगर (राज.)	26 47	74 54	−30 24
रूद्रपुर (उत्तरा.)	30 26	77 59	−18 04
रूद्रप्रयाग (उत्तरा.)	30 16	78 59	−14 04
रूड़की (उत्तरा.)	29 52	77 53	−18 28
रूदौली (उ. प्र.)	26 45	81 45	−03 00
रेहली (म. प्र.)	23 38	79 05	−13 40
रैना (हरि.)	29 28	74 54	−30 24
रोपड़ (रूपनगर) पं.	30 57	76 32	−23 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
रोहड़ू (हि. प्र.)	31 12	77 44	−19 04
रोडी (हरि.)	29 44	75 15	−29 00
रोहतक (हरि.)	28 54	76 38	−23 28
लहरगागा (पं.)	29 55	75 54	−26 04
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
लछमनगढ़ (राज.)	27 45	75 04	−29 44
लखनादोन (म. प्र.)	22 36	79 36	−11 36
लश्कर (ग्वा.) म.प्र.	26 13	78 10	−17 20
लक्सर (उत्तरा.)	29 49	78 02	−17 52
लम्बगाँव (उत्तरा.)	30 29	78 31	−15 56
लखनऊ (उ. प्र.)	26 51	80 55	−06 20
लखीमपुर (उ. प्र.)	27 57	80 46	−06 56
लखेड़ी (म. प्र.)	25 40	76 10	−25 20
ललितपुर (उ. प्र.)	24 41	78 25	−16 20
लहरपुर (उ. प्र.)	27 38	80 57	−06 12
लहार (उ. प्र.)	26 12	78 57	−14 12
लाहौल स्पीति (हि.प्र.)	31 28	77 39	−19 24
लाडवा (हरि.)	29 59	77 05	−21 40
लाठी (राज.)	27 03	71 30	−44 00
लामटा (म. प्र.)	22 08	80 07	−09 32
लालकुआं (उत्तरा.)	29 06	79 32	−11 52
लालढाग (उत्तरा.)	29 50	78 19	−16 44
लुधियाना (पं.)	30 55	75 54	−26 24
लूनी (राज.)	26 00	72 52	−38 32
लिसकोट (उत्तरा.)	29 46	79 01	−13 56
लेह (ज. का.)	34 10	77 40	−19 20
लैंसडाऊन (उत्तरा.)	29 50	78 41	−15 16
लोहियांखास (पं.)	31 08	75 28	−28 04
लोहारू (हरि.)	28 16	75 45	−27 00
वर्धा (महा.)	20 42	78 40	−15 20
वलसाड़ (गुज.)	20 40	72 55	−38 20
वाराणसी (उ. प्र.)	25 20	83 00	+02 00
विशाखापट्टनम	17 42	83 20	+03 00
विदिशा (म. प्र.)	23 32	77 49	−18 44
विकासनगर (उत्तरा.)	30 29	77 50	−18 40
वूलर (ज. का.)	34 20	74 37	−31 22

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैंडर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
वैष्णोदेवी (ज. का.)	33 03	74 56	−30 16
वैधन (म. प्र.)	24 04	82 20	−00 40
शहडोल (म. प्र.)	23 20	81 21	−04 36
शाहकोट (पं.)	31 03	75 19	−28 44
शाहपुर (पं.)	32 17	75 46	−26 56
शाहपुर (हि. प्र.)	32 14	76 12	−25 12
शाहाबाद (हरि.)	30 10	76 55	−22 20
शाहदरा (दिल्ली)	28 40	77 20	−20 40
शाहगढ़ (राज.)	27 08	69 58	−50 08
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	−26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	−30 40
शाजापुर (म. प्र.)	23 26	76 16	−24 56
शाहपुरा (म. प्र.)	23 11	80 42	−07 12
शाहजहाँपुर (उ. प्र.)	27 53	79 55	−10 20
शिमला (हि. प्र.)	31 06	77 10	−21 20
शिवपुरी (म. प्र.)	25 26	77 39	−19 24
शिकोहाबाद (उ. प्र.)	27 06	78 36	−15 36
शिलांग (मेघा.)	25 34	91 56	+37 44
शेरपुर (हि. प्र.	32 34	75 59	−26 04
शेरकिला (ज. का.)	36 05	74 04	−33 44
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	−40 36
शेरगढ़ (झालावाड़)	24 41	76 32	−23 52
श्योपुर (म. प्र.)	25 40	76 42	−23 12
शोलापुर (महा.)	17 42	75 56	−26 16
श्रीनगर (ज. का.)	34 06	74 51	−30 36
श्रीगंगानगर (राज.)	29 49	73 50	−34 40
श्रीमाधोपुर (राज.)	27 25	75 32	−27 52
श्रीमोहनगढ़ (राज.)	27 17	71 12	−45 12
श्रीनगर (गढ़वा) उत्त.	30 13	78 47	−14 52
संगरूर (पं.)	30 12	75 53	−26 28
सरहिन्द (पं.)	30 38	76 23	−24 28
समराला (पं.)	30 51	76 11	−25 16
सनौर (पं.)	30 18	76 30	−24 00
समाना (पं.)	30 09	76 12	−25 12
सपाटू (हि. प्र.)	30 59	76 59	−22 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सरकाघाट (हि. प्र.)	31 43	76 22	−24 32
सन्थोल (हि. प्र.)	31 59	76 45	−22 56
संतोखगढ़ (हि. प्र.)	31 21	76 20	−24 40
समदड़ी (राज.)	25 49	72 35	−39 40
सरदारशहर (राज.)	28 27	74 30	−32 00
सरूपसर (राज.)	29 22	73 37	−35 32
सवाईमाधोपुर (रा.)	25 59	76 30	−24 00
सतना (म. प्र.)	24 35	80 50	−06 40
सनावद (म. प्र.)	22 11	76 04	−25 44
सबलगढ़ (म. प्र.)	26 15	77 24	−20 24
सरदारपुर (म. प्र.)	22 39	74 59	−30 04
सक्ति (छत्ती.)	22 02	82 58	+01 52
सहसपुर (देह.) उत्तरा.	30 24	77 58	−18 08
सदाबाद (उ. प्र.)	27 27	78 03	−17 48
सम्भल (उ. प्र.)	28 35	78 33	−15 48
सरधना (उ. प्र.)	29 09	77 37	−19 32
सहसवां (उ. प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर (उ. प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सहानीकलां (उ. प्र.)	28 41	77 25	−20 20
सहानीखुर्द (उ. प्र.)	28 42	77 25	−20 20
समस्तीपुर (बि.)	25 55	85 50	+13 20
साम्बा (ज. का.)	32 33	75 07	−29 32
सांगानेर (राज.)	26 49	75 52	−26 32
सांचोर (राज.)	24 41	71 50	−42 40
साम्भर (राज.)	26 55	75 10	−29 20
सादूलपुर (राज.)	28 39	75 24	−28 24
सागर (म. प्र.)	23 50	78 43	−15 08
सांची (म. प्र.)	23 29	77 44	−19 04
सारंगपुर (म. प्र.)	23 34	76 28	−24 08
सारनगढ़ (छत्ती.)	21 36	83 05	+02 20
सिरमौर (हि. प्र.)	30 45	77 30	−20 00
सिरसा (हरि.)	29 32	75 06	−29 56
सिवानी (हरि.)	28 55	75 37	−27 32
सिरोही (राज.)	24 54	72 55	−38 20
सिवाना (राज.)	25 37	72 27	−40 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सिरोही (राज.)	24 53	72 54	−38 24
सिरोंज (म. प्र.)	24 06	77 42	−19 12
सिहोरा (म. प्र.)	23 29	80 07	−09 32
सिहोर (म. प्र.)	23 12	77 05	−21 40
सिंगरामऊ (उ. प्र.)	25 57	82 23	−00 28
सिधौली (उ. प्र.)	27 17	80 50	−06 40
सिरसागंज (उ. प्र.)	27 03	78 42	−15 12
सिलीगुड़ी (बं.)	26 42	88 26	+23 44
सीकर (राज.)	27 36	75 09	−29 24
सीधी (म. प्र.)	24 25	81 53	−02 28
सीतापुर (उ. प्र.)	27 34	80 41	−07 16
सीतामढ़ी (बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां (बि.)	26 12	84 23	+07 32
सुजानपुर (पं.)	32 19	75 26	−28 16
सुल्तानपुर लोधी (पं.)	31 11	75 12	−29 12
सुनाम (पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुन्दरनगर (हि. प्र.)	31 33	76 54	−22 24
सुजानपुर टिहरा (हि.)	31 50	76 31	−23 56
सुजानगढ़ (राज.)	27 42	74 30	−32 00
सुआर (उ. प्र.)	29 02	79 03	−13 48
सुल्तानपुर (उ. प्र.)	26 16	82 04	−01 44
सूरतगढ़ (राज.)	29 19	73 57	−34 12
सूरत (गुज.)	21 10	72 50	−38 40
सेओनी (म. प्र.)	22 05	79 32	−11 52
सेओनीमालवा (म. प्र.)	22 27	77 28	−20 08
संधवा (म. प्र.)	21 41	75 06	−29 36
सेओरी नारायण (छत्ती.)	21 44	82 35	+00 20
सेमरिया (उ. प्र.)	24 16	79 54	−10 24
सैदपुर (उ. प्र.)	25 33	83 11	+02 44
सोहाणां (पं.)	30 42	76 42	−23 12
सोलन (हि. प्र.)	30 55	77 09	−21 24
सोनीपत (हरि.)	28 59	77 01	−21 56
सोपूर (ज. का.)	34 19	74 30	−32 00
सोनामर्ग (ज. का.)	34 19	75 20	−28 40
सोन्दर (ज. का.)	33 29	75 57	−26 12
सोहागपुर (म. प्र.)	22 42	78 12	−17 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सोमेश्वर (उत्तरा.)	29 47	79 36	−11 36
सोनवां (उ. प्र.)	27 40	81 45	−03 00
सोमनाथ (गुज.)	21 04	70 26	−48 16
हमीरा (पं.)	31 27	75 19	−28 44
हरयाणा (पं.)	31 36	75 48	−26 48
हरीके पत्तन (पं.)	31 30	74 57	−30 12
हमीरपुर (हि. प्र.)	31 42	76 30	−24 00
हड़सर (हि. प्र.)	32 21	76 33	−23 48
हरिपुर (हि. प्र.)	32 39	76 11	−25 16
हरिपुरधार (हि. प्र.)	30 53	77 28	−20 08
हसनपुर (हरि.)	27 59	77 29	−20 04
हनुमानगढ़ (राज.)	29 35	74 21	−32 36
हट्टा (म. प्र.)	24 07	79 36	−11 36
हरदा (म. प्र.)	22 20	77 06	−21 36
हरिद्वार (उत्तरा.)	29 58	78 10	−17 20
हरकीदून (उत्तरा.)	30 58	78 24	−16 24
हल्द्वानी (उत्तरा.)	29 13	79 31	−11 56
हमीरपुर (उ. प्र.)	25 57	80 09	−09 24
हरदोई (उ. प्र.)	27 25	80 07	−09 32
हरपालपुर (उ. प्र.)	25 17	79 20	−12 40
हरिनागब (उ. प्र.)	27 09	84 19	+07 16
हरैया (उ. प्र.)	26 47	82 36	+00 24
हलिया (उ. प्र.)	24 48	82 20	−00 40
हसनपुर (उ. प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर टा. (पं.)	31 57	75 37	−27 32
हाटकोटी (हि. प्र.)	31 09	77 44	−19 04
हांसी (हरि.)	29 06	76 00	−26 00
हाजीपुर (उ. प्र.)	25 41	85 13	+10 52
हाथरस (उ. प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़ (उ. प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हावड़ा (बं.)	22 25	88 23	+23 32
हिसार (हरि.)	29 10	75 46	−26 56
हुबली (कर्ना.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	17 24	78 30	−16 00
होशियारपुर (पं.)	31 32	75 57	−26 12
होशंगाबाद (म. प्र.)	22 45	77 43	−19 08

गुजरात राज्य के नगरों के अक्षांश-रेखांश व स्टै. अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं.	सैं.
अंकलेश्वर	21	36	73	00	–38	00
अंजार	23	08	70	01	–49	56
अमरापुर	21	45	70	02	–49	52
अमरेली	21	37	71	14	–45	04
अमोद	21	59	72	54	–38	24
अरामदा	22	28	69	08	–53	28
अहमदाबाद	23	02	72	40	–39	20
आनन्द	22	34	72	56	–38	16
आनन्दपुर	22	10	71	08	–45	28
ईदर	23	50	73	00	–38	00
उपलेटा	21	44	70	17	–48	52
ओलपाड़	21	20	72	49	–38	44
कच्छ (भुज)	22	50	70	25	–48	20
कटाना	22	18	72	49	–38	44
कलोल (महेसाणा)	23	15	72	29	–40	04
काटपुर	21	30	72	46	–38	56
कांडला	23	03	70	11	–49	16
कुटियाना	21	39	71	04	–45	44
कोरल	21	53	73	10	–37	20
खम्भात	22	20	72	38	–39	28
खम्भालिया	22	12	69	39	–51	24
खावड़ा	23	51	69	43	–51	08
खिजारिया	21	45	71	14	–45	04
गोधरा	22	45	73	38	–35	28
छोटाउदेपुर	22	19	73	15	–37	00
जखाऊ	23	13	68	43	–55	08
जसदान	22	02	71	12	–45	12
जाफराबाद	20	52	71	22	–44	32
जामनगर	22	28	70	04	–49	44
जारोद	22	26	73	20	–36	40
जूनागढ़	21	31	70	28	–48	08
जेतपुर	21	44	70	37	–47	32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं.	सैं.
जोड़िया	22	42	70	18	–48	48
झिंजूवाड़ा	23	30	71	38	–43	28
डीसा	24	15	72	10	–41	20
ढोला	20	51	71	48	–42	48
तनखला	21	57	72	50	–38	40
तारा	23	59	71	50	–42	40
तालाला (जूना.)	21	02	70	32	–47	48
तालाजा	21	21	72	03	–41	48
थराड़	24	24	71	38	–43	28
दभोई	22	11	73	26	–36	16
दासदा	23	19	71	50	–42	40
देहज	21	42	72	35	–39	40
देवदार	24	07	71	50	–42	40
दोहाद	22	47	74	18	–32	48
द्वारिका	22	14	68	58	–54	08
धर्मपुर	20	32	73	11	–37	16
धान्दुका	22	22	75	59	–42	04
धारी	21	20	71	01	–45	56
धुले	20	54	74	47	–30	52
धोराजी	21	44	70	27	–48	12
नडियाद	22	41	72	55	–38	20
नवसारी	20	51	72	55	–38	20
नारा	23	39	69	10	–53	20
नालिया	23	18	68	50	–54	40
पड़ाना	22	21	69	52	–50	16
पाटन	23	50	72	07	–41	16
पाटरी	23	08	71	10	–45	20
पालनपुर	24	10	72	26	–40	16
पोरबन्दर	21	38	69	36	–51	36
बगासरा	20	58	70	56	–46	16
बचाऊ	23	20	70	18	–48	48
बजाना	23	04	71	45	–43	00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं.	सैं.
बड़ोदा	22	18	73	12	–37	12
बरूच	21	38	72	56	–38	16
बुलसार	20	38	72	56	–38	16
बोताड़	22	10	71	40	–43	20
भंगोर	22	02	69	55	–50	20
भरूच	21	40	72	58	–38	08
भावनगर	21	46	72	09	–41	24
भुज	23	16	69	40	–51	20
महेसाणा	23	37	72	28	–40	08
महुआ	21	05	71	48	–42	48
माधवपुर	21	18	70	01	–49	56
मालसार	22	00	73	22	–36	32
मेंदारदा	21	19	70	26	–48	16
रतनपुर	21	44	73	16	–36	56
राजकोट	22	18	70	47	–46	52
रापार	23	34	70	38	–47	28
लखपत	23	49	68	47	–54	52
लिम्बड़ा	20	49	71	43	–43	08
लूनावाड़ा	23	08	73	37	–35	32
वड़ोदरा	22	18	73	12	–37	12
वलसाड़	20	40	72	55	–38	20
वादनगर	23	47	72	38	–39	28
वीजापुर	23	34	72	45	–39	00
सन्तालपुर	23	45	71	10	–45	20
सुरेन्द्रनगर	22	42	71	41	–43	16
सूरत	21	10	72	50	–38	40
सिहोर	21	42	71	58	–42	08
सोनगढ़	20	59	70	29	–48	04
सोमनाथ	21	00	70	30	–48	00
हडोल	23	55	73	13	–37	08
हिम्मतनगर	23	36	72	57	–38	12

विदेशी नगरों के अक्षांश रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। **ज्ञातव्य** रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। **जैसे– एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। पं. विवेक शर्मा

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
ASBURY Park (N.J.)(E.T.)*	U.S.A.	40 13 उ.	74 01 प.	+3 56	75 00 प.	+10 30
अर्थीस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	-24 32	30 00 पू.	+03 30
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	-21 12	180 00 पू.	-06 30
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	-02 48	75 00 प.	+10 30
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	-22 20	60 00 पू.	+01 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	-31 00	90 00 प.	+11 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	-38 56	90 00 प.	+11 30
ऐबटसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	-10 00	120 00 प.	+13 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	-40 28	15 00 पू.	+04 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)	England	55 52 उ.	3 12 प.	-12 48	00 00	+05 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 30 प.	-34 00	105 00 प.	+12 30
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	-5 00	00 00	+05 30
ईस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
इस्तबूल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	-04 00	30 00 पू.	+03 30
काटमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	-03 44	86 15 पू.	-00 15
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	-73 20	120 00 पू.	-02 30
कुवैत	Kuwait	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
कराची	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	-31 48	75 00 पू.	+00 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00
कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	-08 00	67 30 पू.	+01 00
कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	-07 28	82 30 पू.	+00 00
कोलम्बो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	-10 56	82 30 पू.	00 00
कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	-10 00	15 00 पू.	+04 30
कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	-39 56	75 00 प.	+10 30
कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	-09 20	90 00 प.	+11 30
कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	-36 12	105 00 प.	+12 30
ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	-35 24	15 00 पू.	+04 30
जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	105 00 पू.	-01 30
जाफना	Sri Lanka	09 40 उ.	80 00 पू.	-10 00	82 30 पू.	00 00
जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
टोक्यो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	-03 30
टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	-35 48	120 00 प.	+13 30
डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	-04 08	00 00	+05 30
डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	-32 12	75 00 प.	+10 30
डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	-25 00	00 00 प.	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट(Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकांक	Thailand	13 43 उ.	100 31 पु.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीजिंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रैडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-19 12	75 00 प.	+10 30
बेकर्जफील्ड (Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 पू.	+13 30
ब्रिसटल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30
मस्कट	(Oman)	23 37 उ.	58 35 पू.	-5 40	60 00 पू.	+01 30
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मौंट्रियाल (Montreal)*	Canada (E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada (E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
*रोम (Rome)	Italy	41 55 उ.	12 27 पू.	-10 12	15 00 पू.	+04 30
लाहौर (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एजलंस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वौलवरहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada (P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada (P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वैलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकांगो (C.T.)*	U.S.A.	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A (P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A (P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैम्लटन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	39 08 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (–) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (–) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०′ के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०′ पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (–) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण–मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर –२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (–२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे–इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।

–शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या – करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश [illegible]		अक्षांश [illegible]		अक्षांश [illegible]		अक्षांश [illegible]		अक्षांश [illegible]		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
19 जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्टू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अक्तूबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग २/३ मिनट घटाने तथा अस्त में २/३ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में ११ अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें ज़िला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय ६ घण्टे १ मिनट तथा सूर्यास्त १८ घण्टे ४४ मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार-१ घण्टे ०४ मिनट घटाने से हमें ५ घण्टे ५९ मिनट ५६ सैकेण्ड और १८ घण्टे ४२ मिनट २६ सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्तू	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार मिं. सैं.
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
कोटरवाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौजी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३/४ मिनट घटाने तथा अस्त में ३/४ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	6 59	17 20	7 20	17 40	7 32	17 47	7 17	17 24	7 05	17 43	6 20	16 59	6 48	17 15	1
2	35	34	29	31	23	30	21	33	6 59	21	20	41	32	48	17	25	05	44	21	17 00	48	16	2
3	35	35	29	32	23	31	21	34	7 00	21	21	43	33	49	17	25	06	44	21	00	48	17	3
4	35	36	29	33	24	32	22	35	00	22	21	43	33	50	18	26	06	45	21	01	48	17	4
5	35	36	29	34	24	32	22	35	00	23	21	43	33	51	18	27	06	45	22	02	49	18	5
6	35	37	29	35	24	33	22	36	00	24	21	44	33	51	18	28	06	46	22	02	49	19	6
7	35	38	29	36	24	34	22	37	00	24	22	45	33	52	18	28	07	47	22	03	49	20	7
8	35	39	29	36	24	35	22	38	00	25	22	46	33	52	18	29	07	47	22	04	49	20	8
9	35	40	29	37	24	36	22	39	01	26	22	46	33	53	18	30	07	48	22	04	49	21	9
10	35	40	29	38	24	37	22	39	01	26	22	47	33	54	18	31	07	49	22	05	49	22	10
11	35	41	29	39	24	38	22	40	01	27	22	48	33	55	18	32	07	49	23	06	49	23	11
12	35	42	29	39	24	39	22	41	01	28	22	49	33	56	18	32	07	50	23	06	49	23	12
13	35	43	29	40	24	40	22	42	01	29	22	50	33	57	18	33	07	51	23	07	49	24	13
14	35	44	29	41	24	40	22	43	01	30	21	50	33	58	18	34	07	51	23	08	49	25	14
15	35	45	29	42	24	41	22	44	01	30	21	51	33	17 59	18	35	07	52	23	09	49	26	15
16	35	46	29	43	24	42	22	45	01	31	21	52	33	18 00	18	36	07	53	23	09	49	26	16
17	34	47	29	44	24	42	21	46	01	32	21	53	33	01	18	37	07	53	23	10	49	27	17
18	34	47	28	46	23	43	21	46	00	33	21	53	32	01	17	38	07	54	23	11	49	28	18
19	34	48	28	47	23	44	21	47	00	34	21	54	32	02	17	39	07	55	23	11	49	29	19
20	34	49	28	46	23	45	21	48	00	34	21	55	32	02	17	40	07	56	23	12	49	29	20
21	33	50	27	47	23	46	20	48	00	35	20	56	32	03	17	41	06	56	23	13	49	30	21
22	33	51	27	48	22	47	20	49	7 00	36	21	56	32	04	16	42	06	57	22	13	49	31	22
23	33	52	27	49	22	48	20	50	6 59	37	20	57	31	05	16	43	06	58	22	14	48	32	23
24	32	53	27	50	21	49	20	51	59	37	20	58	31	06	16	43	06	59	22	15	48	32	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	59	38	19	17 59	31	08	15	44	06	17 59	22	16	48	33	25
26	31	55	26	52	21	50	19	53	59	39	19	18 00	30	08	15	44	05	18 00	22	16	47	34	26
27	31	56	25	53	20	51	19	54	59	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	27
28	30	57	25	54	20	52	18	55	58	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	28
29	30	58	24	55	19	53	18	56	57	41	18	02	30	10	13	47	05	02	21	18	46	36	29
30	29	17 58	23	56	19	54	17	56	57	42	17	03	29	11	13	48	05	02	21	19	46	37	30
31	7 29	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	6 57	17 43	7 17	18 03	7 29	18 12	7 12	17 49	7 04	18 03	6 20	17 20	6 46	17 38	31
फर.	28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	6 56	17 44	7 16	18 04	7 28	18 13	7 12	17 50	7 04	18 04	6 20	17 20	6 45	17 38	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	59	56	44	16	05	28	14	11	50	03	05	20	21	45	39	2
3	27	02	21	17 59	17	57	15	17 59	55	45	15	06	27	15	11	51	03	06	19	22	44	40	3
4	26	03	21	18 00	16	58	14	18 00	55	46	15	06	26	15	10	52	03	06	19	22	44	41	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	01	54	47	14	07	26	16	09	53	02	07	18	23	43	41	5
6	25	05	21	02	15	18 00	13	02	53	47	14	08	25	17	09	54	02	08	18	23	43	42	6
7	24	06	19	02	14	01	13	03	53	48	14	08	25	18	08	55	01	08	17	24	42	43	7
8	7 23	18 07	7 18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	6 52	17 49	7 13	18 09	7 24	18 18	7 07	17 56	7 00	18 09	6 17	17 25	6 41	17 43	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	6 52	17 50	7 12	18 10	7 23	18 19	7 07	17 56	7 00	18 09	6 16	17 25	6 41	17 44	9
10	21	08	16	05	11	04	10	06	51	50	11	11	23	19	06	57	6 59	10	16	26	40	45	10
11	20	09	15	06	11	05	09	06	50	51	10	12	22	20	05	58	59	11	15	26	39	45	11
12	20	10	14	07	10	06	09	07	50	52	10	12	21	21	04	17 59	58	11	15	27	39	46	12
13	19	11	13	08	09	06	08	08	49	53	09	13	20	22	03	18 00	58	12	14	28	38	47	13
14	17	12	12	09	08	07	07	09	48	53	08	14	19	23	03	00	57	12	14	28	37	47	14
15	18	13	11	10	07	08	06	09	47	54	07	14	18	23	02	01	57	13	13	29	37	48	15
16	16	14	10	11	06	09	06	10	47	55	06	15	18	24	01	02	56	13	12	29	36	49	16
17	15	14	10	11	05	09	05	11	46	55	06	16	17	25	7 00	03	55	14	12	30	35	49	17
18	13	15	09	12	04	10	04	12	45	56	05	16	16	26	6 59	04	55	14	11	30	34	50	18
19	14	16	08	13	03	11	03	13	44	57	04	17	15	26	58	04	54	15	10	31	34	50	19
20	12	17	07	13	02	11	02	13	43	57	03	18	14	27	57	05	53	15	10	31	33	51	20
21	11	18	06	14	01	12	01	14	42	58	02	18	13	28	56	06	52	16	09	32	32	52	21
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	42	59	01	19	12	28	55	07	51	17	08	32	31	52	22
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	41	17 59	7 00	20	11	29	54	07	50	17	07	33	30	53	23
24	08	20	03	17	58	14	58	15	40	18 00	6 59	20	10	29	53	08	50	17	07	33	29	53	24
25	07	21	02	18	57	15	57	16	39	01	59	21	09	30	52	09	49	18	06	34	29	54	25
26	06	22	01	19	56	15	56	16	38	01	58	21	08	31	51	09	48	18	05	34	28	55	26
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	37	02	57	23	07	31	50	10	47	18	04	35	27	55	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 36	18 02	6 55	18 23	7 06	18 32	6 49	18 11	6 47	18 19	6 03	17 35	6 26	17 56	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 34	18 03	6 55	18 23	7 05	18 33	6 47	18 12	6 46	18 20	6 01	17 37	6 25	17 56	मार्च
2	01	25	56	21	52	19	52	19	33	04	54	24	04	33	46	13	45	20	6 00	38	24	57	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	32	05	53	24	03	34	45	14	44	21	5 59	38	23	57	3
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	30	05	52	25	02	34	44	14	43	21	58	38	22	58	4
5	57	27	53	23	49	20	49	22	29	06	51	26	01	35	43	15	42	22	57	39	21	58	5
6	56	28	51	24	48	21	48	22	28	06	50	26	7 00	35	41	16	42	22	56	39	20	59	6
7	55	29	50	25	47	21	47	23	27	07	49	27	6 59	36	40	18	41	23	56	40	19	17 59	7
8	54	29	49	25	45	22	45	23	26	07	48	27	58	36	39	17	40	23	55	40	18	18 00	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	25	08	46	28	57	37	38	18	39	23	54	40	17	00	9
10	51	31	46	27	43	23	43	24	24	08	45	28	56	38	37	18	38	24	53	41	16	01	10
11	50	31	45	27	42	24	42	25	23	09	44	29	55	39	36	19	37	24	52	41	15	01	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	22	09	43	30	54	39	35	20	36	25	51	42	14	02	12
13	48	33	43	29	40	26	40	27	21	10	42	31	53	40	33	20	35	25	50	42	13	02	13
14	46	34	42	29	39	27	38	27	20	11	41	31	52	40	32	21	34	26	49	42	12	03	14
15	45	34	40	29	38	27	37	28	19	11	40	32	50	41	31	21	33	26	48	43	11	03	15
16	44	35	39	30	36	28	36	28	18	12	39	32	49	41	30	22	32	26	47	43	10	03	16
17	43	36	38	31	35	28	35	29	17	12	38	33	48	42	29	23	31	27	46	44	09	04	17
18	41	36	36	31	34	29	34	29	16	13	37	33	47	42	27	23	31	27	45	44	08	04	18
19	40	37	35	32	33	30	33	30	15	13	36	34	46	43	26	24	30	27	45	44	07	05	19
20	39	38	34	33	31	31	31	30	14	14	35	34	45	43	25	25	29	27	44	45	06	05	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	13	14	33	35	44	44	24	25	28	28	43	45	05	06	21
22	36	39	32	34	29	32	29	31	12	15	32	35	43	44	23	26	27	28	42	45	04	07	22
23	35	40	31	34	28	32	28	32	11	15	31	36	41	45	21	26	26	28	41	46	03	07	23
24	34	40	30	35	26	33	26	32	10	16	30	36	40	45	20	27	25	29	40	46	02	07	24
25	32	41	28	36	25	33	25	33	09	16	29	37	39	46	19	28	24	29	39	46	01	08	25
26	31	42	27	37	24	34	24	33	08	17	28	37	38	46	18	28	23	29	38	47	6 00	08	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 07	18 17	6 27	18 38	6 37	18 47	6 17	18 29	6 22	18 30	5 37	17 47	5 59	18 09	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 05	18 18	6 26	18 38	6 36	18 47	6 15	18 29	6 21	18 30	5 36	17 47	5 57	18 09	28
29	27	44	23	39	20	35	21	36	04	18	25	38	35	48	14	30	20	31	35	48	57	09	29
30	26	44	22	39	19	36	20	36	03	19	24	39	34	18 49	13	31	19	32	34	48	56	10	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 02	18 19	6 23	18 39	6 32	19 49	6 12	18 31	6 18	18 32	5 33	17 48	5 55	18 10	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 01	18 20	6 22	18 40	6 31	19 50	6 10	18 32	6 17	18 32	5 33	17 48	5 54	18 11	अप्रै.
2	22	46	18	42	15	38	16	38	6 00	20	21	40	30	51	09	32	16	32	32	48	53	11	2
3	21	47	17	42	14	39	15	38	5 59	21	20	41	29	51	08	33	15	33	31	49	52	11	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	58	21	19	41	28	52	07	34	15	33	30	49	51	12	4
5	19	48	15	43	12	40	13	39	57	22	18	42	27	52	06	34	14	33	29	49	50	12	5
6	17	49	13	44	11	41	12	40	56	22	16	42	26	53	05	35	13	34	28	50	49	13	6
7	16	50	12	44	10	41	11	40	55	23	15	43	24	53	03	35	12	34	28	50	48	13	7
8	15	50	11	45	09	82	09	41	54	23	14	43	23	54	02	36	11	34	24	50	47	14	8
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	53	24	13	44	22	54	01	37	10	35	26	51	46	14	9
10	16	52	09	47	06	43	07	43	52	24	12	44	21	55	6 00	37	09	35	25	51	45	15	10
11	11	52	07	47	05	43	06	43	50	25	11	45	20	55	5 59	38	08	35	24	51	44	15	11
12	10	53	06	48	03	44	05	44	49	25	10	45	19	56	58	39	07	36	23	52	43	15	12
13	09	54	05	48	02	44	04	44	48	26	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	42	16	13
14	08	54	04	49	01	45	03	45	47	26	08	46	17	57	55	40	05	37	21	53	41	16	14
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	47	26	08	46	16	57	55	40	05	37	21	53	41	16	15
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	45	27	06	47	15	58	52	42	02	38	20	53	39	17	16
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	44	28	05	48	14	58	52	42	02	38	19	54	38	18	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	43	28	04	48	13	59	51	42	01	38	18	54	37	18	18
19	02	58	57	53	56	48	58	47	43	28	03	49	12	59	51	42	6 01	38	18	54	37	19	19
20	01	58	56	54	55	49	57	48	42	29	02	49	11	00	49	43	5 59	39	17	55	35	19	20
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	41	29	01	50	10	00	49	44	59	40	16	55	34	20	21
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	41	29	6 01	50	10	00	49	45	59	40	15	55	33	20	22
23	58	00	53	56	52	51	54	50	40	30	5 59	51	08	01	47	45	57	41	14	56	23	21	23
24	57	01	52	57	51	51	53	51	39	31	59	52	07	02	46	46	56	41	14	56	32	21	24
25	56	02	51	57	50	52	52	51	38	31	58	52	06	03	45	46	55	41	13	57	31	21	25
26	55	02	50	57	49	53	51	52	37	32	57	53	05	04	44	47	55	42	12	57	30	22	26
27	54	03	49	58	48	53	50	52	36	32	56	53	04	04	43	47	54	42	11	57	29	22	27
28	53	04	48	58	47	54	49	53	35	33	55	54	03	05	42	48	53	43	11	58	28	23	28
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	34	34	54	54	03	05	41	49	53	43	10	58	27	23	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 33	18 34	5 53	18 55	6 02	19 06	5 40	18 49	5 52	18 43	5 09	17 59	5 26	18 24	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 32	18 35	5 53	18 55	6 01	19 07	5 34	18 50	5 51	18 44	5 09	17 59	5 25	18 24	मई
2	49	06	45	02	43	57	45	55	37	35	52	56	6 00	07	38	51	50	44	08	17 59	29	25	2
3	48	07	43	03	43	57	44	56	31	36	51	56	5 59	08	37	51	50	44	07	18 00	24	25	3
4	47	08	43	03	42	58	44	57	30	36	50	57	58	08	36	52	49	45	07	00	23	26	4
5	46	09	42	04	42	59	43	57	30	37	50	57	57	09	36	53	49	45	06	01	23	26	5
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	29	37	49	58	56	09	35	53	48	46	05	01	22	27	6
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	28	38	48	59	55	10	34	54	48	46	05	02	21	27	7
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	27	38	47	18 59	55	11	33	55	47	47	04	02	21	28	8
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	27	39	47	19 00	54	11	32	55	47	47	04	03	19	29	9
10	42	07	38	07	38	02	40	01	26	40	46	00	54	12	32	56	46	48	03	03	19	29	10
11	41	13	37	07	37	02	39	01	25	40	46	01	53	12	31	56	46	48	03	03	19	29	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 25	18 41	5 45	19 01	5 53	19 13	5 30	18 57	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 30	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 24	18 41	5 44	19 02	5 52	19 13	5 30	18 58	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 31	13
14	39	15	35	10	35	04	38	03	24	42	44	02	51	14	29	58	44	50	01	05	17	31	14
15	38	15	34	11	34	05	37	03	23	42	43	03	50	14	28	18 59	44	50	01	05	17	32	15
16	38	16	34	11	33	06	36	04	23	43	43	04	50	15	28	19 00	43	51	00	06	16	32	16
17	37	17	33	12	33	06	36	04	22	44	42	04	50	15	27	00	43	51	5 00	06	16	33	17
18	37	17	33	12	32	07	35	05	22	44	42	05	49	16	26	01	42	52	4 59	07	15	33	18
19	36	18	32	13	32	08	34	06	21	45	41	05	49	17	26	02	42	52	59	07	15	34	19
20	35	19	32	13	31	08	34	07	21	45	41	06	48	18	25	02	41	53	59	08	15	34	20
21	35	20	31	14	31	09	33	07	20	46	40	06	48	18	25	03	41	53	58	08	14	35	21
22	34	20	31	15	30	09	33	08	20	46	40	07	47	19	24	03	40	53	58	09	14	35	22
23	34	21	30	15	30	10	32	08	19	47	40	07	47	19	24	04	40	54	58	09	14	36	23
24	33	22	30	16	29	10	32	09	19	47	39	08	47	20	23	05	40	54	57	09	13	36	24
25	33	22	29	16	29	11	31	09	19	48	39	08	46	20	23	05	39	55	57	10	13	37	25
26	33	23	29	17	29	11	31	10	18	48	39	09	46	21	23	06	39	55	57	10	13	37	26
27	32	24	28	18	28	12	30	10	18	49	38	10	46	21	22	06	39	56	57	11	12	38	27
28	32	24	28	18	27	13	30	11	18	49	38	10	45	22	22	07	39	56	56	11	12	38	28
29	31	25	27	19	27	14	30	11	17	50	38	11	45	22	22	08	38	57	56	12	12	39	29
30	31	26	27	19	27	14	29	12	17	50	37	11	45	23	21	08	38	57	56	12	12	39	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 12	18 40	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 11	18 40	जून
2	30	27	26	21	26	16	28	13	17	52	37	12	44	24	21	10	38	59	55	13	11	40	2
3	30	27	26	22	26	16	28	14	16	52	37	13	44	25	20	10	38	59	55	14	11	41	3
4	30	28	26	23	26	17	28	14	16	53	37	13	44	25	20	11	38	18 59	55	14	11	41	4
5	30	28	27	23	26	17	28	15	16	53	36	14	44	26	20	11	38	19 00	55	15	11	42	5
6	30	29	26	23	26	18	28	15	16	54	36	14	44	26	20	12	38	00	55	15	11	42	6
7	29	29	26	24	26	18	28	16	16	54	36	15	44	27	20	12	38	00	55	15	11	43	7
8	29	30	26	24	25	19	28	16	16	54	36	15	44	27	20	13	38	00	55	16	11	43	8
9	29	30	26	24	25	19	28	17	16	55	36	15	44	28	20	13	38	01	55	16	11	43	9
10	29	30	26	25	25	19	28	17	16	55	36	16	44	28	20	13	38	01	55	16	11	44	10
11	29	31	26	25	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	11
12	29	31	26	26	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	12
13	29	32	26	26	25	20	28	19	16	57	36	17	43	29	20	15	38	03	55	18	11	45	13
14	29	32	26	26	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	55	18	11	45	14
15	29	32	26	27	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	15
16	29	33	26	27	25	21	28	19	16	58	37	18	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	16
17	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	43	30	20	15	38	04	56	19	12	46	17
18	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	44	31	20	16	38	04	56	19	12	46	18
19	30	34	26	27	25	22	29	20	17	58	37	19	44	31	20	16	39	04	56	19	12	46	19
20	30	34	26	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	19	12	47	20
21	30	34	27	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	21
22	30	34	27	28	26	23	30	21	17	59	37	20	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	22
23	31	34	27	28	26	23	30	22	17	59	38	20	44	32	20	17	39	05	57	20	13	47	23
24	31	35	27	29	27	23	30	22	18	18 59	38	20	44	32	21	18	40	05	57	20	13	47	24
25	31	35	28	29	27	23	30	22	18	19 00	39	20	45	32	21	18	40	05	57	20	13	48	25
26	31	35	28	29	27	23	31	22	18	00	39	20	45	32	22	18	40	05	58	21	13	48	26
27	31	35	28	29	27	24	31	22	19	00	39	20	46	32	22	18	41	06	58	21	14	48	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 19	19 00	5 39	19 20	5 46	19 32	5 22	19 18	5 41	19 06	4 58	18 21	5 14	18 48	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 41	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 22	5 20	19 00	5 41	19 21	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	जुला
2	34	35	29	29	30	24	32	22	20	00	41	21	48	33	24	18	42	06	5 00	21	16	48	2
3	34	35	30	29	30	24	33	22	20	00	41	21	48	33	24	18	43	06	00	21	16	48	3
4	34	35	30	29	31	24	34	22	21	00	41	21	49	33	25	18	43	06	00	21	16	48	4
5	35	35	31	29	31	24	34	22	21	00	42	21	49	33	25	18	43	06	01	21	17	48	5
6	35	35	31	29	31	23	34	22	22	00	43	20	50	33	26	18	44	06	01	21	18	48	6
7	36	35	33	29	32	23	32	22	22	00	42	21	50	33	25	18	44	06	01	21	17	48	7
8	36	34	33	29	32	23	35	21	23	00	43	20	51	33	26	18	44	06	02	21	18	48	8
9	37	34	33	29	3	23	35	21	23	19 00	43	20	51	33	27	17	44	06	02	21	18	48	9
10	37	34	34	2	33	22	36	21	23	18 59	44	20	52	32	27	17	45	06	02	21	19	48	10
11	38	34	3	28	34	22	36	21	24	59	44	20	52	32	28	17	45	05	03	21	19	48	11
12	38	33	35	28	34	22	37	20	24	59	45	20	52	32	28	17	45	05	03	21	20	48	12
13	39	33	36	27	35	22	38	20	25	59	45	19	53	32	29	17	46	05	04	20	21	47	13
14	39	33	36	27	35	21	38	20	25	59	46	19	53	32	29	16	46	05	04	20	21	47	14
15	40	32	37	27	36	21	39	20	26	58	46	19	54	31	30	16	47	05	05	20	21	47	15
16	41	32	37	26	36	21	39	19	26	58	47	18	54	31	30	16	47	04	05	20	22	47	16
17	41	32	37	26	37	21	40	19	27	58	47	18	55	30	31	15	48	04	05	20	22	46	17
18	42	31	38	26	38	20	40	19	27	57	48	18	55	30	32	15	48	04	06	19	23	46	18
19	42	31	39	25	38	20	41	18	28	57	48	17	56	29	32	14	49	04	06	19	23	46	19
20	43	30	39	25	39	20	41	18	28	57	49	17	56	29	33	14	49	03	07	19	23	45	20
21	44	30	39	24	39	19	42	17	29	56	49	17	57	29	33	13	50	03	07	19	24	45	21
22	44	29	40	24	40	19	42	17	29	56	50	16	57	29	34	13	50	03	07	18	24	45	22
23	45	29	41	23	40	18	43	16	30	55	50	16	58	28	34	12	51	02	08	18	25	44	23
24	45	29	41	23	41	18	43	16	30	55	51	15	58	27	35	12	51	02	08	17	25	44	24
25	46	28	42	22	42	17	44	15	31	54	51	15	59	27	36	11	52	02	09	17	26	43	25
26	47	27	43	22	42	17	44	15	31	54	52	14	5 59	26	36	11	52	01	09	17	26	43	26
27	47	26	44	21	42	16	45	14	32	53	32	14	6 00	25	37	10	53	01	10	16	26	43	27
28	48	26	44	21	43	16	45	14	32	53	53	13	01	25	37	10	53	01	10	16	27	42	28
29	48	25	44	20	44	15	46	13	33	52	53	13	01	24	38	09	54	00	10	15	27	41	29
30	49	24	45	19	45	14	46	13	33	52	54	12	01	24	39	08	54	19 00	11	15	28	41	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 34	59	5 54	19 12	6 02	19 23	5 39	19 08	5 54	18 59	5 11	18 14	5 28	18 40	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 34	18 51	5 55	19 11	6 02	19 22	5 40	19 07	5 55	18 59	5 12	18 14	5 29	18 40	अग.
2	51	22	47	17	46	12	48	11	35	50	55	10	03	22	40	06	55	58	12	13	29	40	2
3	52	21	48	16	47	11	49	10	35	49	56	10	03	21	41	05	55	57	12	13	30	38	3
4	52	20	49	15	47	10	50	09	36	49	56	09	04	20	42	05	56	56	13	11	31	37	4
5	53	20	49	15	48	10	50	09	37	48	57	08	04	19	42	04	56	56	13	11	31	37	5
6	54	19	49	13	49	09	51	08	37	47	57	08	05	18	43	03	57	55	14	11	31	36	6
7	54	18	50	12	49	08	51	07	38	46	58	07	06	18	43	02	57	55	14	10	32	36	7
8	55	17	51	11	50	07	52	06	38	46	58	06	07	17	44	01	58	54	14	10	32	36	8
9	55	16	51	11	51	06	52	05	39	45	59	05	07	16	45	00	58	54	15	09	32	34	9
10	56	15	52	05	51	05	53	04	39	44	5 59	04	08	15	45	19 00	58	53	15	08	33	34	10
11	57	14	53	09	52	04	53	03	40	43	6 00	04	08	14	46	18 59	59	52	16	08	33	33	11
12	57	14	54	08	52	03	54	02	40	42	00	03	09	14	46	58	59	51	16	07	34	32	12
13	58	12	54	07	53	92	54	01	41	42	01	02	09	13	47	57	5 59	51	16	06	34	31	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	19 00	5 41	18 41	6 01	19 01	6 10	19 12	5 48	18 56	6 00	18 59	5 17	18 05	5 35	18 30	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 52	18 39	6 02	18 59	6 11	19 10	5 49	18 54	6 01	18 48	5 18	18 04	5 36	18 29	15
16	6 00	09	56	04	55	59	57	58	42	39	02	59	11	10	49	54	01	48	18	04	36	29	16
17	01	08	56	03	55	58	57	57	43	38	03	58	11	9	49	53	01	47	18	03	36	28	17
18	01	07	56	02	56	57	58	56	43	37	04	58	12	8	50	52	02	46	18	02	36	27	18
19	02	06	57	19 01	56	56	58	55	43	36	04	57	12	7	50	51	02	45	19	02	36	27	19
20	02	05	59	18 59	57	55	59	54	44	35	05	56	13	06	51	50	03	45	19	02	36	26	20
21	03	04	59	59	58	54	5 59	53	44	34	05	55	13	5	52	49	03	44	19	18 00	37	24	21
22	04	03	5 59	58	58	53	6 00	52	45	33	05	54	14	4	52	48	03	43	20	17 59	38	24	22
23	04	02	6 00	57	59	52	00	51	45	32	06	53	14	3	53	47	04	42	20	58	38	23	23
24	05	19 00	01	55	5 59	51	01	50	56	31	07	52	15	02	53	46	04	41	20	57	39	22	24
25	06	18 59	01	55	6 00	50	01	49	46	30	07	51	15	1	54	54	04	40	21	51	39	22	25
26	06	58	02	54	00	49	02	48	47	29	07	50	16	00	54	43	05	39	21	56	39	21	26
27	07	57	03	52	01	47	02	47	47	28	08	49	16	59	55	42	05	38	21	55	40	20	27
28	07	54	04	50	01	46	48	27	48	27	08	47	17	57	56	40	06	38	22	55	40	18 19	28
29	08	54	04	49	02	45	03	45	48	26	08	47	17	57	56	40	06	37	22	53	41	18	29
30	09	53	04	49	03	44	04	44	49	25	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	41	17	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	5 49	18 24	6 09	18 46	6 18	18 56	5 57	18 39	6 06	18 36	5 22	17 52	5 41	18 17	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	5 49	18 23	6 10	18 44	6 19	18 58	5 55	18 36	6 06	18 34	5 22	17 51	5 42	18 14	सितं.
2	10	50	06	46	05	41	05	40	50	22	10	42	19	53	58	35	07	33	22	50	42	13	2
3	11	48	06	45	05	40	06	39	50	21	11	41	20	52	59	34	07	32	22	49	43	12	3
4	12	47	07	43	06	39	06	33	51	20	11	40	20	50	5 59	33	07	31	23	48	43	11	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	51	19	11	39	21	49	6 00	32	07	30	23	47	44	10	5
6	13	45	08	41	07	36	07	36	52	18	12	38	21	48	00	30	08	29	23	46	44	09	5
7	13	43	09	40	07	35	08	34	52	17	12	37	22	46	01	29	08	28	24	45	44	07	7
8	14	42	10	38	08	34	08	32	52	15	13	36	23	45	02	28	08	27	24	44	45	06	8
9	15	41	11	36	08	32	09	31	53	15	13	35	23	44	02	27	07	26	24	43	45	05	9
10	15	39	11	35	09	31	09	30	53	13	14	34	23	43	03	26	09	25	25	42	46	04	10
11	16	38	12	18 34	09	29	10	29	54	12	14	33	23	42	03	24	09	24	25	41	46	03	11
12	16	37	12	17 33	10	28	10	28	54	11	14	31	23	41	04	23	10	23	25	40	46	02	12
13	17	36	13	18 31	10	27	11	27	55	10	15	30	24	40	04	22	10	22	25	39	47	01	13
14	17	34	13	31	11	26	11	26	55	09	15	29	24	38	05	21	10	21	26	38	47	18 00	14
15	18	33	13	30	11	24	12	25	55	08	16	28	25	37	05	19	10	20	26	38	47	17 59	15
16	19	32	14	28	12	23	12	24	56	06	16	27	25	36	06	18	10	19	26	37	48	58	16
17	19	30	15	25	12	22	13	22	56	05	17	26	26	35	06	17	11	18	26	36	48	57	17
18	20	29	15	25	13	21	13	21	57	04	17	25	26	34	07	16	11	17	27	35	49	56	18
19	20	28	16	24	13	19	14	20	57	03	17	23	27	32	07	14	11	16	27	33	49	55	19
20	21	26	17	22	14	18	14	19	58	02	18	22	27	31	08	13	11	15	27	32	49	53	20
21	22	25	18	20	14	17	15	18	58	01	18	21	28	30	09	12	12	14	27	31	50	52	21
22	22	24	18	19	15	16	15	17	58	18 00	19	20	28	29	09	11	12	13	28	30	50	51	22
23	23	23	18	19	16	14	16	16	59	17 58	19	19	29	28	10	09	13	12	28	29	50	50	23
24	23	21	19	18	16	13	16	14	5 59	57	20	18	29	27	10	08	13	11	28	28	51	49	24
25	24	20	20	15	17	12	17	13	6 00	56	20	17	30	26	11	07	14	10	29	28	51	48	25
26	25	19	20	14	17	11	17	12	00	55	20	15	30	24	11	06	14	09	29	27	52	47	26
27	25	17	21	13	18	09	18	11	01	54	21	14	31	23	12	04	14	08	29	26	52	46	27
28	26	16	21	12	18	08	18	09	01	53	21	13	31	22	12	03	14	07	29	25	53	45	28
29	27	15	22	10	19	07	19	08	02	52	22	12	32	21	13	02	15	06	30	24	53	43	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 02	17 51	6 22	18 11	6 32	18 20	6 13	18 01	6 15	18 05	5 30	17 23	5 53	17 43	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्टू	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अक्टू
अक्टू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 02	17 49	6 23	18 10	6 33	18 19	6 14	17 59	6 15	18 04	5 32	17 21	5 54	17 42	अक्टू
2	28	11	24	07	21	03	20	05	03	48	23	09	33	18	15	58	15	03	32	20	54	40	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	6 03	47	24	08	34	16	15	47	16	02	32	19	54	39	3
4	30	08	25	04	22	01	21	18 01	5 04	46	24	06	34	15	16	56	16	01	33	18	55	38	4
5	30	07	25	02	22	18 00	22	17 00	04	45	25	05	35	14	16	55	17	18 00	33	17	55	37	5
6	31	06	26	02	23	17 58	23	59	05	44	25	04	35	13	17	53	17	17 59	33	16	55	36	6
7	32	05	27	00	23	57	24	58	05	43	26	03	36	12	18	52	18	58	34	15	56	35	7
8	32	03	27	18 00	24	56	24	57	06	42	26	02	36	11	18	51	18	57	34	14	57	34	8
9	33	02	27	17 59	25	55	25	56	06	42	27	01	37	10	19	50	18	56	34	13	57	33	9
10	34	01	29	57	25	54	25	55	5 07	40	27	18 00	37	09	19	49	18	56	35	12	57	32	10
11	34	18 00	30	55	26	53	26	54	6 07	39	28	17 59	38	08	20	48	19	55	35	11	58	31	11
12	35	17 59	30	55	27	51	26	53	08	38	28	58	38	07	21	46	19	54	36	10	58	30	12
13	36	57	31	54	27	50	27	52	08	37	29	57	39	06	21	45	19	53	36	09	59	29	13
14	36	56	32	52	28	49	27	51	09	36	29	56	40	05	22	44	20	52	36	09	59	28	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	09	35	30	55	41	04	23	43	20	51	37	08	6 00	27	15
16	38	54	33	50	29	47	28	49	10	34	30	54	41	03	23	42	20	50	37	07	00	27	16
17	39	53	33	49	30	46	29	48	10	33	31	53	42	02	24	41	21	49	38	06	01	26	17
18	39	52	34	48	30	45	30	47	11	32	31	52	42	01	24	40	21	49	38	05	01	25	18
19	40	50	35	48	31	44	31	46	12	31	32	51	43	18 00	25	39	22	48	38	05	01	24	19
20	41	49	35	46	32	43	31	45	12	30	33	50	43	17 59	26	38	22	48	39	04	02	23	20
21	42	48	36	45	32	42	32	44	13	29	33	49	44	58	26	37	23	47	39	03	03	22	21
22	42	47	37	44	33	41	33	43	13	28	34	48	45	57	27	36	23	46	40	02	03	21	22
23	43	46	38	42	34	40	34	42	14	27	34	47	46	56	28	35	24	45	40	01	04	20	23
24	44	45	39	42	35	39	34	41	15	26	35	47	46	55	29	34	24	44	41	01	05	20	24
25	45	44	40	41	35	38	35	40	15	25	36	45	47	54	29	33	25	43	41	17 00	05	19	25
26	45	43	40	39	36	37	35	39	16	25	36	45	47	53	30	32	25	42	42	16 59	06	18	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	16	24	37	44	48	52	31	31	26	42	43	59	06	17	27
28	47	41	42	37	37	35	36	37	17	23	37	43	48	51	31	31	26	41	43	58	07	16	28
29	48	40	42	37	38	34	37	36	18	22	37	42	49	51	31	30	27	41	43	57	07	16	29
30	49	39	43	36	39	35	38	35	19	21	39	42	50	50	33	28	27	40	44	57	08	15	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 10	17 14	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 09	17 14	नवं.
2	51	37	45	33	41	31	40	34	20	19	41	39	52	48	34	26	29	38	45	55	10	13	2
3	52	36	47	32	42	31	41	33	21	18	41	39	53	47	36	25	30	38	46	54	11	12	3
4	53	35	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	12	4
5	53	34	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	11	5
6	54	33	48	30	44	29	43	31	23	17	44	37	56	45	38	23	32	36	47	53	12	10	6
7	55	33	50	30	45	28	44	30	24	16	44	36	56	45	39	22	32	36	48	52	13	10	7
8	56	32	51	29	46	27	45	29	24	15	45	36	57	44	40	21	33	35	48	52	14	09	8
9	57	31	52	28	47	27	45	29	25	15	46	35	57	44	41	21	33	35	49	51	15	09	9
10	58	31	52	27	47	26	46	28	26	14	46	35	58	43	41	20	34	34	50	51	15	08	10
11	59	30	53	27	48	25	47	28	26	14	47	34	6 59	42	42	20	34	34	50	50	16	08	11
12	7 00	29	54	26	49	24	48	27	27	13	48	33	7 00	41	43	19	35	33	51	50	17	07	12
13	00	29	54	26	50	23	48	27	28	13	49	33	01	41	44	18	35	33	55	50	17	07	13
14	01	28	55	26	51	23	49	26	29	12	49	33	01	40	45	18	36	33	52	49	18	06	14
15	02	28	56	25	52	22	50	26	29	12	50	32	02	40	46	17	37	32	53	49	19	06	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 30	17 12	6 51	17 32	7 03	17 39	6 46	17 17	6 38	17 32	5 53	16 49	6 19	17 06	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 31	17 11	6 52	17 31	7 03	17 39	6 47	17 16	6 38	17 32	5 54	16 48	6 20	17 05	17
18	05	26	6 59	23	54	21	53	24	32	11	52	31	05	39	48	16	39	31	55	48	21	05	18
19	06	26	7 00	23	55	21	54	23	32	10	53	31	05	39	49	16	40	31	55	48	22	05	19
20	07	25	01	22	56	21	55	23	33	10	54	30	06	38	50	15	41	31	56	48	22	04	20
21	07	25	01	22	57	20	55	23	34	10	55	30	06	38	51	15	41	31	57	48	23	04	21
22	08	24	02	22	57	20	56	22	35	10	55	30	07	38	51	15	42	30	57	47	24	04	22
23	09	24	04	22	58	20	57	22	35	09	56	30	08	38	52	14	42	30	58	47	24	04	23
24	10	24	05	21	6 59	20	58	22	36	09	57	29	09	37	53	14	43	30	59	47	25	04	24
25	11	23	06	21	7 00	19	6 59	22	37	09	58	29	09	37	54	14	43	30	5 59	47	26	03	25
26	12	23	06	21	01	19	7 00	22	38	09	58	29	10	37	55	14	44	30	6 00	47	27	03	26
27	13	23	07	21	02	19	01	22	38	09	6 59	29	11	37	55	13	45	30	01	47	27	03	27
28	14	23	08	20	03	19	02	22	39	09	7 00	29	12	37	56	13	46	30	01	47	28	03	28
29	14	23	08	20	03	19	02	21	40	09	01	29	13	37	57	13	46	30	02	47	29	03	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 58	17 13	6 47	17 30	6 02	16 47	6 30	17 03	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 59	17 13	6 48	17 30	6 03	16 47	6 30	17 03	दिसं.
2	17	22	11	20	06	19	04	21	42	09	03	29	15	36	6 59	13	49	30	04	47	31	03	2
3	18	22	11	20	06	19	04	21	43	09	04	29	16	36	7 00	13	49	31	05	47	32	03	3
4	19	22	12	20	07	19	05	21	44	09	05	29	17	36	01	13	50	31	05	47	32	03	4
5	19	22	13	20	08	19	06	21	44	09	06	29	17	36	02	13	51	31	06	48	33	04	5
6	20	22	14	20	09	19	07	21	45	49	07	29	18	37	03	13	52	31	07	48	34	04	6
7	21	22	14	20	09	19	07	21	46	09	07	29	19	37	03	13	52	31	07	48	35	04	7
8	22	23	15	20	10	19	08	22	46	09	08	30	20	37	04	13	53	32	08	48	35	04	8
9	22	23	16	20	11	19	09	22	47	09	09	30	20	37	05	13	53	32	09	48	36	04	9
10	23	23	17	20	12	19	10	22	48	10	09	30	21	37	06	14	54	32	09	49	37	05	10
11	24	23	18	20	12	19	10	22	49	10	09	30	22	37	06	14	54	33	10	49	37	05	11
12	25	23	19	21	13	20	11	23	49	10	10	30	23	38	07	14	55	33	11	49	38	05	12
13	25	24	19	21	14	20	12	23	50	10	11	31	23	38	08	14	56	33	11	50	38	05	13
14	26	24	20	21	14	20	13	23	50	11	11	31	24	39	08	15	57	33	12	50	39	06	14
15	27	24	21	22	15	21	13	24	51	11	12	31	24	39	09	15	57	34	12	50	40	06	15
16	27	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	15	58	34	13	51	41	06	16
17	28	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	16	58	34	14	51	41	07	17
18	28	25	23	23	17	22	15	25	53	12	14	32	26	40	11	16	59	35	14	51	41	07	18
19	29	26	23	23	17	22	15	25	53	13	14	33	26	40	11	17	6 59	35	15	52	42	08	19
20	30	26	24	23	18	23	16	26	54	13	14	33	27	41	12	17	7 00	36	15	52	42	08	20
21	30	27	24	24	18	23	16	26	55	14	15	34	27	41	12	17	01	36	15	53	43	09	21
22	13	27	25	25	19	14	17	27	55	14	16	34	28	42	13	18	01	37	16	53	44	09	22
23	31	28	25	25	19	24	17	27	55	15	16	35	28	42	13	18	02	37	17	54	44	10	23
24	32	28	25	26	20	25	18	28	56	15	17	35	29	43	14	19	02	38	17	54	45	10	24
25	32	29	25	26	20	26	18	28	56	16	17	36	29	43	14	20	03	38	18	55	45	11	25
26	32	29	26	27	21	26	19	29	57	16	18	37	30	44	15	20	03	39	18	55	45	11	26
27	33	30	26	27	21	27	19	29	57	17	18	37	30	44	15	21	03	39	19	56	45	21	27
28	33	31	27	28	21	27	20	30	58	17	18	38	30	45	15	21	04	40	19	57	46	12	28
29	33	31	27	28	22	28	20	30	58	18	19	38	30	45	16	22	04	40	19	57	47	13	29
30	34	32	28	29	22	28	21	31	58	19	19	39	31	47	16	23	04	41	20	58	47	14	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	6 59	17 19	7 20	17 40	7 31	17 47	7 16	17 23	7 05	17 41	6 20	16 58	6 47	17 14	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करे॥

उदाहरण–यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१°।५२′ है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२′ कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अतः ५ दिन घटा देने से हमें **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।**

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	२२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	९
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
.२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	कला
	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	
१	० ०३	० ०९	० ०३	० ०५	० ०३	० ०८	० ०७	० ०९	० ०८	१
२	० ०६	० १८	० ०५	० ०९	० ०६	० १६	० १४	० १७	० १५	२
३	० ०९	० २७	० ०८	० १४	० ०९	० २४	० २२	० २६	० २३	३
४	० १३	१ ०६	० ११	० १८	० १३	१ ०२	० २९	१ ०४	१ ०१	४
५	० १६	१ १५	० १४	० २३	० १६	१ ११	१ ०६	१ १३	१ ०८	५
६	० १९	१ २४	० १६	० २७	० १९	१ १९	१ १३	१ २१	१ १६	६
७	० २२	२ ०३	० १९	१ ०२	० २२	१ २७	१ २०	२ ००	१ २४	७
८	० २५	२ १२	० २२	१ ०६	० २५	२ ०५	१ २८	२ ०८	२ ०१	८
९	० २८	२ २१	० २४	१ ११	० २८	२ १३	२ ०५	२ १७	२ ०९	९
१०	१ ०१	३ ००	० २७	१ १५	१ ०१	२ २१	२ १२	२ २६	२ १७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान–जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से ज्योतिष तत्त्व मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृति उ.फा. उ.षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा. पू.भा.				पुष्य. अनु. उ. भा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूल. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्रवण, आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि			पुष्य विशा शत.			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि			मघा. ज्ये. उ.भा. भर.			पूफा मूल रेव, कृति			उ.फा. पू.षा. रोह			हस्त उषा मृग		

योगिनी दशा विचार–योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि–अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ–यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा–अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा–मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**–पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि–जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा**, **योगिनी दशा** और **अष्टोतरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि १०८ वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत–विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर–दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	9
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	26	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

स्वप्न-शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	गर्भपात	गम्भीर रोग	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	घूंघट देखना	नया कारोबार	जुआ खेलना	धन हानि	तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	जेब काटना	धन हानि	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
अन्धेरा देखना	दुःख मिले	कबूतर देखना	शुभ समाचार	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	जड़ें देखना	दीर्घायु	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	काला नाग	राज्य सम्मान	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	जड़ें काटना	संकट का सूचक	तैरते देखना	आयु में वृद्धि
अर्थी देखना	रोग मुक्त	किला देखना	तरक्की पाना	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	कोढ़ी देखना	रोग सूचक	घड़ी देखना	यात्रा का संकेत	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
आकाश देखना	तरक्की होना	कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	झाड़ू देखना	नुकसान हो	तीर मारना	खुशी मिले
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ	कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	तूफान देखना	परेशानी बढ़े
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	चरखा देखना	आर्थिक लाभ	झांकी देखना	अशुभ	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	चावल खाना	शुभ समाचार	झोली देखना	विजय संकेत	तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
आत्महत्या करना	दीर्घायु	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	तोता देखना	धन लाभ
आलू देखना	मुसीबत आना	कोयल देखना	कोई शुभ समाचार	चादर देखना	बदनामी हो	झरना देखना	दुःख दूर हों	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो	कबाब खाना	अपयश/विवाद	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि	तराजू देखना	व्यापार लाभ
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	ताली बजाना	खुशी मिले
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	खून करना	संकट आना	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	ताश खेलना	व्यापार लाभ
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	खिलौना देखना	सुख शान्ति	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	टापू देखना	संकट लक्षण	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	खरबूजा देखना	धन लाभ	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	टोपी देखना	प्रगति हो	तरबूज देखना	परेशानी
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	खेत देखना	संकट पूर्ण	छींकना	कार्य बाधा	ठग मिलना	धन हानि	तांगा देखना	झगड़ा हो
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	थूक देना	परेशानी बढ़े
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	गुरु देखना	कार्य सफलता	छपाई देखना	अपमानित होना	ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	गोबर देखना	पशु लाभ हो	छंटनी देखना	पदोन्नति	ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति	थप्पड़ खाना	शुभ
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जख्म देखना	परेशानियां	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	धन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
ऊँट देखना	अंग घात	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दूध पीना	खुशी प्राप्ति
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दरवाजा बन्द देखना	परेशानियां हों
कमल देखना	धन प्राप्ति	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	जल देखना	मान सम्मान	डाकू देखना	धन हानि	दाँव लगाना	भारी हानि

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व दखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पुरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दुःख निवृत्ति
रस्सी देखना	यात्रा हो
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लाल फूल देखना	पुत्र सुख
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	मान-सम्मान
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण १	२	३	४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
अश्विनी १	०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा बातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ॥५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिर्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हायुमद्विभाति क्रतुमजनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माप गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्याराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या बद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधन्न पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ साविन्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपघृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमवितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र Ω स्वास्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसत्रिपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निर्ऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु–वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्विषम पकृत्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्गगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र वर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सत्रिपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरुणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र––पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र घृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा––द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्त्वाय ॥२६॥) ॐ अहिवुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पूफा	उफा	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूला	श्रव०	पूभा	अश्वि	रोहि
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वाती	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

।। अथ [illegible] विधान ।।

।। अथ बालकष्टावली पूतना विधान ।।

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गो श्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषज्व बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अदभुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गो श्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था–जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र–त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना–गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो मंगल, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि–सूर्य के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल–सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल–सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७– इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः–स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९
गुप्त मित्र	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११
प्रत्यक्ष शत्रु	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७
गुप्त शत्रु	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि–इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि–यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि–इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि–इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से '**वर्षफल चन्द्रिका**' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, पारिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, पारिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। (देखें हमारी पुस्तक '**वर्षफल चंद्रिका**')

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में-**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्पयूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या +	5	17	48
	9	23	18
अर्थात् (बुधवार)	2 वार	23	18

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि–आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे**, सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2012 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2012 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 38 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 38 के सामने हमें 5 वार, 17 घण्टे एवं 48 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 9 वार 23 घण्टे, 18 मिनट प्राप्त हुए। हमें 9 वार अर्थात् सोमवार की रात्रि (11) बजकर, 18 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की रात्रि 23 बजकर 18 मिनट पर हमें **मिथुन वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न मिथुन में सं. २०६९ की पंचांग से 1 अक्तू. 2012 ई. रात्रि 23/18 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित '**वर्षफल चन्द्रिका**' पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 80 रु.।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

जनवरी — दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

फरवरी — दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	24 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	24 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	24 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 01	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च ता.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल ता.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	11 34	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

सितंबर	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्टू	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अक्तूबर	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	2458	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	2454	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

नवंबर — दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दिसंबर — दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे
हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देने, सभा-सोसाईटी
में आना-जाना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु
की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है।
शनि की होरा–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का
होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि
के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है।
इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**–पश्चिम
की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार
को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र

वार	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

।।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

।।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	७.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	४.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त १½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी
हो उस दिन के दिनमान के अष्टष्मांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन
रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ
जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**–सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) जनवरी-फरवरी (Jan.-Feb.)

ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 28	10 08	11 30	12 51	14 22	16 15	18 30	20 53	23 15	1 37	4 00	6 21
2	8 24	10 04	11 26	12 47	14 18	16 11	18 27	20 49	23 13	1 34	3 56	6 17
3	8 20	10 00	11 22	12 43	14 14	16 07	18 23	20 45	23 09	1 30	3 52	6 13
4	8 16	9 56	11 18	12 39	14 10	16 03	18 19	20 41	23 05	1 26	3 48	6 09
5	8 12	9 52	11 14	12 35	14 06	15 59	18 15	20 37	23 01	1 22	3 44	6 05
6	8 08	9 48	11 10	12 31	14 02	15 55	18 11	20 34	22 57	1 18	3 40	6 01
7	8 04	9 44	11 06	12 27	13 58	15 51	18 07	20 30	22 53	1 14	3 36	5 57
8	8 00	9 40	11 02	12 23	13 54	15 47	18 03	20 26	22 49	1 10	3 32	5 53
9	7 56	9 36	10 58	12 19	13 50	15 43	17 59	20 22	22 45	1 06	3 28	5 49
10	7 52	9 32	10 54	12 15	13 46	15 39	17 55	20 18	22 41	1 02	3 24	5 45
11	7 48	9 28	10 50	12 11	13 42	15 35	17 51	20 14	22 37	0 58	3 20	5 41
12	7 44	9 24	10 46	12 07	13 38	15 31	17 47	20 10	22 33	0 54	3 16	5 37
13	7 40	9 20	10 42	12 03	13 34	15 27	17 43	20 06	22 29	0 50	3 12	5 33
14	7 36	9 16	10 38	11 59	13 30	15 23	17 39	20 02	22 25	0 46	3 08	5 29
15	7 32	9 12	10 34	11 55	13 26	15 19	17 35	19 58	22 21	0 42	3 04	5 25
16	7 28	9 09	10 30	11 52	13 23	15 16	17 32	19 54	22 18	0 39	3 00	5 21
17	7 24	9 05	10 26	11 48	13 19	15 12	17 28	19 50	22 14	0 35	2 56	5 17
18	7 20	9 01	10 23	11 44	13 15	15 08	17 24	19 46	22 10	0 31	2 52	5 13
19	7 16	8 57	10 19	11 40	13 11	15 04	17 20	19 42	22 06	0 27	2 48	5 10
20	7 12	8 53	10 15	11 36	13 07	15 00	17 16	19 38	22 02	0 23	2 44	5 06
21	7 08	8 49	10 11	11 32	13 03	14 56	17 12	19 34	21 58	0 19	2 40	5 02
22	7 05	8 45	10 07	11 28	12 59	14 52	17 08	19 30	21 54	0 15	2 36	4 58
23	7 01	8 41	10 03	11 24	12 55	14 48	17 04	19 26	21 50	0 11	2 32	4 54
24	6 57	8 37	9 59	11 20	12 51	14 44	17 00	19 22	21 46	0 07	2 29	4 50
25	6 53	8 33	9 55	11 16	12 47	14 40	16 56	19 18	21 42	0 03	2 25	4 46
26	6 49	8 30	9 51	11 13	12 44	14 37	16 53	19 14	21 39	23 59	2 21	4 42
27	6 45	8 26	9 47	11 09	12 40	14 33	16 49	19 11	21 35	23 55	2 17	4 38
28	6 41	8 22	9 43	11 05	12 36	14 29	16 45	19 07	21 31	23 51	2 13	4 34
29	6 37	8 18	9 40	11 01	12 32	14 25	16 41	19 03	21 27	23 47	2 09	4 30
30	6 33	8 14	9 36	10 57	12 28	14 21	16 37	18 59	21 23	23 43	2 05	4 27
31	6 30	8 10	9 32	10 53	12 24	14 17	16 33	18 55	21 19	23 39	2 01	4 23
फर.	6 26	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

फर.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
1	8 06	9 28	10 49	12 20	14 13	16 28	18 51	21 13	23 35	1 57	4 19	6 22
2	8 02	9 24	10 45	12 16	14 09	16 24	18 47	21 09	23 31	1 53	4 15	6 18
3	7 58	9 20	10 41	12 12	14 05	16 20	18 43	21 05	23 27	1 49	4 11	6 14
4	7 54	9 16	10 37	12 08	14 01	16 16	18 40	21 01	23 23	1 45	4 07	6 10
5	7 50	9 12	10 33	12 04	13 57	16 12	18 36	20 57	23 19	1 41	4 03	6 06
6	7 46	9 08	10 29	12 00	13 52	16 08	18 32	20 53	23 15	1 38	3 59	6 02
7	7 42	9 04	10 25	11 56	13 49	16 04	18 28	20 49	23 11	1 34	3 55	5 58
8	7 38	9 00	10 21	11 52	13 45	16 00	18 24	20 45	23 07	1 30	3 51	5 54
9	7 34	8 56	10 17	11 48	13 41	15 56	18 21	20 42	23 03	1 26	3 47	5 50
10	7 30	8 52	10 13	11 44	13 37	15 52	18 17	20 38	22 59	1 22	3 43	5 46
11	7 26	8 48	10 09	11 40	13 33	15 48	18 13	20 34	22 55	1 18	3 39	5 42
12	7 22	8 44	10 05	11 36	13 29	15 44	18 09	20 31	22 51	1 14	3 35	5 38
13	7 19	8 40	10 01	11 32	13 25	15 40	18 05	20 27	22 47	1 10	3 31	5 34
14	7 15	8 36	9 57	11 28	13 21	15 36	18 01	20 23	22 43	1 06	3 27	5 30
15	7 11	8 32	9 53	11 24	13 17	15 32	17 57	20 19	22 39	1 02	3 23	5 26
16	7 07	8 29	9 49	11 20	13 13	15 28	17 53	20 15	22 35	24 58	3 19	5 22
17	7 03	8 25	9 45	11 16	13 09	15 24	17 49	20 11	22 31	24 54	3 15	5 19
18	6 59	8 21	9 41	11 12	13 05	15 20	17 45	20 07	22 27	24 50	3 11	5 15
19	6 55	8 17	9 37	11 08	13 01	15 16	17 41	20 03	22 23	24 46	3 07	5 11
20	6 51	8 14	9 34	11 05	12 57	15 12	17 37	19 59	22 19	24 42	3 03	5 07
21	6 47	8 10	9 30	11 01	12 54	15 08	17 33	19 55	22 15	24 38	3 00	5 03
22	6 43	8 06	9 26	10 57	12 50	15 05	17 29	19 51	22 11	24 34	2 56	4 59
23	6 39	8 02	9 22	10 53	12 46	15 01	17 25	19 47	22 07	24 31	2 52	4 55
24	6 35	7 58	9 18	10 49	12 42	14 57	17 21	19 43	22 03	24 27	2 48	4 51
25	6 31	7 54	9 14	10 45	12 38	14 53	17 17	19 39	21 59	24 23	2 44	4 47
26	6 27	7 50	9 10	10 41	12 34	14 49	17 13	19 35	21 55	24 19	2 40	4 43
27	6 23	7 46	9 06	10 37	12 30	14 45	17 09	19 31	21 51	24 15	2 36	4 39
28	6 20	7 42	9 02	10 33	12 26	14 41	17 05	19 27	21 47	24 11	2 32	4 34

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) मार्च-अप्रैल (Mar.-Apr.)

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 38	8 58	10 29	12 22	14 37	17 01	19 23	21 43	24 07	2 28	4 31	6 12
2	7 34	8 54	10 25	12 18	14 33	16 58	19 20	21 40	24 03	2 24	4 27	6 08
3	7 30	8 51	10 22	12 15	14 30	16 54	19 16	21 36	23 59	2 20	4 23	6 04
4	7 26	8 47	10 18	12 11	14 26	16 50	19 12	21 32	23 55	2 16	4 19	6 00
5	7 22	8 43	10 14	12 07	14 22	15 46	19 08	21 28	23 52	2 12	4 16	5 56
6	7 18	8 39	10 10	12 03	14 19	15 42	19 04	21 24	23 48	2 08	4 12	5 52
7	7 14	8 35	10 06	11 59	14 15	16 38	19 00	21 21	23 44	2 04	4 08	5 48
8	7 10	8 31	10 02	11 55	14 11	16 34	18 56	21 17	23 40	2 00	4 04	5 44
9	7 06	8 27	9 58	11 51	14 07	16 31	18 53	21 13	23 36	1 57	4 00	5 40
10	7 02	8 23	9 54	11 47	14 03	16 27	18 49	21 09	23 32	1 53	3 56	5 36
11	6 58	8 19	9 50	11 43	13 59	16 23	18 45	21 05	23 28	1 49	3 52	5 32
12	6 54	8 15	9 46	11 39	13 55	16 19	18 41	21 01	23 25	1 45	3 48	5 29
13	6 51	8 11	9 42	11 35	13 51	16 15	18 37	20 57	23 21	1 42	3 45	5 25
14	6 47	8 07	9 38	11 31	13 47	16 11	18 33	20 53	23 17	1 38	3 41	5 21
15	6 43	8 03	9 34	11 27	13 43	16 07	18 29	20 49	23 13	1 34	3 37	5 17
16	6 39	7 59	9 30	11 23	13 39	16 03	18 25	20 45	23 09	1 30	3 33	5 13
17	6 35	7 55	9 26	11 19	13 35	15 59	18 21	20 41	23 05	1 26	3 29	5 09
18	6 31	7 51	9 22	11 15	13 31	15 55	18 17	20 37	23 01	1 22	3 25	5 05
19	6 27	7 47	9 18	11 11	13 27	15 51	18 13	20 33	22 57	1 18	3 21	5 01
20	6 23	7 43	9 14	11 07	13 24	15 47	18 09	20 29	22 53	1 14	3 17	4 57
21	6 19	7 39	9 10	11 03	13 20	15 43	18 05	20 25	22 49	1 10	3 13	4 53
22	6 15	7 35	9 06	10 59	13 16	15 39	18 01	20 21	22 45	1 06	3 09	4 49
23	6 11	7 32	9 02	10 56	13 12	15 35	17 57	20 17	22 41	1 02	3 05	4 45
24	6 07	7 28	8 58	10 52	13 08	15 31	17 53	20 13	22 37	0 58	3 01	4 42
25	6 03	7 24	8 54	10 48	13 04	15 27	17 49	20 09	22 33	0 54	2 57	4 38
26	5 59	7 20	8 50	10 44	13 00	15 23	17 45	20 06	22 29	0 50	2 53	4 34
27	5 55	7 16	8 47	10 40	13 56	15 19	17 41	20 02	22 25	0 46	2 49	4 30
28	5 51	7 12	8 43	10 36	12 52	15 15	17 37	19 58	22 21	0 41	2 46	4 26
29	5 47	7 08	8 39	10 32	12 48	15 11	17 33	19 54	22 17	0 38	2 42	4 22
30	5 44	7 04	8 35	10 28	12 44	15 07	17 29	19 50	22 13	0 34	2 38	4 18
31	5 40	7 00	8 31	10 24	12 40	15 03	17 25	19 46	22 09	0 30	2 34	4 14
अप्रै.	5 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अप्रै.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
1	6 56	8 27	10 20	12 36	14 59	17 21	19 42	22 05	00 26	2 30	4 10	5 32
2	6 52	8 23	10 16	12 32	14 55	17 17	19 38	22 01	00 22	2 26	4 06	5 29
3	6 48	8 19	10 12	12 28	14 51	17 13	19 34	21 57	00 18	2 22	4 02	5 25
4	6 44	8 15	10 08	12 24	14 47	17 09	19 31	21 53	00 14	2 18	3 58	5 21
5	6 40	8 11	10 04	12 21	14 43	17 05	19 27	21 50	00 11	2 14	3 54	5 17
6	6 37	8 08	10 00	12 17	14 39	17 01	19 23	21 46	24 07	2 10	3 50	5 13
7	6 33	8 04	9 57	12 13	14 35	16 58	19 19	21 40	24 03	2 06	3 46	5 09
8	6 29	8 00	9 53	12 09	14 31	16 54	19 15	21 38	23 59	2 02	3 42	5 05
9	6 25	7 56	9 49	12 05	14 27	16 50	19 11	21 34	23 55	1 58	3 39	5 02
10	6 21	7 52	9 45	12 01	14 24	16 46	19 07	21 30	23 51	1 54	3 35	4 58
11	6 17	7 48	9 41	11 57	14 20	16 42	19 03	21 26	23 47	1 50	3 31	4 54
12	6 13	7 44	9 37	11 53	14 16	16 38	18 59	21 22	23 43	1 46	3 27	4 50
13	6 09	7 40	9 33	11 49	14 12	16 34	18 55	21 18	23 39	1 42	3 23	4 46
14	6 05	7 36	9 29	11 45	14 08	16 30	19 51	21 14	23 35	1 38	3 20	4 42
15	6 01	7 32	9 25	11 42	14 04	16 26	18 47	21 10	23 31	1 34	3 16	4 38
16	5 57	7 28	9 21	11 38	14 00	16 22	18 43	21 06	23 27	1 30	3 12	4 34
17	5 53	7 24	9 17	11 34	13 56	16 19	18 39	21 02	23 23	1 26	3 08	4 30
18	5 49	7 20	9 14	11 30	13 53	16 15	18 36	20 58	23 19	1 22	3 04	4 26
19	5 45	7 16	9 10	11 26	13 49	16 11	18 32	20 54	23 15	1 18	3 00	4 22
20	5 41	7 12	9 06	11 22	13 45	16 07	18 28	20 50	23 11	1 14	2 56	4 18
21	5 37	7 08	9 02	11 18	13 41	16 03	18 24	20 46	23 08	1 10	2 52	4 14
22	5 33	7 04	8 58	11 14	13 37	15 59	18 20	20 42	23 04	1 06	2 48	4 10
23	5 29	7 00	8 54	11 10	13 33	15 55	18 16	20 39	23 00	1 02	2 44	4 06
24	5 25	6 56	8 50	11 06	13 29	15 51	18 12	20 35	22 56	00 58	2 40	4 02
25	5 21	6 52	8 46	11 02	13 25	15 47	18 08	20 31	22 52	00 54	2 36	3 58
26	5 17	6 48	8 42	10 58	13 21	15 43	18 04	20 27	22 48	00 50	2 32	3 54
27	5 13	6 45	8 38	10 54	13 17	15 39	18 00	20 23	22 44	00 46	2 28	3 50
28	5 09	6 41	8 34	10 50	13 13	15 35	17 56	20 19	22 40	00 42	2 24	3 46
29	5 05	6 37	8 30	10 46	13 09	15 31	17 52	20 15	22 36	00 38	2 20	3 42
30	5 01	6 33	8 26	10 42	13 05	15 28	17 48	20 11	22 32	00 34	2 16	3 38
मई	4 57	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) मई–जून (May-June)

मई	मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
ता.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1	6	29	8	22	10	38	13	01	15	24	17	44	20	07	22	28	00	31	2	12	3	34	4	54
2	6	25	8	18	10	34	12	58	15	21	17	40	20	03	22	24	00	27	2	08	3	30	4	50
3	6	21	8	14	10	30	12	54	15	17	17	37	19	59	22	20	00	24	2	04	3	27	4	46
4	6	17	8	10	10	26	12	50	15	13	17	33	19	55	22	16	00	20	2	00	3	23	4	42
5	6	13	8	06	10	22	12	46	15	09	17	29	19	51	22	12	00	16	1	56	3	19	4	38
6	6	09	8	02	10	18	12	42	15	05	17	25	19	47	22	08	00	12	1	52	3	15	4	34
7	6	05	7	58	10	14	12	38	15	01	17	21	19	43	22	04	24	08	1	48	3	11	4	30
8	6	01	7	54	10	10	12	34	14	57	17	17	19	39	22	00	24	04	1	44	3	07	4	26
9	5	57	7	50	10	06	12	30	14	53	17	13	19	35	21	56	24	00	1	40	3	03	4	22
10	5	53	7	46	10	02	12	26	14	49	17	09	19	31	21	52	23	56	1	36	2	59	4	18
11	5	49	7	43	9	58	12	22	14	45	17	05	19	27	21	48	23	52	1	32	2	55	4	14
12	5	45	7	39	9	54	12	19	14	41	17	01	19	23	21	44	23	48	1	28	2	51	4	10
13	5	41	7	35	9	50	12	15	14	37	16	57	19	19	21	40	23	44	1	24	2	47	4	06
14	5	37	7	30	9	46	12	09	14	32	16	53	19	15	21	36	23	40	1	20	2	43	4	02
15	5	33	7	26	9	42	12	05	14	28	16	49	19	11	21	32	23	36	1	16	2	39	3	58
16	5	29	7	22	9	38	12	01	14	24	16	45	19	07	21	28	23	32	1	12	2	35	3	54
17	5	25	7	18	9	34	11	57	14	20	16	41	19	03	21	24	23	28	1	08	2	31	3	50
18	5	21	7	14	9	30	11	53	14	16	16	37	18	59	21	20	23	24	1	04	2	27	3	46
19	5	17	7	10	9	26	11	49	14	12	16	33	18	55	21	16	23	20	1	00	2	23	3	42
20	5	13	7	06	9	22	11	45	14	08	16	29	18	51	21	12	23	16	24	56	2	20	3	38
21	5	09	7	02	9	18	11	41	14	04	16	25	18	47	21	08	23	12	24	52	2	16	3	34
22	5	05	6	59	9	14	11	37	14	00	16	21	18	43	21	04	23	08	24	48	2	12	3	30
23	5	01	6	55	9	10	11	33	13	56	16	17	18	39	21	00	23	04	24	44	2	08	3	26
24	4	57	6	51	9	06	11	30	13	52	16	14	18	36	20	57	23	00	24	41	2	04	3	22
25	4	53	6	47	9	02	11	26	13	48	16	10	18	32	20	53	22	57	24	37	2	00	3	18
26	4	49	6	44	8	59	11	22	13	44	16	06	18	28	20	49	22	53	24	33	1	56	3	14
27	4	45	6	40	8	55	11	18	13	40	16	02	18	24	20	45	22	49	24	29	1	52	3	10
28	4	41	6	36	8	51	11	14	13	36	15	58	18	20	20	41	22	45	24	26	1	48	3	07
29	4	37	6	32	8	48	11	10	13	32	15	'54	18	16	20	37	22	41	24	22	1	44	3	03
30	4	34	6	28	8	44	11	06	13	28	15	50	18	12	20	33	22	38	24	18	1	40	2	59
31	4	30	6	24	8	40	11	02	13	24	15	46	18	08	20	29	22	34	24	14	1	36	2	55
जून	4	26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
जून	वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन		मेष	
1	6	21	8	36	10	59	13	21	15	42	18	05	20	26	22	30	24	10	1	32	2	52	4	23
2	6	17	8	32	10	55	13	16	15	38	18	01	20	22	22	26	24	06	1	28	2	48	4	19
3	6	13	8	28	10	51	13	12	15	34	17	57	20	18	22	22	24	02	1	24	2	44	4	15
4	6	09	8	24	10	47	13	08	15	30	17	53	20	14	22	18	23	58	1	20	2	40	4	11
5	6	05	8	20	10	43	13	04	15	26	17	49	20	10	22	14	23	54	1	16	2	36	4	07
6	6	01	8	16	10	39	13	00	15	22	17	45	20	06	22	10	23	50	1	12	2	32	4	03
7	5	57	8	12	10	35	12	56	15	18	17	41	20	02	22	06	23	46	1	08	2	28	3	59
8	5	54	8	08	10	31	12	52	15	14	17	37	19	58	22	03	23	42	1	04	2	24	3	55
9	5	50	8	04	10	27	12	48	15	11	17	33	19	54	21	59	23	38	1	00	2	20	3	51
10	5	46	8	00	10	23	12	45	15	07	17	29	19	50	21	55	23	34	0	57	2	16	3	47
11	5	42	7	56	10	19	12	41	15	03	17	25	19	46	21	51	23	30	0	53	2	12	3	43
12	5	38	7	52	10	15	12	37	14	59	17	21	19	42	21	47	23	26	0	49	2	08	3	39
13	5	34	7	48	10	11	12	33	14	55	17	17	19	38	21	43	23	22	0	45	2	04	3	35
14	5	30	7	44	10	07	12	29	14	51	17	13	19	34	21	39	23	18	0	41	2	00	3	31
15	5	26	7	40	10	03	12	25	14	47	17	09	19	30	21	35	23	14	0	37	1	56	3	27
16	5	22	7	36	9	59	12	21	14	43	17	05	19	26	21	31	23	10	0	33	1	52	3	23
17	5	18	7	32	9	55	12	17	14	39	17	01	19	22	21	27	23	06	0	29	1	48	3	19
18	5	14	7	29	9	51	12	13	14	35	16	57	19	18	21	23	23	03	0	25	1	44	3	15
19	5	10	7	25	9	47	12	10	14	31	16	53	19	14	21	19	22	59	0	21	1	40	3	11
20	5	06	7	21	9	43	12	06	14	27	16	49	19	10	21	15	22	55	0	17	1	36	3	07
21	5	02	7	17	9	40	12	02	14	23	16	45	19	06	21	11	22	51	0	13	1	32	3	03
22	4	58	7	14	9	36	11	58	14	19	16	41	19	02	21	07	22	47	0	09	1	28	2	59
23	4	54	7	10	9	32	11	54	14	15	16	37	18	58	21	03	22	43	0	05	1	24	2	55
24	4	50	7	06	9	28	11	50	14	11	16	33	18	54	20	59	22	39	0	02	1	21	2	51
25	4	47	7	02	9	24	11	46	14	07	16	30	18	51	20	55	22	35	23	58	1	17	2	47
26	4	43	6	58	9	20	11	42	14	03	16	26	18	47	20	51	22	31	23	54	1	12	2	44
27	4	39	6	54	9	16	11	38	13	59	16	22	18	43	20	47	22	27	23	50	1	09	2	40
28	4	35	6	50	9	13	11	34	13	56	16	18	18	39	20	43	22	23	23	46	1	05	2	36
29	4	31	6	46	9	09	11	31	13	52	16	14	18	35	20	40	22	19	23	42	1	01	2	32
30	4	27	6	42	9	05	11	27	13	48	16	11	18	32	20	36	22	16	23	38	24	58	2	29
जुला	4	23	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)–जम्मू (Jammu) जुलाई-अग. (July-Aug.)

जुलाई ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 38	9 01	11 23	13 44	16 07	18 28	20 32	22 12	23 34	24 54	2 25	4 19
2	6 34	8 57	11 19	13 40	16 03	18 24	20 28	22 08	23 30	24 50	2 21	4 15
3	6 30	8 53	11 15	13 36	15 59	18 20	20 24	22 04	23 26	24 46	2 17	4 11
4	6 26	8 50	11 11	13 32	15 55	18 16	20 20	22 00	23 22	24 42	2 13	4 07
5	6 22	8 46	11 07	13 28	15 51	18 12	20 16	21 56	23 18	24 38	2 09	4 03
6	6 19	8 42	11 03	13 24	15 47	18 08	20 12	21 52	23 14	24 34	2 05	3 59
7	6 15	8 38	10 59	13 20	15 43	18 05	20 08	21 48	23 10	24 30	2 01	3 55
8	6 11	8 34	10 56	13 17	15 39	18 01	20 04	21 44	23 06	24 27	1 57	3 51
9	6 08	8 30	10 52	13 13	15 35	17 57	20 00	21 40	23 02	24 23	1 54	3 47
10	6 04	8 26	10 48	13 09	15 32	17 53	19 56	21 36	22 58	24 19	1 50	3 43
11	6 00	8 22	10 44	13 05	15 28	17 49	19 52	21 32	22 54	24 15	1 46	3 39
12	5 56	8 18	10 40	13 01	15 24	17 45	19 48	21 28	22 50	24 11	1 42	3 35
13	5 52	8 14	10 36	12 58	15 20	17 41	19 44	21 24	22 46	24 07	1 38	3 31
14	5 48	8 10	10 33	12 54	15 16	17 37	19 40	21 20	22 42	24 03	1 34	3 27
15	5 44	8 07	10 29	12 50	15 12	17 33	19 37	21 17	22 38	24 00	1 31	3 23
16	5 40	8 03	10 25	12 46	15 08	17 29	19 33	21 13	22 34	23 56	1 27	3 19
17	5 36	7 59	10 21	12 42	15 04	17 25	19 29	21 09	22 30	23 52	1 23	3 15
18	5 32	7 55	10 17	12 38	15 00	17 21	19 25	21 05	22 27	23 48	1 19	3 11
19	5 28	7 51	10 13	12 34	14 57	17 17	19 21	21 01	22 23	23 44	1 15	3 07
20	5 24	7 47	10 09	12 30	14 53	17 13	19 17	20 57	22 19	23 40	1 11	3 03
21	5 20	7 43	10 05	12 26	14 49	17 10	19 13	20 53	22 15	23 36	1 07	2 59
22	5 16	7 39	10 01	12 22	14 45	17 06	19 09	20 49	22 11	23 32	1 03	2 55
23	5 12	7 35	9 57	12 18	14 41	17 02	19 05	20 45	22 07	23 28	24 59	2 52
24	5 08	7 31	9 53	12 14	14 37	16 58	19 01	20 41	22 04	23 24	24 55	2 48
25	5 04	7 27	9 49	12 11	14 33	16 54	18 58	20 38	22 00	23 20	24 51	2 44
26	5 00	7 23	9 45	12 07	14 29	16 50	18 54	20 34	21 56	23 16	24 47	2 40
27	4 56	7 19	9 41	12 03	14 25	16 46	18 50	20 30	21 52	23 12	24 43	2 36
28	4 52	7 15	9 37	11 59	14 21	16 42	18 46	20 26	21 48	23 08	24 39	2 33
29	4 48	7 11	9 33	11 55	14 17	16 38	18 42	20 22	21 44	23 04	24 36	2 29
30	4 44	7 07	9 29	11 51	14 13	16 34	18 38	20 18	21 40	23 00	24 32	2 25
31	4 40	7 03	9 25	11 47	14 10	16 31	18 34	20 14	21 36	23 56	24 28	2 21
अग.	4 36	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

अग.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
1	6 59	9 21	11 43	14 06	16 27	18 30	20 10	21 32	22 53	24 24	2 17	4 32
2	6 55	9 17	11 39	14 02	16 24	18 27	20 06	21 28	22 49	24 20	2 13	4 28
3	6 51	9 13	11 35	13 59	16 20	18 23	20 02	21 24	22 45	24 16	2 09	4 24
4	6 47	9 09	11 31	13 55	16 16	18 19	19 59	21 20	22 41	24 12	2 05	4 20
5	6 43	9 06	11 27	13 51	16 12	18 15	19 55	21 16	22 37	24 09	2 01	4 16
6	6 39	9 02	11 23	13 47	16 08	18 11	19 51	21 12	22 34	24 05	1 57	4 12
7	6 35	8 58	11 19	13 43	16 04	18 07	19 47	21 09	22 30	24 01	1 53	4 09
8	6 32	8 54	11 15	13 39	16 00	18 03	19 43	21 05	22 26	23 57	1 49	4 05
9	6 28	8 51	11 11	13 35	15 56	18 00	19 39	21 01	22 22	23 53	1 45	4 01
10	6 24	8 48	11 07	13 31	15 52	17 56	19 36	20 57	22 18	23 49	1 42	3 57
11	6 20	8 44	11 03	13 27	15 48	17 52	19 32	20 53	22 14	23 45	1 38	3 54
12	6 16	8 40	10 59	13 23	15 44	17 48	19 28	20 49	22 10	23 41	1 34	3 50
13	6 12	8 36	10 56	13 19	15 40	17 44	19 24	20 45	22 06	23 37	1 31	3 46
14	6 08	8 32	10 52	13 16	15 36	17 40	19 20	20 42	22 02	23 33	1 27	3 42
15	6 04	8 28	10 48	13 12	15 33	17 36	19 16	20 38	21 59	23 30	1 23	3 38
16	6 00	8 24	10 44	13 08	15 29	17 32	19 12	20 34	21 55	23 26	1 19	3 35
17	5 56	8 20	10 40	13 04	15 25	17 28	19 08	20 30	21 51	23 22	1 15	3 31
18	5 52	8 16	10 36	13 00	15 21	17 24	19 04	20 26	21 47	23 18	1 11	3 27
19	5 48	8 12	10 32	12 56	15 17	17 20	19 00	20 22	21 43	23 14	1 07	3 23
20	5 44	8 08	10 28	12 52	15 13	17 16	18 56	20 18	21 39	23 10	1 03	3 19
21	5 40	8 04	10 24	12 48	15 09	17 12	18 52	20 14	21 35	23 06	0 59	3 15
22	5 36	8 00	10 20	12 44	15 05	17 08	18 48	20 10	21 31	23 02	0 55	3 11
23	5 33	7 56	10 16	12 40	14 01	17 04	18 44	20 06	21 27	22 58	0 51	3 07
24	5 29	7 52	10 13	12 36	14 57	17 00	18 40	20 02	21 23	22 54	0 47	3 03
25	5 25	7 48	10 09	12 32	14 53	16 56	18 36	19 58	21 19	22 50	0 43	2 59
26	5 21	7 44	10 05	12 28	14 49	16 52	18 32	19 54	21 15	22 46	0 40	2 55
27	5 17	7 40	10 01	12 25	14 46	16 49	18 29	19 51	21 12	22 42	0 36	2 51
28	5 13	7 36	9 57	12 21	14 42	16 45	18 25	19 47	21 08	22 38	0 32	2 47
29	5 09	7 32	9 53	12 17	14 38	16 41	18 21	19 43	21 04	22 34	0 28	2 43
30	5 05	7 28	9 49	12 13	14 34	16 37	18 17	19 39	21 00	22 30	0 24	2 39
31	5 01	7 24	9 45	12 09	14 30	16 33	18 13	19 35	20 56	22 26	0 20	2 35
सितं.	4 57	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) सितं.-अक्टू. (Sept.-Oct.)

ता.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.
1	7 19	9 41	12 05	14 26	16 29	18 09	19 31	20 52	22 22	0 16	2 31	4 53
2	7 15	9 37	12 01	14 22	16 25	18 05	19 27	20 48	22 18	0 12	2 27	4 49
3	7 11	9 33	11 57	14 18	16 21	18 01	19 23	20 44	22 14	0 08	2 24	4 45
4	7 07	9 30	11 53	14 14	16 17	17 57	19 19	20 40	22 10	0 04	2 20	4 41
5	7 03	9 26	11 49	14 10	16 13	17 53	19 15	20 36	22 06	24 00	2 16	4 38
6	6 59	9 22	11 45	14 06	16 09	17 49	19 11	20 32	22 02	23 56	2 12	4 34
7	6 55	9 18	11 41	14 02	16 05	17 45	19 07	20 28	21 58	23 52	2 08	4 30
8	6 51	9 14	11 37	13 58	16 01	17 41	19 03	20 24	21 54	23 48	2 04	4 26
9	6 47	9 10	11 33	13 54	15 57	17 37	19 00	20 20	21 50	23 44	2 00	4 22
10	6 43	9 06	11 29	13 50	15 53	17 33	18 56	20 16	21 46	23 40	1 56	4 18
11	6 39	9 02	11 25	13 46	15 49	17 29	18 52	20 12	21 42	23 36	1 52	4 14
12	6 35	8 58	11 21	13 42	15 45	17 25	18 48	20 08	21 38	23 32	1 48	4 10
13	6 31	8 54	11 17	13 38	15 41	17 21	18 44	20 04	21 34	23 28	1 44	4 06
14	6 27	8 50	11 13	13 34	15 37	17 17	18 40	20 00	21 30	23 24	1 40	4 02
15	6 23	8 46	11 09	13 30	15 33	17 13	18 36	19 56	21 26	23 20	1 36	3 58
16	6 19	8 42	11 05	13 26	15 29	17 09	18 32	19 52	21 22	23 16	1 32	3 54
17	6 15	8 38	11 01	13 22	15 25	17 05	18 28	19 48	21 18	23 12	1 28	3 50
18	6 11	8 34	10 57	13 18	15 21	17 01	18 24	19 44	21 14	23 08	1 24	3 46
19	6 07	8 30	10 53	13 14	15 17	16 57	18 20	19 40	21 10	23 04	1 20	3 42
20	6 03	8 26	10 49	13 10	15 13	16 53	18 16	19 36	21 06	23 00	1 16	3 38
21	5 59	8 22	10 45	13 06	15 09	16 49	18 12	19 32	21 02	22 56	1 12	3 34
22	5 55	8 18	10 41	13 02	15 05	16 45	18 08	19 28	20 58	22 52	1 08	3 30
23	5 51	8 14	10 37	12 58	15 01	16 41	18 04	19 24	20 54	22 48	1 04	3 26
24	5 47	8 10	10 33	12 54	14 57	16 37	18 00	19 20	20 50	22 44	1 00	3 22
25	5 43	8 06	10 29	12 50	14 53	16 33	17 56	19 16	20 46	22 40	0 56	3 18
26	5 39	8 02	10 25	12 46	14 49	16 29	17 52	19 12	20 42	22 36	0 52	3 14
27	5 35	7 58	10 21	12 32	14 45	16 25	17 48	19 08	20 38	22 32	0 48	3 10
28	5 31	7 54	10 17	12 38	14 41	16 21	17 44	19 04	20 34	22 28	0 44	3 06
29	5 27	7 50	10 13	12 34	14 37	16 17	17 40	19 00	20 30	22 24	0 40	3 02
30	5 23	7 46	10 10	12 31	14 34	16 14	17 36	18 57	20 27	22 21	0 36	2 58
अक्टू.	5 20	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

अक्टू.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
1	7 42	10 06	12 27	14 30	16 10	17 32	18 53	20 23	22 17	0 32	2 55	5 16
2	7 38	10 02	12 23	14 26	16 06	17 28	18 49	20 19	22 13	0 28	2 51	5 12
3	7 34	9 59	12 19	14 22	16 02	17 24	18 45	20 15	22 09	0 24	2 47	5 08
4	7 30	9 55	12 15	14 18	15 58	17 20	18 41	20 11	22 05	0 21	2 43	5 05
5	7 26	9 51	12 11	14 14	15 54	17 16	18 37	20 08	22 01	0 17	2 40	5 01
6	7 22	9 47	12 07	14 10	15 50	17 12	18 33	20 04	21 57	0 13	2 36	4 58
7	7 18	9 43	12 03	14 06	15 46	17 08	18 29	20 00	21 53	0 09	2 32	4 54
8	7 14	9 39	11 59	14 02	15 42	17 04	18 25	19 56	21 49	0 05	2 28	4 50
9	7 10	9 35	11 55	13 58	15 38	17 01	18 21	19 52	21 45	0 01	2 24	4 46
10	7 06	9 31	11 51	13 54	15 34	16 57	18 17	19 48	21 41	23 57	2 20	4 42
11	7 02	9 27	11 47	13 50	15 30	16 53	18 13	19 44	21 37	23 53	2 16	4 38
12	6 58	9 23	11 43	13 46	15 26	16 49	18 09	19 40	21 33	23 49	2 12	4 34
13	6 55	9 19	11 39	13 42	15 22	16 45	18 05	19 36	21 29	23 45	2 08	4 30
14	6 51	9 15	11 35	13 38	15 18	16 41	18 01	19 32	21 25	23 41	2 04	4 26
15	6 47	9 11	11 31	13 34	15 14	16 37	17 57	19 28	21 21	23 37	2 00	4 22
16	6 44	9 07	11 27	13 30	15 10	16 33	17 53	19 24	21 17	23 33	1 56	4 18
17	6 40	9 03	11 23	13 26	15 06	16 29	17 49	19 20	21 13	23 29	1 52	4 14
18	6 36	8 59	11 19	13 22	15 02	16 25	17 45	19 16	21 09	23 25	1 48	4 10
19	6 32	8 55	11 15	13 18	14 58	16 21	17 41	19 12	21 05	23 21	1 44	4 07
20	6 28	8 51	11 11	13 14	14 54	16 17	17 37	19 08	21 01	23 17	1 40	4 03
21	6 24	8 47	11 07	13 10	14 50	16 13	17 33	19 04	20 57	23 13	1 36	3 59
22	6 20	8 43	11 03	13 06	14 46	16 09	17 29	19 00	20 53	23 09	1 32	3 55
23	6 16	8 39	10 59	13 02	14 42	16 05	17 25	18 56	20 49	23 05	1 28	3 51
24	6 12	8 35	10 55	12 58	14 38	16 01	17 21	18 52	20 45	23 01	1 24	3 47
25	6 09	8 32	10 52	12 54	14 35	15 58	17 18	18 49	20 42	22 58	1 20	3 44
26	6 05	8 28	10 48	12 51	14 31	15 54	17 14	18 45	20 38	22 54	1 16	3 40
27	6 01	8 24	10 44	12 47	14 27	15 50	17 10	18 41	20 34	22 50	1 12	3 36
28	5 57	8 20	10 40	12 43	14 23	15 46	17 06	18 37	20 30	22 46	1 09	3 32
29	5 53	8 16	10 36	12 39	14 19	15 42	17 02	18 33	20 26	22 42	1 05	3 28
30	5 49	8 12	10 32	12 36	14 15	15 38	16 58	18 29	20 22	22 38	1 01	3 24
31	5 45	8 08	10 28	12 32	14 11	15 34	16 54	18 25	20 18	22 34	24 57	3 20
नव.	5 41	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) नवं.-दिसं. (Nov.-Dec.)

नवम्बर	तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन		मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या	
ता.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1	8	04	10	25	12	28	14	08	15	30	16	51	18	21	20	15	22	30	24	53	3	16	5	37
2	8	00	10	21	12	24	14	04	15	26	16	47	18	17	20	11	22	26	24	49	3	12	5	34
3	7	56	10	17	12	20	14	00	15	22	16	43	18	14	20	07	22	23	24	46	3	08	5	30
4	7	52	10	13	12	16	13	56	15	18	16	39	18	10	20	03	22	19	24	42	3	04	5	26
5	7	48	10	09	12	12	13	52	15	14	16	35	18	06	19	59	22	15	24	38	3	00	5	22
6	7	44	10	05	12	08	13	48	15	10	16	31	18	02	19	55	22	11	24	35	2	56	5	18
7	7	41	10	01	12	04	13	44	15	06	16	27	17	58	19	51	22	07	24	31	2	53	5	14
8	7	37	9	57	12	00	13	40	15	02	16	23	17	54	19	47	22	03	24	27	2	49	5	10
9	7	33	9	53	11	56	13	36	14	58	16	19	17	50	19	43	21	59	24	23	2	45	5	06
10	7	29	9	49	11	52	13	32	14	54	16	15	17	46	19	39	21	55	24	19	2	41	5	02
11	7	25	9	45	11	48	13	28	14	50	16	11	17	42	19	35	21	51	24	15	2	37	4	58
12	7	21	9	41	11	44	13	24	14	46	16	07	17	38	19	31	21	47	24	11	2	33	4	54
13	7	17	9	37	11	40	13	20	14	42	16	03	17	34	19	27	21	43	24	07	2	29	4	50
14	7	13	9	33	11	36	13	16	14	38	15	59	17	30	19	23	21	39	24	03	2	25	4	46
15	7	09	9	29	11	32	13	12	14	34	15	55	17	26	19	19	21	35	23	59	2	21	4	42
16	7	05	9	25	11	28	13	08	14	30	15	51	17	22	19	15	21	31	23	55	2	17	4	38
17	7	00	9	21	11	24	13	04	14	26	15	47	17	18	19	11	21	27	23	51	2	13	4	34
18	6	56	9	17	11	20	13	00	14	22	15	43	17	14	19	07	21	23	23	47	2	09	4	30
19	6	52	9	13	11	16	12	56	14	18	15	39	17	10	19	03	21	19	23	43	2	05	4	26
20	6	48	9	09	11	12	12	52	14	14	15	35	17	06	18	59	21	15	23	39	2	01	4	22
21	6	44	9	05	11	08	12	48	14	10	15	31	17	02	18	55	21	11	23	35	1	57	4	18
22	6	40	9	02	11	05	12	45	14	07	15	28	16	59	18	52	21	08	23	32	1	54	4	15
23	6	37	8	58	11	01	12	41	14	03	15	24	16	55	18	48	21	04	23	28	1	50	4	11
24	6	33	8	54	10	57	12	37	13	59	15	20	16	51	18	44	21	00	23	24	1	46	4	07
25	6	29	8	50	10	53	12	33	13	55	15	16	16	47	18	40	20	56	23	20	1	42	4	03
26	6	25	8	46	10	49	12	29	13	51	15	12	16	43	18	36	20	52	23	16	1	38	3	59
27	6	21	8	42	10	45	12	25	13	47	15	08	16	39	18	32	20	48	23	12	1	34	3	55
28	6	17	8	38	10	41	12	21	13	44	15	04	16	35	18	28	20	44	23	08	1	30	3	51
29	6	13	8	35	10	38	12	18	13	40	15	01	16	32	18	25	20	40	23	04	1	26	3	47
30	6	10	8	31	10	34	12	14	13	36	14	57	16	28	18	21	20	36	23	00	1	22	3	43
दिसं	6	06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दिसं	वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन		मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला	
1	8	27	10	30	12	10	13	32	14	53	16	24	18	17	20	32	22	56	1	18	3	39	6	02
2	8	23	10	26	12	06	13	28	14	49	16	20	18	13	20	28	22	52	1	15	3	36	5	58
3	8	19	10	22	12	02	13	24	14	45	16	16	18	09	20	24	22	48	1	11	3	32	5	54
4	8	15	10	18	11	58	13	20	14	41	16	12	18	05	20	20	22	44	1	07	3	28	5	50
5	8	11	10	14	11	54	13	16	14	37	16	08	18	01	20	16	22	40	1	03	3	24	5	46
6	8	07	10	10	11	50	13	12	14	33	16	04	17	57	20	12	22	36	0	59	3	20	5	42
7	8	03	10	06	11	46	13	09	14	29	16	00	17	53	20	08	22	32	0	55	3	16	5	38
8	7	59	10	02	11	42	13	05	14	25	15	56	17	49	20	04	22	28	0	51	3	12	5	34
9	7	55	9	58	11	38	13	02	14	21	15	52	17	45	20	00	22	24	0	47	3	08	5	30
10	7	52	9	55	11	35	12	58	14	18	15	49	17	42	19	57	22	20	0	43	3	05	5	27
11	7	48	9	51	11	31	12	54	14	14	15	45	17	38	19	53	22	16	0	39	3	01	5	23
12	7	44	9	47	11	27	12	50	14	10	15	41	17	34	19	49	22	12	0	35	2	57	5	19
13	7	40	9	43	11	23	12	46	14	06	15	37	17	30	19	45	22	08	0	31	2	53	5	15
14	7	36	9	39	11	19	12	42	14	02	15	33	17	26	19	41	22	04	0	27	2	49	5	11
15	7	32	9	35	11	15	12	38	13	58	15	29	17	22	19	37	22	00	0	23	2	45	5	07
16	7	28	9	31	11	11	12	34	13	54	15	25	17	18	19	33	21	56	0	19	2	41	5	03
17	7	24	9	27	11	07	12	30	13	50	15	21	17	14	19	29	21	52	0	15	2	37	4	59
18	7	20	9	23	11	04	12	26	13	46	15	17	17	10	19	25	21	48	0	11	2	33	4	55
19	7	16	9	19	11	00	12	22	13	42	15	13	17	06	19	21	21	44	0	07	2	29	4	51
20	7	12	9	15	10	56	12	18	13	38	15	09	17	02	19	17	21	40	0	03	2	25	4	47
21	7	08	9	11	10	52	12	14	13	34	15	05	16	58	19	13	21	36	23	59	2	21	4	43
22	7	04	9	07	10	48	12	10	13	30	15	01	16	54	19	10	21	32	23	55	2	17	4	39
23	7	00	9	03	10	44	12	06	13	26	14	57	16	50	19	06	21	28	23	51	2	13	4	35
24	6	56	9	00	10	40	12	02	13	22	14	53	16	47	19	02	21	25	23	47	2	09	4	31
25	6	52	8	56	10	36	11	58	13	18	14	49	16	43	18	58	21	21	23	43	2	05	4	27
26	6	49	8	52	10	32	11	54	13	15	14	45	16	39	18	54	21	17	23	39	2	01	4	23
27	6	45	8	48	10	28	11	50	13	11	14	42	16	35	18	50	21	13	23	35	1	57	4	20
28	6	41	8	44	10	24	11	44	13	07	14	38	16	31	18	46	21	09	23	31	1	53	4	16
29	6	37	8	40	10	20	11	42	13	03	14	34	16	27	18	42	21	05	23	27	1	49	4	12
30	6	33	8	36	10	16	11	38	12	59	14	30	16	23	18	38	21	01	23	23	1	45	4	08
31	6	29	8	32	10	12	11	34	12	55	14	26	16	19	18	34	20	57	23	19	1	41	4	04
दिसं	6	25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°-२०' (अंश कला) होगा (१३°-२०') $\div 4 = 3°—20'$ शून्य से प्रारम्भ होकर प्रतयेक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०–००–००	अश्विनी (१) मेषे	४–००–००	मघा (१) सिंहे	८–००–००	मूला (१) धनु
०–०३–२०	,, (२) ,,	४–०३–२०	,, (२) ,,	८–०३–२०	,, (२) ,,
०–०६–४०	,, (३) ,,	४–०६–४०	,, (३) ,,	८–०६–४०	,, (३) ,,
०–१०–००	,, (४) ,,	४–१०–००	,, (४) ,,	८–१०–००	,, (४) ,,
०–१३–२०	भरणी (१) ,,	४–१३–२०	पूफा (१) ,,	८–१३–२०	पू.षा. (१) ,,
०–१६–४०	,, (२) ,,	४–१६–४०	,, (२) ,,	८–१६–४०	,, (२) ,,
०–२०–००	,, (३) ,,	४–२०–००	,, (३) ,,	८–२०–००	,, (३) ,,
०–२३–२०	,, (४) ,,	४–२३–२०	,, (४) ,,	८–२३–२०	,, (४) ,,
०–२६–४०	कृतिका (१) मेषे	४–२६–४०	उफा (१) ,,	८–२६–४०	उ.षा. (१) ,,
१–००–००	,, (२) वृषे	५–००–००	,, (२) कन्या	९–००–००	उषा (२) मक
१–०३–२०	,, (३) ,,	५–०३–२०	,, (३) ,,	९–०३–२०	,, (३) ,,
१–०६–४०	,, (४) ,,	५–०६–४०	,, (४) ,,	९–०६–४०	,, (४) ,,
१–१०–००	रोहिणी (१) ,,	५–१०–००	हस्ते (१) ,,	९–१०–००	श्रव (१) ,,
१–१३–२०	,, (२) ,,	५–१३–२०	,, (२) ,,	९–१३–२०	,, (२) ,,
१–१६–४०	,, (३) ,,	५–१६–४०	,, (३) ,,	९–१६–४०	,, (३) ,,
१–२०–००	,, (४) ,,	५–२०–००	,, (४) ,,	९–२०–००	,, (४) ,,
१–२३–२०	मृगशिर (१) ,,	५–२३–२०	चित्रा (१) ,,	९–२३–२०	धनि (१) ,,
१–२६–४०	,, (२) ,,	५–२६–४०	,, (२) ,,	९–२६–४०	,, (२) ,,
२–००–००	,, (३) मिथुन	६–००–००	चित्रा (३) तुला	१०–००–००	,, (३) कुंभे
२–०३–२०	,, (४) ,,	६–०३–२०	,, (४) ,,	१०–०३–२०	,, (४) ,,
२–०६–४०	आर्द्रा (१) ,,	६–०६–४०	स्वाती (१) ,,	१०–०६–४०	शतभिषा (१) ,,
२–१०–००	,, (२) ,,	६–१०–००	,, (२) ,,	१०–१०–००	,, (२) ,,
२–१३–२०	,, (३) ,,	६–१३–२०	,, (३) ,,	१०–१३–२०	,, (३) ,,
२–१६–४०	,, (४) ,,	६–१६–४०	,, (४) ,,	१०–१६–४०	,, (४) ,,
२–२०–००	पुनर्वसु (१) ,,	६–२०–००	विशाखा (१) ,,	१०–२०–००	पूभा (१) ,,
२–२३–२०	,, (२) ,,	६–२३–२०	,, (२) ,,	१०–२३–२०	,, (२) ,,
२–२६–४०	,, (३) ,,	६–२६–४०	,, (३) ,,	१०–२६–४०	,, (३) ,,
३–००–००	पुनर्वसु (४) कर्के	७–००–००	,, (४) वृश्चिके	११–००–००	पूभा (४) मीने
३–०३–२०	पुष्ये (१) ,,	७–०३–२०	अनुराधा (१) ,,	११–०३–२०	उ.भा. (१) ,,
३–०६–४०	,, (२) ,,	७–०६–४०	,, (२) ,,	११–०६–४०	,, (२) ,,
३–१०–००	,, (३) ,,	७–१०–००	,, (३) ,,	११–१०–००	,, (३) ,,
३–१३–२०	,, (४) ,,	७–१३–२०	,, (४) ,,	११–१३–२०	उ.भा. (४) ,,
३–१६–४०	आश्ले (१) ,,	७–१६–४०	ज्ये. (१) ,,	११–१६–४०	रेवती (१) ,,
३–२०–००	,, (२) ,,	७–२०–००	,, (२) ,,	११–२०–००	,, (२) ,,
३–२३–२०	,, (३) ,,	७–२३–२०	,, (३) ,,	११–२३–२०	,, (३) ,,
३–२६–४०	,, (४) ,,	७–२६–४०	,, (४) ,,	११–२६–४०	रेवती (४) ,,
				००–००–००	अश्वि (१) मेषे

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19′ अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-00′ अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यत: अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 28 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

29 फरवरी के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**–ता. 16 अप्रैल, 1999 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +2 मिनट प्राप्त हुए। अत: सन् 1999 में **मेष** लग्न 7/31 पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९६B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१	–१
१९९७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	–१	– १
१९९८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	– १
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	– १
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	– १
२००९	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	+०	–१	–१
२०१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	ज्ये.	५ ३९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०१	२१ २१	२३ ३४	०१ १५	२ ४०	४ ०२	५ ३५
15	२	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	३	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	४	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	५	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	६	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	७	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	८	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	९	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	१०	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	११	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	१२	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१३	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१४	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१५	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
						१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१७	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१८	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१९	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	२०	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२१	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२२	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२३	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२४	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२५	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२६	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२७	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२८	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२९	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	३०	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३१	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३२	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	००२७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	भाद्र	६ ०१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

(आश्विन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५	५ ५७
17	२	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	३	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	४	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	५	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	६	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	७	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	८	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	९	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	१०	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	११	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	१२	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१३	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१४	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१५	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१६	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१७	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१८	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१९	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	२०	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२१	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२२	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२३	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२४	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२५	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२६	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२७	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२८	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२९	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	३०	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३१	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४	६ १५
17	२	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	३	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	४	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	५	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	६	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	७	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	८	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	९	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	१०	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	११	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	१२	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१३	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१४	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१५	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू	१६	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१७	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१८	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१९	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	२०	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२१	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२२	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२३	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२४	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२५	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२६	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२७	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२८	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२९	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	३०	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३१	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्तू.-नवं. (कार्तिक) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्टूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

(माघ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ० ६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ० २	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५५	९ १७	१० ५०	१२ ४४	१४ ५८	१७ २१	१९ ४१	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ४५	६ २६
25	१३	७ ५१	९ १३	१० ४६	१२ ४०	१४ ५४	१७ १७	१९ ३७	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ४१	६ २२
26	१४	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३७	६ १८
27	१५	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३३	६ १४
28	१६	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २९	६ ११
मार्च	१७	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१८	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	१९	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२०	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२१	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२२	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२३	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२४	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२५	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२६	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२७	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२८	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	२९	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (−) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**—मान लो आपने 16 जुलाई, 2013 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें −८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट—नीचे लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	−५	−५	−५	−३	−३	−६	−५	−५	−४	−५	−५	−५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	−१	−३	−४	−१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	−१	−५	−४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	−१५	−१२	−१३	−१५	−२१	−२९	−३४	−३७	−३६	−३२	−२६	−२०
अलीगढ़	−४	−३	−३	−५	−७	−१३	−१६	−१७	−१७	−१३	−११	−७
अयोध्या	−१८	−१८	−१५	−१९	−२१	−२५	−२८	−३०	−२८	−२७	−२४	−१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	−४	−६	−७	−७	−४	+१	+४
आगरा	−४	−२	−३	−६	−७	−१२	−१५	−१६	−१६	−१३	−१०	−६
अगरतला	−५०	−४७	−४६	−५३	−६०	−६७	−७५	−७८	−७६	−७३	−६४	−५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	−८	−१४	−१९	−१७	−१०	−१	+७
ऊना (हि.प्र.)	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−३
उधमपुर	−२	−२	−२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	−७	−१४	−१९	−१७	−१०	−२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	−४	−८	−६	−१	+६	+१३
करनाल	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−४	−३
कालका	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−४	−३
कुरुक्षेत्र	−४	−३	−३	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−३	−३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	−१	−१	+१	−०	−०	−०	−०	−१
कोटखाई	−७	−७	−७	−७	−७	−८	−७	−७	−७	−६	−६	−७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	−१	−६	−११	−१४	−१३	−८	−२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	−०	−०	−१	+०	−०	−०	−०	−०	−१
काठमण्डू	−३२	−३१	−३१	−३०	−३३	−३८	−४०	−४२	−४२	−४०	−३६	−३३
कोलकत्ता	−३७	−३२	−३५	−४०	−४९	−५८	−६४	−६९	−६८	−६१	−५३	−४४
कानपुर	−११	−१०	−१०	−१३	−१८	−२२	−२५	−२७	−२६	−२१	−१७	−१३
कांगड़ा	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
कुल्लू	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−४	−५	−५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कटुआ	−२	−२	−२	−१	−०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	−१	−१	−१	−०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	−२	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−३
ग्वालियर	−२	+१	+०	−५	−९	−१२	−१६	−१८	−१७	−१३	−८	−५
गुरदासपुर	−१	−१	−१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	−२३	−२१	−२२	−२४	−२७	−३२	−३५	−३७	−३६	−३२	−२७	−२४
गुड़गांव	−१	−१	−१	−३	−३	−७	−१०	−११	−११	−९	−६	−४
गोहाटी	−५५	−४८	−५३	−५५	−६१	−६८	−७२	−७५	−७३	−६९	−६४	−६०
गाजियाबाद	−२	−१	−१	−२	−२	−७	−९	−११	−११	−९	−६	−३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	−२६	−१८	−२३	−२७	−३३	−४२	−४७	−५१	−४१	−४४	−३७	−३२
चण्डीगढ़	−५	−४	−४	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५	−५
चिन्तपूर्णी	−२	−१	−२	−२	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−१
चम्बा	−६	−६	−६	−५	−४	−२	+१	+२	+१	+०	+३	−४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	−३	−७	−९	−९	−७	−२	+३
ज्वालामुखी	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
जम्मू	−१	−२	−१	−१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	−२	−१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	−१	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	−२	+१	+०	−६	−११	−१७	−२२	−२५	−२३	−१८	−१३	−७
जगन्नाथपुरी	−२२	−१६	−१३	−२६	−३७	−४९	−५९	−६४	−६३	−५५	−४४	−३२
दिल्ली	−२	−१	−१	−४	−४	−८	−११	−१२	−१२	−१०	−७	−५
दुर्ग (म. प्र.)	−६	−०	−२	−१०	−१९	−२७	−३७	−४२	−४२	−३१	−२१	−१४
देहरादून	−१०	−१०	−९	−१०	−९	−११	−१२	−१२	−१३	−११	−९	−९
धर्मशाला	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन (हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-११	-१२	-१४	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन (हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१६	-२३	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-१०	-११	-१३	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+८	+२	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ (उ.प्र.)	-६	-३	-४	-७	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८
मण्डी (हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	+०	-१	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१२	-१६	-२२	-२४	-३०	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-९	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+४	+३	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-१	+१

पृष्ठ (3) का शेष भाग

...सकती भी पहिनी जा सकती है। पात्र में रखे गंगाजल,

(3) रेचक प्राणायाम—तृतीय अवस्था में अँगूठे को नाक के दाहिने छिद्र से श्वास को ... करते हैं। इस समय मन में श्वेत वर्ण शंकर जी का

पृष्ठ (3) का शेष भाग

अभाव में सोने, चाँदी या ताम्बे की अँगूठी भी पहिनी जा सकती है। पात्र में रखे गंगाजल, गन्धाक्षतादि युक्त पवित्र जल से कुशा-निर्मित मोटक द्वारा अपने शरीर पर 3 बार छींटा लगावें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर आसन पर जल छिड़कें तथा दाएँ हाथ से आसन को स्पर्श भी करें- **ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोकाः देवि ! त्वं विष्णुनाधृता।**
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्।।

(5) आचमन—इससे कायिक एवं मानसिक शुद्धि होती है। आचमन के लिए दाएं हाथ की हथेली की गोकर्ण जैसी मुद्रा बनाकर **भगवान् विष्णु** का ध्यान करते हुए निम्न **तीनों मन्त्रों से तीन बार आचमन** (जल ग्रहण) करें। ध्यान रहे, आचमन करते समय साधक पूर्व/उत्तराभिमुख होकर दोनों हाथों को जानुओं के भीतर करके दाहिने हाथ वाले ब्राह्मतीर्थ से आचमन करें।

आचमन मन्त्र– "**ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः**" इन तीन मन्त्रों से तीन बार आचमन करें, फिर "**ॐ हृषीकेशाय नमः**" मन्त्र बोलकर हाथ प्रक्षालित कर लेवें।

(6) प्राणायाम—संध्या, जप-पाठादि से पूर्व विधिवत् शास्त्रों में प्राणायाम करने की बड़ी महिमा कही गई है।

यथा पर्वतधातूनां दोषान् हरति पावकः।
एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते।। (अत्रिस्मृति)

अर्थात्—पर्वत से निकले धातुओं का मल जैसे अग्नि से जल जाता है, वैसे प्राणायाम से आन्तरिक पाप जल जाते हैं। प्राणायाम से पूर्व निम्न मन्त्र का पाठ करें–

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः, ॐ महः ॐ जनः, ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रयोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

नोट—यदि किसी कारण उपरोक्त दीर्घ मन्त्र न पढ़ सकें, तो तीन बार गायत्री मन्त्र का जप कर लेवें। फिर प्राणायाम करें। **प्राणायाम** के तीन भेद होते हैं–

1. पूरक, 2. कुम्भक और 3. रेचक।

(1) दाहिने हाथ से अँगूठे से नाक के दाहिने छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे खींचने को '**पूरक प्राणायाम**' कहते हैं। यह प्राणायाम करते समय मन ही मन नाभि देश में नील वर्ण चतुर्भुज भगवान् विष्णु का ध्यान करें।

(2) जब साँस खींचना रूक जाए, तब अनामिका और कनिष्ठिका अँगुली से नाक के बाएं छिद्र को दबा दें। मन्त्र जपता रहे। यह '**कुम्भक प्राणायाम**' हुआ। इस समय हृदय में कमल पर विराजित लाल वर्ण युक्त चतुर्मुख ब्रह्मा का ध्यान करें।

(3) **रेचक प्राणायाम**—तृतीय अवस्था में अँगूठे को नाक के दाहिने छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे छोड़ें। इसको '**रेचक प्राणायाम**' कहते हैं। इस समय मन में श्वेत वर्ण शंकर जी का ध्यान करना चाहिए।

प्राणायाम के बाद पुनः आचमन करना चाहिए। तत्पश्चात् जप, पाठ, सन्ध्यादि नित्य कर्म प्रारम्भ किए जा सकते हैं।

गायत्री मन्त्र महिमा—कोई भी जपानुष्ठान, व्रतादि के प्रारम्भ में गायत्री मन्त्र जप की विशेष महिमा कही गई है। गायत्री-मन्त्र में परमात्मा का स्तवन है, अतः इसके जप से बारम्बार परमेश्वर की स्तुति सम्पन्न होती है। योगी याज्ञवल्क्य जी अनुसार प्रतिदिन **सात बार** जप करने से गायत्री देवी शरीर को पवित्र करती है ; **दस बार** के जप से स्वर्गलोक की प्राप्ति कराती है। **बीस बार** जप करने शिवलोक प्राप्त होता है। और 108 बार जप से पूर्व जन्म तथा एक हजार जप करने से तीन जन्मों के पाप नष्ट होते हैं–

दशभिर्जन्म जनितं शतेन तु पुराकृतम्।
त्रिजन्मजं सहस्रेण गायत्री हन्ति किल्विषम्।।

मनोयोग पूर्वक गायत्री-जप करना चाहिए। जप तीन प्रकार का होता है–वाचिक, उपांशु और मानसिक। इनमें उत्तरोत्तर जप श्रेष्ठतर है। **गायत्र मन्त्र** का जप आवाहन एवं अर्थ को ध्यान में रखते हुए तथा विनियोग पूर्वक करने से विशेष फल प्राप्त होते हैं।

आवाहन मन्त्र– **ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि।**
धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।।

यद्यपि आवाहन मन्त्र का भी विनियोग दिया गया है जोकि श्रीगायत्री की वृहद् पुस्तक में देखें। यहाँ संक्षेप में पूर्वक लिखा गया है। गायत्री मन्त्र में विनियोग मन्त्र इस प्रकार से है–

विनियोग मन्त्र–**ॐकारस्य ब्रह्मात्रृषिः, गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः ऋषिः गायत्री, उष्णिक् अनुष्टुपश्छन्दांसि-अग्निवायु सूर्या देवताः, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।।**

गायत्री-मन्त्र–"**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।**

अर्थ—सत् चित् आनन्द स्वरूप सृष्टिकर्ता प्रकाशमय परमेश्वर के उस दिव्य वरणीय तेज का (हम) ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धि को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करे।।

सूर्य-अर्घ्य प्रधान—गायत्री मन्त्र जप के पश्चात् सूर्य देव को अर्घ्य देने का विधान है। सूर्य भगवान् को ताम्रपात्र में लाल-चन्दन, पुष्प-अक्षत व शुद्ध जल डालकर, गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सूर्य की ओर मुख करके खड़े होकर तीन बार अर्घ्य देवें। अर्घ्य देते समय हाथ खुले रखें तथा तर्जनी व अँगूठे न सटने दें। यदि संभव हो तो एक पैर पर खड़ा होकर दूसरे पैर की एड़ी उठाएं रखें। **सूर्यार्घ्य मन्त्र** इस प्रकार से है–

एहि सूर्य ! सहस्रांशो तेजोराशे, जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं–

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि–(1) असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (2) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (3) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि–माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र–ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं अंग्रेज़ी में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान–शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा–(1) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (2) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति–चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि–मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए '**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**' के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न–चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)–यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में कोरल (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा–(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार**, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि **विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न** वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र ... की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, ... पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र–ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

''पन्ना'' बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा–(1) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (2) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण–**'पन्ना'** धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि–यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु-रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि–जो पुखराज स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि** का माना जाता है।

परीक्षा–(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण–पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग–इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि–पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **''ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः''** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न-सुनैला-इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, **हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान–अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा–(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण–हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक** सुख में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण–हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे–दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र,** एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का 16 हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न-(i) फिरोज़ा-नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)–यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। **हिन्दी** में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान–असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा–(i) असली **नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो** दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने **से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।**

गुण–नीलम धारण करने से **धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति–नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि–नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों** में शनि के **बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० की **संख्या में अभिमन्त्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न–गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि–सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि–गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र–"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया चार रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान–(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि–लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र–"ॐ स्रां स्रीं, स्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'आपका भाग्यारत्न' पुस्तक 60 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य 150 रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

दिनमान से मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न, प्रदोष काल जानना

दिनमान से मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न, प्रदोष काल जानना

प्राचीन भारतीय महर्षियों ने विभिन्न शास्त्रीय, वैदिक एवं लौकिक कार्यों को करने के लिए अपने सहस्त्रों वर्षों के अनुभवों एवं अनुसन्धानों के आधार पर मानव-उपयोगी '**काल मान**' के ज्ञान का प्रकाश किया था। आजकल यद्यपि काल-विभाजन अधिकांशत: घण्टा मिनटों, सैकिण्डों आदि में किया जाता है, परन्तु भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने दिन-रात (अहोरात्र) का विभाजन दिनमान, रात्रिमान, घड़ी, पल, विपल, प्रहर, मुहूर्त्तों आदि में दिया गया है। व्रत, पर्व, त्यौहारों एवं याज्ञादि अनुष्ठानों सम्बन्धी नियमों में मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष, ब्रह्म आदि काल के विशेष उल्लेख मिलते हैं।

—अथ दिवारात्रौ पंचदश मुहूर्त्ता—

मुहूर्त्त—मुहूर्त्त मार्त्तण्ड के अनुसार दिन और रात में पन्द्रह-पन्द्रह कुल (३०) मुहूर्त्त होते हैं। दिनमान अथवा रात्रिमान को १५ से भाग देने पर प्रत्येक मुहूर्त्त का समान मान निकलता है।

दिन के पांच भाग—अक्षांश भेद एवं सूर्योदयास्त में अन्तर होने के कारण प्रत्येक नगर के दिनमान और रात्रिमान परिवर्तित होते रहते हैं। सम्भवत: इसी कारण हमारे पूर्वाचार्यों ने दिवस का प्रारम्भ काल सूर्योदय से मानते हुए दिन के पाँच भाग किए हैं, यथा-सूर्योदय से ३ मुहूर्त्त (२ घण्टा, २४ मिनट) तक **प्रात:काल**, उसके बाद २ घण्टा, २४ मिनट **संगवकाल**, इसके बाद २ घण्टे २४ मिनट तक **मध्याह्नकाल**, फिर २ घण्टा, २४ मिनट के बाद **अपराह्नकाल** और फिर आगे २ घण्टा २४ मिनट का **सायंह्नकाल** होता है।

प्रात:काल स्नानादि के पश्चात् देवपूजन, जपादि के लिए प्रशस्त, मध्याह्न में **ब्रह्मयज्ञ**, ऋषि तर्पण आदि, अपराह्न में श्राद्ध, पितृकर्म तथा **सायंकाल** में भी स्नान, संध्या, जप, देवार्चन आदि करने की शास्त्राज्ञा है।

अभिजित मुहूर्त्त—यह दिन का अष्टम मुहूर्त्त है। यह विशेष प्रशस्त मुहूर्त्त कहलाता है। नारद पुराण अनुसार दिन के बारह बजे से 1 घड़ी पूर्व और एक घड़ी पश्चात् अर्थात् मध्याह्न 11/36 से 12/24 बजे तक का समय तथा तदनन्तर नवम मुहूर्त्त '**ब्राह्म**' या '**रौहिण**' कहलाता है, जो श्राद्ध में श्रेष्ठ माना जाता है। अभिजित् काल में क्रियमाण सभी कार्य सफल होते हैं, ऐसी मान्यता है।

—मध्याह्न, अपराह्न आदि का प्रारम्भ व समाप्ति—

मध्याह्न काल—अभीष्ट दिन के दिनमान को अढ़ाई से भाग देकर जो मान (घड़ी-पलों या घण्टा-मिनटों में) प्राप्त होवे, उसको अपने स्थानीय सूर्योदय में जमा करने से, आपको अपने नगर के **मध्याह्न** का **आरम्भकाल** ज्ञात होगा।

दिनमान को अढ़ाई से भाग देने के पश्चात् जो संख्या घण्टा/मिनटादि प्राप्त हो, उसे २ से भाग देकर अर्ध-भाग करें, तथा इस अर्ध-संख्या को **मध्याह्न** के आरम्भकाल में जमा कर देने से मध्याह्न का समाप्ति काल जान सकते हैं।

मध्याह्न काल की समाप्ति से अपराह्न का प्रारम्भकाल शुरु होता है।

दिनमान से मध्याह्न, अपराह्न, सायह्न जानने की प्रक्रिया

भारतीय भूखण्ड में दिनमान का विस्तार लगभग 9/30 घं. मिंट से लेकर 14-30 घं. मि. के मध्य में पड़ता है। इसीलिए 9/30 घं. मिं. दिनमान से लेकर 14/30 घं. मिं. के दिनमान के मध्यान्तर में आने वाले मध्याह्न, अपराह्न आदि के आरम्भ व समाप्ति काल जानने की प्रक्रिया लिख रहे हैं। मध्याह्न तथा अपराह्न काल के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल के घण्टा मिनट को अपने नगर के सूर्योदय में अलग-अलग जमा कर देने से क्रमश: मध्याह्न एवं अपराह्न काल का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल पता चल जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए हमें जम्मू नगर में 31 अग. 2012 को मध्याह्न का आरम्भ, समाप्ति व मध्यम काल जानना है, तो 31 अग. के सूर्योदय (6/08) को उस दिन के सूर्यास्त (18-53 घं. मिं.) में से घटा देने पर हमें 12 घं. 45 मिनट का दिनमान प्राप्त हुआ। आगे दी गई तालिका में दिनमान घं. 12/45 मिं. के आगे दाईं ओर देखने से हमें मध्याह्न का आरम्भ 5 घं. 6 मिं. मिला। इसको उस दिन के सूर्योदय (6-08) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का प्रारम्भ 11 घं. 14 मिं. तथा उसी दिनमान के सामने समाप्ति काल (7.39) में सू.उ. जमा करने से हमें 31 अग. के मध्याह्न का समा. काल (13-47) प्राप्त हुआ। आरम्भ व समाप्ति के समयान्तर के अर्ध भाग (10/17) को मध्याह्नारम्भ (11-14) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का मध्य काल प्राप्त होगा।

दिनमान		मध्याह्न				अपराह्न				सायह्न			
		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति	
घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9	30	3	48	5	42	5	42	7	36	7	36	9	30
9	45	3	54	5	51	5	51	7	48	7	48	9	45
10	00	4	00	6	00	6	00	8	00	8	00	10	00
10	15	4	06	6	9	6	9	8	12	8	12	10	15
10	30	4	12	6	18	6	18	8	24	8	24	10	30
10	45	4	18	6	27	6	27	8	36	8	36	10	45
11	00	4	24	6	36	6	36	8	48	8	48	11	99
11	15	4	30	6	45	6	45	9	00	9	00	11	15
11	30	4	36	6	54	6	54	9	12	9	12	11	30
11	45	4	42	7	03	7	03	9	24	9	24	11	45
12	00	4	48	7	12	7	12	9	36	9	36	12	00

दिनमान		मध्याह्न				अपराह्न				सायह्न			
		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति	
घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
12	15	4	54	7	21	7	21	9	48	9	48	12	15
12	30	5	00	7	30	7	30	10	00	10	00	12	30
12	45	5	06	7	39	7	39	10	12	10	12	12	45
13	00	5	12	7	48	7	48	10	24	10	24	13	00
13	15	5	18	7	57	7	57	10	36	10	36	13	15
13	30	5	24	8	06	8	06	10	48	10	48	13	30
13	45	5	30	8	15	8	15	11	00	11	00	13	45
14	00	5	36	8	24	8	24	11	12	11	12	14	00
14	15	5	42	8	33	8	33	11	24	11	24	14	15
14	30	5	48	8	42	8	42	11	36	11	36	14	30
15	00	6	00	9	00	9	00	12	00	12	00	15	00

इसी भान्ति अभीष्ट दिनमान की दाईं तरफ लिखे कालम में अपराह्न के आरम्भ तथा समाप्ति के घं.मिं. उस दिन के स्थानीय सूर्योदय में अलग-अलग जोड़ देने पर अपराह्न का आरम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) मालूम हो जाएगा।

सायह्नकाल का प्रारम्भ और समाप्ति जानने के लिए भी दी गई तालिकानुसार दिनमान देखकर उसके सामने लिखे अनुसार प्रारम्भ और समाप्ति (घं. मिं.) काल में अभीष्ट दिन को सूर्योदय जोड़ देने से सायंकाल का प्रा. व समाप्ति निकल आएगी।

–प्रदोषकाल ज्ञात करना–

स्थानीय सूर्यास्त के बाद मध्यमान से तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी), अर्थात् 2 घण्टे 24 मिनट तक प्रदोष काल होता है–**''त्रिमुहूर्त प्रदोषःस्यात् भानौऽस्तं गते सति।''**

प्रदोषकाल में सूर्यास्त के बाद शिवपूजनार्चनादि तथा ब्राह्मण भोजन का विधान है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त के बाद **2 घड़ी** (1 घण्टा, 12 मिनट) तक के काल को प्रदोष मानते हैं। सम्भवतः यह काल प्रदोष काल में शिवपूजन में ही विशेष प्रशस्त होने से ग्राह्य माना गया है। **रात्रिमान** में 15 मुहूर्त्तों में से प्रथम मुहूर्त्त का स्वामी भी भगवान् शिव ही हैं।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार सूर्यास्त के बाद 3 घड़ियाँ तक प्रदोष काल होती हैं। रात्रिमान के आधार पर प्रदोष काल का आरम्भ काल तो स्थानीय सूर्यास्त से ही माना जाता है। अतएव आगे प्रत्येक रात्रिमान के स्थानिक सूर्यास्त से प्रदोष काल शुरु होकर, उसकी दाईं तरफ लिखे हुए घण्टा मिनट जोड़ देने से आपके नगर के प्रदोष काल का समाप्ति काल प्राप्त हो जाएगा। (घं.मिं.) सूर्यास्त में से सूर्योदय घटा देने से **दिनमान** निकल आता है तथा कुल चौबीस घण्टों में से **दिनमान घटा देने से रात्रिमान** घण्टा मिनट में प्राप्त हो जाता है।

अपनी अभीष्ट रात्रिमान के साथ लिखे स्थानीय सूर्यास्त से प्रदोषकाल शुरु होगा। उस सूर्यास्त के साथ दाहिनी ओर प्रदोष समाप्ति के घण्टा मिनट जमा करने से प्रदोष काल का समाप्ति काल ज्ञात हो जाएगा।

निशीथकाल—**प्रदोषकाल** के **समाप्तिकाल** से **निशीथकाल** का प्रारम्भ माना जाता है, तथा उसमें 3 मुहूर्त्त (2 घण्टा, 24 मिनट) जमा कर देने से हमें निशीथ का समाप्ति काल प्राप्त हो जाएगा। **निशीथ** में 2 घ. 24 मिनट जोड़ देने से **महानिशीथ** काल निकल आएगा।

उदाहरण—जैसे 7 जुलाई को जालन्धर में प्रदोष का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल जानना है। इसी दिन जालन्धर में रात्रिमान 10 घं. 00 मिं. है। इस रात्रिमान के आगे नीचे के कोष्ठक में **'प्रदोषकाल'** के नीचे **'प्रारम्भ'** और **'समाप्ति'** के घं.मिं. क्रमशः **'सूर्यास्त'** और २ घं. ०० मिं. है। अतएव जालन्धर के इस दिन के सूर्यास्त 19 घं. 33 मिं. से प्रदोष काल का प्रारम्भ काल तथा इसमें समाप्तिकाल के २ घं. ०० मिं. जोड़ने से 21 घं. 33 मिं. प्रदोषकाल का समाप्तिकाल होगा।

इसी प्रकार इसी दिन के अरुणोदय काल जानने के लिए हमें 7 जुलाई को जालन्धर के सूर्यास्त में **'अरुणोदय'** के नीचे प्रारम्भ और समाप्ति के घं.मिं. को, क्रमशः 8 घं. 40 मिं. और 10घं.00मिं. जमा करने होंगे। सूर्यास्त काल 19घं.33मिं. में इन्हें अलग-अलग जोड़ने पर हमें 28घं.13मिं. और 29घं.33मिं. मिले, जो इस दिन जालन्धर में अरुणोदय काल के क्रमशः प्रारम्भ और समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) हैं।

इसी प्रकार किसी भी नगर का रात्रिमान निकालकर आप स्थानीय प्रदोष, निशीथ, महानिशीथ, अरुणोदय काल निकाल सकते हैं।

रात्रिमान	प्रदोषकाल		निशीथकाल		महानिषीथकाल		अरूणोदयकाल	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	सूर्यास्त	1 54	1 54	3 48	3 48	5 42	8 14	9 30
9 45	सूर्यास्त	1 57	1 57	3 54	3 54	5 51	8 27	9 45
10 00	सूर्यास्त	2 00	2 00	4 00	4 48	6 00	8 40	10 00
10 15	सूर्यास्त	2 03	2 03	4 06	4 06	6 09	8 53	10 15
10 30	सूर्यास्त	2 06	2 06	4 12	4 12	6 18	9 06	10 30
10 45	सूर्यास्त	2 09	2 09	4 18	4 18	6 27	9 19	10 45
11 00	सूर्यास्त	2 12	2 12	4 24	4 24	6 36	9 32	11 00
11 15	सूर्यास्त	2 15	2 15	4 30	4 30	6 45	9 45	11 15
11 30	सूर्यास्त	2 18	2 18	4 36	4 36	6 54	9 58	11 30
11 45	सूर्यास्त	2 21	2 21	4 42	4 42	7 03	10 11	11 45
12 00	सूर्यास्त	2 24	2 24	4 48	4 48	7 12	10 24	12 00
12 15	सूर्यास्त	2 27	2 27	4 54	4 54	7 21	10 37	12 15
12 30	सूर्यास्त	2 30	2 30	5 00	5 00	7 30	10 50	12 30
12 45	सूर्यास्त	2 33	2 33	5 06	5 06	7 39	11 03	12 45
13 00	सूर्यास्त	2 36	2 36	5 12	5 12	7 48	11 16	13 00
13 15	सूर्यास्त	2 39	2 39	5 18	5 18	7 57	11 29	13 15
13 30	सूर्यास्त	2 42	2 42	5 24	5 24	8 06	11 42	13 30
13 45	सूर्यास्त	2 45	2 45	5 30	5 30	8 15	11 55	13 45
14 00	सूर्यास्त	2 48	2 48	5 36	5 36	8 24	11 58	14 00
14 15	सूर्यास्त	2 51	2 51	5 42	5 42	8 33	12 11	14 15
14 30	सूर्यास्त	2 54	2 54	5 48	5 48	8 42	12 24	14 30
15 00	सूर्यास्त	3 00	3 00	6 00	6 00	9 00	12 50	15 00

सामान्य रूप में सूर्योदय से 4 से 5 घड़ी पूर्व **उषाःकाल** होता है। इसे **ब्राह्म मुहूर्त्त** भी कहते हैं। इस मुहूर्त्त में श्री भगवान् का चिन्तन, पूजा, ध्यान पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

अरूणोदय—सूर्योदय से 4 घड़ी पूर्व **अरूणोदय** काल होता है, इसमें भी स्नान, जप, पुण्य श्लोकों व स्तोत्रों का पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

प्रदोषकाल में भगवान शिव पूजन व जप करने का विशेष विधान होता है। निशीथ एवं महानिशीथ (महानिशा) काल में ध्यान, समाधि श्री दुर्गालक्ष्मी, व काली की उपासना तथा यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रादि अनुष्ठान का विशेष प्रभावी होता है। सोमवासरी, भौमवारी एवं दीपावली की रात्रि को महानिशीथ काल में यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सम्बन्धी साधनाओं का विशेष महत्त्व होता है।

[illegible] नक्षत्रों एवं राशियों का फल (ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत)

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न—मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न—वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृत्ति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा है**। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न—मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न—कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र-मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ** नग **सुच्चा मोती तथा सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न—सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न—कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध-शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा-गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना है**। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा** (Diamond) अथवा **श्वेत मोती शुभ नग है** जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न–वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न–धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न–मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न–लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम है। स्त्रियों के लिए, पुखराज नग शुभ** होगा।

मीन लग्न–मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान्, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
सट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा-तेजी)	120 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	50 रु.
मोटर वाईडिंग	40 रु.
पशु चिकित्सा	150 रु.
विवाहित आनन्द	40 रु.
गर्भावस्था व शिशुपालन	150 रु.
कष्टनिवारक उपाय-टोटके	100 रु.
संस्कृत-हिन्दी कोष	350 रु.
व्यापार रत्न	350 रु.
तबला वादन कोर्स	80 रु.
Dictionary (Big)	250 रु.
हिन्दी शब्द कोष	300 रु.
ताश के जादू	60 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज़ (बड़ी)	200 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	200 रु.
कम्प्यूटर कोर्स (बड़ा)	280 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	120 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	80 रु.
जूडो कराटे सीखें	60 रु.
हारमोनियम सीखिए	80 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	80 रु.
सिलाई कटाई शिक्षा	75 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	60 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	60 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	30 रु.
घरेलू आयुर्वेदिक गाइड	200 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	150 रु.
मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज़	300 रु.
कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज़	200 रु.
इन्वर्टर सर्विसिंग	80 रु.
ए. सी. मोटर वाईंडिंग	80 रु.
स्क्रीन प्रिंटिंग गाईड	150 रु.
आर्य संगीत रामायण (नाटक)	151 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
बनाइये खाना वेजीटेरियन	90 रु.
खाना खजाना	250 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	100 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	60 रु.
भारतीय व्यंजन	60 रु.
आलू पनीर के व्यंजन	40 रु.
माइक्रोवेव कुकिंग	60 रु.
फल सब्जी से चिकित्सा	60 रु.
चाइनिज़ कुकरी	60 रु.
शहनाज़ ब्यूटी बुक	140 रु.
योगासन चिकि. स्वा. रामदेव	125 रु.
प्राणायाम चिकित्सा	50 रु.
ब्यूटी पार्लर कोर्स (रंगीन)	180 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	60 रु.
55 चालीसा एवं आरती संग्रह	50 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
एलोपेथिक चिकि. (कोकचा)	200 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	180 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	100 रुपए
स्वदेशी चिकित्सा सार	70 रुपए
घर का वैद्य	80 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	300 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	100 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	135 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	50 रुपए
योगासन एवं साधना	60 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	50 रुपए
जड़ी-बूटियाँ	60 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	210 रु.
यूनानी चिकित्सा सार (वैद्यनाथ)	150 रु.
सचित्र योगासन व ध्यान	95 रु.
वनौषधि शतक (वैद्यनाथ)	100 रु.
भैषज्य भास्कर	60 रु.
ईलाजुलगुर्बा	100 रु.
दादी माँ के नुस्खे	80 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	60 रु.
आयुर्वेद मंथन	50 रु.
महत्त्वपूर्ण जड़ी-बूटियां	300 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	245 रु.
गुणकारी जड़ी-बूटियां	60 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	80 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	70 रु.
भावप्रकाश निघन्टु	135 रु.
योग के अद्भुत चमत्कार	60 रु.
आपका आरोग्य आपके हाथ	65 रु.
योगासन	60 रु.
प्राकृतिक चिकित्सा	60 रु.
घरेलू इलाज	60 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	175 रु.
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	250 रु.
योगासन व स्वास्थ्य	80 रु.
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	60 रु.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

पुस्तक	मूल्य
काली किताब	500 रु.
काली किताब (छोटी)	200 रु.
महाइन्द्रजाल	500 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	100 रु.
शाबर मंत्र विद्या	80 रु.
तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य	300 रु.
यंत्र-मंत्र महाशास्त्र	1000 रु.
काला ईल्म	100 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	90 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	105 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	150 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	200 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र और टोटके	120 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	60 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	150 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	80 रु.
काली तंत्र शास्त्र	100 रु.
तारा तंत्र शास्त्र	90 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	95 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	60 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके	50 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	80 रु.
ब्रह्मास्त्र विद्या व बगुलामुखी सा.	700 रु.
महाकाल संहिता	600 रु.
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	60 रु.
11000 गंडे ताबीज़ और टोटके	300 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	300 रु.
महाकाल संहिता (4 भाग)	2400 रु.
तन्त्रराजतन्त्रम् (2 भाग)	1200 रु.
श्रीदेवीरहस्यम् (2 भाग)	1200 रु.
मंत्र रहस्य	100 रु.
यंत्र विधान	200 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	90 रु.
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	60 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	60 रु.
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	60 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	60 रु.
मनोकामना सिद्धि	60 रु.
वशीकरण मन्त्र	60 रु.
चीन बंगाल का जादू	50 रु.
कामाक्षा मन्त्र	60 रु.
सूर्य तन्त्रम्	60 रु.
कामाख्या उपासना	80 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	150 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	80 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	50 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	20 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	30 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीपः	95 रु.
विवाह पद्धति	60 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25 रु.
कर्मकाण्ड पद्धति	125 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	75 रु.
नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?)	150 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	100 रु.
कर्मकाण्ड भारती	100 रु.
पूजा पद्धति	50 रु.
पूजा भास्कर	60 रु.
हवन रहस्यम्	60 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	30 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	55 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	60 रु.
श्रीसूक्तम् व कनकधारा	20 रु.
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	70 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा) बड़ा	150 रु.
सनातन संस्कार विधि	150 रु.
षोडश संस्कार पद्धति	150 रु.
श्राद्ध विवेक	150 रु.
नित्यकर्म पद्धति	65 रु.
पितृकर्म पद्धति	75 रु.
सर्वदेव पूजा पद्धति	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	200 रु.
हवन पद्धति	50 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	30 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	18 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा (लघु)	150 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	50 रु.
सर्व व्रतोद्यापन रहस्यम्	200 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	60 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	150 रु.

अपने आर्डर के साथ 50/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता--

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर। फोन--2457959

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो. तुलसीकृत रामायण (भाषा-टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित् की महिमा को हृदयांगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन-पठनार्थ घर में रखना अथवा दान-दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत 301/- रु.। आर्डर के साथ 100 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य 150 रु. (डाक व्यय अलग)

श्री वाल्मीकि रामायण (सचित्र)

हिन्दी भाषा में सुन्दर मोटे अक्षरों में प्राप्य हैं। (मूल्य 250 रु.) ये ग्रन्थ **पंजाबी भाषा** में भी उपलब्ध हैं। मूल्य 800 रुपए। डाक व्यय अलग।

श्री प्रेम सागर (सचित्र)

प्रेम, भक्ति और भावना से परिपूर्ण भगवन् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं तथा उनके जीवन चरित्रों का सजीव एवं सचित्र वर्णन जिसे धर्म में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। मूल्य 150 रुपए, डाक व्यय अलग।

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्त्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्रा से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र 300 रुपए, आर्डर के साथ 100 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। **मध्यम सुखसागर-मूल्य 175 रु.।**

सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पोपल, करवा-चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे-एकादशी, धन, त्र्योदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई-दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। मूल्य-30 रु.

अष्टावक्र गीता

चित्त के सन्देहों को दूर करने एवं ज्ञान के मुमुक्षयों को तमोमय अंधकार नष्ट करने तथा शान्त, अद्वैत और निर्मल आत्मा के लिए इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। **(मूल्य 150 रु.)**

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जोकि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि, सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शतचण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल 65 रुपए। सजिल्द 75 रुपए।

श्री हरिवंश पुराण

निःसन्तान दम्पत्ति को सन्तान प्रदान करने वाला, निर्धन को धन देने वाला और महापातकी मनुष्य के सब पापों का नाश कर देने में समर्थ ये 'हरिवंश पुराण' सुनने से अथवा पढ़ने से कलियुग में व्यक्ति महापापों से भी मुक्त हो जाता है।

मूल्य 350 रुपए।

श्रीमद्भगवत् गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली माहात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मंगवाएँ। **मूल्य 150 रु.।**

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्दवेद-1 खण्ड, अर्थर्ववेद-2 खण्ड, समावेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। **मूल्य सम्पूर्ण सैट-650 रु.।**

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। **मूल्य केवल 280 रु.।** मनीआर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय 40 रु. पृथक।

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) 25/-

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

ग्रन्थ	मूल्य
श्रीमद्देवी भागवत पुराण	221/-
श्री विष्णु पुराण	200/-
श्री विश्वकर्मा महापुराण	150/-
योग वशिष्ठ (दो भाग)	500/-
व्यापार रत्न	350/-
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	450/-
निर्णयसिन्धु (भाषा टीका)	500/-
व्रतराज	425/-
चाणक्य नीति	60/-
विदुर नीति	60/-
महामृत्युञ्जय साधना	80/-
श्री गरुण पुराण (प्रेतकल्प)	70/-
कर्मकाण्ड कुसुमाञ्जली	35/-
कर्मकाण्ड प्रदीपः	95/-
कर्मठगुरु	**90/-**
कवच संग्रह (भा.टी.)	80/-
भद्रबाहु संहिता (मंदा-तेज़ी पर)	150/-
लाल किताब गुटका	135/-
मंत्र महोदधि	500/-
षोडश संस्कार पद्धति	120/-
वास्तु शान्ति प्रयोग	25/-
मन्त्र सागर	100/-
बगुलामुखी उपासना	60/-
मंत्र द्वारा कामना सिद्धि	60/-
मंत्र द्वारा रोग निवारण	60/-
मंत्र शक्ति	60/-
मनोकामना पूरक मंत्र	60/-
वृहद् कौवा तंत्र	50/-
सूर्यशक्ति से इलाज	25/-
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	50/-
आरती संग्रह ग्लेज़चित्र	30/-
योग वसिष्ठ महारामायण	250/-
55 चालीसा संग्रह आरतियों सहित	50/-
गरुड़ पुराण भा. टी.	70/-
विशाल हस्त सामुद्रिक	100/-
सन्तानगोपाल स्तोत्र	15/-
विशाल भृगु संहिता पद्धति	300/-
पं. देवीदयालु का राशिफल	**36/-**
माघ महात्म्य	30/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	**395/-**
कार्तिक महात्म्य	30/-
ज्योतिष सर्व संग्रह	55/-
सन्तान गोपाल स्तोत्र	15/-
असली आल्हाखण्ड	**151/-**
विवाहपद्धति देवीदयालु	**60/-**
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	**65/-**
सूर्य पुराण भाषा	100/-
हस्त रेखा विज्ञान	60/-
सूर्य उपासना	60/-
तान्त्रिक सिद्धियाँ	80/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	150/-
दुर्गार्चन रहस्यम्	150/-
श्री हरिवंश पुराण (मध्यम)	150/-
श्रीगणेश महापुराण	225/-
मनुस्मृति	200/-
देवी-देवता सिद्धि	60/-
कर्मकाण्ड पद्धति	**125/-**
भजन सरोवर	150/-
लाल किताब (हिन्दी)	800/-
शिव मंत्रावली	160/-

अपने आर्डर के साथ 50/- रुपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ पूरा लिखें। वी. पी. द्वारा मंगवाने का पता-

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर

फोन-2457959

ज्योतिष सम्बन्धी प्रामणिक पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

पं० देवी दयालु ज्यो० जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग	740 रु.
श्रीदशवर्षीय पंचांग (1994-04 ई.)	200 रु.
दशवर्षीय पंचांग (2004-14 ई.)	400 रु.
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	60 रु.
वर्षफल चन्द्रिका	80 रु.
ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड)	95 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I)	275 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II)	275 रु.
शिव मन्त्रावली	**160 रु.**
अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय-टोटके	60 रु.
विवाह पद्धति	55 रु.
दुर्गा सप्तशती (हिन्दी-भाषा)	65 रु.
श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.)	65 रु.
गण्डमूल शान्ति प्रयोग	**50 रु.**
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति	20 रु.
नवग्रह पूजा विधान	30 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	30 रु.
कार्तिक माहात्म्य	30 रु.
55 चालीसा आरती संग्रह	50 रु.
लघु पंचांग दिवाकर	25 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा-भा.टी.	25 रु.
षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.)	10 रु.
जन्माङ्क पत्रिका (16 पृ.)	8 रु.
जन्माङ्क पत्रिका (12 पृ.)	6 रु.
ज्यो० ज्ञान शास्त्र (गुरमुखी)	100 रु.
टेवा फार्म छपा/प्लेन	110 रु. सैंकड़ा
श्री सूक्तम्-कनकधारा स्तोत्र	21 रु.
लाल किताब (गुरमुखी)	120 रु.
फलित ज्योतिष (गुरमुखी)	400 रु.
राशिफल सन् 2013 ई.	36 रु.

अन्य प्रकाशनों की ज्यो. सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
कालसर्प योग-शोध संज्ञा	415 रु.
ग्रह और भावबल	55 रु.
ग्रहरोग निदान चिकित्सा	75 रु.
ग्रहलाघव-गणेश दैवज्ञ	275 रु.
चमत्कार चिन्तामणि	245 रु.
जातक निर्णय (2 भाग) (बी.वी. रमण आधारित)	290 रु.
जातक-पारिजात (2 भाग)	600 रु.
ज्योतिष और हम	65 रु.
ज्योतिष जगत्	50 रु.
ज्योतिष तत्त्व प्रकाश	245 रु.
ज्योतिष रत्नाकर	325 रु.
ज्योतिष रहस्य	195 रु.
ज्यो. शास्त्र में रोग विचार	145 रु.
ज्यो. शास्त्र में स्वर विज्ञान	95 रु.
जीवनफल दर्पण	75 रु.
जैमिनी ज्यो. का अध्ययन	55 रु.
षड्वर्ग फलम्	200 रु.
गणेश होरा शास्त्रम्	500 रु.
राशिफल विचार	160 रु.
परमायु दशा	150 रु.
ज्यो. और रोग (2 भाग)	300 रु.
तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग	115 रु.
त्रिफला	125 रु.
दशाफल दर्पण	100 रु.
दशाफल विचार	60 रु.
पुत्रेष्टि अनुष्ठान	495 रु.
समृद्धि सूत्र (2 भाग)	925 रु.
प्रश्नचन्द्र प्रकाश	95 रु.
फलदीपिका	175 रु.
फलित ज्यो. में कालचक्र	85 रु.
बृहज्जातकम्	220 रु.
मंत्र पुष्पाञ्जली	395 रु.
मेलापक मिमांसा	395 रु.
मंत्र संदर्शन	295 रु.
मुहूर्त-चिन्तामणि (पीयूषधारा)	265 रु.
मुहूर्त्त गणपति	295 रु.
मुहूर्त्त मार्तण्ड	135 रु.
मुहूर्त्त पारिजात	150 रु.
योग-शृंखला (2 खण्ड)	795 रु.
लग्नचन्द्रप्रकाश	245 रु.
लघुपराशरी सिद्धान्त	295 रु.
लघुपराशरी भाष्य	225 रु.
लघुपराशरी	**60 रु.**
वैवाहिक सुख	**295 रु.**
वैवाहिक विलम्ब के आयाम	345 रु.
शनि शमन (दो भाग)	600 रु.
शत्रु शमन	195 रु.
हस्तरेखा सामुद्रिक शास्त्र	125 रु.
हस्तरेखा विज्ञान	160 रु.
चन्द्रहस्त विज्ञान	395 रु.
सन्तानसुख-सर्वाङ्ग चिंतन	245 रु.
होरा-रत्नम्	790 रु.
नक्षत्र विचार	250 रु.
भृगु संहिता	300 रु.
मंगलीक योग भ्रान्ति निदान	135 रु.
कालसर्प योग कारण-निवारण	200 रु.
शनि-साढ़ेसति से छुटकारा	40 रु.
दशाफल दर्पण	300 रु.
ज्योतिष सर्वस्व	300 रु.
जातक सत्याचार्य	80 रु.
केवलज्ञान प्रश्न चूड़ामणि	100 रु.
भारतीय ज्यो. (नेमिचंद्र शा.)	320 रु.
काली किताब	450 रु.
काली किताब (मध्यम)	200 रु.
रावण संहिता (बड़ा)	2000 रु.
रावण संहिता (मध्यम)	600 रु.
लाल किताब (वृहद्)	2000 रु.
लाल किताब	800 रु.
लाल किताब-टोटके	120 रु.
लाल किताब कष्ट निवारण	150 रु.
लाल किताब-पं. किसनलाल	250 रु.
प्रश्न भास्कर	80 रु.
प्रश्न विद्या	60 रु.
प्रश्न दर्पण	120 रु.
प्रश्न रहस्य	120 रु.
सारावली	225 रु.
वृहद्पराशरहोराशास्त्र	250रु.
सामुद्रिक शास्त्र (2 भाग)	600 रु.
विंशोंतरी दशाफल निर्णय	150 रु.
उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर	60 रु.
जातकालंकार (भा.टी.)	60 रु.
गोचर विचार	60 रु.
चुने हुए ज्योतिष योग	60 रु.
कर्ज से मुक्ति	120 रु.
पितृदोष कारण-निवारण	120 रु.
विदेश जाने के उपाय	150 रु.
दशाफल विचार (वृहद्)	200 रु.
सन्तान सुख विचार	200 रु.
ज्यो. गणित व खगोल-शास्त्र	200 रु.
भावफल् विचार (2 भाग)	300 रु.
फलित ज्योतिष	135 रु.
बुद्धि विद्या विचार	200 रु.
गृह क्लेश क्यों ?	120 रु.
महाशक्तिशाली टोने-टोटके	300 रु.
5001 प्रभावशाली टोने-टोटके	200 रु.
11000 गंडे तावीज टोटके	300 रु.
नक्श सूलेमानी	150 रु.
प्रश्न-मार्ग (दो. खण्ड)	300 रु.
आयुनिर्णय	200 रु.
प्रश्न फल निर्णय	100 रु.
सम्पूर्ण ज्यो. विज्ञान	200 रु.
फलित दर्पण	300 रु.
सुगम वैदिक ज्योतिष	350 रु.
शनि शांति सरल उपाय	450 रु.
मंगली दोष कारण-निवारण	100 रु.
उत्तर कालामृत	300 रु.
रत्न ज्योतिष	60 रु.
रत्न पहने भाग्य बदलें	80 रु.
रत्न प्रदीप	100 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	120 रु.
रत्न और रूद्राक्ष-भाग्य	250 रु.
रत्न परिचय	40 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	200 रु.
आपका भाग्यरत्न	60 रु.
अंक विद्या रहस्य	60 रु.
अंकों में छिपा भविष्य	60 रु.
अंकों का अद्भुत संसार	125 रु०
अंक ज्योतिष (कीरो)	60 रु.

वास्तुशास्त्र विज्ञान पव

पुस्तक	मूल्य
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	120 रु.
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	150 रु.
विना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	100 रु.
रेमिडियल वास्तुशास्त्र	150 रु.
व्यावहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुकला और भवन निर्माण	150 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य	400 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य (2 भाग)	450 रु.
फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र	100 रु.
इंटीरियर डिजाइनिंग वास्तुशास्त्र	200 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

"लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 1750 रु. (डाक व्यय सहित)
हिन्दी रुपान्तरण 'अरुण संहिता' मूल्य 550 रु.

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता :

50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेजें।

जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन-0181-2457959

स्थापित सं० 1875 ई०

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान के सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित

पंचाँग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

गौरवमयी वर्ष प्रवेश 138 वाँ

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय, विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश गमन योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित बतलाए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री–संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 551/- रु. होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 751/- रु. अथवा 21 पौंड होगी।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री–आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे–नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। इस **मध्यम षड्वर्गी जन्मपत्री** के लिए फीस 851/- रु. होगी। **वृहद् जन्मपत्री की फीस 1250/- रु. होगी।** विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 1600/- रु. अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग। वृहद् सप्तवर्गी (40 पृष्ठ) जन्मपत्री की फीस 2100/- रु. होगी जिसमें कैरियर सम्बंधी विशेष मार्गदर्शन एवं विशिष्ट उपायों का विवरण होगा।

कम्प्यूटर (Computerized) शुद्ध / वैज्ञानिक जन्मपत्री–लैटेस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम 501/- रु., वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्तलिखित उपायों सहित 851/- रु.

पत्र व्यवहार एवं मनीआर्डर / ड्राफ्ट भेजने के लिए पता–

पं. पन्ना लाल ज्योतिषी M.A. (संस्कृत-हिन्दी) (गणितकर्त्ता)

पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय (पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़)

चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-पिन 144008

वर्षफल–आपके लिए आगामी वर्ष [illegible] कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि [illegible] समय, तारीख, सन् ई०, व्यवसाय [illegible] पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखें [illegible] लिखें। फलादेश के लिए फीस 501/- रुपए होगी। [illegible] भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा एवं शेयर व्यापारियों को विशेष सूचना

वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। **एक मास की प्रति (एक) जिन्स की फीस 751/-रु. होगी।** जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाज़ार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट बेजी जाएगी।

शेयर-बाज़ार–शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों में तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाज़ार की दैनिक अर्थात् एडवांस मासिक रिपोर्ट की फीस 751/-रु.। विस्तृत विज्ञापन **'व्यापारिक वस्तुओं व शेयरों में मन्दा-तेजी'** लेख के प्रारम्भ में देखें। प्रतिदिन फोन पर रुख जानने के लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी।

M.O./ ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : फोन-0181-2457959

पं. विवेक शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-8 (पं.)